श्री
गुर प्रताप सूरज ग्रंथ

४

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ

(षष्ठम रुत कथनं)

जिल्द 8

भाई संतोख सिंह

भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला

Shri Gur Partap Suraj Granth (Hindi)

Vol. (VIII)

by

Bhai Santokh Singh

Transliterated and Annotated by

Prof. Uttam Singh

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ

खण्ड 8

प्रो० उत्तम सिंह

प्रकाशक:

भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला।

प्रथम संस्करण : 1977

मूल्य : 11.00 रुपये

मुद्रक :—

स्वैन प्रिंटिंग प्रैस, अड्डा टाँडा, जालन्धर—1

द्वारा

कण्ट्रोलर, प्रिंटिंग एवं स्टेशनरी विभाग, पंजाब, चण्डीगढ़।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ–8

प्राक्कथन

पंजाब को भारत की खड्ग भुजा कहा जाता है। यह ठीक भी है। किन्तु पंजाब को मात्र शक्ति एवं सम्पन्न प्रदेश कहना या समझना भ्रामक है। भारतीय साहित्य व संस्कृति के कोष को भी पंजाब ने जगमगाते रत्नों से भरा-पूरा है। भ्रान्ति का कारण काफ़ी हद तक तालमेल की कमी तथा हमारी परतन्त्रता थी। इन्हीं कारणों से भारतीय अपने साहित्य और संस्कृति से कट गए और पाश्चात्य साहित्य के अध्ययन और अनुसंधान को ही अपने जीवन की इति श्री मान बैठे। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् हमारी भाषाओं और साहित्य ने भी करवट ली और इस दशा में नवजागरण हुआ। इसका प्रभाव यह हुआ कि हम अपने प्रति जागरूक होकर अपने साहित्य और संस्कृति की ओर मुड़े। फलतः जहाँ देशीय भाषाओं में नव साहित्य का सृजन प्रारम्भ हुआ वहाँ हमारी दृष्टि उस भूले-बिसरे साहित्य की ओर भी गई जो किन्हीं कारणों से जनता के सम्मुख नहीं आ पाया था।

भाषा विभाग, पंजाब ने ऐसे साहित्य को प्रकाश में लाने का बीड़ा उठाया है और अब तक कई दुर्लभ ग्रंथ यथा गुरु नानक प्रकाश, कथा हीर रांझणि की, पंचनद, ज्ञान त्रिवेणी इत्यादि हिन्दी जगत् को भेंट कर चुका है।

प्रस्तुत ग्रंथ 'श्री गुर प्रताप सूरज' एक महान् रचना है। कवि चूड़ामणि भाई संतोख सिंह जी ने इस अपूर्व काव्य ग्रंथ का सृजन बीस वर्ष की निरन्तर साहित्य साधना के पश्चात् किया। कवि का जन्म गाँव नूरही, तहसील तरनतारन, ज़िला अमृतसर में भाई देवा सिंह जी के घर 1785 ई० में हुआ। भाई देवा सिंह जी, जिन्हें अपने काम-धंधे के लिए प्रायः अमृतसर आना पड़ता था, ने अपने सुपुत्र संतोख सिंह की शिक्षा-दीक्षा का भार ज्ञानी संत सिंह जी के हाथों सौंप दिया। इनके यहाँ रह कर भाई संतोख सिंह ने गुरुमत विद्या, संस्कृत और ब्रजभाषा का गहन अध्ययन किया। लगभग दस वर्ष तक 'बूड़िए' गाँव में रहने के पश्चात् वे कुछ समय के लिए पटियाला दरबार में आ गए। मगर महाराज राम सिंह के यहाँ वे बहुत दिन टिक न सके। इसके पश्चात् वे श्री उदे सिंह, कैथल नरेश, के राज्य आश्रय में आ गए जहाँ उनको सादर रखा गया :—

उदे सिंह बड भूप बहादुर।
कवि बुलाए राखिउ ढिग सादर।

(गरब गंजनी)

और फिर 1829 से जीवन पर्यन्त अर्थात् अक्तूबर, 1845 तक वहीं दरबारी कवि रहे और इस काल में उन्होंने प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की। इससे पूर्व वे नामकोश, गुरु नानक प्रकाश, गरब गंजनी, बाल्मीकि रामायण का काव्यानुवाद, आत्म पुराण आदि रचनाएँ लिख चुके थे।

वस्तुत: गुरु नानक प्रकाश भी "श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" का ही एक अंग है। गुरु नानक प्रकाश, जिसे कुछ वर्ष पूर्व हम पाठकों के सम्मुख भेंट कर चुके हैं, में श्री गुरु नानक देव जी का जीवन-वृत्त काव्य में लिखा गया है। भाई संतोख सिंह जी इसी प्रकार अन्य गुरुओं के जीवन काव्य लिखना चाहते थे। इसी आशा को फलीभूत करने के लिए उन्होंने गुरु प्रताप सूरज ग्रंथ की रचना की। उन्होंने स्वयं लिखा है :—

श्री गुरु को इतिहास जगत महि, रलमिल रह्यो एक थल सम नाहि
जिम सकता महिं कंचन मिले, बीन डावला ले तिह भले,
तथा जगत ते मैं चुनि लेऊँ कथा समसत सु लिख कर देऊँ।
बानी सफल बरन के कारण, करिहौ सत गुरु सु जस उचारन।
जिम दधि बिखै घ्रित मिल रहै, करहि कथन नीके शुभ लहै,
तिम जग महि बाद बिवादु, गुरु जस संची दे अहिलादु।

(गु० प्र० सू० अंशु 5)

भाई संतोख सिंह जी ने गुरु-काव्य लिखने का बीड़ा उठाया। मगर यह कार्य कोई सरल नहीं था। गुरुओं के जीवन पर प्रकाश डालने के लिए उन्हें कोई भी प्रमाणिक सामग्री उपलब्ध न हुई। फिर भी उन्होंने गुरु ग्रंथ साहिब, दशम ग्रंथ, वारां भाई गुरदास, बाले वाली जन्म साखी, पंज सौ साखी, भक्त माल, ज्ञान रत्नावली, महिमा प्रकाश आदि ग्रंथों का गहन अध्ययन तथा अनुशीलन किया। ऐतिहासिक तथ्यों को अपनी कल्पना एवं प्रतिभा का रंग चढ़ा कर इन्होंने अपने अद्भुत काव्य-भवन का निर्माण कर डाला।

इस बृहद् काव्य रचना का नाम उन्होंने गुरु प्रताप सूरज रखा था, इसलिए संपूर्ण कथानक को सूर्य की गति के आधार पर 12 राशियों, 6 ऋतुओं और 2 अयनों अर्थात् कुल बीस बड़े भागों में विभक्त किया है। पुन: सूर्य की किरणों के आधार पर अध्यायों को अंशुओं की संज्ञा प्रदान की गई है। इसलिए रचना के नामकरण तथा इसके रचना विधान में एक सुन्दर रूपक की कल्पना की गई है। सूर्य की भाँति गुरुओं का जीवन भी अंधकार को दूर करता है।

बारह राशियों में गुरु नानकोत्तर गुरुओं की जीवन गाथा है, छ: ऋतुओं और अयनों में संत सिपाही श्री दशमेश जी का जीवन वृत दिया गया है। इस संपूर्ण रचना के कुल 1150 अध्याय हैं जिनका विवरण निम्न अनुसार है :—

सूरज गुर प्रताप ते, वरनी द्वादश रासि,
अपट साच पातशाह के, बरनों वर गुण रास । (15)
दछणाइने उतराइणे, अयन बनैंगे दोइ,
बदनत रितु जो खषट शुभ, तिम पर बरनन होइ । (16)
प्रथम कही कविता रुचिर, श्री नानक प्रकाश,
पूरबारध उतराध इम, बर बरने गुण लास । (17)
अब कलगीधर की कथा, खषट रुतन पर होइ,
गुरु प्रताप सूरज भयो, या ते सभ गति जोइ । (18)
(गु० प्र० रु० 1, अंशु 1)

केवल परिमाण और आकार की दृष्टि से देखें तो पंजाब के इस हिन्दी कवि की इस अद्वितीय रचना की तुलना में विश्व भर के किसी अन्य कवि की रचना नहीं ठहर पाती । पंजाब के प्रत्येक गुरुद्वारे में सायंकाल इस ग्रंथ की विधिवत् एवं नियमित कथा की जाती है ।

भाई साहिब ब्रजभाषा के विद्वान् कवि होने के साथ-साथ, संस्कृत, पंजाबी तथा अन्य कई भाषाओं के महान् पण्डित थे । बालमीकि रामायण तथा आत्म पुराण जैसे संस्कृत ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद इसके ज्वलन्त उदाहरण कहे जा सकते हैं । यह तो गुरु प्रताप सूरज के प्रारम्भ में दिए गए 'मंगलाचरण' से भी भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है कि उन्हें भिन्न-भिन्न भारतीय भाषाओं पर कितना अधिकार प्राप्त था ।

कवि की काव्य प्रतिभा को परखने के लिए हमारे पास उनके दो ग्रंथ हैं, गुरु नानक प्रकाश और गुरु प्रताप सूरज । इसमें ऐसा काव्य सौष्ठव है कि हर पंक्ति पर कवि की काव्य प्रतिभा को देखकर चकाचौंध हो जाना पड़ता है । भाव और भाषा दोनों की दृष्टि से ही ये अनुपम काव्यत्व के स्वामी ठहरते हैं ।

सोहलवीं-सत्तारहवीं शती में हिन्दी साहित्य में भक्ति-भाव की काव्य रचना का बाहुल्य था । इस धारा के शिरोमणि कवि गोस्वामी तुलसीदास (1532-1625) और सूरदास (1473-1563) थे । गोस्वामी तुलसीदास जी और सूरदास के काव्य मृदुलता और मधुरता के लिए अद्वितीय हैं और लोक कल्याण की भावना से भी इनका काव्य ओत-प्रोत है । कुछ ऐसी ही बात चूड़ामणि भाई संतोख सिंह जी के समूचे काव्य-जगत के बारे भी कही जा सकती है । चाहे इनकी रचना भक्ति भावना प्रधान है फिर भी यह भक्ति काल के अन्तर्गत नहीं आती ।

इस ग्रंथ के हिन्दी में प्रकाशित होने से आलोचक इसका तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे और अन्य हिन्दी कवियों के परिप्रेक्ष्य में पंजाब के इस मेधावी हिन्दी-सेवी का यथोचित स्थान निर्धारित कर पायेंगे । कवि ने इसमें पौराणिक शैली को अपनाया है ।

इस रचना को इसी दृष्टि से देखना उपयुक्त होगा। भाई संतोख सिह का काव्य गुणों का गुलदस्ता है जिसकी महक के बारे में किसी समकालीन कवि ने लिखा है : —

कविता अपार है कि गुन को पहार है,
कि माधुरी आगार है, कि भाव कवि कोश है।
भूखन है कवि के कि दूखन हा कवि के,
बिदूखन के बीच भी प्रसिद्ध हरि दोष है।
बानी ही उतंग है सु अंक हीऊ रंग है,
अनग अंग भंग के बिसूत्रन निसेस है।
नानक अरथ जोऊ कीनो कली कल सोऊ,
नाम तो संतोख सिह धीयवर कोश है।

प्रस्तुत ग्रंथ को आठ जिल्दों में प्रकाशित किया जा रहा है। ''आठवीं जिल्द का लिप्यन्तर प्रो० उत्तम सिंह ने किया है। इसमें गुरु गोविन्द सिंह जी के परलोक गमन, साहिबजादों और बंदा वीर वैरागी की शहादत के हृदय विदारक प्रसंग हैं। संज्ञा कोश तथा टीका भी पाठकों की सुविधा के लिए इसके साथ ही दे दिए गए हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी जगत् पंजाब के इस महा कवि की महान् रचना का भव्य स्वागत करेगा।

रजनीश कुमार
निदेशक,
भाषा विभाग, पंजाब

पटियाला
जून, 1977

विषय सूची

अर्थ पूरब ऐन लिख्यते

अथ उत्तर ऐन प्रारंभते

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि

श्री वाहिगुरू जी की फते

।। अथ षशटम रुत कथनं ।।

अंशु १

माता को कहिन प्रसंग

दोहरा

श्री गुर चरन सरोज को सम जहाज के पाइ ।
बिघन उदधि ते पारि भा ध्यावति सहजि सुभाइ ।। १ ।।

१. इशट गुरू—दसों गुरू का—मंगल

श्री नानक, अंगद गुरु, त्रिती, चतुरथो रूप ।
पंचम, षशटम, सपतमो, अशटम नवम अनूप ।। २ ।।
गुरू गोबिंद सिंह दसम प्रभु जग तारन अवतार ।
कथा आपनी आप ही रची सहित बिसतार ।। ३ ।।
कर्यो बहानो मोहि कउ दास जानि करि दीनि ।
कहां शकति नर तन बिखै[1] संचन करहिं प्रबीन ।। ४ ।।
सभि इच्छा पूरन करी हलत बिखै सुख दीन ।
रिदै भरोसा पलति महि करहिं कशट सभि छीन ।। ५ ।।
इम उपदेशति सतिगुरू जिस सिंहनि कल्लयान ।
उमग्यो उर अनुराग जिन दए अग्र गुर प्रान ।। ६ ।।
पठे दूत गिरपतिनि जे साच कि झूठि सुनाइ ।
सवा लाख सैना सहित तहिं उमराव चढाइ[2] ।। ७ ।।

चौपई

सैदे खां पठान चढि आयो । चहै गुरु संग जुद्ध मचायो ।
उतरी आनि थनेसर नगरी । तुरकनि चमूं[3] सनधबध सगरी ।। ८ ।।
इत गुर घर ते हटे मसंद । बैठे, धन संगत ते बंद ।
श्री गुर कह्यो 'मसंद न मेरे । सिक्खनि पर इह राछस हेरे' ।। ९ ।।

---

1. में 2. सेना ने चढ़ाई की 3. चार प्रकार की सेना

कितिक मसंद बंदि कर[1] कह्यो। 'करी एक ने, दुख सभि लह्यो।
खता प्रथम की बखशन करीअहि। अपने जानि दया उर धरीअहि ॥ १० ॥
अबि ते जो सिख के घर जाइ। खुशी होइ दे सो हम ल्याइं।
सगरे मार एक पिछारी[2]। अबि बरतहिं गुर बच[3] अनुसारी' ॥ ११ ॥
सुनि श्री मुख ते तबहि उचारा। 'सिख सिदक को होइ निरधारा।
काल कलू को, सुनीअहि भाई! दुशतर जे सिक्खी निबहाई ॥ १२ ॥
कुछ घाटा धन के गुर घर नहिं। बिन बोले नहिं गमनो सिख ग्रिहि'।
गुर को हुकम बिदत भा जबै। बंद मसंद होति भे तबै ॥ १३ ॥
दारिद भयो. नहीं कुछ पावहिं। श्री गुजरी ढिग नित चल आवहिं।
अनिक[4] भांति की बात सुनावैं। करैं फिराद[5] कलेश बतावैं ॥ १४ ॥
'सुनहुं' मात जी! रीति हमेशा। गुर घर के थे काज अशेशा।
जबि की करी कार सभि बंद। सने सने परिगे सभि मंद ॥ १५ ॥
नहीं आमदन धन की होइ। देनि लेनि पुन किम करि होइ?'
इत्यादिक नित माता पास। ब्रिंद मसंद सु करैं प्रकाश ॥ १६ ॥
कहे तिनहुं के इक दिन माई। सोढी बंस मुकट ढिग आई।
कहति भई 'बेटा! सुनि अबै। किम संसार को कारज निभै ॥ १७ ॥
किम लंगर सिंहनि को होइ। बंदि कार संगति की जोइ।
सिरे पाउ लें सिक्ख बडेरे। इत्यादिक जे काज घनेरे ॥ १८ ॥
किम निरबाहु बिना धन आए। सगरे बरजि मसंद हटाए'।
पख की बात मात ते सुनी। गुर के रिदे भई रिस घनी ॥ १९ ॥
'खत्री नईयड़ उज्जड़ धीए! त्रिशना धरहिं अधिक अधिकीए।
पूरब दोइ लाख ले दरबा[6]। धर्यो छपाइ खजानो सरबा ॥ २० ॥
नहिं लंगर सिक्खनि तिम मांही। भले संभार राखीयहि तांही।
जो शत्रू हैं तुरक हमारे। भाग तिनहु को तांहि मझारे ॥ २१ ॥
सिक्खी पिखी भले सभि भावहु। सिक्खहुं लूटि कूटि तुम खावहु।
भूखा सतिगुर को परवार। जित कित ते करि लेहु अहार' ॥ २२ ॥
सुनि करि डर उर सिंहनि धारा। हाथ जोरि करि बिनै उचारा।
'रावरि बाक राम के बाना। निशफल होति नहीं सभि जाना ॥ २३ ॥

---

1. हाथ 2. एक के लिए 3. वचन 4. अनेक प्रकार की 5. फरियाद
6. द्रव्य, रुपए

क्रिपा करहु सभि को रखि लीजै । भले वाक सभि को कहि दीजै' ।
सुनि श्री मुख ते बहुर उचारी । 'बाबा नानक जग गुर भारी ।। २४ ।।
तिनहु कहे बाकन अभिरामे । —वरतौंगा पहिरौं दस जामे[1] ।
भाणा इसी तरहां सभि होवै । करी प्रमेशुर की को खोवै'' ? ।। २५ ।।
सुनि माता तूशन[2] हुइ रही । कितिक बार महिं सुत सन कही ।
'भली करनि महिं होई बुरी । सुनहुं पुत्र हिरदे रिस धरी ।। २६ ।।
देनो थो बर दीनो स्राप । जिम चंदन घसते हुइ ताप[3] ।
सुत को दावा करि मैं आई । बखशहु दिहु सभि को वडिआई ।। २७ ।।
सिख सेवक तुमरो परवारू । कहीयहि जिम प्रापति सुख भारू ।

गुर बोले :—
'सुनि मात ! महां हित ! करहु खालसे को तुम साबित ।। २८ ।।
रहित कहति के सहति अचारी । बीच खालसे जोति हमारी ।
भलो, खालसा ही सभि करि है । जगत राज जिन के अनुसरि है' ।। २९ ।।
इम सुनि करि जननी तबि गई । पशचाताप करति चित भई ।
बैठी जाइ कितिक सिख आए । जिम बीती तिम बात चलाए ।। ३० ।।
'कठन सुभाव[4] मसंदनि कह्यो । 'जिन के मोह लेश नहिं लह्यो ।
करैं बचन सो जाति न खाली । ततछिन फलै सुख कि दुख नाली ।। ३१ ।।
बिप्प्रै कहै, शकति किस मांही ? बोलै समुख,[5] अधिक डर पाही ।
कहिबे को तुम उचित बिसाले । तऊ स्राप भा, रिसे कुढाले' ।। ३२ ।।
श्री गुजरी तब्रि सभिनि सुनाए । 'अल्प बैस ते जे ज़िद पाए ।
इक दिन जल क्रीड़ा कहु करैं । छींटनि देति परसपर भिरैं ।। ३३ ।।
राइ गुलाब श्याम सिंह आदि । बालक बय खेलैं अहिलाद ।
जरे जवाहर जाहर जोति । बहु मोले कंकन कर होति ।। ३४ ।।
जल महिं एक कटक गिर पर्यो । नहीं निहार संभारनि कर्यो ।
शुशक बसत्र पहिरे तबि हेर्यो[6] । दासन कह्यो—कड़ा जल गेर्यो ।। ३५ ।।
गिन्यो न कुछ आए ढिग मेरे । बूझनि करे हाथ जब्रि हेरे ।
रिस करि बहुत भांति समुझाए । सभि को ले सलिता[7] ढिग[8] आए ।। ३६ ।।
खुजवाइव बहु जल के मांही । देखि रहे पायो कित नांही ।
मैं करि कोप कह्यो ढिग तहां । —क्यों न बतावा गेर्यो कहां ? ।। ३७ ।।

---

1. शरीर अर्थात् दस गुरु-रूप धारण करूंगा 2. मौन 3. ज्वर, बुखार 4. स्वभाव 5. सामने 6. देखा 7. सरिता 8. किनारे

दुरलभ वसतु दरब बहु केरी। बिन संभार नीर महिं गेरी।
इक तौ प्रथम संभार न करी। दूजे अबि तूशनि[1] मुख धरी ॥ ३८ ॥
धन बिसाल को बादहि खोवा। कहां बुद्धि तुमरी कहु होवा— ?
इत्त्यादिक करि कोप महाना। धरी मौन रिस कै सुनि काना ॥ ३९ ॥
दूजो कंकन हाथ मझारा। सभि के देखति तुरत उतारा।
करि बल बाहनि दूर बगायो। सत्तद्रव के प्रवाह महिं पायो ॥ ४० ॥
सकल बिलोकति बहु बिसमाए। —कहां कीनि कट दुती बगाए ?
कई हज़ारन ते जे बने। सो बिराटका सम मन गने— ॥ ४१ ॥
बहु कहि रही कहां पुन होइ। कटक जराऊ दोइ सु खोइ।
धने मलाह जतन करि हारे। अपर लोक बहु जल महिं बारे ॥ ४२ ॥
करे उपाइ न पायो कोई। अलप बैस महिं अस बुधि जोई।
सदा सुभाउ रह्यो इस बिधि को। धन संचनि की रखैं न सुधि को ॥ ४३ ॥
अबि क्या कीनि मसंद हटाए। —लाखहुं धन ल्यावति समुदाए।
देश बिदेशनि महिं बिचरंते। खोजि खोजि सिक्खनि धरवंते[2] ॥ ४४ ॥
सभि ते कहि करि दे उपदेश। आनहिं धन को सदा विशेष।
अबि हटि गए, कहां धन ऐहै ? किम गुर घर को काज निबैहै ॥ ४५ ॥
इम उर जानि निकट होइ कह्यो। इस ते स्राप दुखद ही लह्यो।
कुशल करहि परमेशुर सारे। कहि मैं रही न बहुर निवारे ॥ ४६ ॥
मिलि मसंद माता के संग। कहि सुनि जान्यों— बन्यों कुढंग[3]।
बात बिबस ते तूशनि भए। संध्या भई तरनि असतए ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते '**माता को कहिन प्रसंग**' बरननं नाम प्रथमों अंशु ॥ १ ॥

---

1. प्रसन्न होना 2. सिक्खों के घरों को 3. बेढगा बन गया

अंशु २

संग्राम प्रसंग

दोहरा

खान पान करि सुपति भे अरधि[1] गई जबि राति ।
सिक्ख थनेसर ते गयो कहीं पहुंच के बात ।। १ ।।

चौपई

चौकीदार सिंह जो खरे । तिन के संग कहिन इम करे ।
'सैदे खां पठान चढि आवा । डेरा जबहि धनेसर पावा ।। २ ।।
मैं तबि सुनी लरनि को चल्यो । दल को इक नर भेती मिल्यो ।
तबिही तजि पुरि को मैं धायो । बड़े बेग ते इत लगि आयो ।। ३ ।।
सुधि गुर को दिहु सकल सुनाई । सवधानी बिधि करहिं लराई ।
मुग़ल पठान सवा लख आवा । महिद[2] जंग को संग बनावा ।। ४ ।।
पहुंचहि आनि अनंदपुरि काली । सुधि दैबे हित आइ उताली' ।
तबि सतिगुर करि सौच शनाना । बैठे आइ सु लग्यो दिवाना ।। ५ ।।
अखिल खालसा जबि चलि आयो । श्री कलग़ीधर तबहि अलायो ।
'सैना सिंहनि की अबि सारी । अहै पंच सै लेहु बिचारी ।। ६ ।।
निज निज सदन ब्रिंद ही गए । आइ सकहिं नहि रण के भए !
शत्रु प्रबल सवा लख आयो । मंत्र गिरेशनि[3] मिले पकायो ।। ७ ।।
राजन की सैना बहु आवै । मिलि करि पुंज अधिक प्रबलावै ।
जे करि बनै सुचेती[4] तुम ते । लरनि हेत सो भनीयहि हम ते' ।। ८ ।।
सुनति खालसा अखिल उचारे । 'कारन करन आप हो सारे' ।
जबि भुनसार[5] भई दिन चढ्यो । सिंहनि बिखै बीर रस बढ्यो ।। ९ ।।
शासत्र बसत्र निज तुरंग संभाले । ज़ीन सभिनि ही ततछिन डाले ।
भई प्रभात तुरक दल आए । दुंदभि बाजे पुरि सुनि पाए ।। १० ।।

---

1. आधी 2. केवल 3. पर्वतीय राजा 4. अच्छा प्रबन्ध 5. प्रात:काल

भई जंग की त्यारी जबै। मेमू खां पठाण इक तबै।
श्री गुर को चाकर बड जोधा। जंग समैं लखिकै धरि क्रोधा ।। ११ ।।
प्रभु के पास आइ करि भाखा। 'पातिशाहु जिस हित तुम राखा।
सौ सुभटनि को डेरा दीना। सभि को जमादार मुझ कीना ।। १२ ।।
निमक आप को खाइ विशेखहु। तिह बहादरी को अबि देखहु'।
सुनि प्रसंन कलग़ीधर ह्वै कै। इक कमान को बखशन कै कै ।। १३ ।।
कह्यो 'शरीक[1] मारनो नीको। सनमुख आइ करति रण ही को'।
दुतीओ सैदबेग उमराऊ[2]। डेरा पूरब दीन लुटाऊ ।। १४ ।।
सो भी आनि खरो जबि भयो। सतिगुर पातिशाहु पिखि लयो।
पूरब जनम बिखै सिख भयो। श्री नानक संग मिलि मग[3] लयो ।। १५ ।।
तिस को भी बखशे गुर आयुध। भयो सुचेत सु करनि महां जुद्ध।
अपनो सिक्ख जान हित कर्यो। तिस के सिर पर निज कर धर्यो ।। १६ ।।
दोनहुं बडे बीर तबि गए। निकसे सिंह संग सभि लए।
कलग़ी झूलति आप अरूढे। को नहि लखहि जिनहु गुन गूढे ।। १७ ।।
समुख रिपुनि के जबि थिर भए। राजे तुरक सकल मिलि गए।
अविलोकति सिंहन तिन ओरा। गुर सन कह्यो 'खरच रण थोरा' ।। १८ ।।
प्रभु बोले 'द्रिग मुंदन करो। खरच लराई पिखि हित धरो'।
गुर के कहे मूंद द्रिग लीनि। रचना बडी बिलोकनि कीनि ।। १९ ।।
लाख़हुं ही दल चढे निहारे। अनिक रीति के आयुध धारे।
कितिक तुरंगनि पर चढि रहे। धनुख, तुपक, असि ढालनि गहे ।। २० ।।
पैदल केतिक[4] हैं सवधाने। हेत जंग के रिस उर ठाने।
धूल रेत बारूद दिखाई। गुलकां जे पाथर समुदाई ।। २१ ।।
तरकश तीर परे दिसि आवैं। चाहति हैं अबि जंग मचावैं।
देखि देखि सभि सिंह अनंदे। चहति जंग दोनों कर बंदे ।। २२ ।।
मसतक टेकि चमक कर पड़े। शत्रुनि साथ समुखि[5] हुइ लड़े।
खुशी होइ करि शसत्र चलाए। घन बनिकै गुलकां बरखाए ।। २३ ।।
इक रोड़ी पर सतिगुर बैसे। देखहिं जंग पर्यो बड जैसे।
एक एक सिख पर पिखि धाए। सौ सौ तुरक, हंकारति आए ।। २४ ।।
तुपक, तीर, तरवार, कटारी। मची मार भीमा इक सारी।
गिर गिर परैं घाइ को खै कै। श्रोणति संग लिपति तन ह्वै कै ।। २५ ।।

1. सम्बन्धी 2. उमराव, अमीर लोग 3. मार्ग 4. कितने 5. सामने

कबित्त

रण सिंह, श्याम सिंह, बीर सिंह, दया सिंह, सूरमा धरम सिंह धायो करि हेल को।
साहिब सिंह, देवा सिंह, और भाई टेक सिंह, राम सिंह, हरी सिंह, बाजी दीन पेल को।
मोहकम सिंह, धना सिंह अरु है धिआन सिंह, ग्यान सिंह, मान सिंह, रौर बड मेलि को।
'मार मार' कहैं, अरि मारि मारि गेरैं सिंह, बधति अगेरैं, पै पिछेरैं जिम खेलको ॥ २६ ॥

दोहरा

सैद बेग गहि शसत्र को वध्यो अग्र रण मांहि।
हरी चंद गिरपती को मीआं संज्ञा जांहि ॥ २७ ॥

चौपई

पटेबाज दोनो बड जोधे। भयो भेड़ सनमुख उर क्रोधे।
खड़ग सिपर[1] दोनहुं कर धारी। भांति अनेक घात बिसतारी ॥ २८ ॥
बाम, दाहने, पाछे, आगे। विचरति दाव करनि बहु लागे।
सतिगुर आदिक पिखहिं तमाशा। दोनहुं जै चहि करति बिनाशा ॥ २९ ॥
एक प्रहारैं दुती बचावैं। आडहिं सिपर क्रिपान चलावैं।
दाव अनिक करि जुद्ध मचायो। कटहिं अंग नहिं थाउं[2] छुटायो ॥ ३० ॥
सैद बेग तबि खड़ग प्रहारा। हरी चंद गहि सिपर सहारा।
घाव बचाइ सु आप चलायो। सैद बेग ने अंग बचायो ॥ ३१ ॥
हरी चंद कौ हन्यो क्रिपाना। कट्यो अंग करि प्राननि हाना।
पिख्यो लराई मैं जबि मार्यो। दीन बेग तबि आन वंगार्यो[3] ॥ ३२ ॥
फेरति सैफ आन करि भिर्यो। सैद बेग सों सनमुख अर्यो।
दोइं घटी लग कीन संग्रामा। देखति बहु नर भा अभिरामा ॥ ३३ ॥
दीन बेग तबि सैफ चलाई। सैदवेग के अंग लगाई।
गिर्यो जुद्ध महिं 'गुर गुर' सिमरति। श्री प्रभु खुशी करी चित हरखति ॥ ३४ ॥
महां कंतूहल[4] सभि नै हेरा। सुर परि महिं तिन कीनि बसेरा।
क्रिपा करी कलगीधर जबै। अपने लोक बास दिय तबै ॥ ३५ ॥
अपर सिंह बहु लरति जुझारे। परे तुरक जनु गिरे मुनारे।
हतहिं शहीद बीर रस माते। श्रोणति गिरहि प्रिथी रंग राते ॥ ३६ ॥

---

1. भाला 2. स्थान 3. डट गया 4. कौतूहल

इस प्रकार माच्यो घमसान। लोथ पोथना भई महांन।
बाइस जंबुक कंक कराले। कूकति आमिख खाइं बिसाले ॥ ३७ ॥
छाती मूंड फुटैं लगि गोरी। पर्यो जोर भारी जुग ओरी।
हला हाल बड भयो कुलाहल। लरति बीर रण रंग चलाचल ॥ ३८ ॥
पाछे पाउं नहीं किन डारे। लरते आपस बिखै प्रचारे।
कहां सिंह दल पंच सै होवा। कहां शत्रु लाखहुं भट जोवा ॥ ३९ ॥
बिचरैं बीर किकान कुदावैं। वधहिं अग्र तोमर भरमावैं।
विसमे तुरक मार जबि परी। अंध धुंध उडि रज नभ भरी ॥ ४० ॥
सतिगुर बैठे केतिक काल। मारन मरनौ मच्यो कराल।
जुद्ध खेत जोधन ते छायो। महा सार सों सार बजायो ॥ ४१ ॥

'इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रथे षशटम रुते **'संग्राम प्रसंग'** बरननं नाम द्वितीयो अंशु ॥ २ ॥

अंशु ३

सैद खान प्रसंग

दोहरा

इस प्रकार रण मच रह्यो मेमूखान पठान।
करति शीघ्रता फिरति है तानहिं[1] बान कमान[2] ॥ १ ॥

चौपई

हय कुदाइ चपलाइ प्रहारहि। इत उत बिचरति शत्रु संघारहि[3]।
करि बहादरी गुर दिखरावहि। रिपु को खापति आप बचावहि ॥ २ ॥
सैद खान जिस ढिग सरदारी। जिस के संकल सैन अनुसारी।
तिस के जागे भाग बिसाला। उपज्यो प्रेम आनि तिस काला ॥ ३ ॥
सुजस गुरू को सुन तो रह्यो। नहीं बिलोचन ते कबि लह्यो।
गुनी, उदार, चतुर, तन रूरे*। इत्त्यादिक गुन गन करि पूरे ॥ ४ ॥
जनु जग की सुंदरता जोरी। बिबिधि बिधिनि[4] की बिधहि बटोरी।
सुमति बिचार चार चतुराई। मूरति गुर की एक बनाई ॥ ५ ॥
मनहुं दिखावन निज निपुनाई। गुर तन रचि तिस कीरति पाई।
पदम पत्र आक्रित विच डोरे। खंजन मन रंजन चित चोरे ॥ ६ ॥
रुचिर बिलोचन भले बनाए। मीन पलट आदिक गुण पाए।
मुख मंडल क्या बपुरा चंद। वहु दोशनि ते दीसति मंद ॥ ७ ॥
सदा प्रफुल्लति, अंक न कोई। कमल कहहु किम समता होई।
कौन कौन गुन बरनौं अबै। सुजस[5] कहति जो घर घर सबै ॥ ८ ॥
करामात कामल जग ज़ाहर। सकल कला समरथ सुख ठाहर।
सैद खान सुनि सुनि गुन गन को। चाहति पिख्यो प्रेम कर मन को ॥ ९ ॥
नहि इतफाक बन्यो कबि कोई। जिस तै सतिगुर दरशन होई।
चढ्यो मुहिम[6] अनंदति आयो। अवसर एहु खुदाइ[7] बनायो ॥ १० ॥

---

1. पहन कर 2. तीर कमान 3. मारना, नष्ट करना 4. विधि, प्रकार 5. यश सहित 6. सैनिक आक्रमण 7. परमात्मा

—दरशन हुइ है जंग बहाने। रिदे मनोरथ द्रिड़ अस ठाने।
दल मुकाबले दोनहुं भए। देखनि की इच्छा उर लए।। ११ ।।
तुरकनि ते चित त्रास धरंता। –बिदत मिलौं–इम नहीं चहंता।
—शासत्र बंधि करि सनमुख आवैं। रण हित करनि, दरस दिखरावैं।। १२ ।।
अंतरजामी पीरन पीर। उर की लखहिं प्रेम की धीर।
तौ अबि तेज तुरंग कुदावहिं[1]। कलगी झूलत रूप दिखावहिं।। १३ ।।
अति उतिकंठा[2] लखि चित मेरी। एक बार इत पावहिं फेरी—।
मन के इम संकलप उठावै। वहिर[3] डरति नहिं कछू अलावै।। १४ ।।
जानै—तुरक तरक के करैं। हजो सभिनि महिं बिसतरैं।
पातिशाह नवरंग ढिग कहैं। मो कहु महां निलायक लहैं—।।१५ ।।
इत्यादिक मन गटी गनंता। बिन देखे अतिशै अकुलंता[4]।
जागे भाग प्रेम वशि होयो। बिह्वल भयो चहै गुर जोयो।। १६ ।।
महां भावना उर[5] बिरधानी‡। श्री कलगीधर सो पहिचानी।
सहि न सके ब्रिहु प्रेमी केरा। रोड़ी पर ते उठि बिन देरा।। १७ ।।
ह्वै सुचेत तबि ही कट कसी। सदा प्रेम के जो हैं बसी।
धनुख बान निज पान संभारा। भए तुरंगम[6] पर असवारा।। १८ ।।
करति शीघ्रता हय चग्लाए। ततछिन खान अग्र को आए।
कह्यो 'खान जी ! बन सवधाना। तजि आलस हुइ आयुध पाना।। १९ ।।
खबरदार हुइ शसत्र संभारहु। सहहुं वार कै अपनि प्रहारहु'।
सैदखान विच सैन तमामू[7]। हाथ बंदि झुकि कीनि सलामू[8]।। २० ।।
श्री गुर सूरज को दरसाए। कमल बिलोचन जुग बिकसाए।
महां प्रेम ते गदगद बानी। आनंदति चित तऊ बखानी।। २१ ।।
खुदाइ दी ख़ुदाइत बजिनसि बंदह। बजिनस ख़ुदाइ मुरीद ज़िंदह*।
नहिं समता मोते बनि आवै। रवि खद्योत जथा किम पावै'।। २२ ।।

---

1. कुदाते हैं 2. इच्छा 3. बाहर 4. व्याकुलता 5. हृदय 6. घोड़ा 7. सारी 8. सलाम किया

* इसका शुद्ध पाठ इस प्रकार है :—खुदा आईद ख़ुदा आईद कि मैं आईद खुदा बन्दा, हक़ीकत हर मिज़ाज़ आईद, कि मुरदा रा कुनद जिन्दा।

इसके अर्थ यह है :—"ईश्वर आ रहा है, ईश्वर आ रहा है कि ईश्वर का बन्दा आ रहा है। यथार्थ, स्थूल रूप में आ रहा है ताकि मुर्दों को जिन्दा करे।

† धारण की ‡ सहन करना

श्री कलग़ीधर बहुर[1] उचारा। 'सुनहु खान जी ! बाक[2] हमारा।
चाकर[3] रहिबो डेरे दारी। जंग जीतिबो पाक[4] दारी ॥ २३ ॥
सुनति बाक तजि दियो तुरंगम। छोरी दियो सभि अपनो संगम।
चरन कमल सम पकरे आइ। ऊपर राख्यो सीस टिकाइ ॥ २४ ॥
अति अनंद के अश्श्रू चाले। जिस ते पद सम पदम पखाले[5]।
मारन मरिबे को जहिं बैर। तहिं करि प्रेम लीन बड खैर ॥ २५ ॥
पूरब जनम सिक्ख श्री गुर को। जाग उठ्यो अंकूर सु उर को।
किसू दोश ते पाइ तुरक तन। तद्दपि लागी रही लगन मन ॥ २६ ॥
भूत भविक्ख्यत के गुर ग्याते। करम शुभाशुभ तिस ते जाते।
रिदे प्रवाह प्रेम को लह्यो। कलुख पुंज जिस महिं सभि दह्यो ॥ २७ ॥
क्रिपाद्रिशटि ते धरि सिर हाथा। ततछिन सेवक कीनि सनाथा।
सहित कुटंब जगत को त्यागा। रिदे तीव्र तरि भयो विरागा ॥ २८ ॥
शसत्र तुरंगम सभि दल छोरा। हुइ फकीर[6] गमन्यो बन ओरा।
किह सों मिल्यो न दीख्यो फेर। गयो सु गयो गुरनि मुद[7] हेरि ॥ २९ ॥
जगत असार कूर सभि जाना। साच आतमा सार पछाना।
दुबिधा मिटी ग्यान कहु पायो। राग द्वैख मन मूल मिटायो ॥ ३० ॥
नाना भेद सरब निरवारे। हेर्यो एक ब्रह्म विसतारे।
कोशठ तिमर बिखै को रोका। निकसति[8] जथा प्रकाश बिलोका ॥ ३१ ॥
तन हंता महिं ब्रिती न आई। 'हं ब्रह्मासमि' की लिवलाई।
जिम मुख भयो तितहि चलि गयो। परमहंस आवसथा थयो ॥ ३२ ॥
एक बार संकलप बिलाए। निशचल भयो न बहुर[9] उठाए।
देहि पात कितहूँ हुइ गयो। ब्रह्म रूप ततछिन ही भयो ॥ ३३ ॥
मूल अहंता जनम मरन की। सो मिटि गई न फेर धरनि की।
इव दो दल अविलोकि तमाशा। बिसमाने* गुर केर बिलासा ॥ ३४ ॥
—इह क्या भयो न जान्यो जाई। सैदख़ान कित गयो पलाई।
कै कामण गुर कीनस कोई। बड सरदारी तजि करि सोई ॥ ३५ ॥
सभि धन धाम पुत्र अरु दारा। लरति हुतो तजि कहां सिधारा ?
सगरी सैन चढी जिह पाछे। तजि ऐश्वरज कहां सो गाछे ॥ ३६ ॥

---

1. फिर 2. बात 3. सेवक, नौकर 4. पवित्र 5. धोना 6. सन्यासी हो गया और बनों की ओर चल दिया 7. प्रेम 8. निकले 9. फिर
*फोज

तुरकनि महिं जेते उमराऊ[1]। करति बिचारनि लख्यो न काऊ।
सुनि सुनि दौरि आप महिं मिले। सैदख़ान की बातनि भिले ॥ ३७ ॥
संहर होति सिंह लरि रहे। चमू* बिसाली किम जै लहे।
छुटहिं तीर बर बीरनि गोरी। छाती मूंड अंग दें फोरी ॥ ३८ ॥
इक दिशि राजे करहिं लराई। हेला घालि परे समुदाई।
दिश दूसर महिं तुरक बिसाले। हाल हूल करि हेल सु घाले ॥ ३९ ॥
थिरे न पैर खालसे केरे। लरति घने अरु हटति पिछेरे।
तजि ज्वालावमणी रिपु शमणी। जै चाहति तुरकनि गन दमणी ॥ ४० ॥
भिड़ै[2] भेड़ कबहूँ थिर रहैं। लाखहूं शत्रुनि को किम सहैं[3] ?
सेले[4] सांग[5] तमाचे[6] हते। वाहिगुरू जी की कहि फते ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते '**सैदखान प्रसंग**' बरननं नाम त्रितीओ अंशु ॥ ३ ॥

---

1. अमीर 2. लड़े 3. सहन किया 4. माला 5. बरछी 6. थप्पड़

*प्रसंग

अंशु ४

अवरंग प्रसंग

दोहरा

सैदखान लहि ग्यान को जब गमन्यों रण थान[1]।
सनमुख श्री सतिगुरू के भयो खान रमज़ान ।। १ ।।

चौपई

फेरि तुरंगम तीर चलावहि। करति शीघ्रता आप बचावहि।
इत उत गुर के शूकति जाते। निफल भयो को लग्यो न गाते ।। २ ।।
श्री कलगीधर पिखि[2] चतुराई। इत उत बिचरति हय चपलाई।
इक निखंग[3] ते तीर निकार्यो। जेह बिखै धरि खर संचार्यो ।। ३ ।।
तान कान लौ बान प्रहारा। ततछिन तरै तुरंग ते डारा।
तिस को देखति तुरक तरासे। इक सर ते रमज़ान बिनाशे ।। ४ ।।
सिंहनि की दिशि हेला डार्यो। भज्यो खालसा धीरज हार्यो।
लाखहुं तुरक कहां लग लरैं। गुरू आसरे बिन क्यों थिरैं ।। ५ ।।
भाजत आनंद पुरि लग आए। लूटनि लग्यो वसतु समुदाए।
श्री गुजरी माता धन जहां। लूट लीन कुछ पहुंचे तहां ।। ६ ।।
मुग़ल पठान लूट तौ करैं। तऊ गुरू ते उर बहु डरैं।
ले ले वसतु खुशी हुइं ज़ाहर। नहीं जनाइं त्रास[4] को बाहिर ।। ७ ।।
कुछक लूट करि तूरन मुरे। जीत पाइ करि निकट न थिरे।
डरति दूर हुइ डेरा घाला। कुछ अराम करि निस पुन चाला ।। ८ ।।
अधिक शीघ्रता मग चलि आए। पुरि सिर्हंद ठहिरे दिढ[5] थाए।
कित कित के भाजति सिख गए। रण पाछै सतिगुर ढिग[6] अए ।। ९ ।।
पशचाताप करति मुरझाए। हाथ जोरि करि बाक सुनाए।
'प्रभु जी ! प्रथम जीत करिवाई। पातशाहु ! पुन दए हराई ।। १२ ।।
अबि भी बचन आप को होइ। मिलहिं पहुंचि जिस थल रिपु होइ।
पलटा लेहिं लूट जिन करी। मारहिं लरहिं पाइ फल अरी' ।। ११ ।।

---

1. से 2. देख कर 3. भत्था, तरकश 4. भय 5. स्थिर 6. पास

सकल[1] खालसा जबि चलि आयो । श्री मुख ते कहि बाक सुनायो ।
'सिक्खहु सुनहु सुछंद[2] न हम हैं । जिम अधीन हमरे सभि तुम हैं ।। १२ ।।
तिम हम बसि परब्रह्म चलंते । इशुर की आइस बरतंते ।
जिस की आग्या महिं सभि रहैं । रिदे निरंतर डर को लहैं ।। १३ ।।
जिस जिस की जस करी म्रियादा । रचना जग की ते जो आदा ।
तिस ते बाहर नहिं, निज रोकैं । इम कहि सतिगुर पठ्यो शलोकैं ।। १४ ।।

सलोक म: १ ।

भै[3] विचि पवणु वहै सदवाउ ।। भै विचि चलहि लख दरीआउ ।।
भै विचि अगनि कढै वेगारि ।। भै विचि धरती दबी भारि ।।
भै विचि इंदु फिरै सिर भारि ।। भै विचि राजा धरम दुआर ।।
भै विचि सूरजु भै विचि चंदु ।। कोह करोड़ी चलत न अंतु ।।
भै विचि सिध बुध सुर नाथ ।। भै विचि आडाणे आकास ।।
भै विचि जोध महा बल सूर ।। भै विचि आवहि जावहि पूर ।।
सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु ।। नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु ।।

चौपई

इह शलोक सभि पठ्यो सुनायो । तऊ पंथ को मन मुरझायो ।
—बिजै लई गन तुरक सिधारे । गुरू अलंब सिंह गन हारे— ।। १५ ।।
इम लखि गुर सों बहुर बखाने । 'मुगल पठान दिली लगि हानें' ।
सुनि श्री मुख ते हरखति[4] भए । एक जामनी महिं थित लए ।। १३ ।।
भई प्राति बजवाइ नगारा । चढ्यो बहुर[5] सिंहनि दल सारा ।
करति शीघ्रता मिले सु धाई । जाहिं रिपुनि दल मग चलि जाई ।। १७ ।।
परे धाड़वी सम हुइ तबै । मिल्यो शत्रु मारन किय सबै ।
रुंड मुंड करि दीनि घनेरे । पलटा लीन कीन जिन नेरे ।। १८ ।।
लूट कूट करि लीन बिहीर । रौरा[6] पर्यो चले भय भीर ।
बिसमति भए न जाने जाई । —कित ते मिले बीर समुदाई— ।। १९ ।।
आप आप के पंथ पधारे । मिले तुरक जो सिंहनि मारे ।
महां त्रास बीत्यो मग जाते । औचक[7] परे ब्रिंद रिपु घाते ।। २० ।।
नहीं संभाल परसपर होई । देखि देखि भाजै* सभि कोई ।
लाखहुं लशकर बिचल्यो भाजा । पीछे रह्यो सु लुट्यो समाजा ।। २१ ।।

---

1. सगल 2. स्वाधीन 3. भय 4. हर्षित 5. फिर 6. शोर 7. भीड़, कष्ट

*भागे

फते लीनि अरु लूट घनेरी। पलटा लीन हटे तिस वेरी।
पंथ बजाइ अनंद पुरि आए। श्री गुर जी की फ़ते बुलाए ॥ २२ ॥
मुदित होइ दरशन सभि कर्यो। शत्रू हनति प्रसंन उचर्यो।
श्री मुख ते मुसकाइ बखाना। 'सिंहनि काज, हतन[1] तुरकाना ॥ २३ ॥
पंथ खालसा ज्यों अधिकै है। त्यों त्यों तुरक नाश को पै हैं।
लेंहिं बैर को बदला ऐसे। रहे नगार बंद नहिं जैसे' ॥ २४ ॥
हुइ प्रसंन सिंहनि बर दीनो। 'राज तेज हुइ प्रापति पीनो'।
इत प्रसंग गुर ढिग इम भयो। कितिक लुटाइ लूटि पुन लयो ॥ २५ ॥
उत गति तुरकाने की सुनीअहि। भाजे हुइ बिहाल[2] भट हनीअहि।
शाहु नुरंगे निकटि पुकारे। 'गुर के दल सिंहनि हम मारे ॥ २६ ॥
जो उमराव गयो बन बीर। देखति गुर को भयो फकीर।
जान्यों गयो न कित को गयो। सभि लशकर महिं अचरज[3] भयो ॥ २७ ॥
बडो बहादर जो रमज़ान। मारि दीन तजि कै इक बान।
अलप चमूं कुछ गुर कै संग। हते हजारहुं करि करि जंग ॥ २८ ॥
आवति लूट लीन धन सारा। मग महिं लशकर[4] मिलि करि मारा।
सुनति नुरंगा बहु पछुतायो। पाति शाहित मैं रौर मचायो ॥ २९ ॥
करामात को सुनि सुनि जरे। गुर बडिआई को नहिं जरे।
सिर को धुनि धुनि मन दुख पावै। कहां करै कुछ बस न बसावै ॥ ३० ॥
—इन के पिता संग मैं अर्यो। दिल्ली पुरि ते बाहिर कर्यो।
अबि इह सभि ब्रिधि जोर जनावै। गहे बिनां इन क्यों बनि आवै—॥ ३१ ॥
इत्यादिक विचार बहु बाती। नीठ नीठ‡ करि बितई राती।
प्राति समैं निज सभा लगाई। मंत्री स्याने लीन बुलाई ॥ ३२ ॥
काजी ब्रिंद मौलवी आए। दीनं शारा के हठी सुनाए।
जबि सभि बैठे हुकम उचारा। 'जे भगैल* आए रण हारा ॥ ३३ ॥
करहु हकारनि कहैं प्रसंग। कैसा पिखयो गुरू विच जंग'।
आनि खरे जबि भए अगारी। हित बूझन के शाह उचारी ॥ ३४ ॥
'हिंदू गरदी[5] कहां मचाई? चमूं कितिक निज संग मिलाई?
कैसा पिखयो बहादर बीर? फैसल बंदा मुरशिद[6] पीर' ॥ ३५ ॥

---

1. मारना, आक्रमण-कारी 2. दुर्दशा 3. अजीब 4. सेना का एक भाग
5. गुंडा गर्दी ‡कठिनाई से 6. गुरु
*भगोड़े †कठिनाई

सुनति अहिदीए कर्यो उचार। 'इक ते लाख, खरच बिसीआर[1]।
सभि बिधि जानहुं अैन हुशीआर। सुंदर, उमर सु बरखुरदार[2] ॥ ३६ ॥
बोल्यो सुनति शाह मन बादम[3]। 'मुरदम आखरी बहि निशादम[4]।
वड सरदार सु ज़िंदा पीर। खावद[5] खलक बंदिबे पीर ॥ ३७ ॥
हिंदू तरीफ खैर खवाइ। खारज करदम मजब हवाइ'।
इम कहि कै सुलगति जिस छाती। बोल्यो वहुर सभा महिं बाती ॥ ३८ ॥
'करीए कहां बरोब्र नहीं। मजब मबूब[6] नहीं मैं लही'।
सुनि सभि स्याने बाक बखानैं। 'जेती मति जेतिक चित जानैं' ॥ ३९ ॥
पीछे काज़ी बाक उचारा। 'जउ सभि बिधि करि सो हुशीआरा।
करो मुहब्बति साथ बुलावन। देखहु रूप सुनहु बच भावन ॥ ४० ॥
परख लेहु जेतिक सो होइ। जिह तरीफ करता सभि कोइ'।
सुनति सभा सद अरु पतिशाहू। बुधि काज़ी की करति सराहू ॥ ४१ ॥
'आछी कही, बनहि इस रीति। करहिं बुलावन जिम हुइ मीत।
सुमति खूब काज़ी इहु भाखी। लिखहु प्रवाने' आइसु आखी ॥ ४२ ॥
'पतिशाही इक ही की होइ। उर अंतर नीके लिहु जोइ।
परवाना हेरति ही आवहु। हम तुम मजब[7] एक लखि पावहु ॥ ४३ ॥
नाहिं त मैं पहुंचहुंगा तहां। करि बहादरी बैठ्यो जहां।
अज़मत जितिक फकीरी केर। बिच जहान ते जैहै फेर ॥ ४४ ॥
पीर फकीर बडे लघु अहैं। पतिशाही घर महिं जिम रहैं।
तैसे तुम भी रहिबो करोअहि। नहिं बिरोध किम उर महि धरीअहि' ॥ ४५ ॥
वड हंकार हकीकत और। जिम पतिशाही को हुइ तौर।
परवाने महिं बहु लिखवाई। 'बखशिश हम दरगाहि ते पाई ॥ ४६ ॥
पतिशाहति की किय बखशीश। परवदगार[8] कला जगदीश'।
दे परवाना पठे वकील। करि तगीद[9] 'जावहु बिन ढील' ॥ ४७ ॥
श्री कलग़ीधर के ढिग आए। सभा लगाइ हज़ूर बुलाए।
सभि अहिवाल सुन्यो जब कान। उतर लिखवायहु तबि जान ॥ ४८ ॥
'जिस ते बखशिश प्रापति तोही। तिसी पुरख ने भेज्ये मोही।
न्याउ करन के हेत पठायो। बिसर गयो तैं दंभ कमायो ॥ ४९ ॥
यांते किम तुझ संग बनि आवै। जो हिंदुनि संग बाद[10] उठावै।
खलकत नहिं खुदाइ की जानी। चाहति करी धरम की हानी' ॥ ५० ॥

---

1. अधिक 2. प्यारा 3. बुरे मन वाला 4. बिठा दूंगा 5. स्वामी
6. प्रेमी 7. धर्म 8. पालन करने वाला 9. ताकीद 10. झगड़ा

रूखसद[1] तबि वकील को कीन । खिलत दरब[2] जुति तिन को दीन ।
गए जाइ अवरंग सुनायो । 'नहिं आवति लखि अधिक रिसायो' ॥ ५१ ॥

इते प्रसंग नुरंगे केरा[3] । सुनहुं गिरेशुनि[4] जथा बखेरा ।
लूटि कूटि करि सदा लराई । करति सिंह बिचरति समुदाई ॥ ५२ ॥

इस रण को सुनि देश बिदेश । मिलि सिख संगति आइ विशेश ।
दिन प्रति आइ हज़ारहुं भए । शसत्र धरहिं बिचरनि गिर लए ॥ ५३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'अवरंग प्रसंग'** बरननं नाम चतरथो अंशु ॥ ४ ॥

---

1. विदा 2. धन 3. का 4. पर्वतीय राजे

अंशु ५

भीमचंद पुकार करन प्रसंग

दोहरा

देख्यो[1] बडो कसूत को गुर की जबरी बात।
पंथ खालसा मिटति नहिं वधति जाति अवदात ।। १ ।।

चौपई

भीमचंद दुख पाइ घनेरा। ग्राम उजारे, बहु बल हेरा[2]।
गुरू सूरमा रण प्रिय अहै। सदा जंग चित चाहति रहै ।। २ ।।
भयो बिवस कुछ जतन न जान्यों। होनि पुकारू मिल मति ठान्यों।
सभि राजन नीकी मन मानी। ले करि धन गन त्यारी ठानी ।। ३ ।।

दोहरा

भीमचंद कहिलूरीआ लीनी हंडूरी नाल।
करे कूच दर कूच को दिल्ली गए उताल ।। ४ ।।

चौपई

दे करि भेट बहुत बिधि नाना। ग्रीव निवाइ सलाम बखाना।
मिल सूबे संग अरज़ गुजारी। 'इक हज़रत है ओट हमारी ।। ५ ।।
बहु संमति बीते चढि गयो। अपने थान तुमे करि दियो।
यांते हमरे हो रखवारे। ज़ेर ज़ुलम जो करहि निवारे ।। ६ ।।
आगे तुमहु हिमायति करी। दस हज़ार सैना बलि भरी।
पठि उपराला कीन हमारा। मच्यो जुद्ध दारुन तिस बारा ।। ७ ।।
पुन सिर्हंद को सूबा गयो। लरि करि गुर सरिता तट लयो'।
सुनि सूबे गिरपति समुझाए। 'शाहु निकट गमनहु बनि आए ।। ८ ।।
मैं लिखि पठहुं सकल अहिवाल[3]। ज़ुलमी[4] तुम पर होति कमाल।
तहिं ते हुकम लेहु बहु दल को। लरहु बहुर हेरहु रिपु बल को' ।। ९ ।।

---

1. देखा (पहाड़ी राजाओं ने देखा) 2. गुरु जी का बल देखा 3. दशा
4. ज़ालम

नेक सलाह जानि सभि राजे। मिले शाह बिन बनै न काजे[1]।
सूबे ते अहिवाल लिखायो। निज पहुंचनि ते प्रथम पठायो ॥ १० ॥
दुरग गोलकुंडा[2] बड जहां। लरति नुरंगा बास्यो तहां।
नौमे पातिशाहु के साथ। करी अत्रगया दिल्ली नाथ ॥ ११ ॥
तबि को नहीं बसनपुरि पायो। मिस महिम ले दक्खन धायो।
हठी बिलंद मूढ़ चवग्गता। गुर सन द्वैखी महां कुपत्ता[3] ॥ १२ ॥
दिल्ली ते चढ़ि करि गिरनाथ। गमने तवि बड तूरन साथ।
करे कूच दर कूच हमेशू। उलंघे पंथ अशेस विशेशू ॥ १३ ॥
पहुंचि तहां डेरा निज घाला। मिलि उमरावनि कहि अहिवाला।
रिशवति दे धन वसतु अछेरी। 'आइ पुकारू-सुधि देहु मेरी' ॥ १४ ॥
बहु अमरावनि शाह जनाई। श्री गुबिंद सिंह धूम उठाई।
राजे बडे खेद को पाइ। करनि पुकार इहां लग आइ' ॥ १५ ॥
सुनिकै शाह बुलावनि कीने। गइ निकटि भेटा गन दीने।
ठांढे हाथ जोरि करि रहे। बूझे सभि ब्रितांत तवि कहे ॥ १६ ॥
'देश न बसन देति दल कीनो। गुरू निडर किसि त्रास न चीनो।
सदा जंग के संग सनेहू। हम सन ठानति बेर अछेहू' ॥ १७ ॥
सुनि अवरंगे बूझ्यो फेर। 'क्यों तुम संग गुरू को वैर।
सैना दीरघ प्रथम पठाई। तऊ न तुमरी रार मिटाई ॥ १८ ॥
गुर ढिग राज देश किछु नाहीं। कहां देति लशकर रखि पाही।
जथा ब्रितंत छोर ते सारो। अबि तुम मोहि सनीर उचारो' ॥ १९ ॥
सुनि कर जोरति कथा बखानी। जिम बीती निज संग कहानी।
'गुर को पिता मोल ले थान। तहां दसावनि करि नर आन[4] ॥ २० ॥
पुरि बसाइ पूरब चलि गए। उत ही पटणे इह जन मए।
सो तो सुरगबास जवि भए। बय लघु महिं इत कौ गुर अए ॥ २१ ॥
बसि करि कुछ तन सुरति संभारी। राखे चाकर आयुध धारी।
ग्रामनि महिं अखेर को जाइं। खेती देति उजार सु थाइं ॥ २२ ॥
तवि हम ने मिलि दीनसि जोर। गमन्यों शारमौर[5] की ओर।
तहिं भी पहुंचे धूम उठाई[6]। रामराइ के नर समुदाई ॥ २३ ॥

1. काम 2. दक्षिण में है 3. झगड़ालू 4. बाहिर से लाकर लोग बसाए
5. पाउंटा साहिब 6. धूम धाम के साथ

हुते मसंद मार सभि दीने। राजन संग बखेरा[1] कीने[2]।
हरीचंद दीरघ धनु धारी। तहां जंग करि लीनसि मारी ॥ २४ ॥
सगल सैलपति दए भजाई। जमना तट निज पुरी बसाई।
कितिक समां बसि तहां वसायो। पुन औचक आनंद पुरि आयो ॥ २५ ॥
तहिं हुइ थिर पूजन करि काली। भीमा कीनी बिदत कपाली।
ले बर रच्यो पंथ इक भारी। हिंदू तुरकनि ते बिधि न्यारी ॥ २६ ॥
हम जबि गए निकट इक बारी। सभि को सिक्खया हेतु उचारी।
—तुम भी सिंह बनो सुख पावहु। राज समाज सकल बिरधावहु ॥ २७ ॥
दिल्लीनाथ[3] साथ हम द्वैश। तिह संग करीअहि जंग विशेश।
लेउं पिता का बैर महाना। करों खपावन मैं तुरकाना ॥ २८ ॥
रावरि नाम गुरू जबि लयो। सुनि हम सकल त्रास मन अयो।
दे जवाब तबि नांहिन माने। हज़रति को निज खावंद[4] जाने ॥ २९ ॥
चढ़ करि गए आपने डेरे। हम ते पीछे सिंह घनेरे।
चारहुं बरन करे इक थाइं। इकठे भोजन सभिनि खुवाइ ॥ ३० ॥
तिन सों कहै गहो हथ्थयारं। सदा जुद्ध सन धरीअहि प्यारं।
पातिशाहु आदिक महिपाला। तुम को सकल भरैंगे हाला ॥ ३१ ॥
सभा मलेछनि छिप्प्र उठावहिं। लूट कूट गन तुरक खपावहि।
पिता मात असिधुज असिकाली। पंथ सहाइक निज रखवाली ॥ ३२ ॥
तुरकनि सन रण इह उपदेशू। देति तिनै उतशाह[5] विशेशू।
प्रथम सैंकरे सिंह भए हैं। अबै हजारहुं सिंह थए हैं ॥ ३३ ॥
सो चढि करि आयुध कर धरिकै। सैल देश लूटति नित बरिकै।
हम बहु छिमा करति ही रहे। मिटति नहीं विम, जबि उर लहे ॥ ३४ ॥
दिल्ली बिखै आनि हम कह्यो। तुम ढिग सुधि पठिकै सभि लह्यो।
द्वै उमराव गए चढि जबै। दस हज़ार लशकर[6] ले सबै ॥ ३५ ॥
पठि उपरालो[7] कीन हमारा। मच्यो जुद्ध दारुन[8] तिस बारा।
पैंड खान अरु सतिगुर संग। भयो जंग द्वै हते खतंग ॥ ३६ ॥

---

1. झगड़ा 2. क्रिया 3. औरंगज़ेब 4. मालक 5. उत्साह 6. सेना 7. यत्न 8. भयानक

निफल खान के सर द्वै गए। गुर इक मार्यो हय उथलए।
सैफ संग सिर काटि उतारा। दीन बेग घाइल दुखि भारा॥ ३७॥
खिदराबाद ग्राम लगि आए। मारति मरति पठान पलाए।
जे करि लशकरि शाह पलायो[1]। सिंहनि दल पीछे तिन धायो॥ ३८॥
हम राजनि की गिनती कहां। लर करि सनमुख ठहिरहिं तहां।
पीछे ते पुन धूम उठाई। लूट कूट करि मार मचाई॥ ३९॥
सकल सैलपति[2] तबहि बटोरे। मैं तबि कह्यो सुनहुं मति भोरे!
दल वधतो नित सिंहनि केरा। जिनहुं इरादा धर्यो बडेरा॥ ४०॥
राज लेनि की उर महिं इच्छा। क्यों बैठे, तुम करति न पिच्छा।
इत्यादिक समुझाइ हकारे। मिले सभिनि के दल बड भारे॥ ४१॥
बाई धारनि की ठकुराई। कीन इकत्र चमूं[3] समुदाई।
आनि अनंद पुरि रण बड कर्यो। बीर केसरी चंद सु मर्यो॥ ४२॥
घाइल सुभटनि गिनती नांहि। मरे हज़ारहुं रण के मांहि।
बडी मुहिम गिरेशुनि रही। नहीं पराजै सतिगुर लही॥ ४३॥
लरे कितिक दिन खरच्यो दरबा। बहु बिधि हारि परे जबि सरबा।
आनि धेनु की दीन निकारा। निकस्यो गुरू बजाइ नगारा॥ ४४॥
जंग बिसाल डालि ततकाला। चहुंदिशि घेर लीनि मिलि जाला।
लिख्यो आप को पहुंच्यो जबै। सीरंद को सूबा चढि तबै॥ ४५॥
मिली आनि करि सैन महांनी। लर्यो सभिनि सन बनि धनुपानी।
सने सने सत्तद्रव के पार। गमन्यों जाइ थिर्यो तिस बार॥ ४६॥
केतिक दिवस बितावन करे। सकल गए दल निज निज घरे।
पुन औचक[4] चढ़ि करि ततकाला। हुतो ग्राम कलमोट ब्रिसाला॥ ४७॥
लूट कूट करि सकल उजारी। केतिक मानव दीनसि मारी।
आनि अनंदपुरि महिं तबि बर्यो। ऊधम अधिक उठावनि कर्यो॥ ४८॥
द्वै उमराव पंथ महिं आवति। लर्यो तिनहुं सों बैर बधावति।
एक पठ्यो गुर सों मिलि गयो। सैदबेग तिन ढिग थित भयो॥ ४९॥

---

1. भेजा 2. सेनापति 3. सेना का एक भाग 4. अचानक

बहुर सवा लख सैना संग। दिवस अलप भे माच्यो जंग।
सभि राजे मिलिकै तिसकाल। होनि लग्यो संग्राम बिसाल ॥ ५० ॥

गुरू आप रण महिं तबि आयो। सैदखान देखति बिकुलायो।
शसत्र छोरि पाइनि पर पर्यो। निकसि गयो किह नहीं निहर्यो ॥ ५१ ॥

हमहुं जंग करि लूट मचाई। हन्यों खान रमज़ान तहां ही।
लशकर हटि आयो पुन उरे[1]। हुइ बटपार सिंह तबि परे[2] ॥ ५२ ॥

नाश हज़ारहु को करि दीनि। स्री गोबिंद सिंह इम बल पीन।
हम हुइ दुखी पुकारू आए। हतहु, गहहु, दल पठि समुदाए' ॥ ५३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'भीमचंद पुकार करन प्रसंग'** बरननं नाम पंचमो अंशु ॥ ५ ॥

---

1. पास 2. दूर

अंशु ६
भीमचंद बाक प्रसंग

दोहरा

भीमचंद कर बंदिकै भन्यो सकल अहिवाल।
'तुम मालिक हमरे सदा करहु आप प्रतिपाल ॥ १ ॥

चौपई

श्री नानक गादी पुर बैसा। हुकम चलावै सुरपति जैसा।
अबि तिस ते कीजै रखवारी। नतु दै है गिर दून उजारी ॥ २ ॥
राज अकारथ हमरो कर्यो। लूट कूट बिन दुतिय न धर्यो[1]।
लरिकै बहुत काल हम हारे। हुइ लचार[2] सभि इतहुं पधारे ॥ ३ ॥
अबि लशकर जे पठहु वडेरा। तोप जंबूरे साज घनेरा।
अलप चमूं ते काज न सरै[3]। तिस को त्रास गुरू नहिं धरै ॥ ४ ॥
गहि लीजै कै रण महिं मारो। तौ अपनो सभि काज सुधारो'।
सुनि नुरंग[4] मन भयो हिराना। —जिसने एव करन को ठाना ॥ ५ ॥
सो थोरनि ते किम सुधि[5] आवै। मारन मरन जिसै मन भावै।
पैंडखान बाननि सों घायो। लरिके खान वजीद पलायो ॥ ६ ॥
सैद बेग अरु सैदेखान। बने मुरीद पीर को मानि।
सवा लाख सैना भजि आई। अधिक समाज लुटाइ बिहाई[6] ॥ ७ ॥
असि नहिं होइ फतूर[7] उठावै। दिल्ली लगि लरितो चलि आवै।
फिरहि मुलख[8] ह्वै तिस अनुसारा। पठे वकील न आइ हकारा[9] ॥ ८ ॥
पंथ[10] हज़ारों नर नित बनैं। आयुध धरि धरि रण कहिं हनैं—।
कह्यो कोप करिकै तिस काला। 'जो दिल्ली महिं चमूं' बिसाला ॥ ९ ॥
सो सभि राजनि के संग होइ। करहिं अनंदपुरे पर ढोइ[11]।
सीरंद को सूबा दल जोरि। सोपि चढै सतिगुर की ओर ॥ १० ॥

---

1. दूसरा काम नहीं करता 2. निराश 3. होना 4. नाम है 5. होश 6. दौड़ना 7. शैतानी 8. देश 9. बुलाया हुआ 10. सिख धर्म 11. चढ़ाई

उत लवपुरि दिश दल जहिं कहां। ज़बरदसत ले करि संग महां।
गुर की दिशि सभि करैं चढाई। अटक प्रयंत चमूं समुदाई' ॥ ११ ॥
'जबि अवरंग इम हुकम बखाना[1]। लिखे पत्र जहिं कहिं बिधि नाना।
भीमचंद करि हरख[2] महाना। खरो जोरि कर कहति सुजाना ॥ १२ ॥
अबि गमनहिगी चमूं बिसाला। हम भि देश नर जोरहिं जाला।
एक बार सगरे बल करि हैं। गुरू शत्रु को देश निकरि हैं ॥ १३ ॥
जे न करति रावरि उपराला। हमरे साथ लरति चिरकाला।
वधति नितप्रति दल वड करति। पुन इक दिन तुम सन भी लरति ॥ १४ ॥
इसी हेतु ते आप बिचारहु। अहै अलप रिपु गहहु कि मारहु'।
सुनिकरि रिहे तपहि चवगत्ता[3]। राज मान ते बहु मदमत्ता ॥ १५ ॥
पैंड खान को मरिबो सुन्यों। दीनबेग घाइल तन भन्यों।
—पाइ देश महिं दुंद[4] बिसाला। लोक हज़ारनि को किय काला— ॥ १६ ॥
कुप्यो अधिक आइसु तबि दीनि। 'अबि चढ़ि जाउ गिरेंद्र प्रबीन !
लशकर वडो बटोरनि करो। ह्वै इक तान गुरूसंग लरो ॥ १७ ॥
सभि परबत के राजे मिलो। करि करि बल को रण रिपु भिलो।
सभि दिल्ली ते फौज चढावहु। ज्यों ज्यों करि गुर को गहि ल्यावहु' ॥ १८ ॥
इस प्रकार ही पत्र पठाए। तूरन गन कासद तबि धाए।
भीमचंद को दै सिरुपाऊ[5]। निज समीप ते कीन बिदाऊ ॥ १९ ॥
दिल्ली को प्रथमै चलि आयो। आनंदति चित डेरा पायो।
सूबे संग मिल्यो धन दै कै। शाहु मिलनि बिरतांत बतै कै ॥ २० ॥
सकल हकीकति कहि समुझाई। 'हज़रत की आइसु इम आई।
—गिर की सैना अखिल बटोरो। भ्राता बंधु समूह निहोरो ॥ २१ ॥
सीरंद को सूबा लै जावो। लवपुरि[6] को निज संग चढावो।
इम सभि देशनि के दल चढैं। तौ अनंदपुरि ते गुर कढैं ॥ २२ ॥
नतु थोरे दल जे चढि जावै। मारति लरति तुफंग बजावै।
दिढ काइम आनंदपुरि राखै। अर्यो रहै सभि सों मन माखै ॥ २३ ॥
सुपने महिं भी त्रास न जिन के। केहरि समता पाईअहि तिन के।
थोरे घने[7] शत्रु नहिं गिनै। सनमुख पहुंचि क्रिपाननि हनै ॥ २४ ॥
तिसी हेतु ते लशकर[8] घने। पहुंच लरैं, पकरैं, कै हने।
सुनि सूबे गिरपति[9] ते सबै। सभि कारन के बूझ्यो[10] तबै[11] ॥ २५ ॥

---

1. कहा 2. क्रोध 3. मुग़ल 4. झगड़ 5. सिरोपाव 6. लाहौर 7. कुछ 8. सैना 9. पर्वतीय राजे 10. जाना 11. उसी समय

कौन जात के भट तिह पासा ? जिस ते अस तुम त्रास प्रकाशा।
गिनती बिखै चमूं कहु केती ? लरहि निकसि[1] तुम भाखहु तेती ।। २६ ।।
आप गुरू क्या आयुध धारै ? किस प्रकार करि बहु नर मारै ?।
कैसे दुरग मवासी पाए। कौन देश को राज कमाए ? ।। २७ ।।
सभि समाज तिस कर्यो बतावहु। किम ज़ोरावर बहु ठहिरावहु ?'।
सुनि करि भीमचंद कर बंदि। भाख्यो सकल प्रसंग बिलंद ।। २८ ।।
पटणे नगर जनम गुर पाए। पूरब ते पूरब इत आए[2]।
अपन सथान जान करि बासे। बालक बय महिं बल नहिं भासे ।। २९ ।।
शांति सुभाव पिता इन केरो। मानैं गुर करि सिक्ख घनेरो।
तिन के सम इन को हम जाना। दीन बसन आनंदपुरि थाना ।। ३० ।।
संगति आइ पुंज[3] ही जाती। अनिक अकोरन का अरपाती।
केतिक संमति समा बितायो। तरुना पन जब तन महिं आयो ।। ३१ ।।
हम सों करन शत्रुता लाग्यो। आयुध विद्या महिं अनुराग्यो।
एक बार हम तबै निकासा। आन कर्यो जमना तट बासा ।। ३२ ।।
तहिं भी दुंद मचायो ऐसो। दारुण युद्ध मच्यो तबि तैसो।
फतेशाह सों करी लराई। गराम दामले खान खपाई[4] ।। ३३ ।।
पुन केतिक संमति महिं आयो। आनंदपुरि-को आनि बसायो।
करन लग्यो देवी की पूजा। तज्यो सरब ही कारज दूजा ।। ३४ ।।
प्रिदत करी जगदंबा जबै। बड उतपात रच्यो इक तबै।
खंडे की पाहुल को देति। मानव मिलि मिलि ब्रिंद सु लेति ।। ३५ ।।
कहै—खालसा मैं इह कीना। न्यारो हिंदु तुरक ते चीना—।
शसत्र हाथ तिन के गहिवावै। मारन मरन उपदेश द्रिडावै ।। ३६ ।।
कहै—तुरक सों बैर करीजै। दिल्ली आदि देश सभि लीजै—।
दिज खत्री अरु बैश शूद्र गन। इक थल सभिनि अचावति है भनि ।। ३७ ।।
पूरबली मिरजाद तिआगी। सिर पर केश, काछ अनुरागी।
एक बार हम को बुलवाए। केतिक गिरपति[5] दरशन पाए ।। ३८ ।।
कह्यो—खालसा तुम हुइ जावो। देश बिदेश राज सभि पावो।
चवगत्ते आदिक महिं पाला[6]। सगरे देहिं तुमहिं कह हाला[7] ।। ३९ ।।

---

1. निकल कर 2. पूर्व दिशा के इस ओर आए थे 3. अधिक 4. करनाल जिले के एक गांव दामले के कुछ पठान जो भंगाणी—युद्ध के समय शत्रु के साथ मिल गए थे 5. पहाड़ी राजे 6. राजे 7. हाल

अवरंग संग जंग को करीअहि। छत्र आपणे सिर पर धरीअहि।
दिल्ली नाथ हत्यो[1] पित मेरा। सो बलि करि लैहों बड बेरा ।। ४० ।।
इतिक इरादा सतिगुर कर्यो। शाहु नाम ते मन बहु डर्यो।
हम तो सुनति सदन उठि गए। पीछे चार बरन[2] सिख भए ।। ४१ ।।
सो चाहति है बैर बधायो। लरहि तुमारे संग रिसायो।
यांते आप जानीअहि नीके। इस विधि के हैं सुभट तिसी के ।। ४२ ।।
मारन मरनि जहां कहि करैं। थोर बहुत की कान न धरैं।
दिन प्रति वधति जाति तिह पंथा। मैं समुझाइ कही सभि संथा[3] ।। ४३ ।।
हम सों बैर थोर ही अहै। सो विरोध दिल्ली सन कहै।
नित प्रति देश फतूर उठावै। लूटहि कूटहि बसन न पावै ।। ४४ ।।
–शाहु साथ क्यों करहु न जंग–। यांते बैर पर्यो हम संग।
निस दिन टिकन देति किस नांही। खेती ह्वै न खेत के मांही ।। ४५ ।।
अबि सहाइता करहु हमारी। चलि आए सभि शरणि तुमारी।
गड़ अनंद को देहु छुटाई[4]। संकट सगरो तबि मिटि जाई ।। ४६ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते '**भीम चंद बाक प्रसंग**' नाम षशटमों अंशु ।। ६ ।।

---

1. बलिदान 2. सभी वर्णों के लोग 3. कथा 4. छोड़ना

अंशु ७

जंग तिआरी प्रसंग

दोहरा

नहीं राज किस देश को दुरग बिसाल न कोइ।
चमूं सिह कबि बहुत ह्वै कबि घर गमनैं सोइ ॥ १ ॥

चौपई

आप गुर धन विद्या पंडित। गजब[1] गुज़ारे[2] बाननि छंडति।
पैंडखान से जिनहिं खपाए। तीर अनूपम ब्रिंद चलाए ॥ २ ॥
श्री नानक गादी पर थिर्‌यो। सतिगुर रामदास बिदतयो।
तिन को सुत श्री अरजन होवा। मति संतन को सुनि करि जोवा ॥ ३ ॥
श्री गुर हरगोबिंद तिन नंदा। भयो प्रथम सो वीर ब्रिलंदा[3]।
हज़रति[4] शाह जहां के संग। हति उमराव[5] करे बड जंग[6] ॥ ४ ॥
तिस कौ पौत्र बिलंद बहादुर। पिता संत स्री तेग बहादर।
तिनहुं ज़िमी तहिं मोल सो लीनी। आनंद पुरा बसावन कीनी ॥ ५ ॥
इह सभि भेव आप सों कह्यो। करहु काज जैसे चित चह्यो'।
भीम चंद ते सुन्यों ब्रितांत। जान्यों सूबे तब्रि भलि भांति ॥ ६ ॥
कह्यो 'न्रिपति ! ले करि दल जावहु। चहुं दिशि घेरहु जंग मचावहु।
दोनो सूबे होइ तुम साथ। लाखहुं सैन तुफंगै हाथ' ॥ ७ ॥
इम कहि पत्त्र लिखे ततकाले। पुरि सिर्‌हंद लवपुरि को चाले।
'सगरी चमूं लेहु निज संग। करहु अनंदपुरि गुर सो जंग ॥ ८ ॥
मिलहिं मेल लेहु सनमानहु। हज़रति के समीप गुर आनहुं।
नतु गिरपतिनि साथ लिहु सारे। लरहिं अरहिरण महिं लिहु मारे' ॥ ९ ॥
जहिं जहिं धावन करे पठावनि। 'चढहु न बिलमहु अपने थावनि।
इत्यादिक सुनि करि हरखायो। भीमचंद हुइ त्यार अलायो ॥ १० ॥

---

1. आश्चर्य 2. करता है 3. अधिक 4. महान 5. अमीर 6. भयानक युद्ध

'नितप्रति सुधि सुनि करि सहिसाइ। करति रहो सभि रीति सहाइ'।
करि सलाम घिघिआइ घनेरा। सूबे ते रुखसद[1] तिह बेरा ॥ ११ ॥
मजल[2] बडी करि तूरन[3] धायो। देश कलूर आपणे आयो।
जहिं कहिं सैलपती समुदाए। लिखे पत्त्र परधान पठाए ॥ १२ ॥
दिल्ली को प्रसंग सभि कह्यो। लघ दीरघ सभिहिनि सन लह्यो।
भइ त्यार निज निज दल जोरे। जिस जिस महिं जेतिक धर ज़ोरे ॥ १३ ॥
इंद्रप्रसत महिं संगति जोई। सुनि प्रसंग सभि लशकर ढोई।
मिलि करि दुरि लिखि करि अरदास[4]। सुधि हित पठी गुरू के पास ॥ १४ ॥
'हे प्रभु ! तुम संमर्थ सभि भांती। सभिनि रिदे की जानहु बाती।
वहिर ब्रितंत क्यों न तुम जानहु। घटि घटि के मालिक पहिचानहु ॥ १५ ॥
तुम सेवा अरु अपनि भले हित। पाती लिखी सुनी जिम भी इत।
राजनि तुम पर करी पुकारा। —हम पर गुरू बली परि भारा ॥ १६ ॥
दक्खन दिशि अवरंगु जु लिख्यो। तिन ब्रितांत पठि करि सभि लख्यो।
दुइ सूबे पर हुकम पठायो। सो चलि करि दिल्ली पुरि आयो ॥ १७ ॥
इन सूबे लखि हज़रत आशे। दोनहुं पर सो हुकम प्रकाशे।
लवपुरि अरु सिर्हंद बड लशकर। लरिबे हेतु[5] आइ हैं तुम पर ॥ १८ ॥
रण के छुधति तुरक गन आवैं। हय गज साथ चौंप ते धावैं।
मिजमानी[6] बहु इनके हेत। करीअहि त्यारी बनहु सुचेत ॥ १९ ॥
सिपर पातरां आगे करि करि। कड़छे पुंज खड़ग कर धरि धरि।
गुलकां शक्करपारे ब्रिंद। करहिं परोसनि शुभत बिलंद ॥ २० ॥
चक्क्र जलेब, सुहारी खपरे। बूंदी अणी तीर गन अपरे।
तोप जंबूर जजैलनि गोरे। मोदक देहु चहति नहिं थोरे ॥ २१ ॥
प्रोसनहार बीर गन धीर। करहु इक्कत्र प्रभू इन भीरु।
इम लिखि धावन हाथ पठाई। तूरन ही आनंद पुरि आई ॥ २२ ॥
'दिल्ली संगति बंदति सबै'। इम कहि अग्ग्र धरी गुर तबै।
कर महिं ले उठाइ करि वाची। दई सुनाइ सभिनि को साची ॥ २३ ॥
'गुर संगत को धंन' बखाना। सुनहु खालसा ! काज महाना।
हुइ है अबि घमंड बलवंडा। संहर करो बिलंद प्रचंडा ॥ २४ ॥
इस के सम कुछ नांहिन आछी। लोक प्रलोक सुखद बड बाछी।
दीन[7] मजब[8] को जुद्ध बिसाला। प्रापति बडिभागी इस काला ॥ २५ ॥

---

1. जाना 2. यात्रा 3. शीघ्र 4. विनय 5. लड़ने के लिए 6. महमानी 7. धर्म 8. धर्म-युद्ध, जिहाद

त्रिभै जंग महिं खडग प्रहारो। सनमुख थिरो शत्रु गन मारो।
महां सुजसु को प्रापति होवहु। लेनि परमपद को मग जोवहु ॥ २६ ॥
संमति घने तपहि तप भारे। बरखा सीत[1] रु उशन सहारे।
संकट अनिक भांति के झाले। सभि जग सुख ते बनहि निराले ॥ २७ ॥
तिन को भी दुरलभ पद जोइ। करहि जतन जोगी चहि सोइ।
रण महिं म्रित्तु होइ सो पावहु। एक पलक महिं तहां सिधावहु ॥ २८ ॥
जो अबि लरहि मरहि सहिकामी। सो तूरन होइ सुरपुरिगामी।
तहिं के सुख भोगै चित चहै। आदि अपसरां जेतिक अहैं ॥ २९ ॥
पुन अवनी पर ह्वै है राजे। सभि सुख भोगै वधहि समाजे।
मेरी सिक्खी बहुर कमाइ। मिलहि आनि मुझ आनंद पाइ ॥ ३० ॥
जो निशकामी जंग मझारा। भारहि मरहि गहहि हत्थ्यारा।
सो मम संग सदा ही रहै। पद जोगनि जो दुरलभ अहै ॥ ३१ ॥
आगे लाखहुं छत्री भए। रण महिं मरे सुरग सभि गए।
छपी नहीं इह जग महिं कथा। जोधे को सुख प्रापति जथा ॥ ३२ ॥
पुन मैं तुमरे संग सहाई। लोक प्रलोक बिखैं[2] जहिं जाई।
इत्यादिक उपदेशति स्वामी। भयो खालसा संहर कामी ॥ ३३ ॥
दीप माल को आयो मेला। संगति जित कित भई सकेला।
चहुंदिशि ते दरशन हित धाए। वसतु अकोर[3] दरब गन[4] ल्याए ॥ ३४ ॥
आनंदपुरि के चहुं दिशि डेरे। सिख संगति की भीर घनेरे।
तुंग दमदमे पर गुर थिरे। आइ सरब ने दरशन करे ॥ ३५ ॥
चामरु चार चलाचल होवति। बार बार ढुरतो सभि जोवति।
मुख मंडल पर कुंडल डोल। सुंदर द्रिग जुग उपम अतोल ॥ ३६ ॥
क्रिपाद्रिशटि संगति को हेरति। बैठे खरे सभिनि दिशि प्रेरति।
करति खरो अरदास अगारी। कोशप करत्ति अकोर संभारी ॥ ३७ ॥
सभि संगति महिं हुकम[5] बखाना[6]। 'जो हत्थ्यार धरैं निज पाना।
गुर की सेवा हित सो रहै। मिलहि चाकरी जे धन चहै ॥ ३८ ॥
रण तुरकनि सन परै हमारा। जोधा रहैं लेहिं हत्थ्यारा'।
सुनि करि जिन रहिबो चित धरे। तिन के चिहरे लेखनि करे ॥ ३९ ॥
जिन के ढिग आयुध तबि नांही। बखशे दरबारहुं कर तांही।
तीर तीर जे देश बिसाले। माझे आदि सिंह जहिं जाले ॥ ४० ॥

1. शीत 2. में 3 हथियार 4. धन 5. आज्ञा 6. दी

हुकम गुरू को सभि पर गयो। सुनि सुनि आइ मेल गन कयो।
रहे हज़ूर बिखै बहु सिंह। शसत्रनि सहित शत्रु म्रिग सिंह ॥ ४१ ॥
संगति अपर लिए सिरुपाइ। गमने घर रजाइ[1] गुर पाइ।
पुरि अनंद महिं बीर बिसाले। भई भीर जित कित थित जाले ॥ ४२ ॥
गुलकां अनिक घरैं सुनिआरे। ब्रिंद बरूद होति हैं त्यारे।
तोमर सेले सांग घरंते। बान बनाइ बनाइ धरंते[2] ॥ ४३ ॥
धनुख कठोर समूह तमाचे। ले ले बखशति श्री गुर साचे।
दिन प्रति त्यारी संहर केरी। कलग़ीधर इम करति घनेरी ॥ ४४ ॥
चाकर अपर हिंदु कै तुरका। आवति रहति सुनति जस गुरका।
राखहिं तिसै लिखैं दरमाहां[3]। इम बहु भीर[4] अनंदपुरि मांहा ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते '**जंग तिआरी प्रसंग**' बरननं नाम सपतमों अंशु ॥ ७ ॥

---

1. गुरु जी के कहे अनुसार किया 2. रखना 3. बेतन 4. भीड़

अंशु ८

जंग तिआरी प्रसंग

दोहरा

भीम चंद सैलेंद्र कुपि गिरपति लए हकारि।
पूरब आइ हंडूरीआ निज सैना कर त्यार ॥ १ ॥

चौपई

चढ़्यो घमंड चंद तहिं आयो। सो अनी कनी अपनी ल्यायो।
बीर सिंह जसुपाली आइ। नाले गड़ीए मिलि समुदाइ ॥ २ ॥
कुल्लू अरु कैंठल ठकुराई। मंडसपती सैन चढि आई।
जम्मू नूरपुरे ते धाए। नगर हरीपुर चमूं बनाए ॥ ३ ॥
चंबिआल गन आइ मदूणी। शाह अनी ते चौंप सु दूणी[1]।
ग्वालीएर श्री नगर मझारे[2]। चढि धाई सैना बल भारे ॥ ४ ॥
पुरि बिशहिर के सुभटि भटंत। बिझड़ वालीए[3] चड़े तुरंत।
चंदेशुर अरु घने दड़ोल। मिलि डढवाली बंधि बंधि टोल ॥ ५ ॥
गूजर रंचड़ ब्रिंद गवार। मिली चमूं अरु प्रजा पहार।
दूर दूर लगि डेरे डारे। गन सऊर पैदल बिसतारे ॥ ६ ॥
उत दिल्ली ते लशकर चढ़्यो। लरिबे हित उतसाह जि बध्यो[4]।
दुंदभि पुंज बजति जिस महीआ। वरण बरण की धुज कर गहीआ ॥ ७ ॥
मजल करति मग उलंघति धाए। पुरि सिरंद मैं सभि दल आए।
डेरा कर्यो हेत बिसरामू। तहां वजीद खान के धामू ॥ ८ ॥
सभि सों मिल्यो सेव निबहाई। आप चढन त्यारी करिवाई।
ब्रिंद बरूद सु गुलकां दीनि। तोप जंबूरन त्यारी कीनि ॥ ९ ॥
घनी तुरंगनि चमूं कराला। पैदल ब्रिंद त्यार ततकाला।
जंग समाज कर्यो बड भारी। मिल्यो तमाम[5] जु लशकर त्यारी ॥ १० ॥
होति प्रात के बजे नगारे[6]। सुनि तुरंग[7] पर जीननि[8] डारे।
तहिं संगति गुर की सुनि बात। लिखी पत्त्रिका सकल[9] ब्रितांत ॥ ११ ॥

---

1. शाही सेना के आने पर बहुत हर्षित हुए 2. में 3. के रहने वाले 4. आगे बढ़े 5. सारी 6. नगाड़ा 7. घोड़ा 8. जीन 9. सारा

'महाराज ! राजन के राजा ! दंडहु दुशट ग़रीब निवाजा !
भीम चंद मूरख कहिलूरी । फिर्यो पुकार करति इछ पूरी ॥ १२ ॥
दक्खन गमन्यो शाहु समीप । लिए लरन को ब्रिंद महीप ।
अवरंग रिस्यो पठ्यो बड लशकर । दिल्ली ते धाए चित रिस धरि ॥ १३ ॥
अबि सिर्‌हंद महिं घाल्यो डेरा । इत ते लीन बटोर वडेरा ।
तोप, रहिकले, पुंज धमाके । चलति जमूरे धरा धमाके ॥ १४ ॥
आप वजीद खान करि त्यारी । रावरि संग जंग चहि भारी ।
पहुंचे ही समझहु निज पास । आप भि करि लिहु लरनि प्रयास ॥ १५ ॥
इत तुरकाने को सभि ज़ोर । लखहु प्रभू आयहु तुम ओर' ।
इत्यादिक लिखि संगति अरज़ी । करी पठावन ढिग सतिगुर जी ॥ १६ ॥
सरे दिवान[1] पढी, सुनि करिकै । 'तुरक सैन उमडी इति चरिकै' ।
सुनि कलग़ीधर क्रोध्र बिसाले । सभि महिं कही गिरा इस ढाले ॥ १७ ॥
"मैं तुरकाना सकल खपावौं । राज तेज जग बिखै उठावौं ।
करि करि कूरे मारनि करौं । ओज बिसाल सरब परहरौं ॥ १८ ॥
हतहु खालसा ! शसत्रनि गहि गहि । हिंदू तुरक अपनि रिपु लहि लहिं ।
करति हुते प्रभु इस विधि बाती । इतने महिं आयहु कर पाती[2] ॥ १९ ॥
'लवपुरि की संगति कर जोरे । अभिबंदन करि चरन निहोरे ।
लिखी पत्त्रिका पठि अहिवाल[3] । जान लीजीऐ आप क्रिपाल !' ॥ २० ॥
ले करि हाथ गिरंथी बाची । प्रथमे खुशी गुरू ते जाची[4] ।
'लवपुरि को सूबा बलि भारी । ज़बरदसत खां कीनसि त्यारी । २१ ॥
निकट दूर की चमूं[5] बटोरी । आयो चहति आप की ओरी ।
छोटी बड़ी तोप संग लीनि । कूच आज पुरि ते करि दीनि' ॥ २२ ॥
सुनी सभा महिं हरखे सिंह । म्रिगन आमदन[6] ते जिम सिंह ।
श्री गोबिंद सिंह बहु तकराई । दए शसत्र सुभटनि समुदाई ॥ २३ ॥
रिदे बीर रस सभि के जागा । कहैं परसपर हम बडभागा ।
जीतहिं शत्त्रुनि सुख जस पावहिं । खुशी करहिं प्रभु ज्यों हम भावहिं ॥ २४ ॥
जे गुर हित अबि तजहिं सरीर । मारन मरन धरिहिं रण बीर ।
सतिगुर होइं प्रलोक सहाइ । थिरहिं ऊच पदवी को पाइ' ॥ २५ ॥
केचित करि उर हरख महाने । कीने अपन केसरी बाने ।
किनहुं तिलौना अरुन सरीर । जूझनि जंग धरे तन चीर ॥ २६ ॥

---

1. दीवान में, संगत में 2. पत्र ले कर आया 3. अवस्था 4. अनुमान लगाना
5. सेना 6. आना

चार दिवस क्या जग महिं जीवन । क्यों न लेहिं पद आनंद थीवन ।
पिखहु महां भारथ के राजे । बांछति सुरग लरे कुल लाजे ॥ २७ ॥
निरसंसै सुरलोक सिधारे । जनम मरन के कशट निवारे ।
कहां जगति सुख द्वै दिन केरा । निशचै मरनि अंत की बेरा[1] ॥ २८ ॥
पर करि मंच[2] प्राण को त्यागन । आयुध धारी तहि बड भाग न ।
रुकहि कंठ कफ ते दुख पावै । तजे मूत्र मल नहीं नहावै ॥ २९ ॥
ब्याध बिबिध बिधि तन उपजाइ । बरखन, मासन, दिन दुख पाइ ।
अति संकट ते छुटहिं प्रान । निशचै बनै देहि की हान ॥ ३० ॥
यांते जंग बीरता करिकै । देह छिनक महिं प्रान निकरिकै ।
अटल अनंद बिलंदै पाइ । श्री सतिगुर के चरन समाइ ॥ ३१ ॥
मुकति लेहि जोधा निशकामी । बांछति सुख प्रापति सहिकामी ।
इह तौ सदाबरत गुर लायो । लरे जंग, तिन निशचै पायो ॥ ३२ ॥
बडे भाग ते नर तन होवा । तिन ते अधिक प्रभू गुर जोवा ।
पुन अधिकाइ सु अंम्रित लीना । गुरबाणी महिं निज मन भीना[3] ॥ ३३ ॥
अस पद पाइ खोइ नहिं दै है । क्यों न सफल गुर ढिग करि लै हैं ।
दस दिन अपर जीए क्या होइ । अैसो लाभ तजै नहि कोइ ॥ ३४ ॥
इस प्रकार आपस के मांहि । कहै खालसा, सुनहिं उमाहि[4] ।
शासत्रनि की त्यारी सभि करैं । करनि खड़ग खर सानैं धरैं ॥ ३५ ॥
तीछन बाढ लाइ करि राखे । रिपु के अंग हतनि अभिलाखे[5] ।
तोड़े आदिक त्यार तुफंग । तीरन खर ते भरहिं निखंग ॥ ३६ ॥
खर तोमर की अनी करंते । सेले भाले चक्क्र धरंते ।
बिछूए, पेश कबज़, जमधर धरि । अलप तमांचे तजिबे भरि भरि ॥ ३७ ॥
सुंदर सिपरनि धरैं बनाइ । गमनै बाहर शसत्र लगाइ ।
ऐंचहि चांप कठोर स ज़ोर[6] । त्यागहिं तीर निशाने जोरि ॥ ३८ ॥
सतिगुर अंन कितिक मगवाइ । निज दुरगनि महिं रखि समुदाइ ।
तेल घ्रित्त आदिक ले धरैं । बांछति बसतु बटोरनि करैं ॥ ३९ ॥
बहु बिजीआ आछी मंगवाइ । राखे व[illegible] कुप्प बंधवाइ ।
तथा अफीम खरच को जाने । कीन [illegible] शुभटनि खाने ॥ ४० ॥
इस ते आदि जितिक रण त्यारी । श्री कलग़ीधर धरति सुधारी ।
लगहि दिवान खालसे केरा । लरन हेतु ढिग प्रापति हेरा ॥ ४१ ॥

---

1. समय 2. चारपाई 3. लगाना 4. प्रसन्न 5. अभिलाषा
6. बल, शक्ति

उपदेशति रण महिमा कहि कहि । 'लहो सुजसु पावन को महि महि ।
हिंदू तुरक शत्रु निज लहि लहि । करहु बिनाश आयुधनि गहि गहि ।। ४२ ।।
निर्भै होइ धीरज बहु धरि धरि । उर उतसाहु आपने करि करि ।
अपनि अपनि मुरचनि पर थिरि थिरि[1] । निकट विलोकहु मारहु फिरि फिरि ।। ४३ ।।
हेला झाल अरिनि सों अरि अरि । पिखहिं तुमहिं भागहिंगे डरि डरि ।
घणी मार करीयहि रण लरि लरि । जिस तें भै धरि कपै थर थर' ।। ४४ ।।
इस प्रकार लरिबे हुइ त्यार । करहिं प्रतीखन 'मंडहिं रार' ।
धंन खालसा सतिगुर साचा । रस उतसाह विखै चित राचा ।। ४५ ।।
आप अलप शत्रू समुदाई । सभि जग के भट कीनि चढाई ।
तऊ अनंदति, नहिं दुचिताई । सावधान भे होति लराई ।। ४६ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'जंग तिआरी प्रसंग'** बरननं नाम अशटमो अंशु ।। ८ ।।

---

1. स्थिर

अंशु ९

जंग प्रसंग

दोहरा

पुरि सिरंद ते चढि चल्यो लशकर बडो बटोरि[1]।
खान वजीदा[2] क्रोध कै गमनि अनंदपुरि ओर ॥ १ ॥

चौपई

संग चार सै अरु पंचास[3]। बजे नगारे धुनि बड तास।
इतने ही निशान फहिराइ। निज निज मिसलनि अग्र चलाइ ॥ २ ॥
पैदल चलति तुफंग संभारे। त्यार तुरंगम पर असवारे।
तोपैं चली अनेक प्रकारी। उमड्यो दल जल सम बहुवारी[4] ॥ ३ ॥
दुंदभि बजहिं, पटहि, शरनाई। रण सिंहे बाजहिं समुदाई।
महां कुलाहल चालति होवा। उडी धूल नहिं सूरज जोवा ॥ ४ ॥
कै घन घटा बिथरि करि चाली। शसत्र दमंकति* छटा बिसाली।
बडो रौर भा मारग मांही। कही बात सुनियति कुछ नांहीं ॥ ५ ॥
कै जल उमड्यो बडो सम्मुद्र। बंधे टोल तरंग अच्छुद्र*।
गन देशनि के आयुधधारी। कहे शाह उमडे इक वारी ॥ ६ ॥
जथा इंद्र की आग्या पाइ। नभ महिं चले मेघ समुदाइ।
करते मजल सिवर को पावैं। हित अराम के निसा बितावैं ॥ ७ ॥
रोपर उलंघि सिरहंदी लशकर। उतर्यो सिवर अग्र कुछ ह्वै करि।
जबर दसत खाँ लविपुरि त्यागा। गमनयों लरन जंग अनुरागा ॥ ८ ॥
पैदल गन तुरंगनि की सैना। चले शीघ्र छाई रज गैना[5]।
तोपैं तुपक[6] अनेक प्रकारे। ले करि चढ्यो कटक[7] भट भारे ॥ ९ ॥
चार सैंकरे अरु पंचासा। दुंदभि बाजे शबद प्रकाशा।
ढल पटहि तुररी करनाई। बाजि उठे बादित[8] समुदाई ॥ १० ॥

---

1. इकत्र, इकट्ठा 2. वजीद खान 3. चार सौ और पचास 4. समुद्र 5. आकाश में धूलि छाई हुई है 6. छोटी तोप 7. सेना 8. बाजा
*दमकत (पा०) 1. *आछद्र (पा०)

इतने ही निशान प्रसथाने। छोरे पट छूटति फहिराने।
लशकर[1] के आगु हुइ चाले। करति कूच उठि रौर बिसाले ॥ ११ ॥
मारग उलंघि जथा क्रम सारा। डेरा नदी किनारे डारा।
नौ सै दुंदभि दुइ दल केरे। नौ सै झंडे झूलहिं अगेरे ॥ १२ ॥
आनंदपुरि कै द्वै दिशि आए। दूर दूर से परहिं दिसाए[2]।
दिशा तीसरी सैलनि सैना। भीमचंद अविलोके[3] नैना ॥ १३ ॥
सभि राजन को भले संभारि। चढिबे हित तबि लीन हकारि।
गज बाजीन अरोहनि भए। एक थल मेल सभिनि हूं कए ॥ १४ ॥
तुरकनि चमूं उडीकति रहे। जबि आगमन दुहन को लहे।
ततछिन करि॰ त्यारी चढि आए। गिर गन पती मेल करि धाए ॥ १५ ॥
इन के दुंदभि बजे निराले। निकसे परबत लै दल जाले।
ज़बरदसत खां उतर्यो पार। सभि लशकर तरि[4] सलिता[5] बार ॥ १६ ॥
दोनो सूबे मिलि इक थाइं[6]। करी सुचेत चमूं समुदाइ।
सभि बिधि की मसलति[7] गिन करिकै। गमने मग[8] गज बाजी चरिकै ॥ १७ ॥

कबित्त

दुंदभि शब्द भीम, घालति कदीम[9] सीम, तुपक, पठी, असीम मीन तन छुद्द्र को।
तोपैं महां नक्क्र तुंड पसरे अबक्र जिन, सिपरैं कमठ बेग धावति अमुद्द्र को।
सुधुजा मतंग तुंग सैल हैं सपंख रंग, तोमर भुजंग हैं, तुरंग जंतु रुद्द्र को।
गुरू कोप तवा पै परनि धाए जोर चल्यो दल आइ कैधों जल है समुद्द्र को ॥ १८ ॥
दीरघ दमामे धुनि होति है गंभीर तामैं घोख है बिसाल जामैं चल्यो दल आवही।
कैधों घन घटा बनि शाहु को हुकम पौन प्रेरे कीन तांही के अगेरे उमडावई।
तोपन अवाज मानो गाज परै बार बार, पावक पलीते की धुखति चमकावई।
सुंदर अनंदपुरि सैल ज्यों बिलंद पर गोरी गोरे ओरे के चहति बरखावई ॥ १९ ॥

दोहरा

इत ते लशकर उमडि कै तुरकाने को आइ।
उत ते सकल पहारीए मिलि कै दल समुदाइ ॥ १० ॥

कबित्त

दल दिल्ली एश[10] अचलेश[11] दोऊ मिलि धाए धुरवा से धौंसा की धुंकार उठै घोर घोर।
बांधे बडे ठट्ट भट्ट घट्ट के संघट जुट, लोह की चमक छटा छबि भांति कोरि कोरि।

1. सेना 2. दिखाई 3. देखे 4. तैर कर 5. नदी 6. स्थान
7. योजना बना कर 8. मार्ग 9. क़दम, पग 10. दिल्ली का राजा
11. पर्वतीय राजा

गोरे परैं ओरे, धुंम अधिक, अंधेरो धूल, हलके हरौल हलाहली उठै लोरि लोरि।
तौ लौ ही बनाव श्री गोबिंद सिंह राउ जौ लौ छोडै न सभीर तीर जेह मांहि जोरि
जोरि ॥ २१ ॥

राजे, गन राणे, राव, मीएं जे हजारों नाव, धाए चित चाव करि, हेरि तुरकान को।
गूजर समूह महिं रंघड़ हंकार भरे, बाई चार जोधे लीनि संग ले प्रजाने को।
सय्यद, पठान, शेख, मुग़ल बिसेख मिलि, काबली कंधारी यौ मलेछ किरमान[1] को।
दाउज़ई[2] आए पै रुहेले बेग धाए दल, मिलिके फिरीदी[3], आनि तेज कै किकान
को ॥ २२ ॥

दूर दूर डेरे करि नेरे ह्वै न धारि डर, मानो ज़रा संध श्री गुबिंद पर आयो है।
चारों ओर जल सम फैल्यो दल सिंघ बड मानहुं अनंदपुर टापू[4] दरसायो है।
लरिबे कौ ढूके जबि हेरैं सभि सिंह तबि, ज्वाला बौनि हाथ धरे चाहति चलायो है।
शुतरी नगारे पर मारे चोब नाद भारे, सूबे द्वै निहारे, गुरू त्रास नहिं पायो है
॥ २३ ॥

श्री अनंदपुरि के बिलंद थिरे दूर दूर, ब्रिंदे हुइ खालसा अनंद उतसाह ते।
सूरनि के लाली मुख अधिक बहाली भई धीरज बिसाली नहिं हाली गुर पाहिते।
भीरुनि को भयो भय, छाती धरकाति बहु, कंप रह्यो गात जनु म्रित्तु लीन ग्राहते।
जूझनि को कीयो नेर, चाहै भट भेर भूर, आगे होइ ग़रूर सूर मारन को चाहते
॥ २४ ॥

थोरे जिम केहरी ते त्रास मान होइ करि बन मिरगावली ते आए समुदाइ हैं।
पकर्यो पलायो चहैं, तैसे बिधि भई आइ, सूबे दोऊ राजे सभि देखैं निज दाइ हैं।
श्री मुख हुकम कीन, 'तोपची! बिलोकि नीके, जहां खरो टोल तहां गोरे को
पुजाइ हैं।
समुख थिरन नहीं देहु रिपु पुंज हूं को, करो इन त्रास आस पास होइ जाइ हैं
॥ २५ ॥

आग्या सुनि प्रभू की सु तोप हुती त्यार तबि शिसत[5] को बांधि बांधि अगनि लगाइ
करि।
तूरन पलीता उठ्यो गाज सम नाद भयो गोरा[6] चल्यो शूंकति सबेग तहिं जाइ
करि।
देखौं दुहुं ओर के अनेक सूरबीर भारी, लग्यो आइ दूर ते दियो है उथलाइ करि।
त्रास उपजाइ करि इते उत धाइ करि, बोल्यो है रिसाइ करि 'मारहु चलाइ करि'।
॥ २६ ॥

---

1. किरमान के रहने वाले (ईरान में एक प्रांत और शहर का नाम है)
2. दाऊदज़ाई 3. अफ़रीदी 4. द्वीप 5. निशाना लगाना 6. गोले

सूबनि ते सुनि कै अगाऊं धाइ जाइ परे जहां बंधि मोरचे थिर्यो है बीच खालसा ।
तुपकन त्यार हुती, एक बार छोरी मिलि, तड़ा भड़ नाद भयो त्याग दीन आलसा ।
सिंह थिरे ओट ले, मलेछ लच्छ ढुके नेर, जानैं मन सारे गुरू होइ अबि कालसा ।
समुख मदान बीच हान भए प्रानि तजि, लागि लागि गोरीआं गिरे हैं तरु डालसा ।
॥ २७ ॥

सवैया

पुंज तुरंग नचाइ धवाइ कै मारति हैं ढिग ह्वै करि गोरी ।
तीर सड़ासड़ छूटति हैं ! इम आवति जाति दुऊन की ओरी ।
होवनि लाग बडो तबि संहर तूरन त्याग तुफंगनि छोरी ।
छूटति ही ततकाल लगे अरि बीरन को उर कै सिर फोरी ॥ २८ ॥

दोहरा

सिंह बैठि करि मोरचे ओटा रच्यो बनाइ ।
बिना ओट शत्रु हतैं गिरहिं दड़ादड़ जाइ ॥ २९ ॥

सोरठा

लाखहुं ओरड़ आइ मिले मलेछ प्रहारते ।
निफल वार सभि जाइं गुर रच्छया ते लगति नहिं ॥ ३० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'जंग प्रसंग'** बरननं नाम नवमो अंशु ॥ ९ ॥

अंशु १०

जंग प्रसंग

दोहरा

छिर्यो जंग भट भेर भा, उडी धूल असमान।
दुतिय धूम बारूद को रवि प्रकाश भा हान[1] ॥ १ ॥

रसावल छंद

भयो अंधकारं। दिखै धूंम धारं।
महां धूम पाई। 'हलाहल' गाई ॥ २ ॥
छुटैं बान गोरी। दुहू ओर जोरी।
घने घाव लागे। लहू चीर पागे ॥ ३ ॥
फिरे छूछ घोरे। ज़री ज़ीन बोरे।
मिलैं हेल घालैं। पुकारैं बिसाले ॥ ४ ॥
डंभै मोड़ि तोड़े। रिपू तुंड फोड़े।
चले भाज घोड़े। नहीं जाइं मोड़े ॥ ५ ॥
किऊ पाइ गेड़े। ढुके जाइ नेड़े।
लगे अग्र गोरी। गिरे मूंड फोरी ॥ ३ ॥
पिखैं और त्रासैं। नहीं जाइं पासैं।
कहूं बीर गाजे। नहीं पाइ भाजे ॥ ७ ॥
रुपे सिंह बैसे। छुधा सिंह जैसे।
संभारैं तुफंगै। महां क्रेध संगै ॥ ८ ॥
पिखैं जांहि नेरै। तकैं नांहि गेरैं।
महां जंग माचा। रजं श्रोण राचा ॥ ९ ॥
भ्रमी गीध आई। पिख्यो मास खाई।
मरे सूर घोरे। परे पेट फोरे ॥ १० ॥

---

1. बारूद के चलने के कारण सूर्य का प्रकाश दिखाई नहीं देता।

किसू टांग टूटी। तुफंगानि छूटी।
चमूं दौन जूटी। परी मार कूटी ॥ ११ ॥
जवै हेल डारा। वकैं 'मार मारा'।
मलेछं सु लच्छैं। भए सो प्रतच्छैं ॥ १२ ॥
प्रभू जी निहारे। सो जोधा प्रचारे।
उदे सिंह आदं। दया सिंह नादं ॥ १३ ॥
इनै को बुलाए। थिरे ऊच थाए।
पिखैं जंग माचा। तुफंगैं तमाचा ॥ १४ ॥
जंबूरान मार। जंजैलां प्रहारैं।
कह्यो:-शीघ्र जाओ। मलेछैं हटाओ ॥ १५ ॥
भरे छोभ आए। गिने जो न जाए।
इतै सिंह थोरे। रिपु पुंज घोरे ॥ १६ ॥
तुमारे पिछारी। शहीदान भारी।
वडो आइ हल्ला। नहीं जाइ झल्ला ॥ १७ ॥
उभै अग्ग्र जावो। लराई मचावो'।
सुने बाक ऐसे। बलं पाइ जैसे ॥ १८ ॥
नमोठानि चाले। महां शत्रु जाले।
लरे अग्ग्र होइ। सभै बीर ढोई ॥ १९ ॥
तहां द्वै भुजंगी[1]। गहे[2] द्वै निसंगी।
धरे चांप बाना। करे ओज ताना ॥ २० ॥
मलेछानि मारैं। पगं अग्ग्र डारैं[3]।
पहुंचे[4] सु जाई। प्रचंडै[5] लराई[6] ॥ २१ ॥

पाधड़ी छंद

थिर ज़बरदमत अरु खाँ वजीद। रण पिखहिं चमूं आपन रसीद।
गन सैलपती तिन के नजीक[7]। दल दोइ मिले रण होति नीक ॥ २२ ॥
शसत्रन प्रहार बक 'मार मार'। कसि कसि तुफंग गन डारि डारि।
करि खां दसत[8] तकि देति छोरि। तबि परे तुरक हेल ज़ोर ॥ २३ ॥
उत उदै सिंह तिंन समुख आइ। करि अधिक क्रोध सर गन चलाइ।
पिखि तुरक हेल भा रेल पेल। बिच मिले सिंह नहिं भे पिछेल ॥ २४ ॥

---

1. भाई दया सिंह जी और भाई उदय सिंह जी 2. पहुंचना 3. आगे बढ़े 4. पहुंचे 5. उस जगह 6. भयानक लड़ाई 7. नज़दीक 8. हाथ को काम में लगाना

बल पर्यो खालसे पर बिसाल। आए शहीद गुर हुकम नाल[1]।
कुछ बही बायु पिखियंति नांहि। इक बार मार तुरकानि मांहि ॥ २५ ॥
गन कराचोल चाले कराल। लिपि लहू संग भे रंग लाल।
इत सिंह हजारहुं पर बिलंद। रिपु तुरक परे, लाखहुं निकंद ॥ २६ ॥
तबि धरी मारि इक सार बीर। कतलाम शहीदन कीनि बीर।
नहिं दिखति कोइ मारंति जोइ। गिर परति भूम पर प्रान खोइ ॥ २७ ॥
नहिं गए सिंह तहिं लौ सु धाइ। जहिं अग्र शहीदन मार पाइ।
कटि गिरे तुरक रण महिं हज़ार। करि रहे ओज हत्थयार मारि ॥ २८ ॥
गिरते मरंति दखंति बीर।—किम लगे घाइ—नहिं लखति धीर।
अटकै न कोइ घोरा न सूर। कट गिरे पिखति मिलियंति धूर ॥ २९ ॥
जबि भई शहीदनि की रसीद। बिसमाइ[2] रह्यो तबि खां वजीद।
कुछ जबरदसत नहिं कहि सकंति। 'मरि गए शीघ्र हम ढिग[3] तकंति ॥ ३० ॥
दल तुरक महिद घाल्यो सु हेल। सभि रहे तहां नहिं हटि पिछेल।
चमकंति खड़ग ढलकंति ढाल। कटयंति बीर पगयंति लाल ॥ ३१ ॥
कुछ सिंह अलप ही लखहि जाहिं। —किन मार गेर ? दिखियंति नांहि—।
अचरज बिसाल उर होति हेरि। गिर परे बीर खेतहिं बडेर' ॥ ३२ ॥
इम कहहिं परसपर बहु लराहिं। जुरि[4] गए सुभट[5] मिटते सु नांहि।
कटि कटि परंति चालहि क्रिपान। बहु परी लोथ भैरव सथान ॥ ३३ ॥
गन रुंड मुंड कहिं तुंड खंड। तन खंड खंड भड़थू[6] प्रचंड।
कटि गए हाथ अरु पाउं ब्रिंद। केतिक चुचाति श्रोणति बिलंद ॥ ३४ ॥
बड उठयो धूम छुटैं तुफंग। गुलकां सड़ाक गेरैं तुरंग।
को आइ चींकती चुभति अंग। नहिं बचहि प्राण हुइ परति भंग ॥ ३५ ॥
बहुफिरी जोगनी श्रोन पान। लेती डकार मुख करति गान।
गन भूत प्रेत नाचंति आइ। भैरों कुरूप अपनो दिखाइ ॥ ३६ ॥
चावंड चिकार, कूकैं शिग्रालि। उडि काक कंक नभ फिरति जाल।
बल करहिं तुरक मिलिकै बिलंद। थल मोरचानि को लें निकंद ॥ ३७ ॥
'दीजै हिलाइ, थिर सिंह थोर। करि कराचोल की मार घोर।
को रहै अटक लशकर बिसाल। समरत्थ जी तबे जगत जाल ॥ ३८ ॥
अवरंग महां शाहानशाह[7]। तिह संग अरन अरि ओज काह ?'।
इम कहि रिसाइ बड हेल डारि। कट गिरति मरति असि मारि मारि ॥ ३९ ॥

---

1. से 2. हर्षित होना 3. ओर 4. जुड़ गए 5. योद्धा 6. भाग दौड़
7. ऊंची शान वाला महाराजा

फूटहि प्रचंड बहु मुंड तुंड। तन खंड खंड ह्वै करि बिहंड।
गन फिरी परी असमान आइ। भट बरति घिरत चित चाइ चाइ ॥ ४० ॥
भा तुमल जुद्ध दोउ दिसान[1]। चमकंति भिगे श्रोणत क्रिपान।
असवार कि पैदल सो पहूच। कटिगे बिसाल[2] भट नीच ऊच ॥ ४१ ॥
कहिं लगि बखान ज्यों मचति रार। जहिं कहिं बिथार[3] लोथन सुमार।
इक जाम लोह सों लोह बाजि। हटि परे तुरक तजि लाज साज ॥ ४२ ॥
बिसमति बिसाल[4] अवलोकि जंग। अवि अलप काल दल इतक भंगि'।
केचित कहंति 'हम रहैं हार। गुर करामात साहिब उदार' ॥ ४३ ॥
केचित कहंति 'बहु ओट लीनि। थित मोरचान हुइ मार कीनि।
हम मरे बहुत तिन के न लाग। सम थो सथान थिर लगति आग' ॥ ४४ ॥
सूबे दुऊन बिसमाइ चीत। इह प्रथम जंग पाई न जीत।
सभि दल हटाइ जीवंति जोइ। थिर भए सकल ही दूर होइ ॥ ४५ ॥
मिलि सैलपतनि सों मंत्र कीन। 'किम भयो जंग भट प्रान हीन ?।
किम रहे लरंति करि दाव घाव। सो बिधि बचाउ जिम जीत पाव ॥ ४६ ॥
जिम लरैं आज तिम. लरैं रोज। सभि जाहि फौज को मिटहि खोज।
नहिं सिंह मर्यो रण दिखहि कोइ। तुरकनि बिनाश पिखि त्रास होइ' ॥ ४७ ॥
तबि भीम चंद कर बंदि भाख। 'थिति मोरचान ले ओट राख।
तुमरे मदान रहिं लरति बीर। बहु परी मार किम धरहिं धीर ॥ ४८ ॥
तुम सुमतिवंति इम लरहु नांहि। होवति प्रभाति रण जीति चाहि।
तोपैं संबूह सभि आइ जाइं[5]। रचि मोरचान आछे[6] टिकाइ ॥ ४९ ॥
इकसार मार गोरानि देहु। सभि सुभट[7] दूर ही राखि लेहु।
हति तोप पुंज लिहु जीत पाइ। मम बुद्धि आइ इस रीति दाइ ॥ ५० ॥
बड राठ सुभट सतिगुर बटोरि। बटपार अधिक, कै ब्रिंद चोर।
बिन खड़ग सेल नहिं करति बात। इक बार हेल ते कटक[8] जाति' ॥ ५१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'जंग प्रसंग'** बरननं नाम दसमो अंशु ॥ १० ॥

---

1. दिशाओं 2. विशाल 3. विस्तार 4. प्रसन्न 5. आ जावें 6. अच्छा 7. बीर 8. एक बड़ी सेना

अंशु ११

जंग प्रसंग

दोहरा

सुनि सूबे दोऊ हटे लशकर की सुधि लीनि।
भए सुमार शुभार बिन, नौ सै प्रान बिहीन ॥ १ ॥

भुजंग प्रयात छंद

पुन खान पानं कियो[1] जाइ डेरे। टिके बीर धीरं लरे जो घनेरे।
थिरे सिंह गाढे लरैं मोरचा मैं। गुरू तीर केते नमो कै पगा[2] मैं ॥ २ ॥
'बडी मार होई महाराज जानो। तुफंगैं हती देखि शत्रू मदानो।
दड़ा दाड गेरे फलं पक्कव[3] जैसे। महां बुद्धि अंधे हते शीघ्र तैसे ॥ ३ ॥
उदे सिंह संगी दइआ सिंह दोऊ। पहूंत्र जबै हेल को ओज जोऊ।
गिरे ब्रिंद घोरा मरे बीर मानी। मरे पुंज कैसे, नहीं जाइ जानी' ॥ ४ ॥
प्रभू फेर बोले 'लरो राखि दाऊ। थिरो मोरचा मैं न हूजो अगाऊ।
करै नेर शत्रू तबै ताक मारहु। सवाधान बैठहु नहिं एव मारहु' ॥ ५ ॥
दियो साल पत्रं लगे घाव जांही। घसावैं लगावैं बचावैं सु तांही।
कुऊ चार जामं, कुउ आठ जामं। मिलैं घाव देहं सु पावैं अरामं ॥ ६ ॥
मरे सिंह केते गए देव लोकं। सुखं पाइ सारे मिटी सरब शोकं।
कियो खान पानं भए सावधानं। थिरे मोरचा मैं महां ओजवानं ॥ ७ ॥
रहे जाग आधे परे आध सोए। तुफंगैं चलावैं जि ढूके[4] न कोए[5]।
बिती राति ऐसे भई प्राति फेरं। बजे ब्रिंद बाजे सु नादं उचेरं ॥ ८ ॥
नगारे बजे ढोल बाजे शनाई[6]। गुरू पीर मैं नौबतं सो बजाई।
बजे संख भेरी इकं बार नादं। सभै श्रूय कै जांहि ते आहिलादं[7] ॥ ९ ॥

निशानी छंद

गुरू हुकम ते बज उठ्यो रणजीत नगारा।
'हय त्यारी हुइ सैन को' प्रभु वाक उचारा।
'सजहिं शसत्र गहि तुपक को चढि के हम संगा।
चलहिं वहिर हित जंग के करिहैं रिपु भंगा' ॥ १० ॥

---

1. खाना खा कर 2. चरणों में 3. फल जो खाने के योग्य पक गए हों
4. पास आना 5. कोई 6. शहनाई 7. जो आनंद प्रदान करें

सुनति प्रभू ते खालसा कीनसि तबि त्यारी ।
ज़ीन[1] तुरंगन[2] डाल करि उतसाहति भारी ।
कसी कमर असि पाइ गरि सजि सिपर पिछारी ।
तोमर सेला सांग खरकिन बरछी धारी ।। ११ ।।
किनहुं धनुख तरकश कस्यो किह लीन तुफ़ंगै[3] ।
आयुध सगरे धारि करि त्यागी प्रभु संगै ।
श्री सतिगुर रण बसत्र के पहिरे परचारु[4] ।
अंग निखंग स खड़ग धरि धनु निठुर उदारू ।। १२ ।।
हुइ करि त्यार तुरंग पर आरोहन कीनो ।
तबि दुंदभि रणजीत पर दुइ चोबन दीनो ।
गरज्यो धुनि गंभीर ते बहु दूर सुनाई ।
उतसाहति हुइ खालसा चढिकै समुदाई ।। १३ ।।
भए पिछारी गुरू के तजि दुरग जु द्वारा ।
बहिर गए हित लरन के बड मंडि अखारा ।
जबरा[5] तुरक वजीद द्वै, देखति भए सैना ।
दूरबीन अनवाइकै आगे धरि नैना ।। १४ ।।
भीमचंद बैठ्यो निकट बूझन को कीना ।
'चढी तुरंगन पर चनूं निकसी बल पीना ।
दुरग पौर ते बहिर को उमडति इत आवैं ।
इन महिं गुर है कै नही सभि मोहि दिसावैं[6] ।। १५ ।।
भीमचंद दूरबीन ते देख्यो बच भाखे ।
'पिखहु खान जी ! अग्र सभि रण को अभिलाखे[7] ।
कंचन ज़ीन तुरंग पर ज़ाहर[8] झमकावै ।
जरे जवाहर जगमगति जो फांधति आवै ।। १६ ।।
नीला बरण[9] छबील हय[10] तिस पर असवारू ।
मोढे सब्ज[11] कमान है, गर खड़ग उदारू ।
जिगा सीस पर दमकती लागे गन* हीरे ।
ऊची कलग़ी झूलती जिह शोभति हीरे ।। १७ ।।

---

1. ज़ीत 2. घोड़ों 3. बरछी 4. विशेष सुंदर 5. ज़बरदस्त खां 6. देखना 7. अभिलाशा 8. प्रगट 9. रंग 10. घोड़ा 11. हरे रंग की

* गण (पाठ)

सो गोबिंद सिंह सतिगुरू हित लरन अरूड़ा।
करे खेत अबि भटनि को बल गन करि गूड़ा।
करि दीजे तोपैं शुरू, मारहु गन गोरे।
सहति सैन के उडहि कित, नहिं प्रापति टोरे॥ १८॥

हुती तोप गन त्यार तबि तिन हुकम बखाना[1]।
साथ मताबी दाग़ दी उठि नाद महाना।
बहु ज्वाला को बमनती तहिं धरा हिलाई।
धूंम धार अंधार भा कुछ लख्या न जाई॥ १९॥

हले सैल ते प्रतिधुनी अरड़ाट उठाए।
गोरे गन ऐसे चले कित छुहन न पाए।
गुर समेत सभि खालसा रिपु सनमुख चाला।
तड़ाभड़ी बंदूक की छोरी तबि जाला॥ २०॥

हेरे, गोरे गगन को ऊच बहु चाले।
सूबे गार निकारि कै झिरकंति बिसाले[2]।
'इलम तोप को कित गयो कित लग्यो न गोरा।
सनमुख आवति दल चल्यो सिर एक न फोरा॥ २१॥

करि नीचे मुख तोप को पुन शलख प्रहारो।
शत्रू हतो इनाम को लीजै धन भारो'।
रिस्यो जानि सूबा सबै पुन शिसत लगाई।
फेरि पेच ततकाल ही मुख नंम्रि कराई॥ २२॥

चली तोप अनगिनत ही गोरे गन धावैं।
लगहिं धरा महिं ग़रक ह्वै नहिं गुर लगि आवैं।
जाति बाम[3] को दाहने नहिं मूरख जानैं।
बायु, बार, बंनि, आदि गन आइसु प्रभु मानैं॥ २३॥

तिस को मार्यो चहति हैं मतिमंद मलीने।
जबि तोपन ते नहिं सर्यो[4] रिस दीरघ कीने।
असवारी ले सैन को हित लरन अरुढे।
बजी दीह दुंदभि तबै उतसाहति गूढे॥ २४॥

पटहि ढल इकबार गन बाजे समुदाए।
चढी चमूं चित चौंप ते भट अग्ग्रय धाए।

---

1. कहा 2. विशाल 3. छत 4. काम न चला

मिलहिं आनि आगै जबहि चलि बान रु गोरी।
भई तड़ाभड़ तुपक की छूटी जुग ओरी ।। २५ ।।
श्री कलग़ीधर रिस धरे धनु कर्यो कठोरा।
खर खपरे धरि धरि पनच मारे अरि ओरा।
बीधन कीने भट तुरक दस दस इक बारा।
आगे पाछे गिरत हैं हय नर इक सारा ।। २६ ।।
उठी धूल असु खुरन ते छाद्यो असमाना।
भयो धूम पुन दूसरे अंधेर महांना।
घोरन पर घोरे गिरे तजि तजि करि प्राना।
आगे पाछे समझ ते होए अग्याना ।। २७ ।।
हाथनि धरैं तुफंग को गिरि खेत मझारी[1]।
कितिक[2] तुरंग नचावते हुइ चमू[3] अगारी।
सय्यद मुग़ल पठान गन उमडंति रुहेले[4]।
तीरन तोमर तबर को तरवारन मेले ।। २८ ।।
हय भजाइ अरि अग्र ह्वै तजि हतहिं तुफंगै।
घनो घुमंड प्रचंड भा भट भे रन भंगै।
मार मार ललकार करि मिलि आपस मांही।
गुरू हुकम ते खालसा वधि अग्र लराही ।। २६ ।।

सिरखंडी छन्द

सिंह क्रोध करि जुट्टे ज्वाला बौनि लै।
बहुतनि के सिर फुट्टे लगि लगि गोरीआं।
केचित कर पग टुट्टे गिरे पवंगमा।
कै सऊर हय सुट्टे डर डर शबद ते ।। ३० ।।
मिलिगे दल समुदाए सेलनि सांग ते।
तीछन[5] तीर चलाए शूंकति मारते।
तोमर हाथ भ्रमाए सनमुख धांवदे।
शत्रुनि देहि धसाए बरमी सरप जिउं[6] ।। ३१ ।।
बरछीं अरू तरवारीं भड़थू मच्चिआ।
लोहू नाल[7] पखारी चमकति लाल ह्वै।
जनु सूही धरि सारी जोगण दारुणा।
चरिबे पान सुपारी जम की जीह कै ।। ३२ ।।

---

1. में 2. कितने 3. सेना 4. क्रोधित 5. तीखे 6. जैसे 7. से

तोपैं दूर पिछारी तजि कै अग्र ह्वै ।
लशकर आइ अगारी संहर रच्चिआ ।
तुपक संबूह संभारी तड़भड़ मच्च रही ।
तक तक गुलकां मारी सबद उठंति बड ।। ३३ ।।
उठ्ठे गज छणकारे गोरी ठोक ते ।
धुंखे पलीते भारे तोड़े डांभते ।
दसतरवां कर धारे छोरे ताकि[1] कै ।
बहुर वरूदहिं डारे तूरन त्यार हित ।। ३४ ।।

नराज छन्द

गुरू गोबिंद सिंह जी बिलंद हेल डारिओ ।
समूह सिंह संग लै तुरंग को संभारिओ ।
बिरुद्ध जुद्ध सुद्ध ते सुक्रुद्ध होइ आइओ ।
कठोर धारि चांप को तुरंग को धवाइओ ।। ३५ ।।

समूह बान तानि तानि तान ते प्रहारते ।
दड़ा दड़ी तुरंग बीर भूम बीच डारते ।
बहै सवेग[2] बायु ज्यो पुरातने[3] तरोवरा[4] ।
उखारि मूल गेरते भई संकीरणं धरा ।। ३६ ।।

थियों कि आइ अग्र जो सु प्रान हीन होवते ।
भयान भूर भूमिका, भगै भगैल जोवते ।
नहीं जु नैन गोचरा बच्यो सुजिंद[5] राख कै ।
इते उते पलाइगे, न सामुहा भिलाख कै ।। ३७ ।।

गुरू समेत खालसे धवाइ जाहिं जाहि को ।
संहारिकै सयार कीन को टिकै न तांहि को ।
लगंति बान गोरीआं दुओरीआं सड़ाकते ।
पलाइ जाइं जीवते, मरे परे तड़ाकते ।। ३८ ।।

चौपई

जुग सूबे गिरपति मिलि सारे । हेरि चमूं प्रति गार उचारें ।
बडे जतन[6] ते सनमुख करैं । कितिक पलावैं, केतिक मरैं ।। ३९ ।।

---

1. देखकर 2. तेज गति वाली 3. प्राचीन 4. तरवर 5. जीवित
6. यत्न

को को सिंह घाव जुति होयो। गुरू प्रताप खालसे जोयो।
यौं लशकर तुरकन के फेरे। केचित पहुंचे भाजति[1] डेरे ॥ ४० ॥
शत्रुनि के दल लरि कर हुट्टे। बहुर चौंप ते समुख न जुट्टे।
सने सने हट करि पुरि ओरी। आवति पुंज तुफंगन छोरी ॥ ४१ ॥
रण महिं मरे लोथ उठवाइ। घाइल को संभाल सभि थाइं[2]।
आइ दुरग महिं सतगुर बरे। शलख तुपक[3] तोपनि की करे ॥ ४२ ॥
दुरजन राखे दूर हटाइ। मारे खेत बिखै समुदाइ।
वाहिगुरू जी की कहि फते। हरख[4] खालसे महिं भा अते ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'जंग प्रसंग'** वरननं नाम इकादशमो अंशु ॥ ११ ॥

---

1. दौड़ते हुए 2. स्थान 3. तोप 4. हर्ष

अंशु १२
जंग प्रसंग

दोहरा

बीत गयो बासुर सरब निस होई जबि आइ।
गिरपति सभि, सूबे दुऊ मिले आइ इक थांइ ॥ १ ॥

ललितपद छंद

मिलि करि मसलत लगे बिचारन 'जाइ नहिं कुछ जाना।
कल तौ हुते गुरू भट ओरे, हमरे खरे मदाना ॥ २ ॥
यांते मरे हज़ारहुं जोधा मिट्टी मास रलाई।
नहिं समीप निज ढूकन दीने मार महान मचाई ॥ ३ ॥
गुर भट बचे, मरे बहु हमरे, जान लीन तबि हेता।
आज लरे सम ह्वै करि सारे बनिकै सिंह सुचेता ॥ ४ ॥
हमरे मरे हज़ारहुं दीखति खेत संकीरन होवा।
गुर को भट घाइल भा को नहिं, मर्यो न रन महिं जोवा' ॥ ५ ॥
भीम चंद ते आदिक राजे हाथ बंदि करि भाखे।
'घात[1] लरन की ऐसी जानति त्रास न मन महिं राखे ॥ ६ ॥
एक बार ही हेल घालि करि, करत वार मिलि सारे।
बंधि टोल, करि घात हटति हैं, होत न किम निरवारे ॥ ७ ॥
आगे लरे घेर हम लीनसि, संग वजीद पठाना।
नीठ नीठ करि गमन्यो बचिकै रोक्यो वहिर मदाना ॥ ८ ॥
अबि तुम चढहु न लरिबे कारन राखहु चहुंदिशि डेरे।
देहु न कछू प्रवेशन अंतरि इस प्रकार लिहु घेरे ॥ ९ ॥
दुरग मझार खरचिबे कारन जमा न वसतू काई।
घ्रित्त सनेह अंन बहु नाहिन नहिं बरूद समुदाई ॥ १० ॥
गुलकां आदि बसंत्र वथु सगरी पाइं न जबि, निकसै हैं।
पुरि ग्रामनि ते मनहि करहु सभि, कोइ न किनहूं दैहै ॥ ११ ॥

---
1. विधि

दिन अलपनि महिं हुइ लचार बहु मिलहि गुरू तबि आपे ।
जिम बांछहु तिम करहु तबहि मिलि तुमरो महिद प्रतापे ।। १२ ।
सगरे मुलखन[1] के तुम मालिक कौन अरै बलधारी ।
महां मवासी ज़ेर करे सभि क्या गुर बात बिचारी ।। १३ ।।
इम गिरपतिनि भन्यो सुनि दोनहुं रिदे महिद बिसमाए ।
पुरख प्रतापवंत मन जान्यों, चली सुमति नहिं काए ।। १४ ।।
सुपति जथा सुख तऊ त्रास करि—गुर के बीर न आवहिं—।
लाखहुं लशकर जागति आधे, परि आधे सुपतावैं ।। १५ ।।
इत सतिगुर करि खानि पान को सभि की सुरति संभारी[2] ।
सालपत्र दे घाइल सभि को छद की पीर निवारी ।। १६ ।।
जो मरि गए करे ससकारनि मन बांछत को दै कै ।
पहुंचे श्री सतिगुर के लोकहिं जनम मरन दुख ख्वै कै ।। १७ ।।
सुपति जथा सुख राति बिताई उठि करि अंम्रित वेले ।
गुरबानी को पठहि खालसा नाम वाहिगुरू ले ले ।। १८ ।।
आसावार रबाबी गावैं सुनहिं एक मन होए ।
सौच शनान ठानि करि सगारे रिस ते तुरकनि जोए ।। १९ ।।
हुकम गुरू कीनो सभिहिनि को 'निज मुरचे सवधाना ।
अग्ग्र जाइ नहिं आयुध खावहु थिरे रहहु निज थाना' ।। २० ।।
भानि हुकमि को थिर्यो खालसा ज्वालाबमनी छोरैं ।
'तुरक पहारी उठे प्राति पिखि जगत जूठ मुख जोरैं ।। २१ ।।
म्रितक संबंधी हुते जु नेरे दाह करे दफनाए ।
रहे शेख गोमाइ गीध गन सभि के आमिख खाए ।। २२ ।।
काक कंक चावंडा चींकति हय नर मास अहारा ।
ब्रिंद भ्रमावैं उड अकाश महिं केतिक भूमि मझारा ।। २३ ।।
जितिक अनंदपुरि के मग[3] पहुंचनि सभि रोके चहुंओरे ।
डेरे करे अनेक जूथपति घेर्यो भै करि घोरे ।। २४ ।।
निकट न ढूके लरिबे कारन दूर दूर करि फेरे ।
जथा शेर ते डर करि रुकते गन गजराज बडेरे ।। २५ ।।
दिवस ढर्यो तबि सतिगुर मांदिक दोनहु ढिग मंगवाए ।
सेवक ले चामी कर संपट, सार अफीमै ल्याए[4] ।। २६ ।।

---

1. देश 2. पूछी 3. मार्ग 4. यह केवल कवि कल्पना ही है

थान उतंग अनंद पुरि जिहठां है पूरबदिशि जोई।
तिस ही दिश महिं कोस अढाई सूबे उतरे दोई ॥ २९ ॥
तंबू शमियाने बहु ताने दूर दूर लगि हेरे।
अनिक बरण के श्याम लाल गन लागे सेत बडेरे ॥ ३० ॥
थान थान झंडे बड गाडे बहुत वरण के सोई।
बैठि ऊच थल प्रभू बिलोकति लशकर शत्रुनि जोई ॥ ३१ ॥
बैठे लगे सुचेता करने निरमल नीर शनाने।
बसत्रपहिर करि थिरता कीनी आइ सिंह तिस थाने ॥ ३२ ॥
लग्ये दिवान खालसे केरा बसत्र शसत्र तन साजे।
जाम दिवस ते सूबे चढि कैं संग लीन सभि राजे ॥ ३३ ॥
थोरे नर ले संग सु गमने दिशटि अनंदपुरि ओरी।
चलति चलति कुछ निकट पहूंचे भीम चंद कर जोरी ॥ ३४ ॥
ज़ेरदसत अरु खां वजीद पिखि बोले राजनि संगा।
'सगरे दिशटि लगाइ बिलोकहु बहु नर थान उतंगा' ॥ ३५ ॥
दूरबीन पुन लाइ निहारे तुरकनि वाक उचारा।
'इह को है थिरिओ मंच ऊपर ढिग लगि सभा उदारा ॥ ३६ ॥
बारंबार चमर कौ ढोरति सूरज मुखी अगारी।
ज़ेवर जरे जवाहर ज़ाहर जगमग जगमग कारी ॥ ३७ ॥
सीस पाग पर जिगा मनोहर कलग़ी झुलति उतंगं।
धनुख धरे, द्वै तरकश आगे पूरन संग खतंगं ॥ ३८ ॥
खड़गं गातरे थिर्यो प्रकाशति महिद मजाज उचेरे।
शाहन शाहु मनहु को बैठ्यो बंदहि चरन घनेरे ॥ ३९ ॥
सिंह सैंकरे संग अलबालति सभा बिसाल लगाई।
सनधबद्ध सभि सेले सांगन खड़ग तुपक समुदाई ॥ ४० ॥
गुर को जथेदार है कोई किधौं पुत्र तिन केरा।
श्री गुविंद सिंह आप किधौं इह दिपहि प्रताप उचेरा ॥ ४१ ॥
भो अचलेंद्र ! चिनारी करियहु नीके मोहि बतावहु।
कौन अहै इत सनमुख बैठ्यो सकल भेद समुझावहु' ॥ ४२ ॥

भीम चंद सुनिकै कर बंदे भले पछानि बखाना[1]।
'इही गुबिंद सिंह कलहि[2] मूल सभि कीने जंग महांना ॥ ४३ ॥
जहिं कहि लर्यो बिजय को प्रापति मनहुं वसतु इस केरी।
कबहुं शत्रु को दीनसि नांहिन, सैलनि चमू[3] निवेरी ॥ ४४ ॥
आदि केसरी चंद संहारे धनु बिद्या मैं भारी।
पैंडखान बड तीरमदाजं इक सर ते लिय मारी ॥ ४५ ॥
मरे बिलोकहु लरे पिछारी तीरनि संग परोए।
परहिं पार, नहिं थिरहिं देहि महिं, बिसमति[4] ह्वै है जोए ॥ ४६ ॥
पाछे पाव न घाल्यो कबिहूं बल करि करि पचहारे।
दल सकेलि बहु करी सूरता टर्यो न किमही टारे ॥ ४७ ॥
प्रथम कथा मैं सुनी क्रिशन जी भयो सु अतिरथि जोधा।
थोरे घने शत्रु नहिं गिनतो लरि मारहि धरि क्रोधा ॥ ४८ ।
राम चंद अतिरथी भए हैं सो सुनिबे महिं आए।
तिन सम पिख्यो बिलोचन ते इह हनै लरति समुदाए ॥ ४९ ॥
तुम समरथ हो जग के मालिक गहहु कि मारन कीजै।
गिर राजे दल प्रजा सहित सभि हार परे लखि लीजै ॥ ५० ॥
हुइ लचार हम हज़रत के ढिग पहुंचे दक्खण जाई।
तुम समेत लशकर बहु आन्यों द्वै करि चुके लराई' ॥ ५१ ॥
इम सुनिकै बल सतिगुर केरा सूबे क्रुद्धति दोई।
'देखि न्रिपत ! तुझ आगे अबि हम गहैं कि मारैं सोई' ॥ ५२ ॥

इति श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'जंग प्रसंग'** बरननं नाम दवा दशम अंशु ॥ १२ ॥

---

1. कहा 2. झगड़ा 3. सेना 4. प्रसन्न

अंशु १३

जंग प्रसंग

दोहरा

अवलोकै द्रिग क्रोध ते ज़बरदसत कहि बात ।
'सुनि बजीद खां अबि इहां बैठे करीअहि घात ।। १ ।।

ललितपद छंद

अलप बिसाल तोप गन आनहुं एक बार दिहु छोरी ।
शिसत लगाइ हतों मैं आपे तजि गोरा गुर ओरी' ।। २ ।।
हुकम दीन ततकाल मंगाई लशकर मांहि जु ठांढी ।
सुभट हज़ारहुं मिलि करि जोरी हेरन को रुचि बाढी ।। ३ ।।
ब्रिखभ तुरंगनि ऐंचन करि कै अरु मानव समुदाई ।
बल ते पेल धकेलति ल्याए नहीं बिलंब लगाई ।। ४ ।।
करी बरोब्रर थिर इक बेरी गज ते उतर्यो सूबा ।
ऊचनीच तोपन मुख करि कै तकै शिसत हुइ कूबा[1] ।। ५ ।।
सरब सभा को अरु सतिगुर को ताकि ताकि बिधि नीकी ।
थैलीमरि बरूद अरु गोरा करि करि मति निज ही की ।। ६ ।।
उत सिहन गति इनकी पिखि करि ब्रिंद्र तोप अनमानी ।
'महाराज अविलोकहु उतको नीचन दुरमति ठानी ।। ७ ।।
खरे मतंग तुरंगम पुंज मानव जहिं समुदाए ।
तहां तोप गन ल्यावन कीनी हम हैरी द्रिग लाए ।। ८ ।।
अस नहिं होइ आइ गन गोरे लगहिं दिवान[2] मझारे ।
अंग भंग करि प्रान बिनासहिं औचक ग़ज़ब[3] गुज़ारे[4] ।। ९ ।।
सनमुखि ते उठि दिशा दूसरी थिरहु लगाइ दिवाना ।
तुरक शत्रु को कहां भरोसा दुशट सु बेईमाना ।। १० ।।

---

1. झुक कर 2. संगत 3. वचित्र 4. करना

जबि निरमोह आप प्रभु उतरे राजनि दग़ा गुज़ारा।
तोप समुख करि ताकि शिसत को गौरा औचक मारा ।। ११ ।।

तैंसी बिधि इन की अबि दीखति रच्यो पाप मति पापी।
बिना जंग ते मारन चाहति मंद महिद संतापी ।। १२ ।।

आछी बात दासि करि बिनती जैसी बिधि लखि पाई[1]।
आगे जिम रावरि हुइ मरज़ी करहु जथा मन भाई' ।। १३ ।।

सुनि करि श्री कलग़ीधर बोले 'सुनहु खालसा प्यारे!
काल कौच तन पहिरन कीनी ब्रह्म कौच उरधारे[2] ।। १४ ।।

जिस ते सेल सांग, सर, शकती, तोमर, गोरी, गोरा।
कंटक दुशट अनेक जतन ते मारहिं जे हम ओरा ।। १५ ।।

एक न लाग सकहि तन हमरे सभि उपाइ निफलावैं।
महांकाल काली रखवारी दे करि हाथ बचावैं ।। १६ ।।

सरब लोह[3] की रच्छा हम को ऊठति बैठति चाले।
पेश न जाइ मलेछनि को कुछ करति उपाइ बिसाले[4] ।। १७ ।।

इतनी कहति हुते श्री सतिगुर छुटी[5] तोप समुदाई।
गाज़ गाज़ करि बार बार जनु गिरी सु गिर पर आई ।। १८ ।।

अंध धुंध इक बार भयो तबि उठ्यो धूंम नभ[6] छायो।
खरे तुरंग मतंग न दीखति निकट सथान हिलायो ।। १९ ।।

प्रति धुनि उठी सैल अरड़ाए शबद सहैं नहिं श्रोना।
कड़कै तोपा बल बरूद ते आगे अटकहि कौना ।। २० ।।

सगरे[7] गोरे[8] गिर के सिर ते ऊचे नभ को जाई।
धिर्यो दिवान सकल बिच[9] श्री प्रभु किह को छुहन न पाई ।। २१ ।।

ऊपर मुख करि देखति हैं सिंह, शूकति जाहिं अकाशा।
परै सिवर[10] जे तुरकनि घाले तिन को करति बिनाशा ।। २२ ।।

सुभट पवंगम करे संहारनि हाहाकार मचायो।
पिखि सूबे तोपन मुख ऊचा फेर्यो पेच निवायो ।। २३ ।।

---

1. जिस प्रकार भी मैंने उचित समझा है, कहा है 2. तन में तो काल कवच धारण किया है और मन में ब्रह्म कवच धारण किया है 3. ईश्वर 4. विशाल 5. चली 6. आकाश 7. सारे 8. गोले 9. में 10. शिविर

सगरी महिं थैली पुन घाली गोरा गज ते ठोका ।
करी त्यार पुन ताकि शिसत को बारंबार बिलोका ।। २४ ।।
दुतिय शलख फिर ताकि प्रहारी दारुण नाद उठावा ।
धूम धारं तहिं जित कित पसरी नहिं देखनि कुछ पावा ।। २५ ।।

गिर की जर महिं गोरे सगरे जाइ लगे इक बारी ।
पिखहि[1] खालसा हरखति ह्वै करि 'तुरकनि की मतिमारी[2] ।। २६ ।।
जगत पती को चाहति हति बेसीपनि सिंध उलीचैं ।
—भगनों सैल—मशक जिम चितवति, कटि सुमेरू खीचै ।। २७ ।।

बिसमति सूबे सरब तोप गन क्रुद्धति ह्वै कसवाई ।
करि करि बुधि बल अनिक घात ते छोरि दई समुदाई ।। २८ ।।
नीचे मुख जबि करहिं तोप को गिर की जर महिं लागै ।
जे ऊचोकरि छोरहिं गोरा ततछिन जावति आगै ।। २९ ।।
शूकति नभ महिं निफल परै कित बांम कि दाहन जाई ।
सरब सभा युति सतिगुर बैसे चिंता किसहुं न काई ।। ३० ।।
बार बार ताकति पुन छोरहि करि करि निज मति आछे ।
नहिं दिवान महिं गोरा लाग्यो जहिं मारन को बांछे ।। ३१ ।।
इक की निंदा दूसर करि करि ताकि ताकि करि छोरैं ।
जेतिक विद्या करि पचि हारे गयो न सतिगुर धोरै ।। ३२ ।।

तजी सैंकरे मुहरमुहू[3] सभि, पाइ बरूद रु गोरा ।
धूंमधार ते अंध धुंद भा अधिक मच्यो तबि शोरा ।। ३३ ।।
जतन करति उरू तोप चलावति तबि संध्या हुइ आई ।
बहु बिसमाइ रहे पछुतावति बडी घात[4] अबि पाई ।। ३४ ।।
लगति जि गोरे गुर समेत अबि होति संहारनि सारे ।
फते[5] मुहिम[6] लेति करि सगरी कारज होति सुधारे ।। ३५ ।।
तम पसर्यो, परकाश हान भा, हटि डेरे को चाले ।
भीम चंद सों बूझ्यो सूबे 'अचरज पिख्यो बिसाले ।। ३६ ।।
इह क्या भयो न जान्यों जाई गोरे पुंज चलाए ।
किसने पता दियो कुछ नांही सतिगुर नहिं न उठाए ।। ३७ ।।

1. देखा 2. मलीन बुद्धि 3. बार बार 4. दाव 5. जीतना 6. युद्ध

ऊचे थल करि लग्यो न गोरा टिब्बा किधौं कुढाला[1] ।
किधौं गिरद मैं हुतो निशाना कै गुर अज़मत[2] वाला ।। ३८ ।।

गए ऊच कै नीचे लागे बाम दाहने होए ।
नहीं त्रास भी किस ने पायो उठन कहां कित कोए ।। ३९ ।।

राजे भन्यों 'चले गन गोरे मैं भी अचरज़ माना ।
जाइ न जानी क्या कुछ होयो क्या मैं करौं बखाना ।। ४० ।।

प्रथम लराई वहिर निकारे तहिं हम तोप चलाई ।
गुर को लगी न, सिख इक मार्यो दियो पता ढिग जाई ।। ४१ ।।

हुतो तोपची बिद्या निपनू मारति दूसर गोरा ।
पिखि सिख मर्यो संधि सर धनु गुर तातकाल खर छोरा ।। ४२ ।।

को सक हुतो प्रमान बीच को लग्यो भाल महिं जाई ।
मर्यो सु, इक सर और चलायो निकट खरो तिस भाई ।। ४३ ।।

तिस के लग्यो मर्यो सो ततछिन तुपची रह्यो न कोई ।
यौं इक बार भई विधि मारन कीनि सुनावन सोई ।। ४४ ।।

तिस तुपची ने पता दियो ढिग खरो अग्र सिख मारा ।
तुमरो गोरा निकट न पहुंच्यो टिब्बा हुतो कुढारा ।। ४५ ।।

क्या अबि भयो, न बीत गयो कुछ, कई बार इम होवै ।
तोप तुपक इह बुरी बलाइ[3] सु लगति प्रान को खोवै' ।। ४६ ।।

ज़ेर दसत कहि 'मैं इम जानी मंत्र सिद्ध इन कीना ।
सार बंद करि निशचल बैठ्यो कछू त्रास नहिं चीना ।। ४७ ।।

नतु गोरे मैं बहुत चलाए इलम[4] लखौ मैं भारी ।
हत्यो न को, समीप नहिं पहुंच्यो, यांते रिदै बिचारी' ।। ४८ ।।

सुनति वजीद खान समुझाइसि 'मंत्र न सिध कुछ जानो ।
प्रथम जुद्ध महिं अधिक विरुद्ध्यों करे बीर गन हानो ।। ४९ ।।

साहिब चंद जूथपति गुर को मार्यो बीच लराई ।
नीठ नीठ[5] करि लोध उठाई ज़ोर लाइ समुदाई' ।। ५० ।।

इम बातनि को करति पहूचे निज डेरे बिसरामे ।
खान पान करि[6] सोवति निंद्रा सगले टिके निसा में ।। ५१ ।।

इत सतिगुर सोदर पठि संध्या चौंकी पूरन होई ।
खरो गिरंधी करि अरदासहि सिर तिंम्रे सभि कोई ।। ५२ ।।

---

1. बुरा 2. मान 3. बुरी वस्तु 4. ज्ञान 5. कठिनाई से 6. खाना खा कर

कूर तुरक झख मारि रहे सभि कछू न बस बल चाला ।
फते गुरु की सभिनि बुलाई ऊचे नाद उठाला ।। ५३ ।।

हरखति भए असत रवि होयो गे सतिगुर निज थाना ।
कितिक खालसा थिर्यो मोरचे ह्वै करि बहु सवधाना ।। ५४ ।।

खान पान करि पौढे सुपते त्रास न मानति कोई ।
जथा गुहा महिं केहरि बासै गज समान रिपु जाई ।। ५५ ।।

दोनहुं दिशा निसा महिं टिक गे आप आपने थाना ।
घेरा पाइ परे चहुं दिशि महिं डरति न रण को ठाना ।। ५६ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'जंग प्रसंग'** ब्रनन नाम त्रयोदशमों अंशु ।। १३ ।।

अंश १४

तीर प्रहारन प्रसंग

दोहरा

उठे वहुर जवि प्रात भी बाजत वजैं बिसाल ।
संख नफीरी नौबतां रणसिंहे ततकाल ॥ १ ॥

ललितपद छन्द

बजे नारे दोऊ दिशि महिं उतसाहति भट होए ।
सौच शनान बने सवधाना निज निज थान खरोए ॥ २ ॥
रोकहिं तुरक पंथ जे पुंजहिं जो चाहति पुरि जायो ।
ब्रिंद वपारी वरज दीए सभि 'लूट लेहिंगे आयो' ॥ ३ ॥
निकटि ग्रान अरु, पुरि जन जेई महिं डिंडम फेरा ।
'आनंद पुरि महिं कुछ पहुंचावै अचित सजाइ बढेरा ॥ ४ ॥
करो न कुछ विवहार तहां को, करहि जि देवै लेवै ।
दुर करि करहि बिदत हुइ पकरैं सदन लूट तिह लेवैं' ॥ ५ ॥
रोपर अरु हुशीआर पुरा पुरि इत्यादिक सभि ठाके ।
दूर दूर चहुंदिशि करि डेरे[1] त्रसति अनंदपुरि ताके ॥ ६ ॥
इम घेरा करि लशकर उतर्यो आइ जाइ नहिं कोई ।
कबि कबि चढहि खालसा इत उत आरहिं आरी रण होई ॥ ७ ॥
चलहिं तोप बंदूक तीर गन मारन मरिबो[2] होवैं ।
मरहिं सैंकरे तुरक जि दिन प्रति समुख प्रानको खोवैं ॥ ८ ॥
कबि कबि रहैं मोरचनि बैठे निज निज थल सवधाना ।
कबहुं तुफंग तोप को छोरहिं हान करहिं अरि प्राना ॥ ९ ॥
कबि कबि नेर अचानक हुइ जबि, चलहिं तुपक समुदाया ।
बाज मनिंदै ब्रिंद खालसा खग शत्रुनि परधाया ॥ १० ॥
श्री अजीत सिंह साहिबजादा साहिब निकट हकारा ।
'सवाधान बनिरहो केसगढ़ करहुरिपुनि तहिंमारा ॥ ११ ॥

---

1. स्थान 2. एक दूसरे को मारना

सिंह पंज सै राख संग निज, वहिर दूर नहिं जावो।
तहिं शत्रु जो नेरि कर्यो चहि मार तुफंग खपावो ।। १२ ।।
निस महिं जाग्रन करहु बिलोकहु सुध रखि शत्रुनि केरी।
ज्वालाबमणी त्यार धरहु नित हिंदु तुरक लिहु बैरी' ।। १३ ।।
पिता हुकम सुनि श्री अजीत सिंह तिस मुरचे महिं बासा।
सदा सुचेत रहति गहि शसत्रनि निज रिपु पुंज बिनासा[1] ।। १४ ।।
नाहर सिंह अरु शेर सिंह द्वै लोह कोट महिं छोरे।
सिंह पंज सै संग करे नित करता संहर घोरे ।। १५ ।।
सवाधान दिन महिं नित रहिते तथा राति तकराई।
शत्रु समीप होनि नहिं देवहिं तजैं तुपक समुदाई ।। १६ ।।
कबि हुइ वहिर करैं रख जूझहिं रिपु गन करति विनाशा।
गुरबाणी संग ध्यान पढहिं नित जीवन गुर भरवासा[2] ।। १७ ।।
अगम पुरे आलम सिंह जोधा सिंह पंज सै[3] लीने।
तहां सुचेत रहे गहि शसत्रनि रिपु ढिग होनि न दीने ।। १८ ।।
उदै सिंह बलवंत बहादर ऊच दमदमे छोरा।
इक सौ सिंह संग मैं रखि करि शत्रुनि को सिर फोरा ।। १९ ।।
मुहकम सिंह साहिब सिंह जोधा घिरे होल गढ़ थाना।
सिंह चार सै संग राख वरि रहैं सदा सवधाना ।। २० ।।
श्री गुरु प्रभु घिर रहैं अनंदपुरि कवि कबि लाइं दिवाना।
अपनो आप दिखावहिं तुरकनि होइ परै घमसाना ।। २१ ।।
गिरनि दिशा महिं दइआ सिंह रहि राखहि बहु तकराई[4]।
इम सतिगुर मुरचनि महिं थापे[5] निज जोधा समुदाई ।। २२ ।।
जुग सूबे आपस महिं मिलि करि पूरब दिशि किम डेरा[6]।
चमूं सिरहंदी सकल पसारी गिर सत्तुद्रव लगि घेरा[7] ।। २३ ।।
दक्खन दिशि दिल्ली को लशकर अगम पुरे लगि सारे।
तोप तुपक त्यारी करि तरकश तहां मोरचे धारे ।। २४ ।।
पशचम दिश महिं लवपुरि सैना आपस महिं डेरे।
अंतर नहीं तनक भी राख्यो द्रिढ़ ह्वै घाल्यो घेरे ।। २५ ।।
परबत दिश परबत पति गन की चमूं परी सवधाना।
गज बाजी गन लगे तबेले शबद उठैं जहिं नाना ।। २६ ।।

---

1. विनाश 2. विश्वास 3. सौ 4. शूरवीरता 5. मोर्चों में भेजे 6. स्थान किया 7. पर्वत से नदी तक घेरा डाल रखा था

लाखहुं लशकर चहुंदिशि उतर्यो तंबू गन शमियाने ।
जहिं कहिं पिखयति कगड़ कोट को, बरन बरन बर बाने[1] ॥ २७ ॥
तिम झंडे चहुंदिशि महिं ऊंचे झूलति नाना रंगा ।
गज चिंघारति हयनि हिरेखा ऊठति शबद उतंगा ॥ २८ ॥
लकरी घास निखूटी जहिं कहिं दूर दूर ते आनै ।
भरती[2] अंन[3] घनी चलि आवति देश बिदेश महानै ॥ २९ ॥
अंतर नहिं प्रवेशनि देवैं चहुंदिशि रखि तकराई ।
श्री अनंदपुरि इस विधि घेर्यो मिलि मूरख[4] समुदाई ॥ ३० ॥
रहैं मोरचे निज निज निस महिं सिंह कि तुरक पहारी ।
जाग्रति रखैं सुचेती सभि बिधि ठांढे बारो बारी ॥ ३१ ॥
दिन महिं जे प्रधान अरु राजे सभि सूबिनि ढिग जावैं ।
करहिं बारता अनिक बिधिन की जतन समूह बनावैं ॥ ३२ ॥
ज़ोरदसत अरु खान वजीदा भीमचंद कहिलूरी ।
अपर गिनेश्वर बनहिं सलामी भूपचंद हंडूरी ॥ ३३ ॥
बहु प्रकार की मसलति[5] गिनते[6] बिनती भनहिं बडेरी ।
करहिं कुशामद[7] तुरकनि केरी[8]—कोप न हुइ किसी बेरी—॥ ३४ ॥
इत सतिगुर ढिग दौन समे महिं भले सिंह चलि आवहिं ।
दरशन परसहिं हरखहिं उर महिं बंदहि सीस निवावहिं ॥ ३५ ॥
सभा लगहिं कहिं अनिक बारता सुनि सुनि करि गुर बैना ।
बहुर मोरचे थिरहिं आपने करैं गुज़ारनि रैना ॥ ३६ ॥
अंतर अंन लवन घ्रित आदिक सो बरतन महिं आवै ।
बंद बहिर ते भयो सरब कुछ नहिं प्रवेशवो पावै ॥ ३७ ॥
इक दिन कलगीधर आनंदपुरी बैठे सभा लगाई ।
चमर चलाचल ढोरति सिर पर पिखहि चमूं समुदाई ॥ ३८ ॥
दूर दूर लगि करहिं बिलोकन इत उत द्रिशटी चलावैं ।
तंबू शमियाने गन झंडे जित कित दिशटि आवैं ॥ ३९ ॥
शालमली[9] को ब्रिच्छ हुतो इक जिह सकंध[10] समुदाया ।
तुंग अधिक विसतार सहित सो सघन पत्त्र की छाया ॥ ४० ॥
तिस के तरे थिरे द्वै सूबै चौंपर खेल मचाए ।
भीम चंद न्रिप भूप चंद ते आदि निकट गिर राए[11] ॥ ४१ ॥

---

1. नहीं रही 2. आना 3. अनाज 4. मूढ़ 5. गुप्त तथा गूढ़ हितकर सलाह 6. करते 7. चापलूसी 8. की 9. सिंबल 10. शाखाएं 11. पहाड़ी राजा लोग

बडी सभा जुति बैठे तिहठां[1] तुरक मिले परधाना।
रिदे अनंदति करहिं कुशामत कहि कहि बातन नाना॥ ४२॥
धनुख[2] कठोर गुरु के आगे हाथ बिखे गहिलीना।
कंचन लपट्यो सुंदर खपरा तीछन भीछन कीना[3]॥ ४३॥
तरकश ते तबि कर्यो निकासन संधि पनच महि सोई।
करि कै तान[4] कान लगि ताना शबद बडो तबि होई॥ ४४॥
करि उदेश[5], सूबा जहिं बैठ्यो तित को सतिगुर त्यागा।
हुतो प्रयंक थिर्यो जिस ऊपर पावे महिं सर लागा॥ ४५॥
खपरा लगति फट्यो सो ततखिन औचक उदके सारे।
तीछन भीछन कीन निरीछन—खपरा इह गुर मारे—॥ ४६॥
ज़ेरदसत निज दसत निकास्यो कहि बजीद खां संगा।
'इती दूर सर पहुंच्यो जिन को कहां ओज नर अंगा॥ ४७॥
कोस अढाई अहै अगंदपुरि जहिं ते बैठि प्रहारा।
नर तन को कुछ इह बल नांहिन अज़मति[6] को बलभारा'॥ ४८॥
रतन जरे बर वागर उपर, हेरति सरब सराहा।
'कंचन लिपति मोट बड कानो लोह पुलादी[7] आहा॥ ४९॥
मुखी अहै कर तल सम आयुत, नर तन कौन चलावै।
अज़मति जुति गुर करै प्रहारनि इती दूर पहुंचावै॥ ५०॥
कहहू लगै इह बचहि कौन तबि जथा तोप को गोरा।
भड़भड़ाइ[8] हमपरे सभै अबि—रखि खुदाइ तन मोरा'—॥ ५१॥
तज्यो खेल चौंपर को तबि ही कहि कहि सभि बिसमाइ।
दूरबीन तबि लावन कीनी बैठे प्रभू सुहाए॥ ५२॥
सभा सहित अवलोकति सगरे चमर चलाचल चारू।
पान कमान धरे जुति बानहि दीपति शोभ उदारू॥ ५३॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'तीर प्रहारन प्रसंग'** बरननं नाम चतरदसमो अंशु॥ १४॥

---

1. वहाँ 2. धनुष 3. तेज़ किया हुआ 4. शक्ति 5. यत्न 6. अचानक 7. महत्व 8. फौलाद

अंशु १५
जंग प्रसंग

दोहरा

जथा बारता परसपर गिरपति सूबन कीनि ।
तथा प्रभू जानति भए जो निशचे चित चीन[1] ॥ १ ॥

ललितपद छंद

कागद को श्री सतिगुर लेकरि हरफ[2] फारसी केरे ।
लिखति भए तिस ऊपर आछे रिपुनि ब्रितंत धनेरे ॥ २ ॥
'दानशवंदन[3] दानश कीनसि बिद्या को अभ्भयासा ।
करहि निताप्रति हुइ तिह प्रापति सुभट धरहिं भरवासा[4] ॥ ३ ॥
करामात को कहिर कहैं बड करति न रन के मांही ।
इह तौ करम करीम कर्यो कुल करता पुरख अलाही[5] ॥ ४ ॥
भूत भविख्यत वरतमान महिं व्रिद्या जिनहुं कमाई ।
दुरगम को भी सुगम करति हैं, दुलभ सुलभ हुई जाई' ॥ ५ ॥
लिख्यो पत्र सो कर्यो इकत्रै धागे सों सर बंधा ।
बहुरो धनुख कठोर लियो कर बान पनच महिं संधा ॥ ६ ॥
तानि कान लगि बल ते छोड्यो चल्यो शूंक असमाना ।
दारुन शब्द चांप ते होवा बैठे पिखहिं सुजाना ॥ ७ ॥
गिरपति तुरक जहां बिसमाए करैं परसपर बाती ।
शालमली को बडो कांड जो जिस तरु तर नर पाती[6] ॥ ८ ॥
बडे शबद जुति लग्यो जाइ कर सभिनि करे द्रिग ऊचे ।
कहां बिलौकैं लग्यो आनि करि दूसर बान पहूचे ॥ ९ ॥
नीके पिख्यो सु कागद लटकति बंध्यो तागे संगा ।
अचरज ह्वै करि दास चढायहु 'आनहु काढि खतंगा ॥ १० ॥

---

1. मन में लाना 2. अक्षर 3. बुद्धिमान् 4. विश्वास 5. ईश्वर की ओर से 6. पंक्ति

त्रसतहि हुइ करि तूरन चढि करि काढ्यो ठानि उपाए।
ले करि ज़ेरदसत अवलोक्यो खोल्यो दसत लगाए ॥ ११ ॥
पिखे लिखेहैं हरफ पारसी बनी बैत बिच बाची।
लख्यो माइना सभिनि सुनायहु 'इह विद्या बिधि साची ॥ १२ ॥
अज़मत[1] की अज़माइश[2] नाहिन इह अभ्भयास प्रतापा।
जिनहुं कीन तिन को ब्रहु प्रापति धरैं भरोसा आपा ॥ १३ ॥
करामात की निंदा कीनी बिद्या की वडिआई[3]।
जिन बुधि बल ते बहु अभ्यासी सो दुरलभ भी पाई ॥ १४ ॥
कहि वजीद खां 'अहै इसी बिधि जिन अभ्भयास कमावा।
अस को वसतु जु प्रापति होइ न लेति जु करति उपावा ॥ १५ ॥
अचरज अपर बिचारहु चित महिं हम तुम बातैं कीनी।
कोस अढाई पर सो बैठे तिह ठां सगरी चीनी[4] ॥ १६ ॥
गुरु गंभीर धीर धरि भारी सभि घटि अंतरजामी।
कौन करै समसरता तिन की करामात को स्वामी ॥ १७ ॥
इम कहि सुनि करि बहु बिसमाए मिले आनि समुदाई।
पढहिं पत्र को बात बिलोकहिं करहिं तरीफ बडाई ॥ १८ ॥
सय्यद, शेख, पठान, मुगल गन आनि आनि परवारे।
सभि गिरपत जुति सचिवनि बैठे गुर को सुजस[5] उचारे ॥ १९ ॥
'इति शकति को धारनहारो नर लीला अनुसारी।
हम सों लरति बित्यो चिरकाला नहिं कुछ बिघन बिथारी[6]' ॥ २० ॥
निज निज उर महिं डर सभि धरि धरि गमने उठि उठि डेरे[7]।
अस नहिं होहि गुरू रिसकरि उर सर ते हमहति गेरे ॥ २१ ॥
कोस अढाई हते निशाना क्या छोरहि किस तांई[8]।
तऊ हमहिं सम लरति करति रण इह तो बहु बडिआई[9]—॥ २२ ॥
सगरे रिदे बिचारति महिमा वहिर कहैं बहु नांही।
सभि बिधि अधिक प्रतापी जानहिं-भयो न को भव मांही ॥ २३ ॥
उत सतिगुर अवलोकति चहुं दिश तबूं गन शमियाने।
गज बाजी के पुंज खरे बहु सिहनि संग बखाने ॥ २४ ॥
'आदि न अंत सैन को लखियति परी चहूंदिश मांही।
मति काची इत परे परबती चेरे तुरकनि चाही ॥ २५ ॥

---

1. बुद्धि 2. परीक्षा 3. महत्त्व 4. विचार किया 5. यशोगान किया 6. विस्तार 7. स्थान 8. को 9. महत्त्व

दया सिंह कर जोरि उचारी 'आज तुरक पति राजा ।
सिंधु मेखला अवनी लीनसि फिरै सीस पर ताजा ।। २६ ।।
कहूं मवास न जग महिं छोर्यो देश बिदेश अशेशू ।
हाला भरैं तुरकपति आगे अवरंग भयो विशेशू ।। २७ ।।
अरहि कौन, हे प्रभु ! इन सनमुख उदै असत तुरकाना ।
आप लरहु सभि सफा[1] उठावहु जग महिं रहिं,हिंदुवाना ।। २८ ।।
राजे कुछ रजपूत रहे जग, तिन की बहु मति मारी ।
दे कंन्या तुरकनि को जीवति धिक तिन की सरदारी ।। २९ ।।
उदै असत की लीनि जमीयत[2] रय्यत सभि नर होए ।
तुम प्रभु लरहु कि मारहु तुरकनि अपर न जग महिं कोए' ।। ३० ।।
इत्यादिक कहि सुनि श्री सतिगुर संध्या समैं पछाना ।
उठि करि चले बंदना ठानहिं सिंह जोरि जुग पाना ।। ३१ ।।
निज-निज मुरचनि महिं सवधानी दुहुं दिशि महिं तकराई ।
खान पान करि गाढे होवति सुपते राति बिताई ।। ३२ ।।
दिन प्रति तोप तुपक बहु छूटहिं मुरचनि रहै लराई ।
इक दिश नदी दुतिय दिश गिर गन शबद होति समुदाई ।। ३३ ।।
जित दिशि परहि जंग नर, दीरघु तित दिशि सिंह सधावैं ।
खड़ग प्रहारन लाग पहुंच करि रिपु की चंमू[3] भजावैं ।। ३४ ।।
कई बार गन मरहिं पहारी कई बार तुरकाना ।
जित दिशि परहि जोर बल दल को घालहिं बड घमसाना ।। ३५ ।।
यांते डरति, न करति लराई दबकहिं मुरचनि मांही ।
निज निज थल महिं थिर हुइ बैठति उट करहिं बड तांही ।। ३६ ।।
भीम चन्द सूबनि संग मिलि करि तितसीख्या असदेता ।
'गुर ढिग तसकर गन बटपारे तिन ते रहहु सुचेता[4] ।। ३७ ।।
भद्र देश आदिक जे राठहि बीन बीन करि राखे ।
निस महिं अधिक बली से होवति महां तिमर अभिलाखे[5] ।। ३८ ।।
अस नहिं होइ निकस करि निस महिं परहिं मोरचे मांही ।
कतल करहिंगे, औचक धावहिं, कुछ बस चलहिं नांही ।। ३९ ।।
बहुते अहैं लोहगड़ महिं सो राखहु बहु तकराई ।
फेरा आप करहु तिस दिश महिं तजि सिपाह समुदाई' ।। ४० ।।

---

1. पंक्तियां 2. बहुत सारे मनुष्य, सेना 3. सेना का एक भाग 4. सावधान
5. अभिलाषा

इत्यादिक सुन जेरदसत जौ कई बार करि फेरे।
सय्यद शेख घने तहिं त्यागे करि सवधान बडेरे॥ ४१ ॥
जमादार भारी तहिं छोरा नाम शरफली[1] जांही।
'सुपतहु नहिं निसमहिं बन ग़ाफल[2] शसत्र राखिकर मांही॥ ४२ ॥
सवाधान देखति उत रहीए द्रिगउघार करिनी के।
नहिं आलस किस रीति करहु तुम गढ हुइ गयो नजीके'॥ ४३ ॥
सुनति शरफली बाक बखाना 'क्या नबाब[3] इम भाख्यो।
हज़रत[4] को इकबाल[5] बडेरा बिजै करन अभिलाख्यो॥ ४४ ॥
किस को प्रान न प्यारे होवहिं जो हमरे पर आवैं।
केतिक गढ महिं नरभट ठहिरे निकस जु मार मचावैं॥ ४५ ॥
कई हज़ार सिपाह बिलोकहु रिपु को त्रास करंती।
नीठ नीठ सिख थिरे दुरग महिं वहिर म्रितू दिखरंती॥ ४६ ॥
हुकम करो तौ हेला घालहिं तोरहिं गढ दरवाजा।
कहि करि कहां त्रास दिखरावौ हम हैं सूभट समाजा'॥ ४७ ॥
इम तकराई करति मोरचनि सूबे फिर दिशि चारो।
'निकट न ढूकहु थिरे रहहु थल घेरा पुरि को डारो॥ ४८ ॥
लरिबे महिं समता नहिं बनि है मरहिं हज़ारों जोधा।
मार कूट पुन प्रविशहिं अंतर चलहि न बस किम क्रोधा॥ ४९ ॥
अंन आदि वसतू थुर जै है तऊ गुर वहिर निकासहिं।
जे करि लरति रहैं सिंहनि सन लाखहुं सुभट बिनासहिं॥ ५० ॥
तऊ न सर[6] होवहि रण मंडहि अपर उपाव न कोई'।
सगरे गिरपति तुरक प्रधाना इह मसलत[7] द्रिढ होई॥ ५१ ॥
लरिबे ते सभि अंग बचावहिं मानि मरन को त्रासा।
घेरा पाइ घिरे चहुं दिशि महिं चिरंकाल जै आसा[8]॥ ५२ ॥
केतिक[9] दिन बीते इस भांती पर्यो चुगिरदे घेरा।
सिंहन के उतसाह बधैं नित रिपु[10] सन लरिबे[11] केरा॥ ५२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'जंग प्रसंग'** बरननं नाम पंचदशमो अंशु॥ १५ ॥

---

1. शर्फ अली (नाम है) 2. ध्यान न देने वाला 3. नवाब 4. बड़ा 5. महत्त्व 6. जीतना 7. बातचीत, योजना 8. आशा 9. कुछ 10. शत्रु 11. लड़ने

अंशु १६

मोरचा कतल करन प्रसंग

दोहरा

हुतो दूर कुछ लोहगड़ आनंद पुरि ते सोइ।
ढुके मोरचे निकट तिहिं दिन प्रति गाफल होइ ॥ १ ॥

ललितपद छंद

इक दिन निसा भई अंधिआरी शेर सिंह बच भाखा।
'नाहर सिंह जी! सवाधान बनि सुनि मेरी अभिलाखा ॥ २ ॥
श्री अनंदपुरि ते कुछ अंतर, नेर[1] नहिं लखि सोऊ।
यां ते निकट मोरचे ल्यावति मन वधाइ सभि कोऊ ॥ ३ ॥
अगम पुरे अरु होल गड़ी महिं अपर केस गड़ सारे।
दूर दूर हैं सभि थल मुरचे ढुके निकट हमारे ॥ ४ ॥
अबि निस महां अंधेर गुबारी दुरजन गाफल भारे।
धरे भरोसा सुपत परै बहु -को इक जागन हारे ॥ ५ ॥
ऊपर परहु क्रिपाननि ऐंचहु करहु लथेर पथेरा।
एक वार करि करहु किनारा परिहै रौर घनेरा ॥ ६ ॥
नहिं पछान परसपर होवै कटहिं परसपर सारे।
होति प्राति के करहिं फरक किर निकट न आइ हमारे ॥ ७ ॥
सुनि नाहर सिंह तिह समुझायहु "हुकम त प्रभू बखाना।
नित प्रति कहति—न निकसहु बाहर दुरग रहहु सवधाना ॥ ८ ॥
अबि बूझनि की बिधि नहिं बनि है क्रिपासिंध सुख मांही।
नहिं जगा वन कैसे होवहि कुतो कहहिं तुव पाही[2]' ॥ ९ ॥
शेर सिंह तुन कह्यो 'लखहु इम राजनीत की बाती।
समा पाइ रिपु ते न चुकै किम निशचे करहि सु घाती ॥ १० ॥
तुरकनि को मारन मति गुर को इह बिधि तिन अनुसारे।
प्रभु बूझनि की अबि नहिं आछी, सुनि हैं सकल[3] सकारे ॥ ११ ॥

---

1 नज़दीक 2. तुझे क्या? 3. समस्त

अबि मैं भली भांति रिपु जोहे परे सुपत इक सारा।
[illegible] धात हइ हाथ न आवै करहु संघार सथारा ॥ १२ ॥

[illegible]

॥

जाम निसा ते त्यारी ठानति अपर दुधरी बिताई।
खट घटिका जबि रही राति लखि सिंह त्यार समुदाई ॥ १५ ॥
सभि को समुझावन करि नीके 'इक इक खड़ग प्रहारे[2]।
बहुर शत्रु के बीच न रहीए हूजै तुरत किनारे ॥ १६ ॥
पौर लोह गड़को तबि खोल्यो निकसे सिंह जुझारे।
खड़ग सिपर द्वै कर महिं लीने अछिन[3] अछिन पग धारे ॥ १७ ॥
मौन धरे कुछ करे शबद नहिं औचक परे सु जाई।
मुंडीआ[4] नगन तुरक कट डारे सभिनि क्रिपान चलाई ॥ १८ ॥
मारि मारि करि रौर मचायहु कूदति सिंह जुझारे[5]।
नींद मांहि ते पलक न खुलतं। मारि खड़ग कटि डारे ॥ १९ ॥
आधी घड़ी क्रिपान बही बहु रुंड मुंड गन होए।
शसत्र संभार न किस की होई कटि कटि धरि पर सोए ॥ २० ॥
किस को मुंड तुंड किह काट्यों किस की ग्रीवा न्यारी।
किह सकंध, भुज, हाथ कट्यो किह, कट किस पेट पिछारी ॥ २१ ॥
जंघ कटी, जानू किस काट्यो, किस के चरन बिदारे।
लोचन, करन कटे बिललावति इक बारी इम मारे ॥ २२ ॥
भ्यो सथार खेत महिं तुरकनि जिम काशट कटि डारे।
निसा अन्धकार शोर बड माचा दिखति न हाथ पसारे ॥ २३ ॥
निकट कि दूर हुते गन डेरे सनध बद्ध हुइ धाए।
सिंह किनारा करि ततछिन महिं दुरग बिखै सभि आए ॥ २४ ॥
चलनि लगी गन तुपक मिले पुन कछू पछान न होई।
आपस बिखै कटन सभि लागे सूझ बूझ नहिं कोई ॥ २५ ॥
गुलकां संग मरे तबि अनगन कटे खड़ग के संगा।
इत उत लखैं सिंह इह आवति करति आप महिं जंगा[6] ॥ २६ ॥

---

1. बरछी 2. चलाए 3. लगातार 4. सिर 5. बीर 6. युद्ध

रसावल छन्द

पिता पूत मारा। कि भ्रातं प्रहारा।
करा चोल चाले। न जाही संभाले ॥ २७ ॥
किमूं नाहिं पूछे। सुधी ते सू छूछे[1]।
करैं ओज धावैं। प्रहारं चलावैं ॥ २८ ॥
कटैं आप माहीं। दिखे कोइ नांही।
पछानैं न आना। प्रहारै[2] क्रिपानां ॥ २९ ॥
तिसी मोरचा मैं। संहारे तमामैं।
बह्यो श्रोण जाई। थिरा लोथ छाई ॥ ३० ॥
सुन्यो रौर सूबे। महां चित डूबे।
कट्यो मोरचा को। सुन्यो शोर तांको।। ३१ ॥
'बडो ग़ज़ब होवा। नहीं मूढ जोवा ॥
बनै को उपावा ? अन्धेरा सु छावा ॥ ३२ ॥
नही राति जागे। तबै दाव लागे।
परे सिंह जाई। लखे जाहु भाई' ॥ ३३ ॥

दोहरा

इस प्रकार कटि मोरचा फते[3] खालसा पाइ।
तुरक मूढ मति होइ करि नाश 'भिए दुख पाइ ॥ ३४ ॥

चौपई

कंचन को मंदर बड सुंदर। हीरा मुकता लागे अंदर।
नीके कारीगरनि सुधारी। तरु की पंकति बेल बिथारी ॥ ३४ ॥
बहुत बडूरज मनि दमकाई। अस घर सभि रुत महिं सुखदाई।
सतिगुर तिस के बीच बिराजे। रुचिर प्रयंक तरे छबि छाजे ॥ ३५ ॥
रचे पुरट के पावे चारू। सबज़[4], मणी खचि की गुलज़ारू।
मूंगा अधिक जांहि के जर्यो। किसी देश को सुंदर घर्यो ॥ ३७ ॥
रुचिर मख़मली छादि बिछौना। सेज बंद सुंदर दुति भौना।
गुंफे ज़रीदार[5] लटकंते। तिस पर प्रभु बिस्राम करंते ॥ ३८ ॥
रौरा सुनि करि निंद्रा त्यागी। चौंकीदार हकारसि आगी।
तिस को कह्यो 'पठहु नर कोई। कहां जंग माच्यो लिहु जोई ? ॥ ३९ ॥

---

1. सूचना के न होते हुए 2. चलाना 3. जीत 4. हरी 5. कीमती और चमकदार

तहिं को सिंह ल्याउ मम तीर। सरव बात जो कहै सधीर।
सुनि बाहर ते सिंह पठायो। दौर्यो तुरत लोहगड़ आयो॥ ४० ॥
शेर सिंह नाहर सिंह मिल्यो। 'गुरू पठायो मैं इत मिल्यो।
—किम रौरा[1] माच्यो तुम ओरी—। सुधि लैबे हित आयो दौरी॥ ४१ ॥
अपने सिंह संग कर दीजै। पठहु तुरत नहिं बिलम लगीजै'।
सुनि गुर नाम बताइ ब्रितंता। '—फते लई—कहीए भगवंता'॥ ४२ ॥
संग जवाहर सिंह पठायो। ततछिन[2] चल्यो गुरू ढिग[3] आयो।
बैठे प्रभु बूझ्यो तिस तांई। 'कस रौरा माच्यो समुदाई?'॥ ४३ ॥
कह्यो जवाहर सिंह कर जोरि। 'प्रभु जी भयो मोरचे शोर?
शेर सिंह नाहर सिंह दोई। मंत्र कीन मुरचा ढिग होई॥ ४४ ॥
सगरे सुपते तुरक निहारे। तुमरी दिशि ते डर उर धारे।
शेर सिंह तबि कह्यो सुनाई। हाथ जोरि हम लें बख़शाई॥ ४५ ॥
निस अंध्यारी पिखि करि परे। चरग धरे खग नंगे करे।
कटीआ करति भए तुरकाना। —हाइ खुदाइ अलाहि-बखाना[4]॥ ४६ ॥
आधी घरी क्रिपान बजाए। को हति ह्वै को घाइ पलाए।
तुपक तमाचे खडग निखंगा। कराचौल बहु लूट निसंगा॥ ४७ ॥
जबहि मताबी जरे मसाला। जित कित भयो प्रकाश बिसाला।
आइ आपने दुरग समाए। किस को लगी न ताती बाए॥ ४८ ॥
तुरत फते को दुंदभि बाजा। बहु तुरकनि को लूटि समाजा।
आप सहायक ह्वै करिवायो। मारि खालसा उर हरखायो'॥ ४९ ॥
इतने महिं होई भुनसारा। सौच शनान गुर तन धारा।
दोनहुं जथेदार बुलवाए। आइ तबहि पग सीस निवाए॥ ५० ॥
भए प्रसंन देखि गोसाईं। 'साध साध' सभिहूंनि अलाई।
'इस बिधि ही मारन रिपु बनै। बचै आप दल छल ते हनै॥ ५१ ॥
दीजै तुरकन सदा सजाइ। राज तेज इन देहु खपाइ।
सने सने लयता सभि लहैं। नहीं नगारदंद को रहै॥ ५२ ॥
गिरपति बनि हैं तबै अधीन। रहैं खालसे आगे दीन'।
इम कहि करि बर सतिगुर पूरे। सिरोपाइ मंगवाइसि रूरे॥ ५३ ॥

---

1. शोर 2. उसी समय 3. पास 4. परमात्मा को याद करने लगे

बखशे जथेदार जे दोइ। शेर सिंह नाहर सिंह सोइ।
सभि सिंहनि को हुकम बखाना। पुरहु कामना मन की नाना ॥ ५४ ॥
सभि पर खुशी करी हरखाइ[1]। गए आप गढ देखनि थाइं।
सरब प्रकार करी तकराई। गुलकां[2] अरु बरूद समुदाई ॥ ५५ ॥
बहुर सभा महिं आनि बिराजे। जिन देखति अघ जै हैं भाजे।
सुंदर सूरत मोहित मन को। सावत सिक्ख रहे, धंन तिन को ॥ ५६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'मोरचा कतल करन प्रसंग'** बरननं नाम खोड़समो अंशु ॥ १६ ॥

---

1. हर्ष 2. गोले

अंशु १७

तोप मारन प्रसंग

दोहरा

शेर सिंह जोधा महां नाहर सिंह ते आदि।
सभिनि सिंह मनु कामना दई करे अहिलाद[1] ॥ १ ॥

ललितपद छंद

देवनि को भी दुरलभ दीरघ चार पदारथ दीने।
अंत समैं दे अपन समीपा महां क्रितारथ कीने ॥ २ ॥
थान थान प्रति मुरचनि मांही करे सिंह सवधाना।
'होनि समीप न दीजै; दुरजन शसत्रन ते करि हाना' ॥ ३ ॥
बिनां त्रास इक गुर की आसा सिंह सुचेत रहंते।
दुशट समीपी होनि न पावैं लाखहुं गिरद भ्रमंते ॥ ४ ॥
उत सूबे दोनहुं मिलि बैठे भीम चंद ढिग आयो।
गिरपति अपर हंडूरी आदिक मिले आनि इक थायो ॥ ५ ॥
तुरक मुसाहिब स्याने मुखि जो बैठे सरब सभा मैं।
शोक पराजै ते चित उपज्यो तजि उतसाह तमामैं ॥ ६ ॥
भजि बचे जे मुरचे महिं ते सो ततकाल बुलाए।
करन लगे दरियाफत तिन की 'किस बिधि दुशमन आए ? ॥ ७ ॥
किम आलस बहु करे दबावनि ग़ाफल ह्वै करि सोए।
भई पराजै सुबकी हम को जहिं कहिं सुनि सभि कोए ॥ ८ ॥
कहति भए सभि 'सुनि नवाब जी ! रखी घनी तकराई।
जानि फजर' को वखत होइ अबि नर बहुते अलसाई ॥ ९ ॥
करति रोज ही रहे इसी बिधि फजर वखत अलसाए।
दिन महिं लरि हैं इह बिसास धरि जागति कितिक रहाए ॥ १० ॥
इतने महिं तसकर की समसर आनि परे समुदाई।
पगिया की नहिं सुद्धि संभारी आयुध कहां उठाई ॥ ११ ॥

---

1. प्रात:काल

सुपत कटे, को उठन न पाए, किनहिं न बसत्र संभारा ।
इम ज़ुलमी[1] ततकाल करति ही सकल मोरचा मारा ॥ १२ ॥
या खुदाइ हम जानति क्या थे दग़ा करहिं संहारे ।
एक घरी दरम्यान परी नहिं, इम ए गज़ब गुज़ारैं ॥ १३ ॥
सूते जागति नहीं बराबर औचक खड़ग प्रहारैं ।
पुन आपस महिं भिड़े भूल भट भूर भयानक मारे' ॥ १४ ॥
ज़ेरदसत अरु खान वजीदा सूबे डूबे लाजा ।
रिदे क्रोध करि नेत्र फेरि करि ताड़्यो गिरपति राजा ॥ १५ ॥
'आप निचिंत होइ करि बैठे शाह चमूं मरिवाई ।
कई हज़ार मरी बहु निवरी अपकीरति जग छाई ॥ १६ ॥
कह्यो शाहु सन जबि तुम पहुंचे—सतिगुर ढिग[2] नहिं सैना— ।
अबि इह लरति कौन बिच ह्वै कै क्यों न कहति कुछ बैना[3] ? ॥ १७ ॥
हज़रत सुनहि मुहिम महां इम लरि करि लशकर गारा ।
क्रोध करहि तबि कौन सहारै बिनसै राज तुमारा ॥ १८ ॥
राति मोरचा कट्यो निकट तुम भए न आनि सहाई ।
नहीं भेत अंतर ते ले करि सुध नहिं प्रथम सुनाई ॥ १९ ॥
लरिबे को तुम नहिं 'बल घालहु बैठ होइ किनारे ।
हम अबि कूच करहिं चढि जावहिं पाछे तुम को मारे' ॥ २० ॥
भीम चंद अरु भूप चंद जुग हाथ बंदि करि बोले ।
'किम नबाब जी ! दोश हमारो सुध कुछ रही न ओले ॥ २१ ॥
हम नित कहति रहति हित अति जुति तसकर गन बटपारा ।
करे बटोरन ठौर ठौर ते गुर को भट दल भारा ॥ २२ ॥
सभि ते अग्र मोरचा होयसि रहे न बिच सवधाने ।
करी सिआनप किनहूं नांहिन पुंज प्रान किय हाने ॥ २३ ॥
लरिबे ते सरबर नहिं होबहु लाखहुं चमूं खपावैं[4] ।
रहहु दूर थिर ह्वै करि सगरे निकट होन नहिं पावैं ॥ २४ ॥
अंन आदि रोकनि करि रखीअहि, आछी बात इसी महिं ।
जाग्रति रहैं राति को सगरे जो भट थान तिसी महिं ॥ २५ ॥
हम अनुसारि आपि के सभि बिधि करहिं कार जिम भाखहु ।
लरन मरन जीतनि अरु हारन दिशि खुदाइ अभिलाखहु' ॥ २६ ॥

1. ज़ालिम 2. पास 3. शब्द 4. समाप्त हो गए

कितिक हज़ार दरब गिरपति सभि सूबनि को पुन दीना।
जबि कुछ रिसहिं इसी बिध त्रासहिं कई बार धन लीना ॥ २७ ॥
चढि सगरे पुन गए विलोकन पर्यो मोरचा छूछा।
काक कंक गन गीध स्वान पल खाहिं, देखि तबि पूछा ॥ २८ ॥
'जबि पहुंचे तबि गुलका लागै लोथ परी समुदाई।
दफनावन की बिधि नहिं बनती, परे रहैं तिस ठाई[1] ॥ २९ ॥
दूर मोरचा हटि करि बांधहु, नित रहीअहि सवधाना।
गुर ते फते न कबहूं लीनसि कई बार रन ठाना' ॥ ३० ॥
इम सुचेत करि सभि थल फिर करि जुग सूबे[2] अरु राजे।
पुन पहुंचे निज सिवर बिखै खल नहिं कुछ दुंदभि[3] बाजे ॥ ३१ ॥
प्रथम पहिर जुग दिन के बीते ढर्यो दुपहिरा हेरा।
सतिगुर बिजीआ तत्रि अनाइ करि तूरनि आनति चेरा ॥ ३२ ॥
जरे जवाहर कंचन संपट ले अफीम* को आए।
मावे को प्रमाण करि तेतिक श्री गुर मुख महिं पाए ॥ ३३ ॥
सौच शनान ठानि करि बैठे ऊचे थल भगवंता।
सिंह सुचेत करि करि पहुंचे दरसहिं मुख दुतिवंता ॥ ३४ ॥
लग्यो दिवान खालसे शोभति जिस जादव समुदाया।
रूप गुबिंद गुबिंद सिंह जी शसत्रनि सहित सुहाया ॥ ३५ ॥
किधौं कुबेर थिर्यो बिच जच्छन ज़ेवर जोति सुहावै।
देवन गन महिं किधौं इंद्र है मुदति महां दुति पावै ॥ ३६ ॥
कै मुनि गन महिं रामचंद्र जी घिरे शुभति सुखदाई।
तुंग सथल पर श्री प्रभु थिर तत्रि चहुंदिशि द्रिशटि लगाई ॥ ३७ ॥
परे जहां कहिं दीरघ डेरे तंबू गन शमियाने।
झंडे थान थान पर झूलति बहुत बरन के बाने ॥ ३८ ॥
सिवर पिख्यो पुन सूबनि केरा तंबू लग्यो बनाती।
तान्यो शमियाना बहु दीरघ मख़मल को बहु भांती ॥ ३९ ॥

---

1. स्थान 2. राज्यपाल 3. नगारे

*यह केवल कवि कल्पना ही है गुरु जी अफीम आदि सेवन नहीं करते थे और न ही अपने सिक्खों को करने देते थे

थिरे लोक बहु खरे हज़ारहुं शसत्रनि जुति सवधाना।
तिह बिलोकि मुसकाइ कह्यो प्रभु 'इह सनमुख डर हाना' ॥ ४० ॥

उदै सिंह कर जोरि उचारी, जबहि प्रहारे बाना।
तबि डरि करि थिर दूर रहति भा बहु दिन बिते, सुहाना ॥ ४१ ॥

प्रथम रीति ही बैंठन लागे—कहां तीर नित मारैं।
अपनो आप दिखावन करते तुरक—कहां लगि हारैं-' ॥ ४२ ॥

सुनिकै श्री प्रभु हुकम कर्यो तबि 'जुग तोपन को ल्यावो।
इस थल ऊचे पर थिर करिकै गोरा डारि चलावो' ॥ ४३ ॥

सुनि आइसु को सिंह तुरत ही गए तोप जहिं ठाढी।
ऐंचन करि आनी ततछिन महिं चौंप रिदै महिं बाढी ॥ ४४ ॥

इक को बाघन नाम धर्यो प्रभु बिज घोख कहिं दूजी।
करि दिवान आगे थिर दोनहुं चंदन पुशपनि पूजी ॥ ४५ ॥

कबित्त

गुरू के प्रताप की दुलारन करन वारी, किधौं गुरू मूरत की रच्छा रूप धारी है।
किधौं बिजै आपनो सरूप धारि ठांढी ढिग, किधौं रूप कालका को दासन उधारी है।
सिंहनि सहाइ हेतु देति है दिखाई सोइ, किधौं म्रितु दुरजन तु की दारुन सुधारी है।
हिंदु कौ धरम धरा धारिबे को, धीर धरि श्री गुबिंद सिंह तोप उपमा बिचारी है' ॥४६॥

गाढे गढ ढाहिबे को, दीह दल दाहिबे को, खालसा उमाहिबे को दुरजन बिहालका।
तुरकनि को तेज तिन संचै सम बध्यो बहु तांके छार करिबे कहु मानहु जोति ज्वालका।

मेवन के बीच बसे गाजि गाजि गाज जोइ दूजो देह धारे जनु आई खलु घालका।
दास प्रतिपालिका, सु खालिक की खालिका, सरूप मनो काल का, प्रगट भई कालका ॥ ४७ ॥

सवैया

श्री मुख ते तबि ले करि आइसु डारि बरूद कस्यो तबि गोरा।
तंबू बनाती सों सूत बंध्यो मुख कीन बरोबर[1] शत्रुनि ओरा।
ताके भले तबि त्यार करी ततकाल पलीते पै लाइसि तोरा।
गाज गिरी जनु दीह अवाज ते घूक सबेग रिपू सिर फोरा ॥ ४८ ॥

---

1. बरावर, सामान्य

बाघन छोरिकै त्यार करी, बिज घोख कौ शूंक चल्यो तबि गोरा।
सूबे को झंडा खरा अविलोक कै ताक कै मारति भे तिस ओरा।
फेर कसी नहिं देर लगी उर कंब्र उठे सुनिकै रविघोरा।
थैली को पाइ कै ठोकति हैं गज, देति पलीते महिं तूरन तोरा ॥ ४९ ॥

दोहरा

तंबू कलस उडाइकै झंडा दियो गिराइ।
टूट पर्यो धर पर तबै शोर उठ्यो समुदाइ ॥ ५० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'तोप मारन प्रसंग'** बरननं नाम सपतदसमो अंशु ॥ १७ ॥

अंशु १८

भाई कन्हैया साध को प्रसंग

दोहरा

इस प्रकार गोरे चले लगे सु लशकर मांहि।
झंडा टुटि जुग खंड भा तंबू थिरे सु नांहि ॥ १ ॥

सवैया

खान वजीद, लहौरपती जुग देखिकैं गोरनि की अस मारा।
छोरि भजे अपनो थल तां छिन आयुध न तन चीर संभारा।
वाहन कौन उडीक करै तबि होइ बिहाल भजे सिरदारा।
बीच थिरे दल आपन के नाहिं, तूरन दौरिकै कीन किनारा ॥ २ ॥
गोरन की अस मार करी जुग तोप छुटैं तवि बारंबारा।
मार दीए तुरकान महां भट कीन बिचार न ह्वै उपचारा।
भाजति हैं तजि कै पट आयुध, त्रास भयो तुरकान मैं भारा।
फूटि गए सिर, टूटि गए पग, छूटि गए हत्थ्यार न धारा ॥ ३ ॥
—दीरघ दूर इती लगि आवहि तोप दराज कहां अस भारी ?
ब्रिंद बिते दिन कीने निवेस को कोइ न पहुंचि सक्यो नहिं मारी।
आज कहां इह कौतक भा जिम पूरब तीर अए इकबारी।
हिंदुनि को इह पीर कहावति है करामात कि आइ अगारी[1] ॥ ४ ॥
अंग तुरंगनि भंग भए, बहु बीर गिरे लगि कै तन गोरे।
ओट महिं जाइ खरे थिर होवति, हेरति ब्रिंद निवेस की ओरे।
संझ भई लगि छूटति दोनहुं बाघन सो बिजघोखन घोरे।
वेग ते जाति करैं उतपात लगैं भट गात न जीवति छोरे ॥ ५ ॥
सोदर को सुनि श्री गुर पूरन होति अंधेर उठे घर आए।
तोपन आन सथान करी थिर वाहिगुरू की फते[2] गरजाए।
देग दई बरताइ तबै करि खान रु पान थिरे निज थाए।
ह्वै सवधान रहैं तुरकान ते, मारहिं सदा नहिं मार कु खाएं ॥ ६ ॥

---

1. सामने आना 2. जीत

खान वजीद लोहार पती तबि तूरन लीन उठाइकै डेरा।
आन सथान जहां दिढ ओट है बासिबे हेत सुचेत ह्वै हेरा।
तंबू उखार लए सगरे उत कीने लगावनि जानि अछेरा।
राति को जागति ह्वै सवधान सिपाहन को बहु बार ही टेरा ॥ ७ ॥
त्रास धरे निस बासुर महिं करि दूर ही दूर निवेस परे हैं।
जो किस देश ते सिंह इकत्र ह्वै आनि अनंद पुरे सु बरे[1] हैं।
घात अनेकनि ते प्रविशैं शरधा गुर भाउ विसाल धरे हैं।
होति जबै सुध तौ पछुतावहिं यौं तुरकानि की हान करे हैं ॥ ८ ॥

दोहरा

लगे मोरचे अनंदपुरि दूर दूर करि घेर।
लाखहुं फौजां चहुंदिशिनि उतरे डेर बडेर ॥ ९ ॥

चौपई

द्वै त्रै मास बीत इम गए। दूर दूर हटि डेरे कए।
'गुर के संग लर्यो नहिं जाई। सुभट हज़ारहुं देति खपाई ॥ १० ॥
उतरे रहो घेरि पुरि सारो। जबि नहिं प्रापति होइ अहारो।
मिलहि आप कै निकसि सिधावैं। बिनां अंन किम काल बितावैं' ॥ ११ ॥
त्रास धारि जे मुरचे नेरे। सो भी करे दूर थल डेरे।
एक उपाव सिद्ध सभि करैं। —अंन आदि अंतर नहिं बरैं ॥ १२ ॥
जमा नहीं गुर के घर मांही। आइ उपाइन खरच सु खाहीं।
अंन हज़ारहुं मण नित चहीए। जिस को खाइ प्राण निरबहीए ॥ १३ ॥
साध कन्हय्या इक गुर पास। सभि महिं आतम लख्यो प्रकाश।
राग न द्वैख हरख नहिं शोक। शत्रु मित्र नहिं भासै लोक ॥ १४ ॥
मशक नीर की भीर ढिग राखै। करहि पिलावनि जो अभिलाखै।
सिंह मोरचे महिं थिर जेई। जल ते त्रिपत करहि फिरि तेई ॥ १५ ॥
निकट मोरचे तुरकनि केरे। नीर न प्रापति प्यास बडेरे।
सभि दिन मुरचे बिखै बितावैं। तिमर भए ते उठि करि जावैं ॥ १६ ॥
प्रात होनि ते प्रथम अंधेरे। थिरहिं जाइ जो भट तिस बेरे।
दिन महिं भूख पिपासा[2] सहैं। निकसनि तिमर[3] भए ते लहैं ॥ १७ ॥
तिन पर भी करि क्रिपा कन्हय्या। भरि भरि मशक नीर बहु दय्या।
जिते मोरचे महिं भट रहैं। दुहन दिशनि के दुरि. दुरि बहैं ॥ १८ ॥

1. आए हैं 2. प्यास 3. अंधेरा

जल दुरलभ दोनहुं दिशि होइ। यांते देति साध मति सोइ।
जिम सिंहनि को जाइ पिलावै। तिम तुरकनि को नित त्रिपतावै॥ १९॥
तिस को देखि खालसा रिसै[1]। 'जल क्यों देति रिपुनि गन बिसै ?'।
कई बार तिस देति हटाइ। सो नहिं मिटै देति जल जाइ॥ २०॥
इक दिन दइआ सिंधु के पासि। हित पुकार कीनी अरदास[2]।
'हम बहु तंग करैं रिपु ब्रिंद। दबक मोरचे रहैं बिलंद[3]॥ २१॥
खान पान नहिं पहुंचनि देति। सगरे दिन दुख दैवे हेत।
तबि जल ले करि सात कन्हय्या। देति तिनै बहु करि त्रिपतय्या॥ २२॥
रहे हटाइ नहिं इम मानैं। यांते इस महिं दोश पछानैं।
गिरपति गन सों मिल्यो लखीजै। कुछ लालच करि देति जनीजै॥ २३॥
नतु हम रिपु को करि करि तंग। मारे हुते सरीरनि भंग'।
इम पुकार सुनि सिंहनि केरी। साध हकार्यो ढिग तिस बेरी॥ २४॥
निकट बिठाइ सहित सनमाना। श्री मुख ते तबि वाक बखाना।
'कहहु साध क्यों सहहु बिखादा ? बैठे क्यों न रहहु अहिलादा॥ २५॥
वीच जंग के इत उत फिरो। जल को अचवावन हित धरो।
सिंहनि तुम पर करी पुकारा। रिपु गन को दुख महिं दें बारा॥ २६॥
जे नहिं मिटैं पिलावन चाहैं। सिंहन को दिहु निज पख मांहै।
हमरो बैर गिरीशनि संग। नाहक लरते हेत न जंग॥ २७॥
ग्राम नगर तिन को नहिं रोक्यो। जरति मूढ मति हमहिं बिलोक्यो।
जाइ तुरक की शारनी परे। हमरो दोश सुनावन करे॥ २८॥
निज सहाइ लशकर ले आए। कई लाख देखहु भट छाए।
अनिक जतन कै कटक बटोरा। पुरि को घेर लीनि चहुं ओरा॥ २९॥
हमहिं अलंब अकाल पुरख को। सभि जग करता जो दुख सुख को।
शत्रुनि आन मोरचे लाए। तिनको सिंह हनहिं समुदाए॥ ३०॥
नहिं बैरी गन को जल देहु। इह सिक्ख्या उर महिं धरि लेहु'।
साध कन्हय्या सुनि गुर बानी। हाथि जोरि करि तबहि बखानी॥ ३१॥
'श्री प्रभु जी तुमरो उपदेशू। मैं उर धारन करों हमेशू[4]।
सदा चलौं तिन के अनुसारी। नहिं बिपरजै करि हौं कारी॥ ३२॥
जहां कहां इक रूप तुमारा। नहिं दूसर मैं कहूं निहारा।
जितिक चराचर जगत बनायो। चौरासी लख जून सुहायो॥ ३३॥

1. रुष्ट हुए 2. विनय 3. ऊँचे 4. समय समय

सभि महिं रहे बिराज समाना। शत्रु मित्र को जाइ न जाना।
सभि थल तुमरो रूप निहारों। भेद भिंन को नहीं बिचारों।। ३४ ।।
मोकौ तो इम ही द्रिशटावै। तुम बिन दूसर नदर[1] न आवै।
इम रावर को है उपदेश। सो उर धार्यो बिना कलेशू[2] ।। ३५ ।।
इत सिंहन महिं आप बिराजैं। उत तुरकन महिं तुम ही छाजैं।
नहीं पहारी महिं को दूजा। जहिं कहिं करहिं आप की पूजा ।। ३६ ।।
जल थल सकल गगन अर अवनी। अहै खेल रावर की रवनी'।
इम सुनि संत कन्हय्ये पास। परम प्रसंन भए गुन रास।। ३७ ।।
श्री मुख ते मुसकाए बखाना। 'सुनहु खालसा मया निधाना!
साध ब्रिती इन लख्यो चरित्र। इक बचित्र महिं शत्रु न मित्र।। ३८ ।।
इस को किस बिधि कहहु न कोई। करहि जथो चित जिम उर होई।
नहिं बैरी इस के उर भासा। प्रभु इक सभि महिं लख्यो तमासा ।। ३९ ।।
ऊच भूमिका महिं मन थिर्यो। नाना त्याग एक रस ढर्यो।
धंन जनम अपनो इन कीना। जिसको बखशे, हुइ दुख हीना।। ४० ।।
इह भी अपनो पथ प्रकाशै। बहु लोकनि की कुमति बिनाशै'।
सुनि प्रभु ते सभि सिंह अनंदे। द्वैत हती लहि ब्रह्म अनंदे।। ४१ ।।
तिस दिन ते नहिं किस कुछ कह्यो। तिम ही जल को प्यावति रह्यो।
सरब मोरचे महिं फिर करिकै। जल को देति मशक निति भरिकै।। ४२ ।।
इसको नहिं मारित को गोरी। फिरति रहे लरते जुग ओरी।
साध जानि करि बंदन करैं। जल को लेति त्रिखा को हरैं।। ४३ ।।
इम घेरा करि अंन हटायो—। केतिक दिन लगि अंतर खायो।
लग्यो निखूटनि अंन महाने। जो अवशश चहियति नित खाने ।। ४४ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'भाई कन्हैया साध को प्रसंग'** अशटदसमो अंशू ।। १८ ।।

1. दिखाई नहीं देता 2. झगड़ा

अंशु १९

जंग प्रसंग

दोहरा

अंन भयो थोरा जबै छुध्रति रहति नर ब्रिंद।
चितवहिं जतन अनेक ही मिलहिं सिंह बलवंद ॥ १ ॥

चौपई

केतिक सिंह बिसाल जुझारे। मिलि आपस महिं मसलत[1] धारे।
जहां निलोकें अंन महांना। ब्रिपनी आदि विखै सवधाना ॥ २ ॥
आछी रीति जोहि सभि लीना। आवन जानि घात सभि चीना।
तुरक शत्रुगन हुइ जुति आलस। तबि पहुंचनि की ठानी लालस ॥ ३ ॥
होइ तुरंगनि पर असवार। सनधबद्ध हुइ बल को धारि।
गए अचानक बडे बजारू। भए प्रवेशनि बीर जुझारू[2] ॥ ४ ॥
शेर सिंह जिन महिं मुखि जोधा। परे तुरक गन पर धरि क्रोधा।
अरधनि कह्यो 'उठावन कीजै। अंन ध्रित्त बहु सिता लईजै ॥ ५ ॥
इत्यादिक वथु भक्खयन केरी। लीजहि लूट धारि बिन देरी।
सभिहिन ते आगे हटि आवो। नहिं शत्रुनि महिं बिलम[3] लगावो' ॥ ६ ॥
इम कहि परे धाइ करि सूरे। वसतुनि सों बज़ार जहिं पूरे।
जिस दिशि चमूं शसत्र गन धारी। तित दिश शेर सिंह बल भारी ॥ ७ ॥
हलाहूल बोलति बिच बरे। बनक़न ते वसतू गन धरे।
सरब लूट करि पोट बंधाई। आधे सिंहनि लीनि उठाई ॥ ८ ॥
भई तुरक दल महिं सुधि सारे। ततछिन दुंदभि बजे जुझारे।
शसत्र संभारति होवति त्यार। को घोरनि पै ह्वै असवार ॥ ९ ॥
केतिक तुपक पदाती छोरे। भे मुकाबले सिंहनि ओरे।
दो सै ज्वाला बमनी त्यार। खां दसत[4] करिकै इक बार ॥ १० ॥

---

1. योजना बनाई 2. वीर 3. देरी 4. हाथ

शेर सिंह ततकाल छुराई। गिरे दड़ा दड़ा जे अगुवाई।
उत सूबे अरु गिरपति सारे। भटन त्यार कहि बारंबारे॥ ११॥
'घेरहु दुरग बिखै नहिं बरैं। हतहु शत्रु सभि बाहर मरैं'।
लै लै तुपक चरम तरवारैं। त्रास समेत होइ परवारैं॥ १२॥
प्रथम छुटी गन गोरी तीर। पुन तरवारनि ह्वै कर बीर।
तछा मुच्छ करिते चलि आए। करे संहारन जे अगुवाए॥ १३॥
अपने घाइल म्रितक उठाए। पहुंचि लोहगड़ के नियराए[1]।
तहिं ते दगी तोप बहु भारी। गोरे चलन लगे तिस बारी॥ १४॥
हटि करि तुरक बरे निज लशकर। सिंह लोहगड़ प्रविशे बलधरि।
लूटि अंन ले पोट बरे हैं। मन भावति पुन अचनकरे हैं। १५॥
रहे बिसूरति तुरक घनेरे। 'ग़ज़ब[2] गुज़ार्यो[3] औचक हेरे।
ब्रिंद सुभट संहारन कीने। लूट बज़ार वसतु गन लीने॥ १६॥
बहुर, सिंह जीवत गढ बरे। हम लाखों पर निज बल करे'।
भीम चंद सूबे ढिग आयो। बैठ्यो निकट 'सलाम'[4] अलायो[5]॥ १७॥
कह्यो बंदि कर 'गज़ब गुज़ारा। लशकर की लुट लीन बज़ारा'।
इतने महिं बनीएंगन आए। लूटन को बिरतंत बताए॥ १८॥
घनो अंन कै घ्रित मिसटाना। 'इह ले गए बजाइ क्रिपाना।
अपर वसतु को हाथ न डारा। सभि ते पूरन हुतो बज़ारा'॥ १९॥
सुनिकै भीमचंद तबि कह्यो। 'अंतर को ब्रितंत इम लह्यो।
अंन गयो थुर छुधा दुखाए। यां ते सिंह बाज़[6] सम आए॥ २०॥
अबि गुर निकसैंगो पुरि छोरि। निस महिं कबहि जाइ किति ओर।
जमा नहीं कुछ पुरि के अंतर। हम तो जानति हाल निरंतर॥ २१॥
सर मुहिम अबि जानी परै। बिना अंन को धीर न धरै'।
तबि सूबे डूबे विच लाजा। —लुट्यो बज़ार बुरो बड काजा—॥ २२॥
जथेदार निज सरब हकारे। ताड़न करते बाक उचारे।
'कहां सिंह तुम लाखहुं बीर? डरति, न लरति, रहहु मन भीरु!॥ २३॥
अबि ते आगे रहीअहु त्यार। सभिनि तुरंग ज़ीन को डारि।
जित कित देखहु सिंह जि आए। रोकहु तुरत धाइ अगुवाए॥ २४॥

---

1. पास 2. आश्चर्यजनक 3. किया 4. नमस्कार 5. किया, कहा
6. बाज की भांति

आलम काज कर्यो परि रहे। वसतु लुटाइ मार को लहे।
प्रथम मोरचा सकल कटावा। अपजसु भयो सरब बिदतावा ॥ २५ ॥
जहिं कहिं मारि जाति हैं सिंह। जिस गज गन पर धावति सिंह।
कहां भयो तुम को बल हारा ? बिजै न प्रापति भी किस बारा' ॥ २६ ।
तबि सूबे गिरपति चढि सारे। फिरे चहूंदिश करति निहारे।
थान थान पर करि तकराई। सुभट मोरचे दिए बिठाई ॥ २७ ॥
'इहां सुचेत बने नित रहीयहि। अग्र वधन को चित नहिं चहीयहि।
ग़ाफल होइ न धरि विशवाशा। देखति रहो रिपुनि की आसा ॥ २८ ॥
त्यार तुफंग हाथ धरि राखहु। निकसहिं सिंह हतहु चित माखहु।
अस नहिं होइ काट पुन जावैं। नाहक[1] तुमरे प्रान गवावैं ॥ २९ ॥
इम चहूं ओर मोरचे सारे। फिर करि सूबे न्रिपन निहारे।
करि सवधान सथापन करे। भांति भांति की सीख्या करे ॥ ३० ॥
इत सतिगुर के ढिग जत्रि गए। शेर सिंह नाहर सिंह लए।
बंधन करि गुर फते बुलाई। लूटन की सभि गाथ सुनाई ॥ ३१ ॥
'सिंह छुधातुर भए बिसाला। पिखि[2] बज़ार हेलो तबि घाला।
खैबे[3] हेतु[4] अंन बहु ल्याए। तुरक निकट पहुंचे गन घाए' ॥ ३२ ॥
श्री प्रभु कह्यो 'घात लखि मारहु। बहुतन महिं नहिं हेरि पधारहु।
खान पान जेतिक करि पावो। थिरो संतोख[5] धारि सो खावो' ॥ ३३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'जंग प्रसंग'** बरननं नाम उनीसमो अंशु ॥ १९ ॥

1. बिना किसी दोष के 2. देखा 3. खाने 4. के लिए 5. संतोष

अंशु २०

श्री गुजरी प्रसंग

दोहरा

इक सिख गहि लीनसि तहां कैद कर्यो बल नाल ।
सुंनत करि, सिर केश हरि, तद्दी[1] कीन बिसाल ।। १ ।।

चौपई

कहि करि कलमा[2] तबै पठायो । तऊ सिक्ख मन नांहि हलायो ।
बल ते करी शर्हा तबि सारी । खाने को खवाइ तिस बारी ।। २ ।।
ग़ुसल्न कराइ अपनि बिधि तांहू । 'गुर गुर' जपै भले उर मांहू ।
सरब शर्हा करि दीनो छोर । आइ बिसूरति सो गुर ओर ।। ३ ।।
हुतो समां पठते रहिरास । गुर पग बंदे ह्वै करि पास ।
लग्यो दिवान महान निहारे । हाथ जोरि सिंह खरो उचारे ।। ४ ।।
'मैं सिख हौं, साचे पतिशाहि । रण महिं लरति गिर्यो छित मांहि ।
भई मूरछा होश न कोई । पहुंचे तुरक आनि सभि कोई ।। ५ ।।
छुटी मूरछा गहि ले गए । शर्हा सरब को करते भए ।
कहां करौं मैं अबै उपाई । हिंदू जनम मिखी ध्रम जाइ ।। ६ ।।
ज़िस बिधि रहै रखहु दुख पैहौं । नतु मैं चिखा बनाइ जलै हौं ।
बूझ्यो गुरू 'करी कस शर्हा[3] ? जबि शत्रुन के बस महि परा ।। ७ ।।
तबि सिख सभि कर जोरि सुनाई । 'पुरब सुंनत[4] मोर कराई ।
कलमा अरु नमाज करिवाइ । केश बिअदबी, खान खवाइ ।। ८ ।।
सुनि गुर बूझ्यो 'कहु तूं साचे । संग तुरकनी ते रहि बाचे ?' ।
सिख तबि कह्यो 'बचावन कीन । प्रभु ! तुम हाथ देइ रखि लीन' ।। ९ ।।
तबै कह्यो 'करिवाइ कराहि । देहु खालसे महिं बरताहि ।
खरा सिक्ख तूं हैं सभि बेरी । बांहि गुरू के पकरी तेरी' ।। १० ।।

---

1. धक्का किया 2. इस्लाम में प्रविष्ट कराना 3. कुरान शरीफ में बताया हुआ विधान 4. इस्लाम धर्म के अनुसार करना

हुते सिंह जे तबै हजूरं। बूझ्यो तब 'कहहु गुर पूरं!
मुसलमान किस बिधि करि होइ? किधौं न बनै बनावै सोइ' ॥ ११ ॥
तबि गुरबचन कर्यो 'सुन भाईं। करहिं शर्हा जे रिपु बुरिआई।
रिदे भावना जिस नहिं होइ। करे ज़ोर तुरक न ह्वै सोइ ॥ १२ ॥
जबि कामी हुइ करता संग। तऊ मन मिलता हुइ इक रंग।
मुसलमान तबि ही हुइ जाइ। मन ही कारन लखहु सबाइ ॥ १३ ॥
बल ते नहीं भावना फिरै। मम सिख तुरकणि संग न करै।
एक बार ही भोगै कोइ। मुसलमान सो ततछिन होइ ॥ १४ ॥
जो नर हिंदू धरम को धरै। बचै तुरकणी ते सो तरै।
जो पर नारि भोग पछुतावै। कुछ प्राशचित अघ हित करिवावै ॥ १५ ॥
कै गुर सिक्खन ते बखशावै। सो सिख अघ ते बखश्यो जावै।
जो तुरकनि सिख भोगहि जाइ। सो नहिं बखश्यो जाइ कदाइ ॥ १६ ॥
पाको मुसलमान ह्वै सोइ। प्रथम अजान जि भूलै कोइ।
मिलि तुरकनि संग सिख बन जाइ। सो भी छूट जाइ गुर ध्याइ ॥ १७ ॥
पुन सिंहनि बूझे गुन खानी। 'ब्रिंद तुरक भोगैं हिंदवानी।
सिख बदला ले भला जनाए। क्यों गुर शासत्र बरजि हटाए?' ॥ १८ ॥
सुनि सतिगुर बोले तिस बेरे। 'हम ले जानो पंथ उचेरे।
नहीं अधोगति बिखै पुचावैं। यांते कलमल करन हटावैं ॥ १९ ॥
पंथ भूतना को है जोई। लियो संभाल मुहंमद सोई।
नहिं नीचन की रीति अछेरी। पिखि अपमान करहिं सभि बेरी ॥ २० ॥
गुर बच, शासत्रन, करी नियोग। आश्रमान ते मानन योग'।
इम कहि करि पुन सिक्ख मिलायो। कर्यो कड़ाह सरब वरतायो ॥ २१ ॥
इसी रीति सिख करते जंग। होवनि लगे दुखिति छुधि संग।
खास खज़ाने दरब जितेक। पावहिं सतुद्रव बिखै तितेक ॥ २२ ॥
पशमंबर आदिक सभि चीर। फुकवावै[1] पावक प्रभु धीर।
इस बिधि सरब समाज निबेरैं। फूकैं कै जल सलिता गेरैं ॥ २३ ॥
लोक पुकारन लागे पुरि मैं। सह्यो न जाइ छुधा दुख उर मैं।
प्रजा निकसि करि गई वहिर को। सुभट सिंह नहिं त्याग्यो गुर को ॥ २४ ॥
रहैं छुधातुर तऊ लरति हैं। शत्रुनि मारति आप मरति हैं।
कहैं सकल मिलि 'अबि नहिं भागैं। दै हैं सीस गुरू के आगैं' ॥ २५ ॥

1. जलाया

सिदक बिखै साबत द्रिढ़ रहैं । संकट अनिक प्रकारनि सहैं ।
श्री गुजरी ढिग करहिं बखानी[1] । मात ! गुरू गति जाइ न जानी ।। २६ ।।
अंन बिना सगरे[2] मरि जै हैं । पाउ पाउ कवि कवि इक पै हैं ।
सुत की क्रित सुनि देखनि करती । परम दुखी चित चिंता धरती ।। २७ ।।
कहि नहिं सकै स्राप ते डरै ।—रिस ते कुछ मुख ते कहिं परैं ।
सो सभि साच होइ नहिं टरैं —। कहिन अकहिन अनुचित बिचरैं ।। २८ ।।
तऊ निकट जो दास घनेरे । करहिं सुनावन कशट वडेरे[3] ।
सिंह सैंकरे लरि करि मरैं । बचे न जीवन आशा धरैं ।। २९ ।।
इक दिन मन को द्रिड़ करि आई । सभि बिधि करि दुख ते तपताई ।
कलगीधर के होइ ढिग खरी । चित चिंता ते कहि रिस भरी ।। ३० ।।
'जग महिं बन करि गुरू कहाए । सिख मारन हित रच्यो उपाए ।
नित उठि सिंह अग्र हुइ लरें । सिर पर वैरी कड़कति खरे ।। ३१ ।।
सभि महिं भूख वरति बहु रही । निस दिन भोजन प्रापति नहीं ।
पूरब दरब[4] पाइ दरिआइ । अबि निकास सभि देति रूड़ाइ ।। ३२ ।।
को गुनाह सिक्खनि अस कर्यो । जिस ते इतो कशट तिन पर्यो ।
पाईआ अंन पाइं हितखाने । किमि लरि सकैं सिंह बलहाने ।। ३३ ।।
धीरज गयो छूट सभि केरे । तुरक गिरीशन चहुं दिशि घेरे ।
घालि हेल लाखहूं चढि मारैं । क्रिधौं छुधिति ह्वै प्रान निकारैं ।। ३४ ।।
सभि को अंत लख्यो अबि आवै । हम समेत किम जीवन पावैं ?
अबि भी बखशहु, संगत तेरी । क्यों दुख भुख वरताइ वडेरी ?" ।। ३५ ।।
सुनि माता ते आप उचारा । 'हम को हुकम दीनि करतारा ।
तो इह पंथ सुधारन कर्यो । नाम शनान आदि गुन भर्यो ।। ३६ ।।
इसको हम बिरधावन करैं । नहीं गालिबे[5] की इछ धरैं ।
पूजा को ले करि जबि खै हैं । तिस ते पंथ घाट वल ह्वै है ।। ३७ ।।
सुनहु मात इह पूजा अंश । जहिर अहै बल बुद्धहि भ्रंस ।
रण हित पंथ खरो मैं कीन । छुधिति नगन ही नीको चीन ।। ३८ ।।
नरक बिखै नहिं इस को पावौं । बुरा न करिहौं गुन सिखरावौं ।
जिस विधि अहैं पुत्र हम तेरे । बिख नहिं देइ सकहि किस वेरे ।। ३९ ।।
तिम हम सिख पुत्रनि किस भांति । बिख पूजा दे करि हैं घाती ?
पाल्यो चाहौं करौं बडेरा । भोगहि सुख इत उतहि घनेरा ।। ४० ।।

---

1. कहा 2. समस्त 3. अधिक 4. रुपए-पैसे 5. दूसरों को दबाना

शतरुद्धर मैं जो धन राखा। सुद्ध करन की तिह अभिलाखा।
जिम विख को मारन करि लेही। पुन खाए रोगन हति देही ॥ ४१ ॥
तिम पूजा को धन सुध होइ। सिख पुत्रनि लै दै हैं सोइ।
पुन ह्वै है सभि को सुख कारी। समो होइ जबि लेहिं निकारी ॥ ४२ ॥
एक सिक्ख हमरो शुभ होइ। पठहिं तांहि धन लै है सोइ।
नाम दलीप सिंह बल भारो। तप तापहि पुन होइ सुखारो ॥ ४३ ॥

दोहरा

पशचम ते उठि खालसा चमकै पूरब पंथ।
दुरै दुशट सभि परबती मौन मौरजि कुपंथ ॥ ४४ ॥
खालसा मिलै मेल करि खालसा टूटे दिवस।
मित्र हिंदवी मौलवी गोरे सुनी सु वंस ॥ ४५ ॥
बली होइगा खालसा तुरक तोड़ेगा मौन।
लुटे गाउं परजा दुखी न्याउं जाइगा औन ॥ ४६ ॥
सिखणी हुइ बिभचारणी पुरख तुरक की आस।,
तां दिन उपजे खालसा सभि बरनो को प्यास ॥ ४७ ॥
सुनिकै माता तूशनी नहिं बोली सुत हेरि।
अंतरजामी जानिकै, श्री मुख ते कहिं फेर :— ॥ ४८ ॥
प्यारे धन है मात को इह जानी अबि जाइ।
रहिण देति परवार को, वधन देति नहिं काइ[1] ॥ ४९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'श्री गुजरी प्रसंग'** बरननं नाम बिसंती अंशु ॥ २० ॥

---

1. कोई

अंशु २१
जंग प्रसंग

दोहरा

इस घेरा बड पर रह्यो लरहि खालसा जाइ।
इक दिन त्यारी प्रभु करी बड रणजीत बजाइ ॥ १ ॥

चौपई

उत ते सकल गिरेश्वर चढ़े। मारू बजे जथा भट लड़े।
रण सिंङे सरनाई ढोल। तुररी नाद नगारे बोल ॥ २ ॥
कलग़ीधर ह्वै कै असवार। चढ्यो खालसा आयुध धारि।
जहिं गिरपतनि मोरचे करे। डेरे करे दूर जहिं परे ॥ ३ ॥
तित दिशि को गुर अग्र सिधारे। छुटे तुफंगनि के कड़कारे।
जुट्यो खालसा जंग मझारा। जै बहु बारी करे हंकारा ॥ ४ ॥
आगे वध्यो चलावति गोरी। दोनहुं दिशि के उर सिर फोरी।
सभि गिरपती ढुके तबि आई। लै लै निज सिपाह समुदाई ॥ ५ ॥
जबि आपस महिं द्वै दल जुट्टे। गुलकां लगि लगि अंगन फुट्टे।
सनमुख होइ नहिं मुख फेरे। बज्यो सार सों सार बडेरे ॥ ६ ॥
खोवन सिंह्न को हंकार। गुरू मुरे तबि जंग मझार।
पीछे खाइ शिकिसत पलाई। हटे सकल ही करति लराई ॥ ७ ॥
ज्यों सिंह हटते वधे[1] पहारी। भरि राबे शलखैं बहु मारी।
गुर बिन ठहिरे कौन अगारी। मिले आनि शत्रू गन भारी ॥ ८ ॥
भाजे सिंह तहां लगि आए। गुर को जहिं समाज समुदाए।
ठहिरे नहीं पैर विच[2] जुद्धा। पर्यो ज़ोर गन रिपु बहु क्रुद्धा ॥ ९ ॥
कितिक तबेला सो लुटि गयो। धन पट आदिक शत्रुनि लयो।
खरे भए नहिं सकाहिं हटाइ। रहे सिंह बल अधिक लगाइ ॥ १० ॥
सिख रोवैं बहु खरे पुकारैं। 'बड होयो नुकसान[3]' उचारैं।
'श्री सतिगुर अबि जीतैं कैसे ? इतो समाज गयो लुटि ऐसे ॥ ११ ॥

---

1. आगे आए 2. में 3. हानि

किम जीवैं शरमिंदति ह्वै कै। गुर को कुछ नहिं सकैं बचै कै'।
खरे होइ पुन तजी तुफंगै। भेदन करे रिपुनि के अंगै ॥ १२ ॥
गन वसतू ले हटे पहारी। मुरचनि महिं काइम ध्रितधारी।
उदै सिंह आदिक भट वीर। रण ते हटि पहुंचे गुर तीर ॥ १३ ॥
करि जोरति अंदेसा धरैं। बाक सुनावन पुन पुन करैं।
मच्यो सभिनि महिं हाहाकार[1]। 'लुट्यो समाज महां बिशुमार ॥ १४ ॥
बसत्र तुरंगम आदिक वसतू। महाराज लुटि गई समसतू।
कई हजारनि को क्या गने। शत्रू प्रबल गए लै घने' ॥ १५ ॥
सभि के उर को गुर दुख लह्यो। आलम सिंह संग तबि कह्यो।
'अवनी पर दिहु अैंच लकीर। बहुबिधि की हुइं अलप गहीर' ॥ १६ ॥
मान बचन खैंची गन रेख। खरे समीपी पिखै अशेख[2]।
श्री कलग़ीधर देखि उचारी। 'आलम सिंह मेट दिहु सारी' ॥ १७ ॥
सकल बिलोकति मेटी फेर। रही न को छित छोट बडेर।
तबि सभि सिंह बूझिबे करे। 'हरख शोक भी कुछ उर धरे ? ॥ १८ ॥
किधौं भयो नहिं, दहु बताई। रेख देखि करिकै बिनसाई'।
तवि कर जोरि खालसे कह्यो। 'रेख निकासी हरख न लह्यो ॥ १९ ॥
मेट दई नहिं शोक उपावा। रिदा समान सभिनि लखि पावा'।
सुनि सिंहन ते गुरू वखाना। 'हरख न शोक जथा तुम जाना ॥ २० ॥
तथा गुरू को होइ न कोई। हानि लाभ महिं सम रहिं जोई।
संचे जाइं पदारथ सारे। दरब आदि जे रतन उदारे ॥ २१ ॥
गज बाजी जिन मोल बिसाले। मुकता हीरे ब्रिंद प्रवाले।
इत्यादिक पिखि अपनी जानि। गुर को हरख न ह्वै हित मानि ॥ २२ ॥
लाखहुं को समाज दिपताई। समा पाइ हानी हुइ जाई।
तौ गुर के कुछ शोक न होवहि। नाशवंति पूरब ही जोवहिं ॥ २३ ॥
सम चित सदा रहहिं आनंद। करैं बिखेप न दुंद बिलंद।
भूल भविक्ख्यति अरु ब्रतमान। हुयो न ह्वै है रहैं समान ॥ २४ ॥

दोहरा

हरख सोग का देहुरा खिन आवै खिन जाइ।
जो जागे सो सुखी हुइं, सोए सो दुख पाइं ॥ २५ ॥
नाम धिआवहु, शबद को अरथ बिचारहुं नित्त।
गुरबानी सिक्ख्या बिना तिना न सोगी[3] मित ॥ २६ ॥

---

1. भय 2. अशेष 3. शोकनीय

मलि मलि नाई कामणी खोड़स करे शिंगार।
खसम न भाई कहां फल सो शरमिंदी नार ॥ २७ ॥
गुरू जु आइआ नाम धरि लहिरी लुभकी दूर।
सोइ सिख, भाणा धरे गुर के सदा हजूर' ॥ २८ ॥

चौपई

इम श्री सतिगुर के सुनि बैन। परचे सुख सों सिंह सचैन।
खान पान करि जामनि मांही। सुपते केचित, केचित नांही ॥ २९ ॥
भई प्राति सभि शौच शनाने। गुरबाणी बहु पाठ बखाने।
सूरज उदे गुरू ढिग आए। नहिं सिंहन के मुख बिकसाए ॥ ३० ॥
इकतौ शत्रु लूटि ले गए। दुतीए भाज पराजै लए।
इन कारन ते लाज बिलोचन। रिदे बिखै सोचहिं बहु सोचनि ॥ ३१ ॥
नहिं उतसाह किसी महिं दीखा। घर के बिगरे काज सरीखा।
पिखि प्रसंन फलग़ीधर भए। प्रेम अपनि महिं परखन कए ॥ ३२ ॥
—अरप्यो सभिनि अगारी सीस-। इम लखि दया करी जगदीश।
कह्यो अखिल सन तबहि सुनाइ। 'मेरा सिख सोई चित भाइ ॥ ३३ ॥
चढहि जंग को शसत्र सु धारै। हतहि रिपुन पग पाछ न डारैं।
शेर समान आपको मानै। हेरि शत्रु को रिस मन ठानै ॥ ३४ ॥
नहीं दीनता अंगीकारै। जहिं लगि बल पहुंचे तहिं मारै।
हिंमत को हिमायती हरि है। जितिक होइ उतसाहित करि है ॥ ३५ ॥
चढहु खालसा पलटा लीजै। दुशट अरिशटन को हति कीजै'।
इम सिंहन को करि हुशीआर। ततछिन प्रभु जी हुइ असवार ॥ ३६ ॥
संग खालसा निखल चढायो। जंग गिरेशनि[1] संग मचायो।
निज निज मुरचनि तुरक चमूंगन[2]। थिरे सुचेत होइ मैं धरि मन ॥ ३७ ॥
तिम ही सिंह समुख तिन थिरे। त्यारी तुपकनि की करि धरे।
जित दिशि महिं सभि परे पहारी। तित को गई प्रभू असवारी ॥ ३८ ॥
ज्वाला बमणी छोरनि करी। बहुर बरूद रु गोरी[3] भरी।
उत ते बाजे ब्रिंद[4] नगारे। सनधबद्ध जोधा बलि भारे ॥ ३९ ॥

संखनारी छंद

जुटे दोइ पासे। परी मार नाशे।
गुरू धीर दै कै। अगै सिंह कै कै[5] ॥ ४० ॥

---

1. पहाड़ी राजाओं को 2. सेना के भाग 3. गोला बारूद 4. समूह 5. सिंहों को आगे आने के लिए उत्साहित करते हुए

लराई मचाई । तुफंगैं चलाई ।
फुटे मुंड छाती । परे प्रान हाती ॥ ४१ ॥
गुरू ओज पाए । गए सिंह धाए ।
बटेरा दिसावै । जथा बाज जावै ॥ ४२ ॥
छुधा शेर होए । जथा म्रिग जोए ।
कर्यो ओज हल्ला । नहीं काहुं झल्ला ॥ ४३ ॥
परे मोरचा मैं । दए काट ता मैं[1] ।
पलाए पहारी । तजी धीरि भारी ॥ ४४ ॥
कराचोल चाले । न जाई संभाले ।
बडे बीर बंके । लरे जे निशंके ॥ ४५ ॥
सु घाल्यो घमंडा । भए खंड खंडा ।
फते पाइ जुद्धा । हरे सिंह सुद्धा ॥ ४६ ॥
महां मोद कायो । बिजै को बजायो ।
बड नाद होवा । गुरू दरस जोवा ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'जंग प्रसंग'** बरननं नाम एक बिसंती अंशु ॥ २१ ॥

1. में

अंशु २२

सतद्रव नाल लिआवन प्रसंग

दोहरा

ऊपर ते जल अनंद पुरि लघु नारो चलि आइ ।
सकल काज पियनादि जे करति सिंह समुदाइ ॥ १ ॥

चौपई

तित दिश डेरे परे पहारी । भीम चंद ढिग सचिव उचारी ।
'जाति वहिर ते जलि विच घेरे । क्यों नहिं रोकहु रहै पिछेरे ? ॥ २ ॥
जिस ते रिपु गन संकट पावैं । को अस न्रिपत, नहीं जु बनावै ।
सुनति गिरेशुर बहुत पठाए । पाइ बंध जल को उलटाए ॥ ३ ॥
शुशक गयो जल जबि नहिं आयो । खोट पहारी को लखि पायो ।
गए सिंह अरदास बखानी । 'प्रभु जी ! रोक लियो रिपु पानी ॥ ४ ॥
करनि सुचेता आदिक कारा । सरब खालसा करति सुखारा' ।
सुनि बिनती निज दासन केरी । कलग़ीधर बोले तिस बेरी ॥ ५ ॥
'सत्तुद्रव सलिता शकति समेता । सो जल देइ खालसे हेता ।
दुशटनि की रोकी नहिं रहै । निखल[1] खुटाई तिन की लहै' ॥ ६ ॥
इम कहि ल्यावनि हेत बखाना[2] । निज तरकश ते दे करि बाना ।
'पहुचहुं सतद्रव केरि किनारे । हमरो दिहु[3] संदेश उचारे ॥ ७ ॥
—अबि संग्राम समों बड[4] होवा । सत्रुनि लाखहुं लशकर[5] ढोवा[6] ।
हम तेरे बहु चिर तट बासी । बिलसे अधिक बिलासहिं पासी ॥ ८ ॥
पंथ रच्यो जग पापनि खापन । हिंदू धरम उबारि सथापन ।
तुरकनि सन इनं बैर धुखावन । लरि करि नित रिपु बली[7] खपावन[8] ॥ ९ ॥
इस कारन रण महिद अखारे । हम ने घाले होइं पवारे ।
जल पहुंचाइ हिमायत करीअहि-। इम सिहहु तट पहुंचि उचरीअहि ॥ १० ॥

---

1. सारी 2. कहा 3. देना 4. बड़ा 5. सेना 6. लेकर आना 7. वीर 8. मारना

बहुर तीर ते तीर लकीर। खैंचति पहुंचहु परि महिं बीर।
हटिकै द्रिशटि न करहु पिछारी। बिना बिलोके गमहु अगारी ॥ ११ ॥
जिह ठां[1] चहहु तहां जल आवै। तुमरे सकल काज निबहावैं'।
सुनि कलग़ीधर की बरबानी। निकट जि तबि शरधा धरि मानी ॥ १२ ॥
ले करि बान प्रभू ते गयो। जाइ किनारे पहुंचति भयो।
सतुद्रव को सभि कह्यो संदेसा। 'याद करहिं तुझ गुर जगतेशा ॥ १३ ॥
श्री गुर गोबिंद सिंह पुनीत। तोहि बुलावन चाहति चीत।
अपनो बान निशानी दीना'। इम कहि निज मुख फेरनि कीना ॥ १४ ॥
ऐंचि लकीर तीर की तीर। गमन्यो पुन पुरि दिशि को बीर।
रेख निकारति आवति आगा। सतुद्रव जल पीछे तिस लागा ॥ १५ ॥
तीर लकीर नीर गंभीर। गमन्यों आइ बीर पुरि तीर।
मन महिं भयो भरम तिस केरे। आवति जलि कै नहीं पिछेरे ॥ १६ ॥
सतिगुर की आग्या इन मानी। किधौं न मानी आइ न पानी—।
ग्रीव मोरिकै कीन बिलोकन। आइ प्रवाह, न हुइ किम रोकन ॥ १७ ॥
नदी तीर ते तीर लकीरं। तहिं को आवति नीर गहीर।
गंगधार सम उज्जल धारा। हुइ दुगध सम बेगहि धारा ॥ १८ ॥
रिदै सिंह के दीरघ भासै। जनु जल धार आइ लखि तासै।
बहुर बिचारति भा उर ऐसे। —हमरो हुई बचाइ अबि कैसे ॥ १९ ॥
मैं ले करि जबि पुरि महिं बरौ। जहिं कहिं जल बिसाल कौ करौं।
दुरग आदि सभि सदन गिरावै। जल आगै को ठहिरन पावै ? ॥ २० ॥
निस को समा, न जानै कोई। लखहिं लोक क्या परलै होई।
नर नारी निरनै क्या करैं। जल को कशट अचानक परै ॥ २१ ॥
अबि मैं जे कर जोरि हटावौं। नर नारिन जुति नगर बचावौं।
जे प्रवाह को ले करि जावउं। लगै पाप बल ह्वै न मिटावउं ॥ २२ ॥
इत्यादिक बिचार कर बंदे। 'थंभहु प्रवाह जु वेग बिलंदे'[2]।
ल्यावन हार जबै इम कह्यो। पुरि ते परे प्रवाहु हटि रह्यो ॥ २३ ॥
जबि इस को कुछ दीख्यो नांही। तहिं ते चलि आयो पुरि मांही।
श्री कलग़ीधर को करि नमो। हाथ जोरि बोल्यो तिह समो ॥ २४ ॥
'श्री प्रभु ! बखशहु ख़ता[3] हमारी। रोक्यो आवति दीरघ बारी।
जबि मैं तीर लकीर निकारी। आयो बडो प्रवाहु पिछारी ॥ २५ ॥

---

1. स्थान 2. विशाल 3. भूल चूक, अपराध

जल को मैं करि बिनै बखानी। हट्यो प्रवाह दिखंति निशानी।
भयो लोप पुन देख्यो नांही। भई ख़ताजल ल्यावनि मांही'॥ २६॥
सुनि श्री मुख ते बोले तहीं। 'समा पाइ ऐहै इति सही।
हुइ --हिमाइती नाला—नामू। बहै प्रवाह बिमल अभिरामू॥ २७॥
घाट सुपान बनहिं इस केरे। जे मज्जहिं फल पुंन वडेरे।
कलमल नाश करहिं चिर काला'। इम कहि तूशन भए क्रिपाला॥ २८॥
इसी रीति घेरा परि रह्यो। अंन निखूटति[1] सभि दुख लह्यो।
कठन खेल सतिगुरू अरंभा। सुनि पिखि सभि के हेति अचंभा॥ २९॥
सिक्खनि को सुइने सम तावनि। देनि कसौटी सुद्ध बनावन।
जो बारहि बनी लग भयो। पर अघटन सो पुन मिलि गयो॥ ३०॥
सिक्खी तिक्खी ज्यों खगधारा। तिस पर चलिबो कठन दुखारा[2]।
प्रेम लीन दीनसि मन वट्टे। रहे साबती सिर के सट्टे॥ ३१॥
जिनि पर क्रिपा प्रमेशुर कीनि। सतिगुर चरन सौंप मन दीन।
स्वामी अग्र सीस को अरपे। काटन करहि तां क्यों उर डरपे॥ ३२॥
तज्यो अपनपौ अरप्यो जबै। हंता करहि कूर हुइ तबै।
तिम सभि सिंहनि अरपे प्राना। गुर हित ही चाहति चित हाना॥ ३३॥
महां छुधिति ह्वै दिवस गुज़ारैं[3]। कठ कसि रहैं तुफंगन मारैं।
पाउ पाउ भर कबि कबि अंन। बने गुरू घर ते अचवंन॥ ३४॥
केचित करि अवेर निकसंते। तिमर[4] भए बड नहीं दिखंते।
जाइ वहिर ते ल्यावनि करैं। केचित नाम आसरे थिरैं॥ ३५॥
इक दिन सिंहन करी सलाहा। आनहिं अंन ग्राम किस माहां।
करि मसतल निस महिं चलि गए। दूर दूण महिं प्रापति भए॥ ३६॥
जाइ तहां इक ग्राम निहार्यो। बरे अचानक अर्यों सु मार्यो।
टोरि सदन को अंन जितेक। बंध्यो पोटन बिखै[5] तितेक॥ ३७॥
केतिक लाद लीन निज घोरे। घ्रित मिसटान पाइ जो टोरे।
वसतु जु खैबे की तहिं पाई। सो सभि सिंहनि लीन उचाई॥ ३८॥
ले करि निकसि चले मग परे। पीछे रौर महां नर करे।
गहि गहि हाथनि महिं हत्थ्यारे। मिलि करि परे संबूह पिछारे॥ ३९॥
जिन सिर पोट सु आगै करे। पाछे रहे तुपक कर धरे।
परे गैल से मार हटाए। तम महिं डरति न को नियराए॥ ४०॥

1. समाप्त हो गया 2. कठिन 3. व्यतीत किये 4. अंधेरा 5. में

खैबे हित दिन कितिक गुज़ारा। आन्यो अंन त्रास निरवारा।
बरे दुरग महिं फते बुताई। बिसरामे करि त्यार सु खाई ॥ ४१ ॥
कितिक दिवस इस भांनि बिताए। बहुर छुधा ते सिख बिकुलाए।
ब्रिच्छन की लें छील उतारी। कूट करैं खैबे हित त्यारी ॥ ४२ ॥
केतिक ले तरुवर के पात। धरहिं अगन पर रींधहिं खात।
केतिक फिरिकै जित कित टोर। फल फूलन को आनहिं तोरि ॥ ४३ ॥
अधिक छुधा को सिंह सहारैं। होइ जंग तौ आयुद्ध मारैं।
'अरपहिं सीस नहिं कित जावैं। गुर हित दै हैं देर न लावैं' ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'सतद्रव नाल लिआवन प्रसंग'** बरननं नाम दो बिसंती अंशु ॥ २२ ॥

अंशु २३

छुधत प्रसंग

पावैं संकट छुधा को तऊ रहैं ध्रिति धारि।
लरहिं जंग कै अंन हित करहिं उपाइ बिचार ॥ १ ॥

चौपई

अरध निसा महिं निकसे फेर। मिलि करि सिंह सु भूख बडेर।
गए कोस केतिक चलि जबै। ग्राम अपर अवलोक्यो तबै ॥ २ ॥
बरे जाइ तिन सदन मझारे। सभिहिन को दैकै डर भारे।
अंन निकासि[1] लीन मन भायो। बंधि बंधि करि सीस उठायो ॥ ३ ॥
जितिक उठाइ लीन ले चले। ह्वै सुचेत[2] हटत्यो[3] सभि मिले।
लर्यो न कोऊ मिल्यो न अरी[4]। आइ दुरग महिं खुशी सु करी ॥ ४ ॥
तुरकन के सूबे सैलेश। मिलिकैं चिंता करी विशेश।
'कित को जाइ सिंह ले आवैं। अंतर अंन बरे भट खावैं' ॥ ५ ॥
सुनि गिरपतन राहु दिखराए। इत को गए उतहुं चलि आए।
देखि घात सिंहन की सारी। तुरकन रखी चमूं करि त्यारी ॥ ६ ॥
दस बीसक नर हेरन हारे। सभि मारग को करति निहारे।
लगे रहे लैबे हित भेत। नहिं जान्यो सिंहन संकेत ॥ ७ ॥
इकठे होइ गमन तबि कीन। अंन लैन को जित दिश चीन।
दूर गए जबि चलि करि सोऊ। ग्राम जहां जानति थे जोऊ ॥ ८ ॥
तुरकनि के नर हेरि सिधाए। गए सिंह जित को सु बताए।
चढी चमूं भारी ततकाला। घाटा रोक्यो जाइ बिसाला ॥ ९ ॥
ले करि अंन हटे मग तांही। भयो भेड़ भारी भट जांही।
जबि दुइ दिशिनि पिखे रिपु आए। बने सुचेत सूर समुदाए ॥ १० ॥
छुटी ब्रिद् तबि ज्वाला बमणी। गुलक बरूद भरी अरिदमणी।
सिर ते पोट उतारी सबै। शत्रुनि समुख सिंह भे तबै ॥ ११ ॥

---

1. निकाल लिया 2. ध्यान पूर्वक 3. मारना 4. शत्रु

छोरि तुफंगन को ततकाले। आगे भए खड़ग गहि ढाले।
खरे रोकि शत्रु जहिं छाटे। तहिं लौ पहुंचि बोल बहु डाटे ॥ १२ ॥
निकसनि जतन बिलोकि बिचारे। नहिं प्रापत क्या करहिं बिचारे।
आपस बिखै कहिन तबि लागे। 'सिंहहु सुनहु बचति नहिं भागे ॥ १३ ॥
जे अनि मिलहिं तऊ नहिं छोरहिं। मारन मरन हमहुं सन लोरहिं।
यांते प्रान देन ही बने। धरम गए क्या जीवहु घने ॥ १४ ॥
दोनहुं लोक नहीं अबि खोवहु। मरनि समैं[1] गीदी नहिं होवहु।
सनमुख गमनहु जहिं रिपु घाटे। काटहु खड़गन ते अधवाटे ॥ १५ ॥
घट महिं प्रान रहे थिर जावद। बाहहु तरवारन को तावद।
श्री कलगीधर सिमरति मरहु। जनम मरन भवजल ते तरहु' ॥ १६ ॥
इम कहि करवारन करिनंगी। छुधिति श्रमति बहु दुरबल अंगी।
गुर को प्रेम अधिक बल भर्यो। भिड़े भेड़ भट संघर कर्यो ॥ १७ ॥
किह इक दुइ किह त्रै अरु चारे। मारि मरि करि मरे जुझारे।
पंच, खशट, किह सपत, अशट हनि। गिरे प्राण दीने रण गुर हित ॥ १८ ॥
तुरकनि चमूं हज़ारहुं धाई। थोरे सिंह कहां बनि आई।
तुरक सैंकरे ले करि संग। मरे बीर करि कै वड[2] जंग ॥ १९ ॥
करे कतल सभि तुरकनि घेरि। तहिं ते हटे मार करि फेर।
इत सतिगुर को सुध नहिं पाई। चढैं तिनो हित लेति बचाई ॥ २० ॥
पुन रुकि गए न मारग पायो। तुरकनि दल दीरघ चलि आयो।
इत अनंदपुरि धरति प्रतीछन। नहिं आए तबि करे निरीछन ॥ २१ ॥
हुइ निरास गुर के ढिग गए। सकल ब्रितंत बतावति भए।
'अमुके सिंह अंन के कारन। गए हुते मिलिगे रिपु दारुन ॥ २२ ॥
घाटा रोकि सहारनि करे। एक न बच्यो लरे तहिं मरे।
क्रिपा सिंधु तिन की गति करीअहि। सेवक लखि निज बिरद बिचरीअहि ॥ २३ ॥
सुनि श्री मुख फुरमावति भए। 'बिन हुकम ते वै क्यों गए।
बूझति हम को पुन वै जाते। बनति सहाइक तबि सभि भांते ॥ २४ ॥
तऊ साबती सों दे प्रान। करौं पलत महिं बहु कल्यान।
जहिं सति संगति बासहि मेरी। तहां बास दीनसि हित हेरी ॥ २५ ॥
मुकति समीप दई सभि ही को। बहुत अनंद पाइ हित जी को।
रखहिं साबती जे सिख मेरे। देहिं प्रान नहिं लावति देरे ॥ २६ ॥

---

1. भीरू न बने 2. भयानक युद्ध

सहि कामी सभि लै हैं राज। भोगैं भूअ को सकल समाज।
पुन सतिसंग करैं भव तरैं। निशकामी गति ले रण मरैं' ॥ २७ ॥
इत्त्यादिक कहि तूशनि होए। छुधिति सुभट रहि पुरि सभि कोइ।
आदि प्रसादी हाथी खरे। लाखहुं धन के हय छुध मरे ॥ २८ ॥
ऐसो कछू स्वांग वरतायो। परख्यो सिदक[1] जिनहुं ठहिरायो।
इक गुर दरशन केर अधार। कट कसि सिंह रहैं हुशियार ॥ २९ ॥
कबि कबि पाउ अंन को खावैं। पठि बानी सतिनाम धिआवैं।
एक रजतपण सेर बिकंता। सो भी खोजति कहूं लभंता ॥ ३० ॥
लाखहुं के हय खरे तबेले। खाइं मलीदा[2] सदा महेले।
तिन को देति नहि बहु खाने। दुरबल होए मास सु काने ॥ ३१ ॥
तिम हाथी जिन कीमति नांहि। लाखहुं खरचैं तऊ न पाहिं।
त्रिणदाने बिन सूकति खरे। तिनके दास छुधा दुख भरे ॥ ३२ ॥
अति सूखम जिन भए सरीर। धरहिं कहा लगि भूखे धीर।
सगरे सिंहन की गति तैसे। छुधा[3] कशट सभि को इक जैसे ॥ ३३ ॥
केतिक दिन इम छुधति बिताए। एक समैं चलि करि तहिं आए।
खास तुरंग मतंग नवेला। जिन पर बीत्यो काल दुहेला[4] ॥ ३४ ॥
जबै हयनि महि गए गुसाईं। हेरि हेरि हहिरति हिहनाई।
धर पर खुर हति शबद उठावैं। गज फुंकारति सुंड भ्रमावैं ॥ ३५ ॥
तिनके सेवक दुइ कर जोरि। बिनै करी लहि छुधि दुख घोर।
'स्री प्रभ जी! अबि ह्वैं हति प्रान। बिना अंन ते जीवन हान ॥ ३६ ॥
भोजन देहु कि दिहु संतोशा। जिस ते हम को होइ भरोसा।
आप क्रिपाल करहु प्रभु करुना। नर घेरे महि सभि तुम शरना ॥ ३७ ॥
हाड चाम के तन बनि रहे। बल पल रकत न रंचक अहे।
सहैं कहां लगि संकट एत। चहीए नित्त जु खैबे हेत' ॥ ३८ ॥
सुनि सभि ते अनसुन ही कीनि। ब्रिती उदास न उत्तर दीन।
द्रिशटि बिखै करि सभि इक सारी। गए बहुर तूशन मुख धारी ॥ ३९ ॥
श्रोता सुनहु कहति ब्रिध भाई। कित मग मैं पहुंच्यो तहि जाई।
दरशन करि पद टेक्यो माथा। खुशी करी बहु श्री गुर नाथा ॥ ४० ॥
बहुर जाइ में डेरा कर्यो। सरब दुरग सिंहनि सुनि पर्यो।
मिलिकै सभि आए मुझ पास। महां छुधातर जियन न आस ॥ ४१ ॥

1. सत्य पर हैं 2. अच्छा खाते हैं 3. भूख 4. कठिन

कह्यो सभिनि 'सतिगुर के पास। चलिकै आप करहु अरदास[1]।
साथ सुखी रखि रिपु को मारन—। इह कीनसि उपदेश उचारनि ॥ ४२ ॥
सौ अबि समा आप प्रभु करीए। मरति सभिनि के प्रान उबरीए।
देहु अंन जिस ते बचि रहैं। नहीं छुधा के संकट सहैं' ॥ ४३ ॥
सभि की गति जुति कशट निहारी। जथा क्रिखी सूकति बिन बारी।
इक दिन बीच पाइ, गुर पास। सभि दिश ते कीनसि अरदास ॥ ४४ ॥
'हाथ जोरि मैं कहौं ब्रितंत। सुनीए प्रभु मालक भगवंत!
निज कुटंब की सुधि नहिं लेति। जिन को आइ पुज्यो म्रितु हेत ॥ ४५ ॥
बिन भोजन इक दिन बितवाइ। प्रानी की सुधि बुधि सभि जाइ।
बीत्यो मास छुधिति ही रहिते। नहीं पाउ भी इक दिन लहिते ॥ ४६ ॥
कसि कटि बहुरो जंग करंते। बिन अधार यां ते बिसमंते।
राति सकल महिं जाग्रन करैं। बैठि मोरचनि दिन महिं लरैं ॥ ४७ ॥
बारन, बाजी, बीर बिसाले[2]। सरब भांत के सेवक जाले।
दरस आप को, इसी भरोसे। बीतहि सभि दिन धरि संतोशे ॥ ४८ ॥
जीवन हेतु अपर नहिं जाना। ध्यान आप को जाइ न प्राना।
सभि अलपग्य कहां गति जानैं। लखहु आप ही जौ क्रित ठानैं ॥ ४९ ॥
अबि मरिबे महिं देर न कोई। बोल सकहिं नहिं बिहबल होई।
चहूं ओर तुरकनि को घेरा। यांते सभि को कशट बडेरा' ॥ ५० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पशटम रुते '**छुधत प्रसंग**' बरननं नाम तीन बिसंती अंशु ॥ २३ ॥

---

1. विनय **2.** विशाल

अंशु २४

पारस प्रसंग

दोहरा

सुनि करि बिनै जु मैं कही क्रिपा निधान सुजान ।
देनि लगे पुन अंन को परखे सिह महान ॥ १ ॥

चौपई

दे करि कशट शुद्ध उर करे । उचित महां सुख को उर धरे ।
त्रिपति भए सभि पाइ अहारा । गज बाजीनि दीनि तबि चारा ॥ २ ॥
जे मरि गए गुरू पुरि बसे । जीवति लरति फिरति कट कसे ।
केतिक दिवस बित सुख पाई । किसू देश ते संगति आई ॥ ३ ॥
घेरा हेरि ठठक हिय रहे । जतन रचहिं—किम गुरमुखि लहे—।
घात पाइ किस हूं धन दीनो । अंतरि जाइ प्रवेशन कीनो ॥ ४ ॥
सतिगुर को दरशन सुखु पाइ । भांति भांति की भेट चढाइ ।
एक सिख तिन महिं गुनवंता[1] । पारस पास छुपाइ रखंता ॥ ५ ॥

तुरक आदि जे अपर[2] नरेशा[3] । तिन ते धारहि त्रास विशेखा ।
देखि दशा तहिं सिहनि केरी । निखुटी सकल वसतु इस बेरी ॥ ६ ॥
सभि ही कशट पाइ करि रहे । मन भावति[4] भोजन नहिं लहे ।
इह पारस मैं गुर को दै कै । दारिद सकल बिनाशी कै कै ॥ ७ ॥
सुख सो लहैं महां फल एह । प्रभू प्रसंन होइं जबि लेहिं—।
इम बिचार ततकाल निकासा[5] । धर्यो चरन अरबिंदनि पासा ॥ ८ ॥
सन महिं करि हंकार घनेरा । हाथ जोरि बोल्यो तिस बेरा[6] ।
'प्रभु जी ! इह पारस मैं दीन । जिस ते सभि दारिद[7] हुइ हीन[8] ॥ ९ ॥
श्री गुर को बहु काज सुधारै । तुरकनि ते नांहिन दल हारै ।
मन भावति धन करै, गुसाईं ! दुख भुख सभि के देहि गुवाई' ॥ १० ॥

---

1. बुद्धिमान् 2. अवर 3. राजे 4. अच्छा लगने वाला 4. निकाला 6. समय 7. दुख 8. समाप्त

इम कहि मन महिं गरब करंता ।—मैं गुर पर उपकार धरंता— ।
जानि रिदे की कर महि गह्यो । नीकी रीति सु पारस लह्यो ॥ ११ ॥
पुन जल महिं सो दयो वगाई । जहिं ते खोजे हाथ न आई ।
हेरति सिक्ख भयो हैराना । इक टक प्रभु को देखनि ठाना ॥ १२ ॥
—वसतु अमोलक दुरलभ भारी । कितहुं न पय्यति जगत मझारी ।
तिस की कीमति गुरू न जानी । पाहन सम गेर्यो बिच पानी ॥ १३ ॥
क्यों मैं दियो—बिसूरत घनो । भयो चिंत बसि कँदी मनो ।
उर संताप मेटिबे कारन । श्री प्रभु कीनो बाक उचारन ॥ १४ ॥
'कहां दरब तेरो कुछ गयो ? मुख मुरझाइ बिसूरति भयो ।
पथरी अरपन करि धरि भाइ । लखी निकंमी दई बगाइ' ॥ १५ ॥
कर जोरति सिख कहित अगेरे । 'पथरी जिन जानहु गुर मेरे !
नहिं अवनी थल महिं किस थाना । इह पारस जानहुं गुनवाना ॥ ११ ॥
बाजी, बारन, बीर बिसाले ! देखे छुधनि सभै जन जाले ।
लरति घनो तुरकन के संग । जान्यों दारिद केर प्रसंग ॥ १७ ॥
दै हौं गुर को दरब[1] उपावैं । रखि सैना वड जंग[2] मचावैं ।
सगल जगत ह्वै है अनुसारी । जिसको चहैं रखैं दैं मारी ॥ १८ ॥
रावर करी क्रित्त अबि ऐसे । गेर्यो पारस पाहन जैसे' ।
सुनि गुर सिथल होइ कर कह्यो । 'सो हम ने पारस नहिं लह्यो ॥ १९ ॥
जे कीमति जानति वड तांही । तौ क्यों गेर देति जल मांही ।
अबि चिंता निज रिदै बिसारो । पारस हमरो देह बिचारो ॥ १० ॥
सभि माइआ जिन के अनुसारी । चहैं देति चहि छीनैं सारी' ।
सुनि सिख तूशन मन महिं कह्यो ।—किम जानहि कुछ हम नहिं लह्यो ॥ २१ ॥
सकल जगत के मालिक जोई । तौ पारस दिखरावहिं सोई ।
कै पारस सम छुइ कै काहूं । कंचन करहिं बनावनि तांहूं ॥ २२ ॥
पता रिदे मोरे तबि आवै । बिन देखे किम मन पतिआवै— ।
इत्यादिक गिनती बहु करिकै । बैठि रह्यो चित चिंता धरिकै ॥ २३ ॥
तिस की लखि कै गति महाराजा । सिख को भरम मिटावनि काजा ।
करनि पिशाब उठे चलि गए । बैठि निकट ही छोरति[2] भए ॥ १४ ॥
उठि करि खरे भए तबि हेरे । तिह सिख को ले आखय[3] नेरे ।
'आनहु जल को हाथ पखारैं । सुनि करि ले पहुंच्यो तिस बारैं ॥ २५ ॥

---

1. धन 2. विनय की 3. कहा

थित ह्वै गुर के हाथ धुवाए। सिख पिशाब दिश द्रिशटि चलाए।
जहिं जहिं धारा धरनी परी। कुंदन की जगमग दुति करी ॥ २६ ॥
कितिक देरि लगि रह्यो बिचारति। ठीक करन को नीक निहारति।
चामीकर भा निशचै कीन। बैठ्यो आनि हरख ते हीन ॥ २७ ॥
महिमा लखी, तऊ पछुतावै। –क्यों मैं दियो जि बाद गुवावैं–।
मनहुं लूट लीनो बन मांहू। गिनती गनति अनिक मन मांहू ॥ २८ ॥
सिख की चिंता हतने हेता। बोले श्री सोढी कुल केता।
'जे अभिलाखति है चित पारस। तौ जल महिं बरीऐ तजि आरस ॥ २९ ॥
टुबकी लाओ बीन लै आओ। रखहु समीप रिदै हरखाउ।
उठि न सकै सुनि कै दबि लाजा। छोरि न सकै लहै बड काजा ॥ ३० ॥
कितिक बिलम करि कहिं गुर बानी। 'लिहु पारस बरीअहि बिच पानी'।
नहिं उठि सक्यो बहुर गुर कह्यो। नीठ नीठ उठि बरियो चह्यो ॥ ३१ ॥
मूंदे नैन कान अरु नासा। लावति टुबकी पिख्यो तमाशा।
पारस संचे गंज घनेरे। जबर जवाहर जोति बडेरे ॥ ३२ ॥
बरण बरण की मणि गण जहां। पिखति सिक्ख बिसम्यो मन महां।
हीरे उज्जल मुकता गोल। परे बिक़ीमत जहां अतोल ॥ ३३ ॥
सुने न देखे अजब जवाहर। बिदत जोति जिन हूँ की ज़ाहर।
नौ निद्धां गुर केरि खज़ाना। पिखी बिभूति महांन महाना ॥ ३४ ॥
निकस्यो ततछिन भ्रम को खोवा। पिखि परचा निरमल सिख होवा।
लपट्यो चरन सरोजन लाई। 'छमहु छमहु लखि दास गुसाई ॥ ३५ ॥
अहौं अजान, न महिमा जानी। अबि जानी जे करुना ठानी।
लख्यो नहिं कुछ भेत[1] तुमारा। कहां चरित्र आप ने धारा ॥ ३६ ॥
कोटहुं सुरतरु अर सुरधेनु। कोटहुं पारस तुम पग रेनू।
मैं मूरख गरब्यो कुछ थोरे। जाने नहिं ऐश्वरज प्रभु तोरे ॥ ३७ ॥
सभि जग मंगत इक तुम दाते। दान आप को सुर नर खाते।
पारस धात छुए जबि कोऊ। कंचन रूप होति है सोऊ ॥ ३८ ॥
तुमरो थूक धरन पर परै। माटी ते पारस को करै।
चहहु दास को नउ निधि दैहो। छीन इंद्र को रंक बनैहो ॥ ३९ ॥
सकल कला समरथ सुख दाता। अबि कुछ भेद आप को ज़ाता'।
सुनि कलग़ीधर पुन समुझायो। 'तेरे उर[2] को भरम मिटायो ॥ ४० ॥

1. भेद 2. मन का

आगे सिक्खया द्रिढ़ इम धरीए। महां पुरख के निकट सिधरीए।
उर मैं धरहु न गरब बडाई। सभि बिधि निज मंहि लखि लघुताई ॥ ४१ ॥
आदि तुरकपति अपर नरेशा। लाखहुं लखहिं जि शत्रु अशेशा।
एक बान की भार न सोई। करौ भसम सगरो जग जोई ॥ ४२ ॥
मानुख बपुरे कहां अगारी। करौं सुरासुर त्रासति भारी।
कली काल[1] नर लीला जैसे। बरतैं तिस अनुसारी तैसे ॥ ४३ ॥
बाजी, बारन, बीर जु भूखे। सह्यो अनेक रीति इन दूखे।
शुद्ध आतमे हुइ हुइ मरैं। संचति करम सकल ही जरैं ॥ ४४ ॥
मुकति—समीप लहैं पुन सारे। न्रिपति बनहिं जे कामन धारे।
चार पदारथ कर तल पावैं। बिन तप तपे हाथ नहिं आवैं ॥ ४५ ॥
सभि बिधि इन को करहिं भलेरो। जो इक बार बन्यो सिख मेरो।
हुइ सहाइ करि हौं कल्याना। जनम मरन गन संकट हाना ॥ ४६ ॥
इस ते आदि हेत हैं आन। जानैं मेरे सिक्ख महान'।
सिख तबि कह्यो 'खेल सभि ठानो। अपने चरित[2] आप ही जानो ॥ ४७ ॥
हम अलपग्य कहां कहि जानैं। जथा जोग तुम कौतक ठानैं'।
सुनि प्रसंन गुर तांहि बखाना। 'मांगहु बर इच्छा जिम ठाना[3]' ॥ ४८ ॥
हाथ जोरि सिख तबै सुनायो। 'तुम दरशन ते सभि किछ पायो।
जे अबि दयो चहति गुर मेरे। मेट देहु भवजल के फेरे ॥ ४९ ॥
तुमरे संग प्रसंग जि मेरा। जे नर पढहि सुनहिं इक बेरा'।
सो सिख शरधा गुर की पाइ। तुमरे चरननि जाइ समाइ' ॥ ५० ॥
गुरू 'तथासतु' तबि कहि दीन। पास रह्यो पुन सिक्ख प्रबीन।
प्रेम पाइ गुर सों लिवलागी। मुकति उचित होयो बडभागी ॥ ५१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'पारस प्रसंग'** बरननं नाम चतुर बिसंती अंशु ॥ २४ ॥

1. कलियुग 2. महत्त्व 3. जिस प्रकार की

अंशु २५

जननी संबाद प्रसंग

दोहरा

केतिक दिन बीते बहुर बनी कठन सभिहूंन।
खान पान निखुट्यो जबै छुधति[1], बिपति किस हूं न ।। १ ।।

चौपई

मारग घाटे रोकन करे। थल थल प्रति सवधानी धरे।
मरे सिंह बाहर जिस दिन ते। बरजन भे सतिगुरू बचन ते ।। २ ।।
लैबे हेत अंन को फेरे। गमने नहीं परे विच[2] घेरे।
लरिबे हेत निकसि नित जैहैं। अधिक छुधति[3] ही जंग मचैहैं ।। ३ ।।
तरूवर की छीलक ले कोई। खावैं रीधन करि करि सोई।
घास कि बूटा दल फल लेति। अचवहिं[4] प्रान राखिबे[5] हेत ।। ४ ।।
केच्चित गुरबाणी पठि करिकै। इसी आसरे रहित बिचरिकै ।।
मुनी होति जिम पौन अहारी। अंतरमुखी ब्रित्ति को धारी ।। ५ ।।
तनहंता को तजति बितावैं। छुधिति कशट ते नहीं डुलावैं।
इक दिन सतिगुर तरूवरू हेरे। बूझे संग हुते तिस बेरे ।। ६ ।।
'इह किस ब्रिच्छनि छील उतारी'। सुनति दास गन तबहि उचारी।
'भुख दुख ते व्याकुल बहु ह्वै कै। सिंह अचैं विच अगनि रिझैकै' ।। ७ ।।
तबि गुर कह्यो 'हटावन कीजै। इस भोजन तें रोगी थीजै'।
बरजन कीने सभि ही फेर। बहिर पर्यो शत्रुनि को घेर ।। ८ ।।
कितिक अशरधक मात सुनावैं। 'गुर मतवाले बाक अलावैं।
तुम करि जतन बचावहु सारे। नतु होवै सभि घेर संहारे ।। ९ ।।
बनिकै दीन जाए घिघिआवैं। क्यों नहिं इनकै प्रान बचावैं।
जो संग्राम सदा ही चहैं। बखशो भोजन लरिते रहैं ।। १० ।।
रण को त्यागन जे मन ठानैं। तजहिं अनंदपुरि कहूं पयानैं।
चमरा हाड रहे तन केरे। भे पिंजर सुकि मास घनेरे[6] ।। ११ ।।

---

1. भूख 2. में 3. भूख 4. खाते हैं 5. रखने के लिए, बचाने के लिए 6. क्षीण

जीव दान सभि को अबि दीजै। जान आपने रच्छा कीजै'।
इत्यादिक कहि जननी साथ। ल्याए जहिं बैठे गुर नाथ॥ १२॥
सने सने सु प्रसंग चलायो। शंकति प्रभु ते नीठ सुनायों।
'महां छुधा व्यापी सभि महीआ। निरबल भे सरीर जहिं कहीआ'॥ १३॥
श्री गुजरी बोली 'इम करो। इनको त्रिपत करो तौ लरो।
जे नहिं मानहु, कीजहि प्याना[1]। इन द्वै बिन नहि बाचहिं प्राना॥ १४॥
हेरहु सरब शरीरनि हाला। निरबल दुरबल भए बिसाला।
जीवति रहैं करैं पुन दाईआ[2]। लेहिं अनंदपुर अपन छुडाईआ॥ १५॥
मरे पिछारी कछू न फेर। परे सु दीखहिं माटी ढेर।
जीवन लगि ही सभि किछ जानैं। जो जग महिं बिहार सभि ठानैं॥ १६॥
नाहिं त सकल सिंह इम कहैं।—आइसु बिखै आप की अहैं।
करहु हुकम संग्राम मचावैं। शत्रु हज़ारनि को तन घावैं॥ १७॥
आप मरैं तिन के विच वरिकै। सगरे संकट देहु निवरिकै—।
सगल कुटंब आप को जान। दीजै अबै प्रान को दान'॥ १८॥
इम सुनि माता ते सिख बैसे। सभिनि सुनाइ भन्यों गुर ऐसे।
'पूजा को धन निकट हमारे। सो नहिं दैवो बनहि अहारे॥ १९॥
सो छुटवाइ मनिंद हलाहल। रच्यो पंथ हम दीनी पाहुल।
जेकरि अचहिं, न वधहि प्रतापू। नहिं रण विखै होहिं रिपु खापू॥ २०॥
जग महिं रहैं दारिदी सदा। मरहिं नरक महिं वसैं तदा।
मुग़ल पठाननि सों छित छाई। किम तिन सन कर सकहिं लराई॥ २१॥
सचिव. सैन, द्रुग, कोश, रु देश। लच्छन न्रिप के अहैं विशेश।
तिन को मार गरद महिं मेलन। हति करि तीर तुफंगनि सेलन॥ २२॥
अबि तप करहिं शकति को पावैं। एक सिंह लाखहुं पर धावै।
खड़ग केतु नित बनै सहाइ। सुत पर होति पिता जिस भाइ॥ २३॥
गोद मात देवी के पायहु। नित प्रतिपालन बनै सहायहु।
छुधा पिपासा कशट बिसाले। बनहिं पंध को, ले सभि झाले'॥ २४॥
इम केतिक दिन भनति सुनंते। महां छुधति को भए ब्रितंते।
उतराजे मिलि मिलि पछुतावहिं। उजर्यो देश दरब खरचावैं॥ २५॥
नहिं मुहिम किम पूरन भई। श्री गुर द्रिड़ता अतिशै लई।
लाखहुं फौजां[3] खरच बिसाले[4]। लकरी घास अंन ते जाले॥ २६॥

1. निकल जाना 2. यत्न 3. सेना 4. विशाल

होनि न पावै कतहूं खेती। सैल देश भा अपदा सेती।
गुर को लिखहिं 'तजहिं पुर जाहिं। एक बार हुइ हमरे पाहि॥ २७ ॥
लशकर फेर सकल चढि जावै। तबहि बसन हित सतिगुर आवैं'।
इम सलाह करि लिखे पठाए। श्री कलगीधर के ढिग[1] आए॥ २८ ॥
सुनि करि सतिगुर नांहिन मानी। कपटी परबत के नर जानी।
पूजति पाहन, भी मति पाहन। म्रिदुल कदाचित लखीअहि नाहिन॥ २९ ॥
सभि सिंहन महिं नहीं जनाई। कई बेर लिख पत्र पठाई।
इक दिन सिंहन लग्यो दिवाना। सभि महिं आवति भा परवाना॥ ३० ॥
लैके पंमा तिनहुं अमात। करति सपथ को भाखति बात।
नहिं राजन के मन छल कोई। चहैं कि जंग[2] समापति होई'॥ ३१ ॥
पठ्यो सभिनि महिं सुनि इस भांती। 'करिके धरम लिखी हम पाती।
जितिक समाज आदि धन भारे। लेकरि निकसहु सभि संभारे॥ ३२ ॥
जित चित बांछहु तितहिं पयानहु[3]। तुरक रु हम ते शंक न मानहु।
दिश जित कहहु छोर दें राहू। निज परवार सहित चलि जाहू'॥ ३३ ॥
सुनि बीरन को धीरज आयो। श्री गुजरी ढिग जाइ बतायो।
श्री प्रभु मानहिं नहिं इह पाती। तुम बिन कहि न सकहिं हित बाती'॥ ३४ ॥
इम कहि माता को संग ल्याए। मनवायो चाहित समुदाए।
श्री गुजरी बैठी हुइ नेरे। सकल खालसा मिलि तिस बेरे॥ ३५ ॥
श्री गुजरी सुत को समुझावै। 'अबि तो बात भली हुइ जावै।
सभि रिपु करिहीं धरम इमान। निकसहु सभिनि बचावहु प्रान॥ ३६ ॥
सुखी साथि अरु तुम सुख पावो। कहे मात के बात कमावो।
तजहु अनंदपुरि देरि न कीजे। प्रान दान सभिहिनि को दीजै॥ ३७ ॥
जे हुइ अंतर खरच बिसाला। बनहि लरन तुम को चिरकाला।
सरब भांति को संकट अंतर। त्यागनि को शुभ लखहु निरंतर॥ ३८ ॥
केवल चहैं भूमिका सोई। कपट घात को करैं न कोई।
अबहि समा आछै निकसैबो[4]। अवसर बित्यो हाथ नहिं पैबो॥ ३९ ॥
देखहु छुधिति किते दिन वीते। जूझहिं रैन दिवस निरभीते।
उत गिरपति अरु शाह समेत। अहद[5] धरम को करहिं संकेत॥ ४० ॥
हेरहु लशकर बड्यो बडेरा। ख्वाजे* आनि कीन अबि डेरा।
बीड़े को उठाइ ढिग शाहू। हतनि कि पकरनि आयहु पाहू॥ ४१ ॥

1. पास 2. युद्ध 3 निकल चलो 4. निकलने का 5. समझौता
*ख्वाजा ख़िज़र खान

चुकहु नहीं लिहु सभिनि बचाइ। जीवन के सम भली न काइ।
जीवन ते सगरे बिवहार। जीवति करि हैं जतन हज़ार' ॥ ४२ ॥
सिंहनि अरु जननी ते सुनिकै। स्री प्रभु सभि ते बेरुख़ बनिकै।
कुछ कठोरता सहित बखाना। परबत वासी गन डुगराना[1] ॥ ४३ ॥
नित ही पूजति बहुत पखाना। यांते मति पाखान समाना।
सभि कूड़े कूड़ा कर जोरा। कूड़ो पंमा फिरति बहोरा ॥ ४४ ॥
वधहि खालसा जानहिं नांही। लै है पलटा छोरहिं कांही ?
इन को किम ह्वै है पतिआरा। इन के कहे कहां इतबारा[2] ॥ ४५ ॥
चवगत्ता भी मूरख मत्ता। गिरपति जुति कूरे रस रत्ता।
नहिं थिर बुद्धी चपल अजाने। इन को कूर इनहिं करि हाने' ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'जननी संबाद'** प्रसंग बरननं नाम पंच बिसंती अंशु ॥ २५ ॥

---

1. मन भी पर्वत की तरह हो गए हैं 2. विश्वास

अंशु २६
दग़ा करन प्रसंग

दोहरा

कह्यो बहुत सतिगुर प्रभू, जननी आदि जि सिक्ख।
नहिं मन ल्यावति साच को होइ ज बात भविक्ख॥ १॥

चौपई

श्री कलगीधर तबहि बिचारा। इनहुं दिखावहुं करि पतिआरा।
पंमा अपनि हज़ूर हकार्यो। सभिनि सुनावति तिसै उचार्यो॥ २॥
'अवरंगा अरु गिरपति सारे। सहत समाज जि चहति निकारे।
पंच हज़ार ब्रिखभ बनजारे। भेज देहु हम कोश निकारें॥ ३॥
प्रथम हमारी दौलत जावै। तिस पशचाती निकरि सिधावैं।
अपर समाज साथ हम राखैं। जंगल देश जानि अभिलाखैं'॥ ४॥
इम सुनि पंमा बाहर गयो। गिरपति साथ कहति बिध भयो।
सुनिकै हरखे सभि ही मानी। उमरावन भी नीके जानी॥ ५॥
नित को रण मुहिंम मिट जाइ। आपो अपने सदन सिधाइं।
लशकर बिखै ब्रिखभ बनजारे। करे बटोरन ततछिन सारे॥ ६॥
ब्रिखभ गोन जुति पंज हज़ार। भेज दीए सतिगुर दरबार।
आनि थिरे ढिग प्रभु पुन कह्यो। 'धरम इमान[1] दुहन जिम लह्यो॥ ७॥
सो करि कै हमरे ढिग आनो। तौ हम जानैं साच बखानो'।
पुन पंमा पहुंच्यो सभि पास। कह्यो गुरू को कीन प्रकाश॥ ८॥
धरम गिरेशुनि तबि करि दीन। शिव ठाकर की आनहि कीन।
तुरकन कर्यो इमान पठावा। जिम प्रभु कह्यो तथा मंगवावा॥ ९॥
सतिगुर कोशप को बुलवायो। प्रथम सभिनि ते करि समुझायो।
'टूटी पनही ज़ीन पुराने। बुरद[2] पोश है जितक महाने॥ १०॥
मरे तुरंगम चरम अनेक। संचवाइ करि हाड जितेक।
संचि ठीकरी बासन फूटे। जीरण[3] बसत्र साज सभि टूटे॥ ११॥

---

1. धर्म 2. वेश भूशा 3. कटे हुए, जीर्ण

सकल गोन भरि कीजहि त्यारी। निसा परहि दिहु वहिर निकारी'।
कोटवाल कीनो तिम काजू। लीओ सकेल[1] पुरान समाजू॥ १२॥
ब्रिद चंडाल चमारन प्रेरे। बिशटा असत भरंति घनेरे।
पुन घोरन की लीद भराई। सूके गील चरम समुदाई॥ १३॥
जिन ते बहु गिलान दुरगंधा। ऐसो मास पाइ दिय बंधा।
जिस के छुहे धरम होइ हानी। एसे भरि भरि गोन महानी॥ १४॥
पंज हज़ार गोन भरिवाई। बिन देखे ते सरब सिवाई।
निसा परी लगि कीनस त्यारी। 'लादहु' आग्या गुरू उचारी॥ १५॥
वहिर सभिनि ढिग लिखे पठाए। 'अबि चाहति हम निकर सिधाए'।
सुन्न तहिं पसरी अपनि बिराने। 'छोरि दुरग प्रभु चले पयाने[2]॥ १६॥
प्रथम खज़ाना करहिं निकारन। बहुर गुरू करि कूच पधारन'।
अंतर सभिनि सुनी इह बात। लशकर सगरे महिं बक्ख्यात॥ १७॥
गिरपति राजे जेतिक राने। उर हरखे-रण मिट्यो महाने।
ज़ेरदसत, ख्वाजा, रु वजीद। वहिर गुरू की लखी रसीद॥ १८॥
रिदे मुदित भे शोक मिटाए। क्रिखि मुरझाइ मनो जल पाए।
कोटवाल गुर के ढिग गयो। हाथ जोरि पुन भाखति भयो॥ १९॥
'राति अंधेरी तिमर महाना। मग नहिं सूझे आवन जाना।
नहीं तेल जे जलहि मसाला। चलते होइ प्रकाश बिसाला॥ २०॥
जिम आइसु हुइ बनहि उपाइ'। सुनिकै श्री गोबिंद सिंह राइं।
अपनि हाथ ते बरछा दीन। 'लेहु कूप ढिग जाहु प्रबीन॥ २१॥
तिस ऊपर तोमर धरि दीजै। एक दिशि तेल निकासनि कीजै।
दूसर दिशा रहै जल तैसे। खान पान हित लीजै वैसे॥ २२॥
अहैं ब्रिखभ जो पंच हज़ार। दस हजार तिह सींग बिचार।
सभि पर दिहु मसाल बंधवाइ। तेल कूप ते लिहु निकसाइ'॥ २३॥
ले गुर कर ते तोमर आए। धरे कूप पर काढन लाए।
देखति बिसमै हुइ करि सारे। बंधि मसालनि सगरे डारे॥ २४॥
लोक सैंकरे लगे सुधारन। करी मसालन ततछिन जारन।
हुकम गुरू को पुन इम भयो। 'खीन खाब जेतिक बचि गयो॥ २५॥
द्वै द्वै गज गूनन पर डारे'। तिम ही ततछिन तिन पर धारे।
दस हज़ार जग्रि जगी मसाला। जिम कित दिपत प्रकाश,बिसाला॥ २६॥

---

1. इकट्ठे किए। 2. चले

लशकर वहिर त्यार पिखि होए। मन महिं चहिं लूट्यो सभि कोइ।
लाखहुं बीर त्यार हुइ ठांढे। देखति दरब[1] गुरू अबि काढे[2] ॥ २७ ॥
ऊचो अहै मोरचा जोई। तिस के ढिग ढिग कीने सोई।
सने सने सभि ब्रिखभ निकारे। ऊपर तोपहिं कीनसि त्यारे ॥ २८ ॥
बहु-ज्वाला बमनी गहि हाथ। खरे करे तहिं सिंह गन नाथ।
आप अनंद पुरे चलि बैसे। कपटी हतहिं, पिखिनि को तैसे ॥ २९ ॥
हांकति चाले ब्रिंद लुबाने। पसर्यो सभिनि प्रकाश महाने।
राजन की सिपाह गन आई। सने सने देखति निकटाई ॥ ३० ॥
खीन खाब की चमकती ज़री। जानी दौलत अचरज भरी।
'कंचन चांदी होइं जवाहर। पिखियति बड प्रभाउ ही ज़ाहर' ॥ ३१ ॥
सुनि राजन भी धरम बिसारा। उमरावनि इमान को हारा।
'सपत मास दुख पावति रहे। लरति हज़ारों म्रितु को लहे ॥ ३२ ॥
दरब करोरहुं बिच ते चाला। जिस ते त्रिपतै सैन बिसाला।
खाली- दुरग रहे क्या लै हैं। चढहि गुरू किस देश सिधै है' ॥ ३३ ॥
वध्यो लोभ मन बिखैं धनेरा। धरम इमान हत्यो तिस बेरा।
शिव ठाकर अर कसम कुराना। ब्योप्यो लोभ, दयो करि हाना ॥ ३४ ॥
परे पहारी पूरब आइ। भयो रौर दई लूट मचाइ।
मिलि मिलि नर दस बीस कि चाली। ब्रिखभ सहित सभि गोन संभाली ॥ ३५ ॥
तिन पर साठ कि सौ मिलि आए। करि बल बाहन छीनति जाए।
सो नहिं देति लड़न जड़ लागे। शसत्र परे चलि, केतिक भागे ॥ ३६ ॥
पर्यो रौर कोसन लगि सुनियति। जनु समुंद्र मथिबे कहु जनीयनि।
जबि आपस महिं रार मचाई। तबि ऊपर ते तोप चलाई ॥ ३७ ॥
गाजति गाज समान महांनी। करे शत्त्रु समुदाइ सुहानी।
लगी होनि गोरनि की मार। जिस ते मरे हज़ार जुझार ॥ ३८ ॥
कुछ आपस महिं मूरख मरे। कुछ सतिगुरू मार अरि हरे।
लेले गन गए निज डेरे। धरे छुपाइ नहिं द्रिग हेरे ॥ ३९ ॥
निज निज महिं करि करि तकराई। खान पान थल गून छपाई।
जहि पूंजा ठाकर की करैं। सांभ सांभ करि गुपती धरैं ॥ ४० ॥

---

1. धन 2. निकालते हैं

जानहिं—हम सभि किछ ले आए। पुत्र पौत्र लगि बैठहिं खाए।
लरन मरन सफलो अबि भयो। घाली घाल जितिक धन लयो ॥ ४१ ॥

रखी दुराइ भए थिर डेरे। मुख तूशन मन मुदति बडेरे।
नहिं जानहिं मूरख अलपग्गय। चाहैं छल्यो गुरू सरबग्य ॥ ४२ ॥

सुमति निधान गुरू मन भायो। अजब दग़े पर दग़ा दिखायो।
छल करति धरम को छलवायो। नरक ऊचित भे कछू न पायो ॥ ४३ ॥

महां पुरख सों जो छल ठानै। छल्यो जाइ द्वै लोक सु हाने।
लूटि गवार सरब ले गए। निस महिं नहिं निहारति भए ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते '**दग़ा करन प्रसंग**' बरननं नाम खशट बिसती अंशु ॥ २६ ॥

अंशु २७

वकील आमद प्रसंग

दोहरा

भए प्रभाति बिलोकते निज निज थाइं छुपाइ।
तंबू महिं ठाकुर निकट खोली गोन बनाइ ॥ १ ॥

चौपई

दासन आदिक सकल हटाए। आपहि खोलन को ललचाए।
अंतर ते करि डार निकारे। चमरे पनही हाड निकारे ॥ २ ॥
हेरति गेरहिं दूर बगावहिं। बिशटा हाथ लगे पछतावहिं।
इक तौ अपना धरम गवायो। दुतीए लेते जंग मचायो ॥ ३ ॥
त्रिती निपाक[1] जु छूवति भए। मारे बिना मूढ मरि गए।
लज्जति आपस महिं नहिं कहैं। रिदै बिसूरन को बहु लहैं ॥ ४ ॥
धिक धिक अपनो जनम बखानैं। धरम हीन की दुरगति जानैं।
भयो सभिनि को तबि उपहासा। बिकसे सतिगुर पेखि तमाशा ॥ ५ ॥
कहति सिंह जे निकट हकारे। 'कहिं दुरजन के धरम निहारे ?
सभि तुम हमरे पास बखानति[2]। —गिरपति तुरक धरम को ठानति ॥ ६ ॥
सभि परबत बासी मति काचे। इह कबि बैन भनहिं नहिं साचे।
हम कहि रहे न छल तुम जाना। जे करते तजि दुरग पयाना ॥ ७ ॥
तुरक गिरेशुनि की बड सैना। सभि आवति हम पर, पिखनैना।
जूझति सकल सिंह बड बीर। लाखहुं लशकर अरि की भीर ॥ ८ ।'
होति लचारी हम को तबै। जूझ जाति दल सिंहनि तबै।
अबि तौ सभि को भई प्रतीत। दुरजन करति दगा[3] छल चीत ॥ ९ ॥
तुरक पहारी पर बिसवास। धरै न मम सिख जो मति रास।
अपर[4] कितिक दिन कशट सहीजै। भलो जानि निज धीरज कीजै ॥ १० ॥
बिजै पराजै सुख दुख जोई। गुर ऊर समसर चाह न कोई।
सत चेतन अंनदातम ब्रह्म। इस बिन द्वैत अपर सभि भरम ॥ ११ ॥

---

1. अपवित्र 2. कहना 3. विश्वासघात 4. अवर

अस निशचा जिन के उर साचे। सो कहु क्यों कूरे कच राचे।
यांते लखहु खालसे हेता। इह सभि होवति खेल सचेता॥ १२॥
जितनो संकट सुख अधिकंता। प्रभू नेत इम नित बरतंता।
श्री नानक इम बाक बखाना। दुख दारू सुख रोग महाना*॥ १३॥
अंतर थिरो, नचिंत करारे। फिर मन भावति लेहु अहारे।
श्री असिधुज के पिखहु[1] तमाशे। बिबिध के बिधनि अजब प्रकाशे॥ १४॥
अवनी राज तेज बिरक्षावनि। सिर शत्रुनि के चरन टिकावनि।
अलप बीज ते बहु बिसथारिन। बहु बिसतर को मूल उखारनि॥ १५॥
इन के हेतु तपहिं गन तपने। तपु को तपहिं जान हित अपने।
इत्यादिक कीनसि हम संग। दुख पै हैं इह सभि सुख भंगि॥ १६॥
पलटा लेहि खालसा मेरा। केतिक दिन महिं, बडी न देरा।
दग़ा बुरा सिहहु नहिं करीए। रण महिं लरते शत्रु संहरीए॥ १७॥
माता आदि लोक सभि घर के। गुर पर सिदक धर्यो हित धरिकै।
कह्यो गुरू को साची जान्यो। गिरपति तुरकन कूर बखान्यो॥ १८॥
इस प्रकार कहि सिख समुझाए। भले महातम फलहि सुनाए।
तऊ संतोख नहिं किन कीना। महां कशट सिर ऊपर चीना[2]॥ १९॥
कुछ धीरज धरि सिख पुन रहे। गुरू बच ते निज नीको लहे।
मुरचनि महिं राखहिं तकराई। सभि निस जागहिं रखि चुकसाई॥ २०॥
बिना अंन ते भए लचार। इक गुर दरशन के आधार।
संकट सहैं कसे कट रहैं। आयुध घरे रिपुनि को लहैं॥ २१॥
तऊ कशट ते धीरज हाली। बल, पत्र श्रोणत, ते तन खाली।
कहां करैं कचु लख्यो न जाई। गुर चरित्र को पार न पाई॥ २२॥
अधिक छुधा दुख सह्यो न परैं। द्रिशटि भि नहिं अंन, क्या करैं।
घाट बाट की सभि तकराई। तुरक गिरेशुनि[3] कीन बनाई॥ २३॥
कितिक बिते दिन जबि इस भांती। पुन आई अवरंग[4] की पांती।
कसम कुरान आदि की खाई। 'तुमरो बुरो न चितहिं कदाई॥ २४॥
जे कैसे तुम बुरा तकावैं। नहिं दरगाह ठौर हम पावैं।
सच जानो इहु लिख्यो हमारो। तजो अबै संग्राम अरखारो॥ २५॥

---

*गुरु जी का कथन है

1. देखो 2. सहन किया 3. पर्वतीय राजे 4. औरंगजेब

हमरी ओर आप चलि आवहु। हुइ हैं मेल सया हरखावहु।
इत आवन जे चाहति नांही। मन भावति बिचरहु जग मांही ॥ २६ ॥
एक बार तजि दुरग लराई। इह मानहुं बनि मेल तदाई'।
सुनि गुर कह्यो 'न साच तुमारे। करहु अनत, मुख आन उचारे ॥ २७ ॥
पुन अवरंग ढिग लिख्यो पठायो। सुनिकै लिखि करि फेर पुचायो।
भलो वकील लवाइ प्रवानो। सभि गिरपति[1] इक नेका थानी[2] ॥ २८ ॥
करि सलाह सभि आन पवाई। राजनि के वकील समुदाई।
जे प्रथमै लूटन को गए। तिन को दंड देति न्रिप भए ॥ २९ ॥
सभि शरमिंदति भए लुटेरे। लीने दरब खता तिन हेरे।
शाह दूत ले गिरपति दूत। अंतर बरे करनि को सूत ॥ ३० ॥
जहिं सतिगुर बैठे तहिं आए। सकल जोरि कर सीस निवाए।
बैठे निकट कह्यो निज काज। 'सुनीअहि गुरू ग़रीब निवाज ॥ ३१ ॥
परवाना लिखि शाह पठायो। मैं लेकरि तहिं ते चलि आयो।
हज़रत चित को हित करि कह्यो। मिलिबो रावर के संग चह्यो ॥ ३२ ॥
उत मुहिम करि अटक्यो सोइ। नतु आवति इत हाज़र[3] होइ।
मुझ सों बातें करैं ज़ुबानी। परवरदिगार मिलिनि की जानी ॥ ३३ ॥
शाहु समीप तरीफ तुमारी। बहु लोकनि सभि रीति उचारी।
—बली बहादुर पीरन पीर। जनु खुदाइ ही आप सरीर—॥ ३४ ॥
काज़ी अर उमराव घनेरे। करति आप को सुजसु बडेरे।
सुनि सुनि अभिलाखा बड शाहू। यांते मोहि पठ्यो तुम पाहू ॥ ३५ ॥
हज़रत निज कर ते लिखि दीनि। हरफ जु थोरे लीजहि चीनि।
अहिद करे बिच दियो खुदाइ। सपथ मुहमद की तिन खाइ ॥ ३६ ॥
जिस रावर को मन पतिआवै। तिम तुम चलहु न को अटकावै।
जे हज़रत को आशै ऐसे। अपर बुरो करि सकै सु कैसे ? ॥ ३७ ॥
गिरपति सगरे करि करि आन। पठे आप के ढिग परधान।
ठाकुर धेनु धरम बिच दीने। तजहु जंग अबि आछ सु चीने' ॥ ३८ ॥

---

1. स्यान 6. राजे . उपस्थित

पुन पंमा बोल्यो करि जोरि। श्री प्रभु सभि नंम्री तुम ओर।
नहिं पूरब की बात बिचारो। काज अचानक कर्यो बिगारो ॥ ३९ ॥
किस राजे को मति इम नांही। परे लुटेरे बैलनि मांही।
करि सावत सभि ही गहि लीने। मारन करे कैद बहु कीने ॥ ४० ॥
पर्यो सभिनि महिं अबि डर भारी। नहिं को हेरहिं ओर तुहारी।
एक बार तजि दुरग सिधारहु। पुन बिचरहु जहि इच्छा धारहु ॥ ४१ ॥
इत्यादिक दूतन बच कहे। जिम कंचन घट महिं बिख अहे।
कही लापचारी[1] सभि बात। गुर के उर सगरी[2] बिक्ख्यात ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षटशम रुते **'वकील आमद प्रसंग'** बरननं नाम सपतबिंसती अंशु ॥ २७ ॥

---

1. केवल कथन ही है 2. सारी

अंशु २८

वकील प्रसंग

दोहरा

सुनि सभि ते सतिगुर कह्यो 'इह दरोग[1] की बात।
बंचकता तुम करति हो राज तेज हुइ घात ॥ १ ॥

चौपई

जिम आगे सभि कीनसि आन। बहुर बिनाश्यो धरम इमान।
निज ते प्रथम बुनाइ लुटेरे। नरक सुहेर्यो कशट बडेरे ॥ २ ॥
इम ही राज तेज तुम हारो। जगते सफा उठहि इक बारों।
इम कहि तूशन भए गुसाईं। हारे कहि वकील समुदाईं ॥ ३ ॥
श्री गुजरी ढिग सुधि तबि गई। दूतनि कही सु अनबन भई।
नहिं मानहिं कलगीधर किस की। तिन सों बोलहिं बानी रिस की ॥ ४ ॥
सुनिकै अपने निकट हकारे। सगले माता पास पधारे।
कहिवत शाहु गिरेशनि केरि। सरब वकीलनि भाखी फेरी ॥ ५ ॥
'सुनहु मात परतीत करीजै। सभि की कही साच लखि लीजै।
सतिगुर नहिं मानहिं, कहि रहे। प्रथम बारता पर रिस लहे ॥ ६ ॥
सरब लुटेरे कैद परे हैं। दंड सासना देनि करे हैं।
अबिकर जोरि खता बखशावैं। तऊ नहिं मन महिं कुछ ल्यावैं ॥ ७ ॥
सुनि करी माता उर बिरमाई। —एती सपथ साच इन खाई—।
सलल सिह अरु माता मिले। निकसनिं पुरि ते मान्यो भले ॥ ८ ॥
ज्यों क्यों कहि करि गुरू निकारो। तबि मिल है इह जंग अखारों।
आनि गुरू ढिग कर्यो जवाब। 'महाराज! अबि तजहु शिताब[2] ॥ ९ ॥
छुधा कशट इम बहुत सहार्यो। हुइ लचार तुम पास उचार्यो।
निकसे चहैं प्रान छुधिआरे। किम हम राखहिं धीरज धारे ॥ १० ॥

---

1. छल, भुलावा 2. शीघ्र

इतने महिं माता चलि आई। बैठि निकट सुत को समुझाई।
क्यों अबि चाहति सभि को मार्यो। सिक्खनि तुमरा कहां बिगार्यो ॥ ११ ॥

मरे हज़ारहुं लरि लरि आगे। बचे, अब बिन मरिबे[1] लागे।
हेला परै कतल हुइ जै हैं। को लाखहुं लशकर अटकै हैं ॥ १२ ॥

शाहु गिरेश्वर भाखति सारे। किम इह कूर बनहिं, भ्रम हारे।
जे नहिं मानहुंगे इह बात। तजहिं साथ तुमरो बक्खयात ॥ १३ ॥

घर के भी सगरे तजि जावैं। जित कित ह्वै करि प्रान बचावैं।
पुन एकल रहि करहहु कहां। सभिहिनि को प्रानन प्रिय महां' ॥ १४ ॥

सुनि सिंहन ते अरु बच मातहिं। रिस करि कहित भए बिख्यातहि।
'जो अबि निकसहि बचहि सु नाई। हमरो दोश लखहु नहिं काई ॥ १५ ॥

पसरहि जहिं कहिं इही प्रसंग। —हते गए सगरे बिच जंग—।
सुनि करि बिसमै बहुर बिचारहिं। —असमंजस क्यों भई—उचारहिं ॥ १६ ॥

—क्यों न भए सतिगुर रखवारे। जे संगी सद रहिबेहारे—।
यांते लिखि लिखि सकल बिदावा। चले जाहु जित जिह मन भावा ॥ १७ ॥

•जो होवहु हमरे अनुसारी। तौ चित चाह करैं रखवारी।
खड़ग केतु प्रभु बनहि सहाइ। रिपु ते दे करि हाथ बचाइ ॥ १८ ॥

दोनहुं बातन महिं जिम भावै। सो करि चलो, न को अटकावै'।
माता की रिस लखि करि सही। बिन सनेह बानी गुर कही ॥ १९ ॥

भई कशट ते बिह्वल माई। कहां करै कुछ कही न जाई।
सुत प्यारो किम त्यागन करैं। नहिं त्यागै, जानहि —हम मरैं—॥ २० ॥

तिम ही दुबिधा सिंहनि व्यापी। —प्रण थो गुर तजि हैं न कदापी।
'हम नहिं सिक्ख गुरू तुम नांही'। इह किम[2] लिखी जाइ प्रभु पाही-॥ २१ ॥

चित सोचन को सोचति सारे। कुछ न सकहिं करि दुबिधा धारे।
गए वकील सभिनि सन कह्यो। 'सतिगुर रण को हठ धरि रह्यो ॥ २२ ॥

तऊ बात इक बिधि बनी आवै। माता को हम पुन समझावैं।
बिनति करैं गिरीशुनि दिश ते। देहिं भरोसा बिध जिस किस ते ॥ २३ ॥

सो अपने सुत को समुझावै। ज्यों क्यों करि निकसनि मनवावै।
जे जननी को कह्यो न मानैं। तऊ इम होइ बात हम जानैं ॥ २४ ॥

---

3. मरने लगे 1. किस प्रकार

पौत्रे आदिक गुर परिवार। निकर्रहिं वहिर बिना अनुसारि।
इस बिधि भेद परै गुर घर महिं। होइ इकाकी समझैं उर महिं ।। २५ ।।
बहुर आप ही भी निकरन करैं। ठहिरहिं नहीं जंग परहरैं।
भीम चंद ख्वाजा मरदूद। कह्यो वकीलनि जो मउजूद ।। २६ ।।
'इह नीकी तुम नीति बिचारी। करहु जतन इस को मति भारी'।
कहिलूरी कहि 'लिहु मम नानू। करहु मात के चरण प्रणामू ।। २७ ।।
जिम हम धरम करैं, कहि दीजै। एक बार पुरि त्यागन कीजै।
धन आदिक सामग्री भारी। लीजहि अपनी सरब संभारी[1] ।। २८ ।।
मैं हुइ चलिहौं संग तुमारे। देउं लंघाइ बिंद दल सारे।
पुन गमनहु चित चाहित जहां। लशकर[2] परे मोहि दुख महां ।। २९ ।।
देश गिरनि को भयो बिनाशी। उजरी प्रजा कहां क्रिख राशी।
यां ते चहौं जु मिटै बखेरा। मानहु बिनै सहित बच मेरा ।। ३० ।।
उत हज़रत बहु लिखे पठाए। हित करि मिलिबै हेतु बुलाए।
इत्त्यादिक दूतनि सन कहिकै। पठे मात ढिग 'निकसहिं चहिकै ।। ३१ ।।
प्रथम सकल ही गुर ढिग आए। हाथ जोरि करि सीस निवाए।
बैठि गए बरतांत बिखाना। श्री सतिगुरू सुजान महाना ।। ३२ ।।
उमरावन अरु गिरपति सारे। सभि इक थल मिलि इक मत धारे।
हज़रत लिखि ताकीद पठाई। बोलन आप साध ललचाई ।। ३३ ।।
बिबिद बिधिन के गुनि सुन थारे। —आवहिं आप कि लेहिं हकारे[3]-।
शाहु आप जे चाहति ऐसे। बिप्रै अपर करै को कैसे ।। ३४ ।।
तजहु जंग की बात न नीकी। जिस महिं म्रितू होइ सभिही की।
एक बार तजि दुरग सिधारहु। पुन जहिं इच्छा तहां बिहारहु ।। ३५ ।।
कही न तिनकी सतिगुर मानीं। 'तुम सभि झूठ कहति हो बानी।
जो नित पूजा करहिं पखान। तिन की बुद्धि पखान समान ।। ३६ ।।
अर अवरंग को कहां बिसासू। राज हेत करि पिता बिनासू।
बड़ा भ्रात जो दारशकोह। सतिसंगी तिह सौ करि ध्रोह ।। ३७ ।।
मारि दियो नहिं बिलम लगाई। तिम ही अपर हते जुग भाई।
सो अबि कहां अहद को जानहि। दौलत[4] ही खुदाइ[5] करि मानै ।। ३८ ।।
इत्यादिक सतिगुरू सुनाई। पुन उठि गए जहां थिर माई।
भेद दंड सो बाक मिलावैं। बहु निधि ते[6] मातहिं समुझावैं ।। ३९ ।।

1. संभाल 2. सेना 3. पत्र वाहक 4. धन 5. ईश्वर 6. से

'सुनहु मात ! बातहि बिक्ख्यात । न्रिप उमराव[1] सपथ सभि खाति ।
जिम मन मानहि धरम करावहु । तिन पर निज बिस्सवास टिकावहु ॥ ४० ॥
निकसहु वहिर न करहु अंदेशा । लेहु बचाइ प्रवार अशेशा ।
थिरो कौन कारज सर जाइ । जे निकसहु[2] क्या हुइ बिगराइ ॥ ४१ ॥
जहिं कहिं संगति है गुर केरी[3] । जहिं बैठहु तहिं आइ घनेरी ।
नगर तुमारा रहै सदाइ । अबि निकसहु दिहु रार मिटाइ ॥ ४२ ॥
लाखहुं लोक वहिर हरखावहिं[4] । सिख संगति तुमरी सुख पावहि ।
नाहक इन करि रख्यो बखेरा । माता ! तुम मिटाइ इक बेरा ॥ ४३ ॥
प्रथमै गुर सुत को समुझाओ । जिम मानहिं तिम ही मनवाओ ।
नहीं सुभाव फिरै जे फेरे । अहै सुभाव बिसाल करेरे ॥ ४४ ॥
तौ अपनी त्यारी तुम करो । पंथ देश जंगल के परो ।
पीछे आप निकसि करि अैहैं । कै तुमरे ही संग मिलै हैं ॥ ४५ ॥
वध्यो बखेरा इम हुइ थोरा । जे नहिं मानहुं रण हुइ घोरा' ।
इम श्री गुर को समुझायो । ज्यों क्यों निकसनि को ठहिरायो ॥ ४६ ॥
कह्यो मात तबि 'तुम अबि जावहु । धरम इमान दुहनि ते ल्यावहु ।
मैं सुत को समुझाइ दिखावउं । देखति रिदे प्रतीत उपावउं ॥ ४७ ॥
ठाकुर धेनु बिप्प्र लै आवै । करे सपथ गिरपती पठावै ।
हज़रत दिश ते सय्यद आवै । आन समेत कुरान उठावै'[5] ॥ ४८ ॥
'आछी बात मात हम जाइं । जिम तुम उचरहु हिम ले आइं ।
कहि करि दूत वहिर को गए । त्रिपनि[6] प्रसंग सुनावति भए ॥ ४९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'वकील प्रसंग'** बरननं नाम अशट-बिंसती अंशु ॥२८॥

1. अमीर 2. निकलो 3. की 4. प्रसन्न 5. कुरान की शपथ 6. राजा

अंशु २८

श्री गुजरी और सिहन प्रसंग

दोहरा

श्री गुजरी के संग मिलि छुधति सिंह समुदाइ ।
करि मसलत आवति भए जहिं बैठे गुर राइ ॥ १ ॥

चौपई

पूरब सिक्खनि बिनै बखानी । 'सतिगुर कीजै क्रिपा महानी ।
अपने जानि प्रान दिहु दाना । मतो जंग के करीअहि हाना ॥ २ ॥
दाईआ बहुर खालसे केरा । लरहि समाज बटोरि वडेरा ।
जंगल चलहु मवासी महां । पहुंच न सकै तुरक दल जहां ॥ ३ ॥
इहां दुरग महिं निबर्यो सरब । अंन न प्रापति खरचे दरब ।
अपर समग्री किम कर आवै । बित्यो समैं बहु जंग मचावैं ॥ ४ ॥
निकसे हुइ बहु बिधि कल्लयान । होहि सरब कुछ, बचहिं जि प्रान ।
छुधा कशट ते जे मरि गए । पुन को लरहि खाक हम भए ॥ ५ ॥
देखहु सिक्खनि को हित करिकै । घाली घाल खेद बहु भरिकै ।
अबहि बिदावा नांहि लिखावो । खारज सिक्खी ते न करावो ॥ ६ ॥
छुधा कशट ते लिखि कर दैंगे । प्रान बचावनि हेतु चहैंगे ।
मरन लग्यो नर क्या नहिं करै । जीवन हेतु सरब परहरै ॥ ७ ॥
अपनि पंथ के बनहु सहाइ । लेहु कशट ते प्रान बचाइ' ।
सुनि करि दीन बैन गुर बोले । 'धीरज धरहु, नहिं मन डोले ॥ ८ ॥
हम तुमरे सुख हूं को चाहैं । नहिं जानहुं, इह छली महां है[1] ।
गुजरहि बुरा तुमारे सिर पर । चहौं बचावनि तिस ते हित धरि ॥ ९ ॥
कितिक काल इम और बितावो । पन मन भावति भोजन खावो ।
बासुर बीस कि बसहु उनीस । कै अठार सिमरहु जगदीश ॥ १० ॥
किधौं सपत दस खोड़स रहो । कै दस पंच थिरहु, सुख लहो ।
इतने दिन महिं दोनहुं लोक । करहु सुधारन मेटहु शोक' ॥ ११ ॥

1. आप नहीं जानते यह कितने छलिया हैं

पुन सिख कहैं 'सुनहु गुर पूरे। अब तौ निकसन को बनहि ज़रूरे।
एक दिवस भी बस्यो न जाई। निकसन को चाहति समुदाई ॥ १२ ॥
व्याकुल भए छुधिति ध्रित हारा। शत्रुन सप लरि कियो अखारा।
हारि परे मूरख झख मारि। यांते करिहैं सपथ उदार ॥ १३ ॥
अबि निकसन ही तुम को बनैं। जिस ते रहैं प्रान के सनैं।
पुन गुर कह्यो 'पंच दश द्योसा[1]। जे नहिं रहिते धारि भरोसा ॥ १४ ॥
चौदहि, तेरा, द्वादश रहो। पुन मन भावति सुख सभि लहो।
इकादश, दश, नौ, अशट बसीजै। रिपु हट जाहिं इहां सुख लीजै ॥ १५ ॥
जे ओरक ही करहु पिआरे! सपत दिवस लिहु धीरज धारे।
अबि निकसे हुइ गज़ब गुजारन। बचहु नहिं हुइ सभिनि संहारन ॥ १६ ॥
जिम बालिक पिखि रूप अगनि को। बरनि[2] चहै नहिं लखै जरन को।
माता पिता संभारन करैं। बरजति पकरहिं—बीच न परैं ॥ १७ ॥
त्यों हम तुम को बहु बरजंते। बुरा होति सिर नहिं लखंते।
सुनि सिख कहैं बूरा अब नांहीं। लखिपरि बुरा दुरग के मांयी ॥ १८ ॥
अंन बिनां सगरे मरि जै हैं। कै मिलि शत्रु कतल करि दै हैं।
दोनहु महि ते इक ह्वै जै है। बचहिं न पुन, न उपाइ बनै ॥ १९ ॥
अबि रह्यो जाइ नहिं स्वामी। लखहु खेद अभि[3] अंतरजामी।
इम बोलति भे सिंह अगारी'। पुन श्री गुजरी आनि उचारी ॥ २० ॥
'हट नहिं गहहु पुत्र! अबि चलीए। रिपु ते वहिर तुरत ही टिलीए।
निज कुटंब को लेहु बचाइ। भई बात ओरक की आइ ॥ २१ ॥
जिम तुमरे उर हुइ बिस्वासा। तथा सपत करवाउ अनाशा[4]।
मैं कहि दियो न्रिपत ते बिप्प्र[5]। आनहि आन धेनु की चिप्प्र ॥ २२ ॥
शाहु दिशा ते सटयद आवै। सिर पर अहिद कुरान उठावै।
इतो धरम ठानति हैं बाहर। कहां बिनाशैंगे करि जाहर ॥ २३ ॥
अबि तो बनै बातमन भाई। पुन अवसर अस हाथ न आई।
प्रबल शत्रु पुन चढि गढि बरै। कहो कौन तबि बरजन करै ॥ २४ ॥
बहुत बिसतरी. बेवस होइ। इक छिन महिं मरि है सभि कोइ।
जे त्रीमति निज हतैं कटार। मरि मरि जाइं उदर को मारि ॥ २५ ॥
ऐसो गजब कर्यो किम चहो। नर त्रिय मरे आप क्या लहो।
सुनि माता को पुन समुझायो। 'भेद न दुशटन को तुम पायो ॥ २६ ॥

---

1. दस और पांच पंद्रह 2. अंदर आना 3. मन 4. सत्य शपथ 5. ब्राह्मण

प्रथम दिखाइ न भई प्रतीत। तिन पर धरहु भरोसा चति।
जिस कुटंभ को चहैं बचायो। किम शत्रू छोरहि मिलि जायो ॥ २७ ॥
बुरी होनि सो भली परेखी। जिम हुइ भली बुरी सो देखी।
तुम जानहु जिन जिन जन जाना। लिखहु बिदावा करहु पयाना ॥ २८ ॥
सभि जानहि—गुर रहे हटाइ। नहिं बच भाने मरे सु जाइ—'।
अस हठ के बच सुनि करि सारे। बिहबल चिंतति खरे दुखारे ॥ २९ ॥
पौत्र जुगभ थोरी बय वारे। श्री गुजरी चित को अति प्यारे।
निशचै करति -- संग इन लैके। करौं बचावन पुरि निकसै कै - ॥ ३० ॥
भयो कशट चित कह्यो न जाइ। बैठी बहुर जाइ निज थाइ।
मिलि करि सिंह जाइ ढिग बैसे। इक इमि संकट सभि को तैसे ॥ ३१ ॥
मात बिलोचन ते जल जावति। बारि बारि पौंछति दुख पावति।
महिल गुरू के दोनहुं रोदति। बैंठी सास समीप अमोदत ॥ ३२ ॥
तिम ही ब्याकल सिंह बिसाले। पिखहिं मात लोचन डाले।
कुछ करि सकहिं न बहु बिकुलाए। निकरन ठीक मतो ठहिराए ॥ ३३ ॥
—सतिगुर हुइ बैठे मतबाले। हित अनहित नहिं सकहिं कुदाले।
इन हठ रण को मन महिं धार्यो। निकसन समों न भलो बिचार्यो— ॥ ३४ ॥
बारि बारि पछुतावति माता। —कहां करम मम लिख्यो बिधाता।
सभि ते पूरब मैं किम मरौं। सुत पौत्रनि दुख जियति न भरौं ॥ ३५ ॥
श्री बाबा नानक सुख करो। संकट पर्यो अधिक सो हरो।
श्री देवी माता सुख दाती! सुत की मति कीजै अविदाती ॥ ३६ ॥
जिम अपनो परवार बचावैं। सो प्रकार इन कौ फुरि आवै।
क्या मैं करौं पुत्र नहिं मानै। कहां दैव हम गति को ठानै ॥ ३७ ॥
लिखहिं ब्रिदावा जे चलि जावैं। —वचहिं नहिं—सुत बाक अलावैं।
ज्यों क्यों कह्यो साच जिन केरा। परख्यो बहुत बारि द्रिग हेरा ॥ ३८ ॥
रहैं दुरग महिं, नीक न सोई। निकरन मसलति कहि सभि कोई।
अरि मानहि, करहि निकारन। पुन हटि जाइ करै बिच मारन— ॥ ३९ ॥
इम ही सिंह धरैं दुचिताई। चहैं वहिर, गुर तज्यो न जाई।
—जिन आगे घालन को घाल। सेवा करते रहे बिसाल ॥ ४० ॥
जुग लेकनि को जो सहाई। अस गुर पूरन किम तजि जाईं।
गुरू समैं इस हठ को धारा। नहिं निकसहिं चहिं जंग अखारा ॥ ४१ ॥

मिलि सौ दो सै मसलत[1] करैं। बनी कठनता धीर न धरैं।
छुधा कशट बड जाइ न झाला। अबि लौ कट्यो काल दुखाला ।। ४२ ।।
नीठ नीठ किम रहिगे प्राना। रह्यो न जाइ अबहि् गढ थाना।
अंन बिना तरसाइं घनेरे। नहि् प्रापत पुन हैं दिढ घेरे ।। ४३ ।।
सपत दिवस महि् कहि् ते आवै। नाहक[2] सभि के प्रान गुवावैं।
नहि् मवास रह्यो अबि जाइ। छुधति मरैं सिख तौ छुटकाइं ।। ४४ ।।
नाहक लरन मरन अब्रि इहां। सतिगुर के उर आंइ न कहां।
सभि जे निकसि चलहुगे राहू। रहि् हैं गुरू दुरग के माहू ? ।। ४५ ।।
चलैं संग ही इन बनि आवै। भली नहि् इह लिखत करावैं।
सिक्खी बीज जाइ जग मांही। निंदा हुइ हमरी जहिं कांही ।। ४६ ।।
चलहि् निकसि प्रभु बिना लिखाए। सभि ही शुभ कारज बनि जाए।
नांहित लिखहु बिदावा चलहु। जीवति रहो फेर कबि मिलहुं ।। ४७ ।।
इत्यादिक सभि दुरग मझारा। मिलि मिलि जहि् जहि् करहि् उचारा।
चला चली सभिहिनि महि् भई। छुधिति अधिक ते धीर न लई ।। ४८ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'श्री गुजरी और सिंहन प्रसंग'** बरननं नाम उनतीसमो अंशु ।। २९ ।।

---

1. योजना 2. बिना दोष

अशु ३०

दुरग निकसन तिआरी प्रसंग

दोहरा

ढिग ख्वाजे मरदूद के लिखा नुरंग पठाइ।
कसम खुदाइ कुरान दी कसम पिकंबर खाइ ॥ १ ॥

चौपई

मोहि हाथ को लिख्यो सु लैके। सय्यद किसे भले को दै के।
सिर पर धरि कै जाइ कुरान। मिलहि गुरू संग करहि बखान ॥ २ ॥
जिस बिधि करि गुर मन पतिआवै। सो करि देहु निकसि जिम आवै।
ज्यों क्यों करि गुर करहु निकारनि। मुझ लगि पहुंचहि तजि रण दारुन ॥ ३ ॥
सभि उमराव ब्रिंद गिर राजे। मिले एक थल मसलत काजे।
सकल वकील भए मउजूद। तब्रि बोल्यो खुआजा मरदूद ॥ ४ ॥
'हज़रत लिखि भेज्यो परवाना। जिस माता चहि धरम इमाना।
तिम लिखि पठहु न बिलम लगावहु। सभि राजे दिज भले बुलावहु ॥ ५ ॥
इत अंतर ते निकस न हारे। उत हज़रत तूरनता धारे।
दिन महिं इक दुइ शुतर सऊर। भेजति शाह अहै बहु दूर' ॥ ६ ॥
ज़ेरदसत बोल्यो 'इक माई। निकस्यो चहै सिंह समुदाई।
रहे सु ओरद अंन बिहीने। गए वकील देखि सभि चीने' ॥ ७ ॥
भीमचंद कहि 'सुनहु नवाब! इस कारज को करहु शिताब[2]।
मोर वकील मात समुझाई। अस नहिं होइ बहुर फिर जाई ॥ ८ ॥
कह्यो वज़ीद 'करहु अबि त्यार। सय्यद दिजबर लीन हकार[3]।
धेनु चून की[1] धरि करि थारी। राखे सालगराम अगारी ॥ ९ ॥
लिखि कागद पर सपथ सभिनि की। धेनु निकट धरि धुरी नगन की।
'श्री गुर! तकहिं जि बुरा तिहारो। लगहि पाप गो बद्ध को भारो ॥ १० ॥
सभि हस परहिं धरम ते दूर। जौ तुम सों हम बोलहि करे।
शालगराम इशट की आन। तकहि बुरा अघलागहि आन' ११ ॥

---

1. आटे की गाय 2. शीघ्र 3. बुलाया

जंमू पति भूपति कहिलूरी। गिरपति सभि आदिक हंडूरी।
लिखि लिखि सपथ मुहत सभि करी। दिजबर अरु वकील तिस घरी ॥ १२ ॥
सय्यद सिर पर धरी कुरान। लिखा तुरंग का लीनसि पान।
दोनहुं को आगै सभि करिकै। ब्रिंद वकील गए गढ बरिकै ॥ १३ ॥
प्रथम गुरू पग बंदन कीनि। शाहु हकीकत सभि कहि दीनि।
'इह देखहु हज़रत निज हाथ। लिखि करि पठ्यो आप के साथ ॥ १४ ॥
इह सय्यद सिर धरी कुरान। कसम पिअंबर लिखी महान।
बीच खुदाइ दियो करि नेहू। मिलिबे की अभिलाख अछेहू ॥ १५ ॥
इह दिज सभि गिरपतनि पठायो। सालग्राम सिर धरि करि आयो।
निज निज मुहर लिखत करि दीनी। थाली बिखै धेनु थिर कीनी ॥ १६ ॥
अबि तौ करो रिदै बिसवासू। चलि करि मिलहु शाह चहि णासू'।
सुनि गुर नहिं मन ल्यावनि भए। तबि माता के तीर सिधए ॥ १७ ॥
मसतक टेकि बैठि करि भाखा। 'सुनहु मात ! जिम तुम अभिलाखा।
सो बिधि हज़रत कीनि पठाई। तिम ही सपथ गिरेशुनि खाई ॥ १८ ॥
ले निकसहु अपनो परिवारा। जित इच्छा तित करहु पधारा
पुन सतिगुर थिर रहैं न इहां। निकस चलहिंगे पहुंचहु जहां' ॥ १९ ॥
देखि अनंदति जननी भई। सुत समझावनि को पुन गई।
कहिं लगि कहे कथा बिसतारा। नहिं मानैं बहु भांति उचारा ॥ २० ॥
राइ गई गुलाब शाम सिंह दोऊ। 'जननी भनै मान लिहु सोऊ।
करि लीने बड जंग अखारे। निकसहु लिहु बचाइ पखारे ॥ २१ ॥
भई कोप मन मात बडेरी[1]। लिख्यो बिदावा 'जननि न तेरी'।
उठि करि आई कीनसि त्यारी। जुग पौत्रे प्रिय करे अगारी[2] ॥ २२ ॥
उचर्यो सूत संग ततकाला। 'स्यंदन कीजै त्यार बिसाला।
त्रिपत तुरंगन देहु निहारी। डारो ज़ीन न धरहु अवारी' ॥ २३ ॥
देखि मात की गति चित हाले। लिखिनि बिदावा सिंह दुखाले।
कागद दीह[3] कलम रुशनाई[4]। श्री कलगीधर पास रखाई ॥ २४ ॥
लागे लिखिनि बिदावा सारे। चहैं बचायो प्रानन प्यारे।
महां कशट सभि को तबि होवा। कर्यो जु प्रण सो सगरो खोवा ॥ २५ ॥
गुरू तजे नहिं तज्यो सरीर। पछुतावति चित भए अधीर।
पिखहिं परसपर लिखते जाहिं। होइ उदास गुरू लिखवाहिं ॥ २६ ॥

1. अधिक 2. आगे 3. बढ़ा 4. प्रकाश, स्याही

चाली सिंह रहे हठ धारि। नहिं लिखहिं, गुर कीनि उचार।
तुम भी लिखहु बनहु सभि संगी। क्यों हटि रहे, न हुइ इक रंगी ॥ २७ ॥
उदै सिंह आलम सिंह आदि। सुनि पिखिकै बिसमे संबाद।
कहनि लगे 'हम लिखहिं न कोई। घाली घाल बाद हुइ सोई ॥ २८ ॥
दोनहुं लोकनि संग सहाई। अस गुर को क्यों करि तजि जाई।
निकसहु दुरग कि रहीऐ अंतर। हम नहिं छोरैं संग निरंतर' ॥ २९ ॥
इक दोइ बारि कह्यो गुर फेर। क्यों तुम लिखहु न ? लावहु देर।
हाथ जोरि सभि करी प्रणाम। 'हम तो रहैं आप की शाम' ॥ ३० ॥
दया सिंह ते आदिक पंचे। पंचहुं मुकते सिक्खी संचे।
दस इह रहे तीस सिक्ख और। उदै सिंह आदिक भट मौर ॥ ३१ ॥
चाली सिंह नहिं तबि लिख्यो। अपर सभिनि लिखि दीनसि पिख्यो।
रह्यो बीज-उर गुरू बिचारा। —वधै पंथ पुन मोहि उदारा ॥ ३२ ॥
हुइ साबत रण जूझहि जोई। अवनी राज भोगहै सोई—।
कागद लिख्यो जेब ले डारा। वहुर वकीलनि पास हकारा ॥ ३३ ॥
'सभि की आन करी लिखि लोई। कागद हम को दीजै सोई।'
कहिलूरी आदिक सभि लिख्यो। सो कागद कर महिं लै पिख्यो ॥ ३४ ॥
पुन अवरंग को लिख्यो मंगायो। लियो संभार जेब महिं पायो।
सभि को कह्यो 'त्यार हुइ जावो। निकसहु वहिर भले मग पावहु' ॥ ३५ ॥
तंबू दीरघ अलप बनाती। नाना चित्रति बनी कनाती।
इक थल करि कै आग लगाई। बसत्रादिक सभि दीए जलाई ॥ ३६ ॥
बच्यो खज़ाना जेतिक शेख। पायहु सतुद्रव विखे अशेख।
बासन कंचन रजत कि पीतर। डारि दीए सभि जल के भीतर ॥ ३७ ॥
कितिक वसतु गाडी विच धरनी। वहिर न राखी कछु अरि हरनी[1]।
अगनि कि जल कै धरनि गडाई। सो सभि दफतर पर लिखवाई ॥ ३८ ॥
तिन के नाम लिखी सभि वसतू[2]। थान थान प्रति सौंपि समसत्।
तीछन शसत्र सकल कढवाए। सिंहन के अंगन लगवाए ॥ ३९ ॥
पुन श्री मुख सभि को फुरमाए। 'निकसहु रात महां तम छाए।
भोर होति लो पहुंचहु दूर। सावधान हूजहु बनि सूर' ॥ ४० ॥

---

1. शत्रु के लूटने के लिए बाहर न रहने दी 2. भाव जल, अग्नि और पृथ्वी के नाम कर दीं

इक्की सै कोसनि लगि राजू । अपर कहां लगि गिनहिं समाजू ।
सैन कोश . अनगिन जिस पासी । पच हार्यो अवरंग बल रासी ।। ४१ ।।
आनंदपुरि के हेतु छुडावनि । सभि गिरपति को दल चढि आवनि ।
मूरख लाइ लाइ बल हारे । देश बिदेश सूरमा सारे ।। ४२ ।।
किस को बल नहिं चल्यो कदाई । पचि पचि बैठे रिपु समुदाई ।
नहिं दूग छोरी किस काल । राख्यो अपनो तेज बिसाल ।। ४३ ।।
सिख सखा को बायु न ताती । सुख सों सुपति न दिए अराती[1] ।
गिर के जन राजे समुदाई[2] । अपनि तेज तर रखे दबाई ।। ४४ ।।
गुरू वहादर बडे बडेरे । रिपु दस* लाख न ढूके नेरे ।
कोस कोस लगि दूर टिकाए । मार हज़ारहुं बीर खपाए ।। ४५ ।।
सो प्रभु आप दुरग कौ छोरि । चह्यो पयाना दच्छन ओरि ।
सभि के गरब बडे कर भंजन । संतन जन के मन करि रंजन ।। ४६ ।।
महां प्रताप दिखाइ बिच्चछनि । चाहति भए जानि पुन दच्छनि ।
जिम श्री क्रिशन कीन रण सुथरा । पुन दच्छन गमने तजि मथुरा ।। ४७ ।।
सिख कुटंब ते भए उदास । तज्यो सनेह जानि दुख रास ।
चल्यो चहति तजि करि धन धामू । जिम तजि औधि गए श्री रामू ।। ४८ ।।
कहौ कहां लगि गुरू बडाई । जिन के चलित लखे नहिं जाई ।
रहिन दुरग महिं किने न मान्यों । 'चलहु त्यार ह्वै' तबहि बखान्यो ।। ४९ ।।
शाह गिरेश वकील घनेरे । भेद दंड करि जतन बडेरे ।
गुरू अमल्ल मनाए निकसनि । मात खालसे को कहिबो मनि ।। ५० ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटम रुते **'दुरग निकसन तिआरी'** प्रसंग बरनंन नाम त्रिंसती अंशु ।। ३० ।।

---

1. शत्रु 2. पहाड़ी लोग और राजे
*दस दल

अंशु ३१

अनंदपुर ते निकसन प्रसंग

दोहरा

सभिनि सुन्यो गुर बाक को भए त्यार समुदाइ ।
आयुध गन सिंहनि धरे हुइ सवधान तदाइ ।। १ ।।

चौपई

अपने अपने बंधि बंधि भार । शसत्र धरे, सिर लीनसि धारि ।
जिस को शकति उठावन केरी । सो तिन सीस धरी तिस बेरी ।। २ ।।
चार घटी जबि निसा गुज़ारी । नीके भई सभिनि की त्यारी ।
श्री मुख ते तबि हुकम[1] वखाना[2] । 'करै इकत्र बिहीर पिआना[3] ।। ३ ।।
सुनि आइसु को नर चलि परे । दुरग वहिर निकसे दुख भरे ।
पूरब दिश को मुख करि चले । को आगै को पाछै मिले ।। ४ ।।
पहिर निसा बीती जिस काला । माता त्यार समाज संभाला ।
इक खच्चर पर लादी मुहरैं । इक दुइ दास चले करि मुहरै ।। ५ ।।
लघु पौत्रे दोनहुं ले साथ । 'स्यंदन चढहु' कह्यो गुरनाथ ।
प्रथम अपनि ते दुऊ चढाए । वहुर चढी माता सहिसाए ।। ६ ।।
सतिगुर महिल सुंदरी मात । अरु साहिब देवी चित शांत ।
नमो करी गुर को कर जोरे । दोनहुं तबि अरूढि करि डोरे ।। ७ ।।
आइसु पाइ निकसि करि चाली । श्याम जामनी बहु तम वाली ।
अपर जि नर नहिं लरने हारे । सो मिलि मिलि करि वहिर पधारे ।। ८ ।।
गयो बहीर उलंघि कई कोस । बैठे सतिगुर दुरग सरोस ।
सनै सनै सभि करि करि त्यार । चले लोक सभि पंथ मझार ।। ९ ।।
सावधान जो शसत्र समेत । रखे सिंह ढिग लरिबे हेत ।
डेढक जाम जामनी गई । तबि सतिगुर निज त्यारी कई ।। १० ।।

---

1. आज्ञा 2. कहा 3. चलना

निकसे प्रथम गए तिस जाइ। स्री गुर तेग बहादर थाइ।
खरे होइ दरबार अगारी। करि अरदास[1] बंदना धारी ॥ ११ ॥

बहुरो ऊचे कीन बखान। 'है को साध रहै इस थान ?
झारू दीपक नित प्रति करै। श्री गुरदेव सेव हित धरै' ॥ १२ ॥

तीन बारि गुर बचन उचारा। नहिं को बोल्यो डर उर धारा।
अचरज स्वांग बिसाल अरंभे। रही न धीरज भए अचंभे ॥ १३ ॥

इक गुरबखश साध ढिग खर्यो। तिसै बिलोकति बाक उचर्यो।
बसहु इहां तुम सेवा करो। करि सेवा निज जनम सुधरो' ॥ १४ ॥

महांदेव तिस का गुर बोला। 'खाइ कहां ते रहै अडोला ?।
महां कुमति धरि नीच पहारी। करहिं बैर पशचात तुमारी ॥ १५ ॥

भोजन चहीऐ नित प्रति खाने। तुम बिन हम को कुऊ न जाने।
कहैं कहां रावर सभि जाने। सेवहि नित, करि देहु ठिकाने ॥ १६ ॥

सुनि श्री मुखि ते तिसहि उचारा। 'इह साचो है गुर दरबारा।
अंन भरी गाडी इह खरी[2]। सो संभारि[3] राखो लिहु धरी ॥ १७ ॥

संध्या समैं सदा गुर दरशन। बरसहि विच[4] दिवान[5] के परसन[6]।
किस प्रकार ह्वै कमी न काई। निस दिन हम तुम होहिं सहाई ॥ १८ ॥

नहिं किम ग़मी करहु मन मांही। इस थल कमी होइ किम नांही'।
इत्यादिक कहि धीरज दीनी। तब्रि तिन सुनि पद बंदन कीनी ॥ १९ ॥

रह्यो धीर धरि गुर बच माने। प्रभू प्रकरमा करति पयाने[7]।
सज्यो तुरंगम ततछिन आयो। भए अरूढन चलनो भायो ॥ २० ॥

दया सिंह आलम सिंह साध। उदै सिंह आगै चलि नाथ।
मुकते सिंह बाम दिशि चले। मुहकम सिंह साहब सिंह भले ॥ २१ ॥

प्रभु कं दाहन पासे होइ। पीछे चले सिंह सभि कोइ।
सतिगुर को ले बीच पयाने। चढ्यो अजीत सिंह धनु पाने ॥ २२ ॥

ज़ोरावर सिंह दूसर नंद। चले पिता पशचात अमंद।
हिंमत सिंह आदिक सिख घने। धनुख तुफंग अंग धरि बनें ॥ २३ ॥

तोड़ै सुलगति कसे दुगाड़े। जड़े कला पर मोड़ति झाड़े।
लई बरूद जमाइ पलीते। किन सरपोस उघाड़नि कीते ॥ २४ ॥

---

1. विनय 2. खड़ी 3. संभाल 4. में 5. संगति 6. देखने के लिए
7. चले

केतिक खचरनि तीरन भार। लाद लई चाली प्रभु लार।
फनीअर से खपरे खर खरे। सेले, तोमर सांगनि धरे ॥ २५ ॥
सने सने गमनहिं मग बीच। दूर खरे पिखि ऊचरु नीच।
केतिक कोस प्रभू प्रसथाने। अंध भए रिपु नांहि न जाने ॥ २६ ॥
करहि प्रतीखन—निकसहिं जबै। घेरि गुरू को गहि लिहु तबैं—।
राम घनौले लगि चलि आए। सिंह पंच सै गोल बनाए ॥ २७ ॥
दुरजन खरे रहे पशचाती। करि अनुमान सकल सुधि जाती।
—गुरू दुरग महिं अबि घिर नांही। रौरा[1] नहिं लखीअति दिश तांही ॥ २८ ॥
जान्यों परै अगारी गए। मारग दूर उलंघति भए—।
इम लखि करि असवार धवाए। सून पर्यो गढ देख्यो जाए ॥ २९ ॥
तबि खुआजा मरदूद[2] गुलाम। रिसि बोल्यो दल संग तमाम।
'घेरहु अग्र जाइ करि ऐसे। जिस ते निकसि जाइ नहिं कैसे' ॥ ३० ॥
जथेदार सरदार घनेरे। करि करि क्रुद्धति सगरे प्रेरे।
भीमचंद को भाखि[3] पठायो। 'तैं अपनो दल क्यों अटकायो[4] ॥ ३१ ॥
प्रेरहु सभि परबत की सैना। घेरहिं जाइ, गहै पिखि नैना'।
खान वजीद सिरहंदी धायो। लाखहुं लशकर ले उमडायो ॥ ३२ ॥
ज़ेरदसत सूबा लवपुरि को। दौर चल्यो पकरनि श्री गुर को।
बेशुमार[5] जिम निस अंध्यारी। सैना उमडी सभि इक वारी ॥ ३३ ॥
गुर सूरज को पकरन हेत। गहि गहि आयुध उमडे खेत।
को आगै कोऊ पशचात। दौरति[6] जाति गिरै को खात ॥ ३४ ॥
कितिक परसपर लरहिं धकेले। बाजी लरति सऊरनि मेले।
करि तूरनता पहुंचे आइ। सिंहन को पीछे जहिं जाइ ॥ ३५ ॥
सुनिकै शबद हटावन करे। 'कौन अहो तुम? रही अहि खरे!
दुइ दिश दुशमन जाने गए। शसत्रनि गहि सुचेत सभि भए ॥ ३६ ॥
ज्वालावमणी दुशटनि दमणी। छुटनि लगी सनमुख रिपु शमणी।
दगा कर्यो मिलि तुरक पहारी। तबि जानी सिंहनि सुधि सारी ॥ ३७ ॥
इसी हेतु सतिगुरू हटावति—। समुझि सिंह सभि चित पछुतावति।
अबि क्या होइ छोरि गढ धाए। लरिबो सनमुख ही बनि आए ॥ ३८ ॥

---

1. शोर 2. नीच 3. कहा 4. रोका 5. जिसका अंत न पाया जा सके 6. धन

श्री गुर कितिक दूर चलि आगे। खरे अजीत सिंह रिस जागे।
तुरकनि अनी कि मुग़ल पठाना। घिरे आनि करि आयुध पाना ॥ ३९ ॥

छुटे तड़ाभड़ तुपक तड़ाके। मिले बीर ढिग अधिक लड़ाके।
श्याम तिमर महिं धुखे पलीते। चमकहिं बहू प्रकाश कौ कीते ॥ ४० ॥

जिम खद्योतनि को समुदाई। चमकति है इस बिधि दमकाई।
शबदि होति जिम गाजति गाज। सैल टोल पर भट तरु साज ॥ ४१ ॥
दूर दूर लगि शबद सुनंते। गुलका शूकति छुटैं तुरंते।
चमूं[1] तुरक की चढ़ि करि आई। त्रासहिं दूर दूर धिरताई ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटम रुते 'अनंदपुर ते निकसन प्रसंग' बरननं नाम इकत्रिसती अंशु ॥ ३१ ॥

1. सेना

अंशु ३२

उदे सिंह बद्ध प्रसंग

दोहरा

कीरतपुर को उलंघि कै पुन आए निरमोह।
मुग़ल पठानन आइकै लरे, लख्यो तबि ध्रोह॥ १॥

राइ गुलाब रु श्याम सिंह पिखि लिख पत्त्रा दीन।
'जाहु राज सिरमौर के मिलहु भूप तबि चीन॥ २॥
—तुरकनि संग बिरोध हम इह भेजे तुम पास।
देहु ग्राम सेवहु इनहुं बासहिं करहि अवास—॥ ३॥
लई लिखत न्रिप ढिग गए गुर को लिख्यो पछानि।
ग्राम दयो गिरवी तबै बसे तिसी इसथान॥ ४॥

नराज छंद

गुरू गोबिन्द सिंह जी खरे कछूक हो इकै।
—लरे पिछारि आनि कै—सुनंतिनाद जोइकै।
मनिंद टीड ब्रिंद के बिलंद शोर घाल्यो।
तुफंग छोरि-छोरि कै अगाऊ पांउ डाल्यो॥ ५॥
सुनंति नाद जानिकै धुखे पलीत हेरिकै।
करंति सूध तांहि ओर गोरि छोरि टेरिकै।
अजीत सिंह पाइ रोपि ठांढ गाढ होइओ।
रुके सुलच्छ सूरमे मनो कपाट जोइओ॥ ६॥
किधौं प्रवाह नीर को पहार होइ रोक्यो।
बिसाल जंग मंडिकै खरे करे बिलोकियो।
समूह हूह देति हैं न खेत सिंह छोरियो।
सड़ासड़ी ततारचे[1] प्रहार ब्रिंद मोरियो॥ ७॥

---

1. तीर

समान सरप फूंकते सरीर फोरि पार ह्वै ।
लगें, न फेर जीवते गिरंति तुड भार ह्वै ।
त्रफंति को हुंकारते, पुकारते, बिहाल को ।
द्रड़ंति को तुरंग ते त्रड़ंति पाइ काल को ॥ ८ ॥

गुरू सुनंद सूरमा हठील जंग खेत को ।
अजीत सिंह नाम की सुलाज राखि जेत को ।
बहीर दूर जाइकै पहुंचियो संभारि कै ।
रिपून की न आंच लांग छेम ते पधारिकै ॥ ९ ॥

गुरू गोबिन्द सिंह जी सने सने पयानि कै ।
सुनंति नाद जंग को तुफंग के महान कै ।
लरै सु कौन है ? बूझियो समूह की संभार लै ।
—'बिलंद बीर कौन है ? बिलोकि रोक सार लैं'—॥ १० ॥

सोरठा

टिब्बी श्याम सथान ठांढे भए बिचारकैः—
संग न पुत्र महांन--जान्यो—तिन रण घालिओ,—॥ ११ ॥

रसावल छंद

बडो जंग नादं[1] । सुन्यो बीर बादं[2] ।
खरे आप होए । ढिगे सिंह जोए ॥ १२ ॥
'रखे रोकि बीरं । धरी पुत्र धीरं ।
सहाई सिधावो । चले मेल आवो' ॥ १३ ॥
उदे सिंह जोधा । चल्यो धारि क्रोधा ।
'करो मोहि आग्या । जहां जुद्ध जाग्या ॥ १४ ॥
पहूचौं सु जाई । बनीजै सहाई ।
सु पुत्रं तुहारा । जहां ओज भारा' ॥ १५ ॥
सुनी दास बानी । सु आग्या बखानी ।
'करो जुद्ध जाओ । सबै शत्रु धाओ ॥ १६ ॥
बने बेइमाना । सफा होइ हाना ।
पहारी न्रिपाला । महां मूढ़ जाला ॥ १७ ॥
तिनो धरम नाशा । कुकरमं प्रकाशा' ॥
उदे सिंह मानी । करी सावधानी ॥ १८ ॥

---

1. शोर 2. वीरों का युद्ध

हयो बीर भारी । करं चाप धारी ।
लए तीर तीखे । पनीचे सरीखे[1] ।। १९ ।।
किते सिंह संगी । चले हैं भुजंगी ।
जहां सैन रोकी । दिशा सो बिलोकी ।। २० ।।
गुरू पाइ हेरे । सु प्यारे घनेरे ।
धर्यो सीस जाई । 'प्रलोकं' सहाई ।। २१ ।।
गहो बाहु मेरो । पर्यो शरनि तेरी ।
गुरु दीन धापी । 'करो शत्रु खापी ।। २२ ।।
जहां मोहि बासा । रखों तोहि पासा ।
धरो मोरि ध्याना । जुझो शत्रु हाना ।। २३ ।।

दोहरा

जितक रिदे महिं कामना पंथ स्रदारी पाइं ।
भोगहिं धरनी राज को, मोहिं मिलहिं पुन आइ ।। २४ ।।

रसावल छंद

जिते मोहि संगी । लरैंगे भुजंगी ।
बनै तूं प्रधाना । भुगैं सूख नाना ।। २५ ।।
वरं ऐस दीनो । महां मोद कीनो ।
नमो कीनि चाला । सुजोधा बिसाला ।। २६ ।।
बडी शीघ्र धायो । तिसी थांव आयो ।
गुरू नंद जोधा । दलं पुंज रोधा ।। २७ ।।
बडे ऊच गाजा । महां जुद्ध साजा ।
तजे तीर तीखे । बिधे बीर दीखे ।। २८ ।।
गुरू नंद आछे । करे बोल पाछे ।
भयो आप आगे । महां क्रोध जागे ।। २९ ।।
कह्यो 'पंथ जाओ । गुरू पै सिधाओ ।
खरे सो उडीकैं । चलैं फेर नीके' ।। ३० ।।
कहै बार बारी । 'चलीजै अगारी' ।
गुरु पुत्र जोधा । पिखे शत्रु क्रोधा ।। ३१ ।।
नहीं जान चाहा । रण खेत मांहा ।
पिता बाक जाना । —न मेटों—पछाना ।। ३२ ।।

1. सांपों जैसे

गुरू ओर चाला। बडो जुद्ध घाला।
उदे सिंह गाढा। रिपू रोकि ठांढा॥ ३३॥

दोहरा

गुर ढिग जीवन सिंह इक रंघरेटा बड बीर।
तिस को श्री मुख ते कह्यो 'गछ अजीत सिंह तीर॥ ३४॥

ललितपद छंद

हाथ जोरि धरि धीरज बोल्यो 'मम चित की तुम जानी।
पहुंच्यो चहौं तिनहुं ढिग मैं चलि, आइसु आप बखानी[1]॥ ३५॥
इस सलिता लगि मैंले पहुंचो हिंमत एतिक दीनी।
आगे चहहु सु करहु क्रिपा निधि। परी लराई पीनी'॥ ३६॥
सरसा नाम हुतो इक नाला तिस के तट गुर ठाढे।
सुनिकै जीवण सिंह ते बोले 'गमनहु ह्वै करि गाढे॥ ३७॥
पहुंचो इस नाले के तट लौ इह मरज़ी जे तोही।
आइ इहां लगि ही तूं पहुंचे आगे गमन[2] न होही[3]॥ ३८॥
कहित जहां लगि पहुंचनि तैं अबि, तहिं लौ आइ निसंसै।
बिलम न करहु पयानहु सनमुख समुदाई रिपु[4] ध्वंसे'॥ ३९॥
सुनि प्रभु बाक, गयो हठ करिकै, शीघ्र पहुंच्यो जाई।
ऊचे बोलति सिंह पछानति फैल्यो तम[5] समुदाई॥ ४०॥
सने सने मारति रिपु गन को आवति गुरसुत चाला।
मिल्यो जाइ सभि बात बखानी 'चलीअहि मग इस काला॥ ४१॥
करैं प्रतीखन, मोहि पठायो, उदे सिंह रिपु रोके"।
सुनि अजीत सिंह सुभट प्रभू सुत मिटे तुरक अवलोके॥ ४२॥
तऊ गमन करि सने सने चलि लरति उदे सिंह जाना।
आगे सतिगुर के बिहीर सभि, रणं ते त्रसति पयाना॥ ४३॥
सने सने रच्छक ह्वै करि मारग स्त्री प्रभु चाले।
रोपर लगि निरबाह करे सभि, पीछे जंग बिसाले॥ ४४॥
सिंह पंच सै संग हुते भट गढ को जबि तजिआए।
केरिक उदे सिंह के संगी लरति जंग महिं जाए॥ ४५॥

---

1. कहा 2. जाना 3. संभव नहीं 4. शत्रु 5. अन्धेरा

केतिक गुर सत के हुइ संगी ज्वालाबमणी छोरैं।
और सकल कलगीधर के ढिग मिलहिं, शत्रु हति मोरहिं ॥ ४६ ॥

सुनहुं उदे सिंह सोंरण भा जिम—ढुके तुरक पहारी।
जान्यों गुर इहां रण घालति, पकर किधौं लिहु मारी— ॥ ४७ ॥

पाइ जोर अनगनत चमूं तबि उमडी ओरड़ आई।
धुखहिं पलीते, छुटहिं गुलकां, गिरहिं बीर समुदाई ॥ ४८ ॥

रुप्यो उदे सिंह तजति न थल को हतिह तीर करि क्रोधा।
ललकारति 'मारहु रिपु गन को' इम कहि आगा रोधा ॥ ४९ ॥

तम महिं गिरहिं तुरक, गिरबासी, घालहिं हेल बिसाले[1]।
बहुत अलप कुछ लखे न जाहीं भा संग्राम कराले ॥ ५० ॥

हड़ हड़ हसति जोगनी नाचहिं भूत प्रेत बैताला।
जेबुक ब्रिंद पुकारैं दारुण आमिख भखैं विसाला ॥ ५१ ॥

तम महिं जिम जींगण झमकंते धुखैं पलीते पुंजा।
तड़भड़ शबद धान बहु लै जिम भाड़ बिखै किन भुंजा ॥ ५२ ॥

गिरहिं सिंह सनमुखहति शत्रुनि बरैं वरंगन आई।
लोथ पोथना होति जहां कहिं अटक पैर गिर जाई ॥ ५३ ॥

तिस ऊपर तीजा गिर परि है दरड़े आपस मांही।
परे कराहैं उठि हुंकारा 'हाइ हाइ' पहु प्राहीं ॥ ५४ ॥

बिन मारे शत्रू गन मरिगे गिरे ठोकरां खै के।
ज़ेरदसत अरु खान वजीदा बोले ऊच रिसै कें ॥ ५५ ॥

कहां भयो तुम क्यों बलहार्यो, अलप सिंह नहिं मारे।
पकरो गुर को नहिं ते मार दिहु लाखहुं तुम बलहारे ॥ ५६ ॥

जथ्थेदार जे निकट खरे थे दे करि गारि[2] पठाए।
'जान न पावै गुरू जंग करि, पकरहुं' कहि कहि धाए ॥ ५७ ॥

'हज़रत बखशै बहु बखशीशां जे गुर गहि[3] ले चालैं'।
इम कहि सुनि करि धाइ परे खल तजी तुफंगनि[4] जालैं ॥ ५८ ॥

1. विशाल 2. आगे 3. बढे 4. तीर

रसावल छंद

हज़ारों संहारे । खरे धीर धारे ।
नहीं सिंह हाले । बडे हेल घाले ।। ५९ ।।

लगै आनि गोरी । तनू देति फोरी ।
मिलैं हत्थ वत्थे । महा ओज सत्थे ।। ६० ।।

तुफंगानि डारी । क्रिपानै निकारी ।
जुटे सिंह सूरे । बडो क्रोध पूरे ।। ६१ ।।

दग़ा दुशट कीने । अधरमी सु चीने ।
लरे मार केते । गिरे सिंह खेते ।। ६२ ।।

रहे फेर थोरे । पर्यो खेत घोरे ।
उदे सिंह क्रोधा । रुप्यो पैर जोधा ।। ६३ ।।

हट्यो नांहि पाछे । तजै बान आछे ।
मिले शत्रु आई । चहूं ओर धाई ।। ६४ ।।

घिर्यो बीच घेरे । बिलोके चुफेरे ।
तऊ धीर धारे । तजै तीर सारे ।। ६५ ।।

भयो छूछ भाथा । तज्यो, चाम हाथा ।
कराचोल काढे । किते दुशट बाढे ।। ६६ ।।

जिते सिंह संगी । क्रिपानैं सु नंगी ।
लए घेर सारे । जथा खेत बारे ।। ६७ ।।

मनो चन्द भाना ! प्रवारे महाना ।
चले बान गोरी । दई देहि फोरी ।। ६८ ।।

बड़े खग्ग बाहे । महा शत्रु गाहे ।
गिरे सिंह मारे । सु सुरंग सिधारे ।। ६९ ।।

उदे सिंह एकू । प्रहारे अनेकू ।
जितै कूदि जावै । तितै मारि धावै ।। ७० ।।

नहीं नेर ढूके । 'हतो' भाखि कूके ।
नहीं नेर होवैं । रुप्यो सिंह जोवैं ।। ७१ ।।

दोहरा

तुरक पहारी बहु हते खेत पर्यो समुदाइ ।
गुर प्रताप ते एकही लरति लाख रिपु आइ ।। ७२ ।।

चौपई

बहु ज्वाला बमणी तबि त्यागी। उदे सिंह के केतिक लागी।
घाइल भयो श्रोण निचुरंता। भीगे सरबचीर दिखरंता ॥ ७३ ॥
नहीं मूरछा पाइ सु तांहि। बहुरो खड्ग हनै रन मांहि।
—श्री गुर इही—जानि रिपु अरे। —ह्वै करि हति, घाइल को मरे –॥ ७४ ॥
करि करि हेल धाइ ढिग[1] ढूके[2]। 'मार मार' करिकै मुख कूके[3]।
तऊ निकट नहि पहुंचे रिपु गन। —मारहि जोधा—इम लखि डर मन ॥ ७५ ॥
डेढ पहिर लौ रिपु दल रोके। हने धाइ जित जाइ बिलोके।
देव बधू ले आइ बिबाने। 'मैं बर हौं, मैं बरौं' बखाने ॥ ७६ ॥
'ऐसो महांबीर मम लाइक। लरहि इकाकी लाखहुं धाइक'।
चली हज़ारहुं जबै तुफंगं। फोरि दए सगरे ही अंगं ॥ ७७ ॥
मसतक बिखै लगी जबि गोरी। गिर्यो समुख ही शत्रुनि ओरी।
रिस ते कटहि अधर संग दंता। भयो उदे सिंह को इम अंता ॥ ७८ ॥
देखि देवता सभि बिसमाए। गुर प्रताप जानहिं समुदाए।
सतिगुर सिमरति उर करि ध्यान। उदे सिंह छोरे तबि प्रान ॥ ७९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'उदे सिंह बद्ध प्रसंग'** बरननं नाम द्वैत्रिंसती अंशु ॥ ३२ ॥

---

1. पास 2. आए 3. कहा

अंशु ३३

जंग प्रसंग

दोहरा

सभि सिंहन को संगि लै उदै सिंह बल सूर।
गुरू निकट पद पाइ बड जग महिं जस भरपूर ॥ १ ॥

भुजंगपयात छंद

सभै सिंह सूरे जबै मार लीने। पहारी मलेछैं बिलोकैं सु चीने।
महां मोद धार्यो, 'गुरू मारि लीनो। फते[1] आज होई, नहीं जानि दीनो ॥ २ ॥

जिसी ने पहारी घनेरे खपाए[2]। चिरंकाल बीता महां जंग पाए।
घनी शाह की सैन जूझंति मारी। किते[3] मास बीते दियो खेदभारी ॥ ३ ॥

नहीं खेत ते हार लैके पधारे। बडे केसरी चंद ते आदि मारे।
बडो बीर थो पैंडखानं बिदारा। महां ओज ते ताहि को आज मारा ॥ ४ ॥

बडी दून सैलान की सैल जोगा। उजारी, प्रहारे जु थे बीर लोगा।
घने देश देशं जसं जांहि गावैं। धरें त्रास जोधे नहीं नेर जावैं ॥ ५ ॥

लरंते चह्यो जो सदा जीत लेता। अरे लाख बैरी नहीं पीठ देता।
सभै हिंदुवाना गुरू जानि मानै। मर्यो आज सोऊ घने बीर हानै ॥ ६ ॥

भयो जंग को अंन होतो हमेशा। रहै जीवतो भेड़ पावै विशेशा'।
कहैं आप महिं यौं मलेछैं पहारी। नहीं मूढ जानैं गुरू खेल धारी ॥ ७ ॥

बडे तीर मारे हयंगात पारे। नरं बापुरे तेकहो क्यों न मारे ?
जथा नीर रोके गिरं, अग्र रोका। दहे ते चले फैल तैसे बिलोका ॥ ८ ॥

दलं अग्र दौर्यो मिले ताहिं आई। गुरू नंद संगे जहां थी लराई।
नदी सो चढी मींह वुठ्ठयो उचाए। किते सिंह को बेग बीचै बहाए ॥ ९ ॥

---

1. विजय 2. मारे 3. कहीं

नराज छंद

अजीत सिंह सूरमा प्रवाह पार होइओ।
लरे मलेछ बाहनी बिसाल बिंद्र ढोइओ।
छुटंति है तुफंग चे चलाइं तीर तीछना।
लगंति फेर देति हैं सरीर को, निरीछना।। १० ।।

दो ओरीआं जु गोरीआं कसंति फेर छोरीआं।
शुकंति सीस ऊपरे लगंति देहि फोरीआं।
मचाइ शोर ठौर को अमोर ठौर जंग के।
मिले प्रबीर मारते हकारि[1] शत्रु संग के[2] ।। ११ ।।

दोहरा

नदी तीर लगि आइगो सिख रंघरेटा जोइ।
पिखि कै दल बल रिपुनि को भयो नेर किय ढोइ ।। १२ ।।
अपर सिंह केतिक थिरे होनि लग्यो संग्राम।
निकट ढूके, रोके, हते, पहुंचति भट जम धाम ।। १३ ।।

सवैया

जीवन सिंह थिर्यो तिहठां गन सिंहनि हाथ तुफंग संभारे ।
पाइ बरूद कसैं गुलका दुइ ठोकन ते छणकैं गज भारे।
हाथनि पै धरि ताक खां करि डांभति पावक तूरन धारे।
मारति हैं ढिग आवति ना, डर देति महां, रहिं दूर बिडेरे ।। १४ ।।

हेल को घालि बिसाल परे खल मारति बोलन के ललकारे।
खाइकै मार हटैं पिछुवाइ कै, को मरि जाति त्रसंति निहारे।
जीवण सिंह रुप्यो पगठाढ ह्वै छोरि तुफंगनि संग प्रहारे।
हेल को झालति, चालति मंदहि, घालति शत्रुनि को दुख भारे।। १५ ।।

केतिक सिंह गए मरिकै गुलकां लगि फूट परे निज अंगा।
रोकन के हित ठोकति हैं गज ब्रिंद बिलोकति छोरि तुफंगा।
घाइल घूमति झूम गिरैं जिम बायू उखारि करै तरुभंगा।
पुंज मिले हितभंजन के हुइ गंजन श्रोण तरंग सुरंगा ।। १६ ।।

आन परे करि जोर महां चहूंओरन ते रणघोर मचायो।
तीर तिसी सलिता थिर होइ बडो चलता जल बेग बहायो।

---

1. बुला बुला कर 2. साथ के

छोड दई इक संग तुफंगन सिंह जितेक „समूहनि घा़यो ।
जीवन सिंह समेत गिरे सभि प्रान दए गुर को पुरि पायो ।। १७ ।।
पार परे कितने जल ते चलते वलते, टलते न लराई ।
श्री गुर को सुत बीर बडो रिपु रोकि बिलोकति मारग जाई ।
वाहिगुरू मुख बोलि फते[1] जुति जाइ मिल्यो पित को हरिखाई[2] ।
केतिक[3] सिंहनि जंग करे निज संग हुते सु हते समुदाई ।। १८ ।।

केतिक घाइल श्रोणत चालति पुंज संभालति ल्याइ लवाए ।
सिंह उदे रिपु रोकि लियो भट लाखहुं आयुध आनि चलाए' ।
श्री गुरदेव पिता ढिग भाखति 'थंभ मनिंद थिर्यो तिस जाए ।
तीर चिखे रिपु, तीर दिये बहु, बीर गए खपि कै समुदाए ।। १९ ।।

चार घरी इक जाम लर्यो बल बाहुनि ते बहु बीरन को ।
बीधति गेरति, टेरति हैं अरि, जायति केतिक नीरन को ।
हेरति हैं मुख टेरति[4] हैं मिलि घेरति हैं चहिं पीरन[5] को ।
फोरि सरीरनि बीरन के, हुइ छीछ तुनीरहि तीरन को ।। २० ।।

म्यान ते खैंच क्रपान लई, बलावन महांन दिए बिचलाई ।
छोभ ते छाल महां उछलै करि अंग निसंगहि भंग सदाई ।
ह्वै इक संग मलेछ तुफंग दई गन छोर, करी समुहाई ।
भाल मैं लागि बिसाल गई फटिकै दस द्वार तहां म्रितु पाई ।। २१ ।।

आइ गए सलिता तट पै जबि तौ हम पै बड जोर को घाला ।
मारिकै तीरनि बेधि सरीरनि बीरन को बड हेल को झाला ।
जीवन सिंह मर्यो तिह ठां गुलका लगिकै पद पाइ बिसाला ।
तांछिन मैं चढि नारोगयो जल होइ गंभीर सबेग ते चाला ।। २२ ।।

केतिक सिंह गए बहि बीचहि नीठ ही नीठ ते आइ उरारा ।
श्री प्रभु जी ! अबि आप सुनो: दल आइ घनों जिह वार न पारा ।
देर करहु नहिं आप उलंवहु तूरनता करिकै बल भारा' ।
यौ सुनिकै सलिता[6] जल कौ तबि कोप ते श्री गुर स्राप उचारा ।। २३ ।।

'सरसा नारा बड गुर मारा, लह्यो इह औसर नीर बढायो ।'
है अबि लौ इह बात प्रसिद्ध गुरू मुख ते जिम श्राप अलायो ।
आलम सिंह तबै कर जोरति दीन बन्यो हित बाक सुनायो ।
सिंह अजीत मिले अबि आइकै, पाछे रह्यो सु मर्यो रण पायो ।। २४ ।।

---

1. जीत 2. हर्षित 3. कितने ही 4. मुख बनाते हैं 5. अधिक वीर 6. नदी

आप तुरंग[1] धवाइ चलो, सिर थिर[2] सिंह रहे रिपु रोकनको[3]।
पंथ के मूल अहो निकसो पुन सिंह बनाइ अनेकन को।
जे हमसे मरजाहिं घने, बहु फेर बनैं, तजि शोकन को।
श्री प्रभ ! जीवहु अंम्रित पीवहु, ना बिगरै सिख लोकन को' ॥ २५ ॥

फेर दया सिंह साहिब सिंह मिले कर जोर उचारति हैं।
'श्री प्रभु ! जंग तज, प्रसथानहु, मानहु, सिंह बिचारत हैं।
रावर ते हुइ लाखहुं फेर, अहो सभि मूल सुधारति हैं।
आप कहो जहिं पुंज घिरें हम, रोकहिं शत्रु संहारति हैं' ॥ २६ ॥

बारही बार बिनै बहु बोलति बीरन बात कौ मानि गुसाईं।
श्री गुजरी बिच स्यंदन के, जुग नंदन नंद के संग चढ़ाई।
तांहि सुभाख करी समुझावन 'ले अगवान[4] चलो सह साई।
एक दु रात कहूं बसिकै तट सौद्रव के गमनौ पिखी धाई' ॥ २७ ॥

सोरठा

दिल्ली को बसनीक एक सिक्ख लशकर[5] बिखै।
औचक आइ नजीक करी चरन गुर बंदना ॥ २८ ॥
'कहो आप कुछ काज, जो मो ते कुछ बनि सकै।
राजन के महाराज ! सकल कला समरत्थ तुम' ॥ २९ ॥
श्री मुख ते कहिं तांहि 'नीके अवसर महिं मिल्यो।
जात बिहीरै मांहि जुग डेरे तिन सों मिलो ॥ ३० ॥
पुन रोपर के बीच किस के सदन उतार दिहु।
लखै ऊचनहिं नीच, नहिं शंका चित धारीअहि' ॥ ३१ ॥
सिख बोल्यो कर बंदि 'मम सनबंधी घर बसहिं।
करो सहाइ बिलंद तहां उतारौं जाइ करि ॥ ३२ ॥
पूरन गुरू महान मैं सिख होइ न डरतिहौं।
रछहु आप सुजान करौं अजतन अराधना' ॥ ३३ ॥

सवैया

यौं कहिं आइ सुपाइ तबै[6] सिख जाइ बहीर की भीर महिं डोरे।
तूरनता करि बंदन को तहिं धाइगयो फिरिकै तहिं टोरे।

1. घोड़ा 2. स्थिर 3. शत्रु को रोकने के लिए 4. आगे 5. सेना 6. उसी समय

'मात धिरो नहिं, जाहु अबै, निस बीत चली हुइ चाहति भोरे ।
शत्रुनि पाप दग़ा सभि[1] कीन, मिलैंगन आइ समें बित थोरे ।। ३४ ।।

श्री प्रभु आइसु मोहिदई पुरि मैं सनबंध, करो तहिं डेरा ।
सैन ते लेहु बचाइ तहां पुन आप चलो जिह ठां घर मेरा ।
रावर की बहु संगतिहे करि पंगत सेवहिं सांझ सवेरा ।
फेर मिलो जिस थान टिकैं गुर, होइ रह्यो अबि जंग बसेरा' ।। ३५ ।।

यौं कहि कै निज संग लए तम ब्रिद हुतो घर महिं उतराए ।
एक ही राति बसे गुर रोपर भोर ह्वै गाडी मैं लीन चढाए ।
दिल्ली के पंथ परे तबि हूं चलिकै दिन केतिक महिं तहिं आए ।
काहूं नै भेद लख्यो न पिख्यो रिपु आंखनि महि रजपुंज को पाए ।। ३६ ।।

श्री गुजरी जुग पौत्रनि के जुति स्यंदन को करि बेग चलाई ।
द्वै महिला जिम जाति भई सु कथा कहि श्रौतनि ब्रिद सुनाई ।
और बहीर गयो तट रोपर आनि मलेछ[2] मिले समुदाई ।
आपने आपन राह परे कुछ लूट लिए बड बाहनी आई ।। ३७ ।।

फेर करी बिनती बहु सिंहनि 'श्री प्रभु जी ! तुम आप सिधानो ।
हाथ को जोरि निहोरति हैं 'थिर दास रहैं जिम बाक अलावो ।
लाखहुं शत्रु चहैं तुम को, नहीं बीच फसो नहिं जंग मचावो ।
पंध कहै सभि मानहु क्यों नहिं, तेज तुरंग करे चलि जावो' ।। ३८ ।।

श्री गुर शूर्य बिचारति भे इम नेति अकाल प्रमेशुर केरी ।
तारि तुरंगम तूरनता जुति रोपर को उलंघे तिस बेरी ।
सिंह खरे तहिं केतिक भे सभि छोरति हैं गुलकां बहुतेरी ।
रोकति रोक, बिलोकति हैं निस बीत चलि लग होनि सवेरी ।। ३९ ।।

सूरमे सिंह गुरू संग सायुध पंच रु तीस गए तिसं काला ।
और भिरे भट साथ मलेछन छोरि तुफंगन को रण घाला ।
मार हज़ारहुं नाश करे बहु लोटति हैं लगि घाव कराला[3] ।
बाज मरे जुति ज़ीन परे, कित छूछ फिरे असवारन डाला ।। ४० ।।

घोर घुमंड प्रचंड पर्यो तन खंडहि खंड परे धरनी ।
सिंह के हाथ छुटी गुलका निफली नहिं जात गुरू बरनी ।
मार बिनाशति बीर के बाज को लगति ही सु करै करनी ।
मुंड फुटे किस तुंड फुटे किस अंग कटे अरि सों अरनी ।। ४१ ।।

---

1. धोखा 2. पहाड़ी राजा और औरंगज़ेब के अधिकारी 3. गहरा

कौ लगि और बखान करौं हनिकै बहु बीर मलेछ पहारी ।
सिंह शहीद भए सगरे भट पंच बचे तन होइ सुमारी ।
सूरज गैन प्रकाश भयो तम भाजि गयो, जग भी उजिआरी ।
श्रोणित चूवति सों गमने मग खोजि भले प्रभु की असवारी ।। ४२ ।।

दोहरा

कई हज़ारनि शत्रु को मग लरि कीन बिनाश ।
आनंद पुरि रोपर लगौं मरे परे भट रास ।। ४३ ।।
उडे बिहंगम आदि ग्रिध आमिख खाइ भ्रमाहिं ।
बीस कोस लगि बीच मैं पल भक्खी दिखराहिं ।। ४४ ।।
बाजी बीर हज़ार ही जिक कित[1] मरे दिखंति ।
कूकर[2] काक[3] खग[4], कंक सु गीध भ्रमंते ।। ४५ ।।
लाखों दल पशचात गुर मारति मरते आइ ।
पर्यो खेत लर भटन को सुपति मनो बहु थाइं ।। ४६ ।।
सिंह सँकरे स्रितु परे तुरक पहारी ब्रिंद ।
दिवस चढे जाने परे भा घमसान बलंद[5] ।। ४७ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते 'जंग प्रसंग' बरननं नाम ती त्रिसती अंशु ।। ३३ ।।

---

1. जहां कहां 2. कुत्ता 3. कौआ 4. पक्षी 5. विशाल

अंशु ३४

चमकौर आगवन प्रसंग

दोहरा

आप आपको हुइ गयो जो बहीर गुर केर।
को लूट्यो को बच रह्यो को लरि म्रितु तिस बेर ॥ १ ॥

भुजंग छंद

चले आप नाथं दिशा दच्छनी को। हुतो माजरा[1] बूर नामं जिसी को।
तिसी ग्राम आए थिरे थोर काला। कह्यो दास को 'नीर आनो उताल,' ॥ २ ॥
सुने सिंह ने डोर लोटा संभारा। तहां कूप ते नीर नीको निकारा।
गुरू को दियो आनि लीनो तदाई। चुले कीन नेत्रं पखारे बनाई ॥ ३ ॥
कछू पान कीनो मलंहीन पानी। हुते सिंह संगी जिने चाह ठानी।
मुखं धोइ लीना चह्यो पान कीना। चले फेर आगे जहा पथ चीना ॥ ४ ॥

ललितपद छंद

दिल्ली ते इक मानव आयो जाति तुरक के डेरे।
श्री गुर संग मिल्यो करि बंदन बूझ्यो सिंहन हेरे ॥ ५ ॥
'कित ते आयो जाइं कहां को ? उतलावति चलि राहू ? ।
सुनिकै सभि तिन सकल बताई 'जाउं तुरक दल मांहू ॥ ६ ॥
खुआज मरद ने चमू[2] हकारी[3] गुर गहिबे के हेतू।
सो दस लाख आइ असवारहि आनि मिलहि, दिउं भेतू ॥ ७ ॥
रही निकट आवति बड सैना वार न पारदि संता।
अनिक निशान अनेक नगारे ज्यों समुंद्र उमडंता' ॥ ८ ॥
तरक भनक सुनि करि श्री सतिगुर चहुं दिश द्रिशटी चलाई।
पीछे लाखहुं लशकर आवति करि घमसान लराई ॥ ९ ॥

---

1. कहानी 2. सेना 3. बुलाई

आगे दस लख की सुधि सुनिकै चित महिं कीन बिचारा ।
हित लरिबे के सभि चलि आए जे न लरहिं इस बारा ॥ १० ॥

कहा कहैंगे शत्रु समूह गुरू लर्यो नहिं पायो ।
को गड ले करि जंग मचावहि—इम श्री प्रभु को भायो ॥ ११ ॥

ग्राम नाम चमकौर जिसी को थल ऊचेपरं हेरा ।
इस महिं बरि घमसान मचावहिं लशकर[1] हतहिं घनेरा ॥ १२ ॥

हाथ दिखावहिं देखहिं इनके—इम निशचे ठहिराई ।
छोरि चलहिं इह बात न आछी पिखहिं मलेछ लराई ॥ १३ ॥

हिंदु पहारी धरम बिनाश्यो तुरक सु बेईमाना ।
इन करमनि ते तेज छटै रिपु डार समूल प्रहाना—॥ १४ ॥

इम बिचार प्रभु सो मगछोरा चले ठौर ठौर चमकौरं ।
ऊचे थल पर ग्राम पिख्य शुभ नहिं समीप को औरं ॥ १५ ॥

करन करावन सभि बिधि समरथ करन हुतो जिम काजं ।
तथा बनाउ बनावति जहिं कहिं गमने संग समाजं ॥ १६ ॥

पहुंच ग्राम दछ्छनी दिश महिं तहां बाग शुभ हेरा ।
सिंहनि सहित बरे तिस अंतर उतरे कीनसि डेरा[2] ॥ १७ ॥

जो खच्चर तीरनि संग लादी खरी करी तिस थाना ।
निकट तुरंगम ठाढो कीनसि करि काजे बलवाना ॥ १८ ॥

अपर सरब ही उतरे भट बर फरक फरक[3] करि बैसे ।
ऊच मजाज बिना रुख पिखि करि तरुन तरनि ह्वै जैसे ॥ १९ ॥

होइ न सकै समीप सिंह को, कहनि शकति किस मांही ?
दुर निरीछ दरशन तिस छिन महिं, मौन धरे कहिं नांही ॥ २० ॥

जटति जराव जवाहर ज़ाहर जगमग जगमग जोती ।
कुंडल करन, करन कल कंकन, माल बिसाल सु मोती ॥ २१ ॥

जिगा जटति शुभ रतन अनिक बिधि कलग़ी झुलति उतंगी ।
नव रतने जनु मिस करि तन को नव ग्रह गुर भुज संगी ॥ २२ ॥

सबज़[4] सरासन सुंदर साज्यो सुवरन सुवरन गोशे ।
आयुत, निठुर, पीन कर धरि धरि तुरक अरिनि पर रोसे ॥ २३ ॥

---

1. सेना 2. स्थान बनाया 3. अपने अपने स्थान पर बैठ गए 4. हरा भरा

कस्यो निखंग पतंग संग भरि, खपरे खरे पुलादी[1]।
तीछन भीछन पीन कान जिन बडे कितिक मरजादी[2] ॥ २४ ॥
इक तोला कंचन इक सर को पर दीरघ दरसाए।
चंद्रहास दिशि दूसर दीपति कंचन भुशट जराए ॥ २५ ॥
केतिक बान पान महिं लेकरि भू पर मुखी टिकाई।
फोकनि पर कर जुति सिर धरि करि थिर तरुवरु तर थांई ॥ २६ ॥
करति जुद्ध क्रुधति रिपु बधि करि लरति सिंह सभि मारे।
तिन महिं ते बचि पंच सिंह भट आए चले पिछारे ॥ २७ ॥
धाव लगे बहु श्रोनति निचरति भीजे चीर सरीरा।
गुर बल ते चलि दल खल दलमल, खल भल ते धरि धीरा ॥ २८ ॥
नमो कीन सिर नंम्री हुइ कै पुन गुर फते बुलाई।
श्री प्रभु सुनो रोकते लशकर सिंह लरे समुदाई ॥ २९ ॥
पूरब उदे सिंह रण करिकै हते हजारहुं खोटे।
कुछ सिंहनि सन प्रान अंत भा, अटक छुटे गति मोटे ॥ ३० ॥
बहुर अजीत सिंह जी लरिते सने सने चलि आए।
बीस कोस लौ बाजी[3] बीरन परे मरे छित छाए ॥ ३१ ॥
तुरक पहारी सिंह सग ही श्रोणत भूम पसारा।
लाल निहाली जनु विछाइ करि परिगे श्रम निखारा ॥ ३२ ॥
सगरे सिंह जि गढ ते निकसे लरि लरि करि तन छोरा।
हम पंचहुं अरि सन लरि लरि करि पहुंचे तुमरी ओरा ॥ ३३ ॥
तुरक पहारी लशकर[4] अनगन आवति सकल[5] पिछारी।
हम को मग[6] महिं मिल्यो जाति नर तिन इस भांति उचारी ॥ ३४ ॥
शाहु पठा दस लख दल अडरै खाव्जै मरद हकारा[7]।
गहिबे हित सतिगुर के आयो, भूर परा बंध लारा ॥ ३५ ॥
दगा तुरकपति गिरपति चितव्यो, मानहुं साच न राई।
घटा समान बड़ी दुहिं दिश ते चमूं चढी उमडाई ॥ ३६ ॥
जतन करन को अवसर आछो जिस बिधि बने बनावे।
बिना बिलम ही पहुंचे लखीअहि नहिं बंनहिं उपावे ॥ ३७ ॥
भन्यों सैन सो तुरक तुरंगे-गुरू निकट तुम जावो।
मिलै जि आवति पंथ बिखै कित तऊ तुरत गहि ल्यावो—॥ ३८ ॥

---

1. लोहे के बने हुए 2. मर्यादा 3. जीतना 4. सेना 5. सारे 6. मार्ग 7. बुलाया

आप रहे कहि किनहुं न मानी म्रितू सभिनि नियराई।
कंचक निपुन नुरंगा बादी, कसमद रोगहि खाई ॥ ३९ ॥
सरब कला समरथ सभि बिधि हथ चहहु करहु प्रभु भारी।
हम अलप्रग्य कहा गति जानहिं भूत भविख उरधारी' ॥ ४० ॥
इम सुनकै कलगीधर जितवहि—शाहुनुरंगा द्रोही।
शत्रु अहैं अरु गिरपति सगरे कूड़ मिले सभि ध्रोही ॥ ४१ ॥
सिहन दिश बिलोकि प्रभु बोले 'देखहु ग्राम मझारी।
काच हवेली दीरघ कीनसि ऊचे थान उसारी[1] ॥ ४२ ॥
काची गड़ी अटारी दीखति जुग छातन की होवे।
इस को मालक पंच जाट को तिह आनहु हम जोवे' ॥ ४३ ॥
सुनि करि पंच सिंह तबि उठि करि गमने ग्राम मझारा।
हुतो अथाईं के विच बैठ्यो तूरन जाइ निहारा ॥ ४४ ॥
'जिमीदार तूं पंज ग्राम को गुरू हकारनि कीनो।
उपबन महिं उतरे करुनानिधि चलीअहि बिलम बिहीनो' ॥ ४५ ॥
सुनि राहक हित टार करनि को सिहनि संगबखाना।
नहिं अकोर कुछ मोर समीपहि रिकत पान नहिं जाना' ॥ ४६ ॥
एक सिंह सुनि तूरन आयो प्रभु के साथ उचारा।
त्यार उपाइन अबि किछ नाहिन रिकत पान करि टारा[2] ॥ ४७ ॥
दया सिंह दीनार पंच दे तूरन सिंह पठायो।
दई चौधरी के तबि कर महिं ले करि सो उठि आयो ॥ ४८ ॥
उपबन महिं करि सतिगुर दरशन धरि दीनार[3] अगारी।
बंदन पद अरबिंदन पर करि बैठ्यो शका धारी ॥ ४९ ॥
नहिं, समझ्यो घर लेन, भेच को जड़ ह्वै सनमुखि देखै।
बूझी कुशल प्रभू ते पूरब, भाखी श्रेय विशेखै[4] ॥ ५० ॥
सतिगुर कह्यो 'किला जस तेरो सो हम को दिखरावो।
किस प्रकार को रच्यो प्रकारा पौर ठौर दिढ गावो ॥ ५१ ॥
सुनति जाट हहिर्यो उरदीरघ जतन न पाइ विचारै।
लाखहुं शत्रु गेल महिं इनके जानि फरेब उचारै ॥ ५२ ॥
महाराजएं दुरगन जानहु बसिबे को घर कीना।
बुरंज न मुरचा पौर न गाढो परखा दीरघ हीना ॥ ५३ ॥

1. बनाई 2. टाल दिया 3. पैसे आदि 4. बिशेष

एक अटारी एह जु दीखति काम न लरिबे केरी।
दुइ त्वै घर जाटन के अंतर बांटी भ्रात निबेरी।। ५४।।

पंज त्रियन को परदाराखैं बसैं इसी के मांही।
नांहित मैं तुम को लेत्रालति पिखन अटक किछ नांही।। ५५।।

बहुभ्रातन को साझाघर है प्रविश न पुरख बिराना।
वडे हमारे हेतु म्रजादा[1] प्रथमै ने मबखाना।। ५६।।

लरिबे उचित हुतो जेगढ इह चिंताहोति न कोई।
तुम ते आछे अपर कौन हुइ जिस हित राखति गोई।। ५७।।

महां चतुर सतिगुर निधि बुधि के लखि फरेब हुइ ठाढे।
सिहन ते पकराइ जाट को 'नहिं छूटहि, गढ गाढे।। ५८।।

संग शीघ्रता चड़े तुरंगम चले ग्राम को आए।
दुरबल जाट पिख्यो इक आगे तिह सो प्रभू अलाए[2]।। ५९।।

कहां दुरग को पौर बतावहु चलि आगे खुलह्वावहु।
हेरन हेत हमहु ने बरन्यों सकल हेत समुझावहु।। ६०।।

हाथ जोरि बोल्यो 'सुनि प्रभु जी! मैं मालक अधि केरो।
धर दारिद सभि गुजर तंग है वध्यो शरीका[3] मेरो।। ६१।।

जे कुछ दरब देहु अबि मैं कौ गढ दै हौं तुम तांई।
जे खोलहि नहीं भ्रात किबारा थिर अंतर दिढताई।। ६२।।

मम घर महिं इक अलप द्वार है तहिं को करो प्रवेशा।
भीतर ह्वै तुम रिखिकरि लायक चहहु करहु क्रित तैसा'।। ६३।।

सुनि श्री प्रभु तरगस ते बाहर मुहर पचास निकारी।
दुरबल जिमीदारी कर दीनसि हरखति चल्यो अगारी[4]।। ६४।।

गए पौर की ठौर निहारी[5] अपर[6] सकल तकराई।
करे किवार असंजति गाढे हुइ अंतर दिढताई।। ६५।।

रह्यो खुलाहइ जाट जो दुरबल अंतर के नहिं मानैं।
सिहन भन्यो 'हनैं इह मालक पकर्यो लेहु पछानैं।। ६६।।

'पकरहु मारहु तऊ न खोलहिं, लुट जैहै सभि ग्रामा।
लाखहुं लशकर बैरी तुमरो नाश होहि मम धामा'।। ६७।।

---

1. मर्यादा 2. कहा 3. परिवार 4. आगे 5. देखा 6. अवर

अपने सदन दिशा तबि गमन्यों कहि ताकी खुलिह्वाई।
प्रथम जाट बर संग बरे गुर, तजि तुरंग[1] तिस थाई ॥ ६८ ॥
पंच सिंह पुन तजि तजि हय को अंतर भए प्रवेशा।
खोलि पौर को सिंह बरे तबि दई सज़ाइ विशेशा ॥ ६९ ॥
दए निकार वहिर नर त्रिय सभि कहि करि बड दे त्रासा।
लरन समग्री अंतर ले गन दिढ कीनो चहुं पासा ॥ ७० ॥
करी मोरचाबंदी ततछिन बाही पौर अटारी।
चह्यो जु अंतर संचन करिकै बैठे गुर भट भारी[2] ॥ ७१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते 'चमकौर आगवन प्रसंग' बरननं नाम चतुर त्रिसती अंशु ॥ ३४ ॥

1. घोड़ा 2. बड़े योद्धा

अंशु ३५

चमकौर घेरन प्रसंग

दोहरा

श्री सतिगुर करि काइमी[1] थिरे दुरग के मांहि ।
पीछे लशकर[2] शत्रु को खोजति प्रापति नांहि ॥ १ ॥

ललितपद छंद

केचित कहैं 'गुरू रण जूझ्यो बहुते बान प्रहारे[3] ।
अर्यो रह्यो करि जूद्ध बडेरा ब्रिदहि बीर बिदारे' ॥ २ ॥
केचित कहैं 'अग्र ही गमन्यों खोज तुरंग[4] निहारो ।
नहिं मरिबे महिं रण ते आवति करामाति अति भारो ॥ ३ ॥
तम[5] महिं लरते कछू न सूझ्यो को बच को लरि मारा ।
मरे हज़ारहुं बीर तुरंगम पर्यो खेत[6] रण भारा' ॥ ४ ॥
इत्तयादिक मिलि निरणै करि करि—कित गमने ? नहिं सूझै ।
आगे ते पाछे ते आवति सतिगुर की सुधि बूझै ॥ ५ ॥
निस[7] महिं तिमर[8] परसपर लरि मरि घाइल तुरक पहारी ।
सुरत संभारि संभारि परे मग[9] त्रास करैं उर भारी ॥ ६ ॥
जे अनंदपुरि की बड सैना रोपर लरि लरि हारे ।
तिन ते छूट्यो संग गुर केरा पचि पचि झखे गवारे ॥ ७ ॥
दिल्ली ते जो दस लख पहुंची तिनहुं गुरू सुधि पाई ।
'निकसि अनंद पुरि ते बहु जूझे रहीं चमूं[10] पिछवाई ॥ ८ ॥
नाम ग्राम चमकौर तुंग थल आइ सु काइम कीना' ।
दई सकल सुधि गयो जाट इक 'हम को गुर गहि लीना ॥ ९ ॥

---

1. कायम करना 2. फौज 3. चलाए 4. घोड़ा 5. अन्धेरा 6. युद्ध भमि 7. रात्रि 8. अन्धेरा 9. मार्ग 10. सेना

दै सजाइ धर छीन सु लीना आप बर्यो बिच[1] आई।
चाली कै पचास संग भट हैं अपर मरे समुदाई ॥ १० ॥
नर दारा जे सदन मझारा[2] दए काढि बरिआई।
भयो प्रवेश आप गढ लखि करि ह्वै नहिं सकहि लराई ॥ ११ ॥
नहिं मुरचा[3], नहिं परखा दीरघ पौर ठौर[4] नहिं गाढी।
गमनति मारग पिखि प्रवेश भा चलहु आपि लिहु काढी' ॥ १२ ॥
सुने तुरक तबि हयनि[5] धवाए गन धौंसे धुकारे।
उडी धूर असमान गयो भरि बडो अंधेरा गुबारे ॥ १३ ॥
छाद[6] लीन सूरज को सारे हाथ पसार न दीखे।
चली आइ चमकौर चमूं सभि उछलि समुंद्र सरीखे ॥ १४ ॥

सवैया

जे तुरकान बिखै सरदार कहौं तिन नाम सुनो समुदाई—।
नाहरखां, भट, गैरतखां पुन, ख़ान प्रलाद के बाग[7] उठाई।
ख़ां इसमाइल, ख़ान बहादर, ख़ां असमान अये ढिग[8] धाई।
ख़ां सुलतान, जहांन-ख़ां बीर पठानन भीर गनी किम जाई ॥ १५ ॥

कबित्त

मीआं ख़ान, भूरेख़ान, सैदख़ान, नूरेख़ान, फुलख़ान, गुलख़ां, हुसैन ख़ान धाय है।
बली बेग मुग़ल कमान गहि बेग जूति अपर ख़लीलख़ान दल उमडायो है।
मिरज़ा हयात बेग, सैनासौं करमबेग, सय्यद महिमूद अली यौं शिताब[9] आयो है।
बीर बेग जाफर इमान हानि काफर भे कसम[10] कुरान की कुफर[11] कहिवायो है ॥ १६ ॥
केऊ रंग कारे हैं, कुरूप ही सुधारे सारे, केऊ रंग भूरे जंग सूरे जगजानीऐ।
पशतो बकन[12] हारे, उजबक भारे भारे, काबली कंधारी, दाउजई[13] को बखानीऐ।
हबशी, पिशौरी, केऊ बलख बुखारी हुते, रूसी, गन रूमी[14], ग्रिह गज़नी प्रमानीऐ।
केऊ ढठ्ठे, भक्खरी, इरानी औ अरेनी[15] मिलि केऊ कशमीरी जिन बोल[16] न पछानीए[17] ॥ १७ ॥

---

1. में 2. में 3. मोरचा 4. जगह 5. घोड़े 6. ढांकना 7. कमान संभाली 8. पास 9. शीघ्र 10. सौगन्ध 11. झूठ 12. बोलना 13. दाऊदज़ई 14. इलाके का नाम जो सिंध में है 15. अरबी 16. भाषा 17. समझ आना

आई दस लाख जबि पीछे की जु सैना सभि सुनी सुधि ख्वाजमरदूद[1] आदि धाए हैं।
गुरू चमकौर ठौर काइमी करी है दौरि, आई चंमू और तिनो फेर घेर पाए है।
जूझे न पिछारी जंग, होति है अगारी[2] अबि, सुनिकै समूह हय[3] हूह दै भजाए हैं।
यूथप[4] वजीद खां सिरंहद को बिलंद[5] सूबा लैके संग बाहनी[6] उमडि करि आए हैं ॥१८॥

सूबा लवपुरि को दसत ज़ेर नाम जिस सुनी सुधि सारी दल भारी जूति धायो है।
परबत बासी बाई धारन के राजे सभि लै ले सैन आपनी को ब्रिंद[7] उमडायो है।
मीएं रावराने कौन शकति बखाने तिन माचति कुलाहल बिसाल ही सुनायो है।
रंघर हज़ारों और गुज्जर गवार मिलि आइ चमकौर चहूं ओर घेरो पायो है ॥ १९ ॥

आवनि अकाश ते प्रकाश को बिनास कीन, भयो तम रास[8] उड यांसू[9] फल फैलपै।
दीखिति न आंखते, सुनै न बल भाखते, गुरू को गहै कांखते[10] लखंति आइ गैल पै।
चारों ओर शोर कै, चहंति हेल रौरिकै मलेछ आइ दौरिकै छबीले बडे छैल पै।
जैसे मेल मेल के शलभ[11] चेस केल कै, धरै बिसाल ऐल कै दुरग दीह सेल[12] पै ॥२०॥

धरनी[13] गगन एक है गए बिबेक बिन खेह[14] खर[15] पुज की पसारी दसदिश मैं।
मानो घन घटा घने घन की घुमंड घिरी घोर घोख घोखिकै मिली हे भूम भ्रिस[16] मैं।
मंदर पहार गढ[17] जांही के मझार खरो चारों ओर पारावार ऐसी छबि जिसमैं।
गिने मत[18] किसमैं असंखता है तिस मैं, बिलोकि लोक बिसमैं[19], सो आयो दल
रिस[20] मैं ॥ २१ ॥

पुँज हं मतंग[21] पै पताका जिन संग धरी, सैल हैं सपंख तुंग[22] इत उत धावते।
बादित जे बाजति हैं, दीरघ जो गाजति हैं, अनिक तुरंग जल जंतु ज्यों पलावते[23]।
सांग, सेल, शकती, सुतोमर तरंग भए धुखति पलीते बड़वागनि[24] उठावते।
ग्राम चमकौर कै जहाज को समाज भर्या चाहति डुबोयो, गुर केवट[25] तरावते ॥ २२ ॥

ज़ोरावर सिंह औ अजीत सिंह बीर जुग दया सिंह आदि पंच सिंह धरि धीरजे।
मुकते सु पंच सिंह, मान सिंह, ध्यान सिंह, दान सिंह, धंना सिंह जामैं बर बीरजे।
आलम म्रिगिंद, श्याम सिंह, सो मुहर सिंह, बीर सिंह, सुक्खा सिंह, संत सिंह तीर[26]जे।
कोठा सिंह एक रंघरेटा सिंह जानीयति, एक खदासीआ मदन सिंह, बीरजे ॥ २३ ॥

---

1. नीच 2. आगे की 3. घोड़े 4. सेनापति 5. बड़ा 6. फौज 7. समूह 8. खज़ाना 9. धूलि 10. चाहते हैं 11. परवाना 12. पर्वत 13. धरती 14. मिट्टी 15. गर्दभ 16. भयानक 17. किला 18. बुद्धि 19. विस्मय 20. क्रोध 21. मतवाले 22. पहाड़ 23. भागना 24. समुद्र की अग्नि 25. मल्लाह 26. समीप

गढ मैं सुचेत भए लाखों दल देख लए बोले श्री गुबिंद सिंह सुनो बाक खालसा !
सभि को हटाइ रहे, पते को दिखाइ रहे, दग़ो[1] को बताइ रहे, शत्रुनि की लालसा'।
'सिक्ख्या को सिखाइ रहे, सुख दे लुभाइ रहे, दुख को सुनाइ रहे, जैबो लखो
काल[2] सा।
रहिबो मनाई रहे, वे रूख[3] बनाइ रहे, म्रितु ते बचाइ रहे धर्यो हठ बाल सा[4] ।। २४ ।।

कहिबो न मान्यों किन, काल न पछान्यों मन, दग़ा नहिं जान्यों लिखि दीनो ज्यों लिखाइओ।
भए अनजान, हित आपनो न धार्यो चित, रहे समुझाई निकसन एक भाइओ।
कसम कुरान की रसूल[5] बीच दीनो हुतो देखो खल नीच हूं ने दल को पठाइओ।
खालसे के कहे छोरि दुरग अनंदपुरि परी अबि भरि सकै कौन ह्वै सहाइओ ।। २५ ।।
'हिंदू जे पहारी धेनु[6] सपथ उचारी, धरि ठाकुर अगारी, बच बिप्र[7] दे पठायो है।
तैसे ही मलेछ पति ख्वाजा मरदूद पठ्यो धरम इमान दोनो हानि के दिखायो है।
अबि तो उपाइ साम, दाम, भेद, बनै नहिं, चौथे दंड बनै दल लाखों चड़िआयो है।
गीदर की मौत नहिं मरो रिपु[6] हाथनि ते करो जुद्ध गाढो जिम पूरब मचायो है ।। २६ ।।

महां नीच पापी कूर लापी[9] दग़ा कीनो जिम पलटे को लैहै पंथ, मूल दे उखारिकै।
जेतो पुरशारथ करोगे अबि मारन को तेतो राज भोगोगे जनम निज धारि कै।
कामना को पूर होहि, मिलौगे ज़रूर मोहि, 'राखिहौं हज़ूर[10] जोर बिधि निरवारिकै[11]।
जुद्ध के समान तप जग्ग को बिधान नहिं एक घटी[12] बीच दोनहुं लोक ले सुधारिकै ।। २७ ।।

आठ आठ सिंह एक एक बाही दीनी तिनै, तीस दोइ सिंह महि आयुध भे सावधान।
कोठा सिंह एक, औ मदन सिंह दोनो हूं को दीनो पौर 'गाढे रहो कीजै रिपु हेरि हान[13]।
गुलका[14] बरूद नहिं डारीए तुफंग बीच, तोड़ा देहु डांभि छांभि, छुटिहैं, न शंक[15] ठानि'।
दोनहु सुत[16] दया सिंह, संत सिंह पास राखो, प्रविशे अटारी महिं कमान बान तानि
पान ।। २८ ।।

आलम म्रिगिंद और मान सिंह दोनों बीर फिरै चारों ओर सुध सभि की रखन को।
गुरू आगे सीस दीने, कीने प्रण सभि हूं ने, मारैगे मलेछनि प्रहारैं आयु धन को।
नीर अरु अंन[17] लीनो जेतिक सो हाथ आयो खायो मन भायो सवाधान कीन तन को।
बीर रस राते श्री गुबिंद सिंह राते[18] नन, रातो मुख रोस मैं, बिलोकैं शत्रु गन को ।।२९ ।।

---

1. धोखा 2. मृत्यु 3. विमुख 4. बच्चे के हठ जैसा 5. हज़रत मुहम्मद 6. कामधेनु 7. ब्राह्मण 8. शत्रु 9. कहने वाला 10. सामने 11. दूर करना 12. घड़ी 13. बहुत हानि 14. गोले 15. शंका 16. युद्ध तक 17. खाद्य पदार्थ 18. लाल

आहन[1] मनिद ब्रिद ब्रिद होइ आइ दल दस लाख आयो नयो पूरब सु ढूके[2] हैं।
भाजे[3] लोक ग्राम उतपात को बडो बिलोकि, छोरि छोरि तूरन[4] सदन[5] कित लूके हैं।
केऊ अगवानी[6] होइ जाइकै मलेछ मिले, कारन बतावनि के, मारि ऊचे रूके[7] हैं।
चारों ओर हेल घालि आए जिस काल ढिग 'मारो मारो, लेहु गहि सूर कूर कूके हैं ॥ ३०॥

दोहरा

इस प्रकार जबि नेर[8] भा घिरे ग्राम महि आइ।
अंतर ते तबि सूरमें गोरी[9] सर बरखाइ ॥ ३१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रथे पशटम रुते **'चमकौर घेरन** प्रसंग' बरननं नाम पंचत्रिसंती अंशु ॥ ३५ ॥

---

1. मकड़ी 2. आए 3. भागे 4. घोड़े 5. घर 6. आगे 7. आवाज़ देना 8. अन्धेरा 9. गोली

अंशु ३६

चमकौर जंग प्रसंग

दोहरा

जाति जि सनमुख दुरग के सर गोली लगि घाइ।
गिरैं दड़ा दड़ तुरत ही एक बार समुदाइ ॥ १ ॥

भुजंग प्रयात छंद

गुरू जी प्रचारे[1] 'सुनो सिंह मेरे।
जबै साम दामं न भेदं सुहेरे।
तबै आयुधों पै निजं हाथ घालै[2]।
बनी बात सोई समैं यौंन टालै ॥ २ ॥

पुरा[3] तीर गोरीन ते मारि गेरो।
मिटैं न अराती[4] जबै नेर हेरो।
कराचोल काढो करो खंड खंडे।
तछा मुच्छ काटो घमंडो प्रचंडे ॥ ३ ॥

प्रभु बाक सुनिकै भए सावधाना।
करैं तान ताना तजैं चांप बाना[5]।
चले सरप जैसे बिधैं दोइ चारी।
तजैं प्रान को बीर बंके जुझारी ॥ ४ ॥

बरूदं न गोरी दुहूं नाहि पावैं।
पलीता पिखैं तांहि तोड़ा डंभावैं।
तुफंगै छुटैं नाद होवैं घनेरे।
कड़ा काड़ माची छुटी एक बेरे ॥ ५ ॥
गिरे बीर घोरानि ते भूम जाई।
गनो कैंफ[6] पीके लिटे बीर खाई।

1. कहा 2. लेना 3. प्रथम 4. शत्रु 5. बाण चलाना 6. शराब

किसू मुंड फूटै किसू तुंड तूटै ।
लगै बेग गोरी भुजा टांग टूटै ॥ ६ ।
'हलाहल'[1] बोलैं, रहै तुंड[2] मांही ।
लगे बान देही, बचैं प्राण नांही ।
गिरैं अग्र औंधे, चले पुंज आवें ।
मरे फेर पाछे नहीं को सिधावैं[3] ॥ ७ ॥
गिरेंदं तबै भीम चंदादि सारे ।
हुते ग्राम के जाट तीरं हकारे ।
लगे बूझिवे 'सिंह केते प्रवेशे ?
घने बान मारैं कि गोरी विशेशे ॥ ८ ॥
दड़ादड़ सूरे[4] गिरैं भूम मांही ।
जिते नैन देखे, कहो क्यों न तांही ?
सुने जाट बोले 'गिने हैं न कोई ।
पचासे कि चाली इते बीच होई ॥ ९ ॥
तिनो मंहि किते घाव खाए बिहाले ।
चल्यो श्रोण जातो मरैं आज काले ।
बडी बाहरी सैंन[5] पावै न पारा[6] ।
कहां होंहि गाढे अबैं लेहु मारा ॥ १० ॥
भरैं धूल मूठी किले मंहि जि पावैं ।
सभै सिंह संगे मझारे[7] दबावैं ।
कहां जंग होवै अबै लेहु मारी ।
कहां एक रत्ती कहां मेरु[8] भारी ॥ ११ ॥
सुनी भीमचंद गयो पास ख्वाजे ।
'कहां देरधारी, करो क्यों न काजे ?
बडो हेल मेलो मरै जाउ मारी[9] ।
बचे बीर जेते प्रवेशे मझारी[10] ॥ १२ ॥
हतो नांहि भावैं गुरू को गहीजै ।
अहैं सिंह जेते तिन्हों मारि दीजै ।

---

1. विजय की ध्वनि 2. मुख 3. पीछे मुड़ना 4. वीर 5. सेना 6. अनुमान 7. में 8. पर्वत 9. मरते चले जाओ 10. में

कहां बीर चाली सु चाली हतैंगे।
करो हेल लाखों सु, यांते गहैंगे[1] ॥ १३ ॥

भनै श्रूय ख्वाजा वजीदं हकारा[2]।
लहौरी बुलायो दुऊ सों उचारा।
'अनंदं पुरी महिं जथा सात मासं।
लरंते बिताए रहे आस पासं ॥ १४ ॥

इहां बी तथा बात जी मैं बचारी।
तमाशा पिखो ठाढि,[3] न्हेते न मारी।
कहां सिंह चाली छुधा[4] ते बिहाले[5]।
कहां बीर लाखों फिरैं आलबाले' ॥ १५ ॥

सुनी दोइ सूबानि ख्वाजे डराए।
समीपी समूहांनि ऊचे सुनाए –।
'बिलोको[6] कहां हेल मेलो न सारे।
बरो बीच धावो भुजां ओज धारे' ॥ १६ ॥

तिनहुंने अगारी कह्यो कोप[7] कै कै।
'पिलो सरब आगे, खरे क्यों थिरै कै ।
चहूं ओर महिं[8] हाल हूलं मचायो।
इकंबार हेला सभो नो धकाओ ॥ १७ ॥

मथैं सिंधु[9] मानों दुऊ दैंत देवं।
गिरं[10] मंदरं कोट की शोभ एवं।
गुरू श्री गुबिंदं अटारी मु श्रिंगं[11]।
थिरे तुंग थानं दिपैं ऐस ढंगं ॥ १८ ॥

जबै रौर माचा ढुके नेर आई।
हजारौं तुफंगैं छुटी धूम पाई।
लगे कंध[12] सों आन केते सिपाही।
चढे ऊपरे हाथ घाले[13] तदाही ॥ १९ ॥

तबै सिंह कोपे कह्यो आप मांही।
'करो चोल बाहो चढैं आन तांही'।

---

1. मार लेंगे 2. बुलाया 3. खड़े हुए 4. भूख 5. बुरा हाल 6. देखना 7. क्रोध 8. पृथ्वी 9. समुद्र 10. पहाड़ 11. चोटी 12. दीवार 13. डालना

छुटी बान गोरी न छूछे[1] परंती[2]।
गिरैं कंध नीचे क्रिपानैं कटंती ॥ २० ॥

पगं ऊच हौवैं गिरैं सीस नीचै।
परे कंध की मूल महिं श्रोण[3] सींचै।
कराहैं किते कोइ नीचे दबाए।
कछू जीवते प्रान हानैं गिराए ॥ २१ ॥

वडो हेल घाल्यो, गुरू सिंह झाला।
परे कंध के जाइ नीचे उताला।
अटारी चढे एक ता मैं दरीची[4]।
थिरे बीच तांके करैं शत्रु मीची ॥ २२ ॥

चौपई

वैठे तहां गुरू वीरासन। पकरे घोर कठोर सरासन।
कट ते तरे[5] तटे तन ओट[6]। कंध दरीची की तहिं छोटे ॥ २३ ॥

कट ते ऊपर जितिक सरीर। तिसै बिलोकै शत्रुनि भीर।
कलगी जिगा जवाहर जेई। झमकहिं बिदति[7] जनावहि तेई ॥ २४ ॥

तीर तु, नीरहि तीर बिखेरे। करन उताइल को तिस बेरे।
तुरत उठाइ पनच वगरावहिं। तानि कान लौ बान चलावहिं ॥ २५ ॥

इक को मारि दूसरे लागै। त्रिती चतर[8] बीधति चलि आगै।
पंचम खशटम सपतम मारि। दस लगि बीधति मारति पार ॥ २६ ॥

एक बार सर लगि दस मारे। गिरि गिरि परते जथा मुनारे।
चलहिं वहिर ते लाखहुं[9] गोरी। तकि तकि मारति गन गुर ओरी ॥ २७ ॥

सिरखंडी छंद

हला हली भट जुट्टे भडथू[10] मच्चिआ।
चढ़े कंध पर सुट्टे[11] मुंडीआ[12] हेठवे[13]।
केतिक पचि पचि हुट्टे घाइल गिरि परे।
मरिगे प्राण निखुट्टे[14] टट्टर[15] फुटिकै ॥ २८ ॥

---

1. व्यर्थ 2. पड़ती 3. रक्त 4. झरोखा 5. नीचे 6. सहारा 7. विदित 8. चौथा 9. लाखों ही 10. अफरातफरी 11. फैंके 12. सिर 13. नीचे 14. समाप्त हो गए 15. खोपड़ी

नेजे बंबलिआले[1] तुट्ट[2] न तोड़ते ।
रुंड मुंड बड ढाले लोथें[3] गुत्थीआं ।
पहुंचे बीर मुछाले नंगे खड़ग लै ।
गहि के हाथनि ढाले सनमुख आंवदे ।। २९ ।।

भिड़े भेड़ भट[4] भारे भभकैं भीखणा[5] ।
भक भक घाव भकारे श्रोणत[6] निकसि कै ।
रहिगे नैन उघारे मानो देखदे ।
लोहू बहे पनारे छित रंगीन करि ।। ३० ।।

सिर तलवाए[7] डिग्गे[8] ज्यों नट[9] वाजीआं ।
बहु लोहू पट भिग्गे खेलति फाग ज्यों ।
धाइ कंध सों लग्गे धावन[10] ते डरे ।
कितिक मार पिखि भग्गे भीरू भै करे ।। ३१ ।।

इक सनमुख ललकारे मारि बंगारदे[11] ।
इकनी खड़ग उभारे ढालनि रोकदे ।
तथा मुच्छ[12] करि डारे हाथनि पैर ते ।
बजे हज़ार नगारे चहुं दिश ओरड़े ।। ३२ ।।

जित कित धूम उतारी धूम कि धौलरे[13] ।
किधौं घटा इकसारी पसरी जहिं कहां ।
हाथ बजावें तारी जोगन नच्चीआं ।
काली कहि किलकारी खप्पर पूरिआ ।। ३३ ।।

बीर बवंजा धाए संहर[14] दारुणे[15] ।
भूत प्रेत समुदाए करति बिनोद को ।
भरि खप्पर मुख लाए श्रोणति पींवदे[16] ।
आमिख भख्ख[17] अघाए डकैं डकार ले ।। ३४ ।।

मनहुं क्रिशन बिच[18] रुक्के नंदनि संग लै ।
जरा संध दल ढुक्के चहुं दिश फिर घने ।

---

1. फूल 2. तोड़ने से भी 3. लाशें 4. बहादुर 5. भीषण ललकार 6. रक्त 7. नीचे 8. गिरे 9. बाजीगार 10. मरना 11. ललकार 12. काटना 13. ऊंचा उठता हुआ धूंआं 14. संहार करना 15. कठोर 16. पीते हैं 17. मांसाहारी 18. में

कोप करे करि कुक्के[1] कपटी कूर गन।
पान हज़ारहुं मुके[2] गोरी बान लगि ॥ ३५ ॥

म्यानहुं तेगे कढडे दमकहिं दारुणे।
मुंड कि रुडहि वड्डे[3] मोढे मुढ्ढ[4] ते।
धावैं चौंपति चड्ढे देति उत्थलिकैं।
बाढी बाढ कि बड्ढे चीरत साफ तन ॥ ३६ ॥

मनहुं गगन महिं तारे मेल सकेलि कै।
लियो चंद परवारे अनगन आइकै।
खड़ग तड़ित[5] रैबारे[6] मेलत मेल को।
द्वै दिश[7] भट किलकारे उद्धति जुद्ध ते ॥ ३७ ॥

नवनामक छंद

कुपि कुपि अति अति। कहि कहि दलपति।
पठि पठि नर नर। खड़गनि धरि धरि ॥ ३८ ॥

जित कित फिरि फिरि। पिखि पिखि[8] थिरि।
चढन चहति चित। दुरग अलप भित[9] ॥ ३९ ॥

हुइ हुइ ढिग ढिग। लगि लगि डिग डग।
गुलकनि सर खर। अरि, बपु बरि बरि[10] ॥ ४० ॥

जियनि सु हरि हरि। धर[11] पीर परि परि।
रुधिर[12] अधिक बहि। अरुण बरण[13] तहि ॥ ४१ ॥

लहि लहि डर डर। इत उत टरि टरि।
ठटक रहिति हिय। म्रितक निरखलिय[14] ॥ ४२ ॥

मिटति हटति जबि। दलपति कहिं तबि :—
'कितहि टरति अबि? लज कुल हति[15] सबि ॥ ४३ ॥

चढहु दुरग पर। भजु बल करि करि।
अलप अहहिं अरि। तुम कित लखि नर? ॥ ४४ ॥

---

1. फूकना 2. समाप्त हो गए 3. काट दिए 4. कन्धों से 5. बिजली 6. क्रोध से भरे 7. दोनों दिशाओं के 8. देख देख कर 9. दीवार 10. प्रवेश करके 11. धरती 12. रक्त 13. रंग 14. देख कर 15. सारे कुल की लाज को नष्ट करते हो

इम श्रुत सुनि सुनि। ध्रित धरि पुन पुन।
गुलकनि हनि हनि। 'हति हति' भनि भनि॥ ४५॥
खर खग कटि कटि। धरि परि लटि लटि।
झट करि सट पट[1]। भित लगि झट पट॥ ४६॥
उमडि उमडि भट। घुमंड घुमंडि घट।
वरखति सर खर। परखति नर वर॥ ४७॥
तुमल[2] समर[3] मचि[4]। रुधरनि रज[5] रचि।
करदम[6] पग गड। इम हुइ गड बड॥ ४८॥

दोहरा

कहौं कहां लग जुद्ध को भयो प्रथम की हेल[7]।
जूथ लोथ पर लोथ गुथि ढेर बरे रण मेल॥ ४९॥
श्री सतिगुर कर कारमुक[8] थिरे दरीची बीच[9]।
सर खर की बरखा करी अरि सैंकरि करि मीच॥ ५०॥
तिम ही सिंहन तुपक गहि गुलक बरूद बिहीन।
अगन पलीते पर डंभै म्रितक हज़ारहुं कीन॥ ५१॥
धरि अचरज उर सरब अरि दुरग हेरि चहुं ओर।
लोथन को जन कोट भा पसर्यो श्रोणति घोर॥ ५२॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते '**चमकौर जंग प्रसंग**' बरननं नाम खसट त्रिसंती अंशु॥ ३६॥

---

1. तत्काल 2. घोर 3. युद्ध 4. मचा 5. धूल 6. कीचड़ 7. हल्ला, आक्रमण 8. धनुष 9. मृत्यु

अंशु ३७

चमकौर जंग प्रसंग

दोहरा

पौर ठौर को आवई दौरि दौरि अरि बीर।
कोठा सिंह गुलकां हते मदन सिंह धरि धीर ।। १ ।।

नराज छंद

दुहूनं ताकिताकिकै तुफंग ठोकि गोरीआं।
अरी हज़ार ओरड़े समूह सौंह[1] छोरीआं।
लगी कितेक अंग महिं निसंग होइ भाखिओ।
प्रभुनिदेस दीजीये, विशेश हीय कांखिओ ।। २ ।।

पधारि पौर बाहरे सुदौर जंग घालि हैं।
क्रिपान काढ म्यान ते निदान शत्रु डाल हैं।
हसे क्रिपाल दे खुशी कह्यो दिखाइ हाथ को।
'प्रवेश पंज सैन बीच काटि काटि माथ[2] को ।। ३ ।।

गुरू बखान श्रूय के पयान[3] दीन सूरमे।
किवार खोलि पौर केर दौरि दौरि दूर मे।
दिखाइबे क्रिपाल को बिसाल जंग घालिओ।
बचाइ वार ढाल महिं अरीन मारि डालिओ ।। ४ ।।

प्रभू बिसाल ओजदीन[4] धाइ ओर जाहिं की।
क्रिपान श्रोण देखि भीर, धीर नाश तांहि की।
सके न झाल सामुहे मतंग हेरि शेर को।
कटंति अंग शत्रु के करंति धाइ नेर को ।। ५ ।।

---

1. सामने से 2. सिर को 3. बात सुन कर चल दिए 4. लहू की भरा हुई कृपाण देख कर उनका धैर्य नष्ट हो गया

बिलोकि दुशट जे अनिशट जान आपने[1] ।
हज़रहूं तुफंग छोरि सिंह ओर खापने[2] ।
लगी पचीस तीस अंग अंग फोर दीनिओं ।
गुरू गुरू मनंति देव लोक जानि कीनिओ ।। ६ ।।

प्रभू मुखार्गबिंद ते सराहिं जंग तांहि को ।
'इसी प्रकार और सिंह दौर जंग जाहि को' ।
खज़ान सिंह, दान सिंह, ध्यान सिंह तीनहूं ।
'हनें मलेछ वाहिरे' हुकम भाखि[3] लीनहूं ।। ७ ।।

पयान ठौर पौर केरि दौर दौर बाहिरे ।
भ्रमांइ सांग सेल को बिलोकि लोक आहरे[4] ।
परोइ गेर गेर कै बडेर ओज धारिकै ।
मनिंद शेर ह्वै समूह मारि मारिकै ।। ८ ।।

निहार आइ सामुहे अधीर हारि भाजते ।
सकोप तुंड, नैन लाल डाल शत्रु गाजते ।
कितेक लै क्रिपान आन हान हेतु बाहते[5] ।
उछाल पैर छाल के बचाइ अंग तांहि ते ।। ९ ।।

गुरू प्रताप पाइ के कलाप खापि शत्रु को ।
फिरे बिसाल सैन जंग ठानते बचित्र को ।
कितेक मास भूख धारिओ महान ही ।
रह्यो न अंस गात महिं न मास श्रोणवान ही[6] ।। १० ।।

मनिंद ओज केहरी करंति जे फिरिंत्ति है ।
क्रिपा क्रिपा निधान की जुझंति ही तरंति है ।
हज़ार ही तुफंग संग अंग फोरते ।
तऊ क्रिपान बाहते न रंच तुंड मोरते[7] ।। ११ ।

दोहरा

पंच सिंह गढ वहिर[8] ह्वै मरे मार अरि ब्रिंद ।
अपरन चौंप बिलंद भी 'हम इम करैं निकंद ।। १२ ।।

1. अपने को कष्ट में जान कर 2. मार देने के लिए 3. गुरू जी की आज्ञा प्राप्त की 4. कार्य 5. चलाना 6. मुक्त हो जाते हैं 7 फेरते 8. बाहर

चौपई

मुहकम सिंह सधीरज होई। अंग्रति देनि लेनि महिं जोई।
खुशी लई 'मैं जाउं इकाकी। पिखहु लराई निज करुना की' ॥ १३ ॥

हुकम कर्या गुरू साहिब पूरे। 'लरहि लाख सों इक सिंह सूरे।
साच बचन अबि करि दिखरावहु। बेइमान[1] गन मारि गिरावहु' ॥ १४ ॥

सुनति हुकम को बहिर सिंधारा। बजै लोह सों लोह करारा।
दल मलेछ को जलनिधि भारा। मुहकम सिंह मकर[2] अकारा ॥ १५ ॥

बर्या[3] बीच[4] इत उत फिरि तबै। हलाचली महिं प्रापति सभै।
हेलो[5] होनि तरंग बिसाले। सिंह मकर गहि खड़ग उठाले ॥ १६ ॥

पहुंचति सनमुख जिसे बंगारा। अरधो अरध चीर सो डारा।
रिस्यो सिंह मुख भीम बिसाला। समुख न होइ सकहि जनु काला[6] ॥ १७ ॥

सेले भाले सांग पहारै। तोमर दीरघ रिस धरि मारै।
फांदति, सभिन बचावति धावति। धावति, काटति, खड़ग चलावति ॥ १८ ॥

जित दिश जाति शीघ्र ते दौरि। रिपु इत उत हुइ त्यागति ठौर।
त्रिभै बीर बाको मुख लाली। शमश्र मूछ द्वै बंक बिसाली ॥ १९ ॥

रूप भयंकुर जम[7] है मानो। कराचौल के दंड पछानो।
रिपु गन मारति घाइल होवा। बह्यो रुधर बहु हरखति जोवा ॥ २० ॥

भीगे चीर शरीर सधीर। बिचरति रिपु गन महिं बर बीर।
लशकर मथ्यो सिंघ सम जबै। ख्वाजा मरद पुकार्यो तबै ॥ २१ ॥

'कहां भयो तुम को बल हार्यो। एक सिंह लाखन नहिं मार्यो।
तड़ भड़ शलख तुफंगन केरी। छुटी हज़ारों फिर इक बेरी ॥ २२ ॥

बीस पचीस लगी तबि आइ। तोर्यो फोर्यो तन सभि धाइ।
खरो मर्यो सनमुख ही गिर्यो। तनक न मुर्यो बीर रसे भर्यो ॥ २३ ॥

जुद्ध बिलोकि प्रसंग गुसाईं। निज सिख की कहि अधिक बडाई।
मच्यो तुमल संग्राम बडेरा। बरसति लोहा बहु तिस बेरा ॥ २४ ॥

इम मुहकम सिंह सुरग पिआना[8]। हिंमत सिंह साहिब सिंह ज्वाना।
लख्यो कि ज़ोर मलेछनि कीना। जंग करन ले हुकम प्रबीना ॥ २५ ॥

---

1. अधर्मी 2. मगरमच्छ 3. आया 4. में 5. आक्रमण 6. मृत्यु 7. यमदूत
8. सिधारा

पार अगारी रिपु गन आए। तिन के सनमुख तूरन धाए।
मनहुं कुलिंगन[1] गन अवलोइ। शिक्रे गए तिनहु पर दोइ॥ २६॥

सिपर खड़ग दोनहुं हथ धारे। जनु मतंग[2] खूनी दंतारे[3]।
हेल धकेल पिछेले मेले। जनु खेलति है फाग सुहेले॥ २७॥

दल मलेछ को बिसम्यो मन मैं।—या खुदाइ! क्या पौरख[4] इन मैं।
लच्छन[5] महिं प्रवेशि इक लरै। मरन त्रास को क्योंहुं न धरै॥ २८॥

जनु द्वै ग्राह[6] हिलावति जल को। तिम दोनहुं पेलति खल दल को।
चीरति अंग चलाइ क्रिपाना। रिपु को वार सिपर अगवाना॥ २९॥

करि चंचलता बीर बिसाले। इत उत बिचरति बनि मतवाले।
मारि मारि अंबार[7] लगाए। सिर, धर, कर, पग धर[8] बिखराए॥ ३०॥

किंदक दीरघ से सिर परे। कर पग कटिडंडे गन करे।
लरति बहादर दोनहुं अरे। बीस पचीसन मारति मरे॥ ३१॥

निकसे तन ते प्रान न जबि लौ। रिपु गन को संहारहिं तबि लौं[9]।
होहिं शहीद अपसरा आवैं। कहि कहि सिंह बिवान चढावैं॥ ३२॥

त्रिपत न रन ते रिपुगन हेरैं। तजि बिवान मारहिं तिस बेरैं।
दुंदभि[10] चहुंदिशि बजैं जुझाऊ। सुनि सुनि बीरन के चित चाऊ॥ ३३॥

कहैं सिंह 'अबि अवसर आछो। मारहु गढ ते बाहर गाछो।
गुर हजूर निज जनम सुधारो। खड़ग निकारहु रिपुगन मारो॥ ३४॥

इक घटका महिं लाभ बिसाले। लाखहुं बरख[11] जथा तप घाले।
प्रिथी दान असुमेध करन को। तस फल गुर ढिग जंग लरन को॥ ३५॥

माता पिता धंन तिस केरा। जनम धन करि लीन बडेरा।
महां महातम को चित लखे। गुर ते हुकम लेति गढ बिखे॥ ३६॥

वहिर जाइ दस बीस प्रहारे। लरति प्रान तजि सुरग सिधारे।
बरखति सर गोरी बहु सार। मरे अंबार, हज़ार सुमार॥ ३७॥

तबि पंचहु मुकते बर बीर। ईशुर सिंह, देवा सिंह धीर।
जथा छुधातुर शेर मिधावै। जथा बाज चिरीअन पर जावै॥ ३८॥

---

1. कलिंग 2. हाथी 3. दांतों वाले 4. शक्ति 5. लाखों में 6. तंदुआ
7. ढेर 8. धरती पर 9. तब तक 10. नकारा 11. वर्ष

तिम तुरकन पर पंचहुं गए। सैना सिंधु प्रवेशति भए।
जथा मत्त हाथी बरि जाइं। करति केल[1] जल दीह धकाइ ॥ ३९ ॥

पंचहु खड़ग चमकते दारुन। लिपटे रुधर करति रिपु मारनि।
निरभै चलहिं बीर बड मत्ते। हतहिं सु पहुंचि बीर रस रत्ते ॥ ४० ॥

जिम पंचहु पांडव बलवंते। कैरवान के दल बिचरंते।
मारे तुरक अनेक बिहाले। को तरफति, किह प्रानं निकाले ॥ ४१ ॥

तछामुच्छ करते बहु फिरे। ओरड़ भटन बिखैं पुन घिरे।
मारि सैंकरे भूम गिराए। निजस्वामी को जंग दिखाए ॥ ४२ ॥

रंचक रंचक तन कटवायो। नहिं पीछे इक पैर हटायो।
सनमुख लरति प्रान को दीने। बिसमे तुरक पिखे रण कीने ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'चमकौर जंग प्रसंग'** बरननं नाम सपत त्रिसती अंशु ॥ ३७ ॥

1. केलि

अंशु ३८

चमकौर जंग प्रसंग

दोहरा

भयो जुद्ध अतिशै प्रबल नादति तुपक कमान।
शूंकत सरप समान सर गुलकां लगि भट हान ॥ १ ॥

भुयंग प्रयात छंद

कहां बीर चाली छुधावंति भारे। कहां एक नौ लाख[1] आह हकारे।
अभूतं त्रितंतं सुन्यो देव जाला[2]। मिले एक थानं अचंभै विसाला ॥ २ ॥
कलीकाल मैं राव कैसे लरंते ? गुरू जी करामात ना सूचियंते[3]।
असंभै महां ते अचंभै बिलंदे। बिलोकैं चलैं—चाउ चीतं उठंदे[4] ॥ ३ ॥
अरूढे बिमानं पयानंति आए। जहां गैन को, खेह ते सैन छाए[5]।
अटारी बिखै नाथ को देखि वंदे। लराई बिलोकैं :—पर्यो दीह दुंदे[6] ॥ ४ ॥
तुफंगै तड़ाके, सड़ाकैं कड़ाकैं[7]। झड़ा झाड़ होगे झड़ाकैं मड़ाकैं[8]।
हला हाल हूलं हलैं हेल लोहे[9]। लगे श्रोण लालं फुले ढाक सोहे[10] ॥ ५ ॥
घने गंध्रबं सिद्ध आए अकाशा। थिरे देवता भूर होयो प्रकाशा।
ग्रिद्ध ब्रिद्धं जुद्ध वध्यो जुद्ध उद्धे। भिड़े भेड़ जोधा रिदे मद्ध सुद्धं ॥ ६ ॥
बडे कांक कंकं कई कूक कूकैं। भखैं मास सूरानि के तीर ढूकैं।
बह्यो श्रोण चाला धरा लाल होई। कसुंभी मनो चूनरी लीनि जोई ॥ ७ ॥
दया सिंह आदं गुरू पास जैके। करं जोरि दोनों बिनै भाखि कै कै।
'महाराज ! छोरो लराई अखारा। पियानो कहूं को, करीजे किनारा ॥ ८ ॥
सभै सिंह जूझे हते शत्रु भारे। मरे जुद्ध बीचं रिदै धीर धारे।
—बचै आपको देहि-चाहैं जुझारे। तजो जंग को ढंग, हूजै किनारे ॥ ९ ॥
धनी वेनती श्रूय[11] सिंहानि केरी। हसे दीन दयालं भन्यो तांहि वेरि।
'पिखो खग्ग केतं विलासं तमाशा। करो बेग ते बेइमानै[12] विनाशा' ॥ १० ॥

---

1. दस 2. हुआ 3. दिखाते नहीं 4. भर कर 5. छा रही थी 6. युद्ध 7. बंदूक की ध्वनि 8. ध्वनि 9. शस्त्र 10. अच्छा लगना 11. सुन कर 12. अधर्मी

सवैया

श्री मुख ते सुनिकै निकसे[1] तजि पौर को ठौरहि दौरि अगारी।
मोहर सिंह सु कीरत सिंह अनंद त्रिगिंद चल्यो बलि भारी।
लाल जु सिंह सु केसरा सिंह अमोलक सिंह लहे फल चारी[2]।
—ना अस औसर हाथ परै पुन जे हुइ संमत बैस हजारी— ॥ ११ ॥

हेल को मेलति नेर कर्यो रिपु पौर के ठौर को जे गन आए।
काढि क्रिपान परे तबि सिंह तछा मुछि कै पुन दूर हटाए।
फांधति जाति पहुंचिकै बाहर बीर सरीर को देति गिराए।
होति खरो अरि जो अरि कै, नहिं जीवति, मात मनों नहि जाए ॥ १२ ॥

क्या बरनों रण को तिन सिंहनि, सिंहनि ज्यों भभकार परे।
सैंकर शत्रुनि को तन गार, मिले चहुं ओरते, बीच घिरे।
एकन को झझकैं उझकैं अरु एकन के हति प्रान हरे।
श्री गुर को निज ओज लखाइ लगे बहु धाइसु श्रोण झारे ॥ १३ ॥
सेलनि, सांगनि, तोमर, तीरनि बेधि लिए इकबार गिरे।
प्रान कौ त्यागति, प्रेम ते जागति, बीरता पागति रंग खरे।
मारन चाहति, शत्रुनि गाहति, जुद्ध उमाहति सिंह मरे।
श्री गुर छोरति तीर तरा तर जो तर आवति प्रान हरे ॥ १४ ॥
नाहर खान कर्यो रण ज़ाहर[3] सिंहनि मारिकै होयो अगारी।
पाइन की करि चंचलता चहि-कोट की भीत के जाउं मझारी-।
आपनी भूर बहादरी को दिखरावति है करि कौतक भारी।
श्री गुर की तबि डीठ[5] पर्यो करि तूरनता खर तीर संचारी ॥ १५ ॥

म्यान बिहीन क्रिपान नचावति दूसर पान महिं ढाल संभारे।
दौरति एक दिवार तजी गढहूं की दिवार को जाति निहारे।
कन लौ तानिकै बान तज्यो सु अचानक जाइ लग्यो हुइ पारे।
ज्यों उडिकै सरप गयो बरमी बरिकै नहिं अंग दिखारे ॥ १६ ॥
तीछन भीछन छोर्यो निरीछति[6] छाल उछालति की लगि छाती।
पाइ पसार पर्यो तबिहूं कर महिंरहिगी करवार कंपाती।
पार पर्यों सर, शूंक गड्यो धर, यौं उथल्यो उपमा उपजाती।
वायु सु वेग बिसाल बह्यो तरु ते छिन मूल धरा पै पपाती[7] ॥ १७ ॥

---

1. निकले 2. चार 6. पैदा करना 4. सामने 5. दिखाई 6. देखना 7. उखड़ जाना

मुगले जु पठान बिलोकति थे भय पाइ महां दबके पिछवाई ।
मारदूदहि ख्वाज दिवार के सायो महिं बैठि रह्यो तन ना उकसाई ।
भट और भि होरि हिरान भए सरदार महान हन्यो सर आई ।
गन तीर तुफंग हनैं थिर ह्वै करि पैर न घालति हैं अगवाई ।। १८ ।।

ख्वाजा दुर्यो लखिकै गति तांहि हुइ गैरत खान करी चपलाई ।
कोट दिवार को आवन लाग पर्यो जहिं नाहरखां अगवाई ।
श्री गुर डीठ पर्यो तबि हूं ततकाल ही तीर लै जेह धसाई ।
अंचति छोरि दयो सर घोर गयो अरि ओर दयो उथलाई ।। १९ ।।

द्वै सरदार हते जबियौं तबि सायो दिवार को त्यागति नांही ।
काइर ह्वै थिर होति भए नहिं आइस कै सु मदान के मांही ।
और दिशा गन शत्रु बिलोकति बानन की बरखा तजि तांही ।
बेधति पंचहि सात कि नौ दस मार हज़ारहुं को बिनसाहीं[1] ।। २० ।।

केतिक सिंह मरे लरि बाहर ज़ाहर जंग दिखाइ उदारे ।
केतिक अंतर बीर निरंतर जूझति सर ब्रिंदनि मारे ।
छोरति गोरी लगै रिपु ओरी सरीरनि फेरि ज़िमीं पर डारे ।
हेलि को पावति आवति धावति प्रान गवावति पुंज जुझारे[2] ।। २१ ।।

देखि मिले उमराव[3] कहैं 'सभि ही इक बार करो बड हेला ।
कूद परो गढ़ अंतर संमुख लाखन को किम ऊपर झेला ।
गोबिंद सिंह गहि लीजहि कीजहि ओज भलो अबि वेला ।
जंग को अंत करो चलि शाहु पै लै बख शीश को हूजे सुहेला[4] ।। २२ ।।

यौं कहिकै चहूं ओर घिरे बहु बोल परे करि हेल बिसाला ।
होति कुलाहल बीर चलाचल लाखों हलाहल कूक कराला ।
छूटि तुफंग तड़ाभड़ माचति राचति श्रोण फिरे अलबाला ।
घाइल ह्वै गिरि भूम परे तरफैं तन लोटति प्रापति काला ।। २३ ।।

श्री गुरू गोबिंद सिंह बिलोकति रोकति शोक दे शत्तुनि को ।
बान समूह प्रहारति हैं वधि[5] आगे जु आवति दैं हनि को ।
लोथन पोथन ढेर गए लगि ऊपर नीचे परे तन को ।
ज्यों गिर शिंग श्रवै[6] जल को तिम श्रोन चल्यो शव ढेरनि को ।। २४ ।।

---

1. मारना 2. वीर 3. अमीर 4. प्रसन्न 5. आ कर 6. बहता है

रसावल छंद

सरं संग सूरे । करे मारि दूरे । थिरे ओट लै के । महां त्रास खैके[1] ।। २५ ।।
नहीं ओतसाहे । रिदे गरब ढाहे । बिचारी-असंभे । महाने अचंभे ।। २६ ।।
हज़ारों प्रहारैं । अंवारे निहारैं । लरैं बार थोरी । मची मार घोरी ।। २७ ।।
रिपु बीच[2] चाली । छुधा ते बिहाली–। मिले पास ख्वाजे । किते सैल राजे ।। २८ ।।
तवे सिंह ओरे । रिसे पीर ठौरे । चले ब्राज दौरे । भए शत्रु हौरे ।। २९ ।।
जहां ठौर धावैं । तुफंगे चलावैं । किले को तकावैं । चढैं हाथ पावैं ।। ३० ।।
तहां को पयाने । निकारी क्रिपानें । वने सावधाने । बिलोके रिसाने ।। ३१ ।।
परे बीर धाई । नहीं शंक पाई । बडी धूम घाली । परी हाल चाली ।। ३२ ।।
कराचोल बाहे । कटे अंग लाहे । ततंकाल डिग्गे[3] । घने श्रोण[4] भिग्गे ।। ३३ ।।
जिते[5] दोरि जावैं । तिते भाग धावैं । अरैं अग्ग्र नांही । मिले पीठ जांही ।। ३४ ।।
लिए सेल भाले । हनैं आनि जोल । किधौं तार्कि गोरी । तजे सिंह ओरी ।। ३५ ।।
रहैं दूर ठाढे । न ह्वै तीर गाढे । महां तेज वंते । बिलोकैं लरंते ।। ३६ ।।

दोहरा

इस प्रकार घमसान करि तजि गढ बाहर आई ।
लरैं प्रहारैं तुरक गन मरैं सिंह रण थाइं ।। ३७ ।।
अरध[6] सिंह पहुंचे सुरग अरध गुरू के तीर[7] ।
उभैं पुत्र रस बीर महिं चहैं लरन बर बीर ।। ३८ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'चमकौर जंग प्रसंग'** बरननं नाम अशटत्रिसती अंशु ।। ३८ ।।

---

1. खा कर 2. केवल 3. गिरे 4. लहू 5. जहां 6. आधे 7. पास

अंशु ३८

अजीत सिंह जुद्ध प्रसंग

दोहरा

श्री अजीत सिंह वीर वर पिखि संग्राम ब्रितंत ।
चंह्यो आप निकसन तबै गुर को सुत बलवंत ।। १ ।।

साबास छंद

मनहि बिचारहि ।—तुरक बिदारहिं ।
थिरहिं न अंतर[1]। लरहिं निरंतर ।। २ ।।
तबि प्रभु तीरहि[2]। पहुंचि सधीरहि ।
सतिगुर नंदन । करि अभिबंदन ।। ३ ।।
रहि कर[3] जोरहिं । पितहि निहोरहि ।
सुत दिश नैनहि । करि, कहि बैनहिं ।। ४ ।।
'किम अभिलाखहु ? सच बच भाखहु' ।
सुनि करि वीरहि । कहि धरि धीरहि ।। ५ ।।
'निज कुल रीतहि । चित महिं प्रीतहि ।
अबहि समैं शुभ । लखि मन मैं प्रभु ।। ६ ।।
—धरम निबायहु—। मुख फुरमायहु[4] ।
तुरक समूहनि । करि करि हुहनि ।। ७ ।।
करहुं हटावन । गति रणथावन' ।
सुनि बिकसे गुर । कहहिं 'भले उर ।। ८ ।।
हनि तुरकानहिं । करि घमसानहिं ।
शुभ पद पावहु । मम मन भावहु ।। ९ ।।

---

1. अंदर 2. पास 3. हाथ 4. कहा

सुजसु बिथराहु । अरि गन मारहु ।
सिख लिहु संगहि । हित अति जंगहि ॥ १० ॥

दोहरा

सदा धरम छत्रीन को चल्यो सनातन आइ ।
तुझ सम बय अभिमन्यु की लर्यो जगत जस गाइ ॥ ११ ॥
सनमुख रन मारन मरन, अरिन पीठ नहिं देन ।
शुभ पद को परलोक महिं अवनी महिं जस लेन ॥ १२ ॥

नराज छंद

बली अजीत सिंह जी निखंग अंग संग है ।
बिभीखणं निरीखणं सुतीखणं खतंग[1] है ।
क्रिपान हेम मुशट सों कुंदड लै कठोर को ।
धरे समूह आयुधानि दीरघाइ घोर को ॥ १३ ॥
दई पिता प्रदच्छना सु बंदनाहि ठानिकै ।
अनंद ते बिलंद नैन भे प्रफुल्लमानि कै ।
चल्योसु पौर ठौरको जथा म्रिगिंद भै विना ।
प्रबीर संग पंच भे रजाइ[2] मानि कै मना ॥ १४ ॥

सवैया

आलम सिंह धरे सभि आयुध जाति जिसी रजपूत भलेरी ।
खास मुसाहिब[3] दास गुरू को पास रहै नित श्री मुख हेरी ।
बोलनि केर बिलास करैं जिह संग सदा करुना बहुतेरी ।
आइस ले हित संहर के मन होइ अनंद चल्यो तिस बेरी ॥ १५ ॥
गुर नंदन संग अनंदति अंग जवाहर सिंह चल्यो भट भारी ।
जिम आवति ब्रिंद मलेछचले, तिन संमुख रोक बिलोक अगारी ।
सर तोमर छोरि तुफंगन तूरन गेरि दड़ा दड़ भूम मझारी ।
मुख बोलति श्री गुरदेव फते कहु त्रास बिहीन लए अरि मारी ॥ १६ ॥

---

1. भयानक 2. आज्ञा 3. साथ रहने वाला

दोहरा

ध्यान सिंह उर ध्यान सिंह गुर बर्यो अरिनि महिं दौरि।
ठौर ठौर हलचल परी गुर सुत ते बड रौर[1] ॥ १७ ॥
सुक्खा सिंह तुफंग लै नहिं बरूद गुलका[2] ना।
तोड़ा मोड़ि कला जड्योदसत[3] खां करि पान ॥ १८ ॥
ताकि दुशमन के गात[4] को तूरन कला झुकाइ।
डंभै पलीता धुखति है मारति देर न लाइ ॥ १९ ॥
बीर सिंह बर बड बीर करि बहादरी भूर[5]।
इत उत हनै मलेछ गन सूर गरूरनि[6] दूर ॥ २० ॥

छप्पय छंद

गुर सुत[7] उर[8] महिं कुपति[9], कुपति बहु हनि करे डारे।
ऐंचति[10] निठुर कमान मान खानन निरवारे[11]।
गरते बीर तुरंग रंग श्रोणति जिन केरा[12]।
तीछन बान प्रहार हारदे त्रास बडेरा।
रिपु सिरर[13] जेह बखतर कवच पेटी आदिक फोर करि।
हति प्रान हरी फन[14] के तुरत पार परति, गडि धरनसर[15] ॥ २१ ॥
रुध्द्र रूप ते रुद्र संग प्रथमादि लिये गण।
बीर बवंजा मुदति जोगणी जंग भूत गण।
हड़ हड़ हस हड़ उठति लुठति[16] घाइल तड़फते।
फिरें भूत बैताल ताड़ ताड़ीन बजंते।
बड काक कंक की कूक ह्वै आमिखभखि श्रोणति पियति।
रण खेत भर्यो डाकन डिगर[17] डकरावति[18] त्रिपतैं वियत[19] ॥ २२ ॥
श्री अजीत सिंह बीर धीर धरि तीर प्रहारें।
कौतक होति उदोति[20] आइ नभ देव निहारें।
हुइ पदाति असवार तिने हति तूरन डारें।
इम पठान अरि मुगल परेजनु पुंज मुनारे।
रण खेत भयो दारुण महां लोथन पर लोथैं गिरी।
बहु धावन के भक भक रुधर[21] हुइ सरिता तबि चलि परी ॥ २३ ॥

---

1. शोर 2. गोले 3. हाथ 4. शरीर 5. भरपूर 6. अभिमान को 7. पुत्र 8. मन 9. क्रोधित 10. खींचना 11. दूर करना 12. का 13. बरछी 14. विरोधी 15. धरती 16. लुढ़कना 17. झोटी 18. पीना 19. डकारना 20. उदय होता है 21. खून

'या खुदाइ बड अजब वहिर के मरत हज़ारे।
गिरहिं दड़ा दड़ तुरक अलप सिंहनि करि मारे।
बीते केतिक[1] जाम मरति नहिं मिलति, न हारत।
वधि लशकर महिं आइ एक इक लरति सुमारति'।
मलि कहति बात इत्यादि बहु लशकर विसमय हुइ रह्यो।
इम[2] फिरे सिंह गुर सुत सहति गाह[3] गरब गन को दह्यो ॥ २४ ॥

ज़ेरदसत चित रिस्यो[4] दखि अपनी लघुताई।
हेला घाल्यो उमडि बोलि बहु धूम मचाई।
चली तुपक अनगिनति लगी सिंहन तन आई।
भीजे रुधर सरीर, चीर लाली उघराई।
मिलि हथा वत्थ गिर गिर परति तुंड मुंड फोड़न करहिं।
पुन फरक परति दुह दिसन महिं त्रास धरति इत उतट रहिं ॥ २५ ॥

करहि शीघ्रता अधिक गुरू सुत सर बरखावैं।
वेधति दुशमन देहि गिरे धरि पर तरकावै।
तकि तकि गुलका हतहिं, नहीं को लागन पावैं।
करहि चलाकी चरन चहूंदिश चितवि[5] चलावैं।
रनखेत बिखै इतउत फिरति फांधति दौरति शत्रु हति।
सभि करति बिलोकनि जंग को होति अचंभै महित[6] चित ॥ २६ ॥

निखुट्यो[7] तबै निखंग बान सभि दिए चलाई।
कोप न होयो शांति हेरि दुशटन खुटिआई।
गही सांग[8] कर बिखै दौर करि अंग परोए।
सीख[9] मास जिस वेधि अगनि पर भुंजति कोए।
गन मारि मारि गेरति फिरति फोरति छाती तुंड अरि।
इम पाई धूम रण भूमी महिं घाइल घूमति झूमि गिरि ॥ २७ ॥

पिखि[10] तुरकन करि ज़ोर आइ चहुं फेर, घेर लिय।
मारि मारि करि रौर सभिनि तबि शसत्र रहत किय।
पंचहुं सिंहन देखि संग गुर सुत को गहि गहि[11]।
पहुंचति इति हथ्यार रिपुनि की दिश को लहि लहि।

---

1. कितने ही 2. इस तरह 3. समूह 4. क्रोधित 5. देख कर 6. अधिक 7. मरना 8. बरछी 9. सिर 10. देखना 11. पकड़-पकड़ कर

कर कराचोल सांगन धरे अधिक शीघ्रता धरति रण।
जनु त्रिभै[1] केहरी फिरति है मसत दुरद[2] के देखिगण ।। २८ ।।
तवि अजीत सिंह वीर सांग धरि बिचरंता।
मनहुं घटा बिच[3] दिपहि चंचला[4] चमक सुभंता।
जिसके मारि धमाइ शीघ्र ही तिस उथलंता।
लेति निकास, प्रकाश महांबल करि बलवंता।
जनु कैरवान महि रुक गयो चक्राव्यूह भेदनि कर्यो।
अभिमन्यु शत्रु गन छेद करि छिन छिन छत्रिनि[5] दर्यो ।। २९ ।।
इकभट बखतर[6] सहत मार तहि सांग धसाई।
रही न अटकी कहूं ओज[7] ते पार पराई।
लग्यो निकासन पुनहि तूटिकरि अरध रही कर।
ततछिन तिस को डारि, परी कट नागन सी धर।
बहु डसि डसि शत्रु निबेर करि आरध रही बीचहि बरी।
गन दुरजन ढिग हुइ बार करि तोमर तीर तरातरी[8] ।। ३० ।।
लगे अंग घाव रुधावहि दीरघ चाला।
भीज्यो सरब शरीर चीर रंगे ततकाला।
मनहूं तुरत रंगरेज रँग करि पट[9] पहिराए।
शरोण पिख्यो हरखंति-आज ध्रम छत्री पाए।
तिह छिन चंहुदिशि रिपु लवे खड़ग म्यान ते काढ लिय।
गन काट काट गेरे धरनि तठा मुच्छ तन तनक[10] किय ।। ३१ ।।
उते सिंह लरि पंच सैंकरे मार मरो रण।
इत अजीत सिंह रुप्यो खड़ग ते काटि रिपुनि गण।
रुधर त्रिखे पर रहे मनहुं श्रम ते सुपताए।
लाल बिछौन बिछाइ महां छवि ते सुख पाए।
कहि लगौं बरन करि जुद्ध को लिखौं ग्रंथ बधते डरति।
जिम कर्यो गुरू सुत ओज नहि मार्यो किसते मरति ।। ३२ ।।

---

1. शेर 2. हाथी 3. में 4. बिजली 5. क्षत्रिय 6. कवच 7. ज़ोर से 8. अस्त्र का नाम 9. कपड़े 10. थोड़ा

जिस दिश[1] परिहै धाइ अरैं नहिं, भाजति[2] हैं अरि ।
जतनु करहिं समुदाइ—हृतहिं किम—फिरति शीघ्र करि ।
गुलका लगहि न कोइ खड़ग लौ पहुंचि न देतं ।
मारि मारि करि बीर कर्यो संहर वहुखेतं[3] ।
कर कराचोल जवि टूटि गयो जमधर लई निकासि कर ।
इक हुतो पालकी के बिखै दूरहिं देखति द्रिशटि धरि ।। ३३ ।।

अनवर खान नवाब, तांहि की दिश तवि दौरे ।
करी शीघ्रता अधिक जाइ पहुंचे तिस ठौरे ।
उदर[4] पुशट में हनी ओज ते बहु झकझोरे ।
जित कित ते रिपु आइ घेरि लीनसि चहुं ओरे ।
इम कीन जुद्ध गन शत्नु कृति लोप भए ततकाल रन ।
सभि दिखति अचंभै[5] हुइ रहे कहां गयो कित छप्यो हनि ।। ३४ ।।

दोहरा

इस बिधि[6] गुर नंदन लर्यो जिह अजीत सिंह नाम ।
सुजस[7] जगत महिं प्रगट भा पुन पहुंचे हरि धाम ।। ३५ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते 'अजीत सिंह जुद्ध प्रसंग' बरननं नाम एक उनचत्तवारिंसती अंशु ।। ३६ ।।

---

1. दृश्य 2. भागते हैं 3. रणभूमि 4. पेट 5. विस्मय से 6. तरह 7. सुयश

अंशु ४०

श्री ज़ोरावर सिंह जंग प्रसंग

दोहरा

बहुर हेल को करति भे चहुंदिश ते समुदाइ।
तबि ज़ोरावर सिंह जी ले गुर पिता रज़ाइ[1] ॥ १ ॥

चौपई

पंच सिंह निकसे तिन संग। जिन चित चाउ[2] करन को जंग।
प्रथम तुफंगनि की करि मार। मार मार करि परे जुझार ॥ २ ॥
बहुर तड़ातड़ छोड़ि तमाचे। सति गुर को रुख पिखि रिस[3] राचे।
अपर[4] उपाइ न को बनि आवै। प्रभु सनमुख हुइ सीस चढ़ावैं ॥ ३ ॥
म्रिग[5] झुंडनि महिं केहरि[6] फिरै। न्रिभै बीर किह त्रास न धरैं।
—प्रान बचैं—इह लालचछोरा[7]। मारहिं अग्र परैं रिपु ओरा ॥ ४ ॥
यौं गरजति हैं सिंह जुझारे। धिरैं न रिपु इत उत दैं टारे।
पहुंचि जाहिं पर शसत्र चलावहिं। इक ते द्वै करि धरनि गिरावहिं ॥ ५ ॥
मार मार करि तुरक हज़ारों। उत इत फिरि घेरहिं दिश चारों।
तऊ, मरन की शंक न जिन को। कहां सूरता गुन गन तिन को ॥ ६ ॥
पहुंचहि सनमुख जिस कर झारहिं[8]। गुर प्रताप ते ततछिन मारहिं।
छुधिति श्रमति दुख तिह छिन टारे। ओज तेज गुर दयो उदारे ॥ ८ ॥
ज्यों नट उछलति वाजी पावति। त्यों बल ते एकल चल जावति।
जबि लग प्रान तजे नहिं रन मैं। तबि लग हतैं रिपुन केतन महिं ॥ ८ ॥
मारे जाहिं मरन लगि जेते[9]। करि पुरखारत[10] हानहिं तेते।
पंचहु सिंह सु बीर मुछाले। लरि करि बहुतनि के घर घाले ॥ ९ ॥
जल को मच्छ हलावहि जैसे। हलाचल लशकर महिं तैसे।
मिलि शलखैं गन तुपक चलाई। इक कै बहु लगि लगि गिर जाईं ॥ १० ॥

---

1. आज्ञा 2. इच्छा 3. क्रोध 4. दूसरा 5. हरिण 6. सिंह 7. बच्चा 8. झाड़ना 9. जितने 10. पुरुषार्थ

ज़ोरावर सिंह ज़ोर बिसाला। बैस[1] किशोर दिपति बड भाला।
देख्यो जिम भ्राता को जुद्ध। तैसे करनि लग्यो बड क्रुद्ध ॥ ११ ॥

पिता प्रसंन होइं जिम हेरि[2]। तथा शीघ्रता करहि बडेर।
निठुर कुदंड प्रचंड महाना। तीखन बान तान ते ताना ॥ १२ ॥

दोहरा

श्री जोरावर सिंह जी ज़ोरावरी[3] दिखाइ।
मारति सुभट तुरंग को धरन देति उथलाइ ॥ १३ ॥

ललितपद छंद

जित को जाइ हलाहल होवै 'इहु आवति लिहु मारी'।
सौ दो सै उमडति गहि आयुध नगन खड़ग कर धारी ॥ १४ ॥

सेले संगनि तोमर तीरनि अधिक छुटाइ तुफंगा।
करहिं जतन बहु घेरन को मिलि इत उत धाइ निशंगा[4] ॥ १५ ॥

लाखहुं शसत्र चलति है इस बिधि जनु बल ते घन वुट्ठै।
गोरी तीर तरातर बरखति शबद बडो तबि उट्ठै ॥ १६ ॥

हाथ देइ प्रभु राखति सभि ते फिरति बीच उतलावा।
खड़ग निकासे बाढति शत्रुनि ज्यों लागी बन दावा[5] ॥ १७ ॥

छिन महिं निकस जाति हैं विच ते दुती दिशा जब जावैं।
खड़ग कड़ा कड़ मार मचै जबि महां रौर तबि पावैं ॥ १८ ॥

जनु खेलति ह्वै बालक संगे अति अनंद उमगंते।
जीत जाति हैं जित कित ह्वै कै पुन धावति चपलंते ॥ १९ ॥

खड़गन की चहुं दिशा छांव भी बाहति हैं चहुंफेरे।
पटेबाज[6] की बिद्या करि करि घात[7] करे करि गेरे ॥ २० ॥

बही रकत की सलिता[8] जित कित लोथनि के अंबारा[9]।
कहूं कि सिर किंदम[10] सम रोढति कर पग डंडन मारा ॥ २१ ॥

ग्रिद्ध ब्रिद्ध भक्ख्यनि करि आमिख बैठी किंतिक[11] न डोलैं।
अंतर सूरन बुटीआं उछलति यां ते चींकति बोलैं ॥ २२ ॥

काक कंक की कूकैं कूकहिं जंबुक बोलि सुनावैं।
ऐंचति लोथन आमिख काटहिं रुधर पान पल खावैं ॥ २३ ॥

---

1. आयु 2. देख करके 3. वीरता 4. निस्सन्देह 5. जंगल की आग 6. निपुण 7. चोट, प्रहार 8. नदी 9. ढेर 10. गेंद 11. ज़रा भी

भूत पिशाच प्रेत डकरावति श्रोणत मास अघाए।
खप्पर भरैं जोगनी त्रिपतैं गुरबिन कौन रजाए ॥ २४ ॥
चहुंदिशि दुंदभि बर्जहिं घनेरे पटहि[1] ढोल शहिनाई।
बिसमहि भए देखिकरि रण को तुरकन दल समुदाई ॥ २५ ॥
किंनर गंध्रव सिद्ध अपसरा हेरि हेरि[2] हैराने।
कहां छुधति नर चत्त्वारिसहि कहि दस लख बलवाने ॥ २६ ॥
इतो जंग मंड्यो रिपु मारनि मिरतक करे हज़ारों।
कितिक[3] समो बीत्यो इन लरते डेर लगे दिश चारों ॥ २७ ॥
ज़ोरावर सिंह बड ज़ोरावर करि करि जोर दिखायो।
मारि हज़ारों रिपु गन को पुन जंग बीत्र लुपतायो ॥ २८ ॥
देखि रहे दुशमन दस दिश को भयो आद्रिशटि तदाई।
जुग नंदन जबि जूझे रण महिं सिंहन अरज़[4] लगाई ॥ २९ ॥
'महांराज ! अब देखति क्या हहु निकसहु तजहु अखारा[5]।
दगा दुशट नै कीनसि प३रन कै रन करन संहारा ॥ ३० ॥
हमो सारखे[6] सिख लच्छ होवहिं कुशली तुमहिं सरीरा।
घने जंग घाल्यो घमसाना लाखहुं हति करि बीरा ॥ ३१ ॥
जिते वहिर निकसे लरिबे हित अंत समैं सभि होए।
लाखहुं दल देखहु अबि उमडे चहें दुरग पर ढोए ॥ ३२ ॥
सुनि सतिगुर बिकसे श्री मुख ते दिखहु, तजैं हम बाना'।
धर्यो धनुख पर कूदति त्याग्यों गमन्यो गाज समाना ॥ ३३ ॥
अग्र वधे आवति जे गढ़ को गिरे नरन उथलै कै।
दस हज़ार को प्रान अंत भा रहे मनो सुपतै कै ॥ ३४ ॥
विसम[7] भए ठटके दल अरि के अग्र न को भट होवा।
महां गज़ब[8] को लग्यो तमाचा अद्‌भुत अतिशै जोवा ॥ ३५ ॥
दूर दूर करि फरक थिरे सभि कहैं निकट नहिं जावो।
निकट ढुके ततकाल प्रान हति नाहक[9] जान गवावो ॥ ३६ ॥
आपे निकस परैं ह्वै हति अबि देर न जानहुं कोई।
बीत गयो लरते दिन सारो आनि जामनी[10] होई ॥ ३७ ॥

---

1. बजती हैं 2. देख-देख कर 3. कितना ही 4. विनय करना 5. अखाड़ा 6. जैसे 7. हैरान रह गए 8. आश्चर्य 9. व्यर्थ ही 10. रात्रि

तिमर बिखै दिहु दूर तलावा[1] घेर रखहु चहुं घाई'।
इम मत करिकै हटक रहे तबि ठानि अधिक तकराई ॥ ३८ ॥
भै धरि निकट न होवन पावैं, दूर दूर कर घेरा।
बिसमावति बातन को करिके 'इम गुर हिंद बडेरा[2] ॥ ३९ ॥
लाखहुं लशकर लरि अटकाए सुने संग नर चाली।
कई हज़ार लाख लौ लखीअति घाइल मरे बिसाली[3] ॥ ४० ॥
इत्यादिक बहु भनै[4] वारता, बैठि रहे, को ठांढे।
गहि आयुध सवधान होइ करि फिरति चहूं दिशि गाढे ॥ ४१ ॥
अरध निशा को गमनति आए सकल दिवस लरि हारे।
कुछन चल्यो बस श्रमति भए सभि भूख त्रिखा तन धारे ॥ ४२ ॥
अपर कौन महिं शकति इती करि लाखहुं संग लराई।
सुकचति रहे न अज़मत[5] करते कली काल वरताई[6] ॥ ४३ ॥
हुकम अकाल पुरख[7] को मानति करामात कलि काला।
नहिं दिखावनी नीकी[8] मानहिं, राखन गोप बिसाला ॥ ४४ ॥
दस हज़ार इक बार मारकरि पुन न कीनि दल नाशा।
राग द्वैख ते हरख[9] न शोका मन समता जिस बासा ॥ ४५ ॥
सभि कुटंव ते भए निरालम शोक न लेश उपावा।
सरव कला समरथ गुर पूरन चहैं सु लेहिं बनावा ॥ ४६ ॥
अजर[10] जरन अस गुर बिन किस महिं छिमा धरम अपराधू।
ब्रहम ग्यान आवसथाकी गति दिखराई शुभसाधू ॥ ४७ ॥
धन्नं धन्नं सतिगुर की महिमा कौन भेव[11] अह जानै।
सरब्रग्यानि की गूढ बारता किम अलपग्य[12] बखानैं ॥ ४८ ॥
बार बार सिंहनि के कहिबे निकसन की करि त्यारी।
चहैं - खालसे दें अबि टीका घाली घाल उदारी— ॥ ४९ ॥
इति श्री गुर प्रताप ग्रंथे पशटम रुते **'श्री ज़ोरावर सिंह जंग प्रसंग'** बरननं नाम चतवारिंसती अंशु ॥ ४० ॥

---

1. गश्ती फ़ौज का पहरा 2. वड़ा 3. बहुत 4. कहते 5. बढ़ाई 6 प्रत्यक्ष कर दी 7. परमात्मा 8. भली 9. हर्ष 10. जो बूढ़ा न हो 11. भेद 12. अल्पज्ञ, अल्प बुद्धि

अंशु ४१

चमकौर निकसन प्रसंग

दोहरा

संध्या भई विभीखना[1] बोलति ब्रिद गुमाइ[2]।
पंच बीर गुर तबि तिन कवि नाम सुनाइ ॥ १ ॥

सवैया छंद

दया सिंह अरु धरम सिंह जी मान सिंह तीजो बर वीर।
संत सिंह, संत सिंह पंचम, तिनहुं बिठायो दे करि धीर।
गुरता अरपनि लगे खालसे पंच सिंह तहिं सोहिं शरीर।
'पंचहुं महिं नित वरतति मैं हौं पंच मिलहिं से पीरन पीर ॥ २ ॥

गुर घर की मिरजादा पंचहु पंचहुं पाहुल[3] पूरब पीन।
हुइ तनखाहीआ[4] बखशहिं पंचहु, पाहुल दें मिलि पंच प्रबीन।
लखहुं पंच की बड बडिआई पंच करहिं सो निफल न चीन।
भोजन छादन पंचन अरपहिं अरज़ करहिं तिन बांछति लीन' ॥ ३ ॥

इम पांचन की महिमा कहिकै तीन प्रक्रमा फिरि करि दीनि।
अरपे शसत्र जिगा[5] अर, कलग़ी निज कर ते सिर बंधनि कीनि।
शसत्र गातरे तबि पाहराए कट कसाइ करि विलम विहीन।
श्री वाहिगुरू जी का खालसा फते वाहिगुरू जी की चीन ॥ ४ ॥

पंचहुं सिंहनि हाथ जोरि कहि :—'रावरि[6] चरनन अरपे सीस।
हम जैसे तुम कहु जन लाखहुं हम क तुम एकै जगदीश।
ब्रिद क्रिपाल क्रिपा करि तारे राम चंद जिम कानन कीम[7]।
जिम तुम बडे बडी बडिआई कौन सकै लखि सभि गुन धीश ॥ ५ ॥

इम सुनि श्री मुख ने फुरमायहु[8] 'हतन रिपुन को बनि सवधान।
तरकश भरे परे जो हेरहु आने खच्चर पर गन बान।

1. भीषण 2. गीदड़ 3. अमृत 4. अपराधी 5 कलग़ी 6. तुम्हारे 7. वदन्र
8. कहा

बरखा करहुं चार हूं ओरन मुरचाबंदी महिं तुरकान ।
ले ले आडि[1] न टिके बडे बरि जे दीखति से कीजहि हान ।। ६ ।।
अरे रहो गढ महिं तुम दोनहुं हम निकसहिं सभि के बच मानि ।
तीनहुं सिंह संग रहिं हमरे दया सिंह इक बुद्धि महान ।
इन करने हैं कारज केतिक देश विदेशनि महिं चलि जान ।
नौरंग को इक रंग रहै नहिं, पठि इस को हम करिहै हान ।। ७ ।।
मान सिंह वड बीर धरम सिंह' इम कहि करि उर आनद धारि ।
दूर दूर लगि जंग परे म्रितु होति पुकार हज़ार सुमार[2] ।
कई हजारन कई तलावैं[3] फिरैं चौगिरदे धौंस धुंकार ।
कई हज़ार हेल को उमडे जथा चंद उडगन[4] परवार ।। ८ ।।
अंधकार महिं उदति निसाकर[5] खिरी चांदनी चहुं दिश चार ।
कर्यो विलोकन जित कित लशकर फेल पर्यो जन पारावार ।
धुखति पलीते बड़वा लाटन, बाजी नक्क कि नेजे मार ।
गिर मैनाक दुरग सम लखीयति इम सतिगुर चहूं ओर निहारि ।। ९ ।।
पंचहुं महिं कलग़ी किह दीनसि सो निरनै सुनीऐ मन लाइ ।
संत सिंह खत्री सिख शुभ मति थाप्यो पंचहुं महिं बडिआइ ।
तिस को गुरता अरपन कीनसि प्रथम खालसे महिं तिन पाइ ।
शसत्र बंधाइ बिठाइ अटारी गुरू फते बोले हरखाइ ।। १० ।।
कितिक कहति संगत सिंह बंगसी बंगस देश बिखै ते आइ ।
तिस को कर्यो सथापन तिस छिन गुरता दई जिगा पहिराइ ।
सतिगुर के सिख दोनहुं गुरमुख तिन महिं कोऊ थप्यो बनाइ ।
तिस पर बाद[6] नहीं कुछ बरनहुं के लिहु चरन मनाइ ।। ११ ।।
सुनहुं कथा आगे जिम बरती चहुंदिशि धुनि दुंदभि समुदाइ ।
कित दिशि चाहति हेल घालिबे कित दिश मुरचे को निकटाइ ।
कूक पुकारैं केतिक दौरे हलाहूल ते रौर उठाइ ।
डरति निकटि को पहुंचिन सक्कई तीरन ते मरि जाइ ।। १२ ।।
सावधान बनदेति तलावा दुंदभि आगे बजति चलंति ।
छुटहि तुफंग खतंग किले दिशि पौर तुरंगम शबद उठंति ।
जवि को दस हज़ार इक सर सों भार्यो पर्यो न अग्र वधंति ।
वहुर जामनी समै बिलक्यो निज निज थान थिरे डरपंति ।। १३ ।।

1. आड़ ले कर 2. संख्या 3. प्रहरी 4. तारे 5. चन्द्रमा 6. विवाद

करहिं प्रतीखन—हुइ भुनसारे गढ पर हेला करहिं उदार।
मरे सिंह कुछ थोरे अटके लाखों लर लशकर संहारि—।
इम सभि थाप रहे थिर ह्वै करि श्रमति भए तन आलस धारि।
गुरू जंग को करहिं सराहनि 'बडो बहादर बहु हुशीआर'॥ १४ ॥

इत सतिगुर अर पंचे सिंहनि तीर तुफंगनि करहिं प्रहार।
निकट दिखति कै हतहिं तलावे लगि लगि गिरहिं तुरंग सवार।
त्रिपति न होति जंग कहु करि करि रण प्रिय शत्रुनि गन दे हार।
आटण परे अंगुशट अंगूरी[1] ऐंचति पनच ओज को धारि॥ १५ ॥

तजे हज़ारहुं सर बरखाए पुन पंचहु सिंह बिनती कीनि।
'निकसहु श्री प्रभु! समो भलो अबि हठ को तजहु करे रिपु हीन।
देखहु सगरे सिंह गए खपि इक रावर[2] के पंथ अधीन।
जहां थिरहु पुन रचहु हज़ारहुं थिरहि खालसा जगत प्रवीन'॥ १६ ॥

इत्यादिक बहु बार कह्यो सभि हाथ जरि सिर रहे निवाइ।
क्रिपा द्रिशटि पिखि बिकसे सतिगुर 'रण मारणि मरणो बन आइ।
पंथ होनि की सोच न धरीअहि क्रिपा अकाल कालका माइ।
प्रथम खालसे को बच मान्यों तजि अनंद पुरि बिलम[3] न लाइ॥ १७ ॥

अबि हम क्यों नहिं मानहिं कहिब मम हित त्यागे सिक्खनि प्रान।
तुम दोनहुं त्यागहु तत सर खर[4] कबहुं तुफंग छोरि करि हान'।
इम कहि करि अरू थापी दे करि दोनहुं बंके बीर महान।
गुर समसर बय, शमस गुरू सम, परे दुर ते सम पहिचान॥ १८ ॥

हाथ जोरि गुर चरन कमल पर सिर को बार बार तबि लाइ।
भए सुचत मझार अटारी तूरन तीर तुफंग चलाइ।
उतरे आप क्रिपाल तरे कहु तीनहुं सिंह संग निज ल्याइ।
पौर ठौर[5] की ओर न गमने द्वार अलप जिस प्रविशें आइ॥ १९ ॥
पिछवाई सो सकल घरन ते सने सने तहिं गे भगवन।
तकरे तहां किवार असंजति सांकर दिढ कै कुलफ महान।
देखि दया सिंह कर ते खोजे नहिं निकसन को द्वार दिखान।
वाक कह्यो 'गाढो इह मुंदति[6] कित कुलीद अबि पय्यति पान॥ २० ॥
सांकर कुलफ पीन दिढ लोहा बल ते नहिं टूटहि लखि लीन।
बडे पौर के निकट मोरचे ढुके हज़ारहुं आलस हीन।

1. उंगली 2. तुम्हारे 3. देरी 4. तीक्ष्ण 5. जगह 6. बन्द करना

ढहै भीत दर नयो बनावहिं लगहि बिलम लिहु रावर चीनि ।
हुकम जथा फुरमावन[1] करिहो तथा कार हम करहिं सु चीन ॥ २१ ॥
सुनि करि श्री सतिगुर तिस छिन महिं बाम[2] चरन की ठोकर मार ।
तोर्यो कुलफ छोर दई सांकर निकसन को ह्वै कै तबि त्यार ।
तीनो सिंहन सन फुरमायहु 'इह तारा तुम लेहु निहार ।
हम ते बिछरहु पंथ न पावहु तनि गमनो इत को ध्रिति धारि ॥ २२ ॥
करहु सेध इस तारे दिश को हम को खोज लेहु तित जाइ ।
राति बिखैं जे मेल न होवै भई प्रभाति मिलहु तबि आइ ।
चिंत न करीअहि त्रास न धरीअहि खेह रिपुन की आंखन पाइ ।
परहु न द्रिशटि, अनिशटि नशट हुइ, प्रापति इशट बरिशट सदाइ' ॥ २३ ॥
इत्त्यादिक सभि भेद बतायो धरम सिंह ते दर खुलह्वाइ ।
ताकी अलप किवार उघारे निकसे प्रथम प्रभू हरखाइ ।
सिंह तीन पशचात वहिर भे सने सने त्रासनि बिसराइ ।
लशकर[3] पर्यो जहां कहिं देख्यो धुखहिं पलीते तुपक चलाइ ॥ २४ ॥
श्री गुर गोबिंद सिंह हठीला धनुख कठोर घोर कर लीन ।
करे निरीछन ईछन ते सर तीछन भीछन आछे बीन ।
तरकश भर्यो कर्यो कट कसिबो धर्यो खड़गखर जमधर चीन ।
पेश कबज़ धरि जुगल[4] तमांचे कमर कसा बहुकीन प्रबीन ॥ २५ ॥

दोहरा

शसत्र बसत्र बहु मोलके दिपति प्रभू कीक्रांत ।
जबर जवाहर जेवरनि लाखहुं के अवदाति ॥ २६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते '**चमकौर निकसन प्रसंग**' बरननं नाम एक चतवांरिसती अंशु ॥ ४१ ॥

---

1. फरमाना 2. बायाँ 3. सेना 4. जोड़ा

अंशु ४२

श्री गुर निस प्रसंग

दोहरा

परखा लघु सो उलघ करि खरे भए बलवंत।
पुन सिंहन के संग इम बोले श्री भगवंत ।। १ ।।

सवैया छंद

"अबि हम रौरा[1] चाहति पायो गहि शसत्रनि होवहु सवधान।
सुधि को दे करि सगरे लशकर उलंघहिं डेरे करहिं पयान[2]'।
यौं करि ऊची धुनि ते बोले दे हाथन ताड़ी भगवान।
'हिंदुन पीर चल्यो अबि निकस्यो घेरहु तुम महिं जो बलवान' ।। २ ।।

तीन बार श्री मुख ते कहि कहि दूर दूर लौ बाक सुनाइ।
दौरे एक बार सुनि रौरा बाम दाइने सनमुख आइ।
दस हज़ार को फिरहि तलावा सुनि अवाज़ धाए चित चाइ।
दोइ मसालैं जव्लति अगारी आवत पिखि गोबिंद सिंह राई ।। ३ ।।

धनुख बिखे संधे द्वै खपरे तानकान लौ दए चलाइ।
गए गाज सम कटी मसाला पुन भट वेधि दिए उथलाइ।
पर्यो रौर चंहुदिशि ते उमडे 'मारहु गहहु पुकारति आइ।
हय[3] दौरे खुर खैह उडी बहु अंध धुंध ह्वै गो इक भाइ ।। ४ ।

मच्यो कुलाहल भिड़े भेड़ भट आपस महिं चलिगे हत्थ्यार।
छुटी तुपक तोमर तर तीरन तरवारनि जुटिगे करि मार।
पिता पुत को सिर मैं झारति पूत पिता के तन पर झारि।
भ्रात भ्रात के चचा भतीजा सखा सखे के बहि तरवार ।। ५ ।।

जथेदार को हन्यो सिपाही, मार सिपाही को जथिदार !
नहीं पछान परसपर कोई क्यामता[4] रात भई तिसबार।

---

1. शोर 2. जाना 3. घोड़े 4. डरावनी

भए कतल सिर धर किह कर पग केतिक दरड़े करहिं पुकार ।
कहि लगि कहौं बिती तुरकनि पर बिनमारे मरि गए गवार ।। ६ ।।

भयो सथार खेत रण अंतर हय जोधा मरिगे समुदाइ ।
लोथ पोथना जित कित होवति जोवति[1] बड अंबार[2] लगाइ ।
जिम पुतली को घाल खेल बहु लखै के इक थल धरवाइ ।
मनहुं जननि नहि जने कबहुं इहु मरि करि परे ढेर समुदाइ ।। ७ ।।

परबत आदिक देशन बासी भई बिनाशी चमूं[3] बिसाल ।
जाम एक लग बाज्यो लोहा मनहु लुहार सुघड़े उताल ।
जहिं कहिं शबद शसत्र को सुनीअति मनहुं अनेक बनी टकसाल ।
भई आखरी ब्रिद गारकी[4], चहुंदिशि थल चमकौर कराल ।। ८ ।।

सति गुर दल के हुइ इक पासे निकसि गए रिपु द्रिगरज डरि ।
दुतिय दिशा कहु तीनहुं सिंह जु बिछरे प्रभु ते भए सु पार ।
गढ अतंर दुइ सिंह तिसी बिधि तजें तुढंग शीघ्रता धारि ।
निकट न पहुंचे उर धरि अरि थिर मरे चहूं दिश परे सथार ।। ९ ।।

श्री गोबिंद सिंह निकसे बाहरि सभि लशकर तेहु इकरि पार ।
सवा कोस चलि गए झील महिं तहां तरोवर जंड निहार ।
बेठि गए तहिं बिती देर कुछ द्वै नर महिखी[5] खोजनहार ।
इक मालिक इक पालक तिन महिं खोजति इत उत बिबिध प्रकार ।। १० ।।

रात चांदनी इक तहिं देखे बैठे गुरू बंदना गाइ ।
'को तुम अहो ? महिख हम खोजति,' सुनित दूसरे कह्यो सुनाइ ।
'किह संग बोजति महिख कि प्रापत मैं जावौं कै नहि अगवाइ ।
'इत नहिं महिखी, सतिगुर बैठे, मैं बोल्यो तिन सन इस थाइ ।। ११ ।।

कहा गुरू इस थल महिं आयो, गढ महिं धिर्यो लरति बड जंग ।
अरर होइ को, तैं नहिं जान्यों' सुनि बोल्यो तूरन तिन संग :—
'घेरा छोरि निकस करि आए, तबि गुर कह्यो न बोल उतंग ।
आउ पदारथ तो को देवहिं' सुनि आयो करति उमंग ।। १२ ।।

खंजर जर्यो जवाहर संगे दयो, लयो उर हरख[6] उपाइ ।
चह्यो—कि रौरा करौ बुलावों तुरक देहिं मुझ धन समुदाइ ।

1. देखना 2. ढेर 3. सेना 4. समाप्त होना 5. भैंस 6. हर्ष

जानि गुरू तिह घटकी[1] बोले: 'और दरब कुछ दें समुदाइ'।
करि लालच को ढिग[2] जबि पहुच्यो कह्यो 'धरहु खंजर इस थाइं'॥ १३ ॥
धरनि लग्यो जबि, उलट चपेटैं मारी गुरू, झुक्यो तिह जानि।
मुख पर लगी भगन भे दसना[3] भयो गुंग नहिं सके बखान।
साथी दुती बुलावति बहुबिधि 'कहां भयो रहि गई जुबान ?'।
धाइ परसपर मिले सु बूझे नहिं कुछ कह्यो जाति मति हान॥ १४ ॥
उठि प्रभु गमन कीन बिन पंथहि सने सने चलि सहिज सुभाइ।
रहे इकाकी, उपमा अस ह्वै, सीय लखण बिन बन रघुराइ।
चरन कमल ते मग[4] न चले कबि, बहु असवारी रहि अगुवाइ।
श्राप साच गायत्री को होयो अपदा भोगी इक रस भाइ॥ १५ ॥
केतिक कोस गए मग चरनन श्रमति[5] भए सतिगुर इक थान।
माछीवारे परे कितिक थल अबि बी झार निशानी जान।
बैठे तहां उपानय[6] झार्यो सिकता रज ते भर्यो मलान[7]।
सने सने पुन आगे गमने रही जामनी जाम पछान॥ १६ ॥

॥

हुतो अरक[10] को बूट खर्यो तहिं हर्यो सदल तहिं तोरन कीनि।
एक पत्त्र पर दुगध निकास्यो केतिक करि कै पीय सु लीन[11]।
पुन गमने मारग किछु आगे माछीवारे निकट सु चीन।
इक थल को अवलोकि टिके प्रभु महाराज दानी गन दीन॥ १८ ॥
चढ्यो अरक को अमल घनेरे भए दूसरे श्रमति बिसाल।
द्वै दिन ह्वै जुद्ध दारुण ठान्यो नहीं अराम कीन किस काल।
नहिं सुपते प्रभु यां ते आलस भयो देहि महिं आन अटाल।
परे फालरे[12] चरनन महिं बहु पंकज[13] पातन मुकता ढाल॥ १९ ॥
चलिबे को सामरथ[14] न आगे दुती[15] नींद बहु पायो ज़ोर।
बैठे सतिगुर पल बहुमोला सो खोला अगन ते छोरि।

---

1. मन की 2. पास 3. दान्त 4. रास्ता 5. पके हुए 6. जूतियाँ 7. मैला 8. अफ़ीम (यह केवल कवि की कल्पना है) 9. घोड़े की जीन 10. आक 11. अटल 12. फफोले 13. कमल 14. योग्य 15. तेज़ नींद

घटिका[1] हरट कूप ते खोली बसत्र लपेट सिराने ओर।
तरे बिछाइ पौढिगे ऊपर कमर कसा तिम ही रण लोर[2] ॥ २० ॥
श्रमति बिसाल, बिसाल सु आलस अमल बिसाल अरक को आइ।
त्यों ही चलहि पवन पुरवाई लोचन मुंद्रति कमल कि भाइ।
भए नींद बसि करि अराम तबि धर्यो कुवंड हाथ अगवाइ।
त्यार तमांचे करे धरे कट, भरे निखंग अग संग लाइ ॥ २१ ॥
राम चंद जिम सभि कुछ तजि करि गज[3] घोरे सिवकादिक जान।
सुहिर्द सखा अरु सरब बाहनी कंचन[4] के मदिर शुभ थान।
हेम प्रयंक सु, आसतरन म्रिदु दुगध फेन के स्वेत समान।
बन महि एकांकी परि सुपते[5] लखीअति तया गुरू भगवान ॥ २२ ॥
सावधान रहि सुभट चहूदिश रुछ्या करैं जामनी मांहि।
दास हज़ारहूं सेवा ठानहिं राग शबद ते जाग्रन जांहि।
तने बितान[6] ज़री[7] ते गच पच बरन बरन के दरशन मांहि।
बिन बिछावने भूमि सेज अबि थिरे गुरू अचरज बहु आहि ॥ २३ ॥

दोहरा

धंन धंन गुरदेव जू सुख दुख ब्रिती समान।
हरख शोक जांकै नहीं राग न द्वेश महान ॥ २४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते '**श्री गुर निस प्रसंग**' बरननं नाम द्वै चत्तवारिंसती अंशु ॥ ४२ ॥

---

1. रहट के पात्र 2. इच्छा, उमंग 3. हाथी 4. सोना 5. सोना 6. 7. शामियाना, वितान 8. सुनहरी

अंशु ४३

संत सिंह प्रसंग

दोहरा

संत सिंह रणधीर उर बीरनि बीर बिसाल।
मुखता प्रापति खालसे लहि गुरता तिस काल ॥ १ ॥

पाधड़ी छंद

सिर बधी जिगा कलगी सुहाइ। रस बीर मनो मूरति बनाइ।
करमहिं[1] कुदंड खर सर प्रचंड। गहि कराचोल चहि रण घमंड ॥ २ ॥
पुन दूसर संगत सिंह संग। जिह कहैं बंगसी मत उतंग।
बिन कसे तुफंगन[2] छोरि छोरि। चहुं ओर झिरति अरि टोरि टोरि ॥ ३ ॥
गुलकान[3] संग तन फोरि फोरि। गरजंति जथा घन घोर घोर।
दोनहुं सु बीर हति औरु औरु। रन शिवा पुकारति ठौर ठौर ॥ ४ ॥
तुरकानि तुंड गन तोरि तोरि। दे त्रास अग्र ते मोरि मोरि।
खर तीर तरातर मारि मारि। दिढ रहे दुरग ध्रिति धारि धारि ॥ ५ ॥
इम निसा बिती धनु तानि तानि। तजि तुपक तड़ाके ठानि ठानि।
म्रितु लाखहुं जोधा हेरि हेरि। सुनि प्रेति नाद रहि टर टेर ॥ ६ ॥
जंबुक पुकार गन कूकि कूकि। गढ निकट शत्रु बहु ढूकि ढूकि।
अरणोद समैं तम हानि हानि। जग उद्योतहित तबि भानु[4] भानु ॥ ७ ॥
नर अलप कोट महिं ताक ताक। गढ भेद लह्यो सभि झाकि झाकि।
भुनसार भई अरि जानि जानि। तजि त्रास ढूके गन आनि आनि ॥ ८ ॥
कर कराचोल गहि दौरि दौरि। चहूं ओर रौर भा ठौर ठौर।
भीतन लगे सु तबि आइ आइ। किन चढन चह्यो कर पाइ पाइ ॥ ९ ॥
पिखि तुरक मरे गन धाइ धाइ। जुग सिंह अनिक को घाइ घाइ।
धुर गए सकल नहिं तीर तीर। निस तजे बेधि तन बीर बीर ॥ १० ॥

---

1. हाथ में 2. तीर 3. गोलियां 4. सूर्य

तबि खैंचे म्यान क्रिपान पान। मुख दारुण शेर समान मान।
पिखियंति बिलचन लाल लाल। गन अरिन लखे तिस काल काल ॥ ११ ॥
चढि भीत हाथ को पाइ पाइ। तबि हलाहूल मुख गाइ गाइ।
लखिफते[1] तुरकचित चाइ चाइ। बहु परे कूद तबि धाइ धाइ ॥ १२ ॥
सभिहूंनि त्रास को त्यागि त्यागि। जुग सिंह खड़ग ते झागि झागि।
घन[2] घाव देहि को लाग लाग। बहि चल्यो रकत पट पाग पाग ॥ १३ ॥
गरजंति तऊ तबि दौरि दौरि। घावन अनेक तबि ठौर ठौर।
असि[3] झारति बकते 'मारि मारि'। भभकंति शबद ते तार तार ॥ १४ ॥
तुरकान तोम को काट काट। म्रितु भे सुमार[4] किय फाट फाट।
रिपु आइ सैंकरे घेरि घेरि। जिम चंद्र प्रवारे हेरि हेरि ॥ १५ ॥
निज चरन अग्र को डारि डारि। बल रह्यो जबै लगि, मारि मारि।
पुन खड़ग सैंकरे काढि काढि। जुग सिंह बीर तन बाढि बाढि ॥ १६ ॥
तबि गिरे धरनि[5] अरि गरि गेरि। सभि खड़ग प्रहारैं हेरि हेरि।
'इह गुरू आप रण ठानि ठानि। लशकर[6] हतिओ धनु तानि तानि ॥ १७ ॥
तबि ख्वाज मरद चित चाइ चाइ। सुन गयो कोट महिं धाइ धाइ।
उमराव[7]–हत्यो गुर–जानि जानि। पहुंचे समीप मुद ठानि ठानि ॥ १८ ॥
सुंदर सरूप मुख हेरि हेरि। मिलिगे हज़ार तहिं घेर घेर।
मरदूद ख्वाज रिस धारि धारि। सभि सों पुकार कहि बार बार ॥ १९ ॥
'सिर लेहु दुहिन के काटि काटि। तन भखहिं बिहंगम बांट बांट।
लिहु शुतर सऊरन बोलि बोलि। दिन रात चलहिं मग टोल टोल ॥ २० ॥
ढिग शाहि पहूचहिं धाइ धाइ। दिखराहि सीस बल गाइ गाइ।
इम हत्यो गुरू रण घेरि घेरि। लर सुभट सु लाखहुं गेरि गेरि ॥ २१ ॥
गीदीन कीन तरवार वार। सिर लए काटि धरि डारि डारि।
दे शुतर सऊर हुकार कार। 'करि शीघ्र बिलंब बिसार सार ॥ २२ ॥
मग चले जाहु नित दौर दौर। कहि शाहु फते कहु ठौर ठौर'।
सिर दए भेजि चित चाइ चाइ। चहुं दिशनि द्रिशटि द्रिग लाइ लाइ ॥ २३ ॥
खग मास खाति है थान थान। गन ग्रिज्झ काक मुद मान मान।
रंगीन भूमिका लाल लाल। म्रितु परे घावतन झाल झाल ॥ २४ ॥
तन छिन भिन बहु सूर सूर। निज स्वामि धरम को पूर पूर।
उमराव रहे उर झूरि झूरि। —दल ब्रिंद[8] दयो करि चूर चूर ॥ २५ ॥

1. विजय 2. गहरा 3. तलवार 4. असंख्य 5. धरती 6. सेना 7. अमीर
8. दल, समूह, सेना

इह अज़प सिंह रण मांडि मांडि । गुलकान[1] बान गन छाडि छाडि ।
लशकर महान को हानि हानि । भे म्रितक, तऊ सु क्रिपान पान ।। २६ ।।
अचरज महदि को घाल घाल । नहिं फिरे पाछ पग, हाल हाल—।
इम तुरक हराने होइ होइ । रण खेत बिचर भट जोइ जोइ ।। २७ ।।
निज डेरन महिं तबि आइ आइ । मिलि करहिं बात हित पाइ पाइ ।
परखंति गुरू बिच कोइ कोइ । से कहति सभिनि ढिग होइ होइ ।। २८ ।।
"इह सीस गुरन के नांहि नांहि । तिह भेज हरख उर काहि काहि ।
गहि छटा न लेहिं उपाइ पाइ । जिम पारद दवै न धाइ धाइ ।। २९ ।।
तिम गुर सरूप लिहु जानि जानि । नहिं मर्यो भरम दिहु हानि हानि ।
जद्दि निकस, रौर करि ठौर ठौर । घेरन सु लगे तबि दौरि दौरि ।। ३० ।।
गुर बहिर गए तबि जोइ जोइ । यह भेद लखति है कोइ कोइ ।
इम सुन्यो सभिनिं भ्रम ठानि ठानि । उमराव[2] मिले पुन आनि आनि ।। ३१ ।।
करते सलाह मति बोल बोल । 'गुर गहन उचित लिहु टोल टोल ।
दल पसर जाइ सभि थान थान । गन पीर फकीरन जानि जानि ।। ३२ ।।
पुरि ग्राम जहां कहिं चीनि चीनि । नर ब्रिंद[3] बटोरहु बीन बीन ।
निकसै न बेस[4] को धारि धारि । नर ओपरानि[5] लखि सार सार ।। ३३ ।।
लिहु जामनी सु दिहु छोरि छोरि । पुरि ग्राम भले इम टोरि टोरि ।
बिलमो[6] न हुकम को पाइ पाइ । दल फैल परे अबि धाइ धाइ ।। ३४ ।।
मसलत[7] पकाइ अस डेर डेर । बिसमाइ हहे रण हेरि हेरि ।
गन लोथन को अनुमान मान । चमकौर ओर चहुं जान जानि ।। ३५ ।।
'लछ[8] ते वधीक[9] सभ भाखि भाखि । मिट गई लरन, अभिलाख लाख ।
सभि सिंह, लोथ को ल्याइ ल्याइ । गन तीस बतीसन पाइ पाइ ।। ३६ ।।
इति बुद्धि रिपुनि की हेरि हेरि । तुरकान लोथ लगि ढेर ढेर ।
कवि कहति कथा संतोख सिंह । 'धंन धंन गुरू गोबिंद सिंह' ।। ३७ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते 'संत सिंह प्रसंग' बरननं नाम तीन-चतवारिसती अंशु ।। ४३ ।।

---

1. गोले 2. अमीर 3. समूह 4. भेष 5. अजनवी, अनजाना 6. देर 7. सलाह की 8. लक्ष्य 9. से भी अधिक

अंशु ४४

उपबन प्रवेश प्रसंग

दोहरा

करति शीघ्रता दल चढे गुर खोजन के काज।
भीम चंद घायल भयो, हरे गिरन गिर राज॥ १॥

चौपई

भए सुमार, हज़ारहुं मरे। गिर[1] की दिश गिरपति सभि मुरे।
ज़ेरदसत भी घाइल होयो। लवपुरि को चढि मारग जोयो॥ २॥
सीरंद[2] सूबा खान वजीद। पूरब की दिश कीन रसीद।
दक्खन की दिश लाखहुं चढे। 'गहैं गुरू को जित कित कढे॥ ३॥
चढ्यो खत्राज मरदूद शीघ्र करि। 'शाह मिलनि को निकट चाह धरि।
भीम चंद घर पहुंचति मर्यो। सैल महिं शोक सु पर्यो॥ ४॥
अबि सतिगुर की कथा सुनीजे। जनम जनम के पाप कटीजे।
सुपति परे तिस कूर सथान। अरणदे लगि गुर भगवान॥ ५॥
तीनहुं सिंह निकसि जबि गए। दल ते दूर कोस जुग भए।
लगे बिचारन 'चलि हम आए। बिछुरे गुर, जिनके संग धाए॥ ६॥
क्या करत्तव्य[3] अबै हम बनै। कित को गमनैं ह्वै हित सनैं?"
दया सिंह सिमरी गुर बानी। 'गढ निकसति हम संग बखानी॥ ७॥
इस तारे की सेध पयानैं। चलहु गुरू मिलिहैं किस थानै[4]।
मान सिंह तबि चलति उचारे। 'इह मग पहुंचै माछीवारे॥ ८॥
तारे सेध निहारति चलो। पुरि लगि खोजति गुर संग मिलो'।
धरम सिंह बोल्यो मतिधीर। 'खोजति गमनहु इत उत तीर'॥ ९॥
न्रिभै बीर तीनहुं तबि चाले। मारग इत उत फिरति संभाले।
खोजति श्री सतिगुर को जात। इस बिधि[5] बिती[6] सकल ही राति॥ १०।

---

1. पहाड़ 2. सरहिन्द 3. कर्त्तव्य 4. स्थान 5. तरह 6. बीत गई

जैब समा अरणौदै[1] होयो। चंद प्रकाश मद को जोयो।
पूरब दिश मुख लाल दिखायो। जनु तुरकनि को चहति खपायो ॥ ११ ॥
तिमर तोम पतरो हुइ गयो। कुछक प्रकाश अकाशहिं भयो।
गमनति देखति पहुंचे तहिंवा। सुपति जगतपति प्रभु थिर जहिंवा ॥ १२ ॥
ज़ेवर[2] कितिक उतारन करे। घटी हरट की सिर तर धरे।
गल शत्राण अंगुशट मझारा। पहिरे राख्यो नहीं उतारा ॥ १३ ॥
मोल हज़ार इकादश ताहू। राखहिं वड तन धरि करि मांहू।
समें पनच ऐंचनिके जोऊ। रच्छक बनहि अंगुशटहि सोऊ ॥ १४ ॥
सर छोरनि तूरनता कारन। यांते गुर नहिं कीनि उतारन।
युत गुल[3] त्राण हुतो जो हाथ। सुपत परे सिर परे धरि नाथ ॥ १५ ॥
गुलशत्राण विच[4] हीरा जर्यो। तिह प्रकाश अरणौदे पर्यो।
चमकति भयो सहति बहु लाली। देइ दिखाली दूर बिसाली ॥ १६ ॥
धरम सिंह मग चलति बिलोके[5]। दयासिंह को कहि करि रोके।
'इह सतिगुर को भूखन[6] कोई। लाली लगे दमक बहु होई ॥ १७ ॥
वाहिगुरू मुख उचरति चलो। देखहु निकट होइ प्रभु मिलो'।
मान सिंह तबि गयो नजीके[7]। देखहि कहां,—परे प्रिय जीके— ॥ १८ ॥
हुते उनींदे श्रम को पाए। तन सुधि बिन धरि पर सुपताए।
दोनहुं अपने निकट हकारे[8]। सुपत सेज बिन गुरू निहारे ॥ १९ ॥
तीनहुं पद पंकज करि नमो। हेत जगावन के तिह समों।
करि मसलति[9] को चहैं जगायो। धरम सिंह तबि हाथ चलायो ॥ २० ॥
पद अरबिंद[10] बैठि करि गहे[11]। सने सने मसलति म्रिदु अहे।
धनुख हाथ महिं धरे खतंग। कमर कसा तिम ही सभि अंग ॥ २१ ॥
कितिक बार मसले जबि चरनां। तनि सुधि भई नींद करि हरना।
कमल बिलोचन बिकसे तूरन। धनुख संभार उठे गुर पूरन ॥ २२ ॥
जबि संगी निज सिक्ख निहारे[12]। 'आइ सु पहुंचे इहां', उचारे।
दया सिंह कर जोरि[13] बखानी। 'श्री गुर महाराज बल खानी ॥ २३ ॥
इहां आइ किम भे निशचिंत। पिखहु भयो अबि निस को अंत।
सूरज उदै होइ लौ सारे। लशकर पसरहि जित कित भारे ॥ २४ ॥

---

1. प्रातःकाल 2. आभूषण 3. अंगूठा 4. में 5. देख कर 6. भूषण 7. निकट 8. बुलाए 9. सलाह करके 10. चरण कमल 11. पकड़े 12. देखे 13. हाथ जोड़ कर

कौन भरोसा करि पर रहे। नहिं गढ सैना थिरता लहे।
करहु उपाइ जथा बन आवै। नतुर प्रकाश भए रिपु धावैं ॥ २५ ॥
फेर न बनहि होई लाचारी। एक रहै : मरिबे क्या मारी'।
सुनि करि पिखी, भई भुनसारी। निज सिंहनि के संग उचारी ॥ २६ ॥
'अबि उपाइ नहिं को बनि आवै। चरन फालसे, चल्यो न जावै।
बाग़ बिलोकहु सनमुख जोई। इस महिं चलहु रहहु थिर होइ ॥ २७ ॥
जे शत्रु गन को बन मेला। भिड़ हिं भड़ झेलहिं बड हेला।
उपबन लेहु अड़तला लरिबे। शत्रु हज़ारहुं प्राननि हरिबे' ॥ २८ ॥
भयो प्रकाश पिखे पग छाले। लाल कमल दल मुकता ढाले।
दोनहुं चरननि पर अस परे। पोइ लरी जन गुंथनि करे ॥ २९ ॥
सुनि करि गिरा[3] समेत लचारी। गुर रजाइ लखि तूशन धारी।
उठे नाथ जबि चलिबे कारन। भई पीर होति न पग डारन ॥ ३० ॥
मान सिंह तबि कंध उठाए। भए प्रवेश बाग़ महिं जाए।
हुतो निकट तरुवर तर खरे। हरे हरे संहनि दल खरे ॥ ३१ ॥
बीच कूप तिस हरट चलंता। बैठे निकट पहुंचि भगवंता।
हुतो हरट बाहक, तिन हेरे। —इह तौ गुर मम खांवंद[4] केरे ॥ ३२ ॥
सिक्ख गुलाबा हुतो मसंद। तिस को कामा बाग़ बिलंद[5]।
सतिगुर की सो बात बतावति। —काछ केश युत पंथ बनावति— ॥ ३३ ॥
सुने हुते तिन पते अगारे। अनुमानति सो चिह्न निहारे।
—मम खांवद जे पते बताए। सो गुर आप कि सिख तहि आए ॥ ३४ ॥
इम मन जानि पिखे गुर बैसे। तजि करि कूप चलति को तैसे।
धाइ शिताब[6] गुलावे पास। मिल्यो जाइ सुधि करी प्रकाश ॥ ३५ ॥
'श्री गुर आप कि सिख गुर केरे। उपबन प्रविशे होति सवेरे।
केश काछ तुम जथा बतावति। सगरे चिन्ह, महिं पावति ॥ ३६ ॥
उठहु बिलोकहु लिहु सुधि सारी। चलि करि परखहु करहु चिनारी।
सुनति गुलाबा बहु बिसमायो। उठि तूरन घर ते चलि आयो ॥ ३७ ॥
आइ बाग़ महिं कहां निहारे। श्री सतिगुर बैठे बलिभारे।
नमो करी सिर धरि पर टेका। पुन बूझे प्रभु जलधि बिबेका ॥ ३८ ॥

३९ ॥

1. सामना 2. आक्रमण 3. वारगी 4. स्वामी 5. बहुत 6. जल्दी 7. कहो 8. अभिलाषा 9. मांग

॥
जबि गुर उपबन बैठे जाइ। कामा गमन्यों पुरि सहिसाइ।
खुशकी अरक दूध ते होई। बांछति[2] अमल पियनि ते सोई ॥ ४१ ॥
बूझे तबि भी संगी तीन। सुक्खा किस के निकट कही न।
मान सिंह के थो कुछ पाले। सुनि करि गुर ते खोलि निकाले ॥ ४२ ॥
थोरा हुतो त्यार करि दयो। तिखा सहित सो पीवन कयो।
हुइ प्रसंन बर देवत जोवैं*। 'पंथ खालसे महि' तुम होवैं ॥ ४३ ॥
तुझ सम बेख सुभाउ बिसाली। नाम निहंग अनेक अकाली'।
इस प्रकार इक घटी[3] बिताई। चाह अमल की रही तदाई[4] ॥ ४४ ॥
४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते 'उपबन प्रवेश प्रसंग' बरननं नाम चत्तत्रांरिसंती अशु ॥ ४४ ॥

1. प्रसन्न 2. इच्छा करके 3. घड़ी 4. तब तक 5. मुंह और हाथ धोए 6. नशीली वस्तु

अंशु ४५

माछीवारे प्रसंग

दोहरा

निसानी छंद

सरद नीर दर पान ते सभि प्यास बिनाशी।
अरक दुद्ध को दुरअमल[1], बडउशन प्रकाशी।
उर[2] अनंद कहु मान करि उठि चह्यो पयाना[3]।
चरन फालरे वहु परे दैं खेद महाना ॥ २ ॥
मान सिंह बलवंत तवि बल साथ उठाए।
गए सौच हित करन के तट सलिता थाए।
बडी झील बेला खर्यो नहिं दिखत नजीका।
काह, पटेरा[4] आदि त्रिण संघन तिह नीका ॥ ३ ॥
प्रविशे जाए मझार तिह करि सौच पयाने।
उपबन को आवन लगे त्रिण चीर महाने।
तहिं महिखी चारति फिरति इक मूरख माहीं[5]।
आवति गुरू बिलोकि तिस बिसम्यो मन मांही ॥ ४ ॥
मन जानी—इह सिंह है तजि चले लराई।
मैं अबि करौं पुकार को दै हैं पकराई।
इम निशचै करि ऊच धुनि मुख बाक पुकारा।
'सिंह पलाए जाति हैं इह झील मझारा' ॥ ५ ॥
श्री गुर बोले 'धरम सिंह इह जान न पावैं।
महि आनहुं मति मंद को नहिं रौर उठावैं।

---

1. बुरी लत 2. मन में 3. जाना 4. एक प्रकार की घास 5. चरवाहा

सुनि केहरि सम बेग करि पकर्यो ततकाला ।
आन्यो सतिगुर के निकट डर गयो बिसाला ॥ ६ ॥

'कहु कुट्टण[1] कूक्यो कहां, क्या लेहु पकारी ? ।
जे हम पलटा लेंहि अबि दै हैं तुहिमारी' ।
सुनि माही कर जोरिकै म्रिदुवाक उचारा ।
'जान्यों मैं तुम को नहीं गुर आप उदारा ॥ ७ ॥

—सिंह कहूं के जाति हैं—इम जानि पुकारा ।
छिमहु अबहि नहिं बोलिहौं पिखि दरसु तुहारा' ।
गुरु कमर खंजर तबै तिस के कर[2] दीनो ।
हीरे जरे जराव मैं जिह कीमत पीनो ॥ ८ ॥

'पुत्र पौत्र लगि सदन महिं करीअहि गुजराना[3] ।
बेचहि कई हज़ार को धन पाइं महाना ।
नहिं बोलहु, घर गमन करि घरहिं अबि तोही' ।
सुनि करि माही नमो करि मुख तूशनि[4] होही ॥ ९ ॥

आइ बिराजे बाग महिं दिन सकल बितायो ।
संध्या समैं बिलोकिकै जबि रवि असतायो[5] ।
आइ गुलावा संग ले गमन्यों घर माँही ।
हुतो चुबारा सदन पर नव चिन्यो तदाही ॥ १० ॥

प्रण धार्यो—गुर के चरन पूरब इत पावैं ।
हम पीछे वासि हैं—इम चित द्रिड़तावैं ।
तऊ तुरक के राज करि उरदंति घनेरे ।
दुतिय पंजाबा भ्रात तिह, लाचार बडेरे ॥ ११ ॥

सुंदर एक प्रयंक तबि मंदर महिं डासा ।
कर्यो बिठावन सतिगुरू आचरज बिलासा ।
खान पान सभि बिधि करे निस महिं सुपताए ।
प्राति उठे करि सौच को जल घनो अनाए ॥ १२ ॥

करी रदन धावन[6] गुरू मुख कमल पखारा ।
पुन चौंकी पर खरे हुइ मज्जन तन धारा ।
कट की काछ निकार करि तहिं नीचे डारी ।
आड़बंद अंतरहुतो दिढ कस्यो धारी ॥ १३ ॥

1. मूर्ख 2. हाथ 3. गुज़ारा 4. प्रसन्न होना 5. छुप गया 6. दातुन

सो आमिख महिं खुभि रह्यो जमि[1] श्रोणति साथा ।
रहे निकास न निकसतो ऐंच्यो गहि हाथा[2] ।
तबहि गुलाबे को कह्यो, करि जतन निकासो ।
सने सने काढन लग्यो ह्वै कै बहु पासो ॥ १४ ॥

शंकत चित गुर नगन ते नहिं द्रिग करि हेरे ।
बसत्र गयो जम अधिक ही निकसि न जिस बेरे[3] ।
कह्यो गुरू 'नहिं शंक करि अवलोकि निकासो ।
पित सुत दोश न नगन का नहिं कीजै सांसो[4] ॥ १५ ॥

तऊ गुलाबा शंकतो जल डारि भिगोवै ।
सने सने खिसकाइ पट निकसाइ सु जोवै ।
जुगल उरू ते ऐंचि करि, करि करि पट गीला ।
नीठ नीठ काठन कर्यो पुन पुन करि ढीला ॥ १६ ॥

अपर काछ पहिरी बहुर सभि बसत्र सजाए ।
तथा शसत्र धारन करे बैठे तिस थांए ।
खान पान तैसे कर्यो सो दिवस बितायो ।
आइ गुलाबे निकट तबि कर जोरि अलायो ॥ १७ ॥

तबहि गुलाबे खोजि कै दे मोल सु ल्यायो ।
श्री प्रभु के ढिग ले गयो तहिं खरे टिकायो ।
तुपक मारि झटका कर्यो भा शबद उचेरे ।
सुनति गुलाबा थरहर्यो बिदतैं नह हेरे ॥ १९ ॥

इक दिश हुतो पड़ोस को घर दिज को बासा ।
दुतियदिशा सय्यद बसै बहुनिकट अवासा ।
बिप्र[5] बिलोके उकसिकै गुर रूप पछाने ।
आगे गयो अनंद पुरितहिं दरशन ठाने ॥ २० ॥

डारि पतासे थाल महिं धरि बीच जनेऊ ।
आनि अचानक घरबर्यो नहिं रोक्यो कोऊ ।

---

1. कमर 2. हाथ में 3. समय 4. चिन्ता 5. ब्राह्मण

गुर को आशिख[1] देइ करि धरि थाल अगारी ।
पंच मुहर निज हाथ ले प्रभु तिस महिं डारी ॥ २१ ॥
पुन असीस को बिप्र दे निज सदन[2] पहूचा ।
डरे गुलाब पंजाब उर नहिं बोलति ऊचा ।
जान जाइ पुरि नगर सभि मुझ आनि गहै है ।
जतन छुटन को पुन कहां नाहक[3] मरि जेहैं ॥ २२ ॥

आमिखको करि पाक तबि आछे सुधरायो ।
खलरी चारों चरन अज इक थान टिकायो ।
कितिक समैं बीत्यो जबै इक निकट मसीता ।
काज़ी बांग पुकार करी बोल्यो निरभीता ॥ २३ ॥

सुनि सतिगुर उठि पलंघ तैं लेखलरी छांगा[4] ।
पग सिर बीच लपेट करि गमने तित आगा ।
कोशठ कोशठ गन उलंघि पहुंचे तहिं जाई ।
खरौ पुकारति बांग जहिं ऊचे बल लाई ॥ २४ ॥

तिस के सिर को ताक करि मारी ततकाला ।
पगीआ उतरी धरि परी भा कशट बिसाला ।
कोशठ कोशठ पंथ जो गुर पहुंचे आई ।
इत उत काज़ी देखिकै बड रौर उठाई ॥ २५ ॥

हतनहार देख्यो नहीं तूशन मुखधारी ।
बिसमान्यों चितवत्ति भयो—नभ ते किन मारी— ।
खलरी वहिर मसीत ते ततकाल बगाई ।
मारि खाइ मतिमंद तबि पुन मोन रहाई ॥ २६ ॥

भूल्यो बांग निवाज़ को निज सदन सिधारा ।
इत सतिगुर अचवन लगे भा त्यार अहारा ।
छांग मास को अचवते तिस असथि बगावैं ।
दिज अरु सय्यद के सदन गिर[5] नाद उठावैं ॥ २७ ॥

बिप्र बिलोके जानि सभि नहिं कछू उचारी ।
देखति सय्यद बहु रिस्यो[6] बोलति दे गारी ।

1. भखा 2. घर 3. व्यर्थ ही 4. बकरा 5. गिरना 6. क्रोधित हुआ

सुनहु गुलाबे ! मदमति हम परदा ढाका ।
सिंह दुराए सदन महिं तुझ भै नहिं कां का[1] ॥ २८ ॥
होने देहु प्रभात को हम जाइ पुकारैं ।
पातशाह के ल्याइ नर घर तोहि दिखारैं ।
पेटचाक[2] तुव कुंटव को गहि सो करिवावैं ।
हमरे घर महिं असथि इह निरभै गिरवावै ॥ २९ ॥
तबहि गुलाब पंजाव डरि तिन डिग कर जोर ।
करहु छिमा[3] तुम आज की इह गमनैं भोरे ।
सदा पड़ोसि वसहु ढिग इह करहु असाना ।
हम अधीन तुमरे रहैं इहु पीर महाना ॥ ३० ॥
नहिं बरजे[4] ते तबि हटे गुर मुहर बगाई ।
परी सदन महिं देखकै वीनति समुदाई ।
अधिक दरव के लोभ महिले तूशनि होए ।
नहिं उकसे बोले न पुन परि घर महिं सोए ॥ ३१ ॥
इत्यादिक कहि लोभ के रिस तिनहुं बिनाशी ।
घर महिं वर मसलत[5] करी नर नारिनि त्रासी[6] ।
'वडी निसा ते आज उठि गुर रुखसद कीजे ।
छपे रहें नहि डर रहैं, तुम आप बचीजै' ॥ ३२ ॥
इत्यादिक गिणती गिनी सभि धीरज खोई ।
देति कसौटी गुरू जी सहि सकै न कोई ।
गुर प्रसादि छकि लीन तबि जल पान पखारे ।
थिर प्रयंक पर गुर भए किस त्रास न धारे ॥ ३३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'माछीवारे प्रसंग'** बरननं ना[म] पंचतवरिंसती अंशु ॥ ४५ ॥

1. शोर 2. पेट चीरना 3. क्षमा 4. रोकना 5. सलाह 6. डर

अंशु ४६

हाजी बेख बनावन प्रसंग

दोहरा

पसरी[1] सैना तुरक की चहुंदिशि महिं पुरि ग्राम ।
दस हज़ार पहुंच्यो इते गुर खोजनि के काम ॥ १ ॥

सवैया छंद

नबी ग़नी खां तिस ही दल महिं गुर की तनक भनक[2] सुनि कान ।
खोजति पुरि[3] महिं इत उत घर फिर दुर दुर सभि ते चहित पछान ।
आगे गुर ढिग रहे बहुत चिर वेचे आनि महान किकान[4] ।
कुछक चाकरी भी तबि कीनी लीनि दरब को करि गुज़रान[5] ॥ २ ॥

सिमरन समैं कर्यो सो मन महिं चाह्यो चितमहिं भलो विचार ।
हमते सरैसेव सतिगुर की यां ते नीकी अपर न कार[6] ।
सदन गुलाबे के तबि आने सुनि श्री प्रभु ने लीए हकार ।
दरशन ते अभिबंदन करिकै बैठि गए ढिग कीनि उचार ॥ ३ ॥

हम रावर[7] के चाकर तिम ही जिम आगे तुम करते कार ।
अबि जो उचित होइ फुरमावहु करहिं सु हम नहिं को तकरार[8] ।
सुनि गुर भन्यों 'रहहु ढिग हमरे, गमनहिं संग चलोहित धारि ।
जबि हम खुशी देहिं तबि हटीअहि, कारज इही दिवस दो चार' ॥ ४ ॥

भानि बैन को बोले बिहतर[9] ! रहे किसी के घर तबि जाइ ।
सुपते सतिगुर बहुर जामनी आप आपने सिख सभि थाइं ।
सहति कुटंब गुलाबा सुपत्यो-तुरक पकरि ले देहिं सज़ाइ— ।
त्रास धरे उर जागती बैठ्यो—गुरको रुखसद[10] करौं बनाइ— ॥ ५ ॥

---

1. फैल गई 2. खबर 3. शहर 4. घोड़े 5. गुजारा 6. काम 7. तुम्हारे 8. झगड़ा 9. अच्छा 10. विदायगी

सवा जामज बिरही जामनी पंच रजतपण ले इक थान।
सतिगुर सुपत जगावन कीने आगे धरि करि जोरे पान।
पिखी बिदाइगी सति गुर बोले 'कहां गुलाबा तैं क्रिति ठानि।
धीरज धरहु न भरमहु उर महिं पूरब समसर बनि सवधान'॥ ६॥

श्री सति गुर तुम समरथ सभि विधि मैं गरीब अबि मार्यो जाई।
गहैं तुरक लै कैद करहिंगे सभि कुटंब जुति देहिं सज़ाइ[1]।
त्रसति रिदै पिखि[2] सतिगुर बोले 'अहो गुलाबा! नहिं भरमाइं।
जिह गुर डाढे तिह सिख डाढे लगन न पावै तातीवाइ'[3]॥ ७॥

'श्री सतिगुर तुम समरथ वड बल मैं माड़ो[4], किम ह्वै न बचाइ।
बहुर उपाइ न को बनि आवै जबिपुरि महिं होवहु बिदताइ'।
पुन प्रभु भन्यो 'नहीं तुम माडो, गुर पीन तुहि पीन[5] बनाइ।
बंको बार न होवन पावै अंग संग नित बनहिं सहाइ॥ ८॥

बहुर गुलावे डर धरि भाख्यो 'मैं माड़ो नहिं बचिवो होइ'।
सुनि प्रभु कह्यो 'रहहु तुम माड़े पद जोरावर लियो न कोइ।
जबि सतिगुर कुरखेतर गमने उतरे तबि चमकौर सु जोइ।
हुतो निहाला ग्राम चौधरी सेवा करी भाउधरि सोइ॥ ९॥

सुनि सुनि संगति दरशन के हित मिली आइ लै अनिक अकोर।
माछीवारे की खत्राणी सुनि पहुंची उर प्रेम निहोरि।
सूखम बसत्र थान इक आन्यों अरप्यो नमो करी कर जोरि।
श्री मुख ते पिखिकरि फुरमायहु मिक्खगीए! जाचहु चित लोरी॥ १०॥

करि बंदन खत्राणी भाख्यो 'पातशाहु मेरी अरदास।
भई ब्रिधा, मैं गमन्यो जाइ न, किम पहुंचौं रावन के पास।
सूखम सूत कात करि नितहि भेट देति मैं सुंदर बास।
किम दरशन मुझ प्रापती होवहि, इह किम पूरन होवै आस॥ ११॥

सुनि गुर कह्यो 'बसत्र हम लैहैं जहिं तूं बसहिं तिसी पुरि आइ।
कात बनाइ त्यार करि रहीयहि पहिरैंगे निज अंग सजाइ।
महां प्रसाद अचहु ले हम ते' इह कहि सतिगुर दियो सुखाइ।
हुइ अनंद पुन सदन सिधारी कात बसत्र तिन धर्यो बनाइ॥ १२॥

तिस को कह्यो हुतो जिम पूरब सो सिमरन करि गुर तिस काल।
कह्यो गूलावे सों तिस छिन महिं 'छत्राणी जो ब्रिधा[1] बिसाल।

---

1. दण्ड 2. देख कर 3. कलेश 4. बुरा 5. शक्तिशाली 6. बहुत बूढ़ी

करहु हकारन संग सु आनहु तिस की पुरहिं कामना हाल[1]।
सुनति हुकम को गयो तुरत तबि जहां सदन को खोजि उताल ॥ १३ ॥

भेत बतायहु सकल गुरू को, सुनि हरखी परखी सभि बात।
सूखम बसत्र थान द्वै लैकरि चलिआइ बिरधा उतलाति।
धरि अकोर[2], कर जोरि नमो करि, हेरि हेरि करि सुंदर गात[3]।
अधिक मुदति मन प्रेम उदति हुइ 'धंन भाग मैं पिखि सक्खयात ॥ १४ ॥

गुर प्रसंन हुइ कह्यो तांहि को 'भेट अंत की हम ने लीन।
अंत समां पून्यो अबि तेरो, तजि तन उत्तम पद को दीनि'।
करि दरशन को गमनी सो पुन बाक गुलाबे सन गुर कीन।
'सियनहार[5] ते तुरत सिवावहु, गर पैराहन[4] बनै नवीन' ॥ १५ ॥

सुनि करि जाइ त्यार करिवायहु एक चादरा अरू गर चीर[6]।
बहुर कह्यो 'करि श्याम बरन पट ले करि आवहु हमरे तीर'।
नबी ग़नी खां तबि चलिआए निकसन भेव कह्यो गुर धीर।
'लेहु प्रयंक उठाई सीस पर उलंघति तुरकन भीर बहीर' ॥ १६ ॥

सुंदर लीन प्रयंक[7] एक तबि सूखम आसतरन ते छाइ।
चहुं पावन सन पंख मोरके बांधे आछी रीत बनाइ।
अपर छरी बांधी संग तिन के हित छाइआ के चारहुं थाइ।
मुट्ठा एक मोर पर केरा इत्तयादिक त्यारी करिवाइ ॥ १७ ॥

बसतु त्यार करि ल्याइ गुलाबा गरे पिराहन सतिगुर पाइ।
दीरघ लियो चादरा ऊपर हाजी अपनो रूप बनाइ।
नहिं दसतार सीस पर राखी पीछे केश दीए लरकाइ।
छादि चादरे सों दुति पावति तम पटमहिं मुख चंद सुहाइ ॥ १८ ॥

चढि बैठे गुरतिस प्रयंक पर सिर पर चारहुं लीनि उठाइ।
नबी गंनीखां आगल पावे दनहुं सिर धरि चलि अगवाइ।
धरम सिंह अरु मान सिंह जुग पाछल पावे सीस धराइ।
दया सिंह मुट्ठाकर धार्यो गन मोरन पर बंध बनाइ ॥ १९ ॥

निकसे प्रथम बजार पंथ को सने सने गमने इस भांति।
जो बूझै 'इह कौन प्रयंक पर कित ते आए कित को जात ?।

---

1 अभी 2. दण्डवत् 3. शरीर 4. बनाने वाले 5. वस्त्र 6. गले का वस्त्र 7. पालकी

नबी ग़नीखां उतरदे तिन उच नगर के सय्यद जात।
हाजी अहैं, हज्ज करि आए, मन की मौज सहत बिचराति'[1] ।। २० ।।

सिंहन सीस शमश[2] जो अपनी सगचादरे छादन कीनि।
गमने श्री प्रभु जाति अग्र को पूज तुरक गन के बन पीन[3]।
शरधावान बंदना ठानहिं हेरहिं अदभूत रूप नवीन।
पुरि ते निकसि अग्र के मग चलि श्री सतिगुर सभि रीति प्रबीन ।। २१ ।।

केतिक कोस गए जबि चलकै सैना पसरी तुरकन केर।
फिरहिं हज़ारहु इतउत डोलति परे हज़ारहु करि करि डेर।
उतर्यो इक उमराव[4] अगारी पंच हज़ार चंमू तिस केर।
निकट प्रयंक गुरू को गमन्यों कितिक सिपाही आवति हेर।। २२ ।।

जाइ कह्यो उमराव अगारी 'इक प्रयंक पर चढ्यो सिधाइ।
फैली चमू सकल जिस कारन गुर धरि भेस निकस नहिं जाइ।
थान थान पुरि ग्रामनि महिं सभि जित कित खोजति हैं समुदाइ।
सावधान तुम भी करि निरतै नर न उपरे तैं निकसाइ।। २३ ।।

सुनि उमराव पठे शुभमति नर, बूझहु जाइ प्रयंक पर कोइ' ?।
तुरत आइ करि ऊचे बोले 'खरे रहहु बतलावहु सोइ।
कित ते आए, जाहिं कहा को जामा[5] कौन आपको होइ।
नबी ग़नीखां उत्तर दीनसि 'इह सय्यद उच बासी जाइ ।। २४ ।।

करी हज्ज हाजी ए दीरघ जहां मौज तहिं नित बिचरंति।
सुनति सिपाही गमने तूरन पहुंचि निकट उमराव भनंति।
'सय्यद इह हाजी हज करिकै फिरति आपने मते मतंत।
नगर ऊच्च को बासी भाखति दीरघ पीर रीति लखियंति' ।। २५ ।।

सकल कचहिरी सुनि गन तुरकन मसलत करी गुरू न सिधाइ।
निस को डेरे बिखे उतारहु खान पान ते परख्यो जाइ।
हेति फजर[6] के रुखसद[7] करीयहि आप करहु ज़ारत[8] दरसाइ[9]।
इम कहि पठे सिपाही पहुंचे ढिग सतिगुर के कही सुनाइ।। २६ ।।

हुकम कर्यो उमराव आप को डेरा करीअहि निस इक आइ।
फजर जाहु जित इच्छा होवै बहुर नहीं को तुम अटकाइ।

---

1. विचरते हैं 2. सूर्य 3. पीर 4. अमीर 5. कपड़ा 6. प्रातः 7. विदा होना 8. यात्रा 9. देखो

दया सिंह सुनि बाक बखान्यो 'तंबू दीजै प्रिथक लगाइ।
तबहि पीर जी सिवर[1] करहिंगे जारति करहिं आइ समुदाइ ।। २७ ।।
तिनहु बूझि उमराव लयो पुन बाहर पौर दुरग के मांहि।
अंतर जैबे को मग ढिग ढिग तिह ठा तंबू दीनि लगाइ।
नबी गनीखां गमने अंतर दया सिंह पशचात चलाइ।
धरम सिंह अरु मान सिंह जुग पाछल पावे सीस उठाइ ।। २८ ।।
प्रथम पौर के अंतर बर करि दुति पौर के कुछ अगवाइ।
तंबू विखै प्रयंक उतार्यो पंचहु बैठे ढिग दरसाइ।
कितिक देर महिं पुन नर आयो 'तुम सों कहि भेज्यो उमराव।
कहै शाहदी[2] आन जि कोई निशचे सय्यद देहु बताइ ।। २९ ।।
तौ तुम जान पाइगो आगे जे जो नहीं बतावैं आइ।
तौ अटके ही इह ठां रहि हो—इस कारन कुछ करहु उपाइ'।
श्री गुर सुनि मुख ते फुरमायहु 'सय्यद बसै नूर पुरिथाइ।
अबि माछीवारे हे दल महि तिस को बूझहु लेहु बुलाइ ।। ३० ।।
अबि नर जाइ हकारन करि हे भोर होति लौ सो चलिआइ'।
इम सुनि कै उमराव सु ततछिन पठ्यो सऊर 'जाहि उतलाइ।
नूरपुरे को सय्यद दल महिं अमुक सिवर महिं ल्याउ बुलाइ।
गमन्यों चढिकै माछीवारे गुर तंबू महिं टिके सुहाइ ।। ३१ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'हाजी बेख बनावन प्रसंग'** बरननं नाम खशटचतवारिंसती अंशु ।। ४६ ।।

---

1. ठहरेंगे 2. प्रत्यक्ष

अंशु ४७

श्री गुरू पयान प्रसंग

दोहरा

संध्या होई आनि जबि तबि उमराव हकारि ।
कह्यो ववरची को भले 'खाना कीजहि त्यार ।। १ ।।

सवैया छंद

पीर अहैं उच वासी सय्यद जुगत मुरीदन[2] खाना खान ।
सुधि को देहु त्यार जबि होवै' सुनिओ गयो आपने थान ।
नाना बिधि के पाक बनायो आमिख आदिक जेतिक जान ।
तबि उमराव पठ्यो इक नर को 'जाहु पीर ढिग ल्यावन ठानि ।। २ ।।
ततछिन चलि सतिगुर ढिग आयो हाथ जोर करि कही सुनाई ।
'खाना खान पीर जी चलीअहि करति हकारन[3] थितउमराइ' ।
सुनि श्री प्रभु बोले तिस नर सों 'पीर नहीं खाने को खाइ ।
रोज़े रहति हमेश[4] इसी बिधि एक समैं इक जौं मुख पाइ ।। ३ ।।
जो मुरीद हैं संग हमारे सो आवहिं ए खाना खान' ।
सुनि करि गयो जाइ करि भाखी 'एव पीर ने कीनि बखान' ।
तीनहुं सिहन तबि कर जोरे 'किम हम बचैं कौन क्रित ठानि' ? ।
आप अहो समरत्थ सभी बिधि करैं तथा जस हुइ फुरमान' ।। ४ ।।
सतिगुर कह्यो 'न संसा कीजै सत्तिनाम को बदन अलाइ ।
पूरब भेट करद[5] की ठानहु वाहिगुरू कहि लिहु मुख पाइ ।
कितिक अहार बंध लिहु पाले सो समीप हमरे ले आइ ।
करहिं हकारन, अचहु अहारन, मंत्र उचारन करि तिस थाइं' ।। ५ ।।
तिह नर जाइ कह्यो उमरावहि 'रोज़े रहै सु पीर हमेश ।
इक जौं एक समैं मुख पावहि इम तन साध्यो रहै विशेश ।

1. अक्ल 2. शिष्य 3. पुकार करके 4. सदैव 5. कृपाण

संग मुरीद पंच से खावहिं हुकम करहु तौ ल्याइं अशेश'।
सुनिकै भन्यों 'जाहु तिन आनहुं लखियति पीर दीह दरवेश'[1] ॥ ६ ॥
पुन नर आयो पंच हकारे गुर के कहे करी परतीत।
उठि गमने पहुंचे तिस थल तबि ज्यों उमराव सथिरता कीत।
तुरक अपर केतिक हैं तिस ढिग गुर गाथा कहि अचरज चीत।
'लाखहुं लशकर जंग प्रहार्यो बिच ते निकसि गयो निरभीत[2] ॥ ७ ॥
सभिहिनि बीच बिठावन कीने खाने हित खाना अनवाइ।
बूझति वात 'पीर इह कैसो कित ते आइ कहा को जाइ ?
नबी ग़नी ख़ां सहति प्रशंशा तीनो सरब ब्रितत सुनाइ।
'महां मौज[3] के मालिक बिचरत नहिं कारज कुछ होति लखाइ ॥ ८ ॥
किसहि निवाजैं[4] पिखत प्रीत जिह किह को स्रापद अपदा पाइं।
मक्के जारत[5] करति भे कामन वली न को समताइ'।
इतने महिं खाना ले आए बडे रकेब भरे समुदाइ।
इक तो नबी ग़नी को दीनहुं दोनहुं आगे धर्यो बनाइ ॥ ९ ॥
दया सिंह अरु धरम सिंह को इक रकेब[6] दोनहुं को दीन।
इक रकेब उमराव लयो तबि मान सिंह अपने संग लीन।
अपर तुरक जुग जुग कै तीनहु ले रकेव को खावन कीन।
करद निकारी सिहन करि ले सत्तिनाम कहि फेरि प्रबीन ॥ १० ॥
मान सिंह तबि करद हाथि धरि बिच रकेब फेरी करि कार[7]।
तबि उमराव संदेह धारि करि हित बूझन के बाक उचार।
"इह क्या करहु करद तुम फेरहु मकरू[8] कीनो खान अहार।
तुरकनि बिखै कौन इम करता जिम तुम करी करद की कार' ॥ ११ ॥
सुनि करि मान सिंह दिय उत्तर 'जबि मक्के हम पहुंचे जाइ।
नई रसम निकली इह तहिंते सभि किछ लोहे ते बनि आइ।
अव्वल खाने मांहि करद छुहि पुन हुइ पाक[9] खान के भाइ।
तब के हमरे पीर बखान्यों —खानाखाहु करद नित छवाइ— ॥ १२ ॥

---

1. फकीर 2. सुरक्षित 3. प्रसन्नता 4. मान देना 5. यात्रा 6. प्लेटें 7. रेखा 8. निन्दनीय 9. पवित्र

तबि इम कहि करि खाना खायहु सिहनि आगै भयो कराहि ।
अरध रकेब मान सिंह दिश जो खाइ तिहावल तिस के मांहि ।
दिश उमराव हुयो तिम आमिख मक्खन करति लखहि किम नांहि ।
बिसमहि भए स्वाद पंचांम्रित गुरू कला प्रगटी इह आइ ।। १३ ।।

मान सिंह अरु धरम सिंह ने पाले बांध्यो कुछक अहार ।
पान पखार पानी ले करि, चलि आए सतिगुर अगवार ।
बूझयो 'आन्यो है कि नहीं किछ ?' दोनो दियो दिखाइ उचार ।
कह्यो गुरू 'संभारि राखीए हम जाचहिं तबि देहु दिखारि ।। १४ ।।

निसाबिख तम्बू महि सुपते गुर प्रयंक पर थिरे जगंति ।
भई प्रभाति चढ्यो तबि सूरज सय्यद आन्यों बोलि तुरंत ।
बासी नूरपुरे की शुभमति मगख़दा इके मिलनि चलंति ।
कई बार सतिगुर को मेली कृपा करहिं तिस पर भगवंत ।। १५ ।।

जो असवार हकारन गमन्यो तिह सगरी बिधि दई बताइ ।
इक प्रयंक पर हाजी सय्यद तांहि शाहदी[1] हेत बुलाइ ।
जानि गयो सगरी बिधि सो तबि–मैं गुर काज बिखै अबि आइ ।
धंन जनम मेरो सु क्रितारथ गन सुक्रित कोमल शुभ पाइ ।। १६ ।।

आयहु तुरत प्रवेश पौर इक तंबू लग्यो बिलोकन कीन ।
बिच[2] प्रयंक पर सतिगुर बैठे देखति करि चिनारी चीन ।
बंदन करनि चल्यो जबि सनमुख श्री प्रभु तिम को शारत[3] दीन ।
'हम समीप अजहुं नहिं आवहु तुरक सभा महिं पहुंचि प्रबीन ।। १७ ।।

जानि गयो श्री सतिगुर आशै हट्यो तुरंत ही अंतर ओर ।
जहां कचहिरी तुरकन केरी पहुंच्यो जाइ सु ताही ठौर ।
करी सलामालेकम बैठ्यो सादर सभि जहिं भए बहोर[4] ।
तबि उमराव बूझिबे लाग्यो 'इह सय्यद उतर्यो बिच पौर ।। १८ ।।

पूरब कित देख्यो कै नाहिन अहे पछान कि तुमरी नांहि ?
हिंदन को गुर बेस अपर धरि नहिं लशकर बिच ते कित जाहि ।
लाखहुं सुभट शाहु के मारे दल बिचलाइ दयो रण मांहि ।
अबि जीवति ही निकस गयो कित खोजति हैं तमाम[5] चित लाइ ।। १९ ।।

---

1. गवाही 2. में 3. इशारा 4. इकट्ठे 5. सारे

यांते इह हाजी अटकायो, चहैं शाहदी देहु बताइ।
पूरब मिल्यो बिलोक्यो जे तुम जानति हो कहीए समुझाइ।
भाखति[1]—मक्के हज्ज करि आए रोजा रख हमेश तपताइ[2]।
डालति मुख महि इक जौं, बिचरति मौज अपनी महिं हरखाइ' ॥ २० ॥

सुनि सय्यद बिच सभा उचार्यो 'इह तौ पीरन पीर महान।
मुख ते कहैं सफल हुइ तूरन, करहि निहाल, रिसे करि हान।
उर अचरज मैं इह अटकाए, तुम को स्राप न कीनि बखान।
कहै बाक तो प्रिथी उलट दें अति समरत्थ अधिक बलवान ॥ २१ ॥

तुम सों छिमा करी न कह्यो कुछ अपने भाग भले लिहु जान।
अनिक बार मैं परखनि कीने सफलहि सहजि सुभाइ बखान।
अलि बखशावहु बंद कदम तिन हाथ जोरि करि बिनै महान।
करहु खलासी[3] स्वेछा बिचरहिं, जामा पाक, जुहद[4] बड ठानि' ॥ २२ ॥

सुनि उमराव डर्यो उर अंतर ततछिन उठ्यो सहति नर ब्रिंद।
दरब पंच सै कहि अनवायो सय्यद संग आइ कर बंदि।
नमसकार करि बैठि गयो ढिग बिनती बोल्यो 'पीर बिलंद।
अटकावन की कीनि अवग्गया सो बखशहु तुम हो बखशंद ॥ २३ ॥

अग्ग पंच सै धरे रजतपण अपर सुभट तहिं भे समुदाइ।
सकल चढावन लगे दरब को पिखी सतिगुर मुख ते फुरमाइ।
'तुम को नहीं देश परबस हो, हमरो कहा घट्यो इस थाइं।
सुखसों निसा बसे थबि गमनैं, चितकी चितां देहु गवाइ ॥ २४ ॥

खुशी जानि अपने पर तिस छिन हाथ बंदि करि कहिं उमराइ।
'गमनहु इच्छा जहां तुमारी फेर दरस मो कहु दिहु आइ।
इम कहि उठ्यो गयो गढ अंतर श्री प्रभु पलंघ लयो उठवाइ।
तहिंते गमन कीन संग आछे चारहुं सिरधरि चले उठाइ ॥ २५ ॥

जबि कोसक पर पहुंचे गमनति तबि सय्यद मिलिबे हित आइ।
बंदन करी पदम सम कदमन 'श्री प्रभु ! मैं सभि कही बनाइ।
जे पशचात होइ कुछ निरनै तबि रावर कीच हों सहाइ।
नहीं अवग्गया करहिं तुरक मम, इम बांछति मैं आयहु धाइ ॥ २६ ॥

देखि दया निधि बिहंस बखान्यो, तुम को ताती लगै न बाइ।
जे उपकार करहि तन मन ते तिनके होति सहाइ खुदाइ।

1. कहते हैं 2. तप करते हैं 3. मुक्ति 4. तप

किसू वसत की कमी न होवे दरब अतोट खरच औखाइ।
कागद कलमदान जे तुम ढिग लिखहिं हुकम नामा[1] लिहु पाइ' ॥ २७ ॥
हमरे सिख संगति सभि मानहि कुलतेरी धनको नितपाए'।
सुनि सय्यद कागद तबि दीनसि लिख्यो हुकमनामा सुखदाइ।
ले करि कर धरि भयो प्रमोदति[2] बंदि कदम[3] को हट्यो सिधाइ।
श्री प्रभु चले प्रयंक अरूढे, चारहुं सिर पर लीनि उठाइ ॥ २८ ॥
केस पिछारी लरकति सुंदर, शाम चादरा ऊपर लीनि।
दीरघ शमश, पिराहन[4] गर महिं मुट्ठा मोर पंख को कीनि।
दया सिंह सिर पर कबि फेरति, चहुं पावन पर बंधि सु दीनि।
ऊपर छटीअन की करि छाया, चादर तानि करीहित चीन ॥ २९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पञटम रुते **'श्री गुरू पयान प्रसंग'** बरननं नाम सपतचतवारिसती अंशु ॥ ४७ ॥

1. आज्ञा पत्र 2. प्रसन्न होना 3. नमस्कार करना 4. जामा

अंशु ४८

श्री गुरू पयान प्रसंग

दोहरा

सने सने गमने प्रभु मारग चले कितेक।
ग्राम कनेच पहूच कै थिर ह्वै जलधि बिवेक ॥ १ ॥

चौपई

इक गुर सिक्ख बसहि तिस मांहि। जाट जनम फत्ता कहि तांहि।
निकट आइ तिन सतिगुर हेरे। करी चिनारी ह्वै तबि नेरे ॥ २ ॥
श्री गुर गोविंद सिंह पछाने। हाथ बंदि करि बंदन ठाने।
थिर्यो समीप बेठिगा जबिहूं। देखि प्रभू दिश बोल्यो तबिहूं ॥ ३ ॥
'सेवा करनि मोहि फुरमावौं। भोजनादि आनौं मैं, खावो।
अपर सेवा किस बिधि की होइ। कहीअहि आप करों मैं सोइ ॥ ४ ॥
श्री मुख ते भाख्यो[1] तिस बेरे। 'अह तुरंगन जो घर तेरे।
सो अबि आनि देहु हम तांई। चढि तिस पर गमनैं अगवाई ॥ ५ ॥
सुनि फत्ते चित बीच बिचारी। कहै कि 'आनौ आप अगारी।
इम कहि सदन आपने गयो। ततछिन ज़ीन निकारति भयो ॥ ६ ॥
अलप तुरंगन पर सो पाइ। लै आयो गुर ढिग सहिसाइ।
बड्वा बडी नहीं तबिआनी। लै जैं हैकित को मनजानी ॥ ७ ॥
धरो तुरकन न तजि आए। कै जानैं अबि कित चलि जाएं।
बडी तुरंगन बहु धन केरी। तिस देवे की शकति न मेरी ॥ ८ ॥
एव बिचारति गुर ढिग आयो। संग तुरंगन छोटी ल्यायो।
खरी करी जबि आनि अगारी। देखति सतिगुर गिरा[3] उचारी ॥ ९ ॥
सुनि फत्ता इह लघु टटवाणी[4]। नहिं अरू ढिवे[5] लायक जानी।
नहि असवारी हम किय ऐसी। ल्याइ दिखाई तै अबि जैसी ॥ १० ॥

---

1. कहा 2. न जाने कहां ले जाएंगे 3. बोले 4. टट्टू 5. ढूढ़ने योग्य

जो बडवा तुझ सदन वडेरी। तिस को ल्याउ, जाउ इस बेरी।
हाथ जोरि तबि जाट उचारी। 'मोर जमाता आइ अगारी ॥ ११ ॥
तिस पर ज़ीन पाइ चढि गयो। अबिलो हटे नहिं आवति भयो।
क्या जानैं सो कवि चलिऐ है। तबिलौ ठहिरन नहिं तुम ह्वै है ॥ १२ ॥
सुनति जाट ते गुर तबि कह्यो। 'क्यों बलाउ करिबेचित चह्यो।
कितिक दूर ते हम दे मारे। अगले ग्रामन ते ले ओर' ॥ १३ ॥
सुन फत्ते बोल्यो पुन कूर। कहउ साच मैं गुरू हजूर।
नहीं बलाउ करन को जानों। गयो जमाता लेकरि, मानो ॥ १४ ॥
श्री प्रभु रिस करि बाक उचारा। नहिं बड़वा नहिं तू इस बारा।
कूर कहिन ते देनहुं गए'। इम कहि सतिगुर चालति भए ॥ १५ ॥
तबि फत्ता गमन्यो घर मांहि। लघु बड़वा लेकर संग तांहि।
मन मैं कहैं बडी मैं राखी। नहीं देन हित कैसिहुं भाखी ॥ १६ ॥
जबि पहुंच्यो अपने घर जाइ। लघु घोरी को बंधि बनाइ।
अंतर वर्यो बडी जहिं खरी। डसी सरप सो ततछिन मरी ॥ १७ ॥
गयो तिमर महिं मरी न जानी। बैठी रही अपने मन मानी।
हेत उठावनि गोडा भार्यो। बार बार ते मुख ते टिचकार्यो ॥ १८ ॥
घोरी निकट सरप तहिं थिर्यो। ततछिन डसन जाटको कर्यौ।
'हाइ हाइ' करि बाहर आयो। द्वै घटिका महिं प्रान गवायो ॥ १९ ॥
इम मूरख को भयो बिनाशी। कह्यो झूठ सतिगुर के पासी।
चढे प्रयंक प्रभू तबि चले। श्याम चादरा ओढि बिसाले ॥ २० ॥
देखि देखि नर हिंदू तुरका। भेव[1] पछान सकहिं नहिं गुर का।
मोर पंख का मुट्ठा फिरै। 'है को बडो पुरख' लखि परै ॥ २१ ॥
आइ निकट को करिही। निशचै कोइ नहीं मन धरिही।
इसी प्रकार गमन ते आए। चलति ग्राम हेहर[2] नियराए ॥ २२ ॥
नबी गनी सन तबि गुर कहैं। इहां क्रिपाल उदासी रहे।
रवि असत्यो संध्या अबि होई। डेरा कर्यो चहैं थल सोइ ॥ २३ ॥
बहुत दूर ही अबि चलि आए। अग्र गमन अबि नहिं बनि आए।
इहा जामनी[3] बसहिं बितावैं। उठि प्रभाति को अग्र सिधावैं ॥ २४ ॥

---

1. भेद 2. एक गाँव का नाम 3. रात्रि

तुम भी इस थल ते हटि जावहु । मिलि बिरादरी निज दिखरावहु ।
आगे गमन सुगम ही अहै । जंगल देश गुरु सिख रहैं ।। २५ ।।
सुनति खान बोले तबि अरज़ी[1] । 'हम अनुसारि आप की मरज़ी[2] ।
जे हम बिन नाहिं सरै अगारी । हटि आवैं द्वै दिवस पिछारी ।। २६ ।।
जेतिक सेवा बनहि तूहारी । परम लाभ कल्यान हमारी' ।
इम बोलति मग उलंघयो सारा । थान उदासी पहुंचि निहारा ।। २७ ।।
सुनि कान महिं साध क्रिपाल । 'आनि पहूचे गुरु क्रिपाल' ।
उठयो शीघ्र ही बाहर आयो । चरन सरोजन[3] को लपटायो ।। २८ ।।
'उतरहु प्रभू आपको डेरा । मुझको जानि लीजीए चेरा' ।
करि बिनती उतराइ प्रयंका । ले अंतर को गयो निशंका ।। २९ ।।
उतरि परे कीन सिगुर डेरा । आइ साध सभि दरशन हेरा ।
करि करि बंदन बैठे पासी । कितिक लोक अरु साध उदासी ।। ३० ।।
तीन सिंह अरु दोइ पठान । कह्यो बाक श्री गुर भगवान ।
'मान सिंह ! तुम निशा मझारा । गए हुते हित करन अहारा ।। ३१ ।।
तबि हम तुम संग भाख्यो जैसे । है कि नहीं मन सिमरन तैसे' ।
तबि तीनहूं कर जोरि बखाना । हुकम मान पाले बंधि आना ।। ३२ ।।
सिमरन रावन कर्यो न कोई । बंध्यो रह्यो अबिलौ निम सोई ।
हम तीनहुं ने बांध्यो पाले । हुकम होइ तौ देहिं दिखाले ।। ३३ ।।
सुनिकै श्री मुख ते फुरमाई । 'अबि सभि ही को देहु दिखाई ।
क्या तुम खायो जान्यों जाइ ? संसे[4] तुमरे उर ब्रिनसाइ ।। ३४ ।।
तबि तीनहुं खोलन करि पाले । धरि करतल[5] पै सभिनि दिखाले ।
'स्वाद तिहावल निस महिं खाए । अबि परखहु तिस महिं ते ल्याए ।। ३५ ।।
हेरि सरब ही कहैं 'कराहू । संसे कहां करहु इस मांहू ।
श्री गुर अरु नर साधु उदासी । देखति संसै कीन बिनासी ।। ३६ ।।
नबी ग़नी खां को तिस काला । लखि करि सेवा प्रसंन बिसाला ।
कंचन कंकन जरे जरावन[6] । बखशन करे रिदे हरखावन ।। ३७ ।।
बहुर पटा कागत लिख दीन । सभि संगत पर आग्या कीनि ।
'इनहुं करी मम सेवा बिलासा । सिख ! मानहु इनको सभि काला ।। ३८ ।।
संगति देहि सेव मम सटा[7] । करे बिदा लिख दीनसि पटा ।
अधिक अनंदे बंदन करिकै । गमने पुनहि पिछारी मुरिकै ।। ३९ ।।

---

1. विनय 2. इच्छा 3. कमल 4. सन्देह 5. हथेली 6. जड़े हुए 7. बदला

तीनहुं सिह संग तवि रहे। साध क्रिपाल देखि इम लहे।
चाहैं रह्यो अबै थल मेरे। होइ परहिंगे अधिक बखेरे ॥ ४० ॥
बराबाद डेरा हुइ जाइ। नीठ नीठ[1] मैं कीन बनाइ—।
तुरक त्रास ने भरमति डोल्यो। रह्यो न द्रिढ निस महिं इम बोल्यो ॥ ४१ ॥

सुनिअहि सतिगुर दया निधान। इन ग्राम महि तुरक महान।
हलवा रेड़ा अरु तलवंडी। मुसलमान के पिंड अखंडी[2] ॥ ४२ ॥
रहैं हज़ारहुं, सुनि सुधि जबै। चढि आवे गन तूरन तबै।
भो ते नहिं किम राखे जाइं। यां ते लखहु न रहिबे थाइं ॥ ४३ ॥
लंमे ग्राम आप चलि जाईए। सो राखहिं तुम को करि दाईए[3]।
नर सु हज़ारहु दादे पोते। लरिबे दिढ डर धरहिं न कोते[4] ॥ ४४ ॥

सुनि करि तिस प्रति गुरू अलावहिं। तुरकन तै हम को डर पावहिं।
तिन को सदा रहे ही मारति। तूं तिन के डर ते हुइ आरत ॥ ४५ ॥
हमरो निशचा तुम उर नासा। यांते तुरक देहि तुझ त्रासा'।
इम स्रापत किय साध क्रिपाल। निस बिताइ करि तहां क्रिपाल ॥ ४६ ॥
चलिबे हेत करी तब त्यारी। इक क्रिपाल को साध भंडारी।
पैसे पंच हाथ महिं ल्यायो। करि आगै निज सीस झुकायो ॥ ४७ ॥
तबि सतिगुर तिस को कर गह्यो। बंधि मुशट दिढ' श्री मुख कह्यो।
'अधिक ज़ोर ते गाढी कीजै। नहीं खज़ाना खोलन कीजै ॥ ४८ ॥
सुनि क्रिपाल बूझयो बंदि हाथ। 'राखन ही भाख्यो अबि नाथ!
कबहूं खुलहि सो भी बच कहीए। करुना करति इनहुं पर रहीए ॥ ४९ ॥
श्री मुख कह्यो सुनहु सो कान। दसम गुरू बच कीन बखान।
"तुव गादी[5] पर दसमो थिरे। सुऊ खजाना खोलनि करे ॥ ५० ॥
कहै कत्री अबि लौ सो धरैं। नहीं कोश ते खरचन करैं।
पंच ग्राम के तबहि बुलाए। कह्यो कि 'मंजा[6] लेहु उचाए ॥ ५१ ॥
सुनि चारहुं ने पलंघ उठावा। गमन कीनि डेरे निकसावा[7]।
गुरू कह्यों 'इक दिश ते नीवों। सम हुइ चलहु न बिखमी[8] थीवो ॥ ५२ ॥
कहि राहक 'छोटा मम तन है। त्रै लांबे, यांते अनबन है'।
सुनि श्री मुख ते वाक उचारा। सम बन जाहु जिनहुं सिह धारा ॥ ५३ ॥

---

1. मुश्किल से 2. सारे ही 3. विश्वास 4. किसी से भी 5. गद्दी 6. चारपाई 7. निकल पड़े 8. दुःखी

भयो बचन ते तिन सम ततछिन । देखि सकल तबि बिसमति बहु मन ।
लग्यो क्रिपाल पंच सिर धारे । सिंह संग हुइ पंथ पधारे ।। ५४ ।।
इक जट्टी[1] भट्टी तिस नाइ । तर पयंक सिर दीनसि धाए ।
पिखि गुर भाख्यो 'देहु हटाई । क्या मांगति बूझहु इस ताईं ?' ।। ५५ ।।
दया सिंह तबि करी हटावन । 'क्या जाचहि कहु करीअहि पावन ।
सुनि करि बोली उर अहिलादी । 'कहो मोहि सुत की हुइ शादी' ।। ५६ ।।
तबि गुर भन्यों 'बस बिरधै है । सपत सपत शादी करवैं हैं' ।
हटी सु रिदे अनंदहि धरे । तिह सुत तीन ब्याहु पुन करे ।। ५७ ।।
पोत्रे सपत व्याहु करिवाए । सो हम देखे लिखे बनाए ।
इम सतिगुर के स्राप किधौं बर । बिदत[2] जानी यहि जहिं कहिं धरि पर ।। ५८ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'श्री गुरू पयान प्रसंग'** बरवनं नाम अशटचत्तवारिंसती अंशु ।। ४८ ।।

1. जाटिनी 2. विदित

अंशु ४६

राइ कल्ले को प्रसंग

दोहरा

आगे गमने सतिगुरू उलंघे केतिक कोस ।
जगरावां पुरि कोट को राइ[1] हुतो बड होश ॥ १ ॥

निशानी छंद

जनम तुरक हिंदू धरम जिन धारन कीना ।
दया धरम पुंन्यातमा शुभ मग मन भीना[2] ।
सकल भेव गुरदेव को सुनि सेव उमाहा[3] ।
लै सैना संग तीन सै चलि दरशन चाहा ॥ २ ॥
आइ अगारी सो मिल्यो अविलोको स्वामी ।
नीले बसत्र प्रयंक पर थिर अंतरजामी ।
तज्यो तुरंगम दूर ही पाइन सों आयो ।
हाथ जोरि सनमुख गयो बहु सीस निवायो ॥ ३ ॥
कदम पदम सम सुखसदम परसे[4] कर दोऊ ।
बदन बिलोचन भाल पर फिर फेरति सोऊ ।
'आप साथ ! रण गाथ बड हे नाथ असंभै[5] ।
तऊ बिलोकि बहादरी सभि तुरक अचंभै ॥ ४ ॥
करामात साहिब बडे समरथ सभि भांति ।
चहो बनावो छिनक महिं अनबन बनि जाती ।
नर लीला कलिकाल की करि जग दिखरावो ।
हरख शोक नहिं ब्याप ही तिल लेप न लावो ॥ ५ ॥
हम लोकन को दीखती जबरी[6] तुरकेशा ।
कर्यो बुरा तिन अपन सभि, तुम सों रचि द्वैशा ।

---

1. चौधरी 2. सिक्त करने वाला 3. खुशी 4. छू कर 5. असंगत 6. धक्केशाही

सुनिकै श्री मुख ते कह्यो 'इम होवनहारी ।
मिटति न कोट उपाव ते नर ह्वै के नारी ।। ६ ।।
माननीय सभि सीस पर सुर असुरनि केरी ।
नर बपुरे[1] की कहां गति जो फेरै हेरी ।
बहुर कह्यो श्री बदन ते 'सुनि कल्लाराऊ ।
हय अरूढि गमनीजीए कुछ चलैं अगाऊ ।। ७ ।।
मानि हुकम को हय चढ्यो पुन सतिगुर प्याने ।
लंमेग्राम पुन पहुंचके बच राइ बखाने ।
उतरहु करहु अराम कुछ आए बहु दूरी ।
मुझ पर करुना कीजअहि द्रिशटी दिखि रूरी[2] ।। ८ ।।
लंमेग्राम थिरीजीए आयहु मैं संगी ।
बैठि बितावहु समा कुछ सम पुरहु उमंगी' ।
सुनि करि बोले सतिगुर 'को शीघ्र बिसाला ।
सुधि को ल्याइ सिर्हंद ते मग जाइ उताला ।। ९ ।।
तबि लग थिर इस थ्ल रहैं, पुन जाइं अगाऊ ।
माता ,गुजरी उत गई मग पाइ न काऊ'[3] ।
कहि कल्ला 'श्री प्रभु ! सुनहु : दस जोजन जानहुं ।
पुरि सिर्हंद इस थान ते सभि करौं बखानहु ।। १० ।।
बनहि न जान सऊर[4] क लखि तुरक पछानै ।
इक माही हमरे रहै सो इतो पयानै ।
हुकम करहु भेजैं तिसे दस जोजन जावै ।
दिवस दूसरे तितिक चलि सुधि आनि सुनावै' ।। ११ ।।
'पठहु तिसै' श्री गुर कह्यो 'सो शीघ्र पयानै ।
सुधि ले करि पुरि बीच ते पहुंचै इस थानै' ।
इम कहि कै श्री बदन[5] ते उतराइ प्रयंका ।
थिरे तिसि थल महिं तबै गुर हीन अतंका ।। १२ ।।
पठ्यो हकार सु माहखी[6] 'चल शीघ्र' सिखायो ।
'बखशहिं धन बिन बिलम जे पहुंचहिं मग धायो' ।
हुतो सभा तबि प्राति को गमन्यो जबि माही ।
बायु बेग ते शीघ्र चलि धावो मग मांही ।। १३ ।।

---

1. बेचारा 2. सुन्दर 3. कोई पता नहीं 4. अक्ल 5. मुख 6. चरवाहा

सभि लशकर तुरकान को पसर्यो तबि चाला।
पुरि सिरहंद[1] डेरे गए बिसमंति बिसाला।
केचित कहैं 'न गुर लह्यो नहिं किनहूं हेरा।
गयो सभनि के बीच ते गुर बीर बडेरा'॥ १४॥

केचित कहिं 'रण महिं मर्यो नहिं देख्यो जाई।
लाखहुं लोथनि बीच ते कहु किस बिधि पाई'।
इत्यादिक बहु बारता मिलि तुरक करंते।
सगरे गए सिरहंद को बहु शौक बधंते[2]॥ १५॥

पुरि पुरि घर घर रुदन ह्वै जहिं के नर मारे।
चचा भतीजा सुत पिता किह भ्रात संहारे।
ससुर जमाता सुसा सुत बहिनोई सारे।
केचित मातुल[3] भाणजे बंधप हति डारे॥ १६॥

जहिं कहिं जाति सुनावनी पीटहिं मिलि नारी।
निज सनबंधी सिमर करि गुन गनन उचारी।
दिल्ली आदिक उत नगर इत लवपुरि रोवैं।
कावल अरु कंधार लग मन कशट परोवैं॥ १७॥

मनहुं शोक कंजर भयो गन बांधि अखारे।
निरति करावति थान बहु तुरकन घर सारे।
देति तलीमा[4] नाइनी गावति से गीता।
'ओह ओह' 'है है' कहनि इह, इम ताल पुरीता॥ १८॥

भाल रु छाती उरू पर लग हाथ बजंते।
करति जाति इक गत सकल नहिं गन बिचलंते।
उठति नाद रोदन बडो धुनि गति बिसाली।
जमकी हेतु प्रसंनता म्रितु कीन खुशाली[5]॥ १९॥

जहिं बासा तुरकान को तहिं शोक पसारा।
मनहुं जीत इस देश को बिच सेल सिधारा।
मीएं मरे हज़ार ही रण अर राजे।
गिरबासी[6] रोदति घने रस करना साजे॥ २०॥

---

1. सरहिन्द 2. शोकाग्रस्त 3. मामा 4. शिक्षा 5. खुशहाली 6. पहाड़ों के वासी

इम अवनी तल शोक भा जहिं कहिं सुधि जाई।
लशकर गए सिर्हंद को बोलति बिसमाई।
गुर सों लरन क्यामति अहु भट पुंज खपाए।
तऊ न पकर्यो किनहुं रण हति सुभट सिधाए ।। २१ ।।

इत्त्यादिक सभि देश महिं पसर्यो बड रौरा।
रोदति पीटति कशट बड जग ठौरहिं ठौरा।
तबि माही गमन्यो गयो सीरंद पुरि मांही।
सुधि सगरी को सुनति भा बीती जिम आही ।। २२ ।।

सतिगुर थिरे प्रभाति ते बैठे ढिग राऊ।
करहिं जुद्ध की बारता 'जढ़ तुरकन राऊ'[1]।
सचिव आदि गन राइ के कहिं राइ तरीफं[2]।
'श्री गुर इह धरमातमा हति दुशट हरीफं[3] ।। २३ ।।

नगर तिहाड़ा वड बसै लाखहुं नर जांही।
हुते तुरक तहिं दुशट बड़ निशचै अघ मांही।
गोबध पापी बहु करहिं सनि कल्लाराऊ।
पाप समीपी होनि ते मन सहि न सकाऊ ।। २४ ।।

चमूं बटोरति चढि चल्यो धौंसा धुंकारा।
नगर तीर तबि पहुंचिकै किय जंग अखारा।
निकसि वहिर पूरब लरे इन हमला घाला।
करे कतल पिखि भाजिगे बिच लरे बिसाला ।। २५ ।।

लाइ मोरचे नगर को पुन मंडि लराई।
निकसि न आइ प्रवेश ते घेरे चहुं घाई।
इक संमत लरते रहे पुन भए लचारी।
मिलन हेत करि त्रास को बातैं बिच डारी ।। २६ ।।

—कहहु राइ तुम क्यों लरहु कुछ लैन न दैना।
नाहक बिनसैं[4] आदमी दुहिदिश की सैना—।
राइ कह्यो—गोवध तजहु इस कारज हेता[5]।
मैं खरच्यो लाखहुं दरब रण रोस समेता—।। २७ ।।

1. राजा 2. स्तुति 3. शत्रु 4. समाप्त होना 5. के लिए

सुनि बोले लाचार हुइ—हम ने अत्रि मानी।
आगे नहिं गोबध करहिं सच लीजहु जानी—।
राइ कहै—दिहु जामनी[1] तुम कौ तत्रि त्यागों।
नांहित करिकै जंग वल बाढन[2] सभि लागौं॥ २८॥

बीन बीन सभ को हतौं जर खोज मिटावौं।
बहुर करहिं नहिं पाप इम अस पुरख वसावौं—।
कहिं अन्तर के त्रास धरि—को जामन होवैं।
अस पय्यति नहिं निकट को त्रिच आनि खलोवै॥ २९॥

अपर नही लखियति इहां हम सकल बिचारें।
इक सुतद्धर्व दरियाउ है बिच आइ हमारे।
चहहु जि लीजहि जामनी चलीअहि तिस तीरा।
लिखि कागद हम देहिंगे सापर सैं नीरा—॥ ३०॥

भनी दुशट जिम बारता मानी तिम राऊ।
सपति कोस तहिं ते हुते गमने तिस थाऊ।
बैठि प्रथम पूजा करी सभि बिधि दिश दोऊ।
बहुर लिखी तहिं जामनी जैसी बिधि होऊ॥ ३१॥
जं हम गोवध करहिंगे दंडहु दरिआऊ !—।
इत्यादिक लिखवाइ करि हरख्यो तत्रि राऊ।
कागद ले करि पुरि अपनि आयहु पुन बासा।
नगर तिहाड़ा वड बसै चहुं वरन खुलासा[3]॥ ३२॥

सुनीअहि श्री प्रभु सतिगुरू ! इक बरख त्रितावा।
बहुर एक गोत्रध करी बड पाप कमावा।
सुनी राइ जबि बारता, दरिआउ अराधा।
तुम जामन इस बात के इह दुशट असाधा[4]॥ ३३॥
निरवारहु निज ज़ामनी दिहु दंड विसाला—।
भई आन जबि जामनी—कहिते इस ढाला[5]।
—सपत कोस सतुद्धरव हुतो ढाह न तट लागे।
पहुंच्यो पुरि के निकट लौ नर नारिनि जागे॥ ३४॥

---

1. गवाही 2. कत्ल करना 3. खुला 4. दुष्ट 5. रात्रि हुई

बने सदन गिरने लगे ढाहति जल गेरे।
केतिक नर त्रिय बहि गए भा रौर बडेरे।
औचक जल कहिं ते अयो कुछ जाइ न जाना।
दरब आदि घर वसतु गन विच जल के नाना ॥ ३५ ॥
निसा अंधेरी नारि नर भाजे उतलाए।
नहिं दीखति जन महिं गिरे सभि दिए बहाए।
नगर सगर घर घर वगर दरिआउ विदारे।
केतिक बचे पलाइ[1] करि केतिक विच मारे ॥ ३६ ॥
कोसन महिं जो वसत थो सभि दीन बहाई।
इम सतुद्धरव निज जामनी न्रिप उतराई—।
स्री गुर तुमरी क्रिपा ते इम राइ कल्लेरा।
करति सदन सतिसंग को करि 'पुंन बडेरा' ॥ ३७ ॥
सुनि करि श्री सतिगुर कह्यो 'आछ पद पैहे।
नहिं सज़ाइ परलोक महिं नीके मग जैहै।
साध साध इस को करम सतुद्धरव भी माना'।
सुनि करि कल्ले राइ तवि अभिबंदन ठाना ॥ ३८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते 'राइ कल्ले को प्रसंग' बरननं नाम एकऊनपंचासनी अंशु ॥ ४९ ॥

1. भाग कर

अंशु ५०

माता गुजरी सिर्हंद आवन प्रसंग

दोहरा

वैठे, माही के गए, बातैं करति विताइ।
भयो दुपहिरा आन करि थिरि प्रयंक[1] सुखदाइ ॥ १ ॥

निसानी छंद

निकट राइ कल्ला थिर्यो त्रै सै भट साथा।
अपर लोक थिर सैंकरे दरसति हैं नाथा[2]।
भीर अहै बहु नरनि की, थिर दूरहिं दूरी।
आनि आनि वंदन करहिं पिखि मूरत रूरी ॥ २ ॥
देखि दुपहिरे दिशा गुर श्री बदन[3] बखाना।
'सुनहु राइ कल्ला ! अबै माही प्रसथाना।
पहुंच्यो आइ कि नहीं सो देखहु तिस घाईं[4]।
वीत गए दो पहिर तिह आवहि करिधाईं' ॥ ३ ॥
बोल्यो कल्ला जोरि कर 'किय गमन सकारे।
पहुंचहि चाली कोस सो चलि बासुर सारे।
अगले दिन पहुंचै इहां सभि बात बतावै।
मारग अस्सी कोस को बल के जुतिआवै' ॥ ४ ॥
सुनि तूशन गुर हुइ रहे कहिं और प्रसंगा।
जथा गिरेशुर भीमससि मचवायहु जंगा।
'बाई धारनि के पती बड चमूं बटोरी।
सभि इकत्र मति को करे आए हम ओरी' ॥ ५ ॥
द्वै घटका बीती बहुर इत्यादि कहंते।
अकसमात्र श्री सतिगुरू इम बचन भनंते।
'मनुज चढावहु तरू पर मग देखहि सोई।
आवत माही कै नहीं सुधि पावहिं जोई' ॥ ६ ॥

1, पालकी 2. गुरु 3. मुख 4. ओर

पुनहि राइ कल्ला कहै 'पहुंच्यो भि न सोऊ।
कहां होइ आगवन अब्रि क्या तुर पर जोऊ।
संध्या अगले दिवस ही होवति सो आवै।
थिरहि न पुरि अरु मग बिखै तूरन ही धावै'॥ ७॥

सुनि पुन गुन गन खानि गुर परचे अन[1] खयाला।
डूढ पहिर दिन जबि रह्यो बैठे तिसकाला।
वाक तीसरो कहति भे सभि बिखै सुनायो।
'चढो ब्रिच्छ माही पिखहु आयो कि न आयो ?'॥ ८॥

सुनति राइ कल्ला कहे निज नरनि मझारा।
'पुरशोतम पूरन पुरख त्वै वारि उचारा।
कहां हमारो खरच हुइ चढि तरु पर हेरो।
बचन साच इन को सदा निशचै बहुतेरो'॥ ९॥

इक नर तरु पर तुरत ही कहि राइ चढायो।
चढि करि तुंग सकंध[2] पर सो मगदर सायो।
माही आवति दूर ते तिन देखनि कीना।
बिसमावति बोल्यो तबै 'आयहु मैं चीना'॥ १०॥

निकट पहूंच्यो जबि लगो रहि देखति सोऊ।
उतर्यो तरू पर ते तरे सुनि करि सभि कोऊ।
गमन्यों जोजन बीस मग, मन महिं बिसमाए।
करामात[3] साहिब गुरू अचरज दिखराए॥ ११॥

इतने महिं माही अयो करि बंदन बैसा।
कह्यो 'सिरंद ब्रितंत को देख्यो तहिं कैसा ?'
हाथ जोरि करि तबि कह्यो 'जुग साहिबजादे।
महां मलेशन हति दए करि दीरघ बादे[4]॥ १२॥

पुनहि राइ कल्ले कह्यो 'बिछुरे गुर संगा।
तहि ते कित पकरे गए किम भयो प्रसंगा।
सरब छोर[5] ते अतंलो अबि देहु सुनाई।
जिस हित श्री सतिगुर थिरे कहिअहि समुझाई॥ १३॥

तबि माही कर बंदि करि बिच सभा उचारी।
'सुनहु प्रभू ! ब्रिछरे जबै इक ब्रिप्र अंगारी।

1. दूसरा 2. टहनी, शाखा 3. चमत्कार 4. लड़ाई 5. प्रसंग

संग मात के कपट करि ले ग्यो निराला ।
पहुंच्यो अपने ग्राम ले धरि लोभ बिसाला ॥ १४ ॥
स्यंदन महिं माता हुती द्वै साहिबज़ादे ।
इक खच्चर इक दास हित दीनारनि लादे ।
विप्र उतारे सदन महिं सभि वसतु उतारी ।
ग्राम नाम खेड़ी हुतो दिज अधम कुचारी ॥ १५ ॥
कुछक मसदी भी करि इस हेतु चिनारी ।
अधुर वाक कहि ले गयो धन संग निहारी ।
खच्चर पर खुरजी तकी दीनारनि केरी ।
विसरामे बहु थकति भे चलि बाट बडेरी ॥ १६ ॥
आंख बचाइ उठाइ करि लैकै घर मांही ।
दात्री अवनी के बिखै जिम जानहिं नांही ।
कितिक बेर महिं आनि करि बोल्यो दिज पापी ।
—लोक ग्राम के चोर हैं सुचिती रखि आपी ॥ १७ ॥
वसतु संभारहु आपनी मैं भाखि सुनावौं ।
दोश न दीजै मोहि को सभि भेद बतावौं— ।
दास गयो थो वहिर को सो तिस छिन आयो ।
तिमर भए ते वसतु सभि संभारन लायो ॥ १८ ॥
तबहि दास कहि मात को—खुरजी[1] विच नांही ।
बसत्र आदि सभि हैं धरे—माता सुनि प्राही ।
—दिज घर महिं को अपर नहिं, हम हैं, कै सऊ ।
धरी होइगी बूझ तिह, अंतर कित होऊ ॥ १९ ॥
सुनिकै बूझ्यो दास दिज :—खुरजी तैं लीनी ?
हेत संभारनि के धरी अंतरगति कीनि— ।
सुनति दिजाधम[2] कुमतिमन ऊची धुनि भाखे ।
—इह मुझ को गुन तुम कर्यो मरते मैं राखे ॥ २० ॥
पतिशाही नवरंग की नहिं दूशन लावो ।
आनि गहैंगे तुरत ही मुझ चोर बनावो ।
क्या फल आगे करहुगे मैं जियत बचाए ।
अबि मुझ के इतबार नहिं निकसहु उतलाए ॥ २१ ॥

---

1. बुर्जी में 2. नीच ब्राह्मण

सुनहिं जि नर गुर मात है इन घर महिं राखे।
तबै तुरक दें कैद करि, गुर पर बहु माखे।
तुव नंदन मारे घने नहिं करी भलाई।
जीत्यो चहि बदशाह सो नित्त धूम उठाई।। २२।।
मैं जु उतारे आनिघर[1] लाइस तौ चोरी।
क्यों न जाहु जित को चहो अबि लौ थिति थोरी—।
ऊची धुनि ते बोल भा बहुनरनि सुनावै।
पौत्रसंग ले मात गुर कित डरति पलावै[2]।। २३।।
तऊ कूर[3] नहिं रहि सक्यो चहि—दिओं गहाई।
सभि दीनारनि[4] कौ रखउंको नहिं न लखाई—।
ऊचे बोलति ग्राम महिं गमन्यों सहिसाई।
जहां चौधरी को सदन तहिं जाइ जनाई।। २४।।
तिस'को ले करि संग महिं गिनती इम कीनी।
—चलहु बतावहिं मोरंडे सभि भेव जु चीनी।
लें इनाम धन तुरक ते दे बहु बडिआई।
गुर अरिकी माता तनु जगहि कै हरखाई—।। २५।।
इम सलाह दोनहुं करी तूरन तबि धाए।
तहिं सैना कुछ तुरक की खोजन हित आए।
ग्राम मोरंडे पहुंचिकै दोनहुं अघवंते।
सैनपती के निकटगे हित कहिन ब्रितंते।। २६।।
—सुनहु मीआं जी! बखशीए कुछ हमै इनामा।
गुर की माता पुत्र द्वै ल्याए निज धामा।
चलहु आप गहि लीजीए नहिं देरि करीजै।
हज़रत[5] ढिग ले पहुंचीए तहिं बखशिश लीजै—।। २७।।
सुनति चमूं हय[6] ज़ीनधरि गमने उतलाए।
पोईए पाइल पावते तूरन चलि आए।
सुनहुं गुरू जी! मात जुति दो साहिबज़ादे।
स्यंदन लए चढाइ तबि मूरख करि बादे।। २८।।
पुरि सिर्हंद को ले गए मग उलंघ्यो सारा।
सूबा खान वजीद जहिं उतर्यो दल भारा।

---

1. दूसरे के घर 2. भागना 3. झूठा 4. मोहरें 5. श्रीमान् 6. घोड़ा

तिह को कह्यो—नबाव जी ! हम गहि करि ल्याए ।
गुरू गोबिंद सिंह मात है द्वै पुत्र सुहाए ।। २९ ।।

निसा बिखे आए चले पहुंचे हुइ प्राती—।
कह्यो नवाब—उतारीए जहिं बुरज इकाती ।
रहैं सिपाही खरे तहिं राखहु तकराई—।
पुरि नर सुनि सुनि दौर करि आवति समुदाई ।। ३० ।।

देखहिं बूझहिं विप्र को सभि गारि निकारैं ।
—धिक ध्रोही क्रितघनी जड़ क्या लह्यो पुकारै ? ।
श्री गोबिंद सिंह जगत गुर दाता सभि स्वामी ।
तिनके सुत गहिवाइ करि भा लूणहरामी ।। ३१ ।।

लखहुं जीउ उधारिकै हिंदुन की राखी ।
दीनो सिर जिन के पिता अरि जर हरि कांखी ।
चरन कमल सुर असुर गन पूजहिं जिन केरे ।
रिखि जोगी उर ध्यान धरि गति लहति अछेरे ।। ३२ ।।

तिन के संग अधरम करि दुर करम कमायो ।
नाक सकोरहि नरक भी सहि सकहि न पायो ।
कुंभी नरक पपात ह्वे, तहिं जीव तपै हैं ।
तुझ सम पापी दुतिय नहिं वड संकट सहिहैं ।। ३३ ।।

विप्र जनम चंडाल क्रिति क्या कीनि कसाई !
—लाखहुं बार धिकारते—लहिं अधिक सज़ाई ।
इम पुरि जन गन तहिं मिले होई बड भीरा ।
साहिबज़ादे जुग पिखैं बहुरूप सरीरा ।। ३४ ।।

सभि को तबै हटाइ करि ले गए तहां ही ।
बुरज बिखे[1] उतरे थिरे जननी दुख मांही ।
जहां बिठाई बैठिगी ढिग पौत्र बिठाए ।
तुरकनि की परि कैद महिं चितवति पछुताए ।। ३५ ।।

कहां होइगी बारता अरु कहां करैंगे ? ।
परे बसी महिं आनिकै पिखि कोप धरैंगे ।
सुत की मानी बात नहिं तौ अपदा[2] पाई ।
भए क्रोध क्रित विछुरिगे, जिन सुधि नहिं काई ।। ३६ ।।

1. में 2. मुसीबत

रहति दुरग महिं लरति जबि सुत कहति बचना[1] ।
सपत दिवस महिं सकल सुख हम किय न अमंना[2] ।
आप आप बिछुरे कितहुं सगरे परवारा ।
कहां होइ हैं श्री गुरू—ले स्वास उदारा[3] ।। ३७ ।।

रिदे बसूरति मात बहु ले पौत्रनि अंका[4] ।
बारि त्रिलोचन ते मुचति लहि रिपुनि अंतका[5] ।
पुरि महिं घर घर बारता पसरी सुधि सारे ।
आइ हज़ारहुं हेरते करि हाहाकारे' ।। ३८ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'माता गुजरी सिर्हंद आवन प्रसंग'** बरननं नाम पंचासमे अंशु ।। ५० ।।

1. बचन 2. न माना 3. लम्बा 4. गोद में 5. डर

अंशु ५१

श्री जुझार सिंह बाक प्रसंग

दोहरा

'खान वजीदा निकसिकै आयो सभा सथान।
ब्रिंद चंमूपति मिलि गए बैठे भले महान' ॥ १ ॥

चौपई

'सुनि प्रभु' माही करहि बतावन। 'इक सिख मोकहु कीन सुनावन।
जथा जोग मैं बूझि ब्रितंता। 'सो तुम पास भनौं' भगवंता ॥ २ ॥
मुगल पठान दिवान महाना। आन थिरे जहिं सभा सथाना।
दूर दूर लगि गिरद सिरंद[1]। हुते तहां मिलि बैठे ब्रिंद ॥ ३ ॥
हिंदू खत्री बनक कितेक। पुरि जन देखनि हेत अनेक।
भई सभा महि भीर बिसाला। बैठे जाल[2], खरे नरजाला ॥ ४ ॥
रंधर ग्राम मोरंडे वासी। सो सरदार हुतो दल पासी।
तिस की दिशा करे तबि नैना। बोल्यो तबि बज़ीद खां बैना ॥ ५ ॥
पुत्र गुरू के जहां बिठाए। तहिं ते ले आवहु इस थाएं।
सादर म्रिदुल बाक कहि करिकै। देहु दिलासा लेहु सिधरिकै[3] ॥ ६ ॥
मोरंडेश सुनि करि तहिं गयो। दादी पौत्र बिलोकति भयो।
निकट पहुंचि बोल्यो—सुनि भाई! सभा नवाब लोक समुदाई ॥ ७ ॥
तिन सभिहूंनि हेरिबे कारन। गुर सुत दोनहुं करे हकारन[4]—।
सुनति मात कंपति दुख पायो। रंधर संग बाक इम गायो ॥ ८ ॥
गुर के पुत्र गए तिन संग। सुधि न तिनहुं की भा किम ढंग।
इह जुग बारिक पारिक मेरे। बहु प्रति पारे कीन बडेरे—॥ ९ ॥
सुनि रंधर ने जाइ सुनाई। पारिक[5] मेरे भाखति भाई—।
सुच्चा नंद खत्री इक नीच। बैठ्यो तहां सभा के बीच ॥ १० ॥

1. सरहिन्द के आस पास 2. बहुत 3. जा कर ले आओ 4. बुलाए हैं 5. बच्चे

सुता संबंध करति गुर घर मैं। दियो हटाइ सु प्रथम झगर मैं।
यां ते द्वैश करैं गुर संग। सुनति सभा महिं कह्यो कुढंग ॥ ११ ॥
पतिशाही लशकर गन गारा। नहिं पौत्रनि तबि प्यार बिचारा।
अबि करि त्रास कहै इस पारिक। गुर के पुत्र बिदति ए बारिक ॥ १२ ॥
खान वजीद कह्यो—अबि जाउ। दोनहुं गुर नंदन[1] को ल्याउ।
माता संग कहो समुझाए। हेत बिलोकन सभा बुलाए ॥ १३ ॥
अपर[2] बात कुछ करैं न कोई। तुझ ढिग[3] ही पहुचावहिं दोई—।
मोरंडेश रंधर पुन आयो। निकट मात के होइ अलायो ॥ १४ ॥
पिखहि नबाब पठावै फेर। चाहति सभा बिखे इक वेर—।
जुग जानू[4] पर थिर। निज पट ते आछादान तिन करि ॥ १५ ॥
बैठी हुती मात बहु नेहू। बारि बिलोचन बह्यो अछेहू।
तबि जुझार सिंह हुइ सवधान। दादी पट को गहि निज पान ॥ १६ ॥
निज उपर ते कर्यो उतारनि। उठि ठांढे हुइ कीन उचारनि।—
क्यों दादी तूं करहिं बिखादा[5] ? तुरकनि संग सदा हम वादा[6] ॥ १७ ॥
अबि नहिं जाहिं कहां बनि आवैं। यां ते उचित सभा महिं जावैं—।
फते सिंह को लै करि साथ। चले गुरूसुत जिम निसनाथ[7] ॥ १८ ॥
सुंदर बदन म्रिदल जिन अंग। चपल बिलोचन चारू रंग।
संमत अलप बेस[8] है जिन की। सुंदर आभा दोनहुं तन की ॥ १९ ॥
झगली झीन झमक लगि ज़री। अंग बिभूखन बिन दुति खरी।
गमने दोनहुं बीर अगारी। रंधर चाल्यो तिनहुं पिछारी ॥ २० ॥
सभा समीप पहूचे जाई। मोरंडेश कहि सभिनि सुनाई।—
साहिबज़ाद्यो पिता तुहारा। गढ चमकौर घेरि गाहि मारा ॥ २१ ॥
तहिं तुमरै द्वै भ्रात प्रहारे। संगी सिंह सकल सो मारे।
अब्रि तुमरो राखा नहिं कोई। आनि उबारे इन ते जोई ॥ २२ ॥
इह नबाब सरदार तमामू। झुकि सिर ते तुम करहु सलामू।
नहिं मारहिंगे, लेहिं बचाई। जीवति रहींअहि सीस झुकाई ॥ २३ ॥
सुनि जुझार सिंह बनि सवधान। सभिनि सुनावति बाक बखान।—
श्री सतिगुर जो पिता हमारा। जग महिं कौन सकहि तिह मारा ॥ २४ ॥
जिम अकाश को क्या कुई मारहि। कौन अंधेरी को निरवारहि।
भरे चलाइ सकै नहिं कोई। ससि सूरज नहिं पकरन होई ॥ २५ ॥

---

1. गुरु के पुत्र 2 दूसरी 3. पास 4. दोनों घुटनों पर 5. दुःख
6. झगड़ा 7. चन्द्रमा 8. आयु

करता पुरख अकाल क्रिपालू। सभि ते बड़ो काल को कालू।
तिस आगे हम अरपे सीस। सकल कला समरथ जगदीश ॥ २६ ॥
इह नर पामर[1] पाप कमावै। किम इन आगे सीस निवावैं—।
सुनि करि सभा सकल बिसमाई। —इह बारिक क्या समुझि सकाई ॥ २७ ॥
शीरखोर इन कहां बिगारा। लरिबे मिलिबे न हिन बिचारा—।
सुनति जर्यो खत्री मति मंद। बोल्यो बाक सुनावन ब्रिंद ॥ २८ ॥
इह नागन के बच्चे छोटे। नख शिख ज़हिर भरे अति खोटे।
नहिं नवाब को करहिं सलामू। डरपति नहीं बिलकित मामू ॥ २९ ॥
इन के उर हंकार बडेरे। किम इह झुकहिं नवाब अगेरे—।
बहुर वजीद खान बच कह्यो। भ्रात पितादिक नहिं को रह्यो ॥ ३० ॥
दीन विखै आवहु तुम अबै। तुरक शरा[2] को मानहु सबै।
पुन तुम को दें बहु वडिआई। गज बाजी अरु धन समुदाई ॥ ३१ ॥
हज़रत निकट आपने राखै। पालन पोसन को अभिलाखै।
देहि ग्राम कुछ बड बनावहि। केतिक चमुं संग तुमलावहि ॥ ३२ ॥
जिम हम करहिं अधिक सिरदारी। तिम होवहुगे लिहुं खुख भारी—।
सुनति जुझार सिंह रिस[3] आई। बूझ्यो फते सिंह लघु भाई ॥ ३३ ॥
पहुंच्यो समां महिं अस जोवा। गुरू पितामे पर जिम होवा।
साबत रहनि बात है नीकी। कहु भ्राता! तूं अपने जी की ॥ ३४ ॥
फते सिंह सुनि उत्तर दीना।—धरम पितामे ज्यों रखि लीना।
शुभ जस ते जग पूरन कीना। तीन लोक महि शाका[4] चीना ॥ ३५ ॥
तुम क तिम ही बनि आवै। सिर दिहु तुरकनि मूल गवावैं।
हिंदू धरम जाग हैं फेर। तन सभि नाशवंत ही हेरि ॥ ३६ ॥
दीन विखै ल्यावन के हेत। कह्यो पितामे[5] को बहु देति।
धरम धुरंधर धीरज धारी। इन कहिने पर पनही[6] मारी ॥ ३७ ॥
तिम शाका जग तुम दिखरावो। मन को थिर करि नहीं डुलावो।
सरब शिरोमणि बंस हमारा। राखहु तिस की लाज उदारा ॥ ३८ ॥
सुने अनुज ते धीरज बैठ। कह्यो जुझार सिंह रिस नैन:—।
शरा सीस हम पनही मारैं। धरम आपनो नहीं बिगारैं ॥ ३९ ॥
हमरे बंस रीति इम आई। सीस देति पर धरम न जाई।
तुमरी ज़रां[7] उखारनि हेत। हम नहिं डरपहिंगे सिर देति ॥ ४० ॥

---

1. नीच 2. इस्लाम धर्म 3. क्रोध 4. घटना 5. गुरु तेग बहादुर 6. जूती 7. जड़

कहा मंद मति[1] ! तूं बिरमावै[2] । कूर पदारथ पर न लुभावैं ।
धरम साच है सदही संग । को अस मूरख करहि जु भंग ॥ ४१ ॥
बड़े गुरू की अगनि अदग्गया । दाहन तुरक जरन को लग्गया ।
हम सिर दैवे बायु बडेर । जारहि छार करहि नहि देर—॥ ४२ ॥
सुनति जुझार सिंह की बानी । हिंदू तुरक सभा बिसमानी ।
क्यों न कहैं गुर के सुत अहैं । जिन उपदेशे शुभ गति लहैं ॥ ४३ ॥
सिख संगत हिंदू तहि सबै । धंन धंन बोलति भे तबै ।
तुरक जरे उर जरे न कैसे । पावस[3] परे जवासा जैसे ॥ ४४ ॥
खान वजीदे नैन तरेरे । डरति नहीं किम कहैं करेरे ।
इन को अबि दे हैं मरिवाइ—। इम निशचे करि रिस कौ पाइ ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पशटम रुते '**श्री जुझार सिंह बाक प्रसंग**' बरननं नाम एक पंचासती अंशु ॥ ५१ ॥

---

1. मूर्ख 2. भूलता है 3. बरसात

अंशु ५२

श्राप देन प्रसंग

दोहरा

'खत्री झूठानंद तबि कहि नवाब के साथ ।
देखहु किम इह बोलते डरतिन जोर तिहाथ'।। १।।

चौपई

बडे होइंगे पिता समाना। लखहुं लशकर कीनसि हाना।
नित ऊधम को देश उठावै। इह नहिं क्यों हूं सीस निवावै।। २।।
अबि पकरे बस आइ तुमारे। छूट न जाहि मवास मझारे।
इनको अपर नहीं उपचारू। करो हुकम किह, करै प्रहारू—।। ३।।
हुते सभा महिं खान मलेरी[1]। —हतहि—जानि बोले तिस बेरी।
बालक शीर खोर[2] क्या दोश। हान लाभ की इनहि न होश।। ४।।
सुनि पापी तबि एव नवाव। इत उत देखन लग्यो शताब[3]।
जे नर सन मुख किनहुं न मानी। हम ते बालक होइं न हानी—।। ५।।
वहुर दा हिनी दिश जबि हेरा। नीवग्रीव[4] करि थिर तिस बेरा।
नामे दिश तबि द्रिशटी चलाई। नहिं किन मानी गिरा अलाई।। ६।।
पाछल दिशि खल बांछत वेग। गिलजा पशचम को युति बेग।
लिहु बालक इत दिश महिं होइ। धरते जुदे करहु सिरदोइ।। ७।।
राखन की लायक इह नांही। पाइं फतूर[5] देश के मांही—।
सुनि गिलजा तबि ले करि गयो। ओट सभा को होवति भयो।। ८।।
पापी निरद्यालू मति मंद। गहि खैंची शमशेर बिलंद।
धीरज धरे गुरू सुत खरे। नहीं दीन मन कैसिहुं करे।। ९।।
धरम हेत सिर चाहति दीयो। तुरकनि जरां बिनाशी कीयो।
सिमरहिं बात पितामे केरी। लाज बंस की चहें बडेरी।। १०।।

---

1. मालेर कोटला का नवाब 2. दूध पीते बच्चे 3. जल्दी 4. गर्दन झुका दो 5. ऊधम

अधम तबै तरवार चलाई। सिर जुझार सिंह दयो गिराई।
बहुर दूसरो वारा प्रहारा। फते सिंह को सीस उतारा ॥ ११ ॥
हाहाकार जहां कहिं भयो। जै जै शबद सुरनि महिं थियो।
धंन गुरू सुत धीरजधारी। धरम हेत सिर दियो उतारी ॥ १२ ॥
अलप आरबल[1] पकरे होए। द्रिड़ता अपर करहि इम कोइ ?
तुरकन जरां बिनासी करिकै। गए गुरू पुरि आनंद धरिकै ॥ १३ ॥
करे कलंकति रिपु कुल सारे। राज तेज को छीनसि सारे।
तिसछिन तुरक हिंदु तहिं झारी। खत्री को बहु देवति गारी ॥ १४ ॥
इह दोखी है बडो चंडाला। देखे बलिक कह्यो कराला—।
सिख संगति करि हाहाकारे। जानी तुरकन जरां उपारे ॥ १५ ॥
इक सिख टोडर मल बहु धनी। साहिबज़ादे पकरनि सुनि।
रिदै बिचार्यो—धन गन दैकै। तुरकनि ते छुरवावनि कै कै ॥ १६ ॥
जहां गुरू तहिं देउं पुचाई। पावौ जगत बिखै वडिआई।
कहा दरब जो सरब बिनाशी। गुर पदवी दै हैं अबिनाशी ॥ १७ ।
करति उताइल के चलि आवा। सभा बिखे देखति दुख पावा।
सुनी नरन ते—इनहुं प्रहारे—। परम दुखी चित महिं तिस वारे ॥ १८ ॥
होयहु तबि उतपात बिसाला। कंपी धरत आइ भूचाला।
ऐंचति कंकर धूर धनेरी। बही आयु बहु बेर कुफेरी ॥ १९ ॥
सभिहिनि के लोचन रज परी। कूकी वहिर शिवा[2] मुद भरी।
बिन धन गरज गगन ते सुनी। सभि पछुतावति मुंडी धुनी ॥ २० ॥
जो स्थाने बुधि करैं बिचारनि। —भयो कहिर बड—करत उचारन।
—उठै उपद्रव राज बिधुंसै। होइं बिनाशी तुरक निसंसै ॥ २१ ॥
सकल कुकरम कुलच्छन हेरे। टोडरमल हुइ दुखी घनेरे।
गमन्यो तुरत मात जहिं बैसी। चिंता बसि थिर मुरत जैसी ॥ २२ ॥
करति प्रतीखन पौत्रन केरी। सभा बिखै ते आवहिं फेरी।
रहैं कैद किस बिधि छुटि जै हैं। जीवति पुन सभि हुं सुख पै हैं ॥ २३ ॥
अति प्रिय मन के, छोरि इकेली। गए तुरक जहिं सभा सकेली।
अबि ऐहै बीत्यो चिरकाल। इम माता चित चिंत बिसाल ॥ २४ ॥
इतने महिं टोडरमल गयो। हाथ जोरि पग बंदति भयो।
बिहबल[3] अस्सवन बदन परवारा। रुक्यो कंठ नहिं जाइ ऊचारा ॥ २५ ॥

1. उम्र 2. सिपारी 3. व्याकुल

देखि दशा तिसकी दुखवारी। उठ्यो हौल[1] उर मात बिचारी।
कहु भाई तूं आयों कौन? क्यों अति दुखी, हेतु कहु तौन ॥ २६ ॥
क्या बूझति बैठी अबि मात। मरति पिखे भै द्वै गुर तात।
जीवति रह्यो फटी नहीं छाती। मो ते कोमल पाहन जाती ॥ २७ ॥
मैं निरभागी बतावनि आयो। नहिं गुर पुत्रनि संग सिधायो।
घर को दरब सरब मैं देति। ज्यों क्यों करि बचाइ सो लेति ॥ २८ ॥
क्या मैं करउं बतावन कोइ। नहिं सिक्खी मम साबत होइ—।
सुन्यो बाक खर[2] बान समान। लग्यो कान बिंध रिदा निशान ॥ २९ ॥
ऊपर तर के जुटि गए रदनं[3]। भयो दरद ते ज़रद[4] सु बदन[5]।
खुशक होइ मुखि लाग सु लाटी। जन कदली तरू की चड कारी ॥ ३० ॥
तरफराति मुरछा को पाई। गिरि बिसुध ह्वै सुधि नहिं काई।
तबि टोडरमल दुखि अतियंता। करि बैठी गुर मात तुरंता ॥ ३१ ॥
बायु बसत्र के करी झुलावन। तबि कीनी तन की सुधि पावन।
चेतनता जुति पुन चितआए। —कहा पौत्र?—नहिं द्रिशटी आए ॥ ३२ ॥
पुत्र जुझार सिंह लिहु नाले। मुझ ते पूरब तुम कित चाले?
कहां इकाकी मैं रहि करि हौं। इस प्रकार मैं तूरक मरि हौं ॥ ३३ ॥
थे तूं हैं गुर सिक्ख अछेरा। करि उपचार मरण को मेरा।
जुग पौत्रन संग जिस ते मिलौं। अपने साथ लिए करि चलौं—॥ ३४ ॥
इम कहि ते दुख लखि करि भारा। बुरज साथ बल ते सिरमारा।
सहि न सक्यो टोडरमल हेरि। गहि करि बैठ्यो माता फेर ॥ ३५ ॥
मसतक भगन रुधर बहु बह्यो। ब्याकुल ते ब्याकुल ह्वै गयो।
मोहि छाप महि हीरे कणी। जे मैं देउं, अवग्गया घणी ॥ ३६ ॥
जे नहिं देउ महां दुख सहि है। चिरंकाल ते म्रितु कोपै है—।
कह्यो मात—तुहि दोश न कोई। दिहु हीरा जिस ते म्रितु होइ ॥ ३७ ॥
तबि टोडर मल रिदे बिचारा। —हीरा ततछिन छाप निकारा।
दे माता को बदन पवायो। महां दुखति ने ले करि खायो ॥ ३८ ॥
कितिक काल महिं प्रान निकारे। मिलि पौत्रनि गुरपुरी पधारे।
तीनहुं तन टोडर सस कारे। चुन पुशप बासन[6] महिं डारे ॥ ३९ ॥
सभि सिक्खनि मिलि तहां दबाए। इम माही सभि गाथ सुनाए।
सुनहु गुरू जी! सकल प्रसंग। इक सिख ने भाख्यो मुझ संग ॥ ४० ॥

1 घबराहट 2. तेज़ 3. दान्त 4. पीला 5. शरीर 6. वस्त्र

सो मैं रावरिपास बतावा। दिज[1] की सुनहुं जथा फल पावा।
तुरकन सुनी रह्यो धन इसके। धाइ सिपाही गमने तिस के ॥ ४१ ॥
सकल कुटंब बाधि करि आना। दई सज़ाइ मार करि नाना।
जिह थल तिह दीनार दबाई। रह्यो खोज सो हाथ न आई ॥ ४२ ॥
मारींद्रा[2] तुरकन ते मरिउ। तातकाल फल भोगनि करिउ।
तबि सतिगुरू प्रयंके थिरे। दोनहुं चरन धरा पर धरे ॥ ४३ ॥
बूट खरो काहु को हेरे। तिस की जर[3] को खनहिं घनेरे।
करद हाथ महिं धारन करे। सगल प्रसंग सुन्यों चित धरे ॥ ४४ ॥
बहुर बुझना कीनि गुसाईं। जहां सभा तुरकन समुदाई।
बिन मलेरीअन अपर भि कोई। पिखि सिस दया रिदे जिस होई ॥ ४५ ॥
तबि माही करजोरि उचारा। 'मैं आछे की नो निरधारा।
शीर खोर इन दोश न लेश। एव मलेरी कहि बिन द्वैश ॥ ४६ ॥
सुनि करि श्री गुर वाक बखाना। 'भयो नाश अबि सभि तुरकाना।
इक मलेरीअन की जड़ रहै। अपर तुरक सभि ही जर दहै[4] ॥ ४७ ॥
इम कहि मुख ते करद चलाई। काहू बूट जड़ काटि गवाई।
'जिम इसकी जड़ काटि उखारी। तथा तुरक की बिनसहि सारी ॥ ४८ ॥
केतिक दिन महिं होइ बिनाशा। बिसमावै जग देखि तमाशा'।
दियो स्राप गुर कुपे[5] घनेरे। राज तेज को मूल उखेरे ॥ ४९ ॥
'पुरि सिरहंद महिं पाप घनेरा। उजर जाहि लहि कशट बडेरा।
सिक्ख हमारे मारि उजारहिं। छीनी राज धन वहिर निकारहि ॥ ५० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते '**श्राप देन प्रसंग**' बरननं नाम दोइ पंचासती अंशु ॥ ५२ ॥

---

1. ब्राह्मण 2. मारा गया 3. जड़ 4. जल गई 5. क्रोध में

अंशु ५३

दीने ग्राम आवन प्रसंग

दोहरा

सुन्यो स्राप गुर ते जबै बिसम्यो कल्ला राइ।
मैं संगी तुरकान को तिनहुं संग जड़ जाइ॥ १॥

चौपई

रह्यो समीप नहीं कर जोरे। नहिं बखशायहु गुरू निहोरे।
अबि भी समों लेउ बखशाइ—। इम निशचे मन महिं ठहिराइ॥ २॥

उठ्यो सभा ते जुग कर जोरे। 'श्री प्रभु क्रिपा करहु मम ओरे।
दास कदीमी[1] रावर केरा। तुरकनि सन किछ हितु नहिं मेरा॥ ३॥

तिन के साथ न मोहि मिलाओ। अपन श्राप ते प्रथक बचाओ'।
श्री गुर कहैं 'प्रथम के समैं। आपने हेत कहिन को हमैं॥ ४॥
देति श्राप को लेति बचाइ। तुरक गन ते प्रथक बनाइ'।
सुनति राइकल्ले तब्रि कह्यो। 'इतो कोप मैं नाहिन लह्यो॥ ५॥

अब्रि भी शरन परे की राखहु। दास जानि बखशन अभिलाखहु।
मेरो राज तेज रखि लीजै। पर्यो शरन अबि करुना[2] कीजै॥ ६॥

पुन श्री गुर तिह संग बखाना। 'मिटि किम सकहिं जि सचु हुइ जाना।
होनहार तुरकन घर खोवा। नित अपराध करति ही जोवा॥ ७॥

नहीं नगारबंद[3] को रहै। तेज छीनता नित प्रति लहै।
अबि इक्की सै कोसन राज। चक्रवरति को सिर पर ताज॥ ८॥

थोरे दिन महिं इम हुइ हाना। नीठ नीठ[4] जिन की गुज़राना।
जिह सिरहंद महिं साहिबजादे। करी अवग्गया तुरकनि बादे॥ ९॥
बडी ब्रसहिं कोसन लगि जोई। धनी धनी महलाइत होई।
सकल सदन की जरां[5] उखरि हैं। खेती बाहन बोवन करि हैं॥ १०॥

---

1. पुराना 2. दया 3. साज सजावट वाले 4. कठिनता से 5. जड़ें

अस फल प्रापति पाप न केरा। तुरक राज को हुइ निबेरा।
दोइ बार कहि कल्लाराऊ। भयो लचार महा पछुताऊ॥ ११॥
अबि रिस महिं बखशति किम नाहीं। संग चलौं बैठव नित पांही।
हुइं प्रसंन किस बिधि ते जबै। महां पुरख बखशहिंगे तबै—॥ १२॥
जिन लोकनि सर ऊच उचारा। 'गमनहु सदन करहु सभि त्यागा।
बालिक त्रीमति सभि लै आओ। राखहिं संग जहां कहि जाउ॥ १३॥
नाहिं त को गनीम चढ़ि आव। छीनहि देश महां बल पाव।
सभि औरत की बेनी गहि गहि। बहिर निकारहिं दुरबल कहि कहि॥ १४॥
—श्री सति गुर के संग रहीजै। थिरे थिरहु गमनैं गमनीजै।
बखशहिंगे करुना धारि। तहिं ते हटहु, बसावहु नारि॥ १५॥
अस कहिबो सुनि करि गुरकान। —हमरे बचन प्रतीत महान—।
दया सिंधु तबि दया ढरे हैं। हित बखशन के बचन करे हैं॥ १६॥
ज़ोरावरी[1] करति है राइ। जड़ अपनी राखन के दाइ।
आस तरन के तर तरवार। तहिं ते श्री प्रभु लई निकारि॥ १७॥
निज कर महिं धरि बाक बखाना। 'तुझको बखशहिं चारु[2] क्रिपाना।
जबि लगि रखहु अदब इस केरा। रहै बंस, हुइ राज बडेरा॥ १८॥
नहिं पूजहु सनमानहु नांही। किधौं पाइ ले को गर मांही।
बंस राज तिस दिन ते छीन। कछु नहिं रहे, साच लिहु चीन[3]'॥ १९॥
सुनि करि दोनहु हाथ पसारे। सतिगुरू के हुइ निकट अगारे।
दीजहि सतिगुर, पूजहिं सदा। नहीं अवग्गया करिहौं कदा॥ २०॥
रिदै प्रसंन राइ बहु होवा। सुंदर खड़ग बिकीमति[4] जोवा।
राज तेज अर बंस उदारा। आयहु राखनहार हमारा॥ २१॥
श्री गुर कदम पदम सम हेरे। बार बार बंदहिं तिस बेरे।
हाथ जोरि करि खरो अगारी। दिहु आग्या हुइ सेव तुमारी॥ २२॥
श्री गुर कह्यो 'गमन हम चाहै। तुम भी जाहु अपनि घर मांहै।
जंगल देश हमारे सिक्ख। तहां बितावहि समां भविक्ख॥ २३॥
अबि सेवा की चाह न कोई। जिस हित कहैं तोहि को सोई'।
इम कहि पलंघ तबै उठिवायो। राइ चमूं[5] जुति सीस निवायो॥ २४॥
जंगल दिशा बदन करि चले। मुट्ठा फिरै सीस पर भले।
ग्राम एक पुन पहुंच जाइ। बंद्री तरु तर पलंघ टिकाइ॥ २५॥
कह्यो सुचेता थिर कुछ भए। बहुरो आगे चलिबो कए।
सने सने मारग उलघंते। जंगल देश आइ नियरंते॥ २६॥

---

1. अत्याय 2. सुंदर 3. मानो 4. अमूल्य 5. सेना

एक निसा बसि गए अगारी। हाजी बेख[1] पलंग असवारी।
सन मुख सिंह मिल्यो इक आइ। श्री गुर देखे सीस निवाई ।। २७ ।।
पर्यो ज़ीन[2] जिस पास तुरंग। दीरघ चाल चपल बल संगा।
अरपन कर्यो हाथ जुग जोरे। श्री प्रभु तबि अरोह करि छोरे ।। २८ ।।
दीना ग्राम निकट जबि आयो। पुरि कांगड़ ते निकस बसायो।
श्री सतिगुर हरिगोबिंद संग। मिल्यो जोध सिख भा सरबंग ।। २९ ।।
ललाबेग सों रण जिस काल। लर्यो तवे ले चमूं बिसाल[3] ।।
श्री अरजन सुत बहुत रिझाओ। दीरघ प्रक्रम करि दिखरायो ।। ३० ।।
तिह के पौत्र तीन तहिं अहे। पुरि कांगड़ ते दीने रहे।
एक समीर दुती लखमीर। तखत मल्ल तीसर मति धीर ।। ३१ ।।
जिन को हुकम ग्राम गन मानैं। राहक सकल बडो जिस जानैं।
तिन के पास एक नरगयो। तहिं पहुंचन गुर रुख लखिलयो[4] ।। ३२ ।।
तिन सभि हिनि सन खबर सुनाई। 'गन तुरकन सनकीनि लराई।
श्री गुर गोविंद सिंह इति आए। अपन ग्राम के अबि नियराए ।। ३३ ।।
जाने कौन जाहिं किस ग्रामू। उतरहिं किस राहक बर धामू।
उचित अहै तुम को अगवाई। मिलहु जाइ ले नर समुदाईं ।। ३४ ।।
सुनति शमीर भ्रात लखमीर। तूरन त्यार भए मति धीर।
नर सकेल केतिक संग लीने। निकसि उगाऊ मग पग दीने ।। ३५ ।।
दोइ कोस आगे चलि आए। नाना बसतु उपाइन ल्याए।
चढे तुरंगम आवति आगे। तन पहिरे नीलांबर बागे ।। ३६ ।।
तूरन निकट होइ करबंदे[5]। बंदे सुंदर पद अरबिंदे।
सहित रकाब सपरशन करे। नंम्री बनि बनि सिर निज धरे ।। ३७ ।।
कुशल प्रशन तिन प्रति गुर कह्यो। क्रिपा आप भकी सभि सुख लह्यो।
प्रभु जी ! चलीअहि धाम हमारे। उतरहु,श्रम तन ते दिहु टारे ।। ३८ ।।
पावन करहु ग्राम गन धामू। सिक्ख कदीमी हम पंग सामू।
पिता पितामा सेवक रहे। गुरू प्रसंन होइ दुख दहे' ।। ३९ ।।
सुनि सिक्खनि ते क्रिपा निधाना। हेत सुचेती बाक बखाना।
'तुरकन संग हमारो बादा[6]। परे अधिक संग्राम बिखादा ।। ४० ।।
सो हाकम, तुम हो तिन रय्यत। लरहु न कुछ करि अधिक जमय्यत[7]।
धरहु त्रास, नहिं बल संभारहु। किम हम को निज सदन उतारहु ? ।।४१।।

---

1. एक हाजी का भेष 2. जीन 3. विशाल 4. स्थिति जान ली 5. हाथ जोड़कर 6. विवाद 7. सेना

सुनि कर जोरि सरब पुन कहैं। अत्रि रावर[1] की शरनी अहैं।
क्रिपा करहु हुइ सदन पवित्रा। तुम चलित्र है चित्र वचित्रा ।। ४२ ।।
पुशतैनी हम दास तुमारे। मिलिन आप सों किस डर धारें।
गुरसिक्खन सों मेल हमेश। बरज सकहि अस कौन विशेश ।। ४३ ।।
पुखहु शरधा आप हमारी। तुम क्रिपाल दुख दुंद बिदारी[2]।
जे इम समा आनि ही बनै। संग आपके हुइ रिपु हनैं ।। ४४ ।।
नहिं रावर को त्यागैं संग। तुरकनि संग करैं इम जंग।
इत्यादिक बिनती सुनि कान। गुरू गरीब निवाज सुजान ।। ४५ ।।
चले संग तिन कहिबो मान्यो। पीछै पुरिजन पुंज पयान्यो।
पहुंचे ग्राम बिखै तनि जाइ। नर नारी दरशन कौ पाइ ।। ४६ ।।
काचे सदन हुते सभि केरे। हित उतरनि के नीको हेरे।
इक तिखान को धाम निहारा। तिस पर चारू रच्यो चुबारा ।। ४७ ।।
सो पसिद उतरनि के देखा। पावन लीपन कीन बिशेखा।
सुंदर आनि प्रयंक डसावा। बिसद बिछौने ते सभि छावा ।। ४८ ।।
हय ते उतरि चढे तिस जाइ। बैठि गए सतिगुर सति भाइ।
तीनहुं सिंह समीपी थिरे। सुनि सुनि नर नारी मुद भरे ।। ४९ ।।
दरशनहित आए समुदाए। धरहिं उपाइन बंदहि पाइ।
धंन भाग श्री गुर ग्रिह[3] आए। भए क्रितारथ बिघन[4] गिटाए ।। ५० ।।
बैठे घने आइ बड भीरा। नर नारी दरसहिं थिर तीरा।
दुगध आनि करि गन मिशटान[5]। करिवायो सिंहन को पान ।। ५१ ।।
नाना भांति बात मिलि करिते। श्री सतिगुर को सुजस उचरिते।
इसी रीति संध्या हुइ आई। गमने नर नारी निज थाई[6] ।। ५२ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पशटम रुते **'दीने ग्राम आवन प्रसंग'** बरननं नाम तीन पंचासती अंशु ।। ५३ ।।

---

1. आपकी 2. दूर करना 3. घर 4. दुख 5. मीठी वस्तुएं 6. स्थान

अंशु ५४

भाई परमसिंह धरमसिंह मिलन प्रसंग

दोहरा

कुछ प्रसंग हे राई को दई गुरू तरवार।
सुनिअहि श्रोता प्रीत धरि करिहौं अबहि उचार॥ १॥

चौपई

हरख्यो[1] राइ सदन[2] ले आयो। सुंदर एक प्रयंक[3] डसायो[4]।
चारु बिछोना ऊपर छाए। पूजन सौज ल्याइ समुदाए॥ २॥
अतर फूल की माल बिसाला। चंदन अति सुंदर गंधाला[5]।
धूप धुखाइ आरती कीनि। चंदन चरचति सुमनसु लीनि॥ ३॥
तिस प्रयंक पर खड़ग टिकायो। पूजहि शरधा भाव वधायो।
दीपक घ्रित्त पाइ नित जारे। नित ही फूल माल को चारे॥ ४॥
खीन खाफ[6] की तूल रजाई। हिम रुति महिं असि ऊपर पाई।
रहै अंगीठी आगे धरी। फिरहि चौर सुंदर सभि घरी॥ ५॥
ग्रीखम रुत महिं पोशिश धरी। पट बनारसी दुपट्टा ज़री।
धनी सुगंधि अतर ते आदि। नितप्रति पूजहि करि अहिलाद[7]॥ ६॥
बायु करहि बिजना को फेरै। इस बिधि धारहि भाउ बडेरै।
बय को भोगि भाउचित लोरि। कल्लेराइ दयो तन छोरि॥ ७॥
तिस पाछै सुत गादी बैसा। धर्यो भाउ गुर असि[8] महिं तैसा।
अनिक भांति की पूजा करै। सीस निवावै शरधा धरै॥ ८॥
सो भी भोगि आरबल[9] भर्यो। तिस पौत्रा गादी पर थिर्यो।
संगति पाइ मुला ननि केरी। बिगर्यो शरधा घटी घनेरी॥ ९॥
मिलहिं तुरक गन तरक उचारहिं। 'इह काफर[10] की रीति बिचारहिं।
हिंदुनी गुर के सिख तुम रहे। वहिर शरा ते पुशतनि[11] लहे॥ १०॥

---

1. हर्षित हुआ 2. घर 3. पलंग 4. बिछवाया 5. सुगन्धि वाला 6. कीमती वस्त्र 7. प्रसन्नता 8. तलवार 9. आयु 10. अधर्मी 11. पीढ़ी दर पीढ़ी

दोजक परहु अगारी जाइ। क्यामत[1] महिं तुम लहो सजाइ[2]।
नीको खड़ग गरे नहिं पावहु। निस दिन धरे प्रयंक पुजावहु ॥ ११ ॥
इत्यादिक तिह बहु समुझायो। राइ पौत्र ले गल महिं पायो।
तिस ही दिन सो चढ्यो अखेरा[3]। किम रहि सकहि काल जो प्रेरा ॥ १२ ॥
वहिर झील वड महिं जबि गयो। निकस्यो म्रिग अविलोकति भयो।
सकल सैन को थिर तहिं करिकै। गयो इकांकी गरब सुधरिकै ॥ १३ ॥
भयो नेर[4] तरवार निकारी। झुकि झटपट म्रिग ऊपर झारी।
सो बचि गयो छाल[5] करि आगी। वहिक[6] हाथ ऊरू पर लागी ॥ १४ ॥
इम शमशेर साफ हुइ वही। कट्यो उरू कुछ बाकी रही।
तर गिर पर्यो तुरंग[7] ढिग खर्यो। सभि सैना तबि टोरनि कर्यो ॥ १५ ॥

दोहरा

'हाइ हाइ' मुख भनति हे सुनि आए सहिसाइ।
कट्यो पर्यो अवलोक करि सिवका लियो चढाइ ॥ १६ ॥

निशानी छंद

पंथ[8] बिखै ही मरिगयो नहिं घरलग आवा[9]।
कवि भाखै हम अलप बय जबि इह सुनि पावा।
गुर क्रिपान ते कटि भर्यो बन गए अखेरा।
राजवंस अरु तेज सभि जुति मूल उखेरा ॥ १७ ॥
फुर्यो[10] बाक सतिगुरू को सुनि शत द्रिग हेरा।
इम तिन को अवसान[11] भा जग लखहि घनेरा।
सुनहु गुरू की बाखा दीने थिर—होए[12]।
सेवहिं बहु विधि प्रेम करि दरसैं सभि कोए ॥ १८ ॥
निकट दूर सुधि को सुनहिं सिख संगत सारे।
ल्याइ अकोरनि जोरि कर हेरहिं मुद धारे।
धंनगुरू करि जंग को लाखहुं रिपु मारे।
साहिबजादे[13] रण मरे सुर लोक[14] सिधाए ॥ १९ ॥
पुत्र मोह जिन के नहीं, इक रस मन शांती।
वड बहादुर अतिरथी शत्रु बलिघाती।
बसत्र उपाइन आनते बहु दरब चढ़ावैं।
हय लघु दीरघ ज़ीन[15] जुति गुर को अरपावैं ॥ २० ॥

---

1. विनाश 2. दंड 3. शिकार 4 अन्धकार 5. छलांग 6. बैठकर 7. घोड़ा 8. मार्ग 9. आया 10. सूझना 11. विनाश 12. ठहरे 13. गुरु पुत्र 14. देवपुरी 15. ज़ीन

चाकर[1] राखे क्रितिक तहिं गुर चढहिं अखेरे।
देश विदेशनि सुनति भे सुनि सुनि तिस बेरे[2]।
शरधालू उरभाउ जुति दरशन गन आई।
बडी भीर होवन लगी लाहा[3] बड पाई ॥ २१ ॥
रूपासूत सद्धूपिता द्वै सिक्ख तिखाना।
जिन खशटम पतिशाहु को रीझावनि ठाना।
जेठ दुपहिरे तपत अति जल सीतल जाने।
तीस कोस तबि गुर हुते आवाहन ठाने ॥ २२ ॥
सुंदर घर सीतल विखै थिर हुते प्रयंका।
अपने महिं लखि प्रेम को धाए तजि शंका।
तजि सभि सुख इक छिनक महिं।
भए त्रिखातुर जाचते—पानी किस पाही—॥ २३ ॥
सुत पित मुदत सुचित्त महिं उठि करि ततकाला।
सीतल जल दीनो, पियो गुर, अनंद बिसाला।
देग करो[4] तजि देहु क्रित – प्रभु बाक बखाना।
तबि ते सति संगति अधिक तिन सिक्खनि ठाना ॥ २४ ॥
तिन की कुल बरधक हुते द्वै तबै सपूता।
सुनि कै गुर आगवन को अरु जंग बहूता।
साहिबज़ादे चारहुं परलक पधारे।
बिसमाने मन महिं महां—वड ग़ज़ब गुज़ारे ॥ २५ ॥
परमसिंह अरु धरम सिंह वड भगतीवाने।
हित दरशन के त्यार भे धरि प्रेम महाने।
कितिक सिक्ख ले संग मैं मुख शबद सु गावें।
वारी बारी पढति हैं करि जोटी आवैं ॥ २६ ॥
भग उलंघि सभि इस विधी पहुंचे तहिं ऐ कै।
ऊची धुनि ते गावते अनुराग वधै कै।
चरन सरोजन को तबै देखति लपटाए।
नीर बिलोचन ते वहै, गर बहु अरिआए ॥ २७ ॥
हित पहिरिनि सतिगुरू के पोशिश शुभ आनी।
सेत बसत्र सूखम बहुत सो धरि अगुवानी।
इक तुरंगम चपल बहु कुछ धन पुन दीने।
इत्त्यादिक धरि मेट को सभि निकट असीने ॥ २८ ॥

1. सेवक 2. समय 3. लाभ 4. प्रसाद चखाओ

'हाइ हाइ' करि रुदति भे—'बड सांग अरंभा।
साहिबज़ादे हति भए इह अधिक अचंभा।
हे प्रभु ! महां सपुत्र थे सुंदर तन सोहे।
तप जपु दान अनेक ते अस पाइ न कहे॥ २९॥
अरबला[1] भुगती[2] न कुछ म्रितु भे तुम आगे।
बसत्र विभूखनि ते दिपत सभि को प्रिय लागे।
दरब करोरहूं हेम गन सभि शसत्र खज़ाना।
आदि प्रसादी गज बडे जिनि मोल महाना॥ ३०॥
खरे हज़ारहुं हय खरे बड कीमत वारे[3]।
दल विगार ते आदि जे नहिं परहिं निहारे।
अैश्वरज अपर अनेक ही नहिं गिनिबे मांही[4]।
एक वारि ही नाश भा कुछ दीखति नांही॥ ३१॥
श्री प्रभु बड अफसोस है, सिख पिखि दुख पावै।
अस रावर के सांग ते नहिं क भरमावे ?'।
श्री सतिगुर सुनि कै भनैं पिखि दुखी बिसाला।
जगत पदारथ रीति इह विन सैं ततकाला॥ ३२॥
उपजहि बिनसनहार जो आगे क्या पाछे।
इन की थिरता[5] होति नहिं क्यों ग्यानी बाछैं।
इक आतम सत्ता सदा उपजै न बिनाशी।
सो सरूप निज जानिकै हुइ परम प्रकाशी॥ ३३॥
कूर[6] पदारथ ते कबहुं शोक न हरखावैं।
इक रस ब्रिती सु आतमा तिह जो लिवलावे।
रेख निकारहु भेटीअै ज्यों लाभ न हाना।
इक सम ब्रिति सतिगुरनि की इम जान सुजाना॥ ३४॥
तुरकनि जरां[7] उखेरने अस क्रिति हम ठाना।
साहिबज़ादे रूप मम क्या तिन को हाना।
सदा अमर आनंद जुति मन मोह न लेशा।
तिनहुं शोक किम हम करें जे मुदत[8] हमेशा[9]॥ ३५॥
इम सुन कै गुर ते दुऊ कुछ धीरज पायो।
तऊ रिदे संदेह जुति—ऐश्वरज गवायो ?।

---

1. आयु 2. भोगना 3. मूल्यवान् 4. अगणत 5. स्थिरता 6. झूठ 7. जड़ें
8. प्रसन्न 9. सदैव

कर[1] जोरति विनति करी 'पोशश पहिरी जैं ।
श्याम जि बसत्र उतारीअहि अबि स्वेत धरीजैं ।। ३६ ।।
सुनि सतिगुर पिखि भावनी कहि बिनैं सप्रेमा ।
पहिरे पोशिश बिसद बर करि सेवक छेमा ।
नीलंबर अंबर जथा सो धरे उतारी ।
इम दरशन करिकैं भलो हरखे नर नारी ।। ३७ ।।

कितिक समैं बैठे निकट रूपे को बंसा[2] ।
पुन[3] बंदन करि सदन गे मुख करति प्रसंसा ।
इतनो बिनस्यो पास ते जिन शोक न लेसा ।
पुत्रादिक प्रिय वस्तु बहु हति भे न कलेशा ।। ३८ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते '**भाई परमसिह धरमसिह मिलन प्रसंग**'. बरननं नाम चतर पंचासती अंशु ।। ५४ ।।

1. हाथ 2. वंश 3. दुबारा

अंशु ५५

शमीर प्रसंग

दोहरा

अगले दिन हित खान के उत्तम असन कराइ।
गमन्यो दरशन करन को शरधालू धरि भाइ॥ १॥

निशानी छंद

कितिक सिक्ख आगे गए को आवति पाछे।
उतलावति ही चलि पर्यो मग एकल आछे।
वहिर गयो चलि कितिक जबि बांमे पिखि दाए।
को सिख आवै गैल ते लिउं संग रलाए॥ २॥

जबि पाछल दिश देखिउ आवति सिख धीरा।
अभिलाख्यो—मिलि करि चलैं सतिगुर के तीरा।
सने सने चलिवे लग्यो हेरति सिख उरी।
तिहकौतक दिखराइउ अचरजमति ब्रौरी॥ ३॥

बिसद बरन को बसत्र वर पूरब दिखराए।
बहुर पीत पुन श्याम करि निज ब्रेस बनाए।
अरुण वरण पहि रण करे बड छोट बनंता।
नर सम हुइ आयो निकट पुन फते बुलंता॥ ४॥

परम सिंह थिर हुइ मिल्यो धरि प्रेम बिसाला।
शकति वंत पुन गुरू सिख बोल्यो तिस काला।
'खरो भयो किम्हि चलति नहिं, गमनहि किस थाना'।
सुनि भाई बोल्यो तबै, सतिगुर ढिग जाना॥ ५॥

साथ अगारी सभि गयो तुझ पिखि थिर होवा।
अपनि प्रसंग बताइए बड अचरज जोवा।

शकति बंत अ़रु सिख गुरनि[1] कित ते चलि आयो।
पहुंचहुगे क़िस थल विख? सभि देहु बतायो'॥ ६॥

तबि शहीद सिंह कहति भा 'सुनीए शुभ भाई।
सद्धू रूपा तुव बडे गुर सेव कमाई।
सिक्ख जानि दीनसि दरस बिचरति सभि देसा।
रहैं सदा गुर के निकट गन बली विशेशा॥ ७॥

हम शहीद लाखहुं फिरैं बड समरथ धारी।
पंज हज़ार सु खास की रहिं वारो वारी।
चौंकी देति प्रयंक की निस दिन गुर केरी।
अपर सरब अनुसारि रहिं प्रभु के ढिग हेरी॥ ८॥

जिम आग्या उचरं गुरू करिहैं ततकाला।
तिन बिच ते इक मैं अहौं सुनि सिक्ख बिसाला'!।
धरम सिंह के भरम उर पूरब बहुतेरा।
--गुर समरथ सभि रीति जे किम़ कुटंब निबेरा॥ ९॥

इक सुत भी नहिं रखि सके, ऐश्वरज भि—खोवा।
बचे इकांकी जतन ते इत जंगल जोवा--।
इह संसे बूझन लग्यो बहु तरक उठंता।
'शकतिवंति तुम गन हुते गुर ढिग बलवंता॥ १०॥

कुछ न बचायहु गुरू को रण एतिक मांही।
पत्त्र आदि ऐश्वरज सभि बिनस्यो, रहि नांही।
इस महिं कारन कवन भा? मुहि अधिक संदेहू।
तुरक ब्रिंद रण मंडि करि बड संकट देहू'॥ ११॥

तबि शहीद सिंह बच कह्यो 'अलपग्य जि प्रानी।
गुर सरवग्य की क्रिति को किम सकैं पछानी।
प्रथम जनम देवी कह्यो तजि सुतन सुनेहा[2]।
कल में बिदतौं तुम निकट वांछति बरलेहा॥ १२॥

बहुर गाइत्री कोप करि निज लखि अपमाना।
—अंगीकार न मुहिं कर्यो—तिन स्राप बखाना।

---

1. गुरु जी का 2. देवी ने कहा था कि पुत्रों का मोह त्याग दो

पुन चंडी बिदती जबै पहुंची न अकोरा।
चारहुं सुत लछ[1] सिंह को संकलप सु घोरा[2] ॥ १३ ॥

पुन तुरकनि की जड़ां बड छितराज बिसाले।
बहु अपराध कराइ करि किय कूर कुचाले।
तिन को तेज बिनाशने एसी क्रित ठानी।
उठि जै है सगरी सफा, हुइ तेज प्रहानी[3] ॥ १४ ॥

दुंदभि बजै न तुरक के तौ दल किम होवा।
राज धरा पर जिसी को जहिं कहिं सभि जोवै।
इत्यादिक कारन घने को सकै पछाने।
सरबग्गयनि की क्रित्ती पर क्या तरक बखाने ॥ १५ ॥

मति थोरी शरधा बिना जो तरक उठावै।
भुगतहि दुख बहु बिधिनि के नहिं सुख को पावै।
मैं एकल ही करि सकौं तुरकान बिनाशा।
मम सम लाखहुं शकति जति सतिगुर के पासा ॥ १६ ॥

हाथ जोरि बूझति रहैं—प्रभु जी ! फुरमावो—।
नहिं आग्या को देति कबि, कहिं—थिरे रहावो—।
लाखहुं कोट शहीद हैं नित गुर अनुसारी।
बांछति तुरत बनाइ लें इम हैं बलभारी ॥ १७ ॥

धरम सिंह उर भरम हरि शरम्यो पछुतावा[4]।
श्री सतिगुर सरबग्गय महिं संदेह उठावा।
हाथ जोरि बंदन करि 'धंन धंन गुरदेवा।
आशै जिनहुं गंभीर है को लहै न भेवा' ॥ १८ ॥

बूझ्यो बहुर शहीद को 'तन कितिक[5] अकारा।
किधौं इतिक ही रहित हौ ठानति बलभारा।
संसै करे बिनाश तुम गुर समसर ह्वै कै।
भयो निहाल बिसाल मैं मिल बाक सुनैकै' ॥ १९ ॥

कह्यो शहीद 'सुनिजीए जिम चहैं बनावैं।
अवलोकहिं तन बडो को बहु त्रास उपावैं।
सिक्ख कदीमी[6] जानिकै मिलि बात बताई।
जे अबि देख्यो चहति हैं सभि देहुं दिखाई' ॥ २० ॥

1. लाख 2. दान दिया था 3. नाश 4. पश्चात्ताप 5. कितना 6. प्राचीन

बोलति बरध्यो बपु बडो कोसन लगि होवा।
बाहुं उभै बहु दूर लगि सिर नभ लगि जोवा।
रूप भिआनक हेरि करि उर त्रास उपंना।
हाथ जोरि कहि धरम सिंह 'तुम हो धंन धंना ॥ २१ ॥

सभि बिधि मुझ निशचै कर्यो मैं नीके जाना।
अबिनाशी सतिगुर प्रभू नित महिद महाना'।
पुन शहीद तन शुभ कर्यो सभि शकति दिखाई।
शुद्धि रिदे तबि होइकै गमने अगुवाई ॥ २२ ॥

मिल्यो आइ बंदन करी धरि बिबिध अहारा।
सतिगुर लखि सिख आपने पिखि हुकम उचारा।
'देहु प्रसाद वरताइ सभि इन सिक्खन मांही'।
मान सिंह बंदन कर्यो ले करि तिस खांही ॥ २३ ॥

इस विधि सिख संगति अधिक सुनि सुनि तहिं आवै।
पूरब मिलै शमीर को निज बिनै सुनावै :—
'दरशन गुर करिवायहि हुइ संग हमारे।
अंतर लै गमनहु सदन जहिं प्रभू उतारें' ॥ २४ ॥

तबि शमीर प्रभु बूझिकै लै आग्या जावै।
अपने संग लिजाइ करि दरशन करिवावे।
इम आवति चहुं दिशिन ते सिख संगत ब्रिंदा।
सने सने दरसहि गुरू पद पदम मनिंदा ॥ २५ ॥

भाई रूपे की कुली[1] गुद्दड़[2] हयहु।
अधिक प्रतापी जगभयो बहुतन तिन जोयहु।
द्याल दास तिस को पिता बड अज़मतिवंता[3]।
गुर आए सुनिकै गयो चित दरस[4] चहंता ॥ २६ ॥

मिलि शमीर के सांथ तिन गुर निकट पठायो।
ले आग्या प्रभु बदन ते अंतर सो ल्यायो।
इक तिखान संग आनि तिह दरशन तबि कीना।
कर[5] जोरे सिर धर धर्यो करि नमो प्रबीना ॥ २७ ॥

पोशिश सूखम बसत्र की गुर आगै राखी।
कुशल प्रशन सभिहुं कह्यो बिनती बहुभाखी।

---

1. परिवार 2. गुद्दड़ सिंह 3. माननीय 4. दर्शन 5. हाथ

बैठे प्रभु समीप तबि चिरकाल बिताए।
कहति सुनति शुभ बारता सतिगुर बिगसाए॥ २८ ॥

भए प्रसंन शमीर पर बड सेव करंता।
जल भोजन बहु भांति के करि त्यार तुरंता।
प्रेम समेत अचावही कर जोरि खरोवै।
करै शीघ्र ही काज सो जिम आग्या होवै॥ २९ ॥

ह्वै प्रसंन श्री मुख कह्यो 'सुनि सिक्ख शमीरा।
दूर दूर लौ हय घने थिर करहु सधीरा[1]।
द्याल दास पोशिश दई हम अग्ग्र चढाई।
सो पहिरहु तन आपने सतिनाम अलाई॥ ३० ॥

जहिं लगि घोरा फेर लिहु तहिं लगि तुम राजू।
होइ भविक्खत बंस मैं बड राज समाजू।
सुनि श्री मुख ते बाक को घर नर मिलि सारे।
मसलत कीनी बैठिके 'हुइ राज उदारे'॥ ३१ ॥

मातुल हुतो शमीर को वेमुख पंज पीरी[2]।
मानहि तिस के कहे को भ्राता त्रै धीरी।
सो बोल्यो 'तुम क्या भयो जानति नहिं भेवा।
घर समाज सुत आदि सभि बिनसो गुर देवा॥ ३२ ॥

मुख आयहु बोलति रहै तुम साच पछानो।
राज कौन सो देति है क्या ढिग तिन जानौ।
सुनि बोल्यो लखमीर तबि 'जे कह्यो न मानैं।
रिदै क्रोध करि गुर वहुर कुछ स्राप वखानौं॥ ३३ ॥

तखत मल्ल तीसर कहै 'करि सेव उतारे।
लाभ लेन कितहूं रहै हुइ हान हमारे'।
सुनि सलाह सभिहुंन की तबि भनै शमीरा।
इक तौ बाक न मेरीअहि, कहिं कूर न तीरा॥ ३४ ॥

सुनि तिन के मातुल कहैं निज पुरि चहु ओरे।
मानि बाक को फेरी अहि चढि कै इक घोरे'।
अस मसलत करि आइ पुन ले पोशिश सोई।
गुर आग्या ले चढि गयो पुरि चहुं दिश जोई॥ ३५ ॥

---

1. हे सुधीर 2. गुरू से विमुख

फेरि तुरंगम आइगो, गुर बूझ्न ठाना ।
'हे प्रभु ! फेरन को कियो चहुंदिशन किकाना' ।
मंदमती मातुल इनहुं लखि अंतरजामी ।
लेनि दियो नहिं राज कुछ कीनी 'बड खामी[1] ।। ३६ ।।

कह्यो प्रभु 'आछो कर्यो अबि बैठि शमीरा' ।
सुनि करि बैठे निकट हुइ संगी लखमीरा ।
सेवक अपना जानि करि करुना बहु ठानैं ।
प्रिथम पितामे सेव करि हितकारी मानैं ।। ३७ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'शमीर प्रसंग'** बरननं नाम पंचासती अंशु ।। ५५ ।।

1. भन्न

अंशु ५६

शमीर प्रसंग

दोहरा

इस प्रकार बीते दिवस दस एकादश जान ।
नाना भोजन को करहि अचवावहि हित ठानि ।। १।।

निशानी छंद

इक दिन कर्यो अहार शुभ धरि थार मझारे ।
कर्यो परोसनि तबि भले धरि गुरू अगारे ।
थिर्यो शमीरा निकट तबि प्रभु अचन करंते ।
नीर कटोरा देति भरि ले पान[1] पिवंतै ।। २ ।।
त्रिपति होइ सतिगुर रहे निज बिनै बखानी ।
'दीजै सति प्रसादि निज हम करिहैं खानी' ।
श्री मुख बोले 'थाल लिहु बैठहु इस थाना ।
करहु खान हित ठानिकै शरधालु महाना' ।। ३ ।।
कर जोरति बोल्यो बहुर 'लैकै घर जावौं ।
सभि कुटंब संग बंटिकै धरि भावन खावौं' ।
इम कहि धार उठाइकै घर पहुंच्यो जाई ।
भ्राता मातुल आदि जे सभि लीए बुलाई ।। ४ ।।
'धार जु महां प्रसाद को मैं जाचि सु ल्यायो ।
पावहु बहु कल्यान को हुइहै मनभायो' ।
इम कहि जबै प्रसादि ते उतराइ रुमाला ।
देखति झटका उरडरे धरि चित बिसाला ।। ५ ।।
मातुल जैतो का[2] तबै कहि सभि समुझाए ।
'हम गुग्गे सुलतान को पूजहिं मन भाए ।
क्रुधति ह्वै इस अचेते धन धाम बिनासै ।
हमरे पीर कदीम के पूरति सभि आसै' ।। ६ ।।

---

1. हाथ में 2. जैतो वाला मामा

चिंता बहुत शमीर के तिस छिन हुइ आई।
—गुर ते आन्यो जाचि मैं, इस तरक उठाई।
बड़े भाग ते प्रापती पारस जिम रंका।
नहिं मातुल समझैं रिदै ठानति कुछ शंका[1]— ॥ ७ ॥

कहि लखमीर शमीर को 'जे करहु न खाने।
खनि अवनी महिं गाड दिहु नहिं सकैं पछाने—।
उत गुर रहैं प्रसंन हिय, इत पीर न कोपै'।
अस मसलत करि परसपर चाहति इस लोपै ॥ ८ ॥

बस नहिं चल्यो शमीर को मातुल बड खोटा।
महां प्रशादि न अचन दिय बड कीनसि टोटा।
गाड दीनि खनि अवनिको, नहिं किनहूं खायो।
परारबध बिन कित कहू[2] किस ते किन पायो ॥ ९ ॥

सुपत होइ करि जामनी उठिआइ प्रभाती।
हाथ जोरि बंदन करी धरकति जिस छाती।
श्री मुख ते बूझन कर्यो 'ले महा प्रशादा।
अचवन कर्यो कि नांहि तैं दानी अहिलादा[3] ॥ १० ॥

तबि शमीर बिन धीर ह्वै गुर तीर उचारे।
'जैतो का मातुल अहै तिन सभि हटकारे।
—नहिं अचवहु झटका सकल, रिस पीर उपावै।
सदन बिखै धन धान गन जुति माल खपावै ॥ ११ ॥

ले करि थार प्रसाद को बिच[4] धरा दबायो।
बिना भने जानहुं प्रभू, मैं साच अलायो'।
सुनि सतिगुर बोलै तबै 'धरनी बरुसाई।
तुम को नहिं प्रापति भई तिन मूढ गवाई ॥ १२ ॥

अदब[5] न कीनो अंन को तुम बुरा कमायो।
तबै परै दुरभिच्छ बहु जे अदब गवायो।
भद्दरसैन न्रिप प्रथम भा तिन किय अपमाना।
उजर गयो इह देश सभि जंगल अबि जाना ॥ १३ ॥

---

1. ग्लानि 2. किस समय और किस प्रकार 3. प्रसन्न करने वाला 4. में
5. शिष्टाचार

चलते हुती द्वै नदी तबि भटली[1] शुभ चित्त्रा[2]* ।
हटी अवग्गया देखिकै थल भा अपवित्त्रा ।
हमरे सीत प्रशादि ने रोक्यो इह थाना ।
तुम रय्यति हुइ बसहुगे हमने सभि जाना ।। १४ ।।

अवनी जंगल देश की बहु अंन उपावै ।
अब ते दुगने चुगुने अठगुने जमावैं† ।
होइ हमारा मालवा जित कित बिदतावै ।
उपजैं सिंह संहस्त्र ही मलवई कहावैं ।। १५ ।।

सुनीअहि सिक्ख शमीर भो ! चाहति हम दीनो ।
प्रथम राज ते छूछ रहि अबि छेम न लीनो ।
जो लंबे नहिं देति हैं सो रोग भुगै है ।
आप कुशट को कशट लहि पुन बंस लगै है ।। १६ ।।

कहि कवि हम ने सो सुन्यो अबि लौ बड रोगू ।
चल्यो आइ तिस बंस महिं भोगहिं दुख भोगू ।
सतिगुर अधिक प्रसंन ह्वै पिखि सेव बिसाला ।
इह न लेति हम देति हैं—इम चितैं[3] क्रिपाला ।। १७ ।।

इक दिन बहुर शमीर को करुना करि बोले ।
'हुइ चित महिं जो कामना हम ते अबि सो ले ।
बिन शंका जाचन करो, कहु उर अभिलाखा' ।
सुनि शमीर कर[4] जोरिकै नंम्री होइ भाखा ।। १८ ।।

'मिटहि चुरासी को भ्रमण भवजल दुखदाई' ।
सुनि तूशन श्री प्रभु भए बिरमे अन ख्याला ।
इक दुइ दिवस बिताइकै पुन भए क्रिपाला ।। १९ ।।

सेव करे सहि प्रेम के पुन निकट बुलायो ।
हम प्रसंन हैं तोहि पर, जाचहु मन भायो' ।
पुन शमीर गुर तीर कहि 'भवजल महिं फेरा ।
इस दारुण दुख ते प्रभू ! गहीयहि कर मेरा' ।। २० ।।

---

1. भटली नदी 2. चित्रा नदी 3. सोचते हैं 4. हाथ

*यह दो नदियाँ अब अलोप हो चुकी हैं

†भविष्य वाणी है

सुनि श्री मुख तबि भन्यों 'तुम जनम घनेरे ।
धरने हैं भवजल बिखे किम जाहिं निबेरे ।
कहिं लगि करहिं बचाइबो, जाचहु वथु[1] आना ।
इस बिन अपर अदेय नहिं, लिहु महिद[2] महाना ।। २१ ।।

हम प्रसंन पिखि सेव तुव अरु प्रेम घनेरा ।
उर अकपट सच कहति हैं, परख्यो बहु बेरा ।
करहु सफल निज घाल को हम दें ततकाला' ।
सुनिकै कहै शमीर पुन 'गति करहु क्रिपाला ।। २२ ।।

निकट सथल निज दीजिए जाचा इह मेरी ।
अपर नहीं मन कामना काटहु मम बेरी' ।
सुनि हठ को श्री सतिगुरू तबि टारन कीना ।
केतिक दिवस बिताइ पुन मन होति प्रसीना[3] ।। २३ ।।

दास कामना दिये बिन मन चैन न पावै ।
पदवी देनि समीप की पुन उर ललचावै ।
इक दिन बहुर हकारिकै श्री बदन उचारा ।
'मांगउ मन की कामना जैसे हठ धारा' ।। २४ ।।

प्रभु जी ! भवजल ते रखहु कटि देहु चुरासी ।
बहुर न पावौं जनमको जम परै न फासी' ।
हसि बोले 'दै हैं इही पुन आवहु प्राती' ।
सुनि बंदन को करि गयो आनंद करि छाती ।। २५ ।।

सकल रीति की सेव करि निस महिं परि सोवा ।
अदभुत अनिक प्रकार को सुपना तबि जोवा ।
काक, कंक[4], केकी[5], ककन[6] कलबिंक मराला[7] ।
खग म्रिग पशु पंछी मनुख जनम्यो तन काला ।। २६ ।।

कीटी, कीटन, भ्रिंग भ्रित इत्यादिक घनेरे ।
भोगी जूनां जनम धरि मरि बहु बेरे ।
जनम पाछलो पुन भयो चंडाल कराला ।
जंगल देश प्रवेश भा चंडाली नाला ।। २७ ।।

भए सुतासुत पुंज ही बहु बध्यो कुटंबा ।
देश पर्यो दुरभिक्ख बहु नहिं अंन कदंबा ।

1. वस्तु 2. केवल 3. प्रसंन 4. सफेद चील 5. म्यूर 6. चकवा 7. हंस

छुधति रहति दुख सहत ह्वै बन बिखै पधारा।
पीलू खैबे हेत को पाकी लगि डारा॥ २८॥
कितिक सुतासुत संग लै गमन्यों बन मांही।
तोरन हित तरु पर चढयो तर[1] बालक तांही।
तोरि तोरि तरु ते तरै गेरति सिस खावैं।
पुन साखा पतरीन पर निज पाउं टिकावै॥ २९॥
तोरन को लालच लग्यो झुकि होइ अगारी।
टूट गई साखा तबै गिरि धरा मझारी।
चोट लगी ते जाग करि जुग नैन उघारे।
बिसम्यो करति बिचार बहु पिखि कौतक भारे॥ ३०॥
केतिक चिर महिं मल तजनि बैठ्यो कित जाई।
सोचत सुपने को रिद जेते तन पाई।
पीलू खाए पेट भरि बिशटा तस आई।
देखति चिता अधिक भी मति बहु बिसमाई॥ ३१॥
भई सोच उठिकै बहुर हित मज्जन बैसे।
करन लग्यो रद धावना चितवति है तैसे।
तबिदंतन महिं अटक जे पीलूं के बीजं।
निकसे दांतन करे ते चित कौतक थीजं॥ ३२॥
कहां भई इह बारता मुझ सुपना होवा।
धरे साच ही जनम कै बड संकट जोवा?
जानी जाइ न कहां गति निस महिं मम होई—।
पहिर बसत्र गुर ढिग चल्यो चितवै मन सोई॥ ३३॥
पद अरबिंदन बंदना करि थिर्यो अगारी।
तबि बूझनि कीनो प्रभू चित चित मझारी?
नहिं सोचहु, आनंद करो, होयो भल तेरा।
एक निसा महिं निबरगा तुव लेख घनेरा'॥ ३४॥
सुनति नंम्रि हुइ मुहरमुहु[2] पग नमो करंता।
'प्रभु जी! भेत बताईए मुझ चित अनंता।
सुपना होयो साच कै दोनहुं बिधि जानी।
फल पीलूं को समों नहिं निसमहिं किय खानी॥ ३५॥
जग मल पीलून की अरु बीज सु दंतं।
नीकै मैं देखनि कर्यो बिसम्यो[3] चित चितं'।

1. नीचे 2. बार बार 3. हैरान

श्री मुख ते भाख्यो तबै 'तुव जनम घनेरे।
सुपने बिखे भुगाइ दिय सुधि भा इस बेरे ॥ ३६ ॥
हम ते जाचति नित हुतो नहिं परौं चुरासी।
सो निशचै तो को दियो कटिगी जम फासी।
दुरलभ पद जोगनि को सो प्रापति होवैं।
भवजल दियो तराइ करि, नहिं संकट जोवैं' ॥ ३७ ॥

गुर ढिग तबै तिखान इक थिर द्याल पुरे को।
सो बोल्यो कर जोरि कै निज मसतक टेको।
बखशो इसके संग मुझ भवजल ते राखो।
दास जानि करि आपनो दिहु बरजिम कांखो' ॥ ३८ ॥
बिगसे प्रभु जी ढिग रहित मन प्रेम घनेरा।
तिस पर भी करुना करी भाख्यो तिस बेरा।
'तूं भी संग शमीर के त्यागहिं निज प्राना।
निकट हमारे पहुंचिकै करि बंधन हाना' ॥ ३९ ॥
सुनि दोनहुं आनंद धरि बंदहिं पद कंजं।
'धंन धंन श्री सतिगुरू दुख दालिद भंजं।
हलत पलत इक छिन बिखे जन केरि सुधारो।
सगल जगत है मंगता तुम एक दातारो ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते **'शमीर प्रसंग'** बरननं नाम खशट पंचासती अंशु ॥ ५६ ॥

अंशु ५७

दीने के ग्राम प्रसंग

दोहरा

विदति भए श्री सतिगुरू बसि दीने के ग्राम ।
हिंदू तुरक बखानते लै लै करि प्रभु नाम ।। १ ।।

निशानी छंद

जिस तुरकन को श्राप[1] भा हित राज प्रतापा ।
उजरे शहिर सिर्हंद बड भे जिस महिं पापा ।
सीतल[2] पुरी[3] महंत इक बहु अजमत वंता ।
धीरज धारी संत शुभ सतिनाम जपंता ।। २ ।।
चेला तिसी महंत को इक द्याल पुरी है ।
अजमत जुति बासा किय सिर्हंद पुरी है ।
सुनी गुरू की बारता पुरि स्राप उचारा ।
—बुरा बहुत पुरि को भयो जहिं बास हमारा ।। ३ ।।
गुर को कह्यो न हटहि किस सुर असुरन पासू ।
नर बपुरे की शकति क्या कहि मोरहि तासू ।
किम करिहौं मैं पुरि भलो जहिं खान रू पाने ।
करौं बिनै प्रभु अग्र जे सुनि लेहिं जि माने ।। ४ ।।
इम बिचार करि चलि पर्यो सुनि करि गुर दीने ।
गमन्यों पंथ उलंघ करि पहुंचयो चित चीने ।
बूझ्यो जाइ शमीर को तिन पुछि पहुंचायो ।
हाथ जोरि जुति प्रेम के पग सीस निवायो ।। ५ ।।

भुजंग छंद

नमो पाद कंजं गुरू रूप सोहे । धर्यो ईश औतार को लोक मोहे ।
नहीं जानि साकैं प्रभू रूप तेरो । सदा जै सदा जै क्रिपा धारि हेरो ।। ६ ।।
पूरा रूप बेदीन के बंस होए । गुरू नानकं आदि भे लोक जोए ।
दसों देह सोई महाराज धारे । उधारे घने को गने पुंज तारे ।। ७ ।।

1. शाप 2. 'सीतल' नाम है 3. एक संन्यासी संप्रदाय

कर्यो पंथ बीरान को सिंह होए। महां पाप कारीन के मूल खोए।
सकेशं सकाछ सदा शसत्रधारी। जपै नाम को तेज दीनो सु भारी ॥ ८॥
नहीं पंथ ऐसो कवे अग्ग्र होयो। दुहुं लोक महिं शोक दासानि खोयो।
महां तेज धारी महां ओजवंते। महां काज कारी महां शसत्र हंते ॥ ९ ॥
अरै कौन आगै तिहुं लोक मांही। रखो दास लाजै दुंद जांही।
महां मार मोहं अहोपं खिराज[1]। सदा जै सदा जै सदाशेय साजं ॥ १० ॥
छके छैल छाजे छब छेत्र छत्री। छमा छेम छोनी[2], छुभै छोभ अत्त्री[3]।
मलेछान लच्छान छै, रच्छ स्वच्छ[4]। लसो बीर रूपं बसो दास बच्छे ॥ ११ ॥
सरूपं अनूपं महा भूप भूपं। उधारो प्रभू जो परे मोह कूपं।
निशेशं[5] दिनेशं[6] जलेशं[7] धनेशं[8]। रहैं बीच आग्या सु आदि सुरेशं ॥ १२ ॥
पगं पंकजं प्रेम पागे परे हैं। जपैं नाम भै सिंधु तेई तरे हैं।
अमंदं मुकंदं बिलंदं अनंदं। नमो लेहु मेरी करौं हाथ बंदं ॥१३॥

निशानी छंद

बिनै प्रशंशा साध ते सुनि हसे क्रिपाला।
'दयाल पुरी ! कहु काज[9] क्या चलिआइ उताला ?
पहुंच्चो जंगल देश[10] महिं तजि करि घर बारा।
कहां कामना उर[11] 'भई क्या मतो बिचारा ?' ॥१४॥

सुनति साध बोल्यो बिनै 'जहिं भा अति पापा।
साहिबज़ादे[12] हति करे तिस को तुम स्रापा[13]।
तहां बास मेरो अहै सिख सेवक केई।
सुन्यों आप के स्राप को धरि करि डर तेई ॥ १५ ॥

मिलि आए मुझ पास बहु तिनहूं को प्रेरा।
बखशावन हित सभि कह्यो तजि आयो डेरा।
शरन पर्यो मैं आनि करि बहु नरन[14] समेता।
क्रिपा करहु उचरहु तथा जिम रहैं निकेता' ॥ १६ ॥
सुने नंम्रि वच साध के करि क्रिपा बखाना।
'मिल्यो आनि बखश्यो तुझै पहुंचहु थाना।
चढि कोठे पर खरे हुइ ले संख बजावो।
जहिं जहिं तेरी सेवकी तहिं तिनै सुनावो ॥ १७ ॥

---

1. गरुड़ 2. कल्याण 3. सशस्त्र वीर 4. संतों की रक्षा करने वाला 5. चांद 6. सूर्य 7. वरुण 8. कुबेर 9. कार्य 10. मालवा का इलाका 11. हृदय 12. गुरु पुत्र 13. शाप 14. संगत

जहिं जहिं पहुंचै संख धुनि तहिं तहिं रहिं बासा।
अपर पुरी फिटकन[1] करी हुइ शीघ्र बिनाशा।
गहिरी नीव निकेत बड सभि खाक[2] मिलैंगे।
नर नारी पीटैं घने दुख पाइ रुलैंगे ।। १८ ।।

जहिं बजार तहिं हल फिरैं मम पंथ उजारैं।
तुरत तुरक को ग़रक[3] करि लूटे अरु मारैं।
रहैं चिन्ह कित कित परे नहिं सदन दिखैंगे।
परे आपदा भीखनां तबि सरब लखैंगे ।। १९ ।।

तुव ढिग रहै बजार इक ह्वै अपर उजारा।
मारि लूट पलटा लहैं बड पंथ हमारा'।
द्याल पुरी सुनि द्याल ते पुन मसतक टेका।
'धंन गुरू पूरन पुरख तुम जलधि त्रिबेका' ।। २० ।।

आग्या ले करि अनंद धरि निज पुरि को आया।
चढ़ि कोठे पर ऊच धुनि ले संख बजायो।
जहिं जहिं नर जित कित सुनी सो अबि लौ बासा।
कई कोस लौ पुरि बडो गुर स्राप बिनाशा ।। २१ ।।

पहुंची सुधि तुरकान ढिग 'गुर श्राप उचारा।
अबि कांगड़ पुर थिर भए करि जंग अखारा।
कई लाख दल सुभट में करिकै घमसाना।
पर्यो शोक सभि देश महिं लाखहुं रिपुहाना ।। २२ ।।
थिर्यो निकट बिन त्रास ह्वै जाटन के ग्रामा।
दुरग नहीं सैना नहीं धन नाहि न धामा।
सुनिकै खान वजीद तब्रि लिखि पत्त्र पठावा।
'भो लखमीर शमीर ! तूं उर[4] डर नहिं पावा ।। २३ ।।
पतिशाही बंदा तुही गुर दुशमन शाहू।
गहि दीजे हम को अबै बैठ्यो तुम पाहू।
नांहि त पकरैं सभनि को दें दंड सज़ाइ।
लशकर[5] आवै उमड़कै[6] करि लिहु तकराई ।। २४ ।।
भला चहैं गहि लीजीऐ कित नहिं चलि जाई'।
सुनि लखमीर शमीर तब्रि सभि गाथ[7] सुनाई।

1. धिक्कार 2. मिट्टी 3. नष्ट 4. हृदय 5. सेना 6. चढ़कर 7. गाथा

'हमरे इह गुर पीर हैं बिचरति चलि आए।
किम नहिं ठानहिं सेव को जिन ते गति पाए ।। २५ ।।
तुम अपनी दिश देखीए पीरन[1] को सेवो।
घर राखहु भाखहु म्रिदल[2] सभि कुछ पुन देवो'।
कहि भेजयो तिन पास इम, पठि मानव राखा।
'चढहि सैन तौ देहि सुधि सवधानी भाखा[3] ।। २६ ।।
इत सतिगुर ह्वै चाकर गन राखे।
पैदल गन असवार हय रिपु सन रण कांखे।
तिसी चुबारे गुर थिरे रहिं सहिज सुभाऊ।
गहैं करद को कर बिखै अंगुरी[4] खुरचाउ ।। २७ ।।
इक दिन धिर लखमीर ढिग बोल्यो कर बंदे।
अंगुली छेलहु करद ते को हेत बिलंदे[5] ?'।
काटति जढ़ तुरकान की अतिशै द्रिड़ जोई।
नशटहि सकल भविक्ख महिं पाइ न कित कोई' ।। २८ ।।
मान सिंह भाख्यो तबै 'करि हानि इमाना[6]।
पथम तुरंगे को हतहु मचि दुंद[7] जहाना[8]।
आदि वजीदा जे अहैं अघ[9] के फल पावैं।
जगत विलोकति जानि है पापी खपि जावैं ।। २९ ।।
श्री मुख ते कहि जंग ते हति होइ तुरंगा।
दूर देश दच्छन बिखै है अनबन ढंगा।
तऊ—फते[10] को खत लिखैं पढि करि मरि जाई।
अपरन ते पलटा लहै मम पंथ बडाई' ।। ३० ।।
लिख्यो ज़फ़रनामा तबै बहु बैंत बनाई।
श्री अकाल करता पुरख पूरब वडिआई।
अहिद[11] करनि इमान को मिलिबे ठहिरायो।
तोर्यो बेईमान बनि दस लाख पठायो ।। ३१ ।।
बहुर जंग चमकौर को बरन्यों करि थोरा।
उपालंभ 'दोज़क[12] परैं जाहिं संकट घोरा।
बे इनसाफी[13] तैं करी बड चहैं सज़ाई[14]।
अशट दिवस की साहिबी[15] करि लै मन भाई' ।। ३२ ।।

---

1. गुरु 2. कोमल 3. भाषा 4. अंगुली 5. विशाल 6. धर्म 7. झगड़ा 8. विश्व 9. पाप 10. जफरनामा 11. समझौता 12. नरक 13. अन्याय 14. दंड 15. राज्य

दासतान[1] बदशहिन[2] की अरु केतिक आना।
लिखे बैंत करि शाइरी चतुरई महाना।
जस जस आशै कहिन को समुझावन हेता।
कहे प्रसंग अनेक तस सुनि मूढ अचेता॥ ३३॥

कुछक कथा लिखि आपनी सनमुख नौरंगे।
जिस पड़ने ते जानि है—मैं कीनि कुढंगे[3]—।
'पातशाहु प्रभु ने करे जिन धरम द्रिड़ाए।
केतिक गिन हौं जगत मैं जस धरम कमाए॥ ३४॥

तूं नौरंग पतिशाहु! सुनि पतिशाही बैठा।
चहिऐ! धरम कमावनो किय पाप इकैठा।
ख़ालक[4] की दरगाह[5] महिं मुह क्या लै जावैं।
भला बुरा जो तूं कीआ सो संग सिधावैं॥ ३५॥

पहिलां लिखिआ मिलन को दिल दग़ा कमाया।
फौजां चाढ़ि अगिनत ही घेरा करिवाया।
क्या इनसाफी तुझ करी करि मन अभिमाना।
झूठा पड़हि कुरान तूं नहीं अमल कमाना॥ ३६॥

जे तूं कहहिं कि संग मम इनसाफ कमाई।
सो सुनिदे करि कान को सभि कहौं बनाई।
एक सिला[6] पर वसत[7] थो किस ग्राम न रोका।
देश मुलख नहिं रोकिआ बिन दावे ओका॥ ३७॥

त्रिस का दीआ न खावतो प्रभु देइ सु खावों।
एक अकाल अराधतो किस को न दुखावों।
प्रथम बाप मम[8] कैद करि दीनो मरिवाई।
ऐसी दगे बहादरी करि मन गरबाई॥ ३८॥

जैसा बेइनसाफ तूं तैसे सभि राजे।
सिख संगत मारि करि बहु कीन अकाजे[9]।
सिक्खणीआं[10] गन हनि दई बहु लूटि खज़ाने।
बे इनसाफी इह करी मन समुझि इआने[11]॥ ३९॥

1. कहानी 2. राज्यों की 3. बुरे कार्य 4. मालिक 5. कर
6. पहाड़ी इलाका 7. बसते 8. मेरा 9. कुकर्म 10. सिक्ख स्त्रियाँ 11. अज्ञानी

बिन्नयाई[1] है तुद्ध घर प्रभु के घर नांही।
भली बुरी जस करति है तस फल सो पाही।
दस लख तुरक पहाड़ीए घेरा वड कीना।
कसम जु गऊ कुरान की करि खंडन[2] कीना।। ४० ।।

निकसे जबि हम वहिर[3] को दल पाछे सारा।
लरैं सिंह पुन चलत ही चमकौर सिधारा।
सिख चाली मम संग थे सो लड़ि करि जूझे।
छुधावंति सो क्या करहिं बेअंत पहूचे।। ४१ ।।

साहिबज़ादे चार ही छल करि मरिवाए।
काल पुरख[4] मम रछ करी दे हाथ बचाए।
तबि तुध पूछन होइगो खालक दर जावैं।
—रामदास क्या फेड़िआ[5]? की मुखहुं अलावैं[6] ।। ४२ ।।

क्या जवाब तबि देहुंगे तुम करी अनीती।
खबरदार[7] तूं हुइ रही ह्वै हैं भै भीती[8]।
खालक की दरगाह महिं हउं दावनगीरी[9]।
उत्तर कोइ न आवहै, ह्वै हैं दिलगीरी।। ४३ ।।

जेते दोज़क बनें है बिनसाफा[10] कारन।
फड़ अगनी जबि पावसन[11] जलि' करैं पुकारन।
रंक राउ है एक सम कुछ तहां न कानी।
कीडी की पहिले सुने गरबनि[12] पिछवानी[13] ।। ४४ ।।

जो मन तोर गुमान है मिहनत जौं खावौं।
राज अंस नहिं खाति हौं मैं बखश्या जावैं।
सो गुमान तव झूठ है घोड़े जव खाहीं।
उइ भी वली न हुइ गए भारे मर जाहीं।। ४५ ।।

वली न होयो तुरंग[14] को, तूं किस विधि होवै?
झूठे करहिं गुमान तूं अकबत[15] सभि खोवैं।
जौ रिद तोर गुमान हे—मैं पडौं कुराना।
इम बखशिश ते छूटि हौं—सभि झूठ कमाना।। ४६ ।।

---

1. अन्याय 2. तोड़ देना 3. बाहर 4. ईश्वर 5. क्या हानि की थी 6. बोलता है 7. जागरुक 8. डर 9. सहायक 10. अन्याय 11. डाले जाएंगे 12. अभिमानी 13. पश्चात् 14. घोड़े 15. मरणोपरान्त की दशा

मुख ते पड़हिं कुरान को दिलकपट विशेखा ।
अमलां[1] बाझ[2] न बखशीए गिन मन महिं देखा ।
लिखि कुरान पछ दगर पर सो वली न थीआ[3] ।
वली जानि बड आप को किम गरबति हीआ ।। ४७ ।।
जे करि तुझे गुमान यहि मैं बंदगी कैहों ।
पठि खाइता दोइ चार इम बखश मिलेहौं ।
बंदगी तिसका नाम हे मन करे मुखालस[4] ।
उलटा फरबा[5] तुध कीआ मन कीनी लालस[6] ।। ४८ ।।

मन की खुशीआं तुध करी पित भ्रात मराए ।
बंदगी तुध कौनै करी ? सभि कपट कमाए ।
जौ मन तोर गुमान यहि मैं उमत पिकंबर[7] ।
सो शफात[8] मम भरैंगो, तिन कह्यो बिचंबर[9] ।। ४९ ।।
—मैं शफाति तिसकी भरौं मुझ अमर[10] कमावे ।
तजणि जोग जो बात है तिस ते हटि जावे ।
जो कमावनी तिन कही, नहिं करी कमावन ।
नाहिं मानी सो पीर की, क्या करहिं छुडावन ।।५० ।।

माइआ दुनिआं करंग है तिस तालब कुत्ता ।
तो को नहिं बखशाव है, सभि करम अवत्ता[11] ।
जौ मन तोर गुमान इम वुत करी शिकसती[12] ।
सो घर घर बहुते बने होई आरसती[13] ।। ५१ ।।

हिंदू सभि अराधते टेकैं धरि माथा ।
इक भंगनि[14] ते लख बने इह जानहु गाथा ।
जौ गुमान है शरे[15] को इह बखशिश होवै ।
सभी शरे महिं बंधे हैं किम बखशन जोवैं ।। ५२ ।।

पंथ शर्हा करि बखश हुइ क्यों भजन करै को ।
संत जना की सेवकी क्यों जाइ करै को ।
साहिब लोकैं खुशी बिन नहिं दरगह बासा ।
बिन साहिब की बंदगी कूरा[16] भरवासा ।। ५३ ।।

---

1. कार्य 2. बिना 3. हुआ 4. पवित्र 5. भेंट 6. तृष्णा 7. पैगम्बर 8. सिफारिश 9. श्रेष्ठ वाक्य 10. आज्ञा 11. बुरा 12. पराजय 13. सजे सजाए 14. बुरा कार्य 15. शरअ 16. कूड़ा

जौतूं करहि गुमान यहि जसु करि सभि मेरा।
इत करि बखशन होइगी बिन लोभ न हेरा[1]।
लालच करि जो करति थे तिन नरक लिजाही।
फिराहून[2] प्रभु ते भए बहु मिलैं सजाईं।। ५४।।
साहिब सतार जु दिल गनैं सो बखशिश मोही।
सिफत कहार[3] सतार[4] है साहिब की दो ही।
तुझ ने किस के ऊपरे मनसा जिय धारी।
करी कहारी कहिर हुइ जु सतार सतारी'।। ५५।।
किक्कर बीजै अंब मिले नहिं होइ कदापी।
जैसा बीजै लुणै सो जो करीऐ आपी।
बदला लेवै खालसा छोडे कबि नांही।
जेतिक दुख किस देहिगो तेतिक सो पाही'।। ५६।।
ग़ज़ल रुबाई गन लिखी 'पैकंबर पुंजा।
तोहि सहाइक को नहीं ईमान प्रभंजा[5]।
जिनको पढि ग़ैरत करै निज लखै ढिठाई।
मरहि बिसूरति समुझिके, गुर लिखि समुदाई।। ५७।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे षशटम रुते '**दीने के ग्राम प्रसंग**' बरननं नाम सपत पंचासती अंशु।। ५७।।

---

1. देखता 2. एक बादशाह जो ईश्वर से मुनकर हुआ था 3. निर्दयी 4. क्षमादाता 5. तोड़ा है

अंशु ५८

दीने ते चढन प्रसंग

दोहरा

इस प्रकार लिखि सतिगुरू तुरक तरक[1] समुदाइ।
पीछे अमल तरीफ लिखि जिस पठि उर जर[2] जाइ ॥ १ ॥

निशानी छंद

करति रह्यो लखि भली जो अरुशर्हा चलाई।
निज तोरा[3] करिजहिं कहां सभि ते करिवाई।
—करति रह्यो मैं अमल शुभ—इम धरैं गुमाना[4]।
—नहिं सज़ाइ दोज़क बनै—इह निशचै ठाना ॥ २ ॥
तिसही को खंडन कर्यो लिखि लिखि गुर पूरे।
सकल जनाई तुरक को 'हुइ नरक ज़रूरे।
साहिबज़ादे चार हूं छल करि मरिवाए।
महां पाप इह तोहि सिर, करि अहिद[5] मिटाए ॥ ३ ॥
अवरंग पदरहि[6] पदर[7] को तिस पदर[8] वहोरी।
लिखी सपत अजबा तबै सो हैं कित ठौरी।
मरे खाक महिं मिल गए को इक दिन वाजी।
हार चले कर झारि करि साची लखि पाजी[9] ?" ॥ ४ ॥
इत्यादिक लिखि बैत महिं शुभ गिरा बनाई।
जिसको पठि गम को करैं तूरन[10] मरि जाई।
'तिस पशचाती सभिनि ते पलटा[11] हम लैहैं।
मारि छार करि तुरक गन सभि राज मिटै हैं ॥ ५ ॥
लिखि इकांग ओंकार को मंतर सतिनामा।
वाहिगुरू जी की फते लिखि अभिरामा।
करि इकत्त्र कागत भले समरथ सभि भांती।
नाम 'ज़फरनामा' रखयो शत्रू हित हाती ॥ ६ ॥

---

1. तर्क 2. जल जाना 3. आज्ञा 4. अभिमान 5. समझौता 6. शाहजहाँ 7. जहाँगीर 8. अकबर 9. झूठा 10. तुरन्त 11. बदला लेना

'इत लाखहुं हतिकै सुभट रज द्रिग महिं पाई।
उत कागद के पठति ही हज़रत मरि जाई।
नाम धर्यो खत फते को इह कारन जानो।
नाश दुतरफै तुरक ह्वै सभि राज प्रहानो ॥ ७ ॥
दया सिंह! तुम ले भले मिलीऐ तुरकेशा[1]।
बोलहु निकट सुचेत ह्वै करि डर नहिं लेशा।
तोहि बचन महिं शकति दी जिम कहैं सु होवैं।
पहुंचहु दक्खन देश महिं तूरन तहिं जोवैं ॥ ८ ॥
अहिदी[2] बन चढि मंच पै लिहु पलटा जाई।
गुर घर ज़िम अहिदी पठे तिम आप सिधाई।
धरम सिंह बसि आगरे तिस लीजहि संगा।
विलम बिहीन पयानीए[3] करि कारज चंगा' ॥ ९ ॥
नीलांबर सभि धारिकै गुर आइसु पाए।
दया सिंह त्यारी करी जिम वाक सुनाए।
लीन ज़फरनामा तवे बंध्यो सिर साथा।
करी वंदना प्रेम ते जोरे जुग हाथा ॥ १० ॥
धरम सिंह तिम नमो करि रुखसत[3] जुग होए।
चले गुरू के काज को हरखति सिख दोए।
दया सिंह चढि मंच पर आसन करि बैसे।
हाजी काबे को मनो अहिदी थिरि जैसे ॥ ११ ॥
नर निकार करि ग्राम ते मंचा[4] उचवायो।
धरम सिंह हुइ गैल मैं गमने मग पायो।
ग्राम ग्राम प्रति कै नगर नर लेति निकारे।
हज़रत के हित हतनि को जुग सिंह सिधारे ॥ १२ ॥
पूरब दिल्ली मैं गए ध्रमसाल उतारा।
सभि संगति गुर की अई धरि भाउ उदारा।
दरशन करि करि अनंद धरि सभि सेव कमाई।
चह्यो खरच हित पंथ के धन दे समुदाई ॥ १३ ॥
बसे राति सुख सों तहां करि खान रू पाना।
सौच शनाने प्राति को किय पंथ पयाना।

---

1. तुर्कों का बादशाह 2. समझोता करने वाला 3. विदाई, चला गया 4. चारपाई

करनि बिदा संगति गई हटिकरि पुन आई।
जथा करम मग उलंघते नित सिंह सिधाई ॥ १४ ॥
नगर आगरे उतरिकै पुन संगति मांही।
पुर्जहि दरशन को करहिं जिम गुरू लखाही।
चले सिंह आगे वहुर हुइ चंबल पारा।
नरवर काले बाग को करि मजल[1] सिधारा ॥ १५ ॥
शहिर सरोज उजैन को करि संगत मेला।
देश मालवा सैल करि चलि सिंह सुहेला।
नदी नरवदा पार गा 'गड़ शेर' सिधायो।
पुरिबुरहान पहुंचिकै संगत दरसायो ॥ १६ ॥
तहिं बसि करि आगे गयो अवरंगा बादू।
नगर अहिमदाबाद महिं धिर बिना बिखादू[2]।
बिसराम्यो मग श्रम हत्यो आनंद को पाए।
जहां छावनी शाह की चढि तहां सिधाए ॥ १७ ॥
हेरि जांहि बूझति भयो गुर को सिख कोई।
दियो बताइ जु लखैं थे सुनिकै सुधि होई।
जेठा सिंह जेठा इहां धन बुधि महिं जानो।
दया सिंह अरु धरम सिंह आवाहन ठानो ॥ १८ ॥
आइ मिल्यो ततकाल ही सुनिके सभि गाथा।
अपने निकट उतारि करि बहु भाउ[3] कि साथा।
सेवा कीनी सकल बिधि सभि खान रु पाने।
शाहु भेद समुझाइ दिय जिम आवन जानें[4] ॥ १९ ॥
पहुंचनि मुशकिल शाहु ढिग क्या करैं उपाया ?
श्री गुर को कारज महां ढिग लौ आया।
दया सिंह बोल्यो सुमति 'कुछ चिंत न कीजै।
संगत करहु इकत्र सभि पठि हुकम सुनीजै ॥ २० ॥
पुनहि जतन मिलि करैंगे जिस किस बिधि होवै।
अपना कारज आप ही गुर त्रिघन सु खोवैं'।
जेठा सिंह सुनिकै तबै सुध संगत मांही।
सभि को दई सुनाइ करि जानी जहिं कांही ॥ २१ ॥

1. मंज़िल 2. विषाद 3. सादर 4. आने जाने का

भयो प्राति को जोड़ तबि पंचाम्रित कीना।
सतिगुर के सिख सरब ही बैठे सुख पीना।
दया सिंह को नमो[1] करि पुन हुकम सुनायो।
'श्री प्रभु को कारज इही कीजहि मन भायो'॥ २२॥

सुनि सुनि गुरमुख सिक्ख जे तिन सिर पर माना।
केते मनमुख तरक ते जिन भेव न जाना।
करहिं अनिक उपचार को कुछ बन नहिं आवैं।
सिख सगरे इत उत[2] फिरहिं बहुतनि[3] ढिग जावैं॥ २३॥

इत सतिगुर दीने थिरे भे बिदत जहाना।
मूरख खान वजीद जो चितवंति महाना।
—मर्यो नहीं पकर्यो नहीं, जीवति थिर नेरे।
महां जंग करि करि जिनहुं दुख दए घनेरे॥ २४॥

हज़रत करे उगाव बहु नाहिन[4] को चाला।
सभि तुरकाने शोक दुख जिन डालि बिसाला।
अबि तूशन रहि कोइ दिन दीजै बिसवासा।
परहिं अचानक जाइ कर, गहि किधौं बिनाशा—॥ २५॥

लग्यो बटोरनि बाहनी[5] जित कित ते आई।
जथेदार सन सभि कही : 'रहिं त्यार सदाई[6]।
संध्या प्रात पछानीएं चढिबे कहु काजू[7]।
इत उत बिथरहि को नहीं बनि त्यार समाजू॥ २६॥
गोरी अरु बारूद बहु सभिहिनि को दीजै।
गमन दूर हित हयनि को आसूदे कीजै[8]।
इस खांन वजीद बहु त्यारी करिवाई।
इति सतिगुर सभि जानिकै चितवंति लराई॥ २७॥

दुरग होइ गाढो महा मेलहिं घमसाना।
रचि संग्राम बिसाल को मारहिं तुरकाना।
इहां आइ हम बास किय सेवा बहु कीनी।
नगरी नहिं लुट जाइ तिह थिरता हम लीनी॥ २८॥

---

1. नमस्कार 2 इधर उधर 3. अधिक 4. कोई भी 5. सेना 6. शाश्वत् 7. कार्य 8. हथियार देना

चाकर[1] रहिं बैराड़ वहु सभि वहिर उतारे—।
रच्छ[2] चहति हैं जनन की चढि चलनि बिचारे।
—नतु इहठां रण परै गो, रय्यत[3] नर आदी।
शत्रु, इनहिं दुख देहिंगे राहक बुनियादी ॥ २९ ॥

परम सिंह अर धरम सिंह रूपे के दोई।
अपर सिंह भे सैंकरे प्रेमी सिख जोई।
पुन[4] लखमीर शमीर को, त्रै भ्रात, बुलाए।
'चढ्यो चहति हम इहां तें देखनि अगवाए ॥ ३० ॥

ग्राम तुमारे धाम महिं थिर ह्वै सुख पाए।
लरहिं अबहि तुरकान सन रिपु ह्वै समुदाए।
शसत्र चलहिं मारन मरन घालहिं घमसाना।
तुम को परहि बिखाद[5] तबि उमडहि[6] तुरकाना ॥ ३१ ॥

हेतु बिचारन हम कर्यो आगै हम जावैं।
दुरग लेहिं कै वहिर ही मिलि जंग मचावैं'।
सुनि कर जोरति कहति भे 'हम हैं अनुसारे।
प्रभु जी! रावरि[7] साथ हैं लरमरहिं कि मारें' ॥ ३२ ॥

सतिगुर सुनिकै तिनहुं ते बहु भांति सराहे।
'कुल तुमरी महिं सिंह ह्वै रण करहिं उमाहे[8]।
अबि सुख सो घर महिं थिरहु इह थल दिढ[9] होवे।
जो चढि आवै तुमहु पर पत[10] अपनी खोवै ॥ ३३ ॥

खेत जीत को ग्राम नर शत्रुनि ते पावै।
नाम लोह गड़ होइगो दिन प्रति विदतावै'।
इम कहि करुना बहु करी दे खुशी बिसाले।
'हम सहाइ परलोक महिं दुख ते रखवाले[11]' ॥ ३४ ॥

इम कहि त्यारी प्रभु करी हय ज़ीन[12] पवाए।
हय, पैदल सैना सकल तन शसत्र सजाए।
भए अरूढनि दे खुशी सभि बंदन ठानी।
गए दूर लगि संग नर बिछुरनि दुख मानी ॥ ३५ ॥

---

1. नौकर 2. रक्षा 3. जाता 4. पुनः 5. विषद 6. चढ़ कर आये 7. हमारे 8. प्रसन्नता 9. दृढ़ 10. इज्जत 11. रक्षा करने वाले 12. ज़ीन

पुन सभि को मोरन कर्यो बिछुरति वधि प्रेमा ।
सिक्खी गुरमति उर[1] धरी[2] भे उचित सु छेमां ।
गुरू दसम पातिशाहु की मैं कथा बनाई ।
रुतां खट पूरन करी शुभ गिर अलाई ।। ३६ ।।

पाधड़ी छंद

इह पठति सुनति नर धारि प्रेम ।
हति बिघन लोक परलोक छेम[3] ।
मन बिपन[4] बिखै अघ[5] म्रिगन सिंह ।
दे अनंद रिदे[6] संतोख सिंह ।। ३७ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे षशटम रुते कवि संतोख सिंह विरचतायां भाखायां '**दीने ते चढ़न प्रसंग**' वरननं नाम अशट पंचासती अंसु मसत रुत मसतु ।। ५८ ।।

---

1. हृदय 2. धारण की 3. मोक्ष 4. व्याकुल 5. पाप 6. हृदय

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि

श्री वाहिगुरू जी की फते

॥ अथ पूरब ऐन लिख्यते ॥

अंशु १

भगते गमन प्रसंग

१. इष्ट देव—मंगल

दोहरा

दया दयानिधि की भई उद्दम दया बिसाल[1]।
चह्यो ग्रंथ पूरन कीयो पूरन प्रभू अकाल ॥ १ ॥

२. इष्ट गुरू—मंगल

कबित्त

बेदी बंस भूखन[2] जे पूखन अदूखन से तिमर कलूखन[3] पखंड छपि तारे हैं।
पीर सिद्ध धीर[4] करामात के गहीर[5] गन मान सैल[6] चढे गुरू नानक उतारे हैं।
देशनि बिदेश फिर जंबू दीप दीप समु कीने हैं करोरों सिक्ख भवजल तारे[7] हैं।
जसु बिसतारे[8] भारे, बिशै बिस तारे वहु[9], खोलि मोहतारे[10], वादी[11] बाद[12] करतारे[13] हैं ॥२॥

३. इष्ट गुरू—मंगल

भए गुरू अंगद अनंद मय बिलंद मन, सतिगुरू अमर सिमर सुख भारे हैं।
गुरू रामदास आस पूरी लखि दास निज, विघन बिशाल गुरू अरजन निवारे हैं।
श्री हरिगुबिंद चंद बंदनीय दुंद मंद† गुरू हरि राइ हरि क्रिशन उदारे हैं।
नौमें पातशाहि, श्री गुबिंद सिंह रिपू दाह पूरी कीनी चाह, जो सहायक हमारे हैं ॥ ३ ॥

दोहरा

ब्रिंद अरिंदम,[14] कंद सुख पद अरबिंद मुकंद।
अभिबंदन कर[15] बंदिकै देहु अनंद बिलंद ॥ ४ ॥
श्री नानक परकाश को प्रथम कीनि इतिहास।
पुन अशटहुं गुर के करे रचि करि द्वादश रासि ॥ ५ ॥
बहुर खशटि रूति के बिखे दसमें गुरू बिलास।
जनम आदि ते रचि भले कविता कीनि प्रकाश ॥ ६ ॥

---

1. विशाल 2. सूर्य 3. पाप 4. बुद्धिमान् 5. निधि 6. पर्वत 7. उद्धार किया 8. दूर किया 9. अधिक 10 मोह के ताले 11. झगड़ालू 12. वाद-विवाद 13. मुक्त किए हैं 14. दुष्ट दमन 15. हाथ †पद (पा०)

रही कथा अबि शेष जो तिस हित ऐन बनाइ।
बरनौं सरब प्रसंग को सारसुती[1] उर ध्याइ ॥ ७ ॥
दच्छणाइन उतराइनं संमत के दुइ ऐन।
इत उत सूरज ह्वोनि ते जानति हैं बुधि ऐन[2] ॥ ८ ॥
गुर प्रताप सूरज कथ्यो इही नाम धरि दीनि।
यां ते सिक्ख संगति लखहु इम कवि बिनती कीनी ॥ ९ ॥

४. 'कवि संकेत' मर्यादा का मंगल

चौपई

सारद[3] दासन सारद सारा। पारद[4] बरनी पारद[5] पारा[6]।
सारद[7] बिधु[8] बदनी हरिदारिद। दासनि बारदा[9] बरसति बारद[10] ॥ १० ॥

दोहरा

श्री प्रभु दीने ते चढे पिखि पहुंचे इक ग्राम।
खरे होइ बूझनि कियो 'कहां ग्राम को नाम ?' ॥ ११ ॥

चौपई

सुनि राहक भाख्यो तिस काला। इसी ग्राम का नाम रुखाला'।
श्री गुरू बरजन कीनसि तांहि। 'नाम रुखाला कहीए नांहि ॥ १२ ॥
अबि ते कहहु नाम रखवाला'। तिसही थल डेरा गुर घाला।
संगी सिंह उतरि थिर भए। त्रिण इंधन इकठे करि लए ॥ १३ ॥
तबि जलाल के पंच बिचारि। मिलिवे हेत होइ करि त्यार।
दुइ दीरघ घट पय[11] टे[12] भरिकै[13]। गुड़ प्रसादि केतिक ले करिकै ॥ १४ ॥
आनि गुरू पगबंधन[14] ठानी। इक बरछी खर[15] चारु[16] महानी।
दई उपाइन, श्री प्रभु लई। देखि प्रसंन खुशी बहु कई ॥ १५ ॥
पिखि रुख तबि जलाल के कहैं। 'बैर ग्राम इन सों नित रहै।
कबि कबि तिन सब परहि लराई। मारन मरन हई समुदाई ॥ १६ ॥
श्री मुख ते अबि करहु उचारी। जिस ते होवे फते हमारी।
बाक आपके सफलैं सदा। कहियहि जीत होई जद[17] कदा' ॥ १७ ॥
श्री मुख ते भाख्यो तिह समें। 'गुर घर को रहीअहि नित निमें।
रिपु सों लरे, फते को पैहैं। चढी आई उतराई[18] सु जैहैं' ॥ १८ ॥

---

1. सरस्वतो 2. बुद्धिमान् 3. सरस्वती 4. पारा 5. विद्या 6. पार लगाने वाली 7. हेमन्त ऋतु 8. चंद्रमा 9. वरदात्री 10. बादल 11. दूध 12. से 13. भर कर 14. पैर छू कर 15. गधा 16. सुन्दर 17. जब 18. पराजय

इह बर दियो हरख[1] उर भरे। केतिक सेव और भी करे।
तिस पशचाति लरे कबि सोई। रिपु ते बिजै तिनहुं की होई ॥ १९ ॥
इसी रीति बहु बरख[2] बिताए। बिदते सिंह जबै समुदाए।
एक बार दल तहां सिधारा। तबि जलाल ने कीनि बिगारा ॥ २० ॥
निस महिं जुग सिंहान को मारे। बाजी पंच चुराइ निकारे।
प्रात खालसे जानि खुटाई। भए अरूढि निशान बजाई ॥ २१ ॥
मार्यो पिखि जलाल को ग्रामू। लूटे भली भांति गन धामू।
तबि गुर वाक चितावन लागे। 'कह्यो प्रथम को जो हम त्यागे ॥ २२ ॥
—गुर घर संग निमे जे रहो। बिजै आपनी जित कित लहे।
जबि बेमुख[3] होवहु दुख पावहु। सहहु सज़ाइ[4] मार को खावहु ॥ २३ ॥
हम ते खता[5] भई गुर केरी। बखशावनि अबि बनी है फेरी।
पंज । रुपय्यानि कीन कराहू। ले करि गए खालसे पाहू ॥ २४ ॥
पाछल अगल प्रसंग सुनावा। हाथ जोरि कहि कै बखशावा।
पुन सो ग्राम उजरि तिस थाना। जहिं गुर थल तहिं बास्यो आना ॥ २५ ॥
नाम गुरू सर राखनि कर्यो। अबि लौ[6] बसहि तिसी थल[7] थिर्यो[8]।
दीने ते उठि पूरब डेरा। कर्यो तहां प्रभु लायक हेरा ॥ २६ ॥
सुपति जथा सुख निसा बिताई। जागे सकल प्राति हुइ आई।
सौच शनान ठानि करि भले। डारि जीन[9] हय आगे चले ॥ २७ ॥
कितिक कोस पर भगता ग्रामू। पिख्यो तहां चलदल अभिरामू।
इस तरु तरे तुरंग ठहिरायो। उतरे दास हाथ पकरायो ॥ २८ ॥
तहां गलीच को बिछवाई। बैठि गये तिस पर सुखदाई।
थिर ह्वैइत उत द्रिशटी चलाई। निकट कूप की लगहि चिनाई ॥ २९ ॥
अविलोकति इक नर ढिग आयो। तिह सों बूझन हेत अलायो।
इहां कूप लगवाबति कौन ? किस को ग्राम कऊन को भऊन ? ॥ ३० ॥
कहि नर 'बहिलो का इह पोता। जिस को भगता काम उदोता।
तिन को ग्राम कूप सो लावति। सुनि तिस ते सतिगुरू अलावति ॥ ३१ ॥

दोहरा

'दंम लगन पतिशाह के साबूनगगरां[10] दा नाओं[11]।
पूरब[12] इम होई कहुं सोई इस थाऊं' ॥ ३२ ॥

---

1. हर्ष 2. वर्ष 3. भूलना 4. दण्ड 5. भूल 6. अब तक 7. स्थान 8. स्थिर 9. जीनत 10. गांव 11. नाम 12. पूर्व

चौपई

सुनिके सिक्खन बूझनि ठानी। 'को प्रसंग प्रभु करहु बखानी'।
जिस पर भाख्यो इह पक्खयाना। हम भी सुन्यो चहैं निज काना।। ३३ ।।

श्री सतिगुरू प्रसंग उचारा। 'तुरकनि इक दीवान उदारा।
रामू नाम कहति हैं जांही। इक तनुजा तिस के ग्रिह मांही।। ३४ ।।

सो अनंदपुर चलि कै आयो। होहि नंम्रि ब्रिच[1] सभा सुनायो।
मोहि सुता कहु लगयो प्रेत। श्री गुर सिख को होई सुचेत[2]।। ३५ ।।

करहि निकासन तिस को ऐसे। बहुर न आई प्रवेशै जैसे।
बहु उपचार करे सभि हारे। को नाहिं सक्यो तांहि निखारे।। ३६ ।।

यां ते मैं गुर सभा मझारी। अरज़[3] ऊचारी सभिनि अगारी।
सुनि सभि भगते की दिशि हेरा। रुख परखति बोल्यो तिस बेरा[4]।। ३७ ।।

—नहिं चिंता करि सुख होई जाइ। हरख्यो रामू सेव कमाइ।
ले भगते को लवपूरि गयो। पहुंच्यो भूत निकासति भयो।। ३८ ।।

तबि दीवान कह्यो कर जोरि। —फुरमावहु कारज चित लोर[5]।
मोकहु सेवक अपनो जानहु। करउ सेव कूछ आप बखानहु।। ३९ ।।

सुनि भगते भाख्यो इह कामू। —चहैं कूप लायहु निज ग्रामू।
दूरलभ तहां ईंटका अहैं। होइ न सकहि कर्यो जो चहैं।। ४० ।।
यां ते इक पचावा[6] देहू। कूप लगहि करि कारज ऐहू—।
सुनि रामू बिसम्यो बच भाखा। —ईंट लेहु जेतिक अभिलाखा।। ४१ ।।

एती दूरि पहूंचहिं कैसे? उशट सकट[7] ते[8] जाइ न तैसे।
दरब अधिक ते पहुंचहि सोइ। इह उत्तर मोकहु कहु कोइ।। ४२ ।।

सुनि भगते कहि—दिहु तुमताही। पहुंचावनि कुछ मुशकल नांही।
एक निसा महिं सभि ले जावैं। पहुंचै सुगम, कूप लगवावैं—।। ४३ ।।

तबि राम इक दयो पचाया[9]। देखनि हित नर एक बिठाया।
भगते सभि प्रेतनि को प्रेरा। आनि लगे ढोवनि तिस बेरा।। ४४ ।।

एक जाम महिं सभि ले आये। बैठ्यो नर कुछ लिख्यो न जाये।
रामू संग जाई तिहिं भना। —बडो कुलाहल मैं इक सुना।। ४५ ।।

---

1. में 2. सतर्क 3. विनय 4. समय 5. इच्छुक 6. भट्ठा 7. छकड़ा 8. पर 9. भट्ठा

देख्यो रूप न रंग न अंग। करति शीघ्र लगे इक संग[1]—।
बिसम्यो रामू तूशन[2] भयो। सो इह कूप लगावनि कियो॥ ४६॥
अबि भी भूत मजूरी करैं। चूना इंट आनि कै धरैं।
श्री अरजन प्रसंन मन ह्वै के। भाई बहिलो के बसि कै के॥ ४७॥
चारहुंदिश को भूत रु प्रेत। तबि ते इनके बसी निकेत[3]।
बैठे सतिगुर गाथ बताई। इतने महिं किन जाइ सुनाई॥ ४८॥
'गुरु उतरे पीपर तरु तरे। सुनि कहि बाक बचन इम करे।
केतिक सिंहन को दल साथ। कूप लगहि तिम ढिग[4] थिर नाथ[5]॥ ४९॥
पंच पुत्र भगते के तहां। इक गुरदास जनयो त्रिय[6] महां[7]।
दुतिय भारजा ते सुत उपता। तारा, भारा मिहरा, बखता॥ ५०॥
पंचहु ततछिन ह्वै करि त्यार। एक तुरंगम शुभ शिंगार।
ज़ीन रजत को ऊपर पाए। श्री सतिगुर के ढिग ले आए॥ ५१॥
पद अरबिंद[8] बंदना करिकै। दरशन देख्यो चित हित धरिकै।
बैठति ही कर जोरि ऊचारी। 'कह्यो कूर किन आप अगारी[9]॥ ५२॥
बपुरी[10] बात कूप की कहां[11]। तुम ते[12] ही हम सभि किछ लहा[13]।
लघु दीरघ त्रिय पुरख[14] हमारे। आदि अंत के दास[15] तुमारे॥ ५३॥
भूखन[16] किस के, बांदी[17] किस की। इम न लखैं[18], मूरख मति तिस की।
हमरो सभि घर बार तुमारा। सभि जाचक[19] इक आप दतारा॥ ५४॥
पिखि पंचहुं भ्राता की ओर। निरहंकार[20] रहै कर[21] जोरि।
मंद मंद मुसकाइ बखाने। 'हो हमरे ही, सभि जग जाने॥५५॥
कुशल प्रशन करि खुशी उदारा। लियो तुरंगम जो बलि भारा।
पुन पंचहुं कर जोरि उचारे। करीअहि पावन सदन[22] हमारे॥ ५६।
चरन सरोज[23] आप के परैं। सभि कुटंब उर आंनद धरैं।
पूरहु कामना दासन मन की'। सुनि प्रभु चले संग हुहि तिन की॥ ५७॥

---

1. एक बार ही 2. प्रसन्न 3. परिवार 4. वहाँ 5. योगी 6. स्त्री 7. बड़ी 8. दुष्ट दमन 9. आगे 10. साधारण 11. क्या 12. से 13. लेते हैं 14. पुरुष 15. सेवक 16. आभूषण 17. दासी 18. जाने 19. सेवक 20. अभिमान त्याग कर 21. हाथ 22. घर 23. कमल

मंच[1] बिछाई बिछौना छाये। बिनै भनति तिस पर बेठाये।
खरे होई बोले प्रभू हेरा। 'वेख[2] सहिजधारी[3] हम केरा ॥ ५८ ॥

उर अभिलाखा, करनि अहारा। अबि चाहति हैं हुकम तुमारा'।
क्रिपा करति तिन संग बखाना। 'तुम पर हमरी क्रिपा महाना ॥ ५९ ॥

है प्रसंनता खुशी पछान। तुमरो है सभि किछ परवान।
सभि भिआनीआं चलिकरि आई। बहु शरधा ते ग्रीव[4] निवाई ॥ ६० ॥

दे करि खुशी गुरू चलि आए। सिवर बिराजे सहिज सुभाए।
दासनि तवै लगायहु डेरा। ज़ीन उतारि धरे तिस बेरा[5] ॥ ६१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पूरब ऐने '**भगते गमन प्रसंग**' बरननं नाम प्रिथमो अंशु ॥ १ ॥

---

1. चारपाई 2. रूप, वेष 3. जिसने केश धारण न किए हों 4. सिर
5. समय

अंशु २

भगते बसन प्रसंग

दोहरा

त्रिण दाना पहुंचाइ करि सेवा करी बहु रीति[1]।
आन्यों भोजन प्यार करि बहु स्वादल[2] धरि प्रीत[3] ॥ १ ॥

चौपई

थार[4] परोस[5] धर्यो गुर आगे। दयो सरब को अचवन लागे।
त्रिपती पान करि पानी पात। करे पखारन[6], गुर भगवान ॥ २ ॥
सुपति जथा सुख निस के मांही। भई प्राति जाग्रत चित चाही।
संच शनान ठानि गुर बैसे। पंचहुं भ्रात आइ करि तैसे ॥ ३ ॥
मान सिंह तबि बूझी बाति। 'कै[7] भाइ बहिलो के तात[8] ?।
पिता तुमारो नाम सु कौन ? कहहु वंस की गाथा जौन ? ॥ ४ ॥
तबि गुरदास बखानी गाथा। बखशे जबि श्री अरजन नाथा।
भाई बहिलो तबि चलि आए। मसंत[9] सुभाव एक[10] लिव लाए[11] ॥ ५ ॥
नहीं पदारथ दिशि ब्रिति आई। इक रस बैठहिं सहिज सुभाई।
जित देखति तित देखति रहैं। मुद्‌द्रति[12] नैन सु मुद्‌द्रत अहैं ॥ ६ ॥
इक दिन गन संगति चलि आई। नमो करी भाई अगवाई।
हुतो पुत्र इक नानू नाम। त्रै सुत उपजे तांके धाम[13] ॥ ७ ॥
पिखि संगति को हुकम बखाना। --आनहुं घर ले प्रात महाना।
तिस महिं सिक्खन चरन पखारें। गमने मग को श्रम निरवारैं[14] ॥ ८ ॥
सुनति दास घर अंतर गयो। निस त्रासन को न जाचति[15] भयो।
हुती सु ग्रीखम रुत तिस काला। जल भरि राखी प्रात बिसाला ॥ ९ ॥
त्रै नानू सुत बीच बिठाए। तिन की जननी मसलि नुहाए[16]।
कह्यो दास को—प्रात मझारी। पुत्र शनानो निरमल बारी ॥ १० ॥

---

1. भांति 2. आनंद 3. प्रेम 4. थाल 5. लगाकर 6. हाथ धोना 7. कित ने 8. पुत्र 9. अच्छा 10. ईश्वर 11. सम्बन्ध जोड़ना 12. बंद 13. घर 14. निवारण करना 15. विनय की 16. स्नान

नहिं छूछी जे लै करि जाए। निज सुत सीतल करों नहाए— ।
सुनि करि दास बतावनि कीन। तबि भाई गरबति तिस चीन ॥ ११ ॥
बेमुखता गुर ते इन धारी। पुत्रनि हित बोलति हंकारी।
तौ बालक म्रितु पाइ सिधेहैं। इहां परात परी रहि जैहें ॥ १२ ॥
सति संगत ते सुत शुभ जाने। तिन की होइ आरबल[1] हाने[2]— ।
इम भाई बहिलो के कहे। तीनहुं पौत्रे मरि करि रहे ॥ १३ ॥
तिन को पित नानू दुख पाए। पुत्र नेह ते शोक उपाए।
लग्यो पिता की सेवा करन। देह शनाने धोवति चरन ॥ १४ ॥
भोजन अधिक प्रीति सो खवावे। इत्यादिक सभि सेव कमावे।
पिता प्रयंक के हुइ करि तरे। करि सेवा को निसदिन परे ॥ १५ ॥
जिम आइसु को पिता बखानैं[3]। हाथ जोरि तूरन तिम ठानै।
इक दिन होइ प्रसंन महाना। देखि भाउ[4] को वाक बखाना ॥ १६ ॥
कहा कामना तुव उर मांहीं? मांगन करो सु हमरे पाही—।
तबि नानू कर जोरि उचारा। —रहै जगत महिं बंस तुमारा ॥ १७ ॥
इही कामना लखियहि मेरी। पूजहु[5] कीजै क्रिपा बडेरी—।
सुनि भाई बहिलो कहि सोइ। —जाचहु अपर[6] कामना कोइ ॥ १८ ॥
पुन नानू कहि—सुत ही दीजै। जउ प्रसंन तउ करुना कीजै—।
तीन वेर भाई इम कह्यो। सुत बिन नानू ऊपर न चह्यो ॥ १९ ॥
श्री मुख ते हुइ खुशी उचारा। उपजहि सुत तुव हुइ गुन भारा।
भगता नाम तांहि को धरीअहि। रिदे कामना पूरन करीअहि ॥ २० ॥
सुत के सुत उपजन वर दयो। तबि भगता जनमति शुभ भयो।
तिस भगते के हम भे ताता। जुग दारा ते पंचहु भ्राता' ॥ २१ ॥
सकल[7] बारता तिनहुं सुनाइ। प्रभु अखेर त्यारी करिवाई।
चढे तुरंग संग असवारा। गमने केतिक दूर उजारा ॥ २२ ॥
तीतर एक बोलता दूरे। सुनि बोले श्री सतिगुर पूरे।
'भूमीआ भूमि ऊपरि नित लुझैं[8]। छोडि चले त्रिसना नहीं बूझै' ॥ २३ ॥
सिक्ख न बूझ्यो कहां अलाई? पातशाह! दिहु हमहु बुझाई'।
सुनि श्री मुख ते कह्यो ब्रितंत। 'इह तीतर बोल्यो छित कंत ॥ २४ ॥
थेहु गंड को नाम कहावै। सो इह गंड न तजि करि जावै।
अपनि सथान पछानि रहंता। अपर जान हित नाहीं तजंता ॥ २५ ॥

---

1. आयु 2. हानि 3. कहे 4. प्रेम 5. पूरी करो 6. अवर 7. सगल
8. लोभ करता है

फूटी आंख एक इस केरी। काना कहै पकर लिहु हेरी'।
सुन सिक्खनि घेर्यो बरिआई। इत उत फिरति छपन हित थाई[1] ॥ २६ ॥

धाइ धाइ करि दयो हराए। हित पकरनि के हाथ चलाए।
गहि करि आन्यो गुरू अगारे। निरनै हित जुग नैन निहारे ॥ २७ ॥

एक आंख ते काणा हेरि। नम करहिं गुर को फिर फेर[2]।
हाथ जोरि बूझहिं सिख सोइ। इस को अबि हवाल क्या होइ ॥ २८ ॥

दैव जोग ते रावर केरा। भयो मेल इस भाग बडेरा[3]।
जिस की हुइ चहै कल्यान। तिह संजोग आप सों ठाना[4] ॥ २९ ॥

श्री प्रभु कह्यो 'जनम बहु धारे। मरि मरि तजे सरीर उदारे।
तऊ न त्यागति निज रजधानी। बंध्यो फास सनेह महानी ॥ ३० ॥

अबि दरशन ते पातक टरे। जनम मरन जग बंधन हरे।
इम उधार खग को करि भले। आगे हित अखेर को चले ॥ ३१ ॥

केतिक बिचरति सतिगुर आए। उतरे सिवर तुरंग लगाए।
बैठे हुते सिंह चहुं छाई। जथा मुनीशनि[5] महिं रघुराई ॥ ३२ ॥

एक सिंह भगते महिं रहै। बालिक तांहि आतमज[6] अहै।
गयो कहूं ते सो चलि आयो। गुर आगवन श्रोन सुनि पायो ॥ ३३ ॥

ततछिन केतिक चनक उबारे। करी वाकुली नीकी त्यारे।
सावधान हुइ कट कसि लीनि। सुत को तथा सुचेता[7] कीनि ॥ ३४ ॥

कमरकसा अपने सम कर्यो। लेकरि घुंघणीआ[8] चनि पर्यो।
पिता पुत्र गुर के ढिग[9] भए। बंदन करति बिलोकति भए ॥ ३५ ॥

वाहिगुरू जी की कहि फते। खरे होइ करि सनमुख चिते।
गुरू गरीब निवाज निहारा। मुसकावति जुत क्रिपा उचारा[10] ॥ ३६ ॥

बालिक नाम कहो क्या धर्यो ? सावधान हुइ आगे खर्यो।
बूझन कर्यो, उचारति सोई[11]। 'अबिलौ[12] नाम न राख्यो कोई ॥ ३७ ॥

अबि श्री मुख ते आप उचारो। सो अबि नाम धरहिं करि प्यारो।
दास आप के हम हैं सदा। हलत पलत सुख दिहु जद कदा[13] ॥ ३८ ॥

---

1. जगह 2. बार-बार 3. अच्छे 4. होता है 5. मुनियों 6. छोटा 7. सतर्क 8. बाकुली 9. पास 10. पूछा 11. उसने 12. अभी तक 13. जब कभी

श्री मुख ते मुसकाइ बखाना। घुंघणीआ सिह नाम सुजाना।
इह ही कहि सभि महिं बिदतावहु। अपर नाम को नहीं अलावहु ॥ ३९ ॥

सिंह प्रमुदति भयो सुनि गुर ते। —सुत की छेम लई मैं धुर ते।
घुंघणीआं ले सिख बरताई। स्वादल जानि सभिनि हूं खाई ॥ ४० ॥

पुन भोजन निस महिं करि खाना सुपति जथा सुख क्रिपा निधाना।
तबि गन भूत प्रेत हुइ दीन। थिर हुइ अग्र बेनती कीन ॥ ४१ ॥

श्री गुर अरजन हम गहिवाए। चिरंकाल बीता इस थाएं।
इन के सदा रहै अनुसारी। जथा बताइ तथा करि कारी ॥ ४२ ॥

इक इक थान कैद महिं डारे। तहिं प्रापति हुइ खेद उदारे।
चनिक पंच मण हम को पावे। अपर वसतु किछु हाथ न आवै ॥ ४३ ॥

सो नित खाने करहिं अहारा। रुके रहे सहिं कशट उदारा।
अबि तुम क्रिपा करहु छुटवावहु। कशट कैद ते आप बचावहु ॥ ४४ ॥

छटे फिरैं गन देश मझारी। तऊ रहैं इनके अनुसारी।
बलि हो बंस उचारहि जथा। निह संसै हम करिहैं तथा ॥ ४५ ॥

दैव जोग आगवन तुहारा। जे अबि कशट न जाइ हमारा।
पुनहि कौन समरथ छुटकाव। रावर[1] बिना न संकट जावै ॥ ४६ ॥

आए पाइ बिखाद[2] बिसाला। कीनि बेनती हम इस काला।
सुनि भूतन ते संकट तिन को। बसत्र उतारि उघारि बदन[3] को ॥ ४७ ॥

दीनी धीरज चित प्रहानहु। प्राति छुटावहि निशचे ठानहु।
अबि तुम जाहु सुनी सभि गाथा[4]। इम कहि सुपति भए जगनाथा ॥ ४८ ॥

राति बिताइ उठे प्रभु प्राती। सौच शनान ठानि भली भाँती।
दिवस चढ़े गुर के ढिग[5] आए। पंचहुं भ्राता दरशन पाए ॥ ४९ ॥

बैठि गए बंदन करि जबै। श्री मुख हुकम बखान्यो तबै।
'भूत प्रेत जो पकरे रासी। करि दिहु सभि की बंद खलासी ॥ ५० ॥

कली काल नित प्रति नर खोटे। शुभ मति छोटे, दुरमति मोटे।
नित मानहिंगे हुकम तुहारा। जहिं वहिलो का नाम उचारा ॥ ५१ ॥
ठहिर न सकैं बीच नर नारी। इम बरतहि आइसु अनुसारी।
मिहनत रहहिं ईंट अरु गारे। ऊपर सदन[6] की सदरी कारे[7] ॥ ५२ ॥

---

1. आपको 2. विषाद 3. शरीर 4. कहानी 5. पास 6. घर
7. काम

तिस से छोडि देहु इन तांईं । इस प्रकार जबि कह्यो गुसाईं ।
घेरा चिन्यो हुतो इक थान । गहे रहैं तहिं समरथ वान ।। ५३ ।।

गुर को बाक मानि सभ भाई । आइ निकारे तहिं समुदाई ।
अतिशै हरख सभिनि महिं होवा । बंदहिं गुर को दरशन जोवा ।। ५४ ।।

पुन पंचहु भ्राता को बंदि । गए जबहि छित छुटि करि ब्रिंद ।
इस प्रकार भगते दिन तीन । श्री प्रभु रहे बासि को कीनि ।
पुनह प्राति त्यारी करवाई । कीनसि डेरा कूच गुसाईं ।। ५५ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'भगते बसन प्रसंग'** बरननं नाम दुतीउ अंशु ।। २ ।।

अंशु ३

सिक्खन प्रसंग

दोहरा

सहजि सुभाइक बिचरते खेलत जाहि अखेर[1]।
कितिक कोस पर ग्राम इक बूझत भे तिस हेरि ॥ १ ॥

चौपई

नाम ग्राम को कहियहि कौन ? लखहु बराड़ बसत इह जौन[2]।
हाथ बदि बोले तिस बेरा। बंदर नाम ग्राम इस केरा[3] ॥ २ ॥
सिक्ख विदेशी सुनि विसमाए[4]। इन तो अदभुत बाक अलाए[5]।
कहा बंदरनि ग्राम बसायो। बन ब्रिछ्छनि बासा जिन पायो ॥ ३ ॥
तिन ते सुनि सतिगुर मुसकाए। श्री मुख ते पुन[6] भेद बताए।
'बंदर गोत नरन को अहै। ग्राम तिनो राहक को अहै ॥ ४ ॥
हेरि[7] सथान कीति गुर डेरा। उतरि तुरंगनि ते तिस बेरा।
थान थान प्रति दए लगाइ। उतरे सिंह ल्याइ त्रिण जाइ ॥ ५ ॥
बंदर पैंच तबै चलि आए। रसत[8] घ्रित आदिक सभि ल्याए।
त्रिण दाना घोरनि को दीनि। असन जथा रुचि अचवनि कीनि ॥ ६ ॥
रीति बिताइ भए असवारा। चढे गुरू मग[9] खिलति शिकारा।
पहुंचि ग्राम बरगाड़ी गए। गुर बिलोकि थल उतरति भए ॥ ७ ॥
तहां कपूरे भ्राता नंद। साथ कपूरे बैर बिलंद।
चढ्यो लरन को निकस्यो बाहर। उतरे गुरू सुने पिखि ज़ाहर ॥ ८ ॥
हट्यो लरन ते दरशन चाहा। —सेव करौ— चित महत उमाहा[10]।
आनि मिल्यो पग बंदन ठानी। सभि सुधि लेति खान अरु पानी ॥ ९ ॥
त्रिण दाना हित हयनि अनायो। आप खरे हुइ सभिनि पुचायो।
प्रेम भावना करि बहुतेरी। सेव करि बिसाल तिस[11] बेरी ॥ १० ॥

---

1. शिकार 2. समय 3. का 4. प्रसन्न 5. बोले 6. फिर 7. देख कर 8. वस्तुएँ 9. मार्ग 10. प्रसन्नता 11. इस

सतिगुर निकट आइ करि बेसा। परख्यो भाउ रिदे महिं जैसा।
श्री मुख ते तिह संग बखाना। 'छांग अनावहु पुशट महाना'॥ ११॥
मानि हुकम ततकाल अनायो। झटका तुपक साथ करिवायो।
आमिख को सुधारि करि त्यारे। डारि मसाले बिबिधि[1] प्रकारे॥ १२॥
करि अहार प्रभु को अचवायो[2]। बैठ्यो निकट प्रसंग बतायो।
'हे प्रभु चढ्यो लरन के कारन। निकसति रावर करे निहारनि॥ १३॥
दरस लालसा करि हटि रह्यो'। सुनि करि गुरू श्रेय तिस कह्यो।
शत्रु प्राति को करहि चढाई। आनि मचावहि इहां लराई॥ १४॥
'रंण करिबे तुम गमनहु नांहि। अपर[3] ग्राम के नर सभि जांहि।
अरहिं लरहिंगे हारहि नांही। राखहिं रोक करहिं बल तांही॥ १५॥
जे नहिं बरज्यो[4] रहे सदन महिं। प्राण निवारहिं प्राती रण महिं।
यां ते उचित न तो कहु जाना। पुनहिं लरहु करि जुद्ध महाना॥ १६॥
फते रिपुनि ते प्रापति होइ'। सुनति गुरू ते हरख्यो सोई।
बार बार करि कै पग नमो। उठि घर को गमन्यों तिह समो॥ १७॥
सुपति जथा सुख राति बिताइ। सौच शनान भोर हुइ आइ।
कुछ दल तबहि कपूरे केरा[5]। आनि सु लर्यो शरीके झेरा[6]॥ १८॥
सकल ग्राम के बीर पठाए। आप न गयो रह्यो घर थाए।
कोठे अन्तर होइ प्रवेश। बैठि रह्यो करि मौन विशेश॥ १९॥
वहिर पर्यो घमसान लराई। ज्वाला बमणी जाल चलाई।
डरति शरीकनि ते तिम दारा[7]। रिस धरि पति सों निठुर[8] उचारा॥ २०॥
सिर की पाग शसत्र निज सारे। मुझको देहु करों तन धारे।
पहिरि घाघरी लेहु छलोटी। दुरहु[9] बैठि हुइ बात न खोटी॥ २१॥
आइ शरीक लगे घर द्वारे। तूं बैठ्यो छपि सदन[10] मझारे[11]।
कुल की लाज हान करि बैसा। तन बिहंडड़ा[12] होवति जैसा॥ २२॥
इत्यादिक निशठुर जबि कह्यो। त्रिय को बोल नहीं उर सह्यो।
शसत्र सजाइ तुरंगम[13] चढ्यो। मच्यो जुद्ध रस बीरहि बढ्यो॥ २३॥
जाइ लर्यो रण महिं हय फेरा। रिपु हलाइ हेला वड गेरा।
दिये पलाइ दूर लगि गए। ठहिर अरे अरु धीरज किए[14]॥ २४॥
तजी तुफंग पंच इक संग। गुलकां[15] लगी बेग ते[16] अंग।
गिर्यो म्रितक ह्वै कै ततकाला। ल्याइ उठाइ ग्राम महिं डाला॥ २५॥

---

1. विविध 2. प्रसन्न हुए 3. अवर 4. रोकना 5. का 6. कबीले का झगड़ा 7. पत्नी 8. बुरे वचन 9. छुप कर 10. घर 11. में 12. हीजड़ा 13. घोड़े 14. धार कर 15. गोली 16. पर

इक सनबंधी तिस को धायो। सिमरति वाक गुरू ढिग आयो।
बोल्यो हाथ जोरि करि सोइ। मर्यो चौधरी बरज्यो जोइ॥ २६॥
रावरि[1] बचन मानि नहिं रह्यो। निकस्यो लरन निठुर त्रिय रह्यो।
श्री गुर भाख्यो 'मर्यो न सोइ'। सुनि सो कहै गयो म्रित होइ॥ २७॥
पुन गुर भन्यो[2] नहीं म्रितु होवा। सुनि सो कहै मर्यो द्रिग[3] जोवा[4]।
त्रिती बार गुरू बहुर बखाना। 'नहीं चौधरी त्यागे प्राना'॥ २८॥
सो बोल्यो 'निशचै म्रितु पाई'। तीन बार गुर गिरा[5] हटाई।
सुनि प्रभु मुशट खोलि करि भाखा। 'तिस को भौर[6] हमहु गहि[7] राखा॥२६॥
नहिं बच माना, सो अबि छोरा। नाहित जीव उठति जुति जोरा[8]।
निज मुशटी महिं राख्यो रोक। हित जिवाइबे करन अशोक॥ ३०॥
सत्त बचन तैं क्यों नहिं मान्यो? मर्यो जिवावति, सो तैं हान्यो[9]।
रुदति गयो मिलि कीनसि दाह। भयो चौधरी ततछिन स्वाह॥ ३१॥
पुन श्री प्रभु त्यारी करिवाई। डारे ज़ीन हयनि समुदाई।
कर्यो कूच[10] चलि परे अगेरे। कितिक कोस उलंघे जिस बेरे[11]॥ ३२॥
बहिवल ते सिउरासी[12] नामू। करे बिलोकन जबि ए ग्रामू।
डेरा करति भए सभ थान। सने सने पहुंचे सभि आनि॥ ३३॥
पहिर तीसरा दिन को भयो। मादिक[13] ताबि अनाइ छकि लयो।
दोदेवाल नाल को नामू। तिस महिं सुनि जल को अभिरामू[14]॥ ३४॥
हेत सुचेते तिस ढिग गए। सौच शनान तहां करि लए।
एक शहीद तुरक तवि आवा। शमश सेत[15] सेतहिं[16] पहिरावा॥ ३५॥
सिरस[17] तरोवर दीरघ खर्यो। चिरंकाल ते बासा कर्यो।
तहिं ते निकसि गुरू ढिग आयो। हाथ जोरि पग सीस निवायो॥ ३६॥
तिस को देखि गुरू बच कीआ। 'राजी इहिं उसैन खां मीआं'।
सुनि मन आनंद दीरघ धारा। 'राजी आज बिसाल' उचारा॥ ३७॥
मौला पाक अलाहि खुदाइ[18]। करि दीदार[19] अधिक सुख पाइ।
चिरंकाल को चाहति रह्यो। सुंदर रूप आज में लह्यो॥ ३८॥
होइ बिसाल मोह कल्लयान। भई दूख पापनि की हानि।
जबि गुर हटे आइबे डेरे। करि सलाम सो हट्यो पिछेरे॥ ३९॥

---

1. आपके 2. कहा 3. आँख 4. देखा है 5. भूल 6. आत्मा 7. पास 8. बल 9. मारा है 10. चले 11. समय 12. दोनों ग्राम हैं 13. नशा 14. लिए 15. सूर्य 16. सफेद 17. शरींह 18. सभी ईश्वर के पवित्र नाम हैं 19. दर्शन

तबि सिक्खन बूझ्यो 'इह कौन ? उज्जल रूप दिखाय जौन।
कर्यो सलाम[1] आप को जबै। छप्यो बिलोकति हमरे तबै ॥ ४० ॥
सतिगुर कह्यो 'घाल इन घाली। किसू करम फल भयो बिसाली।
अबि केतिक दिन महिं कल्लयान। जाइ भिसत[2] सुख पाइ महाना ॥ ४१ ॥
तबि ग्रांमनि के नर गन आए। कुछक रसत[3] त्रिता आदिक ल्याए।
बंदन करि गुर के ढिग बैसे। करको जोरि भने बच ऐसे ॥ ४२ ॥
'केतिक देग समीप करावहु। केतिक सिक्खनि सदन पठावहु।
घर घर महिं एक एक सिख जाइ। त्रिपतहि करि भोजन पुन आइ ॥ ४३ ॥
जे सिख सुच सो करहिं अहारा। सो नहिं गमने किसू अगारा।
निकट गुरू के सो त्रिपताए। अपर सरब घर तिनहुं सिधाए ॥ ४४ ॥
इक इक सिख इक इक घर गयो। जाइ सकल भोजन तहिं कयो।
इक धन ते दारिद्री महां। करन अहार सु पय्यहि कहां ॥ ४५ ॥
कह्यो शरीकनि[4] जित कित ल्यावहु। एक सिख को ले त्रिपतावहु।
सो सिख ले सिख को घर गयो। निज बासन धरि करि थिर भयो ॥ ४६ ॥
ऊपर ते उतारि निज खेस। तरे[5] बिछायो भाउ[6] विशेश।
बैठि सिक्ख के चरन पखारे। आने पील शुशक अहारे ॥ ४७ ॥
नीर भिगोइ नरम बहु करे। सिख ने सिख के आगे धरे।
खाइ चुला पढि करि अरदास। चलि आयो सतिगुर के पास ॥ ४८ ॥
गयो पुचाइ संग सिख होऊ। सिख ने कर्यो हटावनि सेऊ।
जबि सभि आइ मिले गुर तीर[7]। बूझन कीने गुनी गहीर ॥ ४९ ॥
कहां कहां भोजन तुम खायो ? अपनो अपनो देहु बतायो।
कोऊ कहै 'रोटका[8] छ.छी[9]। को बोल्यो 'खिचरी दधि[10] आछी' ॥ ५० ॥
को पाइस, को कहि 'थहि पई। 'जब की दोड़'[11] किनहुं अचि लई।
इत्तयादिक सभि कीन बतावनि। कर्यो जाइ जस जस घर खावनि ॥ ५१ ॥
मैलागर सिंह बूझनि कीना। 'तैं क्या अच्यो, कहां सिख दीना ?'।
सुनि कर जोरि कह्यो 'मैं नीका। भोजन छक्यो भाउ पिखि जीका[12] ॥ ५२ ॥
सगरी[13] उमर[14] नहीं अस खायो। आज जथा सिख ने अचवायो'।
पुरि जन तहां सुनति बिसमाए[15]। तिस घर कुछ नहिं, क्या इन खाए ॥ ५३ ॥

---

1. नमस्कार 2. स्वर्ग 3. खाद्य पदार्थ 4. कबीले के लोग 5. नीचे 6. प्रेम 7. से 8. रोटी 9. छाछ 10. दही 11. परांठा 12. सप्रेम 13. सारी 14. आयु 15. प्रसन्न

फाक पर फाका तिस होहि। कित ते आनि अचायो तोहि'।
गुरू कह्यो सिख लेहु हकारे[1]। बूझहिं तिह क्या दीन अहारे ? ।। ५४ ।।
उठि राहक तिह ल्याइ बुझाइ। पूछ्यो गुर 'तै कहां खुवाइ ?'।
हाथ जोरि हुइ नंम्रि बखानी। दीन कटोरा मैं भरि पानी ।। ५५ ।।
सो पी करि सिख उठि इत आयो। हुतो दारिदी[2] नहिं कुछ पायो'।
कर्यो हुकम 'सच क्यों नहिं कहें ? त्रिपतायो सिख जिम[3] हित चहै[4] ।। ५६ ।।
सिख ने साच कह्यो तिस बेरी। 'हुती कोकड़ा[5] पीलुनि[6] केरी।
गुर कह्यो 'सिखी धंन धंन'। देखि भाउ को भए प्रसंन ।। ५७ ।।
'अस सिख भी बिच पंथ सुहाइ। सती देहि संतोखी खाइ।
सिख ढिग होइ अचावहि नाही। तौ दूखन जानहुं तिस मांहीं ।। ५८ ।।
निरधन सिख ते जाचहि नीका[7]। देश लखहु अचवहि[8] तिस ही का।
यां ते भाव मूल ही जान। अचन[9] अचावन विधि[10] पहिचान ।। ५९ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**सिक्खन प्रसंग**' नाम बरननं त्रितीउ अंशु ।। ३ ।।

---

1. बुलाना 2. ग़रीब 3. जिस प्रकार 4. अच्छा जानो 5. पकी हुई 6. पीलू (फल) 7. भला 8. भोजन करने वाला 9. पीना 10. ढंग

अंशु ४

कपूरे को प्रसंग

दोहरा

कर्यो कूच तहिं ते चढे श्री सतिगुर सुखदाइ।
गए कपूरे कोट को सिंह संग समुदाइ॥ १॥

चौपई

केतिक पुरि ते उतरे दूर। हेरी[1] थाइ[2] उचित जहिं रूर।
डेरा कर्यो तुरंग लगाए। त्रिण इंधन इकठे करि ल्याए॥ २॥
बैठे सतिगुर लाइ दिवान। केतिक दरसति हैं नर आनि।
खबर[3] कपूरे के ढिग गई। मिलिबे[4] कारन त्यारी कई[5]॥ ३॥
घोड़ा एक सिंगार बनायो। दैबे[6] हेतु उपायन ल्यायो।
केतिक[7] नर ल करि निज साथ। पहुंच्यो आइ पिखे[8] गुर नाथ॥ ४॥
पद अरबिंद[9] बंदना करी। हाथ बंदि बैठ्यो तिस घरी[10]।
कुशल प्रशन कहि क्रिपा निधाना। 'क्रिपा आप की अनंद महाना॥ ५॥
कहहु कपूरा आयुध धरे। धीर बीरता केतिक करे?
रण की चौंप बिसाल की नांही? जिस ते बीर परमपद पाहीं॥ ६॥
कह्यो कपूरे श्री गुर साथ। 'इहु जग नाथ! आप के हाथ।
धीर बीर को भीरु बनावहु। भीरुनि ते' बहु जुद्ध मचावहु॥ ७॥
'भला कपूरे भला कपूरे'। बोले पातशाहु गुर पूरे।
बहिर अखेर करहिं किस केरा? —कित दिशि गमन फिरहिं बहु फेरा?॥ ८॥
कहै कपूरा 'कूकर बाज। राखौं मैं अखेर को साज।
शिकरे जुररे आदि घनेरे। अनवाए[11] दे दरब बडेरे॥ ९॥
बडे बिहंगनि जानि न देति। बल ते झपट करति गहि लेत।
इत्यादिक बातैं कुछ और। करति भए सौढी सिर मौर॥ १०॥

1. देखी 2. स्थान 3. सूचना 4. मिलने के लिए 5. की 6. भेंट करने के लिए 7. बहुत से 8. देखे 9. कमल 10. समय 11. मंगवाए

करि बंदन उठि सदन सिधारा। सतिगुर देखति दुरग बिचारा—।
जे करि देहि कपूरा कोट। लाखहु तुरक हतहिं गहि ओट ॥ ११ ॥
चितवति रहे बिती तहिं राती। सौच शनान ठानि करि प्राती।
लग्यो दिवान खालसे केरा[1]। शसत्र बसत्र ते शुभति घनेरा ॥ १२ ॥
नर नारी गन ग्रामनि केरे। धाइ आइ गुर दरशन हेरे।
चावल चून घ्रितादिक ल्यावैं। देग़ बिखै दधि दूध सु पावैं ॥ १३ ॥
भाऊ प्रेम ते धरहिं दरस करि। बंदहिं पद अरबिंद हरख[2] धरि।
इक निस बासुर[3] जबहि बिताय। बहुर कपूरा चलि करि आयो ॥ १४ ॥
दीरघ जामा जिस गर पर्यो। चाल शीघ्र ते बहु बिसतर्यो[4]।
हाथनि साथ संभारति नांही। चलति उडावति रज मग मांही[5] ॥ १५ ॥
[illegible] ॥ ४ ॥ [illegible]र के ढिग[6] आयो। चहति अपनपौ सभिन दिखायो।
मैलागर सिंह तिस को देखि। आइ उडावति धूलि विशेख ॥ १६ ॥
चौधरि[7]! चलहु अदब[8] के साथ। गरद[9] उडति बैठे गुर नाथ।
बसत्र संकोचि पसारहु नांहि। सरल भरल हुइ किस बिधि जाहि ॥ १७ ॥
सहत आदइब साहिब देखि। तजि करि मन को मान विशोख'।
सिंह बाक सुनि करि जनु दावा[10]। मन बन को लगि अधिक जलावा ॥ १८ ॥
किधो ज्वलति मन दीपक न्याई। सिंह बाक बहु बायु बुझाई।
रिस जुति चित भा लखि अपमाना। बस न बसाइ न सकै बखाना[11] ॥ १९ ॥
गुर समीप हुइ बंदन ठानी[12]। बैठि गय तबि भा मन हानी।
इक प्रयंक पर[13] सतिगुर थिरे[14]। दुतिये पर प्रभु आयुध[15] धरे ॥ २० ॥
निरमल चंद्रहास[16] खर[17] धारा[18]। धारा गुन कुदंड[19] बड भारा।
तरकश भरे खरे करि तीर। तीर सुहावति गुनी गहीर ॥ २१ ॥
एक चमर सतिगुर सिर फिरै। दूसर शसत्रनि ऊपर ढुरै।
हेरि कपूरा तरकति भाखे। 'भले बनाइ शसत्र इह राखे ॥ २२ ॥
रावरि सिर पर चामर फेरति। इह तौ रीति आदि की हेरति।
दूसर शसत्रनि पर फिरवावो। इह तौ रीति नई बिदतावो ॥ २३ ॥
धूप धुखवति चंदन चरचा। फूलन माल बिसालहि अरचा'।
सुनि श्री मुख ते कहि समुझायो। शसत्रनि अदब चहियो रखवायो ॥ २४ ॥

---

1. को 2. हर्ष 3. दिन 4. विस्तार 5. में 6. पास 7. मुखिया 8. सादर 9. धूल 10. दावानल 11. कहना 12. की 13. ऊपर 14. बैठे 15. हथियार 16. तलवार 17. तीखी 18. धार 19. चिल्ले सहित धनुष

माखी आइ अपावन थिरै। चमर ढुरति सो बरजन करै।
इह सभ के सिरमौर सुरन मैं। दे रिपु गन ते फते सुरन मैं ॥ २५ ॥
प्रिथी सुरग को राज घनेरा। उज सुरासर करि बडेरा।
सभि शसत्रनि के है अनुसारे। जो इन धरै सु हुइ बल भारे ॥ २६ ॥
इम सम शकतिवंत नहिं कोऊ। जो कर धरै बली हुइ सोऊ।
आदि अकाल पुरख करतारा। प्रथम खड़ग तिन रच्यो उदारा ॥ २७ ॥
माननीय सुर असुरनि केरे। धर्राहि जु पुर्जाहि, ह्वै सु बडेरे।
नर बपुरे की गिनती कहां। असिधुज श्री अकाल ह्वै महां ॥ २८ ॥
सुनि करि तूशन होइ कपूरे। गुर बच निशचा कियो न कूरे।
अंतर जामी जानि बखाना। सुनहु कपूर सिंह धरि काना[1] ॥ २९ ॥
नैं लगि करि हैं राज तुहारा। गज बाजी दल वधै [illegible]
तुरकन संग जंग के कारन। देहु दुरग देखहु दल दारून ॥ ३० ॥
लशकर नौरंग को लरि मारे। कातुर तुरक पलावति हारैं।
सुनि करि दीन होइ करि कहे। हम मैं कहां शकति इम अहे ॥ ३१ ॥
रिपु सम जानि तुरक गहिं मोहि। मारहिं फासी दे करि क्रोहि।
श्री गुर ! तुम तौ बे परवाह। बिगर[2] लरे तुरकेशुर शाह ॥ ३२ ॥
लाखहुं नर मारे मरिवाए। आनंदपुरि उजार करि आए।
भली सीख अबि देवन लागे। जिस ते बचहि न कित को भागे ॥ ३३ ॥
तिन तुरकनि ते मोहि बिगारहु। जिस उजरे तिम मोहि उजारहु।
हम तौ बंदे नित पतिशाही। बिगरे मारहिं मुझ दे फाही ॥ ३४ ॥
सुनि सतिगुर रिस[3] उर धरि भाखा[4]। जेकरि इम[5] तेरी अभिलाखा[6]।
तौ दे फास तुरक ही मारैं। गुन अवगुन तुव कुछ न बिचारैं ॥ ३५ ॥
जिन शसत्रनि पर तुरक करंता। पिखि प्रताप तिनके डरपंता।
देन लगे हम अधिक बडाई। भयो निभाग न सार्काहि पाइ ॥ ३६ ॥
अनंद पुरा बसहिगो सदा। इस थल ते तूं ही हुइं अदा[7]।
जिनको बंदा करहिं सुबंद। दे फासी तुहि करहिं निकंद ॥ ३७ ॥
तत्त अतत्त न मूरख जानैं। लाभ लेन ते तोटा[8] मानैं।
पसु ज्यों पेट भरे पर सोवैं। जसु जग गति प्रलोक ही खोवैं ॥ ३८ ॥

---

1. कान 2. बिना 3. क्रोध 4. कहा 5. ऐसी 6. अभिलाषा 7. नष्ट 8. घाटा

मति अंधे जान्यो कछु नांही। सभि सुख देति, पर्यो दुख मांही।
जिन तुरकन पर उर भरवासा[1]। तिन ते ही तुझ होइ बिनाशा ॥ ३९ ॥

खेह तोबरा बइन चढाइ। फासी दे मार्रहि सहिसाइ'।
सुनि शरमिंदति भयो कपूरा। नीवीं ग्रीव[2] थिर्यो कुछ कूरा ॥ ४० ॥

पुन उठि अपने सदन सिधारा। भयो स्राप दारून दुख भारा।
भली हेति उलटी गल परी। बर्यो दुरग तकराई करी ॥ ४१ ॥

द्वार किवाड़ असंजति करे। —अस नहिं होइ गुरू बिच[3] बरे।
पतिशाही लशकर चढि आवै। मार गरद महिं दुरग मिलावै ॥ ४२ ॥

यां ते मूंद लीए दरवाजे। चित महिं चित महां उपराजे।
गुरू बाक नहिं मूरख मान्यो। लियो न बर तौ स्राप बखान्यो ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'कपूरे को प्रसंग'** बरननं नाम चतुरथो अंशु ॥ ४ ॥

---

1. भरोसा 2. ग्रीवा नीची कर ली 3. में

अंशु ५
कौल सोढी प्रसंग

दोहरा

तुरकनि की गन बाहनी[1] सीरंद[2] कीनि बटोर।
चहैं गुरू को पकरने 'दौर करहु थल टोरि'।। १ ।।

चौपई

सुधि पहुंची 'दीने के ग्रामू। केतिक दिन बसि करि तिन धामू।
तहिं ते गमन अगारी गए। केतिक चमूं[3] संग मैं लए'।। २ ।।
सुनति वजीदा मूरख मानी[4]। पठे दूत केचित अगुवानी।
'टिकहिं ग्राम जिस, दिहु सुधि आई। दौ करहिं तहिं दल समुदाई।। ३ ।।
जहिं अचानक गहि करि ल्यावहिं। जीवति हज़रत निकट पठावहिं।
होहि प्रसंन दरब बहु दै है। शाहु मनोरथ पूरन ह्वै है'।। ४ ।।
इत्यादिक ब्रिचार करि भायो[5]। लशकर[6] कई हज़ार पठायो।
दाव तकावति तुरक बिचारें—। पकयो जाइ घात निरधारे[7] ५ ।।
कोप कपूरे पर करि तबै। डेरा कूच[8], चढे सिख तबै।
सहिज सुभाइक हय आरूड़े। खिलति अखेर चलति गुन गूड़े।। ६ ।।
ढिल्लव ग्राम कोस दुइ तीन। जाइ पहूंचे गुरू पवीन।
सोढी बंस प्रिथ्थीए केरा। बसहि तहां बासा बहुतेरा।। ७ ।।
नाम कौल[9] अज़मत[10] जुति जोए। चार पुत्र तिसके ग्रिह होए।
सतानंद हरिनंद सु चाली। पुन अमरीक राइ बनवाली।। ८ ।।
बनवाली कै नंदन एक। अभैराम गुन धरहि अनेक।
अभैराम के सुत भे[11] चार। इक श्री राम प्रजापति धार।। ९ ।।
रामकुइर जसपति गिन लेह। माननीय संगति के एह।
श्री गोबिंद सिंह को आगवनू[12]। श्रवन कर्यो जबि अपने भवनू[13]।। १० ।।
श्राध करावति ततछिन छोरा[14]। शीघ्र धरति आयसि[15] गुर ओरा।
हरखति निकट पहूच्यो जबै। भाउ[16] समेत परखि करि तबै।। ११ ।।

---

1. सेना 2. सरहिंद 3. सेना 4. मन 5. अच्छा लगा 6. सेना 7. विचार करते हैं 8. चल पड़े 9. वचन 10. बड़ाई 11. हुए 12. आगमन 13 भवन 14. बेटा 15. आया 16. प्रेम

श्री गुर गरे लाइ करि मिले। बठे कुशल प्रशन करि भले।
हाथनि की दिशि द्रिशटि चलाई। बूझ्यो अंगुरी महिं क्या पाइ ? ॥ १२ ॥
नंम्रि होइ करि कौल कहंता। बैठ्यो मैं अबि श्राध करंता।
सुन्यों श्रवन रावरि[1] आगवनू। उठ्यो भवन संभार न कवनू ॥ १३ ॥
शीघ्र करति मिलिबे हित आए। कुशा पवित्रे अंगुरनि पाए।
नहीं निकारे कर महिं रहे। तूरन ही दरशन मन चहे' ॥ १४ ॥
सुनि श्री गुर गोबिंद सिंह कह्यो। 'इह तुम कहां करन को चह्यो।
सतिगुर रामदास जिस बंस। लीनसि जनम मानसर हंस ॥ १५ ॥
संक्या[2] पितर छुधिति[3] ही रहें। जिनहु बास बैंकुंठहि लहे।
ऐसे त्रिपत भए इक वारी। बहुर न चहैं अंन अरु बारी[4] ॥ १६ ॥
सुनी तरक निज क्रिति महिं जबै। उत्तर कौल[5] बख्यान्यो तबै।
'अहै वासतव आप सुनाई। तऊ सुनहु जिस हम लखि पाइ[6] ॥ १७ ॥
श्री बाबा नानक अवतारा। नरन[7] उधारे जिनहुं न पारा[8]।
अंत समैं सपतमि दिन मांहि। चह्यो गमन परलोक तहां ही ॥ १८ ॥
सिरी चंद की जननी आई। नंम्रि बिनै जुति गिरा[9] अलाई[10]।
प्रात अशटमी थित सुनियंत। तुम पित को सराध करियंति ॥ १९ ॥
जे परलोक पधारह आज। तौ न होइ है श्राध समाज।
भली बात रहियहि भुनसारा। पित को श्राध करहु सभि कारा ॥ २० ॥
पुन नौमी कै दसमी दिन महिं। करहु आप जिम बांछहु मन महिं—।
चोणी बात नीक मन भाई। सौज समावन की उठिवाई ॥ २१ ॥
रहे सपतमी दिवस बितायो। अशटमि थिती श्राध करिवायो।
भोजन ऊचनीच को दियो। महां जग्ग श्री नानक कियो ॥ २२ ॥
पुन नौमी के दिन भी रहे। दसमी को प्रलोक प्रभु लहे।
जो बाबे नानक क्ति कीनी। हम तुम को चहियति सो चीनी ॥ २३ ॥
तिम ही करिबो बनहि बिचारो। तिस महिं तरक न तनक उचारो'।
सुनि श्री गोबिंद सिंह प्रमाना[11]। मान लीन मन पुनहिं बखाना ॥ २४ ॥
'गुर को बंस बडो जग मांही। चहीअहि रखन म्रिजादा तांही।
तुम को हेरि अपर नर करैं। यां ते बडे म्रिजादा[12] धरैं।' ॥ २५ ॥

1. आप 2. शंका 3. भूखा 4. पानी 5. नाम है 6. जानी है 7. मनुष्य 8. अनुमान 9. वाणी 10. कहा 11. प्रमाण 12. मर्यादा

इत्यादिक करि बाक बिलासा। डेरा उतरायो प्रभु पासा।
बहुर अनंदपुरे को जंग। कितिक सुनावन करे प्रसंग।। २६।।

सेवा सभि सोढनि कराई। त्रिण दाना दे करि समुदाई।
भली पकार अहार कराए। बैठे बहुर प्रसंग चलाए।। २७।।

'तुम को मिल्यो कपूर कै नहिं। सेवा करी कि नहिं शरधा लहि'।
सुनि श्री गुर ततकाल उचारी। 'हमहु कपूरे जड़ां उखारी।। २८।।

रहन न पाइ बिनासी होइ। बाक न मान्यो महिमा जई।
सुनति कौल के छोभ बिसाला। निज सिख लखि बोल्यो ततकाला।। २९।।

'जरां कपूरे की दिढ भारी। हम नै राखी पेट मझारी।
महिं पेट को पाड़हि जइ। तिस की जढ़ां उखारे सोइ'।। ३०।।

सुनति शीघ्र ही कौल मते को। श्री गुर उत्तर दयो पते को।
'पाड़हि जबि हूं पेट तुहारो। तबि तुम ही तिह जरां उखारो।। ३१।।

जिस रच्छा हित जतन बनावहु। तिस को नाश करति उतलावहु[1]'।
सुनति कौल स्नापहि बिसमायो।' —भयो मोहि भी भलो बचायो।। ३२।।

नहिं सनमुख पुन कछू उचारा। भीम स्राप ते डर उर धारा।
सोचति गयो आपने भवनू। —बाक न मिटहि बनहि बिधि कवनू[2]।। ३३।।

मोहि पेट को सो किम फारहि—। इत्यादिक बहु गटी बिचारहि।
सुपति जथा सुख राति बिताई। सौच शनान प्राति हुइ आई।। ३४।।

बहुर कौल पोशिश करि त्यारी। सूखम सेत[3] बसत्र मुल भारी।
ले करि चलि आयो चित चिंता। बैठ्यो निकटि होइ भगवंता।। ३५।।

अरपन करे बसत्र बच भाखो। 'अबि नीलांबर को नहिं राखो।
बिसद पहिर करि भले सुहावो। पूरबली रीतनि बिसरावो।। ३६।।

श्री मुख बोले 'कह्यो तुहारो। हम नहिं पलटति[4] रिदे बिचारो'।
ले करि पहिरे सरब सरीर। करे उतारनि नीले चीर[5]।। ३७।।

बैठे बहुर[6] तिसी असथान। केतिक सिहंनि लग्यो दिवान[7]।
कौल पुत्र पौत्रे जुति सबै। पुरि जन गन अविलोकहिं[8] तबै।। ३८।।

ज्वलति अंगीठा अगनि अगारी। नीलांबर ले हाथ मझारी।
लीर पाड़ करि तिस ते सतिगुर। श्री मुख त तुक एव उचरि करि।। ३९।।

---

1. शीघ्र नाश करोगे 2. कौन सी 3. सफेद 4. परिवर्तन करना 5. कपड़े 6. फिर 7 संगति 8. देखते हैं

छंद

'नीलबसत्र ले कपड़े फाड़े तुरक पठाणी अमल गइआ'।
पठि करि ततछिन लीर जु कर महिं अगनि बिखै[1] पट डारि दया।
पुनहि पाड़ करि तिमही पठि करि पावक पावति छार कइआ।
चीरति चीर करति लघु लघु को अचरज सभि के रिदे भइआ ॥ ४० ॥

सुनति बचन अरु क्रिआ बिलोकति उर संसै जुति कौल भइआ।
बिप्प्रै तुक को पठि पठि श्री मुख पारि पारि पट जार दइआ।
सगले फूक चुके नीलांबर तनक तिसी ते राख लइआ।
जमधर संग बधि करि सोऊ पंथ बेख हित सभि न छइआ[2] ॥ ४१ ॥

चौपई

कहति कौल 'मम उर संदेहू। बिप्प्रै पठी आप तुक राइ।
श्री नानक को बाक अमेट। कोइ न मोरहि महां सहेट[3] ॥ ४२ ॥
बिप्प्रै पठे चारहूं बरण। श्री हरि राइ सुने जबि करण।
रामराइ को त्याग्यो ऐसे। निजि मुख लगन न दीनसि कैसे ॥ ४३ ॥

नहिं बैठाइसि गुरता गादी। श्री हरि क्रिशन भए अहिलादी[4]।
तुम ने सगरी तुक उलटाई। इम अनुचित हम सहि न सकाई' ॥ ४४ ॥

सुनि करि क्रिपा निधान बखाना। 'रामराइ कहिबो जग जाना।
करन तुरकड़े[5] हेतु[6] खुशामद[7]। हरखावन जिस ते बहु आमद ॥ ४५ ॥
सतिगुर की तुक तिन उलटाई। भई सज़ाइ न गुरता पाई।
हम तौ इस तुक हित उलटावन। सकल[8] समिग्री कीनि लुटावन[9] ॥ ४६ ॥

चारहुं पूत दिए तिस काजू। कौन गिनै सभि सदन समाजू।
नाश कर्यो सरबस समेते। अबि भी नहिं उलटावनि देते ॥ ४७ ॥

श्री बाबा नानक बच भाखा। भयो बिदत जग महिं सभि लाखा[10]।
मुगल पठानं राज कलिकाला। सभि अवनी महिं तेज बिसाला[11] ॥ ४८ ॥

कह्यो बाक तिन को अबि फेरा। जिस ते तुरकनि मूल उखेरा[12]।
राखी हिदुन की बडिआई। भयो धरम थिर क्योंहुं न जाइ ॥ ४९ ॥

---

1. में 2. नष्ट न किया 3. कठिन 4. प्रसन्न 5. लाभ 6. के लिए 7. चापलूसी 8. सारी 9. लुटा दी 10. जानते हैं 11. विशाल 12. उखाड़ना

पंथ खालसा उतपति होवा। तुरक प्रताप उलट बच[1] खोवा[2]।
इह तुम कहहु भली कै बुरी'। सुनति कौल तबि तूशन[3] धरी ॥ ५० ॥
पर पूरब सभि रिदे बिचार्यो। —इनहु जथारथ बाक उचार्यो।
पर उपकार हेतु क्रित ऐसे। कौन सहै संकट इम कैसे ॥ ५१ ॥
सभि सुत हतनि समाज लुटावन। कौन करै एतो दुख पावन।
इह बर बीर धीर बड धारी। दे सरबंस प्रीति नहिं हारी ॥ ५२ ॥
तुरक तोम की जरां उखारी। जिन पतिशाहति जगत संभारी।
इन की क्रित सु इन्हूं बनै। धंन होनि जग महिं इन भनै— ॥ ५३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'कौल सौढी प्रसंग'** बरननं नाम पंचमो अंश ॥ ५ ॥

1. वचन 2. खो देना 3. प्रसन्न

अंशु ६

कपूरे को प्रसंग

दोहरा

केतिक वसतू संग गुर कौल धाम धरिवाइ।
कर्यो कूच डेरा तबै, चढे सिंह समुदाइ ॥ १ ॥

चौपई

सहजि सुभाइक बिचरति चले। कहूं अखेर खेलते भले।
करति कुवाइद शसत्रनि केरी[1]। सने सने गमने किस बेरी ॥ २ ॥
कितिक कोस चलि ग्रामिकि[2] आयो। पिखि[3] बैराड़ संग फूरमायो[4]।
'कहा ग्रांम को नाम बखानो[5] ?। तुम इत रहहु भेद सभि जानो' ॥ ३ ॥
तबि बैराड़ कह्यो 'की[6] ग्रामूं। चारिक झुंगी के बसि धामूं।
कहां नाम इस को कुछ होइ। को सुनि कहां बखानै कोइ ॥ ४ ॥
स्री मुख कह्यो 'न कहु इस रीति। कितिक समा जबि होइ बितीत[7]।
बसहि ग्राम दीरघ इस थान[8]। उपजहिं सिंह सु बीर महान' ॥ ५ ॥
आगै थल उतंग इक आयो। तहां अरूढि तुरंग टिकायो।
तीछन तीर निखंग[9] निकारे। संधि कुदंड[10] लच्छ पिखि मारे ॥ ६ ॥
केतिक बान चलावनि करे। आइ ग्राम ढिग[11] सतिगुर थिरे।
एक राति बसि चढे अखेर। इत उत बिचरे हति म्रिग घेरि ॥ ७ ॥
कठा अपर मलूका ग्रामू। बिच दोनहुं के कीनि मुकामू[12]।
सुंदर तंबू दियो लगाइ। उतरे सिंह चहूं दिशि आइ।
खान पान करि निस बिसरामे। जाग्रति भए रही जबि जामे ॥ ८ ॥
सौच शनान ठानि करि थिरे। निज सरूप महिं थिरता धरे।
अंम्रित वेला चार घरी जबि। एक दिवाना आवति भा तबि ॥ ९ ॥
सिर मुख सगरे मूंडन कर्यो। तंबू निकट आनि करि खर्यो।
हेतु सुचेती सिंह शसत्र गहि। खरो हुतो तिह संग बाक कहि ॥ १० ॥

1. की 2. एक ग्राम 3. देख कर 4. कहा 5. कहो 6. क्या 7. व्यतीत 8. जगह 9. तेज़ 10. धनुष पर चढ़ा कर 11. पास 12. स्थान बनाया

'गुर के निकट अब मैं जाऊं। रिदे लालसा दरशन पाऊं'।
कह्यो सिंह ने 'अबि नहिं समो। दिवस चढे पिखि कीजै नमो[1]' ॥ ११ ॥
कहै दिवाना 'मैं अबि जै हौं। तेरे कहे नहीं ठहिरै हौं।
सभि के सांझे सतिगुर अहैं। तूं मुझ कु तो हटाये चहैं ? ॥ १२ ॥
बहुर सिंह ने बरजन कर्यो। 'अपने रंग बिखैं गुर थिर्यो।
क्यों मूरख मति करि हठ गहैं ? हटि अबि जाहु भला जे चहैं ॥ १३ ॥
करैं ढीठता खै हैं मार। कह्यो न समझै मंद गवार !'।
सुनति दिवाने क्रोध वधायो। मूसल मारन हेतु उठायो ॥ १४ ॥
'मोकहु कौन हटावन हारो। बरजहि, मूसल खैं हे भारो।
इम कहि तंबू दिशि चलि पर्यो। कहै सिंह 'तूं हटि रहु खर्यो ॥ १५ ॥
आगै होइ सु लग्यो हटावन। तबि तिन मूसल कीनि उठावन।
मारन लाग्यो सिंह निहारा। खैंचि क्रिपान तुरत ही झारा ॥ १६ ॥
घाव सकंध लग्यो बहु चीरा। गिर्यो बिसुध ह्वै तुरत सरीरा।
पर्यो रह्यो तूशन मुख भयो। चार घरी जबि दिन चढि गयो ॥ १७ ॥
बोल्यो बाक जबै सुध पाइ। 'अबि मेरी म्रितु ह्वै नियराई।
गुर दरशन को देहु कराई। नांहि त रहै चाह अधिकाई' ॥ १८ ॥
सुनि करि सिंह गयो गुर पास। हाथ जोरि कीनसि अरदास।
'सिंह संग इक लर्यो दिवाना। रिस के बसि हुइ हनी क्रिपाना ॥ १९ ॥
चाहति दरशन रावर केरा'। 'ले आवहु' गुर कहिं तिस बेरा।
सुनि प्रभु ते अंतर ले गए। सिर निवाइ करि दरशन लए ॥ २० ॥
क्रिपा निधान क्रिपा करि कह्यो। 'अहो दिवाना जीवन चह्यो ?
तौ बचाइ देवैं तुव प्राना। जे जीवन की चाह महाना' ॥ २१ ॥
दरशन करि उर निरमल बन्यो। तबि करजोरि दिवाने भन्यो।
'रावर[2] के हजूर अबि अहौं। चित परलोक पयाना[3] चहौं' ॥ २२ ॥
इम बोलति ही त्यागे प्राना। पाई गति भा धंन दिवाना।
बाहर तबि उठाई ले आए। नर जंगल के सुनि बिसमाए ॥ २३ ॥
केतिक निंदहिं मति हति होए। 'इह क्या कीनि करम दुर जोए।
हत्यो दिवाना, गुर भल[4] भयो। करहि न क्रित को जिम अबि कयो' ॥ २४ ॥
केतिक कहैं 'दिवाना अर्यो। लर्यो सिंह सों, मारन कर्यो'।
केचित कहैं 'गुरू क दोऊ। सिंह दिवाना लरि मरि सोऊ' ॥ २५ ॥

1. नमस्कार 2. आपके 3. जाना 4. कैसा

कर्यो कूच तबि स्री प्रभु डेरा। गमने होइ चौंतरे नेरा।
तिस के ढिग ढिग हुइ चलि गए। जैतो आनि उतरते भए॥ २६॥
कर्यो मुकाम[1] ताल[2] इक हेरे। तिस की महिमा कही बडेरे।
निसा भई करि खान रुपान। सुपति जथा सुख गुर भगवान॥ २७॥
भई प्रभाति कूच करि डेरा। गमने कितिक कोस थल हेरा।
सुनियर ग्राम बिलोकि सथान। उतरे हय ते तहिं गुन खान॥ २८॥

भयो मुकाम तुरंग लगाइ। करि बिसराम बैठि सुख पाइ।
डोगर संमा नाम बसंता। महिखी भली समूह रखंता॥ २९॥
गुर आगवन[3] सुन्यो हरखायो[4]। सभि महिखनि[5] को दुध चुआयो।
घट[6] भरवाइ लए निज[7] साथ। आयहु जहिं बैठे गुर नाथ॥ ३०॥
करि अभिबंदन अरप्यो आगे। बैठ्यो गुर पग करि अनुरागे।
क्रिपा निधान क्रिपा करि हेरा। कह्यो 'वधहि पय बडहुं बडेरा'॥ ३१॥

इतने महिं जो जाट कपूरा। खिलति[8] अखेर आइ चलि दूरा[9]।
सुनी 'इहां गुर उतरे आइ'। गमन्यों सुभट[10] सहित तिस[11] थाइं[12]॥ ३२॥
उतरि तुरंग ते पाइन पर्यो। भयो अधीन अगारी थिर्यो।
देखि क्रिपाल तांहि सन कहें। 'कहु कपूर सिंह! राजी अहैं?'॥ ३३॥
दीन मना कर जोरति बोला। 'मैं राज़ी नहिं बहु मन हौला[13]।
रांवरि बाक न गए कमाए। दोनहुं दिशि संकट बनि आए॥ ३४॥
उत तुरकनि ते चित बहु डर्यो। इत रावर[14] को काज न सर्यो।
मिले बिनां अर खुशी न दीनि। चढि आए तुम रिस[15] उर कीनि॥ ३५॥
यां ते चिंता कशट महाना। किम राज़ी मैं करौं बखाना?
तुरकनि संग न बिगर्यो जाई। सभि अवनी जिन अग्र झुकाई'॥ ३६॥
श्री गुर जान्यों दीन बिसाला। बखश्यो खर खंडा अरु ढाला।
ले करि प्रभु ते कुछ हरखायो। हाथ जोरि करि सीस निवायो॥ ३७॥
जानो दूर तुरत हय चढ्यो। लरिबे कहु उत्साह न बढ्यो।
श्री गुर भाख्यो 'अहो कपूरा! तुरकन ही को रह्यो कतूरा[16]॥ ३८॥
चित गीदी काइर बहु कूरा। करनि जंग को भयो न सूरा।
गुर ते बेमुख नहिं सुख मूरा। मरे हूर बर, जै जस रूरा॥ ३९॥

1. ठहरे 2. तालाब 3. आगमन 4. हर्षित हुआ 5. भैंसे 6. घड़े 7. अपने 8. खेल कर 9. दूर से 10. योद्धाओं के साथ 11. उस 12. जगह 13. भय 14. आपका 15. क्रोध 16. कुत्ते का बच्चा, पिल्ला

होवैं दुखी बिसूर बिसूरा। किम प्रापति ह्वै भाग न पूरा।
धीरज ते जिस को उर ऊरा। किम शत्रुनि करि है चकचूरा[1] ॥ ४० ॥
सिंहनि सन गुर भाखति बाति। सुन्यो कछू बच सुन्यों न जात।
इतने महिं सुधि इक सिख ल्यायो। 'प्रभु जी! गन लशकर चढि आयो ॥ ४१ ॥
पुरि सिरहंद ते खान वजीदा। चढ़ि चलि पर्यो सु लखहु रसीदा।
काल कि परसौं लगि चलि आवै। रावर को पकरनि ललचावैं ॥ ४२ ॥
सुनि श्री प्रभु असवार चढायो। 'जाहु कपूरे देहु सुनायो।
संग मुरक्खे देहु सऊर[11]। लखहिं देश नेरै कै दूर ॥ ४३ ॥
तुरकनि सन पुन रन घमसाना। हमरो परहि, करहिं बिन प्राना।
सुनि सऊर[2] हय गयो धवाई। मिल्यो जाइ करि ढिग किस थांई[3] ॥ ४४ ॥
गुर की कहिवति सकल सुनाई। 'देहु मुरक्खे ह्वै अगवाई।
खरे होइ अवलोक्यो खाना। तबहि कपूरे बाक बखाना[4] ॥ ४५ ॥
'जाहि गुरू संग रह अगारी। ले गमनहु संग जहां सु बारी।
तुरकनि संग जि हुइ भट भेरा। लरहु न, टरहु आप तिस बेरा ॥ ४६ ॥
इत उत ह्वै करि आप बचावहु। बस लागति गुर भी न लरावहु।
जहां ताल दीरघ खिदराणा। गुर के संग तहां लगि जाणा[5] ॥ ४७ ॥
जित[6] हम होइं मिलहु तहिं आइ। कै मित्र जाहु तुरक दल माइं।
समुझि बारता सभि तबि खाना। लैं केतिक असवार पियाना[7] ॥ ४८ ॥
आइ मिल्यो सतिगुर के साथ। बंदन कीनि जोरि जुग हाथ[8]।
जंगल देश बारता सारी। बूझी गुर, खाने सु उचारी ॥ ४९ ॥
'प्रभु जी! एक ताल खिदराणा। अलप[9] नीर तित को हम जाणा।
अपर[10] थान[11] तिस निकट न पानी। तहिं ले चलों होइ अगवानी[12] ॥ ५० ॥
लरहु तहां कुछ तुरक संघारहु। पुन जंगल महिं अग्र पधारहु[13]।
बस[14] लशकर[15] को चलै न कोऊ। जल बिन हटै मूढ मति होऊं ॥ ५१ ॥
इम कहि सुनि करि खान रु पाना। सुपति जथा सुख क्रिपा निधाना।
उठि प्रभाति करि सौच शनाना। पाइ जीन हय[16], बनि सवधाना ॥ ५२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'कपूरे को प्रसंग'** बरननं नाम षशटम अंशू ॥ ६ ॥

---

1. नष्ट करना 2. शुद्धि 3. जगह 4. कहा 5. जाना 6. जहां 7. चले 8. दोनों हाथ जोड़ कर 9. थोड़ा 10. अवर 11. जगह 12. आगे 13. पधारना 14. बल 15. सेना 16. घोड़ा

अंशु ७

श्री गुर गमन प्रसंग

दोहरा

चढितहिं ते श्री सतिगुरू ले खाने को संग ।
रमयाणा जो ग्राम है तित को तोरि तुरंग[1] ॥ १ ॥

चौपई

केतिक[2] चलि जबि आगे गए । बहु उदिआन[3] बिलोकति[4] भए ।
निकट ग्राम के जाइ पहूचे । खरे करीर पीलु तरु मूचे[5] ॥ २ ॥
तहिं इक राहक तोरति डेलें । पावति झोरी मैं बहु ले ले ।
श्री सतिगुर सो जाइ निहारा । निकट गए इम बाक उचारा ॥ ३ ॥
'क्या तूं करैं तरुनि महिं फिरैं ? क्या झोली महिं पावन करैं ?'
राहक बोल्यो 'फल इन तोरि । लै जैहौं इन खैबे[6] लोरि' ॥ ४ ॥
'हमहि दिखावहु' श्री प्रभु भाखा । दई मुशट भरि, इक मुख चाखा ।
'इह तौ कटक डार दिहु चीनि' । चौथे भाग गेर तिन दीनि ॥ ५ ॥
पुन गुर भन्यों 'गेर देहु सारे' । सुनि राहक आधे पुन डारे ।
भनैं प्रभू 'धर डारहु सभै' । सुनि राहक कुछ गेरे तबै ॥ ६ ॥
झोरी महिं राखे जबि हेरे । पुन गुर कह्यो 'क्यों न गेरे ?' ।
राहक कहै 'कुटंब जु मेरा । क्या खैहै[7] हुइ छुधति[8] घनेरा ॥ ७ ॥
करहिं पकावन ले सभि खैहैं । इम गुज़रानी समा बितैहैं' ।
सभिनि सुनाइ गुरू तबि भाखा । 'चौथो भाग दुरभिछ[9] को राखा ॥ ८ ॥
हम चाहति इस देश मझारी । कबि दुरभिच्छ न परहि अगारी[10] ।
बरिआई इस राहक राख्यो । मान्यो बाक न जो हम भाख्यो ॥ ९ ॥
जे करि डले गेरति सारे । होति अनाज अनेक प्रकारे ।
रहति भलो सुरभिच्छ हमेशू । इत ने अनं खाहिं बहु देशू ॥ १० ॥
अबि भी तीनहुं भाग सुकाल । छित महिं उपजे अंन बिसाल ।
बाक बिलास करति इम गए । जाइ ग्राम ढिग उतरति भए ॥ ११ ॥

---

1. घोड़ा 2. कुछ 3. बाग 4. देखे 5. ऊँचा 6. खाना 7. खाते हैं 8. भूख 9. अकाल 10. आगे

माझे महिं गुर की सुधि सुनी। जथा जंग भे, सैना हनी।
जथा अनंद पुरि छोरि सिधारे। 'साहिबज़ादे चारहुं मारे॥ १२॥
जंगल देश प्रवेशे जाइ। लाखहुं तुरकनि के दल आइ'।
सुनि सुनि बड अफसोस[1] करंते। अपन आप को धिक उचरंते॥ १३॥
'देश हमारो बेमुख ह्वै कै। दुनी चंद के संग मिलै कै।
भागे सतिगुर को तजि आए। श्री गुर को कारज बिगराए[2]'॥ १४॥
भले भले सिख सभिनि धिकारैं। 'देश बिमुख भा दोजक डारैं'।
सुनि गैरत सभि के मन आई। जानी अपनी अधिक खुटाई[3]॥ १५॥
अपर देश अस कोइ न होवा। सिदक जथा माझे बहु खोवा।
चितवति चित चिंता बहु ग्रामू। —किम गुर को सुधरै सभि कामू—॥ १६॥
पंचाइत बहु ग्रामनि केरी[4]। आपस महिं सकेलि[5] तिस बेरी[6]।
पठि पठि मानव इकथल[7] आए। मेल भयो सभि को इक थाए॥ १७॥
लवपुरि को गिरदा[8] सभि मिले। गिनती के मानव मुखि भले।
करति सोच चिंता महिं ग़रक[9]। —बेमुखता को फल हुइ नरक—॥ १८॥
आपस महिं बिचार ठहिराई। 'सौ दो सै नर गुर ढिग जाई।
प्रभु को मिलि ऐसे समुझावैं। हाथि जोरि करि सीस निवावैं॥ १९॥
पूरबले गुरू अनि की रीति। जे तुम धारहु थिर करि चीति।
तौ सिक्खी निरबहैं[10] तुमारी। दया धरहु गति करहु हमारी॥ २०॥
जे तुरकनि के संग बखेरा[11]। दिन प्रति करहु जंग बड झेरा[12]।
नहिं सिक्खी को हुइ निरबाहू। बसैं प्रजा हुइ देशन मांहू॥ २१॥
लर्यो न जाइ शाहु के संग। लाखहुं लशकर ठानति जंग।
जे तुम कहो—साथ तुरकाने। हमरे झगरे परे महाने—॥ २२॥
तौ हम दिल्ली पहुंचहिं सारे। करहिं सुनावन सरब प्रकारे।
भली भांति हम लेहिं निबेरा। नहीं रहन देवैं को झेरा॥ २३॥
हमरे राहीं[13] सभि किछ होइ। बाद बिरोध देहिंगे खोइ।
आप सुखी रहीअहि सभि रीति[14]। निरबाहहु सिक्खन की प्रीति॥ २४॥
हम सिख हुइं तुम गुरू बनीजै। रस[15] तुरकन के संग रखीजै
नतु हम सिक्ख न तुम गुर होए। बिगरहि बात लखहु दिशि दोए'॥ २५॥

---

1. चिंता 2. बिगड़े 3. अपमान 4. की 5. बुलाई 6. बार, समय 7. स्थान 8. आस-पास 9. डूबे हुए 10. निभाएंगे 11. झगड़ा 12. विवाद 13. द्वारा 14. प्रकार 15. मेल

ग्रामनि की पंचाइत सारी। इस प्रकार की मसलति[1] धारी।
प्रेमी सिक्ख होइ तबि त्यार। गुर सन[2] मिलिबे[3] इच्छा धारि ॥ २६ ॥
ग्राम ग्राम ते इक नर और। चलन हेतु मिलि करि तिस ठौर।
भए सनद्ध बद्ध तबि सारे। श्री सतिगुर की ओर पधारे[4] ॥ २७ ॥
ग्राम हरी के पत्तन आए। सलिता दोनहुं तरि[5] हरखाए[6]।
गुर की सुधि सुनि करि सभि तबै। 'दीने ग्राम त्याग करि अबै ॥ २८ ॥
खिदराणे सर की दिशि आए'। सुनति सिंह हरखति इत धाए।
रमयणे ते करि गुर कूच। केतिक आगे उलंघि पहूचि ॥ २९ ॥
जाट विड़ंग जुगराज नाम तिह। खरो[7] हुतो[8] गुर पंथ जाति जिह[9]।
तिस बिलोकि[10] सिख बाक उचारा। 'सुनहु चौधरी! श्रवन मझारा ॥ ३० ॥
गन मुसलन[11] को लशकर आवे। जे तुझ बूझति अग्र सिधावै।—
गए अगारी गुर इति दिशि को ?-। तौ न बतावन करीअहि किस को' ॥ ३१ ॥
सुनति जाट बोल्यो मुख तबै। 'मो कहु बूझहिं मुसले जबै।
नहीं बतावनि को किम[12] करि हौं[13]। मैंक्या जानौं—तिनहिं उचरिहौं' ॥ ३२ ॥
इम कहि सिख गुर संग सिधारे। चले गंए उदिआन[14] अगारे।
बहुत दूर पहुंचे जबि जाइ। पीछे मिल्यो एक सिंह आइ ॥ ३३ ॥
तिन सगरी सुधि[15] आनि सुनाई। 'देखहु कहां सन रिपु[16] आई।
जाट खरो जुगराज बतावति।—आगे सतिगुर इत कौ जावति ॥ ३४ ॥
तिन संगी सिख मोहि हटायो। इत गुर गए न देहु बतायो।
मुसलन को लशकर इत आवै। भौंक चौंक[17] आपे चलि जावै—॥ ३५ ॥
इम तिस[18] के सभि बात बताई'। सुनि श्री प्रभु कहिं 'सिह' न पचाई[19]।
कुल जुति अफर अफर मरि जैहै। इस कारन ते म्रितु को पैहै' ॥ ३६ ॥
गुर बच ते सो अफर मर्यो। अबिलौ तिह कुल सुनिबो कर्यो।
जबि तिन की म्रितु हुइ नियराई। अफरै तीन दिवस मरि जाई ॥ ३७ ॥
अफरे जरहिं चिखा के बीच। लीनो स्राप बाद ही नीच।
चले जाति सतिगुरू अगारी। पीलुनि तरु करीर जहिं भारी ॥ ३८ ॥
एक ग्राम आयो पुन और। रूपा खत्री बसि तिस ठउर[20]।
मिल्यो एक गुड़ रोड़ी लैके। बंदन करी थिर्यो अगवैकै ॥ ३९ ॥

1. सलाह 2. से 3. मिलने की 4. ओर 5. तैर कर 6. हर्षित हुए 7. खड़े 8. थे 9. जिस 10. देख कर 11. मुसलमानों का 12. कैसे 13. करूं 14. बाग 15. बात 16. शत्रु 17. तंग आकर 18. इस ने 19. गुप्त नहीं रखी 20. ओर

गुर बिलोकि **बोले तिस बेरा**। 'कहु **रूपा** करीअहि इत [illegible]ा ?
लरहिं तुरक सों इस थल थिरैं ? आवति रिपुनि प्रान को हरैं ?' ॥ ४० ॥
सुनि बोल्यो 'नहिं पुजि है डेरा[1]। तुमरो तुरकनि संग बखेरा[2]।
लशकर आइ पकर करि लेहि। संतति सहत सजाइ सु देहि ॥ ४१ ॥
ग्राम उजारहि लूटहि सारा। तुम उतरे ते इतिक[3] बिगारा'।
सुनि गुर कह्यो 'नहीं तू रहैं। संतति तोहि बिनाशी[4] लहै[5] ॥ ४२ ॥
उजरहि ग्राम बसहि बहु बारी'। दियो स्राप इम दारुन[6] भारी।
तबि को ग्राम बस्यो बहु बारी। उजरहि बार बार सुख टारी ॥ ४३ ॥
संतति सहित सु खत्री मर्यो। मूलटास[7] सगरो परहर्यो।
तीस बरस को उजर्यो पर्यो। सो अबि बस्यो श्रवन हम कर्यो ॥ ४४ ॥
स्राप कि बर सतिगुर जबि करैं। ततछिन होति निमख नहिं टरै।
चले जाति आगे उदिआन। जहां न ग्राम पिख्यो किस थान ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**श्री गुर गमन प्रसंग**' बरननं नाम सपतमों अंशु ॥ ७ ॥

---

1. मैं आप को स्थान नहीं दे सकता 2. झगड़ा 3. इस प्रकार 4. अविनाशी 5. उठाए 6. भयानक 7. शाखाएं

अंशु ८

सिक्खी बिदावा मझैल लिखन प्रसंग

दोहरा

चले जाइं आगै गुरू सिंह रु खाना संग।
कितिक साथ बैराड़ हैं सहिज चलहिं तुरंग ॥ १ ॥

चौपई

दान सिंह इक सिख बैराड़। संग गुरू के जाहिं उजाड़।
तिस को सुत सतिगुर पिछारे। मंद चलावहिं तुरंग[1]—निहारे ॥ २ ॥
कह्यो 'शितावी[2] तुरंग चलावहु। आए तुरक निकट लखि पावहु'।
प्रभु ने मंदहि मंद चलायो। पुन डर धरि तिन बाक अलायो ॥ ३ ॥
'शत्रनि सेन समीपी होई। अनगन मिलहिं करहिं अबि ढोई'।
कई बार कहि रह्यो उचेरे। नहीं शीघ्र ते गुर हय प्रेरे ॥ ४ ॥
तिस के हाथ करोडा हुतो[3]। निकट होइ गुर के हय[4] हतो।
कहै 'तुरक दल आइ पिछारी। क्यों न बेग[5] करि चलहु अगारी ॥ ५ ॥
संगतिआ[6] तुरंग टिरड़ीए[7] पावहु। रिपु ढिग आए, क्यों न लखावहु'।
हय के हने गुरू रिस धारी[8]। 'संतति मारी जाइ तुमारी ॥ ६ ॥
जान भ्रात[9] के चाबक मारा। चल्यो जाति जो हम अनुसारा'।
दान सिंह रिस की सुनि बानी। हाथ जोरि करि बिनै बखानी ॥ ७ ॥
'इह मम सुत अपराध कमावा। बखशन ही तुम को बनि आवा।
बय पहिली मूरख क्रित कीना। नहीं प्रताप आप को चीना ॥ ८ ॥
संगति नहिं गुर सिक्खनि केरी। जिस ते महिमा लखहि बडेरी'।
सुनति बिनै करुना हुइ आई। 'दान सिंह! करि चित न काई ॥ ९ ॥
पिता पुत्र की लगहि न गारी[10]। रिदे सनेह होति है भारी।
रिस[11] के बसि[12] दुरसीस बखाने। चहै न चित मैं सुत की हाने[13] ॥ १० ॥

---

1. घोड़ा 2. तीव्र गति से 3. मारे गए 4. घोड़ा 5. वेग (गति से) 6. शक्तिमान 7. तेज दौड़ाओ 8. क्रोधित 9. सवारी का घोड़ा 10. गाली 11. क्रोध 12. वश 13. हानि

तुम सिख सुत के सम हो मेरे। हम बांछति सुख लहैं घनेरे'।
सुनि कै दान सिंह कर जोरे। 'बाक आप के मुरहिं न मोरे॥ ११॥
मोरे उर महिं भरम बडेरा। किम थिर होहि ? सदा मैं चेरा'।
क्रिपा निधान पुनहिं समुझायो। करन अभरम द्रिश्टांत सुनायो॥ १२॥
कानन महिं दावा[1] लगि जाइ। शेर शेरनी बतश जिथाइ[2]।
मुख महिं तिन उठाइ करि ल्यावैं। पिखनिहार जानै जनु खावैं॥ १३॥
नहीं चुभावैं दंत जि तन महिं। सुख सों धरैं आनि ही बन महिं।
तिम तुम जानि भरम को खोवहु। मन महिं शंकमान नहिं होवहु'॥ १४॥
दान सिंह सुनि रिदै अनंद्यो। हय ते उतरि गुरू पद बंद्यो।
'गुर जी! भला, गुरू जी! भला। सुख करीअहि, तुम जाग्रत कला'॥ १५॥
इम बोलति सिक्खन के साथ। आगे चले जाति मग[3] नाथ[4]।
परखन हित जंगल नर फेर। श्री मुख ते बोले तिसबेर॥ १६॥
'हम को लगी अधिक अबि प्यासा। खोजहु नीर होइ जिस पासा'।
सुनि गुर ते लागे सभि खोजन। बूझन करे संग गन जो जन॥ १७॥
छागल[5] हुती सु खाने तीर। बूझ्यो सिक्खन 'तुझ ढिग नीर'।
तबि नर कह्यो 'निकट नहिं मेरे'। पुन चितव्यो—लिहं मोल घनेरे॥ १८॥
जबि नहिं किस ढिग पानी पायो। 'गुर हित चहीअहि' सभिनि सुनायो।
तबै बतायहु 'है मम तीर। ले करि मोल देय हौं नीर॥ १९॥
देहु रजतपण लेहु कटोरा। अति सीतल जिम सुधर्यो शोरा'।
गुर सेवक दे करि भरि लीना। कहि प्रसंग गुर के कर दीना॥ २०॥
हेरि नीर कर ते गुर डारा। कितिक देर ते बहुर उचारा।
'सो पानी हम पान न कीन। बिमल न हुतो गेर धरि दीन॥ २१॥
एक कटोरा आनहु आन। बिमल बिलोकहिं करहिं सु पान'।
बहुर जाइ खाने संग भाख्यो। 'एक कटोरा पुन गुर कांख्यो[6]॥ २२॥
कहति भयो 'मैं देऊं न कोई। अपने कारन राख्यो सोई'।
सिक्खनि भन्यों 'घनो तुव पास। क्यों न देति लागी प्रभु प्यास'॥ २३॥
कहनि लग्यो 'दिहु इक दीनार[7]। लेहु कटोरा भरि करि बारि'।
सिक्खन कह्यो 'रजतपण[8] लीजै। गुर के हेतु नीर भरि दीजै'॥ २४॥
कहै मूढ़ 'मैं देउं न पानी। चहहु जि मुहरि देउ मम पानी'।
सतिगुर भन्यों 'देहु दीनार। एक कटोरा भरि लिहु बार'॥ २५॥

---

1. दावा 2. जहाँ 3. मार्ग 4. स्वामी 5. मशक 6. अकांक्षा की 7. मोहर 8. सोने की मोहर

दे करि तबहि कटोरा भर्यो। हेरति सतिगुर बाक उचर्यो।
सभि वसतू ते पतरो पानी। सुनि खाने! तैं कछू न जानी।। २६।।

तूं पानी ते पतरो हेरा। जान्यों भेद आज हम तेरा।
इम कहि आगे कितिक सिधाए। मद्धर देश के सिख तबि आए।। २७।।

हाथ जोरि गुर फते बुलाई। पद अरबिंदन[1] ग्रीव[2] निवाई।
दुहदिशि ते सिख हरखति भए। 'भले समें मेला गुर कए'।। २८।।

खरे होइ बोले निज अरज़ी[3]। 'बिनहु आप सुनिअहि बच गुर जी!।
माझा देश ग्राम मिलि सारे। तुम दिशि ते चिंता चित धारे।। २९।।

करि करि शोक बहुत पछुताए। इह सगरे सिख तिनहुं पठाए।
उतरहु हय[4] ते कुछ थिर होइ। कह्यो तिनहुं को सुनीऐ सोइ'।। ३०।।

इम सुनि करि श्री सतिगुर थिरे। उतरे हय ते बैठिब[5] करे।
केतिक सिंह अरूढे रहे। केचिक उतरि प्रभू ढिग लहे।। ३१।।

मद्धर देश के सगरे थिरे। बड दीवान लागबो करे।
कमरकसा सभि हूं को अहे। तोड़े सुलगि तुफंगनि रहे।। ३२।।

तुरकनि की लगि रही अवाई[6]। 'संझ सकारे परहि लराई'।
लरन हेतु त्यारी करि रहे। इक तरु ऊचो तहिं थिर अहे।। ३३।।

'सिंह चढायो तिस दिश देखहि। दूर लखहु सुध देहु बिशेखहिं'।
मद्धर देश के सिख समुदाई। गाथा बिनती जुगति सुनाई।। ३४।।

'मद्धर देश के ग्राम घनेरे। सभि ते मानव मिले बडेरे।
पंच लोक अरु प्रेमी गुर के। पिता पितामा जो सिख धुर के।। ३५।।

सुनि सुनि रावर[7] की सभि गाथा। मिलि मिलि भए शोक के साथा!
अपन आप को धिक[8] धिक कह्यो। देश गुरू बेमुखता लह्यो।। ३६।।

हुती कदीमी[9] सिक्ख जांहि। हम निरभाग निबाही नांहि—।
इम बिचार करि सिक्खी बटोरे। करि मसलत भेजे तुम ओरे।। ३७।।

हज़रत साथ वैर तजि दीजै। हम बिच[10] परहिं[11] मेल करि लीजै।
कारज सभि निबेर करि ल्यावैं। कहि महिमा तिन ते पुजवावैं।। ३८।।

तौ सिक्खी निरबहै हमारी। परे रहैंगे शरन तुमारी।
जे तुरकनि संग रखहु बिखेरा[12]। सकल रीति करि कशट बडेरा।। ३९।।

---

1. कमल 2. सिर झुकाया 3. विनय की 4. घोड़ा 5. बैठे 6. अफवाह 7. आप की 8. धिक्कार 9. पुराने 10. में 11. मध्यस्थती करते हैं 12. बैर

नहिं होवहि सिक्खी निरबाहा। लोक बिसिदक होति उर[1] मांहा।
सकल देश भेज्यो इम कहिकै। रावर[2] के संकट सभि लहिकै' ॥ ४० ॥
श्री गोबिंद सिंह सुनि रिस छाई[3]। उत्तर कह्यो बीच समुदाई।
'सिक्ख होति लैबे उपदेशू। देहु हमैं बिप्प्रीत विशेशू ॥ ४१ ॥
हम को चाह नहीं तुम केरी। पूरब भाज गए बिन हेरी।
गए सु गए रहो सभि भागे। अबि को तुमैं बुलावन लागे ॥ ४२ ॥
हमरे झगरे[4] चहहु निबेरा। कहां गए तुम पूरब वेरा[5]।
श्री गुर अरजन को भा कारन। नहिं गमने नहिं कर्यो उचारनि ॥ ४३ ॥
निज निज सदन थिरे डर धार्यो। सकल पंचायत को बल हार्यो।
पुन नौमे पतिशाहु भए हैं। दिल्ली महिं सिर देन गए हैं ॥ ४४ ॥
तबि माझे आदिक सभि देश। भे तूवशन धरि त्रास विशेश।
किनहुं कह्यो न शाहु अगारी। पर्यो न कोऊ झगर मझारी[6] ॥ ४५ ॥
क्यों न निबर्यो तबि किस जाइ। तबि जानति जबि लेति छुटाइ।
कर्यो काज तबि को मन जानति। तांते अबि कहिबो हम मानति ॥ ४६ ॥
कि सहूं ते कुछ काज न सर्यो। —हम सिख इह-न जनावन कर्यो।
अबि उपदेश करनि को आए। कहनि बाक को नहिन लजाए ॥ ४७ ॥
तुम को सिख करि क्या हम लै हैं। परे काज जबि दगा कमै हैं।
अबि लिखि दिहु तुम-हम सिख नांही। —चले जाहु निज देशनि मांही ॥४८ ॥
इम गुर ते सुनि गिरा रुखाई। सभिनि तरे कहु ग्रीव निवाई।
ग्रामन के मुखि पंचन मसलत। करी सभिनि सों चित महिं चितवति ॥ ४९ ॥
कितिक देर महिं पुन गुर भाख्यो। 'हम तुरकन को खोवन कांख्यो[7]।
इह सिख आए मेल करावनि। त्रासति[8] रण ते वात बतावन ॥ ५० ॥
क्यों न बिदावा सिक्खी केरा। लिखहु मझैल ! करति क्यों देरा ?
दुती बार जबि गुर ने कह्यो। लिखन हेतु सभिहूं तबि चह्यो ॥ ५१ ॥

दोहरा

सकल देश मिलि करि कह्यो लरहिं तुरक के संग।
'नहिं सिक्खी हम ते निबहि' तौ लिखि देहु निसंग—॥ ५२ ॥

इम विचार करि लिख्यो बिदावा। गुरू लिखाइ जेब महिं पावा।
'सभि माझा सिक्खी ते खारज[9]'। लिखि दीनो धरि त्रास अनारज[10] ॥ ५३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'सिक्खी बिदावा मझैल लिखन प्रसंग'** बरननं नाम अशटमो अंशु ॥ ८ ॥

---

1. मन 2. आपके 3. क्रोध किया 4. झगड़े 5. समय 6. में 7. चाहा है 8. डरते हैं 9. निकाल दिया गया 10. डरते हुए

अंशु ६

भट्ट भेर होन प्रसंग

दोहरा

जे जे बेमुख सिदक बिन सिमरि पंचाइत बात।
लिख्यो बिदावा[1] देरि बिन[2] 'गुर सिख नहीं कदांत[3]' ॥ १ ॥

चौपई

जे जे सिदकी[4] गुर सिख प्यारे। भयो कशट तिन के मन भारे।
—बहुत बुरा कारज इह भयो। लोक प्रलोक खोइ सभि लयो—॥ २ ॥
श्री सतिगुर भी भए उदास। जथा कपुत्त्र बने पित पास।
महां बिरस[5] दुह दिशि ते होवा। धरहिं शोक जिन जिन तबि जोवा ॥ ३ ॥
सिक्ख मझैलनि महिं जे भले। अति चितातुर संकट मिले।
मनुज[6] देश को तजि नहिं सक्कईं। बेमुख गुर ते निज धिक तक्कईं ॥ ४ ॥
चढ्यो तरोवर पर जो हेरति। इतने महिं सुनाइ सो टेरति।
'प्रभु जी ! क्या देखति हो खरे ? लशकर रिपुनि आइबो करे ॥ ५ ॥
उडी धूरि सूरज को छादति[7]। सुनि धुनि दुंदभि[8] बाजति।
कई हज़ार आइ असवारा। कलमलाट[9] सुनीअति हे भारा ॥ ६ ॥
करहु तुफंगन भरि करि त्यारी। ठोकहु गजन दुगोरी डारी।
रही न दूर आइ भा नेर। घरी न लागहि ह्वै भट भेर' ॥ ७ ॥
इम बोलति ही उतर्यो तरे[10]। सतिगुर तबै तुरंगम[11] चरे[12]।
धनुख संभारि खैंचि टंकारा। तीछन भीछन तीर निकारा ॥ ८ ॥
सभि बैराड़न तबि कर[13] जोरे। 'प्रभु जी गमनहुं कुछ इत ओरे।
आगे आइ ताल खिदराणा। सो लरिबे को खरा टिकाणा ॥ ९ ॥
नांहि ते कुछ तहिं ते चलि आगे। जहिं तुरकन जल हाथ न लागे।
बिन मारे आपे मरि जाइं। नांहि त सूके बदन पलाइं ॥ १० ॥

---

1. गुरु जी से पृथक होने का पत्र 2. उसी समय 3. कभी भी 4. पूरे 5. बुरी बात 6. अपने 7. छिपाती हुई 8. नगारा 9. शोर 10. नीचे 11. घोड़ा 12. चढ़े 13. हाथ

ठहिर न सकहिं तुरत फिरि जावहिं । जबि खोजे ते नीर न पावहिं ।
इम तिन की मसलत सुनि काने । सने सने आगे प्रसथाने ।। ११ ।।
पुन सिख कहै 'निकट ही आए । खोज तुरंग नवीनो पाए ।
धाइ बिलोकैं जानहिं नेरे' । रिपु प्रति कह्यो गुरू तिस बेरे ।। १२ ।।
'खर तुरकन की आखन घट्टा । खोज कहैं नहिं मुख विच[1] डट्टा ।
हुइ मतिवारे तर तर तक्कैं । निकट होइ भी वेख[2] न सक्कैं ।। १३ ।।
इम कहि खिदराणे लगि गए । नेर तुरक भी करते भए ।
मद्र देश की संगति जोई । लिखति बिदावा गमनी[3] सोई ।। १४ ।।
तिन मैं पंच सिक्ख मतिवंते[4] । सभिनि धिकार हटे बलवंते ।
कहिन लगे 'सभि देश डुबोयो । लोक प्रलोक सगल ही खोयो ।। १५ ।।
हम तो गुर हित दैहैं प्रान । बिच संग्राम करहिं अरि हान ।
तुरक हज़ारहुं गुर के गिरद । को[5] इस समैं तजै हुई मरद ।। १६ ।।
एती भीर गुरू पर परी । है सद हैफ तजैं इस घरी ।
जीवन पाइ करहिंगे कहां[6] । जे प्रभु काज न ऐहैं इहां ।। १७ ।।
अंत समा सभि के सिर खरा । काइर सूर न किस ते टरा ।
जीवन मरन धंन तिन केरा । जिन गुर सेव करी इस बेरा[7] ।। १८ ।।
जियत निंद म्रितु नरक सहेरा । करम कमायो तुम इस बेरा' ।
सिख पंचनि ते सुनि करि कान । भयो सिदक केतिक के आनि ।। १९ ।।
तिन को छोरि इतहि से मिले । 'तजन गुरू को अबि नहिं भले ।
बरख[8] हज़ारहुं नरक सहेर्यो । रण ते डर गुर ते मुख फेर्यो ।। २० ।।
एक घरी को संकट नीको । लाखहुं बरख सदा सुख जीको ।
हम गाढे हुइ ठाढे अरैं । रिपु सों रन करि मारहिं मरैं ।। २१ ।।
गुर लगि तुरक जान नहिं दैहैं । जबि लगि तन महिं प्रान रहै हैं ।
नहिं बट्टा सिक्खी कउ लावैं । नहीं आपनो धरम गवावैं ।। २२ ।।
हम तो प्रण धार्यो अबि ऐसे । अपर करहु जिन के मन, जैसे' ।
इत्यादिक बहु कहि कहि तरक । 'जीवति निंदा मरते नरक' ।। २३ ।।
हए सिंह सभि संख्या चाली । रिण करिबे कहु धीर बिसाली ।
अपर भसे काइर बलहारे[9] । पग चंचल करि दूर सिधारे ।। २४ ।।
प्यार प्रान करे तजि धरमू । सतिगुर त्यागे कर्यो कुकरमू[10] ।
जित को आए तितहि सिधारे । मनहुं चरन म्रिग के सभि धारे ।। २५ ।।

1. में 2. देख 3. नई 4. बुद्धिमान् 5. जो भी 6. क्या 7. समय 8. वर्ष 9. बल हार चुके हैं 10. बुरा कार्य

जबि श्री प्रभु खिदराणे आए। लरन सथान बिलोकि[1] अलाए[2]।
'शुशक पर्यो नंम्री थल अहै। रण हम करहिं इहांथिर रहैं॥ २६॥
बदरी ब्रिंदसघन हैं आछे। हतहिं[3] तुरक गन को चित बाछैं'।
दान सिंह आदिक बैराड़। कहैं 'चहूं दिशि झाड़ उजाड़॥ २७॥
नाहकु[4] रुकहु बीच लशकर[5] के। घेरा पाइ लेहिं बल करि के।
आगे चलहु कितिक थल और। खरे होई हैं आछी ठौर॥ २८॥
प्रिशटि आपनी रखहिं उजार। शलख[6] तुपक[7] की करिहैं मार।
जेतिक हते जाइं हति करिकै। परे जोर ते जै हैं टरि कै॥ २९॥
इह मत हमरो मानहु गुर जी। रुकहु न आप करति सभि अरज़ी'।
इम बहु बार बार हुइ दीन। कह्यो जोरि कर 'सुनहु प्रबीन'॥ ३०॥
तजि खिदराणा कुछक पयाने[8]। खरे भए प्रभु लरन टिकाने।
इतने बिखै सिंह जे चाली। लरन हेतु करि धीर बिसाली॥ ३१॥
गुर की दिशा उताइल आए। तुपक त्यार तोड़े सुलगाए।
सर खिदराणा तिनहुं निहारा। आइ प्रवेशे तांहि मझारा॥ ३२॥
मनहुं दुरग है कर्यो पसिंद। 'थिरहु इहां रण करहिं बिलंद।
इत ही तुरकनि को बिरमावैं। गुर के पाछे नाहन जावैं"॥ ३३॥
आपस महिं मसलत[9] करि थिरे। लरिबे कहु तिआर हुइ खरे।
केतिक सिंहनि बहुत जनावनि। करे चादरे झारनि पावनि॥ ३४॥
ऊचे बदरी के तरु जेई। बसत्रनि साथ अछादे तेई।
—तंबू लगे जानि रिपु डरैं। आइं न इक बिर हेला[10] करैं॥ ३५॥
रहैं दूर ही हतैं तुफंगा। मारहिं तुरकनि फोरहिं अंगा—।
थिरे अधिक करिकै उतसाहू। धंन जनम तिन को जग मांहू॥ ३६॥
—गुर लगि तुरक न पहुंचनि पावैं। हतैं इहां पाछे उलटावैं।
थालहिंगे घमसान घनेरा—। करि करि आड[11] थिरे तिस बेरा॥ ३७॥
'नहीं आपने पैर हिलावहु। मरहु समुख रण सुरग सिधावहु।
वाली समरथ गुरू हमारो। संहर घोर घनो करि डारो'॥ ३८॥
चंडि चलित्र पाठ को करैं। केचित वार भगउती ररैं।
को रामाइण मुखहुं उचारै। सुभटन को जसु जिनहुं मझारै॥ ३९॥
इम थिर भए त्यार हुइ करिकै। शत्रुनि हतन धीर उर धरिकै।
बिगरी बात सुधारन हेतु। सिमरति सतिगुर भए सुचेत॥ ४०॥

1. देख कर 2. कहा 3. मारें 4. फजूल 5. फौज 6. गोले 7. तोप 8. आए 9. सलाह 10. आक्रमण 11. आड़

कल बलाट तुरकनि को भारे। सुनि सुनि गहि गहि आयुध[1] त्यारे।
को को त्यागन लगे तुफंग। सुनि रिपु आए करहिं जिम जंग ॥ ४१ ॥
सुनी अवाज़ पठान वजीदे। कह्यो कि 'गुर ढिग आनि रसीदे।
तुपक[2] अवाज़ सुनाई देति। थिर्यो निकट मंडहि रण खेत ॥ ४२ ॥
आगे जिन लाखहुं भट मारे। बडो बहादर नांहिन हारे।
ज्वालाबमणी करि करि त्यारी। घालहु हेल परहु इक बारी' ॥ ४३ ॥
सभि लशकर[3] को दयो सुनाइ। कीनी त्यार तुपक[4] समुदाइ।
जाट कपूरा जिन के साथ। आइ बतावति गुर की गाथ ॥ ४४ ॥
जहिं जहिं करि डेरा चढि आइ। आवत सगरे चिह्न दिखाए।
पिखि पिखि खोज आवते दौरे। तुरंग धवाइ पावते रौरे ॥ ४५ ॥
आइ नेर पायहु खिदराणे। देखे बसत्र सु तंबू जाणे।
छुटन लगी दुहुं दिशि ते गोरी। पर्यो रौर बहु शलखनि छोरी ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**भट्ट भेर होन प्रसंग**' बरननं नाम नवमो अंशु ॥ ९ ॥

---

1. हथियार 2. गोलों की 3. सेना 4. तोप

अंशु १०

मुकतसर जंग प्रसंग

दोहरा

करि हमला गन तुरक मिलि धाइ परे करि शोर।
छूटी सिंहन ते शलख लगि गोरी मुख थोरि॥ १॥

भुजंग छंद

तुफंगैं चली ते भयो नाद भारा।
सुन्यो श्रोन महिं श्री गुरू कोप धारा।
खरे होइ टिब्बी हुती एक तांही।
तजे तीर तीखे लगैं सैन मांही॥ २॥

बिधे एक दोऊ त्रिती चार पांचे।
लगे पार सूको नहीं प्रान बाचे[1]।
चलै बेग ते दीह उठैं शुंकाटे।
दड़ा दाड़ गेरैं मनो ब्रिच्छ काटे॥ ३॥

खरी ब्रिंद बेरी थिरे सिंह मांही।
तजैं तीर गोरी, लगैं अंग तांही।
परे एक बारी घनो घालि हेला।
चहैं ब्रिंद शत्रू करैं रेल पेला॥ ४॥

जबै ताल[2] के तीर पै आनि ढूकै[3]।
'लिजै मार थोरे' इमं ऊच कूके।
तबै सिंह सूरा महां रोस[4] पूरा।
तज्यो थान नंम्री[5] गज्यो नाद भूरा॥ ५॥

लीओ खैंचि खंडा प्रचंडै घमंडा।
करे खंड खंडं अखंडं उमंडा।
महां जुद्ध मंड्यो कर्यो लाल तुंडं।
जिसे हेरि बैरी कियो रंग पंडं[6]॥ ६॥

---

1 बचे 2. तालाब 3. आए 4. क्रोध 5. नीचा 6. लहू का रंग

जथा पुंज[1] हाथीन पै शेर धावै[2] ।
त्रिभै बीर बांको तथा घाव घावै ।
बर्यो सिंह एको गनं शत्रु मांही ।
कराचोल[3] बाहै[4] मिटैं पैर नांही ॥ ७ ॥
किते मारि गेरे गुरू ओज पाए ।
तबै देखिकै ब्रिद शत्रू रिसाए[5] ।
चहूं कोद घेर्यो क्रिपाणं उघारे ।
छक्यो छोभ छत्री सु छालं उछारे ॥ ८ ॥

रसावल छंद

चहूं ओर मारे । बड़ी शीघ्र धारे ।
पलत्थे खिलारी । करै घाव भारी ॥ ९ ॥
घने घाव खै कै । सु श्रोणं बहै कै ।
भयो लाल रंगं । सु चीरं सुरंगं ॥ १० ॥
मुखं मुच्छ बंकी । बिलोकै[6] अतंकी[7] ।
घने घाव घाए । हयं ते गिराए ॥ ११ ॥
चलाकी दिखावै । नहीं दाव खावै ।
बह्यो जाहि लोहू । रिदै सिंह रोहू[8] ॥ १२ ॥
तक्यो तांहि अंगा । समूहं तुफंगा ।
इकं बार दागी[9] । गनं आनि लागी ॥ १३ ॥
गिर्यो सिंह सौहैं[10] । कुप्यो बंक भौहैं ।
जबै बीर मारा । करे जंग भारा ॥ १४ ॥
तबै सिंह औरे । भन्यो जंग ठौरे[11] ।
'लरैं ठाढ ह्वै कै । प्रियं प्रान कै कै ॥ १५ ॥
समै सो न ऐसो । लरैं आड[12] लै सो ।
तजो जीय संका[13] । न कीजे अतंका ॥ १६ ॥
गुरू को संभारो । प्रलोकं सुधारो' ।
इमं आप मांही । कहै सिंह तांही ॥ १७ ॥
मले पंच बीरा धरी भूर धीरा ।
जहां शत्रु पुंजा । पर्यो सिंह भंजा ॥ १८ ॥

---

1. झुंड 2. आक्रमण करे 3. हथियार 4. चलाते हैं 5. क्रोध करते हैं 6. देख कर 7. डरना 8. क्रोध 9. चलाना 10. सामने 11. ओर 12. आड़ 13. शंका

तहां को सिधारे । क्रिपानं निकारे[1] ।
मझारं प्रवेशे । सु ओजं विशेशे ॥ १९ ॥
मनो बेग सिंहं । तथा शोभ सिंहं ।
खिचे पंच तेगा । उघारी सु बेगा ॥ २० ॥
म्रिगं शत्रु भागे । अरे नांहि आगे ।
जिसे घाइ घाले । तिसे मारि डाले ॥ २१ ॥
पर्यो रोर भारो । बकैं 'मार मारो' ।
चहूं ओर घेरे । ढुकैं नांहि नेरे ॥ २२ ॥
वजीदे निहारे[2] । सु खानं प्रचारे ।
'कहां जाहु भागे । नहीं लाज लागे ॥ २३ ॥
मुरो घेरि मारो । नहीं त्रास धारो ।
अहैं सिंह थोरे । नहीं पास घोरे ॥ २४ ॥
कहां ओज कै हैं । मुरो मारि लै हैं' ।
वजीदे वंगारे । फिरे फेर सारे ॥ २५ ॥
गडा वड्ड होए । मिले तुंड दोए ।
क्रिपानैं चलावैं । सु लोहू चखावैं ॥ २६ ॥
रंगे रंग लालं । कटैं मार डालं ।
हय हेरि नेरैं । कटैं तुंड गेरैं ॥ २७ ॥
महां तेज तत्ते । रसं रौद्र रत्ते[3] ।
गिनैं शत्रु हूंना । चढे चाउ दूना ॥ २८ ॥
उछल्लैं छलंगी । गुरू के भुजंगी ।
दियो ओज ऐसो । हज़ारान जैसो ॥ २९ ॥
महां कोप ठानैं । गजं कीट मानैं ।
बडे ओतसाहे । रणं शत्रु गाहे ॥ ३० ॥

सिरखंडी छंद

पंचहुं बीर जुझारे मारि अनेक को ।
कराचोल परहारे तुरक गिराइ कै ।
परे तुरंगम भारे मुख अरु चरन कटि ।
गुलकां तीर सहारे भिदे शरीर सभि ॥ ३१ ॥
निकसे प्रान सु डिग्गे सनमुख बैरीआं ।
सभि श्रोणत सन भिग्गे बागे[4] लाल है ।

1. निकाल रहे हैं 2. देखा 3. लथ 4. कपड़े

तजे न हाथहुं खग्गे इच्छा हतनि की ।
घने घाव तन लगे मरि करि गिर परे ।। ३२ ।।
बद्दरी ब्रिंद मझारे सूके सर बिखे ।
थिरे सिंह तहिं भारे तुपक चलांवदे ।
उठे शबद कड़कारे गुलकां शूंकती ।
लगैं तुरक तन मारें गिरें पवंग महुं ।। ३३ ।।

दोहरा

बद्दरी संघनी महिं घनी सिंह सैन को जानि ।
नेर नहीं कायर करैं दूर फिरैं डर मानि ।। ३४ ।।

भुजंग छंद

वजीदे प्रचारे 'करो क्यों न हल्ला ।
बली ! रेल पेलो बिलंदै धकल्ला' ।
दलं बीर दौर्यो बलं बोल पाए[1] ।
पलीते धुखैं पुंज गोरी चलाए ।। ३५ ।।
तबै एक नौ सिंह कोपे बिसाले ।
तजी आड को[2] खैंचि खग्गं निकाले ।
ढुके ढोइ गाढे ढिगं ढेर चाले ।
छके छोभ मैं छाल आछे[3] उछाले ।। ३६ ।।
दसो सिंह से सिंह त्रासे न सोई ।
न्रिभै बीर बांके करी जंग ढोई ।
कराचोल चाले सु ढाले उछाले ।
हज़ारों रिपू हइकै आलबाले[4] ।। ३७ ।।

नराज छंद

'गुरू गुरू' उचारिकै[5] बिसाल ओज पाइकै ।
भए प्रवेश फौज महिं घनेर घाव घाइकै ।
जहां परैं इकत्र ह्वै बचित्र जुद्ध ठानते ।
समेत अत्र शत्रु को सु पत्र ज्यों प्रहानते ।। ३८ ।।
बिलंद सेल ठलते करंति रेल पेल को ।
दुहेल हेल मेलते, धकेलते न झेल को ।

---

1. वजीदे के शब्दों से शक्ति प्राप्त की 2. आड़ 3. अच्छे 4. अलबेले
5. याद करके

प्रपेलते करंति ऐल, मैंल गैंल चालते।
सु लाल चैंल छैंल होति खेल ज्यों उताल ते ॥ ३९ ॥
घिरंत ब्रिंद शत्रु मैं वचित्र अत्र मारते।
भरे शरीर घाव ते तऊ न धीर हारते।
कटंति अंग भंग ह्वै गिरंति खेल जंग के।
निसंग सिंह सूरमे सुरंग चीर रंगि के ॥ ४० ॥
बिलोकि सिंह ताल के मरेदसं सिंहारि कै।
समीप शत्रु आइ गे तुफंग को प्रहारि कै।
कर्यो बिसाल रौल को प्रवारते सु जाति हैं।
तुरंग को धवाइ आइ नेर पाइ घात हैं ॥ ४१ ॥

दोहरा

सिंह इकादश निकसिकरि तोमर खड़ग संभारि।
परे तुरक लशकर[1] बिखैं[2] धरि करि उर हंकार ॥ ४२ ॥

रसावल छंद

तुफंगैं[3] संभारी। बरूदं सु डारी।
दुगरी[4] कसंते। पलीते जमंते ॥ ४३ ॥
कला जोड़ि तोड़े। कली साथ मोड़े।
धरे हाथ ताके। झुकाए कड़ाके ॥ ४४ ॥
चलै शुंक गोरी[5]। लगैं देहि[6] फोरी[7]।
दड़ादाड़ गेरे। सु तालं चुफेरे ॥ ४५ ॥
कड़ाकाड़ माची। लहू धूड़ि राची।
खरे[8] सिंह मारैं। नहीं त्रास[9] धारैं ॥ ४६ ॥
महां बीर ग्यारां। तडागं किनारा।
जिते शत्रु आए। तहां घाव घाए ॥ ४७ ॥
क्रिपानै कटे जे। पुरेजे पुरेजे[10]।
लरे ब्रिंद खाना। बडो जंग ठाना ॥ ४८ ॥

दोहरा

पुंज पुंज को मारि करि मरे सिंह बर बीर।
बाकी त्रौदस रहि गए सो निकसे धरि धीर ॥ ४९ ॥

---

1. सेना 2. में 3. हवाई बंदूक 4. दो गोलियां 5. गोली की ध्वनि 6. शरीर 7. फोड़ना 8. बहुत 9. भय 10. पुर्जे पुर्जे

भुजंग छंद

चले बीर सोऊ बडे ओतसाहे।
धरे शसत्र सारे महां जंग मांहे।
कढे म्यान तेगे[1] गहे हाथ ढाले।
चलाकी करंते सु छालैं उछाले ॥ ५० ॥
झटापट्ट जुट्टे लटापट्ट होए।
सटापट्ट सुट्टे कटाकुट्ट जोए।
कटाकट्ट कट्टे चटापट्ट मारे।
खटापट्ट खोटे हट्टाहट्ट हारे ॥ ५१ ॥
कहां लौ कहौं सिंह सूरे जुझारे।
रिपू[2] संग जूझे पहूंचे अगारे[3]।
खहे खान खूनी खुरासान खग्गं।
मरे जंग खेतं बडे घाव लग्गं ॥ ५२ ॥
तजे ताल दूरं बरे सैन मद्धं।
बडे खान मारे करैं जुद्ध क्रुद्धं।
रणं ग्रिद्ध ब्रिदं भखे मास बोलैं।
उडैं कंक काकं नभं बीच डोलैं ॥ ५३ ॥
डकी डाकणी भूत प्रेतं बकंते।
नची जोगणी सीस बालं खिलंते।
किती दूर लौ जंग खेतं बिथारे।
गुथी लुत्थ जुथं पगं पोथ डारे ॥ ५४ ॥
सुरं देखि सिंहानि को जुद्ध सुद्धं।
कहैं 'धंन धंनं फिरैं गैन मद्धं।
मरे बीर चाली महां ओज कै कै।
गुरू ध्यान धारे तजे प्रान घै कै ॥ ५५ ॥

दोहरा

तुरक हज़ारों लड़ि मरे बहुते हते तुरंग[4]।
भयो जंग पूरन तबै श्रोता सुनहुं प्रसंग ॥ ॥ ५६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पूरब ऐने **'मुकतसर जंग प्रसंग'** बरननं नाम दसमो अंशु ॥ १० ॥

---

1. तलवार 2. शत्रु 3. मृत्यु की गोद में चले गए 4. घोडे

अंश ११

मुकतसर प्रसंग

दोहरा

इक माई भागो हुती चाली सिंह मझार।
तुरक हत्यो खर सांग[1] ते गेर्यो धरा मझार[2] ॥ १ ॥

चौपई

सतिगुर सवा कोस रहि खरे[3]। अबि लगि टिब्बी चिन्ह उचरे[4]।
धर्यो पनच पर तीखन[5] बाना। मुशट गहे धनु को पुन ताना ॥ २ ॥
शबद भयानक होवति छोरा। आवति भयो शत्रु दल ओरा।
भूम भूर भुंकाट भइआला[6]। सुनि करि बिसमे तुरक बिसाला ॥ ३ ॥
'इह क्या भयो न जान्यो जाई ? नहीं सिंह अबि को अगुवाई।
गुर समेत सभि लीने मारि। परे धरा पै पाइं पसार ॥ ४ ॥
खोजहिं गुर की लोथ बिचारैं। पहुंचहि हज़रति निकट निहारैं।
होइ प्रसंन मोहि पर घनो। जिसको नित चहि गहिन कि हनो' ॥ ५ ॥
निज लोकन सभि भनति सुनाई। 'गुर भी लरतो भयो लखाई।
जे करि खोज लोथ करि लै हौं। हज़रत[7] की प्रसंनता पैहौं' ॥ ६ ॥
इम कहि साथ कपूरे भाख्यो। 'जल बताइ दिहु सुभटनि कांख्यो।
जबि के चढे न किनहूं लीनो। एतो दिवस बित्यो नहिं पीनो' ॥ ७ ॥
जोरति हाथ कपूरा कहै। 'खां जी ! इस थल कित जल अहै।
इन पैरन ते जाउ जि आगे। तीस कोस पर जल कर लागे ॥ ८ ॥
जे नबाब जी हटहु पिछारी। तउ दस कोस पाइ हहु बारी'।
सुनति वजीद खान बिसमायो। चिंता बसि[8] ह्वै बहुर अलायो ॥ ९ ॥
'कहहु चौधरी। कउन इलाजा ? बिन जल के बड होति कुकाजा।
त्रिखा दीह ते मरहिं तिसाए। हटहिं तऊ जल दूर सथाए ॥ १० ॥

---

1. बरछी 2. बीच 3. खड़े 4. कहा 5. तेज 6. भूमि पर भया॰क धायं-धायं की आवाज़ गूंजी 7. बादशाह 8. वश

आगे नहीं समीप बतावति। बांए दांए हाथ न आवत।
तबहि कपूरे मसलत[1] कही। 'जल को जतन और अबि नहीं ॥ ११ ॥
हय बड चाल कि पोईए पावहु। पहुंचहु जल थल प्रान बचावहु।
नतु भट तुरंग कितिक चिर लागै। मग महिं गमनति प्राननि त्यागैं ॥ १२ ॥
सूके ओठ[2] बदन कुमलावैं। भले नरन के अवि दिस आवैं।
'सुनहु कपूरा! कारज दोऊ। करने हुते अबहि हम सोऊ ॥ १३ ॥
भे म्रितु जथेदार सरदार। तिन की लोथन खोजि निकार[3]।
धरा[4] खनाइ[5] तिनहुं दफनावन। सकल जि मरे, न होंहि उठावन ॥ १४ ॥
कहां बात दफनावनि केरी। इक दुइ दिन की सभि क्रित हेरी।
दुतीए गुरू लोथ को खोजन। ए तुम जानहु बडो प्रयोजन ॥ १५ ॥
करिबो हुतो कहां अबि करै। बिना नीर ते क्योंहुं न सरै'।
तबहि कपूरे मसलत[6] दीनी। 'इह क्या बात रिदे तुम चीनी ॥ १६ ॥
जिन को कबरन महिं दफनाहहु। तिन के संग मिल्यो किम चाहहु।
गमनहिं शीघ्र जाम महिं जै हैं! पहुंचि नीर को प्रापत ह्वै हैं ॥ १७ ॥
सभि दिन महिं दफनाइ न जाइं। दूर दूर पर प्रान गवाइ।
नहिं इक थल उठाइ करि ले हैं। इह तौ काज[7] नहीं बनी ऐ हैं ॥ १८ ॥
श्री गुर गोबिंद सिंह हठीला। अभिलाखति नित रण की लीला।
सो भी निशचै नाहन भयो। कै रण हत्यो, कि निकसै गयो ॥ १९ ॥
तिन की लोथ न किन्हूं पाए। दूर दूर लगि इत उत[8] धाए।
अपने प्रान बचावन करीअहि। हटहु पिछारी मग[9] चलि परीयहि ॥ २० ॥
जेत्कि शसत्र उतारे जाहिं। कहु आइसु ले लशकर तांहि।
गाडे बीच कहां हुइ जाइ। परे धरा पर ही समुदाइ ॥ २१ ॥
फते[10] महान लीन जसुवारी[11]। भलो[12] हरन ही लखहु[13] पिछारी।
मरे सु मरे भिसत को गए। निमक हलाल[14] प्रान रन दए ॥ २२ ॥
जे नबाब जी! इम न करै हैं। बिन मारे सभि हम मरि जै हैं।
सुनति वज़ीद खान मन मानी। 'साच कपूरे बात बखानी ॥ २३ ॥
अहै चौधरी दानशवंदा[15]। हमरे हित की नीति भनंदा[16]।
इम कहि वाग तुरंगम[17] फेरी। चल्यो शीघ्र करि सभि को प्रेरी ॥ २४ ॥

1. सलाह की 2. होंठ 3. निकाल 4. धरती 5. खोदी 6. सलाह दी 7. कार्य 8. इधर-उधर 9. मार्ग 10. विजय 11. यश वाली 12. भला 13. जानो 14. नमक हलाल 15. बुद्धिमान् 16. कहता है 17. घोड़ा

म्रितु तौ तजे हुते तिस ठौरा[1]। घायल कहु भी छोरति[2] दौरा[3]।
बिन जल ते तरफति बहु मरे। बिन समरथ रण थल जे परे ॥ २५ ॥
हरखति रिदे बिचारति जाता। —अबि के श्री गुर कीनसि घाता।
जिन लाखहुं लशकर चढवाए। हति जहान महिं शोक उपाए ॥ २६ ॥
चिरंकाल लगि राखि लराई। मारन मरन कीनि समुदाई।
पूरब लर्यो पहारन महिं जबि। घात हनि ते लरति बच्यो तबि ॥ २७ ॥
अरु अरि रह्यो जंग मुख तोर। गयो सभिनि ते करि करि जोर।
सुनहु कपूरा आनंदपुरि मैं। रच्यो जंग करि आनंद उर[4] मैं ॥ २८ ॥
बाई धार रहे झख मारि[5]। सकल हराए जंग मझार[6]।
आदि केसरी चद गिरेश[7]। मारे बल करि जुद्ध विशेश ॥ २९ ॥
सो इस समे मार करि लीनि। फते खुदाइ हमहि को दीनि।
भीमचंद ते[8] आदि पहारी। जिसते बडे त्रास को धारी ॥ ३० ॥
करी पुकार शाहु के आगे। तीन लाख दल ले करि भागे।
हज़रत सुनति कोप[9] को धारा। जित कित ते पठि लशकर भारा ॥ ३१ ॥
ज़बरदसत हम सहति चढाए। कई लाख सैना उमडाए[10]।
आनंदपुरि को चहुंदिशि घेरा। निकसि वहिर करि जंग बडेरा[11] ॥ ३२ ॥
नहीं शिकसत कितहुं ते खाई। बान प्रहारे कोस अढाई।
अस गुर बडो बहादर चीनि। सो अबि मारि फते हम लीनि ॥ ३३ ॥
निकस्यो पुन अनंदपुरि छोरा। आवन लागि सु जंगल ओरा।
सगरो लशकर पर्यो पिछारी। तुरकाना हति पंथ मझारी ॥ ३४ ॥
रोपर लगि बचाइ सभि ल्याए। आगे कितिक कोस उलंघाए।
तहिं दस लाख सुभट पिखि लयो। आगे पाछे थल रुकि गयो ॥ ३५ ॥
निकट बिलोकि दुरग चमकौर। भयो मवासी द्रिढ़ तिस ठौर।
सो गुर अबहि मार करि लीनि। फते खुदाइ हमहुं को दीनि ॥ ३६ ॥
पुन चमकौर घनो रण घाला। मारे तीखन तीर कराला[12]।
सुनहु चौधरी ! लोथन ढेर। मारि करे गढ के चहुं फेर ॥ ३७ ॥
छुधावंति[13] चाली नर संग। कई लाख सों कीनसि[14] जंग।
लशकर के नर मूठी खाक। भरि इक मारहिं गढ को ताकि ॥ ३८ ॥

---

1. जगह 2. छोड़ कर 3. दौड़े 4. मन 5. यत्न करना 6. में 7. पहाड़ी राजा 8. और 9. क्रोध 10. उमड़कर आए 11. भयानक 12. भयावना 13. भूखे 14. के साथ

तौ पूरण करि देति दबाइ। किस महिं शकति जि रहि अटकाइ।
निकट न कोई पहुंचन दीनि। अति शै डर सभि के मन कीनि।। ३९ ।।

ख्वाज मरद से डरि डरि दबके। रहे दूर उर त्रासति सभि के।
अतिशै संहन घेरा पायो। निकसि गयो नहिं किन दरसायो ।। ४० ।।

उच को पीर बेख तन धारा। सनं सने मग बीच पधारा।
अनिक जतन ते पाइ न जोऊ। रण करि मारि लीनि हम सोऊ।। ४१ ।।

जिस को हज़रत निस दिन काँख्यो[1]। गहि लीजै कै मारन भाख्यो।
चिंता बसि हुइ लिखि बहु वारी। फते खुदाइ दीनि लिय मारी।। ४२ ।।

इत्यादिक हरखति बहु बात। करति कपूरे सों मग जाति।
जल सथान पिखि घाल्यो डेरा। बिन जाने जड़ मुदति बडेरा।। ४३ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**मुकतसर प्रसंग**' बरननं नाम एकादशमो अंशु ।। ११ ।।

---

1. चाहा

अंशु १२
मुकतिसर प्रसंग

दोहरा

तुरक शीघ्रता करि मुरे मुख करि पूरब ओर।
टिब्बी ते सतिगुर तुरत पहुंचति भे[1] रण ठौर[2] ॥ १ ॥

चौपई

करति शीघ्रता सर पर आए। उतरे तजि तुरंग सहिसाए।
जे जे मरे देखि तिन मुख को। बखशन लगे लोक जुग[3] सुख को ।। २ ॥
'बीस हज़ारी' 'तीस हज़ारी'। 'इस की हुइ लाखन सरदारी'।
'इतनं कदम अग्ग्र चलि एह। तिती अधिकता सुख की लेहि' ॥ ३ ॥
'होइ प्रिथीपति[4] भोगहि राजू। बिलसहि[5] ऐश्वरज पुंज समाजू।
'जस जस करि पुरशारथ मरे। तस तस बड प्रताप को धरे ॥ ४ ॥
पुन प्रलोक सुख बिलसहिं जाई। मम हित प्रान दीए इन आई'।
करहिं प्रेम बैठहिं तिन तीर। कहैं प्रसंसा 'इह मम बीर' ॥ ५ ॥
गहि कर महिं जामे को पाला। पौंछहिं मुख धरि प्रीत बिसाला[6]।
जथा पुत्र को पिता निहारहि। पौंछति अंगन गुननि उचारहिं ॥ ६ ॥
अश्रु पात लोचन ते डारहिं। पुन दूसर के पास पधारहिं।
बर को देति गरद को झारहिं। इति उत बिचरति सिंह निहारहिं ॥ ७ ॥
चत्वारिंस बिखै इक जीवति। घावन ते सहिकति म्रितु थीवति[7]।
शीघ्र समीप जाइ करि स्वामी। बैठि गए तहिं अंतरजामी ॥ ८ ॥
मंद मंद बहि जिस को स्वासा। लर्यो बहुत रिपु करे बिनाशा।
पुंज[8] घाव तन महिं लग रहे।—देहि दरस गुर—चित महिं चहे[9] ॥ ९ ॥
बैठि नाथ कर कमल सपरशा। दीनसि अप्प्रमेय उर[10] हरशा।
'महां सिंह अबि नैन उघारहु। चहति दरस चित, निकट निहारहु ॥ १० ॥

---

1. आए 2. ओर 3. दो 4. राजा 5. विलासिता 6. विशाल 7. होगा 8. बहुत 9. चाहता है 10. मन

तुझ पर हम प्रसंन बहु अहैं। सो अबि देंहि[1] चेहें जिस लहैं[2]।
घन सुर समसर गिरा गहीर। सुनि करि दरशन हेरि सु तीर ॥ ११ ॥
मुंद्रति लोचन तुरत उघारे[3]। अंत समैं पिखि करि निज प्यारे।
अतुलत[4] मोद[5] रिदे हुइ आयो। जनु बड[6] रोगी अंम्रित पायो ॥ १२ ॥
पुन गुर भन्यों 'मांग सिंह मेरे! जिस प्रकार की बांछा[7] तेरे।
वसतु अदय नहीं अस कोई। तुव जाचे[8] ते देयं न जोई ॥ १३ ॥
जग सभि राज सहित सुख जेते। जाचन करे देउं अबि तेते।
मुकति[9] चतुरधा[10] अहैं प्रलोक। जाचि लेहु प्यारे! बिन शोक ॥ १४ ॥
इस ते अपर वसतु कुछ नांही। जो नहिं देइ सकहुं तुझ पाही।
सुनि करि महां सिंह तबि भाखा। 'प्रभु जी! अबि न रही अभिलाखा ॥ १५ ॥
अंत समैं पिखि दरस तुहारा। उपज्यो रिदे अनंद उदारा।
सकल बाशना पूरन करी। रावर की मूरति उर धरी ॥ १६ ॥
श्री मुख क्रिपा करति पुन कह्यो। 'तुमरो करम सु उत्तम लह्यो।
करहु जाचना अवहि ज़रूरि। जिस विधि की बांछा उर भूर ॥ १७ ॥
जीवन अपनो जे अभिलाखहिं। करहिं जिवावन प्रानहिं राखहिं।
जानि लिहो अस खुशी हमारी। हित देवन के चौंप उदारी ॥ १८ ॥
बचन न फेरहु; मानहुं कह्यो। जाचि लेहु जैसे चित चह्यो।
दे कर हम अनंद को मानहिं। यांते बारहि बार बखानहिं ॥ १९ ॥
बखशिश बखशहिं तुमहिं न जावद[11]। नहिं आनंद हमरे हुइ तावद'[12]।
महां सिंह सुनि रिदे बिचारी। —प्रभु कै उपजी खुशी उदारी ॥ २० ॥
लिखि करि गए बिदावा जोइ। इस छिन नहीं कोप[13] मन सोइ।
सगरे देश कुकरम कमावा। सतिगुर त्यागे त्रास उठावा ॥ २१ ॥
जिस के वाक तनक ही कहे। नरक कि सुरग तुरत ही लहे।
सूके भरे भरे शुशकावैं। कबहूँ कह्यो निफल नहिं जावै[14] ॥ २२ ॥
अस समरथ तजि करि गोसाईं। रणि लरिबे ते उर भरमाई[15]।
होइं भविक्खत महि नर जेते। इस क्रित को दुख पैंहे तेते ॥ २३ ॥
बुरा देश सगरे का भयो। करि मूरख मति जो लिखि दयो।
परउपकार महातम महां। सुन्यो संत जन ते जहिं कहां ॥ २४ ॥

---

1. देता हूं 2. माँगे 3. खोले 4. अतुल्य 5. हर्ष 6. भयानक 7. इच्छा 8. याचना करे 9. मोक्ष 10. चार प्रकार की 11. जाना 12. तब तक 13. क्रोध 14. जाता 15. मन फेर लिया था

इक पर करे अधिक कल्ल्यान। बनहि देश पर फलहि महान।
लाखहुं सिक्ख गुरू के होइं। भोगहिं राज धरा पर सोइ॥ २५॥
सभि पर मुर होवै उपकारा। इस सों अधिक न अपर बिचारा।
सो कागद अबि पारन[1] करैं। सभि सिक्खनि को गुरू सभरैं[2]॥ २६॥
इह जाचौं मैं—भले बिचारा। महां सिंह गुर संग उचारा।
'मद्धर देश की संगति हुट्टी। प्रभु जी रावर के संग टुट्टी॥ २७॥
बर दैंवे जे मुझ इछ धारी। तौ करि करुना मेलहु सारी।
सो सिख होहिं गुरू तुम रहो। श्री मुख ते अबि इहु बर कहो'॥ २८॥
प्रभु बोले 'टूटी सु निखुट्टी। क्यों मेलहु तिह जो डरि हुट्टी।
अपने हित जाचहु[3] कुछ औरी[4]। दिउं ततकाल खुशी लखि मोरी'[5]॥ २९॥
महां सिंह कर जोरि उचारे। 'पातिशाहु सुत सेवक सारे।
भूलहिं बहु अपराध कमावैं। तऊ पिता मन कोप न ल्यावैं॥ ३०॥
अपनो जानि बखश तिस देति। दे सिक्खया पुन करैं सुचेत।
जो मुझ कौ दैबौ बर चहो। —टूटी मेल लेहुंबच कहो॥ ३१॥
इस बिन इच्छा मोहि न और। देहु आप सोढी सिरमौर[6]'।
साहिब सुने अजाइब बैन[7]। भरे अनंद प्रफुल्लति नैन[8]॥ ३२॥
'वाहु खालसा सिख मम धंन। परउपकारि महां मन मंन।
तेरे कहे मेल हम लए। राज भाग तिस देशहिं दए'॥ ३३॥
'प्रभु जी कागद लहु निकारा[9]। हमरा लिख्यो जेब जो डारा।
मम दिखाइ सो दीजै फारि[10]। सफल होइ मेरो उपकार'॥ ३४॥
सुनि सतगुर ततकाल निकासा। महां सिंह सों वाक प्रकाशा।
'लिहु बिलोकि पाड़हिं दिखराइ'। इम कहि चीर्यौ बीच बनाइ॥ ३५॥
हरति हरखमान उर होवा। 'कागद फट्यो दरस गुर जोवा।
आइसु देहु प्रलोक सिधावौं। दरशन करति अधिक फल पावौं'॥ ३६॥
'जाहु महां सिंह ! जहिं मम लोक। बसहु सदा कबि नहिं तहिं शोक।
दे करि प्रान कौन उपकार। तिस को फल तुहि भयो अपार'॥ ३७॥
सतिगुर वचन होति भा[11] जबै। महां सिंह तन त्याग्यो तबै।
प्रभु पिखि इत उत झाड़ उजाड़। बोले श्री मुख 'सुनहुं बिराड़ !॥ ३८॥

---

1. फाड़ दो 2. ध्यान करे 3. इच्छा करे 4. किसी और वस्तु की 5. मेरी 6. श्रेष्ठ 7. वाक्य 8. प्रसन्न आंखें 9. निकालो 10. फाड़ दो 11. पूरे

चाली सिंहनि लोथ उठावो। इंधन गन बटोर करि ल्यावो।
इक थल दीरघ चिता बनावहु। ससकारहु सभि बिलम[1] न लावहु' ॥ ३९ ॥
जे संगी, सुनि कै ततकाला। सूक काशट संचि बिसाला।
बीन बीन सिंहन कहु आना। पर्यो समूह मर्यो तुरकाना ॥ ४० ॥
लरे मरे मिलि तिन महुं परे। जहिं संग्राम खेत बड करे।
बहु सिंहन ततकाल उठाए। बडी चिता के बीच टिकाए ॥ ४१ ॥
ऊपर समधा धरि समुदाई। करि अगनी परज्वलति लगाई।
आप खरे सतिगुर तहिं भए। भसम देह सगरे करि दए ॥ ४२ ॥
महिमा अधिक सरोवर केरी। श्री मुख ते बरनी बहुतेरी।
'जहिं रिखि एक साध तपु मरै। —पुंन सथान तांहि जग ररै[2]— ॥ ४३ ॥
इस थल सिंह सिदक बहु बडे। लरि तुरकनि मन तन सभि छडे।
मक्र[3] संकरखण[4] अरकी[5] होइ। आन शनानहि[6] जे नर कोइ ॥ ४४ ॥
मनो कामना प्रापति सोऊ। पाप करे गन बय सभि खोऊ[7]।
बंदहि[8] गंज शहीदन[9] केरा। धन देवहि, नित वधहि वधेरा ॥ ४५ ॥
अबि ते नाम मुकतिसर होइ। खिदराणा इस कहै न कोइ।
इस थल मुकति भए सिख चाली। जे निशपाप घाल बहु घाली ॥ ४६ ॥
यांते नाम मुकतिसर होवा। जो मज्जहिं[10] तिन ही अघ[11] खोवा'।
अस महिमा श्री मुख ते कही। सो अबि प्रगट जगत मैं सही ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**मुकतिसर प्रसंग**' बरननं नाम द्वादशमों अंशु ॥ १२ ॥

---

1. देरी 2. रटन 3. राशि है 4. संक्रांति 5. सूर्य 6. नहाए 7. पाप नष्ट हो जाएँगे 8. बनेगा 9. शहीद गंज 10. नहाना 11. रोग

अंशु १३

साध मिलन प्रसंग

दोहरा

दाह करे सिख खरे गुर, एक सिंह तबि आइ ।
हाथ जोरि बोलति भयो 'नारि परी इक थाइं ।। १ ।।

चौपई

लखियति लरी संग तुरकाने । केतिक घाउ लगे तन जाने ।
रही जीवती बिह्बल नांही । श्री प्रभु आप देखीअहि तांही' ।। २ ।।
सुनि गुर मंद मंद मुसकाए । गमने तहिं सिख करि अगवाए[1] ।
झारन[2] बीच परी पट[3] फट्टे । केतिक शसत्र लगे पल कट्टे ।। ३ ।।
जाइ खरे सतिगुरू निहारी । श्री मुख ते मुसकाइ उचारी ।
'पुत्तां कारण आई अहि पीरी : सुथ्थण लाहि लई बेपीरी' ।। ४ ।।
इम कहि करुना द्रिशटि निहारी । तन घावन की पीर बिदारी ।
'उठि तु चलीअहि संग हमारे । चहैं मनोरथ पुरवें[4] सारे' ।। ५ ।।
सुनि करि उठी बंदना[5] ठानी । अधिक अनंदति गिरा[6] बखानी ।
'जबि माझे ते सिख गन चले । रावर[7] के दरशन हित मिले ।। ६ ।।
तबि मैं सुत की धरि उर आसा । पहुंची आइ तुमारे पासा ।
इहां लरन को कारन हेरा । गुरे हित उमक्यो हीय[8] घनेरा ।। ७ ।।
मिलि सिंहन के संग इथाईं । तुरकन साथ मचाइ लराई ।
हुती सांग गरवी कर मेरे । दुशमन आनि ढुक्यो जबि नेरे[9] ।। ८ ।।
बल ते हती परोवन कीना । ऐंचि[10] तुरंग[11] ते डारि सु दीना ।
अपर[12] आनि कै खैंचि क्रिपान । इक दुइ वार करे बल ठानि ।। ९ ।।
रावरि दे करि हाथ बचाई । अबि बांछा मुझ रही न काई ।
सतिगुर संग रहौं नित अबै । जगत कान की लज तजि सबै' ।। १० ।।

---

1. के साथ 2. झाड़ियों में 3. कपड़े 4. पूरे करें 5. विनय 6. दुःख भरी कहानी कही 7. आपके 8. किया 9. पास 10. ज़ीन 11. घोड़ा 12. अवर

बिकसे[1] सतिगुर बाक उचारा। 'भलो मनोरथ तैं उर धारा।
जनम मरन ते अबि छुटि जैहैं। लोक लाज को त्यागन कैहैं' ॥ ११ ॥
इस प्रकार करिकै क्रित सारी। महां सिंह की बात चितारी।
—कीनो महां सिंह उपकारा। अपर न लीनसि रहे उचारा ॥ १२ ॥
मेल लई टूटी सभि संगति। भए प्रवेश गुरू की पंगत —।
संगी सभिनि सुनाइ बखाना। 'भलो काज कीनसि हित ठाना ॥ १३ ॥
गुर सिक्खी की बड बुनिआद। बिगरी गई हुती सो बाद।
बहुर मिलिनि को वखत न कोई। प्रान देनि लौ कबि क्रित होई ॥ १४ ॥
पुन ऐसो होवनि उपकारी। तजि निज हित इह बात सुधारी।
गुर सिक्खी रक्खी तिस देशू। हुते कदीमी[2] सिक्ख अशेशू ॥ १५ ॥
श्री गुर नानक आदिक और। बिचरे बसे अधिक तिस ठौर।
सहे नहीं कसवट्टी अबि की। खारज सिक्खी कीनसि तबि की ॥ १६ ॥
महां सिंह बनि महां सिंह अबि। बर लै देश उधार दयो सबि'।
इम श्री प्रभु बहु बार उचारी। टूटी मेलन बात चितारी ॥ १७ ॥
भूत भविक्ख विचार प्रसंग। भए अनंद प्रभू सरबंग।
खाना गयो कपूरे पास। गुर की गति नहिं करी प्रकाश ॥ १८ ॥
तूशन ही लशकर महिं रहै। बिदतहि गुरू आप ही लहै।
थल जल हीन जानि गुन खानी। चलिबे हेतु चह्यो अगुवानी ॥ १९ ॥
राखे चाकर जे वैराड़। 'चलहु अग्ग्र तुम पिखी उजाड़।
निरमल जल को थल जित पावहु। चलहु शीघ्र तहिं सिवर टिकावहु' ॥ २० ॥
इम कहि तोरि तुरंगम चले। इक सराइ हेरी थल भले।
तहीं सरोवर सुंदर हेरा। तिस के तीर कर्यो गुर डेरा ॥ २१ ॥
जहिं कहिं उतरि तुरंग लगाए। त्रिण काशट[3] इकठे करिवाए।
बिचरति भए सिंह जहिं कहां। एक साध को आश्रम तहां ॥ २२ ॥
बूझनि लग्यो सवकनि सोई। 'परले तीर ताल के होइ।
उतर्यो कौन बोल सुनीअंते ? कित[4] ते आइ कहां गमनंते[5]' ? ॥ २३ ॥
तिस के दासन दयो बताई। 'गुरू मरेला उतर्यो आई[6]।
तुरकनि संग जंग करि भारे। केती बार हज़ारहुं गारे' ॥ २४ ॥
सुनति साध बूझन लगि फेरी। 'आरबला[7] केती गुर केरी ?
केतिक सिख सेवक हैं संग। उतर्यो आन करति ही जंग' ॥ २५ ॥

---

1. प्रसन्न हुए 2. प्राचीन 3. पत्ते आदि 4. कहां 5. जाना है 6. तुर्कों को मारने वाला गुरु 7. आयु

तहां सिंह सो बिचरति गए। बूझी बात बतावति भए।
'बरस तीस ते ऊपर चरे। चाली संमत के लखि तरे ॥ २६ ॥
सुनति साध तरकति कहि बैना। 'तिस गुर ते हम ने क्या लैना।
सधी साधना होइ न कोई। शांति समेत नहीं चित होई' ॥ २७ ॥
तिस को कह्यो सिंह सुनि आए। तरक रिदे करकति[1] खुनसाए।
मिले आनि जबि सतिगुर पास। कही साध की करी प्रकाश ॥ २८ ॥
सुनि गुर कह्यो 'साध बहु दिन को। आरवला गुमान[2] बहु मन को'।
कितिक चेलका[3] तिस कें आइ। —दरशन करहिं – थिरे तिस[4] थांइ[5] ॥ २९ ॥
तबि सिक्खनि बूझ्यो प्रभु साथ। 'बैस[6] साध की केतिक नाथ!।
जिसको करि गुमान बहु रह्यो। तरकति रावर को वच[7] कह्यो' ॥ ३० ॥
गुर कहि 'पंच हज़ारन बरस। खट वीहां उपर भे सरस[8]।
स्वास टिकाइ समाधि लगावै। बैमे[9] संमत[10] कितिक बितावै ॥ ३१ ॥
कबि कबि तजन समाधी करै। बोल[11] बिलोकहि[12] इत उत फिरै[13]।
सुनति चेलका बहु बिसमाए। अपने गुरू साध ढिग आए ॥ ३२ ॥
'हे महंत जी! सिख सुनि गए। तुमरी कही बतावति भए।
बिकसि बदन ते गुरू बखानी[14]। —आरवला को साध गुमानी— ॥ ३३ ॥
सिंहनि बूझी बैस तुमारी। सो सगरी ततकाल उचारी।
—पंच हज़ार छिबीहा और—। हम ने सुनी हुते तिस ठौर' ॥ ३४ ॥
कहति साध आचरज समेती। 'इकि बैस महिं, सोझी एती।
सकल कला समरथ गुर पूरा। करन उचित तिन दरशन रूरा' ॥ ३५ ॥
उठ्यो तुरत ले हाथ सटोरी। सने सने गमन्यों प्रभु ओरी।
आगै गुर को लग्यो दिवान। करति सिंह रहुरास बखान ॥ ३६ ॥
निकट पहुंचि करि ठांढो रह्यो। श्री प्रभु तिस बिलोकि करि कह्यो।
'साधो बैठि जाहु क्यों खर्यो'। सुनति प्रनाम गुरू को कर्यो ॥ ३७ ॥
बैठि गयो सिंहनि महिं मिलि करि। सुनति रह्यो रहिरास प्रेम धरि।
जबि अरदास भोग[15] परि गयो। साध जोरि कर उचरति भयो ॥ ३८ ॥
'चरन कमल सों मोहि लगावहु। सिक्ख करहु निज रूप बुझावहु।
तुमरे दरशन पर बलिहारी। सकल कला समरथ गुन भारी' ॥ ३९ ॥

---

1. करता है 2. अभिमान 3. शिष्य 4. उस 5. जगह 6. विवाद 7. वचन 8. पाँच हज़ार एक सौ बीस 9. बैठै 10. समय 11. बोलता 12. देखता है 13. इधर उधर फिरता है 14. कहा 15. समाप्त

बिकसि बदन ते श्री प्रभु कहैं। 'तूं तो आगे ही सिख अहैं।
केवल[1] के साधन बहु साधे। अधिक समाधि अगाध[2] अराधै ॥ ४० ॥
करहु अकाल पुरख को बंदन। बंदन होवैं बंधुनि कंदन[3]'।
इम कहि क्रिपा द्रिशटि प्रभुहेरी[4]। रिदे प्रकाश भयो तिस बेरी ॥ ४१ ॥
बारि बारि बारज पद[5] बंदति। लखि गुर महिमा रिदे अनंदति।
बहुर साध कहि शरधा सेती[6]। 'एतिक बैस रु सोझी एती ?' ॥ ४२ ॥
सुनि करि श्री सतिगुरू बखाना। 'तुमहुं गोदड़ा रख्यो पुराना।
पोशिश[7] नई जिनहुं कर पावै। ले सो पहिरहिं अंग सुहावैं' ॥ ४३ ॥
बंदन करति साध थिर भयो। तबि सिंहनि गन बूझनि कयो।
'तुमरी बय महिं समे घनेरे। कहो प्रसंग जथा के हेरे' ॥ ४४ ॥
इक ब्रितंत तबि साध सुनायो। 'सुनहु समा जैसे दरसायो।
बासुर एक समाधि उघारी। नहीं बिलोकति भा नर नारी ॥ ४५ ॥
इक दुइ मजल[8] गयो मैं जबिहूं। को इक मनुज निहार्यो तबिहूं।
तिन सों बूझनि कीनि ब्रितंत। —कहां भयो नरु नहीं दिखंति ? ४६ ॥
—भा दुरभिच्छ गए मरि घने। को को रहे किसू थल बने।
द्वादश संमत पर्यो बिसाल। अबि बरखा ते भयो सुकाल ॥ ४७ ॥
सने सने नर पुन जग भए—। ऐसे समे बीत बहु गए।
कई बार लरि लरि बहुमरे। कई बार उजरे[9] बस[10] परे ॥ ४८ ॥
कबि कैसे कबि कैसे समें। जग मैं करे बिलोकन हमे'।
सुनि गुर खुशी साध पर करी। गरबादिक दुबिधा उर हरी ॥ ४९ ॥
मसतक टेकि आश्रम महिं गयो। खान पान सतिगुर तबि कयो।
सुपति जथा सुख निसा बिताइ। सौच शनान प्राति हुइ आई ॥ ५० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'साध मिलन प्रसंग'** बरननं नाम त्रौदसमों अंशु ॥ १३ ॥

---

1. मुक्ति 2. ईश्वर 3. नष्ट होंगे 4. प्रभु की 5. चरण कमल 6. से 7. पोशाक 8. स्थान 9. उजड़े 10. बसे

अंशु १४
तीतर प्रसंग

दोहरा

डारि हयनि[1] पर ज़ीन तबि भए सतिगुरू त्यार।
चढ़े सिंह बैराड़ गन चले उजार उजार ॥ १ ॥

चौपई

नौथेहे जबि श्री प्रभु गए। तहिं के नर गन आवति भए।
हाथ जोरि तिन अरज[2] गुज़ारी। 'आप चमूं[3] हज़रत की मारी ॥ २ ॥
इस थल कीजै नहीं मुकामू। उतरो जाइ आगले ग्रामू।
बिनती सहित आप को कहैं। हज़रत ते त्रासति[4] नित रहैं' ॥ ३ ॥
तिन पर क्रिपा करति चलि परे। जाइ मजल[5] सिर डेरा करे।
फत्तो संमू ग्राम अगारे। खरे तुरंग[6] करि ज़ीन उतारे ॥ ४ ॥
सहिज सुभाइक ठांढे बिचरति। सिवर लगे को हेरति उत इत।
तिस छिन पुंज हरीके[7] आए। लुंङी खेस भेट हित ल्याए ॥ ५ ॥
कर पर धरि करि अग्ग्र दिखाई। कीन बंदना ग्रीव[8] निवाई।
'एह प्रभु जी ! सभि ग्राम हमारे। धंन भाग भे दरस निहारे' ॥ ६ ॥
पिखि लुंङी सतिगुरू उठाई। कट तट के लपेट चहुं घाई।
बहुर खेस को खोलि बिसाले। द्वै सिकंध द्वै छोरनि डाले ॥ ७ ॥
बेस बनाइ बेश तिस देश। खरे भए गुर फबे[9] बिशेश।
मान सिंह श्री प्रभु सन भन्यो। 'इह तनखाह उचित क्रित जन्यों' ॥ ८ ॥
मुसकावति मुख श्री प्रभु भनैं। 'नितहि सुचेत खालसा बनैं'।
पुन गुर कह्यो 'देश तस भेस। लुंङी तेड़[10] सु मोढे खेस' ॥ ९ ॥
हेरि हरी के राहक दिश को। कीनि उचारन आइसु अस को।
'निस महिं चहुं दिशि रहहु हमारे। जाग्रत बिचरहु होति सकारे ॥ १० ॥

---

1. घोड़े 2. विनय की 3. सेना 4. डरते 5. स्थान 6 घोड़े 7. हरीके एक गोत्र है 8. सिर 9. सुंदर लगने लगे 10. नीचे

सावधान बनि शसत्रनि धारी। पहिरा दीजै जामनि सारी'।
मत्त हरी के सुनति बखानै[1]। 'इहां[2] न हम किस ते डर मानैं॥ ११॥
तुम भी नहि कीजो चित शंका। सुपतहु निस महिं हीन अतंका'।
पुन गुर बोले 'कार[3] ज़रूर[4]। पहिरा दैबो बनहिं हज़ूर'॥ १२॥
मूढनि बहुर न मान्यों बैन। 'हमरे ग्राम त्रास किस है न।
सुपति जथा सुख राति बितावहु। नाहिन को शंका मन ल्यावहु॥ १३॥
[illegible]
[illegible] १४॥
जे चाकर बैराड़ घनेरे। राठ धाड़वी[6] सम हम हेरे।
प्रेम न मन महिं. भै नहि मानैं। अपनी इच्छा कारज ठानैं'॥ १५॥
सुनति हरी के गुर की बात। मानी 'पहिरा दें हम राति'।
मसतक टेकि गए निज डेरे। डोगर[7] दास हुते तिन केरे॥ १६॥
तिन के साथ सु गिरा उचारी। 'गुर ढिग पहुंचहु निज निज वारी।
पहिरा दीजै जाग्रत रहीअहि। सगरी निस नहि निंद्रा लहीअहि'॥ १७॥
सतिगर करि कै खान रु पान। सगल सिंह सुपते सुख ठानि।
डोगर आइ गुरू ढिग ठहिरे। चहुं दिशि खरे भए हित पहिरे॥ १८॥
पहिर जामनी[8] बीती जबै। श्री मुख ते ऊचे कहि तबै।
'खरो हरी का जाग्रत कोई? पहिरा देनि आइ कि न कोई?'॥ १९॥
कहति भए 'हम डोगर आए। हित पहिरे के तिनहुं पठाए।
सभि जाग्रति हैं बनि सवधान। सुपतहु आप गुरू भगवान्!'॥ २०॥
बखशिश कर्यो चहत हैं कोई। भाग बिना किम प्रापति होई।
आधी राति ब्रिती जबि जानी। ऊची धुनि ते प्रभू बखानी॥ २१॥
'आइ कि नहीं हरी का कोई? हित सझी लैबे इत सोई'।
'हम डोगर ठाढे तिन दास। पहिरा देति जागते पास॥ २२॥
सो निस बिखै हांति मद पानी। सुपते सदन बिखै सुख ठानी।
दास तिनहुं के तथा तुमारे। हम सवधान खरे अबि सारे'॥ २३॥
पुन तूशनि हुइ राति बिताई। जाम रही जबि कह्यो गुसाईं।
'आइ कि नहीं हरी का अबै। लैवे हित पहिरे सुधि सबै'॥ २४॥
पुन डोगर बोले 'हम अहैं। पहिरा दें, सवधानी रहैं।
इस छिन कौन हरी का आवै। पी पी मद घरि महिं सुपतावै[9]॥ २५॥

1. कहा 2. यहां 3. कार्य 4. आवश्यक 5. भाँग 6. आक्रमणकारी
7 डाकू, लुटेरे 8. रात्रि 9. विश्राम

हम हजूर रावर के खरे। आग्या[1] देहु तथा अबि करें।
सेवा करि हैं सरब प्रकारी। हम डोगर सगरे अनुसारी'॥ २६ ॥
सुनि करि बिनै समेत क्रिपाला। दीनसि बर तिन को ततकाला।
'बसदे[2] रहहु तीर[3] इसनई[4]। नई चौध्रता तुम को दई॥ २७ ॥
नैं के तीर तीर जो देश। होइ तुहारो देश अशेश'।
सुनि क्रिपाल ते बखशिश बानी। निकट आइ सभि वंदन ठानी॥ २८ ॥
'रावरि के बच सदा सथिर हैं। देखि दीन को बखशन करि हैं'।
तबि ते दिन प्रति डोगर देश। सने सने हुइ गयो अशेश॥ २९ ॥
मूढ हरी को सकहि न लेय। गुर चित चहति रहे कुछ देय।
सौच शनान ठानि करि फेर। चढि प्रभु चाले होति सबेर[5]॥ ३० ॥
केतिक कोस उलंघ करि गए। बिच[6] उदिआन[7] उतरते भए।
बद्द्री वडो तरोवर खर्यो। तिस के तरे सिवर[8] गुर कर्यो॥ ३१ ॥
एक राति तहिं बसे बिताई। प्रभु पुन चढे प्राति हुइ आई।
केतिक कोस कीनि प्रसथाना। जाइ पहूंचे तबि इक थाना॥ ३२ ॥
ग्राम वजीद पुरे तिस काला। सैन समेत सिवर को घाला।
उतरे वंध[9] तुरंगम[10] दए। सिंह गुरू ढिग[11] आवति भए॥ ३३ ॥
'पातशाह ! इत आवन करे। पहुंचे इहां कुसूरहि तरे।
बजहिं नौबतां[12] इस पुरि बाई। बसे पठान चमू[13] समुदाई'॥ ३४ ॥
श्री मुख ते फुरमावन कर्यो। 'तुरकन तेज भविक्खत हर्यो।
काने काछे ग्राम बडेरे। तहिं उपजहिंगे सिंह घनेरे॥ ३५ ॥
बहुत नौबतां बजैं हमारी। केतिक दिन महिं तिनहुं मझारी'[14]।
इम बतरावति तिस थल खरे। तीतर इक अवाज़ तबि करे॥ ३६ ॥
सुनि क्रिपाल भाख्यो तिह समै। 'जां बोल्यो तां लद्धा हमैं'।
हय पर तबि आरोहनि होए। कीनि पयान शीघ्र सु जोए॥ ३७ ॥
छोड्यो तिस के बाज पिछारे। करी न झपट न तिस को मारे।
पुन कहि करि कूकर छुटवाए। पिखि तीतर को पीछे धाए॥ ३८ ॥
झारन बिखै जाइ करि बर्यो। बहुर निकार्यो उडिबो कर्यो।
पीछे केतिक सिंहनि साथ। चले जाहिं तूरन जगनाथ[15]॥ ३९ ॥

---

1. आज्ञा 2. प्रसन्नतापूर्वक रहो 3. किनारे 4. नदी 5. प्रातःकाल 6. में 7. बाग 8. शिविर 9. बांध 10. घोड़े 11. पास 12. नगारे 13. फौज 14. में 15. जगत के स्वामी

करति बेग ते जाइ उडारी। थकति छपहि पिखि झारन झारी।
बहुत बिलोकहिं खोजन करैं। निकसति ही उड करि चलि पेरै ॥ ४० ॥
दब कहि बहुर थांइ को पाइ। झारी झारनि झारहिं जाइ।
कई कोस इस बिधि चलि गए। थकति तुरंगम भी तबि भए ॥ ४१ ॥
पकर्यो जाइ जतन बहु करिकै। कहि करि पर उखराइ सुधरिकै।
पुन छुरवायहु तीतर आगा। बाज जियत को भक्खनि लागा ॥ ४२ ॥
तोरि तोरि आमिख तिस केरा। खाइ जाति दे कशट बडेरा।
अपनि हजूर खुलावहिं खरे। पल बोटी काटति भखि करे ॥ ४३ ॥
दान सिंह बोल्यो पिखि ठाढे। 'आप प्रभू तुम तो बड डाढे।
कोइ न कुछ कहि साकहि कैसे। अबि डाढी क्रित कीनसि जैसे ॥ ४४ ॥
इतनी कीनि दौर इस बेरा। कहां शेर को हेरि अखेरा।
इक तीतर के धाइ पिछारे। दिए हुसाइ तुरंगम सारे ॥ ४५ ॥
जे शिकार की चाह करंते। तीतर सहे अनेक हनंते'।
श्री मुख ते कहि तिह समुझायो। 'दान सिंह! सुनीअहि जिम घायो ॥ ४६ ॥
नहीं चाहु कुछ करनि शिकारा। इस लगि कारज हुतो हमारा'।
आशै जटि गंभीर सुनि परे। दान सिंह पुन बूझन करे ॥ ४७ ॥
'पातिशाहु! दिहु सकल सुनाए। किस कारन ते एतिक धाए?'
श्री मुख कह्यो 'सुनहु इस काज। तीतर जाट बाणीआं बाज ॥ ४८ ॥
पूरब जनम हुते नर एही। जाट करज़ ले बनीए ते ही।
अपर ग्राम महिं बस्यो सु जाइ। बनीए गह्यो लग्यो कबि दाइ ॥ ४९ ॥
--दरब[1] दिए बिन तजौं न तोही। दग़ा[2] गयो करिकै संग मोही—।
जाट कहै—अबिकै दिहु छोरि। देवौं लगि बिराटका तोर— ॥ ५० ॥
सुनि बनीआ कहि—ज़ामन दीजै। छुटि करि जाहु सदन[3] मग[4] लीजे।
कहै जाट—को जामन[5] मेरो? गुर बिन इह ठां आन न हेरों— ॥ ५१ ॥
सुनि बनीआ कहि—धरम रखीजै। गुर को ही जामन करि दीजै।
मुझ को दे जामन छुटि गयो। नहिं धन दियो, म्रितक पुन भयो ॥ ५२ ॥
अहै बाज को पूरब[6] ग्याता[7]। हमरो हाथ सपरसे गाता।
नहिं तीतर को इस ने मारा। लै हौं जामन ते निरधारा ॥ ५३ ॥

1. धन 2. धोखा 3. घर 4. मार्ग 5. गवाह 6. पूर्व 7. जानने वाला

हमने अपनि जामनी लाही। जियति दियोगहि वढि वढि खाही'[1]।
सुनि करि दान सिंह कर जोरे। पर्यो चरन पर प्रभू निहोरे ॥ ५४ ॥
'सनमुख बोल्यो हे गुर भूला। बखशो मोहि दास अनकूला'।
'दान सिंह क्यों चित अधीन। उत्तर ही तैं बूझन[2] कीन' ॥ ५५ ॥
दान सिंह पुन मसतक टेका[3]। तुमरी खुशी चहैं[4] इह एका।
चढि तहिं ते पहुंचे निज डेरे। खान पान कीनसि तिस बेरे ॥ ५६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'तीतर प्रसंग'** बरननं नाम **चौदसमो** अंशु ॥ १४ ॥

---

1. जीते का मांस काट काट कर खा रहा है 2. जानना 3. नतमस्तक हुआ
4. में

अंशु १५

जोगी प्रसंग

दोहरा

निस बिताइ करि सतिगुरू कीनो सौच शनान।
ज़ीन हयनि[1] पर पाइ करि चढे कियो प्रसथान ॥ १ ॥

चौपई

सतिगुर घोरे की त्वै मेख[2]। लगी रही तिस थान अशेख।
जंड हरे सो होवति भए। अबिलौ[3] खरे पिखे[4] जो गए ॥ २ ॥
सिख संगति तहिं बंदन करै। तिन को दरशन भी अघ हरै।
इम श्री प्रभु बिचरति फिरि आए। पहुंचि मुकतिसर सिवर[5] लगाए ॥ ३ ॥
—होइ भविख्खत महिं इह महां। सिक्ख शनानहिं फल को लहा ।
खान पान करि निसा बिताई। सौच शनाने कीनि चढाई ॥ ४ ॥
[illegible] रुपाणे चलि करि आए। उतरे तहां [illegible] तुरंग [illegible] लगाए।
सुक्खा अरु अफीम छकि करिकै। बिचरति इत उत धनु सर धरिकै ॥ ५ ॥
थल उतग इक घोगड़ हेरा। तीर मारि तिस को हति गरा।
जोरा सिंह खरो तबि पासी। 'प्रभु जी घोगड़ कीनि बिनाशी ॥ ६ ॥
इह क्यों हत्यो काम नहिं ऐहै। इम ही पर्यो रहै, को खैहै ?
इस के मारन को क्या कारन ? पातशाहु प्रभु कहहु उचारन'। ७ ॥
श्री मुख ते कहिके समुझायो। 'सौ तनु घोगड़ को इन पायो।
प्रथम न्रिपति थो जुकत जमय्यत[6]। सिक्ख ग़रीब एक इस रय्यति ॥ ८ ॥
बसते केतिक समा बिताए। इक दिन सिख के मन इम[7] आए।
गुर हित चाह्यो करनि अहारा। सकल भांति सों कीयसि त्यारा ॥ ९ ॥
सिक्खनि को निउंदा[8] तिन दीयो। न्रिप भी सिक्ख थो[9] धामा लीयो[10]।
सभि को मेल भयो तबि आइ। करि अरदासहिं भोजन खाइ ॥ १० ॥

---

1. घोड़े 2. लकड़ी का खूंटा 3. अब तक 4. देखे 5. शिविर 6. सेना के साथ 7. यहां 8. निमन्त्रण 9. था 10. खाना खाया

सिख की सुता अवसथा तरूनी। सो राजा पिखि कै मन हरनी।
अपने सदन गयो निस परी। न्रिप नर पठे हकारनि करी॥ ११॥
सिख ने लखी नरेश खुटाई। परम दुखी भा बस न बसाई।
देखि पिता को पुत्री कहै। —क्यों नाहक एतो दुख लहैं॥ १२॥
मोहि साथ न्रिप निकट चलीजै। गुरू करै सुख, चिंत न कीजै—।
लै करि पिता गई ढिग राजे। कहै कि ऐबे समो न आजे॥ १३॥
दिवस आगले मैं चलि आवौं। बिना बुलाए, नहिं ठहिरावों।
अपनो नर नहिं करो पठावन। रचों अधरम अधिक दुख पावन॥ १४॥
सुनि राजा कहि—छल नहिं करीअहि। त्रिआ चरित्र न कछू बिचरीअहि।
होहिं कूर[1] करिबे बच तोही। तौ सज़ाइ ह्वै आइसु मोही—॥ १५॥
कहिन लगी—मैं रहौं न काली। तौ सज़ाइ किम होइ बिसाली—।
इम कहि पिता संगि हटि आई। निस महिं बिख ले करि तिस खाई॥ १६॥
मरन समें दीनो इम स्राप। —इह महीप पापी संताप।
राज करन के लायक नांही। घोगड़ तन पावहु बन मांही॥ १७॥
रहहु इकांकी संग न कोई। करन पाप पै हो फल सोई—।
इम कहि प्रान तजे ततकाला। केतिक दिन महिं भा न्रिप काला॥ १८॥
एक सौ देहि जनम अस धारे। घोगड़ होति, रह्यो निरधारे।
निज सिख लखि कै अबहि उधार्यो। जबि प्रसंग प्रभु सरब उचार्यो॥ १९॥
जोरा सिंह आदिक ढिग जेते। बिसमै 'धंन धंन' कहि तेते।
निस महिं खान पान सभि कर्यो। सुपते बहुर दिवन पुन चर्यो॥ २०॥
जीन तुरंगन[2] पर तबि डारे। हुइ अरूढि प्रभु पंथ पधारे।
सैना संग ब्रिराड़न केरी। चाकर राखे गुरू अगेरी॥ २१॥
सुनि सुनि सुधि को सिंह जुझारे। आइ मिलहिं गुर दरस निहारे।
अधिक भीर[3] दिन प्रति हुइ साथ। बिचरति आरोहे नित साथ॥ २२॥
केतिक[4] कोस उलंघति गए। डेरा पहुंचि थेहड़ी कए।
हय[5] बंधावनि सगरे[6] कीने। त्रिण ईंधन इकठे करि लीने॥ २३॥
एक नाथ बड अज़मतवंता[7]। करि आश्रम को तहां बसंता।
आगे इक दिन गुर सों मिलि करि। बोल्यो हुतो मान को मन धरि॥ २४॥
'जग मैं गुरू कहावति फिरै। करामात भी कछु तनु धरै।
जे अज़मत[8], कछु देहु दिखाइ। देखे बिना न मन पतियाइ'॥ २५॥

---

1. झूठ 2. घोड़े 3. भीड़ 4. कुछ 5. घोड़े 6. सारे 7. शान वाला 8. बड़ाई के चिन्ह

सुनि गुर कह्यो हुतो तिस तांई। 'डेरा करहिं जबहि तुव थाई।
तबहि दिखावहिं दिढ हुइ रहीए। अबि देखन को नहिं कुछ कहीए'॥ २६॥
देखि नाथ को गाथ चितारी। इह तो करामात चहि भारी—।
बैठ्यो हुतो आपने थाना। तरकश ते ले करि गुर बाना॥ २७॥
छित सों छुवाइ सीस संग लायो। बहुर नाथ सों बाक अलायो।
"हुकम नाथ! कहु अपनी गाथा। राजी अहैं अनंद के साथा'॥ २८॥
सुनति नाथ बोल्यो तिह समो। 'गुर गोबिंद सिंह लिहु मम नमो।
मैं राजी करि दीनसि दीन। सभि कारज ते खारज[1] कीन'॥ २९॥
गुरू कह्यो 'देखहिं अबि ठौर। चलीअहि दिल्ली नगर लाहौर।
कितिक समैं मैं चलि पुन आवैं। जे तेरे चित महिं इम भावैं'॥ ३०॥
नाथ कहै 'निशफल अभिलाखा[2]। जैबे उचित न मो कहु राखा।
खैंचि निकारा सार उदारा। करि फोकट मोकहु अबि डारा'॥ ३१॥
सतिगुर भन्यों 'कामना तेरी। अजमत जाचित फली घनेरी।
अपनो दोश जानि टिक रहो। जिम बांछित चित फल तिम लहो'॥ ३२॥
तूशन[3] रह्यो जानि बच[4] साचे। मान राचि अजमत कहु जाचे।
इक मठ सुंदर है तिस ठौर। विच[5] कासब भट्ट की गोर[6]॥ ३३॥
तिस को पिखि करि गुरू सराही[7]। भली थाइं सुंदर इस मांही।
मान सिंह आदिक बच सुने। प्रभु के संग बिबेकी बने॥ ३४॥
'थान तुरक को आप सराहा। यांते उचित देहु तनखाहा[8]।
गोर मढ़ी मठ भूल न मानै—। इस बिधि रावर रहित बखानैं॥ ३५॥
सुनति बिबेक[9] खालसे केरा[10]। बखशावति भे गुर तिस बेरा।
बिसंत पंच रजतपण[11] लाए। दान सिंह कर जोरि अलाए[12]॥ ३६॥
'इह क्या बिधि रावर[13] ने करी? बिप्रीती[14] हम को दिखि परी'।
तिस को श्री प्रभु कीनी बतावन। 'करहिं खालसे के सिखरावन॥ ३७॥
लेनि देनि होवहि तनखाह। परै खालसे महिं इह राह'[15]।
तबि सतिगुर तरकश गर लाहा। धनुख सहित दासन कर[16] माहा॥ ३८॥
एकमूल[17] पर जंड सु तीन। निकट खरे डेरा जहिं कीन।
आयुध[18] तिन के संग झुलाए। अबि लौ खरे देखि सिख आए॥ ३९॥

1. मुक्त 2. अभिलाषा 3. प्रसन्न 4. वचन 5. में 6. कब्र 7. सराहना की 8. दंड भरो 9. विवेक 10. का 11. मुहर 12. कहा 13. आप 14. विरोध 15. रीति 16. हाथ 17. जड़ 18. हथियार

धरहि कामना करहि जि नमो। पूरति है सो तरु इह समो।
हुती नाथ कै धेनु घनेरी। चोइ दुगध सो लेवै बेरी ॥ ४० ॥
बछरे संग छोरि दे सोई। अज़मत[1] ते न चुंघावै कोई।
माटी बासन देति चड़ाइ। रीझति खिचरी खूब बनाइ ॥ ४१ ॥
फोरे ते ठीकर हुइं तेते। नाथ नाथ हुइं मानुख[2] जेते।
करामात इह सकल गवाई। तिस दिन गो चुंघाइ सभि आई ॥ ४२ ॥
रीधे बासन भगन न तैसे। दिन प्रति करति अचवनो जैसे।
एक निसा गुर ढिग थित भयो। अगले दिन सु आन थल गयो ॥ ४३ ॥
धेनु बतश ले साथ सिधारा। अपर[3] समाज तज्यो तहिं सारा।
बासन, बसन, संकट अरु घोरा। सहित खरास गमनते छोरा ॥ ४४ ॥
रतीए ग्राम जाइ करि बासा। नहिं बखशाइ मिल्यो प्रभु पासा।
कीनि मुकाम गुरू भगवान। रोड़ा[4] इक बनीओ तिस थान ॥ ४५ ॥
देति रसत कीनी बहु सेउ। खुशी करी तिस पर गुरदेउ।
बूझति भयो नाथ की गाथा। 'कहां करी रावर के साथा ? ॥ ४६ ॥
इस थल ते उठि करि कित गयो ? वसतू ब्रिद सु त्यागति भयो'।
सुनिकै श्री प्रभु भेव बतायो। 'निज अजमत धरि उर गरबायो ॥ ४७ ॥
तीर संग हम ऐंचि निकारी। उठि करि गयो लाज करि भारी।
मिल्यो न पुन ऐके बखशायो। हंकारति निज ओज गवायो ॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'जोगी प्रसंग'** बरननं नाम पंच दसमों अंशु ॥ १५ ॥

---

1. करामात 2. मनुष्य 3. भवर 4. अरोड़ा

अंशु १६

श्री गुर गमन प्रसंग

दोहरा

बासुर कितिक[1] मुकाम[2] करि पुन श्री प्रभु ह्वै त्यार।
जीन[3] तुरंगन[4] पर परे होति भए असवार ॥ १ ॥

चौपई

बिधि अनेक प्रभु करति अखेरे। खेलति बिचरति जाति अगेरे।
खशट कोस प्रभु पहुंचे जाई। संग सैन सिंहनि समुदाई ॥ २ ॥
तिस थल भुंदड़ रहै दिवाना। गुर आगवन सुने हरखाना[5]।
तूरन ही चलि करि सो आयो। चरन कमल पर सीस निवायो ॥ ३ ॥
पंच रुपय्ये थान महीन। अग्ग उपायन धरि करि दीन।
उतरे श्री प्रभु कीनसि डेरा। थिरे सिंह बांछति थल हेरा ॥ ४ ॥
ब्रिंद कलस पय के भरि आने। भूंदड़ संग ल्याइ मिशटाने।
जेतिक सिंह सभिनि को प्याए। बारि बारि कहि करि त्रिपताए ॥ ५ ॥
अधिक अधीन भय गुर आगे। बार बार पग पंकज लागे।
कहिबो सुनिबो बात अनेकू। करति भए श्री जलधि बिबेकू ॥ ६ ॥
गुर बोले 'भूंदड़! हम चरैं। अपर[6] सथान विलोकनि करैं।
कहै जोरि कर 'सेव बताओ। दास जान करि मुख फुरमाओ[7] ॥ ७ ॥
दरशन दयो भाग धंन मेरे। भयो निहाल अनंद घनेरे।
अपनो जान कीनि आगमनू। संत उबारि दुशट दल दमनू' ॥ ८ ॥
खुशी करी प्रभु भए अरूढि। गमने मारग को गुन गूढ।
पहुंचे निकट थेहड़ी जाणी। तहिं ते चलि करि काल झिराणी ॥ ९ ॥
तहां महीरुह खरो फलाही। कारो काक बसै तिस मांही।
अवलोकति भाख्यो तिस बेर। 'धरम सिंह तरु की दिशि हेरि ॥ १० ॥

---

1. कुछ समय 2. ठहर कर 3. ज़ीन 4. घोड़े 5. हर्षित 6. अवर 7. कहा

निड्य बनायहु बायस रहै। तीन बतश इस के बिच अहैं।
चोंच पसार आइ तुझ ओरी। तिस की ग्रीवा देहु मरोरी[1] ॥ ११ ॥
अपर दुहन को कुछ न कहीजै। चढि फुलाह पर जाहु गहीजै।
सुनि गुर हुकम गए जुग भ्राता। बाइस बतश बिलोक स ताता ॥ १२ ॥
धरम सिंह तरु के तर[2] खर्यो। परम सिंह ऊपर तबि चर्यो।
तीन हुते इक चौंच पसारी। परखि लयो गहि हाथ मझारी ॥ १३ ॥
ग्रीवा तोरि तुरत ही मारा। सभिहि निहारति बिसमि उचारा।
'पातिशाह ! इह क्यों मरवायो ? मर्यो अकारथ काज न आयो' ॥ १४ ॥
श्री मुख ते बिरतंत उचारा। 'प्रथम लांगरी हुतो हमारा।
देग गुरू की सेवा करै। सिक्खनि पर ले झहीआं[3] परै ॥ १५ ॥
देति अहार लरति ही रहै। नहिं किस हूं ते मन मुद लहै।
इक सिख लर्यो वाक तिन कह्यो। 'करल करल करता नित रह्यो ॥ १६ ॥
कां कां वाइस की सम बोल। देग बिखै बहु पावति रोल'।
सिख ते भयो स्राप इम जबै। केतिक दिन महिं म्रित्तु भा तबै ॥ १७ ॥
काक जोनि महिं जनम्यों आइ। सिक्खन को देखे उमकाइ।
सेव करन को फल अबि लयो। काक जोनि ते छूटति भयो ॥ १८ ॥
अपनो जानि जून ते छोरा। कर्यो मुकति गा सुरपुरि ओरा'।
सुनि सिंहनि श्री मुख ते[4] गाथा[5]। बिसमाने[6] टेकति प्रभु माथा ॥ १९ ॥
पूरब दिशा ग्राम की गए। ताल बिसाल[7] बिलोकति भए।
तहिं इक सरप आवतो धाए। करति शीघ्र फण ऊच उठाए ॥ २० ॥
सतिगुर बान खैंचि करि मारा। गिर्यो धरा पर प्रान बिदारा।
श्री मुख ते सभिहूंनि सुनायो। 'इहु मसंद दीरघ गरबायो[8] ॥ २१ ॥
सति संगति महिं निव्यो न सीस। इक मन जप्यो नांहि जगदीश।
गुर की कार दरब बहु आने। संचि संचि करि कीनि महाने ॥ २२ ॥
सिमरत धनि को तजि करि प्रान। भयो सरप धारति अभिमान।
हम को हेरि समुख चलि आवै। इह भी सरप जूनि छुटकावै' ॥ २३ ॥
जाइ गुरू सर डरा कीन। हयन[9] लगाइ उतारे जीन।
तहिं सोढी मिलिबे[10] कहु आए। बंदन करि दरशन हरखाए ॥ २४ ॥

---

1. मरोड़ दी 2. नीचे 3. क्रोध करता था 4. से 5. कहानी 6. प्रसन्न 7. विशाल 8. अभिमान किया 9. घोड़े 10. दर्शनहित

चावल चून घ्रितादिक ल्याए। त्रिन दाणा सभि दयो पुचाए।
इत्यादिक सेवा सभि करी। खान पान कीनसि निस परी ॥ २५ ॥

सुपति जथा सुख गुर भगवान। उठे प्रात करि सौच शनान।
कर्यो कूच हय ज़ीन पवाए। भए अरूढन मग पग पाए ॥ २६ ॥

करति अखेर[1] क्रिपाल पयाणे। डेरा कर्यो ग्राम छतिआणे।
निस बिताइ तहिं, भे असवारा। टिब्बा एक उतंग निहारा ॥ २७ ॥

ब्रहमी इक फकीर तहिं रहे। तिस के नाम सथल सों कहैं।
चाकर जे बिराड़ गुर राखे। मिलि आपस महिं मूरख भाखे ॥ २८ ॥

'गुर ते क्यों न चाकरी लेते। बने कठोर बिना नहिं देते।
पूरब कई बार तुम जाची। दैहैं दैहैं गिरा उबाची[2]' ॥ २९ ॥

केचित कहैं न धन गुर पासा। किम लैबे की करि हहु आसा।
ठहिरेंगे जबि किस इसथाना। संगति आवहि मेल महाना ॥ ३० ॥

अरपहि दरब[3] देहिंगे सोई। इहां उजार कहां ते होई।
सुनि कै केचित बाक बखानैं[4]। 'हम तौ और कछू नहिं जानैं ॥ ३१ ॥

अबि तौ इहां खरे करि लेहिं। लीए बिना न चलिबे देहिं।
गुरू करामाती जग जानै। यांते लघु दीरघ सभि मानैं ॥ ३२ ॥

जबि अटकाइ लेइंगे इहां। तबि हम को धन दैहैं महां।
नतु ह्वै अपर[5] बारता खोटी। हमरी हद्द इहां लगि तोटी ॥ ३३ ॥

सभि बिधि ते है ज़ोर हमारा। चहैं करें और न रखवारा।
साबो की हद अहै अगारी। अबहि प्रवेशहिं तिसहि मझारी ॥ ३४ ॥

डल्ला मिलै आनि बल भारी। सुभट सेंकरे बाक मझारी।
करहु ज़ोर स चलन न दैहै। बहुर चाकरी मुशकल[6] पैहैं ॥ ३५ ॥

भली बात गुर लिहु अटकाई। इक इक दिन को धन लिहु पाई।
पुनहि समा जबि घनो बितावहि। गुर ते दरब चाकरी पावहिं' ॥ ३६ ॥

इह मसलत[7] मिलि मूढ पकाई। गुर महिमा न लखैं अधिकाई।
दान सिंह इक बार हटाए। 'इम[8] नहिं लेहु बुरा हुइ जाए ॥ ३७ ॥

हाथनि जोरि जाचना करीए। —खरच देहु घर पठहिं बिचरीए।
जिस ते खान पान सभि होइ। अपर आमदन रही न कोइ—॥ ३८ ॥

---

1. शिकार 2. कहा 3. धन 4. कहे 5. अवर 6. कठिन 7. सलाह 8. इस प्रकार

दैहैं सतिगुर नांहिन राखैं। सम सों ले, बुरा नहिं भाखै[1]'।
दान सिंह ते सुनि बैराड़। नहिं माने चहिं करन बिगाड़ ॥ ३९ ॥

'अपनी हद्द बिखै हम लैहैं। आगे गए नहीं किम दैहैं।
इहां जोर हमरो अबि चलै। जाचहिं दरब सरब ही मिलै' ॥ ४० ॥

करि मसलत[2] इकठे होइ फेर। तजि तुरंग[3] गे गुरू अगेर।
खरे भए आगे समुदाई। 'देहु चाकरी सभि हम तांई' ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**श्री गुर गमन प्रसंग**' बरननं नाम खोसडमो अंशु ॥ १६ ॥

---

1. कही 2. सलाह 3. घोड़ा

अंशु १७
बैराड़न प्रसंग

दोहरा

बिगरे ब्रिंद बिराड जढ़ गुर हय[1] की गहि बाग।
खर भए बोले बिमुख जिन के शुभ नहिं भाग॥ १ ॥

चौपई

'देहु चाकरी प्रभू हमारी। पुनहि गमन को करो अगारी।
करी नौकरी कितिक महीने। नहीं रजतपण रावर दीने॥ २ ॥
दरब पठ्यो चहिं निज घरमांही। सकल कुटंब अंन ले खाही।
इतहुं प्रतीखति है परवारा। हम खावहिं सो करहिं अहारा'॥ ३ ॥
सुनि गुर कह्यो 'न शीघ्र करीजै। दिन दिन को धन गिनि गिनि लीजै।
सदन पठावहु देरि न कोई। डेरा जहिं मुकाम हम होई'। ४ ॥
आगा रोकि खरे हुइ रहे। पुन बैराड़ ब्रिंद मिलि कहे।
'पूरब जाचा करि करि लहो। —दै हैं दै हैं—दिन प्रति कहो॥ ५ ॥
हटहिं न आज लीए बिन जानो। इस महिं हेतु और इक मानो।
इसी थान लगि हद्द हमारी। जिस ते[2] जाचति[3] हैं हठ धारी॥ ६ ॥
है साबो की सीम अगेरे। इहां देहु धन गमनहु फेरे।
हम ते अबहि न होति समाई। दिए बिना न चलहु अगवाई॥ ७ ॥
हम नहिं जान देहिंगे जानो। दैनो दरब[4] इसी थल ठानो'।
बेमुख बननि बैन बैराड़। बोले बाक बिसाल[5] बिगाड़॥ ८ ॥
तबि श्री मुख ते तिनहिं बखाना। 'सुनहु बिराड़ो दे करि काना।
कै गुर सिक्खी तुमहु रखीजै। किधों चाकरी हम ते लीजै॥ ९ ॥
करि निरनै सिगरे मिलि कहो। सिक्खी लहो कि धन को लहो?'।
सुनि बैराड़ सलाह करंते। दरब. लोभ को रिदे धरंते॥ १० ॥
कहैं 'नहीं गुर सिक्खी धरैं। दरब चाकरी लैबो करैं।
लिए बिना हम जानि न दैहैं। जान देहिं तौ पुन कित पैहैं॥ ११ ॥

---

1. घोड़ा 2. से 3. चाहते हैं 4. धन 5. विशाल

दरब छोरी[1] सिक्खी किम धारें। करति चाकरी बिचरे सारे।
अपर[2] हद्द महिं हाथ न आवैं। अपनि सीम यांते अटकावैं' ॥ १२ ॥
सुनि श्री प्रभु निज धनुख संभारा। सर बगराइ गगन को मारा'।
तुरत घटा घन की हुइ आई। बही बाउ ऊचे गरजाई ॥ १३ ॥
करका बरखे जाल बिसाला। अंगन लागे चोट कराला।
बहुर परै बरखा बहु बारी। पिखि बिराड़ भाजे इक वारी ॥ १४ ॥
सघन बिटप के तरे खरे हैं। ले ले करि निज ओट थिरे हैं।
सिंहन ले कंबर[3] बर ताने। सतिगुर के सिर पर ठहिराने ॥ १५ ॥
श्री प्रभु खपरा[4] हाथ निकारा। निज तुरंग[5] के सिर पर धारा।
करका लग्यो न हय पर कोई। खरे रहे तिस थल थिर होई ॥ १६ ॥
कोस कोस चहुंगि दे महां। करका जुति बरख्यो जल तहां।
तिस थल ही डरा करि दयो। सभि वहीर पाछल को अयो ॥ १७ ॥
तिस वहीर महिं इक सिख आयो। खच्चर एक दरब की ल्यायो।
पग पंकज पर बंदन करिकै। जेतिक धन सो आगे धरिकै ॥ १८ ॥
'महाराज इहु लेहु खजाना। दियो कुबेर[6] पुचावन ठाना'।
श्री गुर कह्यो 'गोन मुख खोलहु। सभि बैराड़नि को अबि बोलहु' ॥ १९ ॥
अपने निकट लगायहु ढेर। आधी मुहर रजतपण हेरि।
इतने महिं बुलाइ करि ल्याए। करि पंकत[7] बैराड़ बिठाए ॥ २० ॥
'लेहु चाकरी लेखा करि करि। निज ते गुरसिक्खी को हरि हरि।
आने अशट दए असवार। लिए पदांती[8] अरध बिचार ॥ २१ ॥
गिन गिन देति भए सभिहून। पैंदल इक सऊर[9] को दून।
तुरंग पंच सै गिनती आए। नौ सै पैंदल धन को पाए ॥ २२ ॥
जबि सभिहूंनि चाकरी लीनि। दरब[10] हेरि करि आनंद पीन।
श्री मुख ते बोलेहित नाली। 'आवहु दान सिंह असुपाली[11] ॥ २३ ॥
दरब चाकरी को बरतंते। तुव संगी सभि लेनि करंते।
तूं भी लिहु लेखा निज करिके। अग्र नौकरी करि मुद धरिके' ॥ २४ ॥
सुनि कै दान सिंह कर जोरे। 'दूध पूत धन सभि घर मोरे।
क्रिपा करहु सिक्खी मुझ दीजै। अपनो जानि बखश करि लीजै' ॥ २५ ॥
पुन गुर भन्यो 'मिलन संग भाई। तिन ही सम तुझ को बनिआई।
हान लाभ तिन को सम जानहुं। भ्रातनि ते बिछुरन नहिं ठानहुं ॥ २६ ॥

---

1. छोड़ कर 2. अवर 3. कंबल 4. खपड़ा 5. घोड़ा 6. धन 7. पंक्ति 8. शेष 9. सवार 10. धन 11. घोड़े पालने वाला

जिम सभि करैं जोग तिम करिबो। प्रिथक होनि की क्यों व्रिटि[1] धरिबो[2] ?।
दान सिंह कहि 'क्रिपा करीजै। इन के साथ न मोहि मिलीजे ॥ २७ ॥
अपर[3] सरब कुछ है घर मेरे। अबि सिक्खी दीजहि लखि चेर'।
सुनि प्रसंन ह्वै करि गुर भाख्यो। 'सिक्खी को बीरज तैं राख्यो ॥ २८ ॥
इसी बीज ते सगरे देश। दिन दिन प्रति वधि जाइ विशेश।
भलो देस जंगल को कर्यो। बड उपकार करन हित धर्यो ॥ २९ ॥
जिम सभि माझे की वडिआई। महां सिंह ने राखि दिखाई[4]।
देश मालवे की अबि राखी। उपजहिं सिक्खी के अभिलाखी[5] ॥ ३० ॥
अबि तूं जगत जूठ तबि देहु। बनहुं सिक्ख पाहुल[6] कहु लेहु'।
कहै सु 'उदर अफर मम जावहि। तजहुं कशट हुइ कौन बचावहि' ॥ ३१ ॥
श्री मुख कह्यो 'कशट तुव टारे। सिर पर करीअहि केसन धारे।
सिक्ख संपूरन ही अबि बनो। दुरमति जग की दीरघ हनो'[7] ॥ ३२ ॥
सुनि बोल्यो 'क्यों केस रखावहु। बिना केस ते सिख लखि पावहु'।
दान सिंह सुनि कारन यांको। 'हेरहिं पर्यो नरक सिख जांको ॥ ३३ ॥
केसन ते हम लेहिं पछान। चहैं बचावन कशट महांन।
केसन ते गहि तुरत निकारहिं। अपनी लागी छाप बिचारहिं' ॥ ३४ ॥
सुनि कै दान सिंह तिस काला। जिस के मुख पर शमश[8] बिसाला।
दोनहुं हाथन गहि करि सोई। बोल्यो प्रभु सों सनमुख होई ॥ ३५ ॥
'इस ते आप चिनारी धरीअहि। गहि कै शमश निकासन करीअहि'।
सुनि कै सतिगुर हाथ रुमाल। करि मुख आगे हसे बिसाल ॥ ३६ ॥
'बाक आप को मैं न हटावौं। सिर पर रखिकै केस वधावौं।
जगत जूठ तजि पहुल लै हौं। गुर सिक्खी के पंथ चलै हौं' ॥ ३७ ॥
इम कहि भयो प्रभू अनुसारी। अंम्रित ले गुर फते उचारी।
पुन बैराड़ दरब को पाए। मिलि आपस महिं उठि हरखाए ॥ ३८ ॥
'धर्यो गुरू ढिग दरब घनेरा। एक फरेब करहु इस बेरा।
जिस ते प्रापत ह्वै धन आन'। गए गुरू ढिग मसलत[9] ठानि ॥ ३९ ॥
'करनि चाकरी जबि हम आए। इक आयहु इक घरों टिकाए।
द्वै ने द्वै तीनहुं ने तीन। तजि तजि सदन आइबो कीन ॥ ४० ॥

---

1. इच्छा 2. करते हो 3. अवर 4. बचा ली 5. अभिलाषा 6. अमृत 7. दूर करो 8. चमक 9. सलाह

यांते दुहरो 'दिहु दरमाहां[1]। जो हम जै कै दें घर मांहां।
नतु सभि ते धन आधो लै हैं। कहां निकट रख हम तबि खै हैं ॥ ४१ ॥
गुर सिक्खी ते भे सभि ऊनी। अबि ते देहु चाकरी दूनी।
ले करि धन कुटंब को पारहिं[2]। करहिं नौकरी संग सिधारहिं' ॥ ४२ ॥
सुनि क्रिपाल तिन की बुधि हीन। दरमाहां दूनां तबि दीन।
शेश रजतपण अरु दीनार। बचे सु गाडे धरा मझार ॥ ४३ ॥
नाम गुपतसर थल को राख्यो। —दरब गुपत आन्यों-अभिलाख्यो।
निज निज डेरनि जाइ बिराड़। करहिं परसपर बात उघाड़ ॥ ४४ ॥
'बरछी की सु अनी पर दरबं। एक बार लिय गुर ते सरबं।
दूनो लियो सभिनि दरमाहां। बिलम न लगी एक छिन मांहा' ॥ ४५ ॥
इक सिख तिन ते सुनि करि गयो। प्रभु समीप कहति सो भयो।
'पातशाहु बिगड़े बैराड़। बसिबेहार उजाड़ सु झाड़ ॥ ४६ ॥
—बरछी अणी साथ धन लीन। गुर ते बिलम न लगिबे दीन—।
कहि कहि आपस महिं बहु हसैं। तुमरो प्रेम न महिमा बसैं' ॥ ४७ ॥
सुनि करि श्री मुख ते कहि तबै। 'हमरो होइ खालसा जबै।
चोट नोक की करिउत लैहै। दरब सहंस्र गुणा सभि दैहैं ॥ ४८ ॥
खोयो राज न होहि जमय्यत[3]। बसहिं खालसे की हुइ रय्यत।
अपनो कारज आप बिगारा। मूढ अजान हरख[4] पुन धारा' ॥ ४९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**बैराड़न प्रसंग**' बरननं नाम सपतदशमो अंशु ॥ १७ ॥

---

1. महीने वार वेतन 2. पालें 3. सेना 4. हर्ष

अंशु १८
दीवाने को प्रसंग

दोहरा

बहिमी† हुतो[1] फकीर तहिं मुसलमान का थान।
गर बणाई दीरघा मिण नौ हाथ प्रमाण॥ १॥

चौपई

प्रथम जीवते सो बनिवाई। लाइ रेखता दिढ करवाई।
मोरी अलप रखी तिस मांही। मरण लगे प्रविशन विच[2] तांही॥ २॥
सो सतिगुर के ढिग[3] चलिआयो। पग पंकज पर सीस निवायो।
मण इक घ्रित सो मन मिशटान। मण मैंदा दीनसि तिस आनि॥ ३॥
अपर चून, चावर, अरु दाना। दयो बिनै जुति खान रु पाना।
हाथ जोरि करि अरज़ गुज़ारी[4]। 'पर्यो आन मैं शरणि तुमारी। ४॥
दास आपनो मोहि बनावहु। करहु सिंह पाहुल[5] छकवावहु।
जगत बिखै हैं पंथ घनेरे। भली प्रकार सरब मैं हेरे॥ ५॥
प्रथम मूंडि सिर, भीख मंगावैं। भलो भेस ते बुरो बनावैं।
रावरि[6] पंथ समान न आन। मैं परखी सभि रीति पछान॥ ६॥
उज्जल बेस सु उज्जल मता। सिमरन सत्तिनाम चित रता।
यांते है मेरी अभिलाखा। बनौं सिंह मैं यांते भाखा[7]'॥ ७॥
सुनि श्री प्रभु प्रसंनता धारी। पूरब भली रीति तें डारी।
मुसलमान हुई भावन[8] धरै[9]। मिलनि पंथ महिं जे हित करै॥ ८॥
तौ इह उचित खालसे बीच। पाहुल लहै ऊच कै नीच'।
मान सिंह सों हुकम बखाना[10]। 'खरो होहु करि सिक्ख सुजाना'॥ ९॥
ले आग्या अंम्रित बनवायो। खरे होइ ततकाल छकायो।
श्री मुख ते तबि नाम उचर्यो। शुभ 'अजमेर सिंह' तिह धर्यो॥ १०॥

---

1. था 2. में 3. पास 4. विनय की 5. अमृत 6. आपका 7. कहा
8. भावना 9. रखे 10. किया

†नाम है

वाहिगुरू जी की कहि फते। भा कल्याण उचित मुद चिते।
सिमरन करनि लग्यो गुर केरा। गुरबाणी पठि संझ[1] सवेरा ॥ ११ ॥
तहिं डेरा करि निसा बिताई। प्राति भए त्यारी करिवाई।
हय अरूढि करि चले क्रिपाला। संग सुभट गन आयुध नाला ॥ १२ ॥
केतिक कोस उलंघ करि गए। साहिबचंद ग्राम पहुंचए।
समा भयो सुक्खे कहु आनि। तहिं रगड़ाइ क़रति भे पान ॥ १३ ॥
सौच सुचेता करि पुन चरे। कातक गमन अग्र को[2] करे।
ग्राम कोट भाई के जहां। डेरा जाइ करति भे तहां ॥ १४ ॥
बसै बाणीए गुर सिख दोइ। गुर आगवन सुनति भे सोइ।
प्रथम जाइ पग बंदन ठानी। कुशल प्रशन सतिगुरू बखानी ॥ १५ ॥
हाथ जोरि जुग अरज़ गुज़ारी। 'सेवा कर्यो चहैं हम थारी[3]।
क्रिपा करहु अबि आग्या दीजै। संग लांगरी मम करि दीजै ॥ १६ ॥
सकल देग़ हित चहैं सु ल्यावैं। करि अहार प्रभु को त्रिपतावैं"।
खुशी करी अस हुकम बखाना। 'अंम्रित छकहु होहि कल्याना ॥ १७ ॥
मिलहु खालसे सों बनि रूप। अंत समैं पद लेहु अनप'।
श्री गुर ते सुनि करि तिन मानां। करि कड़ाह तूरन तबि आना ॥ १८ ॥
गर शमशेर पाइ करि खरे। वाहिगुरू सु मंत्र मुख ररे।
खरे विलोके गुरू बखानें[4]। 'उठि गुरबखश सिंह लिहु माने' ॥ १९ ॥
सुनि करि हुकम नीर अनवायो[5]। ले मिशटान पतासन पायो।
पढे सवेये सिंहन पंच। पूरब जप, आनंद पुन बंच ॥ २० ॥
झोरड़ संग्या भाखैं सबै। सो गुरबखश सिंह उठि तबै।
करि अरदास हुकम को लैके। द्वै को अंम्रित दियो छकै कै ॥ २१ ॥
प्रथम नाम 'रंगी' तिस केरा। 'रंगी सिंह' धर्यो तिस बेरा।
'घुंमी सिंह' दूसरे नामू। धरति भए श्री मुख सुख धामू ॥ २२ ॥
इम निहाल[6] हुइ मसतकि टेका[7]। खुशी करी तबि जलधि बिबेका।
सभि डेरे[8] की सेवा कीनि। हयनि चरन हित त्रिण गन दीन ॥ २३ ॥
खान पान करि सभि त्रिपताए। सुख ते पौढि राति सुपताए।
शौच शनान होइ सवधाना। भए अरूढि अनाइ किकाना ॥ २४ ॥
करन अखेर[9] क्रिपाल पधारे। सने सने उद्यान[10] सिधारे।
मन भावति बिचरे तिस बेरा। कर्यो ग्राम सुनीअर महिं डेरा ॥ २५ ॥

---

1. रात्रि होते ही 2. आगे की ओर 3. आपकी 4. कहा 5. ले आने को कहा 6. प्रसन्न 7. शीश झुकाया 8. संगत 9. आखेट 10. वन

तहिं बिताइ निस गमनति भए। ग्राम रोहले उतरन कए।
तहिं ते चढि पुन पंथ पयाने। ग्राम बबीहे निकट सथाने ॥ २६ ॥
कर्यो सिवर उतरे गुन धामू। नौं बासुर तहिं कीन मुकामू[1]।
तहिं ते चढि बाजक को गए। समैं देखि सुखा छक लए ॥ २७ ॥
ग्राम नरन सुनि गुर आगवनू। पै बटोर करि सगरे भवनू।
भरि भरि घट गन बाहर ल्याए। करि दरशन सभि सीस निवाए ॥ २८ ॥
पाइ पाइ मिशटान पिलावा। त्रिपति होइ पीवति मन भावा।
एक सिंह ने पान न कीनि। दे बहु रह्यो नहीं कर लीनि ॥ २९ ॥
बूझ्यो श्री प्रभु 'क्यों नहिं[2] पीना ?' कहै सिंह 'खैबो पल कीना।
धेनु दुगध को पीवति दोश। यांते मैं न पियों करि होश ॥ ३० ॥
जे महिखी को होइ निराला। तौ मैं करि हौं पान सुखाला'।
सुनि इस ते सिख एक उचारे। 'मैं ल्यावहुं पै महिख निरारे' ॥ ३१ ॥
गुर भाख्यो 'पीवन बहु करहु। त्रिपतहु भले उदर को भरहु'।
इम श्री प्रभु कीनसि तहिं डेरे। पै पिआइ त्रिपताइ घनेरे ॥ ३२ ॥
पूरब जबहि दिवाना मार्यो। किस ने सभि महिं जाइ उचार्यो।
'पंथ तुमारे को तहिं गयो। सिंह क्रिपान झारि हतिदयो[3]' ॥ ३३ ॥
घुद्धा सुक्खू हुते महंत। रिसकरि मिलि सभि कीनि मतंत।
'लिहु पलटा गुर ते चलि अबै'। लए बटोर टोर करि सबै ॥ ३४ ॥
इकठे हुइ पंचास दिवाने। लैनि बैर को पंथ पयाने।
मग महिं करि बिचार डर धारा। 'श्री गुर धीर बीर बलि भारा ॥ ३५ ॥
तिस आगे क्या शकति हमारी। अग्ग्र निवैं जिस खलकत[4] सारी'।
इम[5] उर अरध समुझि मुड़ि गए। रहे पची सो गमनति भए ॥ ३६ ॥
कितिक दूर चलिबो तबि करे। त्रौदसि डर को धरि हटि परे।
जुग महंत करि धीर पयाने[6]। दस पुन हटे गुरू डर माने ॥ ३७ ॥
सुक्खू अर बुद्धू द्वै रहे। सभि संगिन की गति को लहे।
ढड्ड सारंगी दोनहुं कर ते। धरी कहूं शंका उर[7] धरिते ॥ ३८ ॥
—लेनो बेर रह्यो कित दूर। दरशन करीअहि चलो हदूर[8]—।
इम बिचारि गे मसतक टेका। पिखि तिन बोले जलधि बिबेका ॥ ३९ ॥

1. ठहरे 2. न 3. मार देते हैं 4. लोग 5. इस प्रकार 6. चले
7. मन 8. सामने

'हाथन ते धरि कहां दुराई। ले आवहु तिन को अबि जाई'।
—अंतरजामी सभि गुर जानी—। इम लखि उठि दोनहुं पुन आनी ॥ ४० ॥

ढड्ड सारंगी जबि ले आए। दोनहुं खरे भए अगवाए।
प्रभु बोले 'तुम गाइ सुनावहु। जथा हमेश अपर थल गावहु' ॥ ४१ ॥

सुनि करि हुकम दिवाने दोऊ। करी सारंगी सुर मिलि सोऊ।
जंगल देश सद्ध हुइ जैसे। ऊचे सुर गवन लगि तैसे ॥ ४२ ॥

कच्चा कोठा विच वसदा जानी ॥
सदा न मापे नित नहीं जुआनी ॥
चलणा आगै होइ गुमानी ॥

चौपई

सुनि श्री मुख ते बहुर उचारे। 'तिसी रीति कहु फेर पुकारे।
ढड्ड सारंगी मेल बजाओ। ऊचे सुर सों गाइ सनाओ' ॥ ४३ ॥

मान्यों हुकम फेर तिन गायो। ऊचे सुर सों भल सुनायो।
भए खुशी प्रभु फेर गवायो। तीन बार तिम ही कहिवायो ॥ ४४ ॥

बसे राति करि खान रु पान'। भई प्राती[1] गुर चहसि पयाना[2]।
तबि सुक्खू बुद्धू हुई खरे। इम अरदास जोरि कर करे ॥ ४५ ॥

'हम पर प्रभु कीजै असवारी। जिम कीनी मग चलत अगारी।
इही भावना पूरन करीअहि। अपने जानि दया उर धरीअहि' ॥ ४६ ॥

सुनि गुर पलंघ अपनि उठवायो। सुक्खू बुद्धू सीस लगायो।
दुइ सिख अपर[3] लगे हैं संग। गमने गुरू उठाइ उतंग ॥ ४७ ॥

सुक्खू के सिर जथा नगारा। सम डंके हाथन गहि मारा।
मुख ते धौं धौं करति सिधारे। चले जाति मारग अगवारे ॥ ४८ ॥

कर ते गुरू बजावन ठानै। धौं धौं सुक्खू मुखहुं बखानै।
इसी प्रकार कोस इक गए। तहिं सतिगुरू उतरते भए ॥ ४९ ॥

करी भावना पूरन तांही। डेरा[4] कर्यो नीक[5] थल[6] मांही।
थिरे पलघ पर जलधि बिबेका। सुक्खू आनि माथ पग टेका ॥ ५० ॥

---

1. प्रात: काल 2. जाना चाहा 3. अवर 4. ठहरे 5. उचित 6. स्थान

देति प्रदछना धावति डोलति। ऊंघा ऊंघा मुख ते बोलति।
हार पर्यो जबि दौरति दौरति। आगे गिर्यो गुरू के बौरति[1] ॥ ५१ ॥

क्रिपा द्रिशटि ते देखन ठाना। कह्यो 'करावहु इसे शनाना'।
आनि नीर को पकरि उठायो। सब देह ते भले नुहायो[2] ॥ ५२ ॥

सुधि आई बोल्यो तिस बेरा। 'मज्जन कयों करवाइसि मेरा ?
उपज्यो उर मैं बड बैरागा। अबि घट गयो भयो लघु भागा ॥ ५३ ॥

उचित नहीं थ करन शनाना'। सुनि धीरज सतिगुरू बखाना।
दयो रजतपण इक चौकून। 'रहु पूजति पुन होइ दुगून' ॥ ५४ ॥

सो दे करि प्रभु रुखसद[3] कीना। डेरे गयो रंग गुर भीना।
अबि लगि सो चहुकून रुपय्या। बंदन करहिं कामना पय्या ॥ ५५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**दीवाने को प्रसंग**' बरननं नाम अशट दसमो अंशु ॥ १८ ॥

---

1. मतवाला 2. स्नान कराया 3. विदा किया

अंशु १९
डल्ले को प्रसंग

दोहरा

डेरा जस्सी ग्राम भा तहिं इक ताल बिसाल।
शसत्र बसत्र के सहित गुर भे[1] प्रवेश तिस काल।। १ ।।

चौपई

तट उरार ते भए प्रवेशू। उलंघे ततछिन ताल अशेशू।
रंगदार पोशिश[2] सरबंग। मुशकी चंचल तरे तुरंग।। २ ।।
परले तीर जाइ थिर भए। हय पोशिश उज्जल ह्वै गए।
लोक हज़ारहुं पिखि बिसमाए। ढिग सगरे हुइ बाक अलाए।। ३ ।।
'कौतक कहां आप दरसायहु। बसत्र तुरंग सुपेद बनायहु।
सिर दसतार रही सुरमई'। सुनिं श्री प्रभु सभि सन कहि दई।। ४ ।।
'बिचरति राम चंद इत आए। इहां शनान कीनि हरखाए।
तबि को इह तीरथ बहु पावन। पुरबी समा, कीयो हम पावन।। ५ ।।
यांते बिसद बसत्र हय भयो। पुरबी ते फल पावन कयो।
बग्गा सर तीरथ को नामू। पावन अधिक सपरसे रामू'।। ६ ।।
सुनिकै सिख तबि सरब नहाए। श्री गुर तिन सों बहुर जनाए।
'पुरबी समा गयो टरि अबै। नहीं महातम प्रापति सबै'।। ७ ।।
चलि करि पुन डेरे महिं आए। खरे होइ कहि सभिनि सुनाए।
'जस्सी आइ चले गुड़ खाइ चले। जस्सी आइ चले गुड़ खाइ चले'।। ८ ।।
दुइ त्रै बारी कह्यो सुनाई। तूशनि[3] रहे सकल बिसमाई।
बीत गई जबि घटिका चारी। उतरि थिरी सैना तबि सारी।। ९ ।।
एक लुबाणा तहिं चलि आयो। बैलन ब्रिंद संग मैं ल्यायो।
करति फिरति गुड़ को वापारा। 'उतरे गुरू' सुनति मुद धारा।। १० ।।
पक्का तीस मणा गुड़ ल्याइ। श्री गुर आगै भेट चढ़ाइ।
करि बंदन को दरशन पायो। रिदे अनंद जनम सफलायो।। ११ ।।

---

1. भए 2. पहरावा 3. प्रसन्न

खुशी करी गुर पूरी आसा[1]। अंत समैं को दे भरवासा।
निकट गुरू के कीनसि डेरा। एक निसा को कीनि बसेरा ॥ १२ ॥
तिस दिन रसत नहीं बरताई। जितिक अचैं गुड़दिय सभि तांई।
नहीं देग़ भी तिस दिन होई। गुड़ को खाइ रहे सभि कोई ॥ १३ ॥
सकल तुरंगनि दई निहारी। देग़[2] करी अगले दिन भारी।
बहुर ग्राम के नर गन आए। जथाशकति भेटन को ल्याए ॥ १४ ॥
केतिक दिन मुकाम करि थिरे। बहुर कूच तहिं ते प्रभु करे।
पक्के ग्राम कीयो पुन डेरा। एक निसा तहिं बसे बसेरा ॥ १५ ॥
गुर तुरंग जहिं लावन कीनि। मेख तहां गाडी धर तीन।
तीनहुं जंड हरे हुइ गए। अबि लौ खरे नरन[3] दरसए ॥ १६ ॥
पुन तहिं ते करि कूच पयाने। सुनि सुनि नर दरशन को ठाने।
रह्यो निकट तिलवंडी ग्रामू। जहां बसे डल्ला करि धामू ॥ १७ ॥
साबो के राहक गन जेते। तिस के अनुसारी रहिं तेते।
तिन सुनि करि सतिगुर आगवनू। आए निकट दुशट दल दवनू ॥ १८ ॥
भवन भवन प्रति मानव पठि कै। राहक सकल हकारि इकठि कै।
शसत्र धारि ततछिन चलि आए। सुभट चतर शत को समुदाए ॥ १९ ॥
गमन्यो मिलि सभि संग अगारी। आदर हेतु भाउ करि भारी।
आवति चढे रूप सुखकंदा। देखति सभि के अधिक अनंदा ॥ २० ॥
दे करि भेट चरन अरबिंदं। सिर धरि बंदे द्वै कर बंदं।
सभि राहक हुइ हुइ करि नेरे। चरन सपरशति भाग वडेरे ॥ २१ ॥
सने सने हटिगे करि नमो। कुशल प्रशन गुर किय तिह समों।
'जुधि बांधव गन तव परवारा। अहै अरोग कौम बड भारा' ? ॥ २२ ॥
'श्री प्रभु क्रिपा आप की पाए। सभि बिधि कुशल ग्राम समुदाए।
दरशन श्रेय मूल अबि पावा। सुनि आगवन अनंद वधावा' ॥ २३ ॥
कितिक दूर तलवंडी रही। उतरि परे पिखि सुनि थल तही।
'सकल बहीर[4] जबै चलि आवैं। संध्या भई ग्राम ढिग जावैं ॥ २४ ॥
फ़रश बिसाल करे तिस थाना। बैठि गए पुन क्रिपा निधाना।
ब्रिद बिरादर[5] ले करि सोई। बैठ्यो डल्ला प्रभु ढिग होई ॥ २५ ॥
कर को ज़ोरि प्रसंग चलावा। 'तुरक दुशट बहु कपट कमावा।
आप लरे कीनसि घमसाना। भयो बिनाशी गन तुरकाना ॥ २६ ॥

1. आशा 2. 'कड़ाह प्रसाद' किया 3. वृक्ष 4. सेना 5. भाई

कहां मुलख को मालिक शाहू। कहां आप ढिग भट, उतसाहू।
कारज परे जंग के भारी। साहिबज़ादे[1] म्रितु भे चारी ॥ २७ ॥
भीर कठन रावर पर आई। घेर्यो आनंदपुरि चहुं घाई।
समैं कशट के अस जबि आए। हम को सिमर्यो नहीं कदाए ॥ २८ ॥
दो सै किधौं तीन सै बीरा। ले करि मैं पहुंचति प्रभु तीरा।
करि प्राक्रम के जुद्ध बिसाले[2]। सभि बिधि तुम को रखति सुखाले ॥ २९ ॥
सुनि करि डल्ले ते शुभि बैनं। श्री मुख भाख्यो पंकज नैनं।
'भई सु भई बीत अबि गइऊ। हाथ न आवै जतन जि कइऊ ॥ ३० ॥
जंग बिखै मारन कै मरनो। पशचाताप कहां तिस करनो'।
पुन डल्ला बोल्यो सुनि ऐसे। 'अहै जथावत उचरहु जैसे ॥ ३१ ॥
तऊ दास हम रावर केरे। घालति रण घमसान घनेरे।
करति काज रावर के तबिहूं। ले करि मैं पहुंचति भट सभिहूं ॥ ३२ ॥
लिखत हुकमनामा ज पठि हो। बिनां बिलंब मिलति मैं तट हो।
सभि बिधि करि सहाइ ले आवति। इते बिघन क्यों ह्वैबे पावति' ॥ ३३ ॥
सुनि श्री प्रभु पुन तिह समुझायो। 'समा बित्यो[3] कबि हाथ न आयो।
नहीं उपाइ बनहिं अबि ताहूं। होनहार[4] सिर पर सभि काहूं ॥ ३४ ॥
इतो कह्यो पर तऊ न मौनं। तजें प्रसंग, सुनावै तौनं।
अपनो आपा करहि जनावन। लरे मरे बिन बडता पावन ॥ ३५ ॥
सभा हज़ारहुं सुभटनि केरी। बैठे सनध बद्ध तिस बेरी।
लवपुरि के कारीगर आए। बहु मोली बर तुपकन[5] ल्याए ॥ ३६ ॥
आनि हज़ूर प्रभु के धरी। कर पंकज[6] महिं गहिबे करी।
अंतर वहिर हेरि बिधि नाना। दसतरवां करि ताकि निशाना ॥ ३७ ॥
सभा बिखै डल्ले कहु परखन। सभिनि सुनाइ कह्यो रिपु धरखन।
'भो डल्ला! दीजै नर दोइ। हतहिं तुरंग परख पुन होइ ॥ ३८ ॥
कितिक तोड़ करि घावन घालहि। मरहि कि नहीं सुभट ततकालहिं'।
सुनि गुरबाक सकल बिसमाए। —इह क्या कह्यो 'नरन को घाए'—॥ ३९ ॥
जे डल्ले संग भ्रात बटोरे। चल्यो चहति निज धामन ओरे।
भए भीरु, धीरज तजि बीरा। बैठ्यो जाइ नहीं गुर तीरा ॥ ४० ॥

---

1. गुरु पुत्र 2. विशाल 3. बीत गया 4. जो होना है 5. बंदूकें
6. कर कमल

। ४१ ॥
—तुपक परखिबे नर हति चहैं। कहहु कौन किम इन ढिग रहै—।
तबि डल्ले की आंख बचाइ। आधे राहक गए सिधाइ ॥ ४२ ॥
नहिं कहि देहि, अग्र तूं आइ। खरो होइ गुलकां[2] तन खाइ—।
अस भै धरि धरि घरौं सिधारे। अरध रहे सो भी डर धारे ॥ ४३ ॥
सुनि डल्ला बिसम्यो धरि मौन। बैठ्यो नीव[3] ग्रीव, मुख औन।
कैधौं कहति हुतो बहु बाती। कै तूशनि भा निज मति हाती ॥ ४४ ॥
श्री प्रभु तुपक हाथ धरि रहे। कबहुं पलीता खोलति लहे।
गज निकाल डालति विच[4] कबै। कोठी कितिक बनी लखि तबै ॥ ४५ ॥
इम देखति भे केतिक समैं। ढिग बैंठे सभि के मुख निमे[5]।
पुन बोले 'डल्ले! नर दोइ। हम को देहु खरे हुइं जोइ ॥ ४६ ॥
मारि तुफंगनि परखनि ठानैं। केतिक घाव करहिं सभि जानैं।
सुनि करि डल्ले तूशनि ठानी। ऊच ग्रीव करि कुछ न बखानी ॥ ४७ ॥
सुनि बंधप उठि उठि बहु गए। धीर सहित नहिं थिरता लए।
चाकर नहीं जि डर ढिग रहे। हुते भ्रात गमने चित चहे ॥ ४८ ॥
—सभा बिखै मुझ को न पचारे[6]। जाहु खरो हुइ गुरू अगारे[7]—।
इम चित जानि त्रास धरि गए। नहीं सभा महिं सो थिर भए ॥ ४९ ॥
सतिगुर ख्याल तिनहुं ते टालि। परचे[8] पिखिनि तुपक द्वै नालि[9]।
पुन बरूद गोरी जुग डारी। गज सों ठोकि भले किय त्यारी ॥ ५० ॥
त्रिती बचन को बहुर बखाना। रह्यो न को राहक तिस थाना।
तबि तोरा सुलगाइ मंगायो। इक सिख संग हुकम फुरमायो ॥ ५१ ॥
'द्वै रंगरेटे सिख तिस थांए। थिरे दूर देखहु द्रिग लाए।
नाम दुहन महिं नहिं किह लीजै। – गुरू हकारति[10] इम कहि दीजै ॥ ५२ ॥
—हतहिं तुपक— इह देहु बताई। —परखन हेतु घाव को घाई'—।
सुनि सिख गयो सु जाइ अलावै। 'हित हतिबे इक, गुरू बुलावैं' ॥ ५३ ॥
नहिं दोनहुं तबि पाग संभारी। कुछ सिर पर कुछ कर महिं धारी।
झगरत आवहिं दोनहुं चले। सभा सहति गुर आगे खले ॥ ५४ ॥
'तुम महिं ते हम एक हकारा। किम दोऊ थिर झगरा[11] डारा।
कहैं जोरि कर 'गयो हकारन। नहिं इक को किय नांम उचारनि ॥ ५५ ॥

---

1. भांग 2. गोली 3. नीची 4. में 5. प्रसन्न 6. पहचानना 7. आगे
8. देखते रहे 9. दो नाली बंदूक 10. बुलाते हैं 11. झगड़ा

मैं चाहौं थिर अग्र तुफंगा। इह चाहति झगरति मुझ संगा।
मो पर हति परखहु प्रभु अबै'। सुनि प्रसंन होए गुर तबै ।। ५६ ।।
'देखहु डल्ला इन सम बीर। जंग करन हित हमरे तीर।
सुभट तीन सै तुझ संग जोऊ। देखि भली बिधि है कित कोऊ ।। ५७ ।।
हम हित तन को लोभ न इन के। जे कायर नहिं धीरज तिन के।
कहां लगे हम मारन तिन को। बाक सुनति हति धीरज मन को ।। ५८ ।।
जबि रण परहि तुफंग अगारी। मारण मरण होइ तिस बारी।
तबि तेरे भट ठहिर न सक्कैं। अपर बिगार भाजिबो तक्कैं ।। ५९ ।।
यांते महांवीर हम संगा। लाखहुं तुरक हते[1] विच[2] जंगा'।
डल्ले को हंकार उतारा। 'सत्ति सत्ति[3]' कर जोरि उचारा ।। ६० ।।
अदभुत ख्याल देखि बिसमाए। सकल सभा सुनि सुनि मुद पाए ।। ६१ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'डल्ले को प्रसंग'** बरननं नाम उनीसमो अंशु ।। १९ ।।

1. मारे गए 2. में 3. मान कर

अंशु २०

डल्ले को प्रसंग

दोहरा

सभि बहीर आयहु मिल्यो उतरनि समा पछान।
श्री गुर गोबिंद सिंह जी चढि करि चले किकान ॥ १ ॥

चौपई

पहुंचे जबि तलवंडी जाइ। तबि डल्ला कर जोरि अलाइ।
'करहु दुरग के अंतर डेरा। सभि बिधि ते सुख होइ घनेरा' ॥ २ ॥
सतिगुर कहैं 'वहिर[1] ही आछे। अबहि बीच बरिबो किम बांछे ?
रण करिबे की नाहिन आसा। लिखि चाह्यो तुर केश बिनाशा[2] ॥ ३ ॥
बहुर बसनि के सदन[3] ज़नाने[4]। असमंजस इत्त्यादिक जाने'।
सुनि डल्ले पुन बिनै बखानी। 'इक घर महिं सभि होहिं ज़नानी ॥ ४ ॥
अपर सथान करहिं सभि खाली। उतरहु अंतर सरब संभाली।
नांहि तजे ज़नानीआं सारी। बसहिं जाइ करि नगर मझारी ॥ ५ ॥
सकल मकान आप के जानो। बसहु अनेक सुखन को ठानो'।
पुनहि भन्यो 'हम बाहर भले। डेरा करहिं निकट ही किले ॥ ६ ॥
तेरो भाउ भले लखि पायो। जिम अंतर तिम बाहर भायो'।
इम कहि सतिगुर कीनसि डेरा। ह्वै करि अधिक दुरग के नेरा ॥ ७ ॥
कंध निकट हय[5] ब्रिंद[6] लगाए। तंबू तान दीनि तिस थांए।
कुछकु फरक ते सिंह थिरे हैं। दूर दूर लौ उतरि परे हैं ॥ ८ ॥
तिन ते परे परे बैरांर। उतरे पैदल अरु असवार।
आछी रीति लगाइसि डेरे। गुर के चहुंदिशि रच्छ वडेरे ॥ ९ ॥
कहि बहु बार देग़ करि अंतर। तूरन ही बरताइ निरंतर।
सभि बैराड़ रोज को पावहिं। अपनो भोजन आप बनावहिं ॥ १० ॥
सिंह संग़ सभि देग़ अहारा। अचवन करहिं अनेक प्रकारा।
जाइ दुरग के अंतर खाइं। प्रभु को थाल वहिर ही ल्याइं ॥ ११ ॥

---

1. बाहिर 2. विनाश 3. घर 4. स्त्रियां 5. घोड़े 6. बांधने की जगह

सुपति जथा सुख राति बिताई। शौच शनान प्रात अरुनाई।
बैठे सतिगुर लाइ दिवान। करहिं रबाबी किरतन गान ॥ १२ ॥
निकट निकट के ग्राम अनेक। आइ सु दरसहिं जलधि बिबेक।
बहुर सुंदरी साहिब देवी। प्रभु के महिल पाए सुध एवी ॥ १३ ॥
कित कित सिक्खन के घर रहिके। साहबजादे म्रितु भे लहि के।
सुनि सुनि सुध को पाइ दुखारी। करि करि शोक बह्यो द्रिग बारी ॥ १४ ॥
टिके आनि तिलवंडी जबै। दोनहुं आनि दरस किय तबै।
पुत्रनि पीर पाइ करि रोई। गद गद[1] गिरा बिकुल[2] बहु होई ॥ १५ ॥
सुंदरी सुत सुंदर सरबंगा। सिमरि सिमरि गुन गन ते चंगा।
रुदति अधिक पति चरनन पासी। शोक सहित बहु गिरा प्रकाशी ॥ १६ ॥
'सकल समाज सदन के साथा। पुत्रनि हतन कशट, हे नाथा !'।
बदन प्रफुलत अश्श्रु बहि बारी। बहु बिखाद ते व्याकुल भारी ॥ १७ ॥
इक पुत्रा सुंदर गुन पूरन। भयो सु हति करि शत्रुनि चूरन।
किम धीरज पावहि दुखियारी। दीन मना बहु रुदति लचारी[3] ॥ १८ ॥
श्री साहिब देवी तिस रीति। रुदित निकट दुख व्याकुल चीत।
श्री गुर धीरज दीनि हटाई। 'क्यों नाहक दुख शोक उपाई ॥ १९ ॥
तोहि पुत्र बड बीर बहादुर। गयो स्वरग देवन ते सादर।
जग महिं जसु अखंड को पावा। जनम लाभ को करम कमावा ॥ २० ॥
अस बीरन की जननी जोइ। शोक करन के उचित न सोइ।
तूं गुर के घर स्यान न ठानति[4]। जगत बिनाशी क्यों नहिं जानति ॥ २१ ॥
नित ही जो प्रणाम को पाइ। सो किम थिरहि पिखति बिनसाइ।
प्रथम जनम बालक लघु जोइ। दिन दिन प्रति दीरघ तन होइ ॥ २२ ॥
तरुन अवसथा लगौ[5] बिसाला[6]। होति प्रणाम सरबथा काला।
पुनहि सुपैद केस हुइ जाइं। छीजहि देहि जुवा बिनसाइ ॥ २३ ॥
जीरण बनहि बिनाशी होइ। सभि के रिदे बिदत, द्रिग जोइ।
बालक तरुन ब्रिद्ध के काल। अटकति नहीं भखति नित काल ॥ २४ ॥
इस महिं प्रीति करहि जो जेती। बिनसन बिखै ब्रिथा वधि तेती।
अस तनु पाइ सकारथ लावै। जनम मरन महिं[7] सो नहिं आवै ॥ २५ ॥

---

1. प्रसन्न 2. व्याकुल 3. लाचार 4. महत्त्व नहीं जाना 5. लगाव 6. विशाल 7. में

जहां अनंद बिलंद अनाशा। तहां आतमज[1] तेरो बासा।
उचित न शोक करन तिस हेतु। ग्यान गती चित महिं लिहु चेत'॥ २६ ॥
इत्त्यादिक कहि रुदति[2] हटाई। तऊ न पुत्त्र प्रीति मन जाई।
इतने महिं डल्ला चलि आयो। हाथ जोरि करि बाक अलायो॥ २७ ॥
'दिहु आइस अबि इन्है, गुसाईं! बसहिं दुरग के अंतर जाई।
सदन प्रथक इन हित किय खाली। करहिं बास को तहां सुखाली'॥ २८ ॥
सुनि गुर कह्यो 'बूझि लिहु इन को। बसहिं तहां जहिं भावति मन को'।
तबि डल्ला दोनहुं ढिग गयो। हाथ जोरि करि बोलति भयो॥ २९ ॥
'चलहु मात जी दुरग कि अंतर। थिरहु भले सुख लहहु निरंतर।
मोर कुटंब सकल कर जोरहि। सभि बिधि सेवहि चरन निहोरहि॥ ३० ॥
जनम सफल हम सभि को करीअहि। अंतर उतरहु भले बिचरीअहि'।
दोनहुं सुनि भाख्यो पिखि खलो। 'प्रभु के पगन[3] बिखैं[4] ही भलो॥ ३१ ॥
चरन सरोजन[5] बिछर न चाहति। बहु दिन ते हम पिखनि उमाहति'।
कितिक फरक करि सिवर उतारा। तंबू तन्यो कनात मझारा॥ ३२ ॥
सुत शोकारति सुंदरी सुंदर। साहिबदेवी जुति थिर अंदर।
डल्ला करि अहार बिधि नाना। थार पुचावहिं प्रीत महाना॥ ३३ ॥
पंच दिवस इस भांति बिताए। अतर देग़ बनै सभि खाए।
दिवस खशटमे प्रभु फुरमायो[6]। देग़ थान लिहु वहिर बनायो'॥ ३४ ॥
पुन डल्ले के किय समुझावन। 'लंगर बनहि निकट हम खावन।
घनो भाउ हम ने तुव देखा। सभि बिधि कीनी शेव विशेखा'॥ ३५ ॥
सुनि डल्ले कर जोरि उचारा। 'मोहि[7] कुटंब[8] समाजहि[9] सारा।
दुरग, धेनु, हय, महिखि[10] उदारा। घरि बाहरि सभि अहै तुमारा॥ ३६ ॥
जथाशकति मैं देग़ बनैहौं। लिहु शरधा पिखि जबि लग दैहौं।
घर महिं अंन आप को सारा। करिहो सिंहनि सहित अहारा॥ ३७ ॥
पुन गुर भाख्यो 'खुशी हमारी। बनहिं देग़ बाहर अबि सारी।
तेरो भाओ इसी बिधि अहै। प्रेम समेत साच ही कहैं'॥ ३८ ॥
लागी बनन देग बड बाहिर। अचहिं सिंह अरु छुधति[11] सु ज़ाहर।
सभि बैराड़ चाकरी पावैं। निज निज भोजन करहिं सु खावैं॥ ३९ ॥
केतिक दिन इस रीति बिताए। पुन डल्ला कर जोरि अलाए।
'सिंहन सहत सकल बैराड़। करौं आप हित त्यार अहार॥ ४० ॥

---

1. आत्मा 2. रोने से 3. चरणों में 4. में 5. कमल 6. कहा
7. मेरे 8. घर 9. वस्तुएँ 10. भैंस 11. भूख

अंतर पावन[1] पावन[2] करो। पावन सदन[3] सरब[4] ही धरो'।
इम कहि करि बहु भांतनि त्यारा। करवाइस बर स्वाद अहारा ॥ ४१ ॥
मधुर शनिघध प्रेम ते कर्यो। ब्रिंद नरन मिलि त्यार सु धर्यो।
बिनै बखानि गयो लैं अंतर। पंगति गन बैठाइ निरंतर ॥ ४२ ॥
सतिगुर हित चौंकी डसवाई। स्वेत सुजनि ते ऊपर छाई।
सभि के बीच थिरे गोसाईं। जुग मातन घर बिखै[5] बिठाई ॥ ४३ ॥
सहित बिराड़ सिंह बैठाए। सभि के हित अहार[6] गन ल्याए।
भली रीति ते परूसन[7] लागे। थाल बिसाल क्रिपाल सु आगे ॥ ४४ ॥
तिम अंतर जुग थाल पुचाए। दासी ब्रिंदन ले करि खाए।
जथा जोग सभि को त्रिपतायो। खरे होइ करि चुरा पठायो ॥ ४५ ॥
इक तुरंग बहु मोल दुशाला। भेट रजतपण शत तिस काला।
दे करि प्रभु को ग्रीव निवाई। खुशी लीनि आनंद मन पाई ॥ ४६ ॥
द्वै माता को तेवर[8] दोइ। बने बहुत धन लागे जोइ।
दीए पचास रजतपण तबै। भए प्रसंन अचव करि सबै ॥ ४७ ॥
उठि सतिगुर पहुंचे निज डेरे। सिंह बिराड़ सकल तिस बेरे।
डले कहु बहु भांति सराहा। सेव गुरू की करन उमाहा ॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'डल्ले को प्रसंग'** बरननं नाम बिसंती अंशु ॥ २० ॥

---

1. पाँव 2. पाओ 3. घर 4. सारा 5. में 6. खाना 7. सजाया 8. तीन कपड़े

अंशु २१

भगतू सुत प्रसंग

दोहरा

इसी रीति प्रभु जी बसे लरनि हंगामा छोरि[1]।
कमरकसा खोल्यो थिरे सुख को लहि सभि ओर ॥ १ ॥

चौपई

नाम दमदमा तिस को धर्यो। भए नचिंत रिपुनि बल हर्यो।
पसरी सुधि सभि देश बिदेश। आवन संगति लगी हमेश ॥ २ ॥
अरपि अकोरन[2] दरशन करैं। मनो कामना[3] तूरन पुरैं।
लगै दिवान शबद को गावहिं। प्रेमी सिंह हजारहुं आवहिं ॥ ३ ॥
श्री प्रभु चढ़ि अखेर को चाले। संगी सिंह अरूढति जाले।
जबि डेरे ते निकसनि लागे। कह्यो[4] सद्द इक इसत्री आगे ॥ ४ ॥
'बिनै करेंदी वो सतिगुर गोबिंद सिंह अग्गे। सोहणी दाहड़ी बीबी पग्गे।
*गोत वड़ाइच पिंड है चब्बे। खाली चली जे इक फल लग्गे।
सुनि साहिब तिस की दिशि हेरि। मुसकाने भाख्यो 'कहु फेर'।
इसत्री सुनि करि बहुर उचारा। पूरव गाव्यो जिसी प्रकारा ॥ ५ ॥
बूझी[5] प्रभू 'कहां ते आई ? कौन देश किस ग्राम बसाई' ?
'गुरू गरीब निवाज ! सुनीजै। चब्बा माझे† देश जनीजै[6] ॥ ६ ॥
श्री अंम्रितसर दक्खण पासे। तीन कोस पर ग्राम सु बासे।
तहिं ते मैं आई धरि आसा। जाचन पुत्र आपके पासा ॥ ७ ॥

---

1. छोड़ कर 2. अर्पण करना 3. इच्छा 4. कहा 5. पूछा 6. जाना जाता है

*हे सुंदर दाढ़ी और अच्छी पगड़ी बांधने वाले गुरु गोबिंद सिंह जी, मैं चब्बे गांव की रहने वाली वड़ाइच जाति की स्त्री विनय कर रही हूं। मैं संतान विहीन हू कृप्या मुझे एक पुत्र मिल जाए

†पंजाब का मध्य भाग

बैठे सभा न मांग्यो गयो। सद्द बिखै तुम सन कहि दयो।
दूर पंथ ते मैं चलि आई। पुरहु कामना शरन तकाई'॥ ८॥
सुनि प्रभु हुकम दास को कह्यो। 'मसु अरु कलम आनि अबि चह्यो।
ल्यायो तुरत गुरू लिखि दीन। सिख ने दैबे[1] हित कर लीन॥ ९॥
गुर बोले 'इक सुत तहि दयो'। कागत पिखति सिक्ख लखि लयो।
महाराज ए साता भयो। मुख ते कहो एक सुत दयो'॥ १०॥
सुनि प्रभु कह्यो 'सपत ही होहिं। आइ दूर ते जाच्यो[2] मोहि'।
ले कागत इसत्री हरखाई। करि बंदन को, सदन सिधाई॥ ११॥
समा पाइ सुत सात उपाइ। गुर महिमा को बहु बिदताइ।
पुन उदिआन[3] शिकार सिधारे। इत उत बिचरत म्रिगनि निहारे॥ १२॥
नहीं अखेर कहूं ते पावा। तबि सिंहन सन प्रभू अलावा।
'किह सिख ने कंघा नहिं कर्यो। जिस ते नहिं शिकार कर पर्यो'॥ १३॥
सुन्यो सभिनि इक ने कहि दीना। 'मैं कंघा केसन नहिं कीना'।
हुकम कर्यो 'अबि भी करि लीजै। तूरन[4] बनहु सुचेत मिलीजै'॥ १४॥
ततछिन तिन सुनि कै करि लीन। संग मिलाइ पयानौ कीन।
पुन उद्द्यान बिखै जबि फिरे। पिखि शिकार को मारन करे॥ १५॥
हटे प्रभू सभि को समुझायो। 'सिंहन को ऐसे बनि आयो।
होइ सुचेत सकल परकारे। चढन समैं अरदास उचारे॥ १६॥
कारज सरब सिद्ध हुइ जाते। नहिं दोनहुं बिन कहूं प्रयाते'।
सुनि कै सीख सभिनि हूं मानी। जथा आप श्री बदन बखानी॥ १७॥
आइ बिराजे सतिगुर डेरे। निसा बिताइ सथिरे सवेरे।
बैठ्यो निकट खालसा आइ। दरसहि संगति फल को पाइ॥ १८॥
दधि सों दीरघ घट को भर्यो। ले इक आनि दरस को कर्यो।
बूझन कीन 'बसहिं किस ग्रामू? तोहि पिता अरु तुव क्या नामू?"॥ १९॥
श्री गुर ते सुनि सकल बताई। 'मौड़ ग्राम महिं बसौं गुसाईं!
पिता भीम ते मैं सुत भयो। दलपति मोहि नाम धरि दयो'॥ २०॥
भे प्रसन कद[5] हेरि[6] बिसाला[7]। क्रिपा करति बोले तिस काला।
'जे करि भीम आतमज भयो। तबहि दलन की पति पद लयो'॥ २१॥
खुशी होइ गुर पाग बंधाई। 'जे सिक्खी को रखहि जिठाई[8]।
तौ ऐश्‍वरज भी वधहि महाना। मानति रहहु गुरू की आना'॥ २२॥

---

1. देने के लिए 2. याचना की है 3. वन 4. शीघ्र 5. ऊंचाई 6. देख कर 7. विशाल 8. महत्त्व

कितिक समैं बैठन तबि कर्यो। बंदन ठानि सदन चलि पर्यो।
दिन द्वै चारिक बंधी सिर पर। डोमन के गात्रन को सुनि करि ॥ २३ ॥
सो दसतार तिनहुं को दीनि। मूरख कछू बिचार न कीन।
नहि गुर महिमा मन महिं आइ। खाली रह्यो खुशी को पाइ ॥ २४ ॥
भाई भगतू का इक पोता। द्याल दास जिस नाम उदोता।
भुच्चो ग्राम बिखै ते गयो। गुर दरशन करि नंम्री भयो ॥ २५ ॥
कुछक रजतपण[1] भेट चढ़ाई। बैठ्यो श्री प्रभु द्रिशटि चलाई।
श्री मुख ते फुरमान बखाना। '—द्याल सिंह—अबि करहु प्रमाना ॥ २६ ॥
खंडे की पाहुल शुभ धारहु। बनहु खालसा भरम निवारहु।
केश काछ की रहति रखीजै। मीण मसंद[2] मेल नहिं कीजै ॥ २७ ॥
शसत्रणि को निस दिन तन धरीअहि। फते गुरू जी की सु उचरीअहि'।
सुनि कै कमदिल होइ उचारी। 'सिक्खी हमहुं कदीमी धारी ॥ २८ ॥
पिता पितामा गुर घर केरे। जहिं कहिं बिदते जगत बडेरे।
अबि मैं नई रीति क्या धारौं। निज बडिअनि को पंथ संभारौं ॥ २९ ॥
सभि गुर खुशी करत ही रहे। दास कदीमी[3] अपने लहे।
भई आरबल[4] अबै[5] बडेरी[6]। पहुल[7] लेनि न उचिता[8] मेरी' ॥ ३० ॥
श्री मुख ते कहि पुन समुझायो। 'हम ने उत्तम पंथ चलायो।
लोक प्रलोक बिखै सुखदाइक। राज तेज जुति[9] ह्वै रिपु[10] घायक ॥ ३१ ॥
तिस जहाज पर चढहि जु आइ। कीटी ते गयंद[11] बनि जाइ।
जो सयाल[12] सम सभि ते डरै। बने सिंह सिह नाम सु धरै ॥ ३२ ॥
यांते तूं भी धारन करीअहि। रीति मसंदी नांहिन धरीअहि।
सुनि पुन बचन हटावन कीना। गुरू बाक पर नहिन[13] पतीना[14] ॥ ३३ ॥
'अबि तौ क्रिपा करहु रहिं ऐसे। पिता पितामा हमरे जैसें'।
सुनि करि गुरू स्राप तबि दीना। 'बारि बारि बच बारनि कीना ॥ ३४ ॥
हम ते नहिं पाहुल तैं लई। अपर[15] बुद्धि हठ ते दिढ कई।
मिलहिं चूहड़े[16] जबहि हमारे। तिन ते करिहैं अंगी कारे' ॥ ३५ ॥
सुनि करि द्याल दास भा मौन। केतिक चिर महिं गमन्यो भौन।
पसचाताप करति चलि गयो। —गुर के संग बिरस[17] बहु भयो ॥ ३६ ॥

---

1 मुहरें 2. नीच मसंद 3. प्राचीन 4. आयु 5. अब 6. बड़ी 7. अमृत 8. उचित 9. युक्त 10. शत्रु 11. हाथी 12. सियार 13. नहीं किया 14. निश्चय 15. अवर 16. नीची जातियों के लोग 17. वर्ष

तबि ते श्री प्रभु, रुख़[1] न मिलायो। नहिं सादर कबि निकट बिठायो।
'भगतू का मसंद' धरि नामू। नांहिन गमने इसके धामू॥ ३७॥
भगतू सुत गौरा इक भयो। तिस ते द्याल दास उपजयो।
भगतू सुत दूसर भा जीवण। श्री हरि राइ निकट दिय जीवण॥ ३८॥
बिप्प्र पुत्त्र को तबै जिवायो। तिस को बंस अधिक बिरधायो।
ग्राम चक्क तिस महिं करि बासा। सो चलि करि आए गुर पासा॥ ३९॥
खंडे की पाहुल तिन लीनी। खुशी गुरू की जिस बिधि चीनी[2]।
राम सिंह इक नाम धरायो। दूसर फते सिंह मन भायो॥ ४०॥
इक माता ते दोनहुं भाई। दो बिमात[3] ते देउं बताई।
बखतू सिंह अरु तखतू सिंह। सुत जीवण चारों जनु सिंह॥ ४१॥
निकट ग्राम महिं इनको बासा। आवति जाति रहैं गुर पासा।
कितिक मास सतिगुरू बिताए। चहुंदिशि ते सिख दरशन आए॥ ४२॥
नर नारनि की भीर हमेश। हित दरशन के मिलहिं विशेश।
नाना बिधि की आनि अकोर[4]। करहिं समरपन जुग कर जोरि॥ ४३॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'भगतू सुत प्रसंग'** बरननं नाम बिसंती अंशु॥ २१॥

---

1. मुख 2. प्राप्त की 3. विमाता 4. वस्तुएँ हथियार आदि

अंशु २२

गोदड़ीआ भागो प्रसंग

दोहरा

इक दिन श्री मुख ते कह्यो 'राम सिंह तव ग्राम ।
उतरैं इक द्वै निसा तहिं देखहिं कस अभिराम[1] ॥ १ ॥

चौपई

सुनि बोल्यो कर जोरि सु तबै । 'सिकता घनो देश इति सबै ।
तीखण तेज तपन को पाइ । जहिं कहिं ते दीरघ तपताइ ॥ २ ॥
बहुर समीर[2] अधीरज वारी । करहि उडावन गग मझारी[3] ।
बहे वेग ते वहु दुखदाई । ऐसे देश ग्राम इस थाई' ॥ ३ ॥
श्री प्रभु कह्यो 'करीजहि त्यारी । चलहिं, बिलोकहिंगे इक बारी' ।
सुनि कै हुकम राम सिंह गयो । ग्राम बिखै सभि सों कहि दयो ॥ ४ ॥
ग्रीखम रितु महिं सरद सथाना । लग्यो बनावन जानि महाना ।
करि झारन चहूं ओरन ओटा । राख्यो बैठन हित थल छोटा ॥ ५ ॥
सिकता मोटा वीच बिछावा । बार बार जल ते छिरकावा ।
कोरे कुंभ नीर भरि करिके । बहु सीतल दीने विच[4] धरिके ॥ ६ ॥
इत्त्यादिक सभि करिकै त्यारी । नीके सतिगुर हेतु सुधारी ।
इक सिख गोदड़ीआ जिस नामू । जिस के चरित महां अभिरामू ॥ ७ ॥
अलप बैस महिं आवति भयो । भगतू पुत्त्रनि ढिग रहि गयो ।
गौरे कहि करि कार लगायो । कूप नीर को चरस वहायो ॥ ८ ॥
अपर सेव जो कहै कमावै । करहिं संझ लगि जहां लगावैं ।
इक दिन घास वाढिबे लायो । दहिसिर तोल बाजरा ल्यायो ॥ ९ ॥
चरबत[5] सेर एक दिन मांही । घास बढहि नित मिटहि सु नांही ।
दस द्युोसन लगि ढेर लगाए । नहिं आवति भा बिना बुलाए ॥ १० ॥
निकट ताल जल पीवन करै । रिदे सदा सिमरन हरि धरै ।
जाइ बिलोक्यो[6] हरखति[7] भए । लादे सकट आनिब कए ॥ ११ ॥

1. सुन्दर 2. अंधेरी 3, 4. में 5. चरना 6. देखा 7. प्रसन्न

पुनहि ल्याइ घर पीसन लायो। पीसत रहै न मन डोलायो।
जपुजी बार इकीस उचारै। कर पग सों नित कार संभारै ॥ १२ ॥
पुन दासी तिसके संग लाई। पीसहि आप सु बरजि हटाई।
भगतू सुत जीवण इक बारी। किस राहक को झिरकति भारी ॥ १३ ॥
गोदड़ीआ करि क्रिपा निवारै। 'क्यों नाहक[1] इसको बहु मारै'।
सुनि जीवण बोल्यो रिस[2] होई। 'राज साज की सुध क्या तोही' ॥ १४ ॥
उठि करि डाढी[3] लात प्रहारी। 'क्यों नहिं पीसन की करि कारी'।
कहि गोदड़ीआ 'क्रिपा न धारे। रिदे राज अहंकार अफारे ॥ १५ ॥
इम कहि लग्यो कार को आई। अफर्यो जीवण बहु दुख पाई।
जबि उपचार करन को आए। 'स्राप[4] दास दीनसि' बतलाए ॥ १६ ॥
'हम ते भी वध सेवक होयो। जिस के बाकन ते सुख खोयो'।
बिनै[5] बखानति गौरा ल्यायो। जीवण के जबि हाथ छुहायो ॥ १७ ॥
गयो अफारा सुख को पाए। मिलि सगरे तिस के प्रति गाए।
'हमरी सेवा करि तैं[6] पाइ। वध्यो अधिक पुन भा दुखदाई ॥ १८ ॥
जहिं इच्छा विचरहु तहिं आप। शकति न राखन की, कहिं स्राप'।
सुनि स्वेछा ही गमन करंता। हित सेवा जो कित[7] उचरंता ॥ १९ ॥
भोजन खाइ करति रहि कारा। सत्तिनाम निस दिन उर धारा।
अपर जहां कहिं बाक उचारा। तातकाल सफल्यो बहु बारा ॥ २० ॥
निज घर बस्यो प्रथम ही ब्याहा। त्रै सुत जनमे निज घर माहां।
इक दिन गयो ग्राम किस और। इक राहक खेतन को ठौर ॥ २१ ॥
क्रिखि बाढण को दयो लगाई। सभि बासुर लौ कार कमाई।
खान पान की खबर न लीनी। संध्या परी जाट मन चीनी ॥ २२ ॥
कह्यो 'चलहु अबि खिचरी देहैं। भली भांति तो कहु त्रिपते हैं'।
गोदड़ीआ बोल्यो रिस होही। 'बाढण[8] देहु भली बिधि मोही' ॥ २३ ॥
तबि ते भयो जाट दुखिआरा। हाइ हाइ करि ऊच पुकारा।
लोकन कह्यो 'महां अजमती। तिस ते कार कराति अती ॥ २४ ॥
अजहुंभि तिस को दधी खुलावहु। हाथ जोरि बिनती बखशावहु'।
जाट मात दधि मिरचां पाइ। धरि आगे सभि दई खुवाइ ॥ २५ ॥
बहु चरपरी खाइ करि गाई। 'सरप खाइ ततछिन तुझ माई'।
राति बिखै दोनहुं मरि गए। प्रात उठ्यो कितहू गमनए ॥ २६ ॥

---

1. फज़ूल 2. क्रोधित 3. बल से 4. शाप 5. विनय 6. तुम 7. कहीं 8. काटना

केतिक द्योसनि फिरि बहु थाइं। घर पहुंच्यो पुन सहज सुभाइ।
जो कहि देति सु कार[1] कमावे। जपुजी पढ़ै गुरू गुरध्यावे[2] ॥ २७ ॥
इक दिन खेत बिखै[3] चलि आयो। सरसों हुती उखारनि लायो।
मिल्यो साध बूझ्यो 'क्या करैं ? किस परचे महिं चित कउ धरैं' ॥ २८ ॥
वोल्यो 'जरां[4] उखारों आछे। पुन लगिबे कहु नाहिन बांछे'।
उत्तर दयो साध को जबै। गमन जथोचित कीनसि तबै ॥ २९ ॥
त्रै नंदन पूरब जनमए। पाइ बचन तबि सभि मरि गए।
हरख न शोक लेश जिस मन मैं। हेम[5] धूल[6] इक सम घर बन मैं ॥ ३० ॥
गुर आगवन सुन्यो हरखायो[7]। सहिज सुभाइक बिचरति आयो।
दरशन करति बिलंद अनद्यो। पद अरबिंद पुनहि पुन बंद्यो ॥ ३१ ॥
सतिगुर बूझन कर्यो ब्रितंत। लोकन कह्यो 'बडो इह संत'।
सकल प्रसंग प्रभू के संग। कर्यो बतावन जिम चित रंग ॥ ३२ ॥
रहति भयो सिंहन दल मांही। लेति अहार देग[8] ते खाही।
सतिनाम सिमरन गुर दरशन। करति नितप्रति दोशनि धरखन ॥ ३३ ॥
सभा बिखै सतिगुर इक बेरा। कह्यो 'बिशेश देश इस हेरा।
गोदड़ीए सम और न त्यागो। गूढ[9] प्रमेशुर सों लिव लागी ॥ ३४ ॥
देश पवित्र करनि समरत्थ। चहै सु करैं सकल इस हत्थ'।
श्री मुख ते इम सुजसु बखाना। संत महान सभिनि हूं जाना ॥ ३५ ॥
मिलि मुकति सर भागो माई। वधी प्रीति गुर महिं अधिकाई।
रहिबे[10] लगी दिगंबर[11] सोई। लाज कान[12] लोकन की खोई ॥ ३६ ॥
कथा बेद महिं जिस की अहै। नाम गारगी नगन सु रहै।
परमहंसनी बड अवधूता। तिम भागो गुर ढिग अवधूता ॥ ३७ ॥
गरवी सांग हाथ महिं धरै। सदा अनंद एक रस थिरै।
केतिक मास नगन जबि रही। इक दिन देखि निकट गुर कही ॥ ३८ ॥
'सुनि माई भागो सचिआरी। कुल नैहरि[13] ससुरारि[14] उबारी।
परमहंस आवसथा पाई। तुझ को दोश न लगै कदाई ॥ ३९ ॥
रहनि दिगंबर तुझ बनिआई। इक रस ब्रित्ति भई लिवलाई।
तन हंता सभि रिदे बिनाशी। पायो परम रूप अबिनाशी ॥ ४० ॥
तऊ संग तूं रहति हमारे। पहिरि काछ, ल ु सिर दसतारे।
ऊपर चीर चादरा लीजै। देह[15] अछादहु[16] समा बितीजै' ॥ ४१ ॥

1. कार्य 2. गुरू जी को ध्याता है 3. में 4. जड़ें 5. सोना 6. मिट्टी 7. हर्षित हुआ 8. भोजन शाला 9. स्थायी 10. रहने लगी 11. नंगा रहने वाला 12. संकोच 13. मायका 14. ससुराल 15. शरीर 16. नग्न

सुनि गुर हुकम मान तिन लीना। बसत्र शरीर अछादन[1] कीना।
कर महिं सांग[2] सदा गहि[3] राखे। रहै संग गुर के अभिलाखे[4] ॥ ४२ ॥
इक दिन लग्यो दिवान सुहाई। बैठ्यो डल्ला निकट गुसाइं।
सूबा जो सिर्हंद महिं रहै। नाम वज़ीदखान जिस कहैं ॥ ४३ ॥
गुर की सुधि तिलवंडी सुनी। बिसमान्यो जढ़ मुंडी धुनी।
बडे बडे रचि जंग अखारे। जीवति रह्यो न लरि किन मारे ॥ ४४ ॥
हति दीनसि[5] लाखहुं तुरकाना। ग्राम नगर भा शोक महाना।
लिखि भेज्यो डल्ले को तबै। 'गुर को पकरि देहु इत अबै ॥ ४५ ॥
हज़रत देहि तोहि बडिआई। गहो अचानक देहु पठाई।
नांहि त चमूं आनि करि भारी। तोहि सहत ले है गुर मारी' ॥ ४६ ॥
सो कागद आयो पढि लीनि। उत्तर को लिखाइ तबि दीनि।
'संग गुरू के प्रान हमारे। किम दैहैं तुझ मरे न मारे ॥ ४७ ॥
जे करि चमूं[6] घनी पुन आवै। मारि किितक हम तजि पुरि जावैं।
जाइ प्रवेशहिं जंगल मांही। जहां नीर हुइ प्रापति नांही ॥ ४८ ॥
गुर के संग रहैंगे सदा। तेरो हुकम करहिंगे अदा'।
इम लिखि पठ्यो सुनति दुख पायो। महां मूढ को वस न बसायो ॥ ४९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'गोदड़ीआ भागो प्रसंग'** बरननं नाम दवैत्रिसती अंशु ॥ २२ ॥

---

1. धारण 2. बरछी 3. पास 4. इच्छा रखती है 5. दिये 6. सेना

अंशु २३

बठिंडे गमन प्रसंग

दोहरा

इक दिन डल्ले सों कह्यो 'हमरी चाहि महान।
दुरग बठिंडे को पिखहिं बडो लरन को थान।। १।।

चौपई

केतिक दिन इत उत बिचरै हैं। सहिज सुभाइक पुन चलि ऐहैं।
तबि डल्ला बोल्यो कर जोरि। 'प्रभु जी तुरक न हैं इत ओर।। २।।
देश मवासी जल बिन सदा। दुरग बठिंडा ऊजर तदा।
पूरब बस्यो भयो चिरकाला। कीनसि बिनै पाल[1] महिंपाला[2]।। ३।।
बिचरहु जथा आपकी मरजी। तुरक न आइ सकैं रन गरजी[3]।
बहुर क्रिपा करि इत ही आवहु। बसिबे अपर[4] न चित ललचावहु'।। ४।।
दे धीरज को चढे गुसाईं। सिंहन चमूं संग समुदाई।
खेलति कितिक अखेर चलंते। इत उत बिचरति श्री भगवंते।। ५।।
चक्क ग्राम भाई को जहां। राम सिंह त्यारी किय महां।
तहां जाइ पहुंचे ततकाला। करहिं निहाल[5] सेवक निजाला।। ६।।
पिखि आगवन पहूचि अगारी। ग्राम नरन पद बंदन धारी।
ले करि संग अग्र ह्वै चाला। राम सिंह करि भाउ बिसाला।। ७।।
थल चलदल[6] तरुवरु के तरे। रची धोह सीतलता करे।
तहिं थिर ह्वै करि गुरू उतारे। तजि तुरंग को अंतरि बारे।। ८।।
सिकता मोट सकल थल डाला। जल सीतल छिरकाउ बिसाला।
कोरे घरे भरे गन धरे। रुचिर प्रयंक डसावन करे।। ९।।
आसतरन सित सहत निहारा। बैठि गुरू इम बाक उचारा।
'सुनिबे राम सिंह! कहि जोई। —तपत बिसाल ग्राम हम होई।। १०।।

---

1. नाम है 2. राजा 3. कारण 4. अवर 5. प्रसन्न 6. पीपल

कर्यो बिलोकनि सुंदर थान। श्री जमना के कूल समान।
बाउ पांवटे के सम आई। ग्रीखम की सभि तपत मिटाई' ॥ ११ ॥
इम सराहि[1] करि गुर भगवानू। भए सथिर सुठ देखि सथानू।
देग़ करावति भयो बिसाला। थाल परोसि ल्याइ ततकाला ॥ १२ ॥
मन भावत श्री प्रभु जी खाइ। अपर देग़[2] सभि को बरताइ।
सुंदरी साहिब देवी दोइ। सदन उतारि सेव करि सोइ ॥ १३ ॥
गुर को थाल राम सिंह लयो। सीत[3] प्रशादि अचवतो भयो।
जुग मातन के दोनहुं थाल। ले भयाणीयों ने तिस काल ॥ १४ ॥
सीत प्रसाद सुंदरी केरा। सो अचवन कीनसि तिस बेरा।
साहिब देवी को ले थार। दियो कूकरनि आगे डारि ॥ १५ ॥
सुनि कै कोप कर्यो मन मांही। कहि भेज्यो सतिगुर के पाही।
—हम ने कह्यो नहीं तुम लेहु। ले करि आप करी बिधि ऐहु ॥ १६ ॥
राम सिंह संग प्रभू उचारा। 'इह क्या कीनि तुमारी दारा ?।
हाथ बंदि बोल्यो तिस काला। 'इस को भयो न गोत कुनाला[4] ॥ १७ ॥
गुरू अंग संग नहिं तन लागा। इम बिचार करि थार सु त्यागा'।
दयालदास सुनि प्रभ आगवनू। पूरब मान्यों बाक न जवनू ॥ १८ ॥
भुच्चो ते सो चलि करि आयहु। चरन सरोजन[5] सीस निवायहु।
तिस को पिखि बोले न गुसाईं। राम सिंह कर[6] बंदि अलाई[7] ॥ १९ ॥
'इस ही बाड़ी को प्रभु ! एहो। अपनो जानहु क्रिपा[8] करेहो'।
तऊ न रुख[9] करि, कछु न बखान्यो[10]। तबि दोनहुं ने आशै जान्यो ॥ २० ॥
समुझायो तहिं करिकै न्यारो। 'दुरग बठिंडे प्रभू पधारो।
भुच्चो ग्राम निकट को जाइं। तूं चलि करि त्यारी करिवाइ ॥ २१ ॥
देग बिसाल कराहु* करीजै। तबि करि अरजी[11] गुरू रिझीजै'।
सुनि करि द्यालदास गमनयो। भोजन पुंज त्यार करिवयो ॥ २२ ॥
संध्या भई राम सिंह प्राही। 'चलहु प्रभू उतरहु घर माही'।
कह्यो 'इहांही बसहिं सुखारे। आछो थान पसिंद[12] हमारे' ॥ २३ ॥
'करहु गुरू पग पंकज[13] पावन। सदन हमारे ह्वै हैं पावन'।
बिनै बखानति ले करि चाला। इके बिमात[14] इस की तिस काला ॥ २४ ॥

---

1. श्लाघा 2. प्रसाद 3. बचा हुआ 4. खाना 5. कमल 6. हाथ 7. कहा 8. कृपा 9. ध्यान देकर 10. कहा 11. विनय 12. अच्छा लगा 13. कमल 14. विमाता

*कड़ाह प्रसाद की विशाल देग़

सूखम खेस सुपेद अछेरा। भुज पर धरि छपाइ मग[1] हेरा[2]।
—राम सिंह के सदन न जावौं। इत आवहिं गुर अग्र चढावौं— ॥ २५ ॥
इम उर धरि करि थिरी अगारी। सतिगुर जानी तिहि बिधि सारी।
मुरे जानि तिस की दिशि जबै। राम सिंह बोल्यो बच तबै ॥ २६ ॥
'इत आवहु इत आवहु स्वामी'। 'चल तूं' भाख्यो अंतरजामी।
'हम भी आए, है कुछ कामू'। होरति[3] गए पौर त्रिय धामू ॥ २७ ॥
—लख्यो प्रेम मम—तिह त्रिय जानी। धाइ चरन पंकज लपटानी।
खेस भेट दे करि हरखाई। —धंन धंन गुर उर लखि पाई ॥ २८ ॥
राम सिंह की दिशि पुन आए। अग्र होइ निज घर प्रविशाए।
घर पर काचो हुतो चुबारा। तिस महिं चाह्यो—करहिं उतारा ॥ २९ ॥
राम सिंह के घर बिच[4] जाना। काशट[5] की तहिं धरी सुपाना।
बखतू सिंह के घर महिं जोइ। चढनि सुपान म्रित्तका सोइ ॥ ३० ॥
—मम शरीक[6] के सदन न जाएं—। काशट पौरी गुरू चढाए।
ऊपर चढि अविलोकी जबै। श्री मुख ते फुरमायो तबै ॥ ३१ ॥
'इह क्या राम सिंह तैं[7] कीना ?। कठन थान को मारग दीना।
करति शरीका इतहि चढाए। ऐसे नहिं तुझ को बनिआए[8] ! ॥ ३२ ॥
बसे राति को तिसहि चुबारे। कीनसि शौच शनान सकारे।
उतरे म्रितका की सोपान। बखतू सिंह तखतू सिंह जानि ॥ ३३ ॥
पलंघ डसाइ गुरू बैठाए। टेक्यो माथ अकोर चढाए।
इक बालिक तिन को तबि आयो। श्री प्रभु अंक[9] बिखै बैठायो ॥ ३४ ॥
राम सिंह अविलोकति झिरका। 'अदब[10] नहीं तुम राख्यो गुर का।
बसत्र आदि छुवबे जिन नांही। करहु अवग्गया अंक बिठाही ॥ ३५ ॥
कह्यो प्रभू 'नहीं झिरकन बांछो। इह भी पुरख होइ है आछो'।
एक तुरंगम को शिंगार। लिए रजपतण सौ करधारि ॥ ३६ ॥
राम सिंह इह तबै उपाइन। दई प्रभू को धरि सिर पाइन।
खुशी करी मन बांछति दीनि। कहि करि हय मंगवावन कीनि ॥ ३७ ॥
भए अरूढन पंथ पधारे। गमने केचित कोस अगारे[11]।
भुच्चो ग्राम तीर चलि गए। तहां तड़ाग बिलोकति भए ॥ ३८ ॥
तिस महिं पानी कुछक मलीन। तिखा तुरंगम[12] की प्रभु चीन।
बीच प्रवेशे पान करावन। हय[13] की ग्रीवा कीनि निवावन ॥ ३९ ॥

---

1. रास्ता 2. देखना 3. रोकना 4. में 5. लकड़ी 6. भाई 7. तूने 8. शोभा नहीं देता 9. गोद 10. शिष्टाचार 11. आगे 12, 13. घोड़ा

पानी पान न कीन पछाना। श्री मुख ते तिस समैं बखाना।
'है मसंद की इत बदेबोइ। यांते असु जल छक्यो न सोइ'॥ ४० ॥
ग्राम बिखै सिख तबै पठायो। द्यालदास घर को दरसायो।
बैठ्यो हुतो, आनि तिस कह्यो। सुनि कै सभि हूं निशचै लह्यो॥ ४१ ॥
द्यालदास सुनिकै आगवनू। तूरन गमन्यों त्यागति भवनू।
मिल्यो जाइ पग बंदन ठानी। हाथ जोरि करि अरज बखानी॥ ४२ ॥
'श्री सतिगुर कीजहि इत डेरा। जानहु भले कदीमी[1] चेरा'।
सुनिकै श्री मुख ते फुरमाइ। 'उतरैं भागू ग्राम सु जाइ'॥ ४३ ॥
लख्यो ब्रिद्ध बहु बिनै बखानी। 'त्यार करी मैं देग महांनी।
भोजन अचहु[2] करहु बरतावन। पावनि पावनि करि घर पावन'॥ ४४ ॥
पुन गुर भन्यो 'न उतरन बनै। गमनैं पंथ घाम है घनै'।
इम कहि अग्र पयानो कीन। द्याल दास ते लीनि न दीन॥ ४५ ॥
राम सिंह तिह संग उबाचा। 'अबि उपचार करहु इम चाचा।
सकल अहार तिहावल जोइ। ऊपर सकट[3] लाद लिहु सोइ॥ ४६ ॥
गमनहु संग प्रसंन ता धरैं। लेहिं देग बंटनि को करैं।
गुरू ब्रिरुख तुम सों लखि महां। बखशैं हैं चलीअहि जहिं कहां'॥ ४७ ॥
इम सुनिकै तिन सकट लदायो। करिकै त्यार संग चलीवायो।
आगै गमन कीनि सुखधामू। डेरा कीयसि भागू ग्रामू॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**बठिंडे गमन प्रसंग**' बरननं नाम तीन बिसंती अंशु॥ २३ ॥

---

1. पुराना। 2. पान करो 3. ठेला

अंशु २४
देउ निकासनि प्रसंग

दोहरा

निस बिताइ श्री सतिगुरू करिकै सौच शनान।
गए बठिंडे दुरग को देख्यो जाइ महान ॥ १ ॥

चौपई

गुर बहीर मैं मिलि चलि आयो। गोदड़ीआ जिह नाम कहायो।
द्यालदास भरि सकट अहारा। फिरै लिय, नहिं अंगीकारा ॥ २ ॥
डेरा कीयसि गुर भगवान। उतरे सरब चुगिरदे आनि।
निसा परी करि खान रू पाना। सुपति जथा सुख क्रिपा निधाना ॥ ३ ॥
पहिरा देत सिंह हैं खरे। बारी निज निज जाग्रनि करे।
अरध राति महिं कन्या आई। दीन प्रदछना ग्रीव निवाई ॥ ४ ॥
बहु प्रकार की बिनै बखानी। 'तुम आए मम ब्रिथा[1] पछानी[2]।
जंगल देश जितिक छित जोइ। धरि सरूप मैं आई सोइ ॥ ५ ॥
दैव जोग करि तुम आगवनू। सगरो देश करहु अबि रवनू[3]।
इक तो काणो देव भयाना। बसहि दुरगमहिं दुशट महाना ॥ ६ ॥
सै अनाज की बधन न देति। छीन नरन ते खाइ सु लेति।
इस को करो निकासनि जबै। दिन प्रति देश बसहिगो सबै ॥ ७ ॥
पुन उपजहिंगे अंन महाने। तुम आगवन प्रताप पछाने'।
सुनि सतिगुर कन्या ते सबै। धीरज दीनसि कहि म्रिदु तबै ॥ ८ ॥
सुपति जथा सुख राति बताई। सौच शनान प्राति हुइ आई।
बैठे सतिगुर लाइ दिवान। इक पंडित गुर संग महान ॥ ९ ॥
सो भी थिर्यो आनि करि पास। श्री प्रभु कर्यो प्रसंग प्रकाश।
'बडो दुरग इह रचिबो कर्यो। बडो देव विच[4] बासा धर्यो[5] ॥ १० ॥

---

1. पीड़ा 2. जान लिया 3. पवित्र 4. में 5. रहता है

देश उजारन महिं जिह आशै। कहहु बिप्र[1] किम तिसै निकासैं'।
सुनि पंडित इम बाक बखान्यो। 'महां पुरख तुम सभि किछ जान्यो ॥ ११ ॥
बूझ्यो मोहि कहौं प्रभु पासी। रच्यो दुरग इह महां मवासी।
बिनैपाल महिपाल बडेरा। रच्यो दुरग धन दे बहुतेरा ॥ १२ ॥
भयो महीप[2] गोरीआ जबै। इस मैं भा प्रवेश सो तबै।
ऊपर ते बिदार तिन दीना। हुतो बिसाल अलप इह कीना ॥ १३ ॥
हाथी को बलि दिहु इस थान। तौ इस के बिच[3] करहु पयान[4]।
देव आदि जो अपर सनाति। सभि चलि जाहिं, न रहैं कदांति ॥ १४ ॥
बिना दीए बलि, भी चलि जावहु। हो समरथ जिम चहह बनावहु।
तऊ हरख करि सकल पयानैं। बलि को लेति सु भलो बखानैं' ॥ १५ ॥
श्री गुर कह्यो 'कहां अबि हाथी। प्रापति नहिं उपाइ के साथी।
हाथ आइ, सो कहां मंगावैं। दे बलि, थल बासी हरखावैं ॥ १६ ॥
सुनि पंडित कहि 'नहिं जि मतंगा। महिख मंगाउ अंग सम रंगा'।
तबि सिक्खनि सन[5] गुरू बखाना[6]। 'ग्राम बंगेहरि निकटि सथाना ॥ १७ ॥
चलि तुम जाहु महिख[7] को ल्यावहु। तहिं के मालक सकल सुनावहु'।
पंच सिंह गमने तिस काला। राहक खरे पिखे तहिं जाला ॥ १८ ॥
सभिनि संग तिह निकट अलायो। 'श्री गुर तुम ते महिख मंगायो।
बलि को देहिं निकासहिं देउ। सभि को भल होइ लखि भेउ' ॥ १९ ॥
महां बली अरु मारनहारा। जाटन को दुखदान उदारा।
बद्री तरु सों खरो खसंता। जिस देखे ते भै उपजंता ॥ २० ॥
मतो मताइ सभिनि मन जाना। सिंहन संग हास को ठाना।
—जबि छेरहिंगे बल ते मारहि। इत उत भाजहिं सकल पधारहिं ॥ २१ ॥
खरे तमाशा देखहिं इहां—। सिंहनि संग ऊच तबि कहा।
'उत हेरहु बदरी तरु तरे। खरो महिख, लिहु आगे करे ॥ २२ ॥
श्री गुर ते हम नाहन राखैं'। कहि इम हास करन अभिलाखै।
सुनि करि पंचहुं सिंह सिधारे। बली महिख जहिं खरो अगारे ॥ २३ ॥
कह्यो जाइ 'गुर तोहि बुलायो। चलि आगे, बलि दे मन भायो'।
सुनि गुर नाम महिख चलि पर्यो। बली निबल सम पग मग धर्यो ॥ २४ ॥
सने सने चलि जाति अगारी। तिम पंचहुं सिंह चले पिछारी।
राहक हेरति होइ हिराने। कलावान सतिगुरू पछाने ॥ २५ ॥

---

1. ब्राह्मण 2. राजा 3. में 4. प्रवेश 5. से 6. कहा 7. भैंसा

पशचाताप करति हीं रहे। —हसिबे[1] हेतु हमहु क्यों कहे—।
ऊच उठावति मुख को गयो। महिख गुरू के सनमुख भयो ॥ २६ ॥
उठि श्री प्रभु बिच[2] दुरग पधारे। अधिक उतंग[3] खरो द्रिढ भारे।
सने सने चढि शिखर सिधारे। पीछे गमने संगि जि सारे ॥ २७ ॥
ऊपर संग महिख भी गयो। सभि महिं धीरज धरि थिर भयो।
मैलागर सिंह की दिशि हेरा[4]। श्री प्रभु हुकम कर्यो तिस वेरा[5] ॥ २८ ॥
करि झटका बलि दिहु इस तांई। बहुर[6] निकासहि देव इथाईं'।
मैलागर सिंह सुनि ततकाला। खैंचि निकार्यो खड़ग कराला ॥ २९ ॥
बल ते इस प्रकार को बाह्यो। सीस अजात महिख को लाह्यो।
पर्यो मुनेरन ऊपर भारी। दिए प्राण सतिगुरू अगारी ॥ ३० ॥
मरन सुधार्यो अपनि भलेरे। सभिहिनि महिं प्रभु कह्यो उचेरे।
'महिख मरे को तरे[7] गिरावे। वलि एक दुतिय न कर लावै' ॥ ३१ ॥
सुनि तूशनि होए सभि कोई। साध गुदड़ीआ बोल्यो सोई।
'हुकम होइ तर इसे गिरावौं। मैं एकाकी वल दिखरावौं' ॥ ३२ ॥
शारत समझ्यो लियो उठाइ। ऊच मुनेरे ते कुछ ल्याई।
तरे बगाइ दूर को गेरा। बिसमाने जबि सभि ने हेरा ॥ ३३ ॥
इतने बिखे देव चलि आयो। श्री प्रभु को निज दरस दिखायो।
हाथ जोरि करि अरज़[8] गुज़ारी[9]। 'बासा गोइंदवाल अगारी ॥ ३४ ॥
हमरी जाति हज़ारहुं थिरे। महां उजार नरन की करे।
श्री अंगद करि हुकम पठाए। श्री गुर अमर हमहुं पर आए ॥ ३५ ॥
संग छरी के जारति हमैं। भाजे प्रेत सरब तिह समैं।
गरभवती तबि मात हमारी। भाजि प्रसूती खेत मझारी ॥ ३६ ॥
फरडा लगि जुवार को मेरे। फूट्यो नैन एक तिस बेरे।
दुतिय भ्रात जनम्यो तबि और। 'टुंडा' टूट्यो कर तिस ठौर ॥ ३७ ॥
तबि ते हम बासे इस थांए। संमत सौ ते अधिक बिताए।
इत भी बसन देति क्यों नांहीं ? कौन देश महिं हम चलि जांहीं ? ॥ ३८ ॥
श्री प्रभु हुकम कीनि तिस तांई। 'अबहि कदीमी बसहु उथाई।
फिटकी पुरी सिर्हंद उजारहु। जड़ां उखारि सत्तुद्रव डारहु ॥ ३९ ॥
नहिं तहिं ते को बसति हटावै। सदा बास तुमरो बनि आवै।
निससहु अबि बिलंब[10] नहिं कीजै। इह सभि हमरो देश लखीजै ॥ ४० ॥

1. प्रसन्न 2. में 3. ऊंचा 4. देखा 5. समय 6. फिर 7. नीचे 8. विनय 9. की 10. देरी

जंगल नाम भाखते जोइ। आनंद घनो मालवा होइ'।
सुनि बोल्यो 'मैं छुधा[1] समेत। पहुंच्यो जाइ नहीं इस हेत ॥ ४१ ॥
हुकम अघावन को कहि दीजै। पुन मोकहु इत ते निकसीजै'।
श्री मुख तिह के साथ बखाना[2]। 'आगे कहां करति तू खाना ॥ ४२ ॥
आज नहीं कैसे तुम बन्यो'। सुनि कै देव गुरू संग भन्यो।
'महाराज फिरिकै इस देश। बिचरति जित कित खाति विशेश ॥ ४३ ॥
अंन हज़ारहुं मण को भोजन। देखति फिरौं अशुच हुइ जो जन।
सतिगुर अरु हरि नाम न कहैं। तिन ते छीनि खात हम रहैं ॥ ४४ ॥
आज प्राति ही मोहि निकारहु। नहि कित ते करि लीन अहारो।
श्री मुख कह्यो 'अबहि तूं जाहु। है मसूर पुरि तुमरे राहु[3] ॥ ४५ ॥
तहां दुपहिरा करि बिसरामू। संध्या कहु सिर्‌हंद करि धामू'।
सुनति हुकम[4] को कीनि पयाना[5]। करि बंदन निज हित को माना ॥ ४६ ॥
श्री प्रभु कीनि तिसी थल डेरा। बिसमति लोक सुनति जिन हेरा।
महांराज की सतुति सुनावैं। 'इनके काज इनहु बनि आवैं" ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**देउ निकासनि प्रसंग**' बरननं नाम चतर बिसंती अंशु ॥ २४ ॥

1. भूख 2. कहा 3. मार्ग 4. आज्ञा 5. चले

अंशु २५

दमदमे प्रसंग

दोहरा

खान पान करि राति को थिरि प्रयंक पर सोइ।
उतरे तरे सु दुरग के हुते वपारी कोइ ॥ १ ॥

चौपई

तिन सस्सी पुंनूं को गायो। बार बार करि राग बसायो।
राति बिखै[1] रस को बहु कीनि। थिरि प्रयंक सुनि गुरू प्रबीन ॥ २ ॥
चिरंकाल लगि गावति रह्यो। सभिनि सुन्यो आछे मन लह्यो।
सुपति जथा सुख राति बिताई। जागे प्रभू प्राति हुइ आई ॥ ३ ॥
सौच शनान दिवान[2] लगायो। बूझ्यो गुरू 'राति किन गायो ?'।
सिंहनि कह्यो 'लाद को ल्याए। उशटर[3] ब्रिंद संग, तिन गाए' ॥ ४ ॥
'जाइ बुलावहु ल्यावहु तांहि'। सुनि करि दास गयो तिन पाहि।
'गुर हकारहिं' चलि सो आयो। दरशन करते सीस निवायो ॥ ५ ॥
स्री प्रभु भनहिं 'राति जिम गावति। सस्सी पुंनूं राग बसावति।
बैठि इहां अबि गावन करो। तिसी प्रकार अधिक रस धरो' ॥ ६ ॥
सुनि कर जोरति बोल्यो सोइ। 'अब्रि तौ गायो जाइ न कोइ।
लाज आप ते मुझ को आवै। समुख बोलिबो[4] नांहिन भावै' ॥ ७ ॥
तबि गुर दई कनात तनाइ। सभि के ओटै तांहि बिठाइ।
प्रभु को हुकम मानि करि गायो। तऊ राति सम रस नहिं पायो ॥ ८ ॥
धन दे करि तिस किये निहाल[5]। करी मौज श्री प्रभु बिसाल।
सस्सी पर किह तरक[6] उठाई। तिस प्रति उत्तर कर्यो गुसाईं ॥ ९ ॥
अंगुर गड न अवनी मांही। ससी आ भई प्रवेशन तांही।
प्रेम महातम बडहुं बडेरा। प्रान जान लगि जिनहुं निबेरा ॥ १० ॥

---

1. में 2. संगत 3. ऊँट 4. बोलना 5. प्रसन्न 6. प्रश्न किया

तिन के नाम सदा थिर भए। लाखहुं बरख[1] बखाने[2] गए।
गुरू प्रमेशर सन जिन प्रेम। से ततकाल पावते छेम ॥ ११ ॥
बिना प्रेम फोकट सभि जतन। प्रेम सुकरमनि सभि महिं रतन।
प्रेमी जप तप बिन मख जोग। प्रापति होति उचेरे लोग' ॥ १२ ॥
इत्त्यादिक महिमा मुख गाई। कितिक समें तहिं थिरे गुसाइँ।
कह्यो ब्रितंत बिराड़नि फेर। 'बिनैपाल न्रिप चढ्यो अखेर ॥ १३ ॥
जबि उद्यान बिखै चलि गयो। कौतक एक बिलोकति भयो।
अजा पसूता ब्रिक्क सों लरै[3]। अपनो बतश[4] बचावन करै ॥ १४ ॥
थल अजीत बड लख्यो मवासी[5]। अपने सचिवन साथ प्रकाशी।
—शीघ्र दुरग को पावन करिअहि। जित कित ते नर पुंज हकरीअहि— ॥ १५ ॥
नर खोजे नहिं पावति घने। जान्यो शीघ्र दुरग नहिं बने।
भाग हाकमी[6] जितिक अनाजे। छोरि दीनि राहक कौ राजे ॥ १६ ॥
तितिक म्रित्तका दुरग पवाई। मिले आनि मानव समुदाई।
इस प्रकार तूरन बनिवावा। अधिक उतंग[7] मवासि चिनावा ॥ १७ ॥
सुनी सुरंग बीच इस कीन। गढ भटनेर लगौ चिन दीनि[8]।
इत्त्यादिक कुछ अपर प्रसंग। करे सुनावनि सतिगुर संग ॥ १८ ॥
भए त्यार अगली भुनसारा[9]। हय पर ज़ीन डारि असवारा।
उलंघि पंथ केतिक जबि आए। डेरा 'संमी' ग्राम सु पाए ॥ १९ ॥
तहिं के नरन आइ कर जोरे। जथा शकति धरि अग्र्र अकोरे[10]।
दरशन करि पद बंदति सारे। दुगध दधी ले धर्यो अगारे ॥ २० ॥
त्रिण दाना घोरनि को दीनि। रसत पुचाई देग सु कीन।
सुपति जथा सुख राति बिताई। प्राति भई चढिकै सुखदाई ॥ २१ ॥
आनि दमदमे कीनसि डेरा। डल्ला मिल्यो आनि तिस बेरा।
बंदन करी चरन अरबिंद[11]। बैठि निकट तहिं नर मिलि ब्रिंद ॥ २२ ॥
द्याल दास सकटा भरि जोइ। संग लिये फिरि ल्यायो सोइ।
राम सिंघ तबि अरज़ बखानी। 'बखशहु प्रभू आपन जानी ॥ २३ ॥
आदि तिहावल अधिक अहारा। लीए बठिंडे सकट पधारा'।
द्याल दास तबि चरनी पर्यो। हाथ जोरि करि आगै थिर्यो ॥ २४ ॥

1. वर्ष 2. कहा 3. अभी-अभी बच्चे को जन्म देकर बकरी रीछ से लड़ रही है 4. वत्स, बच्चा 5. किले के लिए 6. भाग, हिस्सा 7. ऊंचा 8. भटनेर किले तक सुरंग बनवा दी 9. प्रतःकाल 10. भेंट 11. चरण-कमल

देखि क्रिपाल कह्यो 'थिर थयो। भगतू कुल मसंद इह भयो।
हम बखश्यो देवहु बरताइ'। भी अरदास गुरू अगवाइ ॥ २५ ॥
जबि देख्यो भोजन को जाइ। परे किरम जिस महिं समुदाइ।
आनि गुरू ढिग अरज़ सुनाई। 'खवे लाइक नहीं गुसाईं ॥ २६ ॥
बिते दिवस बहु किरम परे हैं। फिर्‌यो संग बिच सकट धरे हैं।
सुनि प्रभु कह्यो 'हमे दिखरावउ। पीछे ते सभि महिं बरतावउ' ॥ २७ ॥
केतिक ल्यायो गुरू अगारी। ले निज हाथनि गुलका धारी।
करतल पर बट्टी गुर करी। देग भगत की पूरन परी ॥ २८ ॥
पुन बरतावनहार निहारा। शुद्ध अहार[1] भयो इक बारा।
सिंहन महिं लाग्यो बरतावन। बहु कराहि दे करि त्रिपतावन ॥ २९ ॥
भयो रौर तबि लूट मचाई। पर्‌यो खालसा ले ले धाई।
आपे आप सगर ले गए। सतिगुर हेरि हेरि बिकसाए[2] ॥ ३० ॥
कितिक देर पीछे सिख आए। हुते पंच दस नहिं कुछ खाए।
पिखि गुर कह्यो 'जाहु इस काला। द्याल दास को गहि लिहु पाला' ॥ ३१ ॥
गए कहैं 'दिहु देग हमारी'। गौरे सुत तबि छाप उतारी।
तिन को दई 'मल ले खावहु। देग बिखै कुछ भंग न पावहु ॥ ३२ ॥
एक तुरंगम एक दुशाला। दयाल दास दीनसि तिस काला।
बखश मिलायो संगति माही। रह्यो संग सेवा करि पाही ॥ ३३ ॥
करि नर दरशन सदन सिधारे। खान पान सैना करि सारे।
थिर ह्वै केतिक दिवस बिताए। पुरहिं काम सिख संगति आए ॥ ३४ ॥
इक दिन डल्ले को ले संग। हित अखेर के चढे तुरंग[3]।
गए दूर म्रिग देख्यो जबै। सर खर[4] छोरि संघार्‌यो तबै ॥ ३५ ॥
मारति श्री मुख ते बहु हसे। ओशट[5] बीच दसन[6] दुति लसे।
पिखि डल्ले कर जोरि अलाए। 'इस को हति करि क्यों बिकसाए ?' ॥ ३६ ॥
'ए गुर सिख गुर केरि खजाना[7]। रह्यो चरावति दरब महाना।
अधिक खराब कर्‌यो अरु खायो। तिस अघ[8] ते इह म्रिग तन पायो ॥ ३७ ॥
सुनि डल्ला बैरार ! बिचारा। ले पर अंस किसी परकारा।
तिस को आमिख काट्यो जाइ। इन कुट्ठै रींधै अरु खाइ ॥ ३८ ॥
जे नर पर की अंस चुरावैं। कै बल ते छीनहिं हरखावैं।
म्रिग बकरे आदिक तन धरैं। लेनहार तिन भखन[9] करैं ॥ ३९ ॥

1. भोजन 2. देख-देखकर प्रसन्न हुए 3. घोड़ा 4. तीक्ष्ण तीर 5. होंठ 6. दाँत 7. खज़ानची 8. पाप 9. भक्षण करते हैं

स्वामी अंस चुरावें जेई। इसी दशा दुख पावें तेई।
हम तबि बरज रह्यो, नहिं मान्यों। यांते हसे ब्रितंत सु जान्यो' ॥ ४० ॥
इम कहि दूर दमदमा रह्यो। पहुंचनि समा न मन महिं लह्यो।
तरु कीकर अवलोकनि करे। तहां थिरे प्रभु डेरा करे ॥ ४१ ॥
तबि सिक्खन कर जोरि बखाना। 'प्रभु जी! कर्यो न हम कुछ खाना।
दोनहुं समे रहे अबि खाली। सभि को ब्यापी छुधा बिसाली ॥ ४२ ॥
किम इह निसा बतावनि करैं। प्राति होति पुन चलिबो परैं'।
सुन श्री मुख ते हुकम बखाना। 'चढहु कीकरां खरी महाना ॥ ४३ ॥
बल ते इनहुं हिलावनि करीए। मन भावति अचवहु छुधि हरीए[1]'।
मानि वाक को भए अरोहनि। गहि झूणे कीने द्रिग जोहन ॥ ४४ ॥
अनिक भांति के भए अहारा। खुरमे ब्रिंद जलेब उदारा।
मोदक[2] आदि परे समुदाई। गन भजन बरखा बरखाई ॥ ४५ ॥
खाइ खाइ करि सिख त्रिपताने। कितिक सिंह नहिं कीनसि खाने।
बूझ्यो प्रभु 'तुम क्यों नहिं खायो। सगरे दिवस हाथ नहिं आयो' ॥ ४६ ॥
हाथ जोरि कहि सिक्ख जि सियाने। 'श्री प्रभु! आप न कीनसि खाने।
किम हम खाइ सकहिं तुम बिना'। सुनि प्रसंन ह्वै श्रीमुख भना ॥ ४७ ॥
'इह सिख गुरमुख लेहु बिचारे। पेट पाल हैं अचवन वारे।
मनमुख भी सिख अहैं घनेरे। सिक्खी पावन दूर बडेरे' ॥ ४८ ॥
पुन चढि करि निज डेरनि आए। इम केतिक दिन जबहि बिताए।
खान पान करि थिरे गुसाईं। निसा वधी अधिकी अधिकाई[3] ॥ ४९ ॥
लोक पसू बहु भए दुखारे। करहिं प्रतीखन ह्वै भुनसारे।
बैठे सभिनि बिखै नर नारी। होहि न प्राति सभिनि मति हारी ॥ ५० ॥
को कारन भा जाइ न जाना। मारतंड[4] चढिय न असमाना—।
रुके लोक सगरे अकुलाए। श्री परमेशुर नाम धिआए ॥ ५१ ॥
अधिक राति जबि बीतन करी। प्राति सभिनि को चिंता परी।
डल्ले संग मिले सभि जाइ :— 'अधिक निसा कुछ लख्यो न जाइ ॥ ५२ ॥
चलहु प्रभू को बूझहि एह। हैं सरबग्य बताइ सु देहिं'।
डल्ले जुति मानव समुदाइ। पद अरबिंद निवें सभि आइ ॥ ५३ ॥

---

1. मन भर कर भूख मिटाओ 2. लड्डू 3. रात इतनी बड़ी हो गई कि सूर्य ही नहीं निकला 4. सूर्य

बैठे बिसमति बात बखानी। 'निस की गति कुछ जाइ न जानी'।
गुरू कह्यो 'भाणा हरि जोई। देवन बिखै सपरधा[1] होई ॥ ५४ ॥
सूरज सुरपति[2] हटि हटि बैठे। अपर ब्रिंद सुर होइ इकैठे।
बरजी वरखा हुइ जग नांही। दिनकर[3] थिर्‌यो सुरग के मांही ॥ ५५ ॥
राति वधण को इहु लखि कारन'। सुनि डल्ले किय बाक उचारन।
'प्रभु जी किम जीवहिं बिन वारी[4] ?' सुनि सतिगुर तबि तूशन धारी ॥ ५६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**दमदमे प्रसंग**' बरननं नाम पंच बिसंती अंशु ॥ २५ ॥

1. स्पर्द्धा 2. इन्द्र 3. सूर्य 4. पानी, जल

अंशु २६
सिखन प्रसंग

दोहरा

'औड़ लगी बरखा हटी बीते दिवस कितेक ।
खेती लागी सूकिबे उबर्यो खेत न एक ॥ १ ॥

चौपई

प्रजा भई दीरघ दुखिआरी । हुइ दुरभिच्छ[1] पर्यो नहिं बारी ।
हुई है कहां हवाल हमार । बिना अंन क्यों जियन बिचार' ॥ २ ॥
राहक महां कशट को पाए । मिलि मिलि बैठि बैठि पछुताए ।
केतिक ग्रामनि के समुदाई । चित चिंता बसि भे इक ठाई ॥ ३ ॥
'अबि समीप सतिगुरू सुहाए । जिन ते मनोकामना पाए ।
एक एक की पुरवति आसा । मिलिकै देश चलहु गुर पासा ॥ ४ ॥
जाचहु बरखा गुरू करैं हैं । जीव दान जग को तबि दैहैं' ।
इम बिचारि संगत समुदाई । स्याने सिक्ख करे अगुवाई ॥ ५ ॥
आनि दमदमे कीनसि डेरे । चहुंदिशि के नर मिले घनेरे ।
धरे त्रास दुरभिछ को भारे । आइ गुरू सभिहिनि परवारे ॥ ६ ॥
करि करि नमो चहूंदिशि थिरे । केचित बैठे केचित खरे ।
खरो मेवरो अरज़ गुजारी । 'करहु प्रभू जग की रखवारी ॥ ७ ॥
नहीं गगन महिं मेघ दिखंते । सभि देशन के खेवेत सुकंते ।
अबि के फसल जि अंन बिनाशा । नहीं नरन की जीवन आशा ॥ ८ ॥
अपनी संगति जानि बचावहु । करहु बाक बरखा बरखावहु' ।
सुनि अरज़ी प्रभु क्रोध वधायो । डल्ले दिशि अवलोकि अलायो ॥ ९ ॥
'उठि सुरपति[2] को हतहु बिसाला । पठहि मेघ जिस ते ततकाला ।
गुरू बचन पर धरि बिसवासा । डल्ला उठ्यो बिलोकि अकाशा ॥ १० ॥

---

1. अकाल 2. इन्द्र

पनही सपत[1] बगाइ[2] सु मारी। मुख ते गारी अनिक अगारी।
'मानि हुकम को बरखहु तूरन[3]। हम भी बच मानहिं गुर पूरन ।। ११ ।।
बीच त्रिलोकी है अस कौन। जिस के मन महिं श्री गुर भौन।
आप क्रिशन रण करि जै पाई। गुर दासन ते मार कराई[4] ।। १२ ।।
देर न धरहु करहु अबि बरखा'। तेज प्रभू के सुरपति धरखा[5]।
इतने कहे गगन घन छाए। जल गेरनि लागे समुदाए ।। १३ ।।
श्री मुख ते बहु हसे क्रिपाला। कह्यो शलोक सकल तिस काला।
लोक हज़ारहुं पिखैं तमाशा। सुन्यों श्रोन इम शबद प्रकाशा ।। १४ ।।

भै विचि पवण वहै सदवाउ ।। भै विचि चलहि लख दरीआउ ।।
भै विचि अगनि कढै वेगारि ।। भै विचि धरती दबी भारि ।।
भै विचि इंदु फिरै सिर भारि ।। भै विचि राजा धरम दुआरु ।।
भै विचि सूरज भै विचि चंदु ।। कोह करोड़ी चलत न अंतु ।।
भै विचि सिध बध सुरनाथ ।। भै विचि आडाणे आकास ।।
भै विचि जोध महा बल सूर ।। भै विचि आवहि जावहि पूर ।।
सगलिआ भउ लिखिआ सिरिलेखु ।।
नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु ।। १ ।। (आसा वार म: १)

चौपई

इह शलोक सभि पठ्यो सुनायो। सभि संगति के मन महिं भायो।
बरखा लागी परन घनेरी। गए सकल नर घर तिस बेरी ।। १५ ।।
गुरू सुजसु को जाति बखानहि। 'मूढ सु नर जो इनहुं न मानहि'।
सकल देश महिं भयो सुकाला। हरे खेत पिखि भए निहाला ।। १६ ।।
अंन अनेक भांति के होइ। जहिं कहिं गुर प्रताप को जोइ।
नित प्रति चढहिं अखेर बहाने। दूर दूर थल पिखनि पिआने ।। १७ ।।
गाह्यो देश मालवा फिरिके। इत उत को नर हेरनि करिकै।
इक दिन सतिगुर बैठि बखाना। 'दयावान इहु देश महाना ।। १८ ।।
सिक्खी भाव बडेर बडेरा। दोश इही कहिं झूठ घनेरा[6]।
पुत्री पीछे पलहिं सदाई[7]। अंन घनो हुइ तोट[8] न काई ।। १९ ।।

1. सत्य 2. फेंक कर मारी 3. तुरन्त 4. गुरु जी ने अपने सेवकों से इन्द्र को पिटवाया 5. काँप उठा 6. जो बहुत झूठ बोलते हैं 7. लड़कियाँ बेचकर अपने आपको पालते हैं 8. कमी

नहिं अघावहिंगे मन काचे। पैसे की त्रिशना महिं राचे।
बाक न मानहिं रहिं मति मारे। अपनो भल न जानि गवारे ॥ २० ॥

बचन

खान को भोस[1]। सिक्खी को प्रदेस[2]।
मतलब पातशाही[3]। राज बिन पाही[4] ॥ १ ॥

चौपई

एकवार सभि देश मझारी। पर्‌यो गरज के ताप सु भारी।
सकल दुखी तन थरहरि कांपे। पीत बदन दिन रात संतापे ॥ २१ ॥
खायो जाइ न पीवैं पानी। परे रहैं दुरबलहि महानी।
डल्ले आनि गुरू के पास। कही ताप की ब्रिथा प्रकाश ॥ २२ ॥
'महाराज ! कुछ जतन बतावहु। अपने जानहु ताप मिटावहु।
तुम बिन हमरो नहिं रखवारा। गह्यो आसरा बडे बिचारा' ॥ २३ ॥
सुनति बिनै को भए क्रिपाल। कह्यो 'उपाइ करहु ततकाल।
सिर पर राखहु सगरे केश। गुरबाणी नित पड़हु विशेश ॥ २४ ॥
निकसै ताप देश ते तबै। गुरमति करनि लगहुगे जबै'।
सुनि डल्ले सभिहूंनि सुनाई। करति भए तिम नर समुदाई ॥ २५ ॥
तजि निज ग्रामनि को चलि आए। रहे दमदमे पढन लगाए।
पुन गुर कह्यो 'लहहु सुख सारे। धरमसाल रचि ग्राम मझारे ॥ २६ ॥
सिख संगति तिस बीच बिठावहु। धरहु भाउ उर टहिल कमावहु।
जोड़ करहु सति संगति केरा। गुरबाणी मन रुचो घनेरा ॥ २७ ॥
हुइ है सुख नहिं चड़ि है ताप। नाश होइंगे सोग संताप'।
धरि करि त्रास सकल ने मानी। कही गुरू जिम सभि तिम ठानी ॥ २८ ॥
दया धरम अग पठिबो बानी। सिक्खी पसरी देश महानी।
पुन सिरहंद के सूबे जानि। गुरू टिके ते दुखी महान ॥ २९ ॥
लिख्यो पत्र निज जोर जनायो। डल्ले के समीप पहुंचायो।
गयो दुरग महिं ले करि सोई। सतिगुर को सुध तिस की होई ॥ ३० ॥
एक सिक्ख को तबै पठायो। 'गुपति रहहु सुनि कहां पठायो[5]।
सुनि कै डल्ला तबि क्या कहै। नहीं डरै, कै डरपति अहै' ॥ ३१ ॥

1. खाने के लिए वेश बनाते हैं 2. सिक्खी देश से परे हैं 3. इनकी ही पातशाही है 4. राज्य प्राप्त किये बिना है 5. गुरु जी ने शिष्य से कहा कि स्वयं गुप्त रहकर यह पता लगाओ कि वज़ीर खाँ ने क्या कहला भेजा है

अंतर इत उत सिख बिचरंता। डल्ला कागद तुरक सुनंता।
'क्यों निज बुरा करनि अभिलाखा। पातशाहु रिपु गुर ढिग राखा ॥ ३२ ॥
अबि भी कर्‌यो जि चहिं भलिआई। हम को गुरू दिह पकराई।
सैन घनेरी देति पठाइ। मिलि करि तिस को देहु गहाइ ॥ ३३ ॥
नतु तुझ को दें बडी सजाई। बसिबे देहिं नहीं इस थांई।
लूटहिं ग्राम उजारन करैं। आइ अचानक सभि को धरैं[1]' ॥ ३४ ॥
सुनि डल्ले उत्तर लिखवायो। 'हम नहिं डरहिं जि चहति डरायो।
भेजहिं दल तिस को संग लरैं। मारि लूट आगै चलि परैं ॥ ३५ ॥
निरजल बन महिं बस नहिं तेरो। सिर के साथ गुरू है मेरो।
किस बिधि गहैं न गहिबे देहिं। निज प्राननि के संग रखेहिं' ॥ ३६ ॥
इम उत्तर डल्ले लिखवायो। समुख वजीदे तुरत पठायो।
सगरी बात दुहनि दिशि केरी। सिख ने सुनि भले तिस बेरी ॥ ३७ ॥
सो सतिगुर ढिग आनि सुनाई। सुनि करि खुशी भए सुखदाई।
केतिक दिवस बितीते और। सतिगुर बासे तिस ही ठौर ॥ ३८ ॥
संगति दूर दूर ते आवै। प्रभु के पाइन सीस झुकावै।
अरपहि अनिक अकोरनि[2] ल्याइ। मनहु कामना अपनी पाइ ॥ ३९ ॥
निस महिं दस सिंहनि को पहिरा। पलंघ निकट जागहिं नित ठहिरा।
इक दिन खेडा पावन कीनि। गावन नाचन नर नारीन ॥ ४० ॥
सो सिख आपस महिं इम कहैं। 'निंद्रा बसी गुरू अबि अहैं।
चलहु बिलोकहिं ततछिन आवैं। तबि लौ कहां बिगर कछ जावै ॥ ४१ ॥
सतिगुर जागनि ते पहिलाई। आइ थिरैंगे इस ही थांई'।
इम कहि करि सिख पंच पधारे। पंच न गए थिरे डर धारे ॥ ४२ ॥
खेडा कर्‌यो बिलोकन जबै। डरति परसपर बोले तबै।
'इहठां आइ लियो कहु कहां। श्री प्रभु कोप[3] करहिंगे तहां ॥ ४३ ॥
क्यों नाहक अपराधी थीजै। अबि भी चलहु न बिलम लगीजै'।
इम बोलति तूरन हटि आए। त्रासति खरे भए निज थांए ॥ ४४ ।
—गुर सोवति भी जागति सदा। जिन ते छिप है बात न कदा—।
गए हुते सो डर धरि थिरे। जे नहिं गए अफसोस सुधरे ॥ ४५ ॥
—इह पिखि आइ गए जिम अबै। हम भी जाति बिलोकति तबैं।
थिरे रहे क्या तुमने पायो। दिखहिं तमाशा[4] बाद गवायो ॥ ४६ ॥

1. पकड़ेंगे 2. भेंट 3. गुस्सा 4. तमाशा देखना

गुर तौ सुपति रहे अबि तांई—। इम पंचहुं निस झूरि बिताई।
भई प्राति निज डेरे गए। सौचि शनान गुरू तन कए ॥ ४७ ॥

लगे दिवान सु सकल बुलाए। बूझे 'निस महिं कहां सिधाए ?
किम किम आपस महिं तुम भाखी[1] ? कहहु साच, हम सभि के साखी' ॥ ४८ ॥

दुहां धिरां[2] तबि साच बखानी। जिम बीती, जिम भाखी बानी।
श्री गुर सुनि करि सभिनि सुनाए। 'निकटे दूर दूर निकटाए ॥ ४९ ॥

गए जु, तिन को मन हम पाही[3]। गए न, तिन मन खेडे माही'।
सुनि सभि साच साच कहि मानी। 'धंन धन सतिगुर गुन खानी' ॥ ५० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**सिखन प्रसंग**' बरननं नाम खशट बिसंती अंशु ॥ २६ ॥

---

1. तुमने आपस में क्या-क्या बातें कीं 2. दोनों पक्षों वालों ने 3. निकट

अंशु २७

डल्ले झूलन सिंह प्रसंग

दोहरा

सो बरखा करि घन गए खेती लइ पकाइ।
कितिक मास बीते बहुर बारि बूंद नहिं पाइ ॥ १ ॥

चौपई

ग्राम निकट के सर सुसकाने। पसू मनुख जहिं पानी पाने।
श्री गुर सुनि डल्ले की बात। कही तुरक सों लिखि बक्खयात ॥ २ ॥
जीवण मरण गुरू के संग। पठहिं चमूं तबि घालहिं जंग'।
इत्त्यादिक जबि सिंघ सुनाई। अधिक प्रसंन भए गोसाईं ॥ ३ ॥
जबि डल्ला गुर ढिग चलि आयो। बैंठि गयो पग सीस निवायो।
भए प्रसंन क्रिपालु बखाना। 'तो संग बंधप चमूं महाना[1] ॥ ४ ॥
रोज गुरू सरकार जु बरते। सभि चाकर जिम लैब करते।
तिम तूं गिनि निज संग जितेक। लीजहि अपनो रोज तितेक ॥ ५ ॥
निज बंधप बैराड़ान दीजै। सभि को चित आनंद जुति कीजै।
इस ते बिनां आन अभिलाखा। सो भी देंहिं करहु निज भाखा ॥ ६ ॥
सुनि, डल्ला बैराड़ उदारा! तुझ पर रिदा प्रसंन हमारा।
धरहु कामना, सो कहि, देई। हम ते करहु जाचना[2] लेई ॥ ७ ॥
सुनि डल्ले कर जोरि उचारी। 'पातशाहु! चहियति अबि बारी[3]।
पशु पंछी मानव समुदाया। बिना नीर ते हुइ बिकुलाया ॥ ८ ॥
जे प्रसंन बरखा दिहु अबै। टोभे पुरहिं लहैं सुख सबै'।
सुनि करि ऐसे प्रभू उचारा। 'मीहु कहा हम कांख मझारा ॥ ९ ॥
जिस ते अबि निकास करि देंहिं। अपर कामना जाचन लेहि'।
इम कहि सुनि होइ सभि मौन। कितिक समें थिर, गा पुन भौन[4] ॥ १० ॥

---

1. सगे-सम्बन्धियों की फौज काफी है 2. याचना 3. पानी 4. फिर अपने घर चला गया

अगले दिवस रोज़ बरतंता। चाकर गन गिनि गिनि सुलहंता।
तबि डल्ला बंदन हित आयो। बैठति पग पर सीस निवायो ॥ ११ ॥
करि करि लेखा सभि चित चेते। आवति जाति लेति इक देते।
तिन दिशि देखति प्रभू बखाना। 'लिहु डल्ला निज रोज़ महाना ॥ १२ ॥
अपर कामना भी लिहु संग। जाच लेहु अपनो हित अंग!'
सुनि डल्ले कर जोरि उचारी। 'पातशाहु दिहु बरखा बारी ॥ १३ ॥
प्रानी हरखहिं जिस ते सारे। इस ते अपर न चाह उदारे।
खुशी आप की सभिहिनि ऊपर। घनी देहु बरखा अबि भू पर' ॥ १४ ॥
मौन भए सुनिकै गुन खानी। —सभि चाहिति, सर[1] रह्यो न पानी।
तबि उठि गमन्यो डल्ला घर को। नित हरखाइ सेव करि गुर को ॥ १५ ॥
सो दिन जामनि बीते जबै। दरस करन आयो पुन तबै।
बैठि गयो गुर के चित आयो। तथा तुरक सों लिख्यो पठायो[2] ॥ १६ ॥
होइ प्रसंन दियो कुछ चाहति। रीझ पचाइ न, देति उमाहति।
डल्ले बिराड़! जाच अबि लेहु। जो मुख कहैं तथा करि देहुं' ॥ १७ ॥
'श्री प्रभु पातशाहु गुर साचे! दिहु बरखा प्रानी सभि जाचे'।
सुनति प्रसंन क्रिपाल महाना। श्री मुख ते मुसकाइ बखाना ॥ १८ ॥

बचन

'जट्ट दा बोल। बाणीए दी चुप्प।
गुरू दा वाक। ब्राह्मण दा साक'।

चौपई

इह छूछे नहिं जाइं कदाइं। चहैं जु चित महिं लें बरि आई[3]।
जट पिंने तां कंध थी घिंने[4]। अपर पास ते क्यों नहिं लिने ॥ १९ ॥
जाहु डल्ला अबि बिलम न लाउ। टोभे सभि ही साफ कराउ।
बरखा दई अधिक अधिकाते। बार बार तैं जाची जां ते' ॥ २० ॥
डल्ला उठ्यो अनंदति होवा। गुरू प्रसंन अपन पर जोवा।
सुनि सुनि कर नारी बिसमाए। —घने आइं घन गुर फुरमाए ॥ २१ ॥
नहिं बिलोकिअति अबि नभ मांही। लगी औड़ घन पय्यति नांही।
बरखा हुई है—, हेरन हेतु। नर नारी बिसमंति सुचेत ॥ २२ ॥

---

1. तालाब 2. जैसे लिख भेजा था 3. बलपूर्वक 4. यदि जाट चाहे तो दीवार से भी ले लेता है

ढोल ब्रिंद इकठे करिवाए। तीर ताल[1] के जाइ बजाए।
सुनि सुनि मानव अए पलाई। ताल सुधारहिं चौंप उठाई ॥ २३ ॥
तिह छिन चली पौण पुरवाई[2]। निकसे घन जिम गज समुदाई[3]।
घुमडी घट घरीक महिं घनी। घोर घोर घन चपला[4] सनी ॥ २४ ॥
बडी बडी बूंदैं बहु परी। बरसन लग्यो अधिक भी झरी।
जित कित नीर प्रवाह चलंता। ऊचे थल ते नंम्रि[5] ढरंता ॥ २५ ॥
धाइ धाइ नर धामन बरे। बारी बहैं बिलोकन करें।
'धंन गुरू, गुर धंन' बखानहिं। 'महां मूढ जो इनहुं न मानहिं' ॥ २६ ॥
तीनहुं दिन सु तीन ही जामनि[6]। बरखी घटा दमकती दामनि[7]।
अस इक बार पर्‌यो बहु बारी। ब्याकुल होइ परे नर नारी ॥ २७ ॥
खान पान भूली सुधि नाना। बिदरति सदन सुधारति ठाना[8]।
सभि मिलि करि डल्ले कहु प्रेरैं। 'बिनती कीजहि गुरू अगेरैं ॥ २८ ॥
—हमरे सुख हित घन बरखायो। अबि सभि बिपते बांछति पायो—'।
सुनि डल्ला पहुंच्यो तिह समो। हाथ बंदि करि कीनसि नमो ॥ २९ ॥
अरज़ गुज़ारी: 'अबि बस करीअहि। बडो बारि चहूं ओर निहरीअहि।
दल मनिंद घन घने दिसावहिं। इक आवति बरखति इक जावहिं ॥ ३० ॥
इह प्रसंग बड रावर केरा। चहुंदिशि महिं सिमरहिं चिर बेरा।
पुरह कामना जन भल भांती। नहिं को दुलभ आप ते बाती ॥ ३१ ॥
ब्रहमादिक आग्या महिं सारे। किस महिं शकति हुकम को टारें'।
सुनि प्रभु कह्यो: 'घनहुं के पन ही। हतहु उरध को सपत स गन ही[9] ॥ ३२ ॥
हटि जै है बरखा ततकाला। अपन सहित करि सभिनि सुखाला'।
सुनि डल्ले उठि कीनसि तैसे। घटा फटी घन गमने गै से[10] ॥ ३३ ॥
गुरू बाक की शकति बिलोकि। बिगसे शरधालू सभि लोक।
गुर की कीरति घरि घर भरी। राइबेल, चंबेली खिरी ॥ ३४ ॥
इक झूलण सिंह नाम फिरंता। हाथ दुतारा रुचिर बजंता।
मात सुंदरी की सुनि दासी। सुनि कै कह्यो बाक तिस पासी ॥ ३५ ॥

---

1. तालाब के किनारे पहुंच कर 2. पूर्वी हवा 3. हाथियों का समूह 4. बिजली 5. नीचे (ढलान) की ओर 6. रात 7. बिजली 8. जीर्ण-शीर्ण घरों का उद्धार करते हैं 9. सात जूतियाँ गिनकर ऊपर बादलों की ओर मारो 10. हाथियों के समान बादल चले गये

'इह ठां कहां बजावन करैं। चहैं बजाइ जि आवहु उरैं'।
सुनि झूलण सिंह बूझति अहैं। 'माता कहैं किधौं तूं कहैं ?' ।। ३६ ।।
'माता कहै न, हौं ही कहौं। रिस न होन दिहुं, इम चित चहौं'।
सुनि झूलण सिंह तहां पधारा। सुर को करति बजाइ दुतारा ।। ३७ ।।
सुंदरी सों दासी कहि[1] दई। 'सिंह दुतारा वाइन ठई।'
बूझ्यो मात 'शबद को गावे ?'। कह्यो 'नगावै इमहुं बजावै ।। ३८ ।।
केतिक चिर तहिं बैठि बजायो। उठि झूलण सिंह बहुर सिधायो।
गुरू अखेर[2] गए तिस काला। आए संध्या परी क्रिपाला ।। ३९ ।।
झूलण सिंह मन बिखै बिचारी। ग़ैरत[3] अधिक रिदे महिं धारी।
मुझ ते मनमति भी अधिकाई। जे हुइ मम भगनी[4] क माई ।। ४० ।।
तहां कहां मैं एव बजावौं। तबि तौ लाज धरों हटि जावौं—।
बहु दुख पाइ अधिक पछुतायो। क्यों गुर महिलां निकट बजायो ।। ४१ ।।
ले तीखन तबि क़रद[5] चलाई। काटि लिंग को दयो बगाई।
नेम कर्‌यो बोलन को तबे। धारी मौन आरबल सबे ।। ४२ ।।
सिंहन हाल देखि तिस केरा। कर्‌यो सुनावन सगरो झेरा।
'प्रभु जी ! मौन धरे थिर भयो। श्रोणति बह्यो शिशन[6] कटि दयो' ।। ४३ ।।
गुर कहि 'कहां भयो इम कीनि ? मन की हबस[7] होइ नहिं हीन'।
केतिक चिर महिं घाव अछेरा। बस्यो जाइ पिखि थान चंगेरा ।। ४४ ।।
चक्क्र बैठिबे थल थो सोइ। रह्यो इकाकी इक मन होइ।
निकट ग्राम जो सेवा करै। खान पान आनहि ढिग धरै ।। ४५ ।।
तिसी ग्राम की महिखी धेनु। चारन चले हटावे सैन।
मारि लशटका[8] करे पिछारी। —कहां करै इह ?—नरन बिचारी ।। ४६ ।।
आशै समझ्यो गयो न कोई। गए चुगावनि को पुन सोई।
लूटी आनि कटक[9] ने जबै। लख्यो अकूया इम कहि तबि ।। ४७ ।।
सभि नर मिलिकै तबि चलि आए। बंदहिं पाइन सों लपटाए।
तबि जुग हाथन पेट बजायो। —चढहु फतै हुइ—तिनहुं जनायो ।। ४८ ।।

---

1. दासी बोली 2. शिकार 3. शर्म, लज्जा 4. बहन 5. कटार, छुरी 6. इन्द्रिय 7. वासना 8. लाठी 9. फौज

आशै समझि गए नर धाइ। लरे जाइ लिय माल छुडाइ।
नाम 'अकूआ' सभि ही कहैं। सेवा शरधा करते रहैं॥ ४९॥

नई जु बधू ब्याह ले आइ। तबि इह देखन तिस को जाइ।
गुर को बाक—हवस नहिं मिटै—। सो तबि रही, न क्यों हूं हटै॥ ५०॥

पूरन सिक्खी महिं बहु भयो। अबि लौ तिस को थान पुजयो।
जन की पुरि[1] कामना घनी। इस प्रकार तिह साखी सुनी॥ ५१॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**डल्ले झूलन सिंघ प्रसंग**' बरननं नाम सपत दसमो अंशु॥ २७॥

1. लोगों की समस्त कामनाएँ पूर्ण कीं

अंशु २८

डल्ला सिंह प्रसंग

दोहरा

सुध सुनि करि किस निकट ते सिंहन कह्यो सुनाइ।
'ज़ेरदसत लवपुरी को सूबा बहु दुखदाइ'॥ १॥

चौपई

संगति छीन लई इत आवति। तजहि न नाम गुरू सुन पावति'[1]।
इक दिन फेर दई सुध काहू[2]। 'सूबा जो सिर्हंद के मांहू।. २॥

तिन भी संगति लीनसि छीन। मूढ कुतसत[3] काज को कीन'।
सुनि गुर बोले धरिकै रोसा[4]। '—सूबे क संगति ते खसा—॥ ३॥

इस बिधि आनि कहति नहिं कोऊ। —संगति छीनी भाखति सऊ'।
पुन सभिहिनि को कह्यो सुनाइ। 'साच कहैं सिख जुति समुदाइ॥ ४॥

बीती नौ सतिगुर पतिशाही। रण उपदेश्यो संगति नांही।
सेवा करनी भाउ बिसाला। जपहु नाम पकराई माला॥ ५॥

अबि मैं चंडी पाठ पठावौं। सिंह नाम धरि शसत्र गहावौं।
लघु चिरीअनि ते बाज तुरावौं। मरद[5] मिलाइ गरद[6] दिखरावौं॥ ६॥

खंडे की पाहुल जो लेइ। सिंह नाम धरिवावै जेइ।
सो शसत्रनि ते छूछ न रहै। बहु अभ्यास नितप्रति गहै॥ ७॥

केसन[7] को बहु अदब रखीजै। मेरी सिर पर छाप लखीजै'।
पुन डल्ले सन हुकम बखाना। 'गहि गहि लाठी बहु नर पाना[8]॥ ८॥

हेतु छीनिबे संगति जावहु। लेहु वसतु सो नहीं गवावहु।
अबि संग्राम करनि सिखरावैं। इन ते ही तुरकनि मरिवावैं'॥ ९॥

---

1. गुरु का नाम सुनकर 2. किसी ने खबर दी 3. खोटा 4. गुस्सा 5. शूरवीर 6. धूल, मिट्टी 7. बाल, केश 8. हाथों में

उत कहि पठ्यो संगतां मांही। 'इह बैराड़ हुकम मैं नांही।
पाहुनचारी थिर इस थाना[1]। आवहु अग्र बनहु सवधाना ॥ १० ॥
वसतू नहीं खुसावनि करीए। पुरशारथ अपने महिं धरीए'।
इत ते डल्ला ले नर घने। उत सुचेत कस कटि[2] सिख बने ॥ ११ ॥
भयो भेर दुहूअनि दिशि केरा। पर्‌यो रौर इक बारि बडेरा।
ऊचे थल सतिगुर तबि थिरे। देखि देखि बिकसैं मुद भरे ॥ १२ ॥
इह खोसति ओह नहीं खुसावैं। हेल[3] करहिं इक झेलति जावैं।
शसत्रनि मारहिं दोनहुं दिशि महिं। बल को करति भिरति आपस महिं ॥ १३ ॥
थिरे निकट तिन गुरू सुनावौं। 'इम तुरकनि सन जंग मचावैं।
मारन मरन हजारन होइ। राज लेहिं सिंह बनि सभि कोइ' ॥ १४ ॥
भिरति इसी बिधि संगति आई। गुर पद कमलन सीस झुकाई।
अस्स्वासन[4] करि बहुर बखाना। 'इम शत्रुनि सन बनि सवधाना ॥ १५ ॥
शसत्रन गहि संहारन करीए। अपना आप उबारन धरीए'।
पुन सतिगुर करिवाइ कराहू। इक दिशि सभि धरिवायहु तांहू ॥ १६ ॥
हुकम कर्‌यो 'लूटहु सभि जाई'। सुनि करि पर्‌यो खालसा धाई।
बल को करैं धकेलनि तबे। अधिक तिहावल लूटति सबै ॥ १७ ॥
फेर करायो फेर लुटायो। कितिक रहे थिर हाथ न लायो।
श्री मुख बूझ्यो 'लट्यो न कैसे ? हमरे निकट रहे तुम बैसे' ॥ १८ ॥
हाथ जोरि तिन बिनै बखानी। बंटे ते जो प्रापति पानी।
सो हम खै हैं लोभ न धारहिं। सुनि श्री मुख ते गुरू उचारहिं ॥ १९ ॥
'धंन खालसा द्वै बिधि दोइ। सतिसंतोखी भी बहु होइ।
बहुत लुटेरे भी बिच बनैं। थिरैं अनिक भी सिक्खी सनैं' ॥ २० ॥
पुन अंम्रित के करैं कराहे। दति प्रवाहु सरोवर मांहे।
तबि सिंहन कर जोरि सु बूझैं। 'प्रभु जी ! कारन कौन अरूझैं ? ॥ २१ ॥
नित प्रति अंम्रित करि करि गेरो। कारन कौन आप ने हेरो' ?
तबि सतिगुर सभि साथ बखानी। 'इहां खालसा सुंमणवानी ॥ २२ ॥
उपजहिं पुंज सिंह इस थाईं'। पुन बहु लिखणा घड़हिं गुसाईं।
करि करि धरहिं त्यार बहु बारी। बूझे ते श्री प्रभू उचारी ॥ २३ ॥

---

1. हम यहाँ मेहमान बन कर टिके हुए हैं 2. कमर कसकर 3. हल्ला मचाना 4. आश्वासन, धैर्य

'होइ दमदमा गुर की काशी। लेखक बनहिं पढहिं सिख रासी'।
इक दिन चढि अखेर[1] को गए। कोस अशट इक[2] उतरति भए ।। २४ ।।

तहां सिंसपा[3] खरी बडेरे। हाथ पंच दस फेर घनेरे[4]।
राहक मउड़ तबहि चलि गए। दुगध घटे[5] भरि ल्यावति भए ।। २५ ।।

सभि को प्याइ खुशी ले घनी। 'वधहु बंस हुइ सिंह सु बनी'।
बहुर प्रभू डेरे चलि आए। उतरि आपने थान सुहाए ।। २६ ।।

कबि कबि थिरहिं गुरू सर[6] जावें। गन संगति ते कार कढावें।
सायं समें जाइं जंडिआने[7]। बैठहिं सभिनि हकारन ठानैं ।। २७ ।।

अगनत रजतपण[8] आसन तरे। बहु दीनार निकारनि करें।
रोज़दार को देति बुलाई। आइ आइ लेते समुदाई ।। २८ ।।

जितिक चाकरी धन जो लेति। तितिक मुशट भरि बिन पिखि देति।
कई बेर बरताये तहां। सैन रुज़ीना लेते महां ।। २९ ।।

भरमे पिखि बिराड़ तिस थान। —इस थल गुर धन धर्यो महान।
थिर हुइ इतहिं काढ[9] करि धरैं। हम जुति सभिहिनि दैबो करैं—।। ३० ।।

निस महिं फैल्यो तिमर[10] घनेरा। गए निकासन को तिस बेरा।
अवनी[11] खनी अधिक बल लाई। इक बिराटका हाथ न आई ।। ३१ ।।

मूरख रहे लजाइ बडेरे। पछुताए निज करम खुटेरे।
इक दिन डल्ला निसा मझारी। सिपर खड़ग दोनहुं हथ धारी ।। ३२ ।।

गुरू द्वार पर दिढ ह्वै रह्यो। पहिरा दियो सुचेती लह्यो।
खरो हेरि प्रभु रहे हटाइ। 'सुपतहु जाइ आपने थाइं' ।। ३३ ।।

'श्री प्रभु सेव करौं मैं आजू। नहिं सोवौं मैं पिखहुं समाजू'।
इम कहि खरी रह्यो निस जागा। 'गुर गुर' जप्यो प्रेम महिं पागा[12] ।। ३४ ।।

उठे प्रात पिखि डल्ला खर्यो। हुइ प्रसंन मुख ते बच कर्यो।
'जाचि लेहु मन कामन जोइ। पूरन करहिं अनंद महिं सोइ' ।। ३५ ।।

'श्री प्रभु ! जहां बास तुम ठाना। इक पीढी कहु मुहि दिहु थाना।
अपनि नजीक[13] राखी अहि मोही। अपर न मो उर मैं इछ होही' ।। ३६ ।।

---

1. शिकार 2. नौ कोस 3. शीशम का पेड़ 4. उस वृक्ष का विस्तार (गोलाई) पन्द्रह हाथ का था 5. दूध के घड़े 6. तालाब 7. तालाब और गुरुद्वारा—दोनों का नाम जंडिआना है 8. चाँदी के रुपये 9. निकाल कर 10. तिमिर, अंधेरा 11. पृथ्वी 12. प्रेम में डूबकर 13. नज़दीक

सुनि करि तिस ते गुरू उचारी। 'अंम्रित लिहु खंडे कहु धारी।
डल्ले ने डल सिंह कहावहु। पुन गुन घर को सिदक कमावहु' ।। ३७ ।।
पुन कर जोरि कह्यो हित दे चित। 'मैं तो बहुत छक्यो है अंम्रित।
गर बोले 'कबि किस ते छक्यो ? हम नहिं लख्यो कूर क्यां बक्यो ?' ।। ३८ ।।
'श्री गुर सीत प्रसाद तुहारा। अचति रह्यो मैं लेकरि थारा[1]।
तिस ते ही मुझ करहु सनाथ। सभि घट को मालिक जगनाथ!' ।। ३९ ।।
पुन प्रभु कह्यो 'न इस बिधि टरो। खंडे को अंम्रित मुख धरो'।
'श्री गुर सो भी खंडे केर। करद[2] भेट किय अचिबे बेर' ।। ४० ।।
सुनि करि श्री मुख बहु बिकसाने। 'सुनि डल सिंह हम खुशी महाने।
जो अंम्रित खंडे को लै है। गुर के सो जहाज चढि जैहै' ।। ४१ ।।
सिर पग धरि धरिकै तबि भनि है[3]। 'सत्त बचन जी, सत्ति बचन है'।
अगले दिन कराह करिवायो। श्री गुरू के आगे धरिवायो ।। ४२ ।।
हाथ जोरि आगै हुइ खर्यो। खंडे को अंम्रित तबि कर्यो।
सौ नर अपर खरे संग होए। छक्यो सुनहिरे इक सभि कोए ।। ४३ ।।
पुन प्रसंन बहु भए क्रिपाला। बखश्यो खड़ग बडो अरु ढाला।
द्वै हज़ार के कंकन दोइ। हुते जराऊ बखशे सोइ ।। ४४ ।।
गुर के बसत्र पूजिबे हेतु। देति भए तबि क्रिपा निकेत।
इक दिन सुधि किन आनि सुनाई। 'तुरकनि सेन चढी समुदाई ।। ४५ ।।
इत कौ आइ लरन के हेतु'। सुनि डल सिंह बहु बन्यो सुचेत।
जाइ अग्र इक तरु के तरे। बैठ्यो रहे प्रतीखन करे ।। ४६ ।।
इक दुइ दिन बीते नहिं आयो। श्री गुर ढिग थिर बाक सुनायो।
'पातशाहु! तुरक जि इक बारी। करहिं भेर तौ लेहु निहारी ।। ४७ ।।
तबि जेतिक बाहैं तरवारी। रुंड मुंड करि धरा मझारी।
भिरहिं जथा बैराड़ लड़ाके। करि हैं तुरकनि तन गन फांके[4] ।। ४८ ।।
सुनि करि दया सिंधु हरखाए। 'साध साध डल सिंह' को गाए।
'इम ही चहियति तुरकनि संगा। धरि उतसाह करन को जंगा' ।। ४९ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**डल्ला सिंह प्रसंग**' बरननं नाम अशट बिसंती अंशु ।। २८ ।।

---

1. थाल 2. कटारी, छुरी 3. चरणों पर सिर रखकर डल्ला बोला 4. टुकड़े

अंशु २९
दमदमे प्रसंग

दोहरा

आयो रामा एक दिन संग तिलोका जांहि।
चून दाल को सकट भरि पहुंचे सतिगुर पाहि ॥ १ ॥

चौपई

दोनहुं शरधालू करि दरशन। कर सिर चरन सरोजन परसन[1]।
हाथ जोरि पुनि ठाढे भए। दयासिंधु तभि बूझन कए ॥ २ ॥

'रामा सिंह, तिलोक सिंह सुनि! रसद सकट भरि ल्याइ बहुत मन।
किह ते आनी कीनि खरीद? कै निज घर ते सकल रसीद?' ॥ ३ ॥

'पातशाह[2]! निज घर ते ल्याए। बंधप अपरन भी कुछ पाए।
सभि ते करि बटोर इह आनी। भी दरशन की चाह महानी' ॥ ४ ॥

इक सिख गुर के निकट उचारे। 'साहिबज़ादे तहिं ससकारे।
इनहुं करी क्रित तुरकनि मांही। जिम होई सुनीअहि इन पाही' ॥ ५ ॥

इक बिराड़ तबि लग्यो सुनावन। 'रण के अंत भयो भट धावन।
प्रभु जी तुरकन ते डर धरि कै। बेस बावरो अपनो करिकै ॥ ६ ॥

सिर ते नगन धूर तन भरे। लोथन ब्रिंदन महिं बहु फिरे।
गन तुरकनि को गुर सुत दोऊ। रण ठानति लुपते थल सोऊ ॥ ७ ॥

द्रिशटि परे नहिं दोनहुं भाई। जे पावति सिर वढि ले जाई[3]।
अपने जानि दास इन तांईं। दोनहुं लोथैं दई दिखाई ॥ ८ ॥

घने घाव श्रोणति सन पूरे। परे प्रिथी पर दीरघ सूरे।
रिस[4] ते भौहैं चढी बिसाला। सुभटनि सेजा पर तिस काला[5] ॥ ९ ॥

---

1. हाथ और सिर चरणों पर रखकर प्रणाम किया 2. रामा और तिलोका बोले 3. सिर काट कर ले जाना 4. गुस्सा 5. शूरवीरता की सेज पर बिराजमान

प्रथम सकेल काठ गन महां। चिखा बनाइ धरे तन तहां।
दोनहुं भ्राता को ससकारे। इम कीनसि इन दास तिहारे'॥ १० ॥
सुनि करि परम प्रसंन बिसाला। श्री मुख ते भाखयो तिस काला।
'रामा सिंह तिलोक सिंह सुनि! जाच लेहु हम ते बांछन मन'॥ ११ ॥
गुर अनुकूल जानि करि आछे। दुहूंअनि मांग्यो जिम चित बांछे।
'प्रभु जी! जबि के हम इत आए। भली प्रकार न पाइ जमाए॥ १२ ॥
कहूं न भूम हमारी भई। जिम राहक अपरन निज लई'।
दया सिंधु सुनि धीरज दीनि। 'तुम तौ देश सकल ही लीनि॥ १३ ॥
ऐसे पाइ तुमारे जमैं। भूपन भूप देश गन नमैं।
दिल्ली लवपुरि के विच वधो। ग्राम हज़ारन ही कहु सधो॥ १४ ॥
कुरसी बहुत बकुरसी[1] राज। पैहहु बडो अनेक समाज।
हमरे हित इम कारज कीनि। इसी हेतु करि सभि कुछ लीन'॥ १५ ॥
इम कहि अपर जि थे तिन साथ। तिन पर खुशी करि तबि नाथ।
मनहुं कामना पूरन भई। दोनहुं कौ दसतार दु[2] दई॥ १६ ॥
सपति दिवस गुर के ढिग रहे। बर ले करि दरशन वर लहे।
पुन रुख़सद हुइ घर को गए। तबि ते बधे राज बड भए[3]॥ १७ ॥
नाभा अर दूसर पटिआला। गुर बच ते इह भे महिपाला।
जबहि महिख[4] सिख लेवन गए। हास करति वंगेहर भए॥ १८ ॥
मारखंड[5] सोदयो बताइ। मारहिं पिखैं तमाशा धाइ—।
—बदरी[6] तरु सों खरो—बतायो। गुर के नाम सुनै चलि आयो॥ १९ ॥
लखी अवग्या गुर की होई। तबि वंगेहरि मिलि सभि कोई।
बखशावन हित चलि करि आए। दोइ तुफंग उपाइन ल्याए॥ २० ॥
लाद रसद केतिक संग लीनि। कुछक रूप रस पावन कीनि।
देनि हेतु गुर को ले आए। धरि आगे सभि सीस निवाए॥ २१ ॥
हाथ जोरि थिरि अरज़ गुज़ारी। 'प्रभु जी! बखशहु खता हमारी।
महिख लेन सिख भेजे जबै। हमने कपट रच्यो पिखि तबै॥ २२ ॥
तुमने पड़दा ढक्यो हमारो। गयो वठिंडे महिख बिचारो'।
तुपक रूपरस[7] हेरी धरि करि। गुरू प्रसंन भए इम कहि करि॥ २३ ॥

---

1. पीढ़ी-दर-पीढ़ी, पुश्त-दर-पुश्त 2. दो दस्तारें 3. बड़े-बड़े राजा हुए
4. भैंस 5. खूनी हाथी या भैंसा 6. बेरों का पेड़, बेरी 7. बंदूक और नमक

'क्या जाचति हो करहु सुनावन ? बखशी खता परे अबि पावन'[1]।
हाथ जोरि तबि सभिनि बखाना । 'रामे को दिय राज महाना ॥ २४ ॥

हम को भी बखशहु करि करुना । आइ परे रावर की शरना'।
श्री गुर कह्यो 'मिले तुम आइ । जानि अवग्या लिय बखशाइ ॥ २५ ॥

यांते प्रथम राज है जेतिक । केतिक समैं थिरहिगे तेतिक ।
नहिं छीनहिं को घर सुख पाओ । सिख संगति की सेव कमाओ' ॥ २६ ॥

इम बखशाइ कितक दिन रहे । रुख़सद होइ ग्राम मग गहे ।
ऊचे थान बैठि इक दिन महिं । लग्यो दिवान सुहाइ सभिनि महिं ॥ २७ ॥

डल सिंह गन बिराड़ थिर सारे । सभिनि सुनावति बाक उचारे ।
'बहु गोधूम खेत[2] दिख आवहिं । सुंदर स्वादल अंन उपावहि ॥ २८ ॥

सुनि डल्ले जुति सभि कर जोरे । 'खही खरी प्रभू इत ओरे ।
बच गोधूम खरी न उचारो । मोठ बाजरी भले बिचारो ॥ २९ ॥

छित गोधूम जि इहां उपावैं । तुरक देहिं दुख, चढ़ि चलि आवैं' ।
सुनि करि श्री मुख ते मुसकाए । लख मति हीने[3] मौन रहाए ॥ ३० ॥

लखहिं न तुरक भए अबि अदा[4] । गुर को बाक थिरे सद सदा ।
बीत गए केतिक दिन और । बैठे सतिगुर ऊची ठौर ॥ ३१ ॥

। ३२ ॥

जिस ते बहु बिधि के मिशटान । हेत भले लाहि स्वाद जहान ।
सुनि बैराड़ कहैं कर जोरि । 'प्रभु जी ! नहिं कमाद इत ओर ॥ ३३ ॥

त्रिण लंबेरे वधि बहु गए । सो आगे तुम देखति भए ।
इत्यादिक वथु चहैं न कोई । मोठ बाजरी निपजहि जोई ॥ ३४ ॥

सोई भली अहै इस देश । नाहिं त पहुंचे तुरक विशेश ।
सरब भांति ते दुख उपजैहैं । ओज पाइ करि हाला लैहैं' ॥ ३५ ॥

सुनि श्री मुख ते पुन मुसकाए । 'क्यों तुम अपनो भलो न भाए ?
अविनी[7] पुरि सिर्हंद की सारी । इहां लगावन हेतु उचारी ॥ ३६ ॥

भले पदारथ जो तहिं हुते । सगरे उपजति स्वादल इते ।
केचित दिन हुइ तुरक बिनासी । राज खालसे को हुइ रासी ॥ ३७ ॥

---

1. चरणों पर आ पड़े हो 2. गेहूं के खेत 3. बुद्धिहीन जानकर 4. पूरे हो गए 5. नशा 6. ईख, गन्ना 7. पृथ्वी

मोठ बाजरी **अंगीकारहु**[1] । अपर न हुइ इस दश उचारहु ।
सवा जाम दिन चरि है जावद । तुमरी मति थिर रहै न तावद ॥ ३८ ॥
बचन हटावति रहे न माना । तऊ सुनहु इह देश महाना ।
सने सने गोधुम हुइ जाइ । दिन प्रति बसति रहै अधिकाइ ॥ ३९ ॥
अपर काज तुम बहुत बिगारा । मान्यों बाक न जथा उचारा ।
नांहि त सकल वसतु इस देश । उपजति नित प्रति होति बिशेश' ॥ ४० ॥
डल सिंह आदिक गन बैरार । थिरु हुइ रहे मौन मुख धारि ।
जान सकहिं नहिं आशै गुर को । नहिं बाकनि पर धीरज उर को ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'दमदमे प्रसंग'** बरननं नाम उनतीसमो अंशु ॥ २९ ॥

---

1. स्वीकार

अंशु ३०

कपूरे प्रसंग

दोहरा

इक दिन बैठे सतिगुरू दसक सिंह तहिं आइ।
बंदन करि बैठति भए गाथा कही सुनाइ ॥ १ ॥

चौपई

'कोट कपूरे को लिय मारी। भई साच जिम प्रभू उचारी'।
डल सिंह बैठ्यो निकट सुनंता। बूझन कीनि सकल बिरतंता ॥ २ ॥
'किन मार्यो कहु छोर प्रसंग ? किस के संग कीनि तिन जंग'?
सुनि के सिंहन सरब सुनायो : 'मेला ढिलवीं बहु चलि आयो ॥ ३ ॥
सोढी कौल सु मंजी लाइ। बैठ्यो, भेटैं लोक चढाइं।
तहां कपूरा भी चलि गयो। केचित सुभट[1] संग महिं लियो ॥ ४ ॥
बैरी बरगाड़ी[2] तिस केरे। हुतो शरीका मरे अगेरे।
सो भी चलि आए बिच मेले। जिनहु दुहेले[3] होहि न मेले[4] ॥ ५ ॥
पान शराब करी दिश दोऊ। पाछल बैर चितारति सोऊ।
प्रथम कर्यो बकबाद[5] बिसाला। गारी निकारति भे जिस काला ॥ ६ ॥
बढी सपरधा[6] दुइ दिशि केरी। आयुद्ध लगे चलन तिस बेरी।
ज्वाला बमणी ब्रिद चलाई। मरे कितिक मचि परी लराई ॥ ७ ॥
जान्यों साहिब कौल बखेरा। बिगर्यो मेला त्रास बडेरा।
अभै राम नंदन श्री राम[7]। भेज्यो जुद्ध हटेबे काम ॥ ८ ॥
तरजति[8] दोनहुं दिशिनि हटावैं। —गुर घर मैं किम जंग मचावैं ?
निज घर गमनहुं करहु लराई। हटि जावो क्यों धूम मचाइ—॥ ९ ॥

---

1. शूरवीर 2. एक गांव का नाम 3. कष्ट दिया था 4. मेल, सुलह न हो सकी 5. बकवास 6. स्पर्द्धा, 7. अभय राम का बेटा श्री राम 8. ताड़ना करके

इत उत बरजति तरजति बिचरति । भए शराबी रिपु अति हति मति[1] ।
ज्वाला बमणी ताकि चलाई । हति दीनो श्री राम गिराई ।। १० ।।
सुनि मानव तबि दौरे गए । मर्‌यो उठाइ सु ल्यावति भए ।
सोढी अपर गए रिस भरीके । बरजति तरजति गारि निकरिके ।। ११ ।।
सिरी राम ससकारन लागे । खरो कौल बहु संकट पागे ।
बोल्यो—नहीं दाहु इस करिए । अपर बिघन कुछ होहि बिचरीए ।। १२ ।।
ताती बायु लगै मुझ अंग । तहिं गुर मारे ठानति जंग ।
मम परवार हटावनि गयो । महिद बखेरा मिलि उपजयो—।। १३ ।।
इतने महिं नर दौरति आवा । कौल समीप दुखति बच गावा ।
सिरि राम को अनुज[2] प्रजापति । गोरी लगी तुरत ही भा हति ।। १४ ।।
जाइ उठायहु ततछिन ल्याए । सभि सोढीनि कशट बहु पाए ।
दोनहुं को इकठे ससकारा । अभै राम तबि स्राप उचारा ।। १५ ।।
—मम नंदन तैं मारे दोइ । इस अघ को फल इम तुझ होइ ।
पूरब स्राप दसम पतिशाहा । मरैं तुरक ते लेकरि फाहा[3] ।। १६ ।।
खेह तोबरा बदन चढावहिं । मरत समे इस बिधि दुख पावहिं ।
मोहि स्राप ते जड़ैं तुहारी । उखर गई सगरी इक बारी ।। १७ ।।
पानी देवा रहै न कोई । इम संकट बड तुमको होई ।
भयो स्राप सुनिकै पछुतायो । बहुरो केतिक काल बितायो ।। १८ ।।
ईसे खान मंझ[4] चढि आयो । घेरि कोट तिन जंग मचायो ।
हेल घालि करि चढिगे सूरा । घास पुंज महिं दुर्‌यो कपूरा ।। १९ ।।
ईसे खान भन्यो—बिच अहै । खोजि लेहु नहिं भागनि लहै—।
इत उत खोज्यो लियो निकास । गहि करि आन्यों तूरन पास ।। २० ।।
देखि पठान भन्यो—तूं सूरा । इलां कुक्कड़[5] वांग कपूरा ।
बाज रखन को लाज लगाई—। इम कहि के लिय कैद कराई ।। २१ ।।
ईसे खान कूच करि दीनि । जित जानो सो मारग लीनि ।
रिदे बिचार करति भा महां । —इस पकरे हुइ हासल कहां—।। २२ ।।
ताल उजार बिखै इक हेरा । खरो होइ बोल्यो तिस बेरा ।
—लाद्‌यो संग जाट क्या देहि । आछी बात न छोरनी एहि ।। २३ ।।
यांते इह दरखत जो खरो । फाहे इसे चढावनि करो—।
सुनि पठान को हुकम सिधाए । फाहे हेतु कपूरा ल्याए ।। २४ ।।

---

1. शत्रुओं की मति मारी गई 2. छोटा भाई 3. फांसी 4. जाति का नाम 5. मुर्गा

देखि महां दुख पाइ बखाना। —करनि देहु मुझ इहां शनाना।
बदन तोबरा फेर चढाइ। फाहा देहु बहुर इस थाइं—॥ २५ ॥
किस नर बूझ्यो !—क्यों कहिं एसे ? वाजब न्हान, तोबरा केसे।
तिन के निकट बतावन कीन। —मेरे गुरू स्राप इम दीन॥ २६ ॥
खेह तोबरा बदन चढाइ। फाहा देहिं तुरक मरिवाइ।
अपर बात सगरी बनि आई। नहीं तोबरा तुमहुं अनाई॥ २७ ॥
सो मंगवाइ देहु मुझ फासी। पूरहु बाक गुरू अबिनाशी।
नतुर तोबरे हित तन और। सहौं स्राप धरि कै किस ठौर—॥ २८ ॥
सुनि कै तुरक तथा ही कीनि। खेह तोबरा मूख बिच दीन।
पाइ जेवरा गर लटकायो। इम अवगति लहि प्रान गवायो॥ २९ ॥
रावर को जो हुकम न माना। महां मूड़ लहि कशट महाना।
सुनि सतिगुर मुख तूशनि धारी। [1]बाक अमोघ टरहिं नहिं टारी॥ ३० ॥
ब्रह्म असत्र रघुबर सरसंगा। भयो न निशफल शत्तुनि भंगा।
नहीं समरथ हटावनि कोई। ओट सुमेर न बचिबो होई॥ ३१ ॥
सुनि बैराड़ त्रास के साथ। शरधा सहित निवावहिं माथ।
केचित दिवस बिते तहिं और। बसे प्रभू सोढी सिरमौर॥ ३२ ॥
अभै राम बड शोक भयो है। जुग पुत्रनि इक बार हयो है।
इक दिन लाग्यो करनि अहारा। बरखा महिं गरज्यो घन भारा॥ ३३ ॥
सहि न सक्यो दुख पाइ उचारे। 'मुझ को शोक भयो सुत मारे।
घर तेरे महिं भई वधाई। गरजि गरजि के मोहि सुनाई॥ ३४ ॥
मेरी पीर न तुझ को कोई। शोक परोयो पीड़ति होई।
अबि हटि जाहु न देहु दिखाई'। अभै राम जबि एव अलाई॥ ३५ ॥
झर मिटि गयो न बरख्यो बारी[2]। भा दुरभिच्छ[3] देश तिस भारी।
चिरंकाल लगि मेघ न आए। रवि[4] तपत्यो बहु नर अकुलाए॥ ३६ ॥
इस प्रकार तित कर प्रसंग। भयो उचार्यो श्रोतन[5] संग।
बास दमदमे सतिगुर कीनि। केतिक स्राप कितिक बर लीन॥ ३७ ॥
इक दिन बैठे सभा मझारी। सभिनि सुनावति गिरा उचारी।
'कहहु धरा इहु किने उठाई ? किस ऊपर थिर होति सदाई'॥ ३८ ॥
को भाखति 'छित धवल उठावै'। केचित बोले 'शेश चवावैं'।
'कमठ पीठ पर' किनहुं बताई। 'कोल दाड़ पर' कहैं 'उठाई'॥ ३९ ॥

---

1. गुरू जी वाणी अचूक है 2. पानी वर्षा 3 अकाल 4. सूर्य 5. श्रोता

सुनि पुन गुरू सु बूझनि करे। 'जिनहुं उठाई को तिन तरे ?
बिन अलंब नहिं सकहि उठाइ। जिनहुं उठाइ सु देहु बताइ' ॥ ४० ॥
हाथ जोरि सभिहूंनि अलाई। 'क्रिपा करहु दिहु आप बताई'।
श्री मुख ते सभि बिखै उचारा। 'इह जो देखहु सकल पसारा ॥ ४१ ॥
साच आसरे सभि थिर भयो। साच बिना अवलंब न बियो।
साच आसरे सूरज तपै। साच आसरे निसपति[1] दिपै ॥ ४२ ॥
साच आसरे सिंधु गंभीर। साच आसरे धरती धीर।
साच आसरे बायु बहंता। साच आसरे अगनि तपंता ॥ ४३ ॥
साच आसरे कूड़[2] दिखंता। साच बिना कूड़ न निबहंता।
जथा रजू[3] साची दिखियंता। तिस महिं कूड़ सरप कलपंता ॥ ४४ ॥
जे साची रजु होइ न तहां। सरप कूड़ को कलपहि कहां।
यांते निसचै इह करीजै। साच आसरे सकल जनीजै' ॥ ४५ ॥
सुनिकै सभि हूं सीस निवायो। 'आप जथारथ ही समुझायो।
जिसपर क्रिपा आपकी होइ। साच पछानै हरि जी सोइ ॥ ४६ ॥
धंन धंन सतिसंग तुमारा। भउजल पार उतारन हारा।
जनम मरन को बहुर न फेरा। अपनो जानि कर्यो जो चेरा' ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**कपूरे को प्रसंग**' बरननं नाम त्रिसती अंशु ॥ ३० ॥

---

1. निशापति, चन्द्रमा 2. प्रपंच, धोखा, छल 3. रस्सी

अंशु ३१
नौरंग प्रसंग

दोहरा

दया सिंह को सिमरते—गयो भयो चिरकाल।
मिल्यो कि नहिं तुरकेश को लागी बिलम[1] बिसाल ॥ १ ॥

चौपई

तिह सुध ले हम दच्छन जाना। किम कारज भा कोइ न जाना—।
करहिं प्रतीछन श्री भगवान। उत जिम भई सुनहुं दे कान ॥ २ ॥

दैन हुकम नामा गुर केरा। दया सिंह करि जतन बडेरा।
घने अमीर, वज़ीर मुलाने। हज़रति साथ न कोइ बखाने ॥ ३ ॥

केतिक बादी मनमुख गुर ते। बडे अशरधक बेमुख धुर ते।
जे कोइक चाहति ले जाने। सो बरजति थे मुगध अजाने ॥ ४ ॥

दाव घाव करि अनिक प्रकारा। दया सिंह को चल्यो न चारा।
हुइ लाचार लिखी अरदास। पहुंची श्री सतिगुर के पास ॥ ५ ॥

जोरी कासद[2] की चलि आई। चरन कमल पर ग्रीव[3] निवाई।
खोली निज कर ते गुर पठी। दया सिंह बिनती लिखि पठी ॥ ६ ॥

'अपना कारज आप बनावहु। जिम भेज्यो तिम शाहु मिलावहु।
इहठां साकत कूड़ कुपत्ते। मिलनि देति नहिं शाहु चुगत्ते ॥ ७ ॥

अनिक उपाव करति मैं रह्यो। तऊ न अंतर मेला लह्यो।
लिख तुम दया सिंह इम बिनती। पठी हकीकति तजि करि गिनती ॥ ८ ॥

चरन कमल पर बंदन घनी। बारि बारि कर जोरति भनी।
क्रिपा करहु अबि बनहु सहाइ। तुम ते ही सभि किछ बनि आइ' ॥ ९ ॥

---

1. देरी 2. हलकारों की जोड़ी 3. गर्दन (भाव शीश निवाने से है)

पठि करि सतिगुर सभि गति जानी। पुनहि पत्रिका लिखिबे ठानी।
'अबि तूं त्यार रहहु बनि आछे। पत्री पढे मेल हुइ बाछे[1]॥ १० ॥
आपे ही अवरंग बुलवावे। सुनहि बारता बहुर सुनावै'।
इत्यादिक लिखि तुरत पठाई। दया सिंह के निकट सु आई॥ ११ ॥
पठी पत्रिका गुर की जबै। समुझ्यो, कारज गुर को सबै।
'जबहि शाहु के निकटि सिधावो। शसत्र अमानति जाचे ल्यावो'॥ १२ ॥
अधिक अनंदति हुइ तबि थिर्‍यो। मानहु काज सकल ही कर्‍यो।
सो दिन बीता निस हुइ आई। अवरंग दम[2] को करति सदाई॥ १३ ॥
तिस के बल करि जाति हमेश। काबे करहि निवाज अशेश।
जबि अपनो तिन वखत पछाना। हज़रत करन सु दम को ठाना॥ १४ ॥
मक्को पहुंच्यो करनि निवाज। गाथ लखी सभि गुरू महांराज।
तिस की सूरत केर ग़रूर। प्रभू बिचार्‍यो करिबे दूर॥ १५ ॥
कमरकसा करि शसत्रनि धरिकै। निज तुरंग आरूढनि करिकै[3]।
मक्के पहुंचे सतिगुर जाई। बिचरे मंदिर के चहुं घाई॥ १६ ॥
जबि निवाज करि[4] निकस्यो बाहर। प्रभु सरूप दिख़रायो ज़ाहर।
क्रूर[5] द्रिशटि ते देखनि कर्‍यो। —निकसति प्राण मनो—मन डर्‍यो॥ १७ ॥
उग्र बाक ते कीनि बखानी। 'को है रे! मूरख मद मानी?
आगै होइ, चहति जे भल्यो'। सुनि भौं धरि करि तूरन चल्यो॥ १८ ॥
निज तुरंग के कर्‍यो अगारी। ले गमने प्रभू दूर पहारी[6]।
पुरशोतम की सभा बिसाला। तहां कर्‍यो ठांढो तिस काला॥ १९ ॥
त्रसति अधिक उर थिर ह्वै रह्यो। अजब थान पिखि बिसमै लह्यो।
तब अकाश बानी हुइ आई। सुनियति दूर न देखी जाई॥ २० ॥
'रे बन्दे मति मंद अजान! मति करि सूरत केरि गुमान।
हम जो गुरू गुरू सो हम हैं। तूं बंदा किम होवति सम हैं॥ २१ ॥
मति बराबरी करि मतिमंदे! एह तो मेरु, रच तूं बंदे[7]!
मत सलतन को धरहु गुमान। आज कि काल फनाही जान॥ २२ ॥
अबि सतिगुर जी! दिहु इस छोरि'। इम सुनि हटे सु पाछल ओर।
बहुर खरो करि[8] गुरू निहारा। 'एक कपीरा[9] लेहु हमारा॥ २३ ॥

---

1. मनोवांछित 2. प्राणायाम 3. घोड़े पर चढ़कर 4. नमाज़ पढ़कर 5. भयानक 6. पहाड़ 7. ये मेरू पर्वत के समान हैं और तू रंचक मात्र है 8. सामने खड़ा करके 9. कटार, छुरी

बैठ्य सिंह कितिक दिन भए। तोहि मिलनि कौ हम पठि दए।
सो मांगहि इह देवन करहु। इतने भले संभारि सुधरहु ॥ २४ ॥
अबि चलि जाहु तज्यो तुझ तांईं। नहीं दई किस भांति सज़ाई'।
छुटिकै सुनिकै थरहरि कांपा। पशचाताप संतापति आपा ॥ २५ ॥
सतिगुर तबै दमदमे आए। अवरंग अपने सिवर[1] सिधाए।
सगरो जामनि[2] नींद न आई। त्रासति अधिकै जागि बिताई ॥ २६ ॥
बडी फजर तैं कीनि शनान। बदन पाक करि तबै महान।
सभा सथान सु बैठ्यो आई। पठि मानव सभि लीए बुलाई ॥ २७ ॥
जे उमराव वज़ीर मुलाने। मसलंदी[3] सभि 'आवन ठाने।
काज़ी गन उलमाउ घनेरे। करि तसलीमातां[4] तिस बेरे ॥ २८ ॥
निज निज थान थिरे समुदाई। सभि महिं अवरंग बात चलाई।
'गुर को सिंह इहां चलि आयो'? केतिक सुनि कर जोरि बतायो ॥ २९ ॥
'हज़रत जी बहु दिन ते आवा। नहिं किनहूं तुम संग मिलावा।
चहति निरंतर अंतर ऐबे। जतन अनिक ते प्रविश न पैबे' ॥ ३० ॥
सुनि ततछिन अवरंग बुलिवायो। दया सिंह नर संग सिधायो[5]।
धरम सिंह सन अंतर गए। सिर निवावबो तुरक न कए[6] ॥ ३१ ॥
कर्‌यो हुकमनांवां सु अगारी। धरिकै शाहु समीप उचारी।
'वाहिगुरू गुर जी की फते'। कही हुकमनामे दिशि चिते[7] ॥ ३२ ॥
परवाने को करि अगवाई। अपनी सिक्खी राखि दिखाई।
सुनि पिखिकै अवरंग चुगत्ता। नहिं कुझ बोल्यो मद करि मत्ता ॥ ३३ ॥
परवाना कुछ पढ्यो पढायो। सभि मतलब समझ्यो समुझायो।
पुन पाछे ते पठि करि जाना। 'दे दीजै हमरी जु अमाना' ॥ ३४ ॥
गुपती पठ्यो सुन्यो थो सारा। सुनि अवरंगे पुनहि उचारा।
'हो तुम कौन कहां ते आए? कौन काज को किनहुं पठाए?' ॥ ३५ ॥
दया सिंह तबि कह्यो सुनाई। 'हम गुरसिख गुर दए पठाई।
मद्र देश ते चलि इत आए। मिलन काज सतिगुर फुरमाए' ॥ ३६ ॥
सुनि नौरंगे बाक उचारे। 'अबि किस थल हैं गुरू तुमारे।
कहां बैठि करि तुमहुं पठायो। तिहठां रह्यो कि अनत सिधायो?' ॥ ३७ ॥

---

1. शिविर, डेरा 2. सारी रात 3. सलाहकार 4. सलाम 5. आदमी साथ गया 6. तुर्क को शीश नहीं निवाया (प्रणाम नहीं किया) 7. हुकमनामे की ओर देखकर

दया सिंह सुनि उतरि[1] दीना। 'सरब सथान गुरू हम चीना।
जहां सु सिमरहिं हाजर होइं। अबि तेरे आगे गुर सोइ' ॥ ३८ ॥
बहुर बूझिबे हेतु नुरंगा। बोल्यो मुख ते सिंहन संगा।
'तुम गुर सिख अरु गुरू तुमारो। लखियति करामात को धारो ॥ ३९ ॥
दया सिंह सुनि उत्तर दाती[2]। 'गुर के कुत्ते भी करमाती[3]।
गुर सिक्खन अरु गुर के विखै। अजमत होनि कि अचरज पिखै' ॥ ४० ॥
अवरंगा सुनि सुलगी छाती। तरकति ही बोल्यो इस भांती।
'जे निशंक इम बाक अलावो। इक कुत्ता इस थल मंगवावो ॥ ४१ ॥
करामात किम ह्वै तिस मांही। दिहु दिखाइ आनहु मुझ पाही'।
सुनि कै दया सिंह फुरमायो। 'धरम सिंह को सिवर पठायो' ॥ ४२ ॥
ले कूकर सो गयो शिकारी। पतलो मुख लांगुल सटकारी[4]।
कद दीरघ अरु दसन बिसाला[5]। लै पहुंच्यो अंतर ततकाला ॥ ४३ ॥
अवरंग ने ढिग खरो निहारा। दया सिंह तिह संग उचारा।
'करहु शाहु को कुछक सुनावनि। जिस को सुनि मन करै निवावन' ॥ ४४ ॥
तबि कूकर ने कूक सुनायो। अपनो बोल शाहु समुझायो।
'पूरब तूं बिच जाति हमारी। बिछर्यो पुन पायो दुख भारी ॥ ४५ ॥
अबि तूं आउ हमारे बीच। बिछर्यो चिरंकाल को नीच।
नहीं नरन को तोहि शहूर[6]। तौ रहिने की कहां ज़रूर ?' ॥ ४६ ॥
सुनति शाहु शरमिंदा भयो। किस प्रकार नहिं बोल्यो गयो।
जे मसलंदी[7] ढिग उमराइ। रुख़सद करे गए समुदाइ ॥ ४७ ॥
दोनहुं सिंह तहां थिर रहे। अवलोकति चवगत्ता कहे।
'भयो खालसा अबि जग मांही। पर मेरी बीचहि पतिशाही ॥ ४८ ॥
अधिक काहली[8] गुर ने करी। अजहुं न मो कुछ पूरी परी।
मम पतिशाहति जबि हटि जाती। तबी खालसा होति सुखाती' ॥ ४९ ॥
उत्तर दया सिंह तबि दीनि। 'तुम भी अधिक काहली कीनि।
एक मजब ही लागे करने। हिंदू धरम धरा[9] ते हरने ॥ ५० ॥
सतिगुर तबि करि दीने तीन। भयो खालसा तुरत प्रवीन'।
बहुर नुरंगे बाक उचारा। 'करहि काम क्या गुरू तुमारा ?' ॥ ५१ ॥
दया सिंह तबि दियो सुनाई। 'इकठे करहिं शसत्र समुदाई।
इक आयुध तुम ढिग फुरमायो। सो अबि चहीअहि हमहि दिवायो' ॥ ५२ ॥

1. उत्तर 2. दिया 3. करामाती 4. गोलाकार 5. विशाल दाँत
6. अकल 7. सलाहकार 8. जल्दी 9. धरती

कहै नुरंग 'दूर मैं गयो। तहां कपीरा सतिगुर दयो।
कह्यो—बहुत ही रखहु संम्हाल—। सो मैं धर्यो सुचेती नाल' ।। ५३ ।।
इम कहि दया सिंह को दयो। नीके अदब साथ कर लयो।
बहुर नुरंगे बाक सुनावा। 'मेरो लखि बरादरी दावा ।। ५४ ।।
दया सिंह ! गुर चशम सु दीदम। मेल होनि किस थान रसीदम[1]।
सुनि उत्तर दीनस तिस तीरि। भर्यो ज़ोर सों अरु रस बीर ।। ५५ ।।
'सैफ कसे कट[2] बान कमान। सतिगुर मेल जंग दरम्यान।
बडे बहादुर आयुध धारी। चमूं असंख संग असवारी' ।। ५६ ।।
भाखै शाहु 'तमाम जहान। राखहु सैन सु रय्यति[3] जानि।
बरज देय हौं जाहि न कोई। तबि कहु कहां लरै इक होई ? ।। ५७ ।।
इम लखि मिलहु आनि करि स्याने ! हम पर कहां चलहि बल ठाने।'
सिंह कहैं 'अज़ग़ैबी सैन[4]। लाखहुं कोटहुं[5] गिनती हैन ।। ५८ ।।
पातिशाहु साचे के साथ। निस दिन रहैं बंदि करि हाथ।
प्रगट खालसा होइ बिसाला। देश फज़ीलति जहिं कहिं जाला ।। ५९ ।।
दिन प्रति वधहि शोर जग परे। तिन सनमुख पुन कोइ न अरे'।
सुनि कै सहित हलीमी कहि कहि। तेज बिनाशी अपनो लहि लहि ।। ६० ।।
दीयो कपीरा लिखि परवाना। रुख़सद करे सचिव महाना।
बीज रोग को उगव्यो तबै। म्रितु निज और हेतु लखि सबै ।। ६१ ।।
गुरज द्वार[6] द्वै दीने संग। सभि समुझायो गुरू प्रसंग।
सभि को हटक्यो लिखि परवाने। 'लरहि न कोइ, जाहिं जिस थाने ।। ६२ ।।
दया सिंह अरु धरम सिंह तबि। जान्यों सिद्ध भयो कारज सबि।
—अबि इस थल ते चलिबो आछा—। क्रिपा सिंधु को दरशन बांछा ।। ६३ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**नौरंग प्रसंग**' बरननं नाम इकत्रिसती अंशु ।। ३१ ।।

1. पहुंचना 2. कटि, कमर 3. प्रजा 4. गुप्त फौज 5. लाखों-करोड़ों 6. सिपाही

अंशु ३२

दक्खण गमन प्रसंग

दोहरा

बिदा दया सिंह होइ कै धरम सिंह ले साथ।
गमन कीनि मारग बिखै सिमरति श्री गुर नाथ ॥ १ ॥

चौपई

बचन शकति जो प्रभु ते पाई। शाहु संग बलत पतिआई।
प्रति उत्तर भाखे ततकाला। कूकर को बुलबाइ बिसाला ॥ २ ॥
प्रभू अगाध बोध जिन केरा। नहिं सम, सभि ते बडिहुं बडेरा —।
गुन गन सिमरति मारग आए। करे कूच दर कूच सिधाए ॥ ३ ॥
इत सतिगुर साहिव की कथा। सुनि श्रोता सुंदर किय जथा।
कही सभा महिं इक दिन गाथा। 'दक्खन गमन करहु हम साथा ॥ ४ ॥
तहिं कारज हैं अनिक प्रकारे। करने बनहिं टरहिं नहिं टारे।
डल सिंह लिहु दिल्ली को राज। फेरहिंगे तुव सिर पर ताज ॥ ५ ॥
तुरक हतैं अबि तिसके थानूं। करहिं बिठावन राज महानूं'।
सुनिकै धीर छुट्यो सभि केरो। 'प्रभु जी! दूर सु देश बडेरो ॥ ६ ॥
रावर को दमदमा सथाना। दिल्ली के समान हम जाना।
इही राज हम को बहुतेरा। मोठ बाजरी अंन घनेरा ॥ ७ ॥
क्रिपा आप की कमी न काई। सदा बिराजहु आप इथाईं।
बांछति वसतु सभी चलि आवैं। चहूं दिशिनि की संगत ल्यावैं ॥ ८ ॥
वसतर शसत्र अमोल बडेरे। अरपहिं सिक्ख आनि बहुतेरे।
प्रभु जी! अटक्यो काज न कोई। दच्छन गए कहां सिध होई' ॥ ९ ॥
राम सिंह पर खुशी घनेरी। सुन करि ब्यापी चिंत बडेरी।
दूसर भ्रात फते सिंह रहै। दच्छन को प्रसथान न चहै ॥ १० ॥
डल सिंह आदि बिराड़ जु सारे। दूर जानि ते सभि डर धारे।
हुते दिवान सिंह दरबारी। दुतीओ भ्रात सिंह घरबारी ॥ ११ ॥

हौल परे सभि के मन ऐसे। चलदल दल बहि बायू जैसे।
और कितिक के नाम गनीजै। गमन दूर लखि रिदा न धीजै॥ १२॥
अनिक भांति की बात बनावैं। दक्खन के दुख बरन सुनावैं।
'तहिं अवरंग बादी को बासा। लरि लशकर जिस केर बिनाशा॥ १३॥
महां दुशट बड खोट करंता। सदा ध्रोह सभि संग कमंतां।
नवम गुरू सो बिगर्यो मूढ़ा। पापी द्वैख कमावै गूढ़ा॥ १४॥
जिस न बाप आपनो मार्यो। भ्रात संहारति मोह न धार्यो।
संत साध को अदब न राखै। दे सज़ाइ कै मारन भाखै॥ १५॥
तुम तौ तिस को अधिक बिगारा। लखहुं लशकर लरति संहारा।
खरच्यो लाखहुं दरब हंगामे। कीनसि हानि इमान तमामे॥ १६॥
पकरन हित ही चाहति रह्यो। सकल भेत रावर न लह्यो।
अबि समीप तिस के क्या जाना। करहि अवग्या मूढ़ महाना॥ १७॥
लाखहु सैन सुनति चढि धावें। नहीं दुरग, थिर ह्वै अटकावैं।
द्रोही महां, दुशट, रिपु संतन। तुरकेशुर[1] उर लखै मतंत न॥ १८॥
प्रभु जी! इहां रहनि ही आछो। क्यों गाछन दच्छन बछ बाछो।
सभि ते सुनति गुरू पुन कह्यो। 'पुरख अकाल सहायक रह्यो॥ १९॥
क्यों हूं धीरज छोरि न करीअहि? देश बिदेशन सैल निहरीअहि।
अवरंग को कुछ भै न हमारे। दच्छन चलिअहि काज सुधारे॥ २०॥
राज समाज आदि वथु आछे। दैहैं हम, जो किछ को बाछे।
एक देश अर, घरन मझारा। क्यों सनेह मन बंधि तुमारा॥ २१॥
हम संग जहां करहुगे बासा। लेहु बिसाल हुलास[2] अवासा।
छीनहिं तुरकनि की ठकुराई। तुम ते[3] राज कराइं तिथाईं[4]॥ २२॥
नहिं भरमहुं निशचै करि काचे[5]। पालै लगो प्रभू तुम साचे।
दिन प्रति वधहि खालसा भारी। धरा राज के ह्वै अधिकारी॥ २३॥
कहां नुरंगा थिरता पै है। हम पर नहीं ओज कुछ कै है।
इस के बडे बडेरे कहां। शाहु जहां जहांगीर न रहा॥ २४॥
अकबर मर्यो, हुमाऊं गयो। बाबर बडन सहत म्रितु थयो।
इह अबि थिरै नहीं, सच जानो। दच्छन को तुम संग पयानो[6]॥ २५॥
जे करि संग निब्राहहु चलो। सभि बिधि लखो आपनो भलो।
जथा कामना मन महिं धरो। गुर घर ते सो पूरन करो॥ २६॥

---

1. तुर्क राजा 2. प्रसन्नता 3. से 4. उस जगह 5. झूठ 6. चलो

जे मति काचे हुइ हटि परो। सभि बिधि करहु आपनो बुरो।
हमने तुम को बिदत सुनाई। लाभ हान अधिक अधिकाई॥ २७॥
पाइ सरब कुछ गुर ते आवो। बसहु तहां कै इतै बसावो।
इत्त्यादिक सतिगुर समुझाए। सुनति धीर मन कुछक टिकाए॥ २८॥
पुन सनमुख नहिं बाक बखाने[1]। निज कुटंब को मोह महाने।
प्रीति डोर ते[2] मनकरि सीवन[3]। गाढी गंठ पृथक किम थीवन[4]॥ २९॥
'भला भलाजी' करति बखाने। दुति छूछे मुख हुइ कुमलाने।
नौकर जे बिराड़ हटि परे। 'हम ते जायो जाहि न परे'॥ ३०॥
अपर घने हटि हटि घर जाते। चहैं न प्रभु के संग प्रयाते।
दच्छन दूर देश है जाना। मरें कि जीव क्या हुइ भाना॥ ३१॥
निज कुटुंब ते होवहिं न्यारे। दुख सुख सुनहिं न निकट निहारें।
बिछुरे, होहि कि नांहिन मेला। गमनि गुरू के संग दुहेला[5]॥ ३२॥
मन महिं गिनती करैं अनेक। नहिं बोलैं ढिग जलधि बिबेक।
करहिं कपट को प्रेम बनाइ। किम निबहै तूरन बिनसाइ॥ ३३॥
राम सिंह बोल्यो कर जोरि। 'भ्रात फते सिंह कौ दें मोर[6]।
मैं चलि हौं रावर[7] के साथ। जित गमनहुं गमनहिंगे नाथ'॥ ३४॥
तिमही डल सिंह करहि उचारी। गुर ते डर करि बनि अनुसारी।
'बाक न मोर्यो जाइ गुसाईं! गमन किसू के मन नहिं भाई'॥३५॥
गिनती गिनहिं अनेक प्रकारी। गुरू संग ते हटिबो भारी।
तथा कुटंब ते बिरहि दुहेला। ऐसो पर्यो आनि करि खेला॥ ३६॥
बेगम नौरंग की मरि गई। न्रिप चंब्याल सु दुहिता भई।
गे रवालसर गुर जिस काला। मिली आनि करि बुद्धि बिसाला॥ ३७॥
तबि प्रभु बर दीनो इस भांति। अबि लौ अहैं अपावन गात।
इह तन त्यागि अपर को पै हैं। सिख डल्ले घरि जाइ बसै हैं॥ ३८॥
तहिं सतिसंगति सेव कमै हैं। आछी तबि पावनता पै हैं।
पुन तेरो हम करहिं उधार। पहुंचहिंगे तहि सदन मझार॥ ३९॥
सो तबि करत रही बहु सेवा। सीत प्रसाद छकति गुरदेवा।
निरमल रिदा होइ तबि आवा। मिलि गुर पग पर सीस झुकावा॥ ४०॥

---

1. कहा 2. से 3. सी रखा था 4. होना 5. कठिन 6. लौटाना
7. आपके

'पूरब जनम मोहि सुध आई। अबि सति संगति सेव कमाई।
नहिं मैं जनम लहौं पुन और। करहु बाक श्री प्रभु जग मौर' ॥ ४१ ॥
श्री गुर कह्यो 'अलप बय होई। केतिक रही भोगणी सोई।
डल सिंह संग लहैं गति आछे। प्रापति होइ तोहि चित बांछे' ॥ ४२ ॥
सुनिकै चरन सरोज[1] सनेहू। रिदे बिसाल उपाइ अछेहू।
हाथ जोरि करि बंदन कीनी। मनो कामना प्रापती भीनी ॥ ४३ ॥
इम सतिगुर नित ठानहिं त्यारी। कर्यो चहैं दच्छन असवारी।
कहि भाई मैं भी हुइ साथ। गमन्यों चहौं दरस हित नाथ ॥ ४४ ॥
केतिक हटे गए निज घर को। केतिक हटे कपट करि उर को।
कितिक कपट बिन संगी भए। सतिगुर चरन प्रेम को लए ॥ ४५ ॥
तीन दशा सिक्खन की होइ। किनहुं लाभ लीनसि किन खोइ।
घर को मोह त्याग करि चले। से पूरन उतरे नर भले ॥ ४६ ॥
जबि ते पुत्र मरे बिच[2] मेले। अभराम करि शोक दुहेले।
नहिं घर रह्यो प्रभू ढिग आयो। संग दिवाने को गन ल्यायो ॥ ४७ ॥
श्री गुर राख्यो करि सनमाना। 'आउ अभै सिंह महिद सुजाना।
गुर हरिराइ प्रथम बच भयो। श्री नानक जहाज फटि गयो ॥ ४८ ॥
बहुर बिचार कर्यो भाविक्ख। दसवें पातशाहु बहु सिक्ख।
फट्यो जहाज इकत्र करहिंगे। मिलि मिलि शरधा धरहिं तरहिंगे ॥ ४९ ॥
हुइ हैं बली महान महाना। तबि भी जे मिलिहैंगे आना।
तिन को पंथ मिलावैं सरब। राज तेज बधि है बहु दरब ॥ ५० ॥
सभि अधीन होवहिंगे जाइ। तबि जहाज मिलि इक हुइ जाइ'।
अभै सिंह को रोज घनेरो। कर्यो प्रभू पिखि खरच बडेरे ॥ ५१ ॥
पुंज दिवाने अरु सिख आवैं। सभि को देग करहि त्रिपतावैं।
जबहि सुन्यो दच्छन को जाने। मिलि मिलि मसलति करहिं दिवाने ॥ ५२ ॥
'तुमरो नहीं बनै कित जाना। घरि रहिके थोरो भी खाना।
क्या लैनो दच्छन महिं जाइ। दूर देश सुध क्योंहुं न पाइ' ॥ ५३ ॥
इक दिन सतिगुर बहु समुझायो। 'संग चलो लीजहि मन भायो।
पूजहिंगे बहु लोक चरन को। गमनैं देशन सैल करन को ॥ ५४ ॥

---

1. कमल 2. में

दन प्रति प्रापति अधिक बडाई । हुइ तुम सिख संगति अधिकाई' ।
'आछी बात चलैं हम साथ' । कहि करि भले गमन को पाथ ॥ ५५ ॥
जबि बैठ्यो डेरे महिं आइ । मिले दिवाने मति बिचलाइ ।
'रहिबे[1] सुख, चलिबे[2] दुख' कहे । 'गमन दूर कैसे तुम चहे[3] ?' ॥ ५६ ॥
इत्यादिक अधिकै समुझायो । 'निस मैं भाजो' मति ठहिरायो ।
केतिक संग लीनि बैरारे । ले करि चले दिवाने सारे ॥ ५७ ॥
निस महिं भाज[4] गयो, तहिं रह्यो । गुर संग जाइ प्रसंग सु कह्यो ।
'हुते दिवाने जो मति मारे । हम ने जाने लैंगे सारे' ॥ ५८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'दक्खन गमन प्रसंग'** बरननं नाम दोइ त्रिसंति अंशु ॥ ३२ ॥

---

1. रहने में 2. चलने में 3. चाहना 4. भाग

अंशू ३३

नौहर नगर प्रसंग

दोहरा

डल सिंह बैठ्यो आन करि श्री मुख कीनि बखान[1] ।
'अपनी त्यारी कीजीए, दक्खन करहिं पयान' ।। १ ।।

चौपई

हाथ जोरि बोल्यो तबि सोइ । 'इन झारन राखा नहिं कोइ ।
हम चढि चले त्याग जबि भौन । ग्राम बसावहिगो तबि कौन' ।। २ ।।
गुरू कह्यो 'रहिं ग्राम रु झार । इह देहां सभि बिनसन हार ।
थिरता इनकी लखहु न कैसे । बरखा होति बुदबुदा जैसे ।। ३ ।।
जिस प्रवाहु कौ चलन सुभाऊ । भर्यो रहति है नित दरिआऊ ।
राखे झारन ग्राम बसावन । उपजहिं नर लाखहुं इन थावन ।। ४ ।।
क्यों तूं फसहिं मोह के फंध । लखि बंधू आदिक सनबंध ।
आगे देहिं देश को राज । हुइ अनुसारि अनेक समाज ।। ५ ।।
अपने पास थान मुझ देहो—। मांगति रहति हमहुं ते ऐहो ।
क्यों अबि भरम संग चहिं छोरा । चलहु त्यार ह्वै दक्खन ओरा' ।। ६ ।।
डरति कहै 'सति बचन भलाजी' । अंतर चाहति गुरू छला जी ।
तिम ही राम सिंह की बात । भै धरि त्यारी कीनि प्रयात ।। ७ ।।
दच्छन चलिबो[2] सभिनि सुनाई । सुपति जथा सुखि राति बिताई ।
बडी प्रात प्रभु कीनि शनाना । पहिरे बसत्र शसत्र बिधि नाना ।। ८ ।।
हुकम कर्यो 'घोरन पर ज़ीन । पावहु त्यारी करहु प्रबीन' ।
सुनि दाहन ततछिन करि लई । सकल सौज[3] बंधन करि दई ।। ९ ।।
संग खालसा होइसि त्यार । कितिक पदांती को असवार ।
सभिहूं कमरकसा करि लीन । धनुख तुफंग संभारन कीनि ।। १० ।।

---

1. कहा 2. चलना 3. सामग्री

डल सिंह राम सिंह भे त्यार। इन पर घनी क्रिपा प्रभु धारि।
हय[1] अनवाइ[2] अरोहे[3] नाथ। कसि कसि कटि गमने प्रभु साथ ॥ ११ ॥
श्री प्रभु की तबि भई चढाई। उडी धूर नभ लीनसि छाई।
परहरि [illegible] राइ। मत हम को लूटहिं प्रभु आइ ॥ १२ ॥
शोभति चढे जांति मग ऐसे। दच्छन गमने रघुपति जैसे।
सपति कोस गमने सुखदाइ। नाम ग्राम केवल तबि आइ ॥ १३ ॥
प्रथम सिवर तहिं ही करि दए। सुख समेत प्रभु आवति भए।
इंधन घास बटोरन कीना। करे उतारनि हय ते जीना ॥ १४ ॥
खान पान सभिहिनि करि लीना। भई रात्रि निंद्रा सुख भीना।
प्राति उठे त्यारी करिवाई। भए अरोहन तुरत गुसाईं ॥ १५ ॥
मारवाड़ के देश मझारी[4]। चलहिं तहां को—इच्छा धारी।
ग्राम झोरड़ी उतरे जाइ। तहां दुपहिरा थिरे बिलाइ[5] ॥ १६ ॥
कोस अशट दस पहुंचे जबै। झंडे ग्राम सिवर[6] किय तबै।
श्रमति भए नर, निसा बिताई। प्राची दिशा भई अरुनाई[7] ॥ १७ ॥
तंग तुरंगन ऐंचनि करे। त्यार होइ करि सतिगुर चरे[8]।
द्वादश कोस उलंघि मग आए। सरसा ग्राम तहां दरसाए ॥ १८ ॥
दल समेत प्रभु कीनसि डेरा। सकल बहीर आइ तिस बेरा।
परम सिंह अरु धरम सिंह जुइ। रूपे के चलिआइ भ्रात दुइ ॥ १९ ॥
प्रभु हित नयो मंच नित करैं। त्यारी हित तूरन सो घरैं।
बुनिकै पाइंद पाइ बनावैं। निस महिं गुर के तरे डसावैं ॥ २० ॥
थिर ह्वै कितिक समैं महिं फेर। पिख्यो पचावा ऊच बडेर।
तिस पर चढि डल सिंह हकारा। 'आउ दिखावहिं देश उदारा ॥ २१ ॥
जो तुझ को देनो हित राज। करहिं वधावन सकल समाज'।
मुख मुरझाने बहि उचारे। 'जबि चलि हैं तबि लेहिं निहारे' ॥ २२ ॥
छूटि गयो[9] धीरज किस केरा। मोह सदन गन ग्राम बडेरा।
पुन प्रभु आनि पलंघ पर थिरे। और निकट सभि बैठन करे ॥ २३ ॥
राम सिंह कर जोरि उचारा। भ्राता फते सिंह हित धारा।
'खुशी करहु इह सदन सिधावै। सकल कार पाछे निबहावै' ॥ २४ ॥
सुनि गुर कह्यो 'हमहु सभि जानी। बानी तूं भाखति छल सानी।
फते सिंह को जान न दै हैं। नहीं आप भी संग सिधै हैं ॥ २५ ॥

---

1. घोड़े 2. मंगवाए 3. सवार हुए 4. में 5. बिताना 6. शिविर 7. लालिमा 8. चले 9. समाप्त हो गया

हम क्या कहैं, भेज देहु पाछे। करहिं कपट तुझ होइ न आछे'।
'प्रभु जी ! नहि रिस रिदै करीजै। बिन नर सदन नहीं निबहीजै' ॥ २६ ॥
इम कहि फते सिंह को मोरा। काचे लोकन धीरज छोरा।
खान पान करि दिवस बितायो। संध्या समै तिमर गन छायो ॥ २७ ॥
डल सिंह कंकन दोनहुं उतरे। हित तकराई गुर ढिग धरे।
सुंदर खंडा दयो टिकाई। बाही संग मंच के लाई ॥ २८ ॥
निस जबि भई अधिक अंधकारा। हित भाजन के कीनस त्यारा।
गुर डेरे की करी प्रदच्छन। दोइ बार फिरि नीठ बिचच्छन ॥ २९ ॥
पुन फिरिबे की धीर न रही। नमो करी कर जोरे तहीं।
घरबारी दरबारी दौन[1]। चढि करि भाजि[2] हट्यो थल[3] तौन[4] ॥ ३० ॥
संग बिराड़ बहुत हटि आए। इक सोढी को भी संग ल्याए।
जाम जामनी ते प्रभु जागे। सौच शनान करन को लागे ॥ ३१ ॥
चार घरी के अंम्रित वेले। बसत्र शसत्र पहिरे सभि ले ले।
बहुर कह्यो 'डल सिंह को ल्यावो। हम ढिग बैठे, जाइ सुनावो' ॥ ३२ ॥
दल महिं रहै बेनवा एक। हित दरशन के जलध बिबेक।
देति प्रदछना जबि भज गयो। नीकी रीति निहारति भयो ॥ ३३ ॥
तिन गुर सन मुख गिरा उचारी। 'कित दरबारी कित घरबारी।
डल्ला कहां निमल्ला मल्ला[5]। रह्यो संग अल्ला ही अल्ला[6] ॥ ३४ ॥
कहिं सिख कपटी बेख[7] कुढाली। अंत समैं निबहैं नहिं नाली।
त्यों ही डल्ला कूड़ कुचल्ला। रह्यो एक अल्ला ही अल्ला ॥ ३५ ॥
निभ है कूड़ न सच्च अगारी। फसे मोह सुत बंधप नारी।
भाग्यो डल्ला ताउ न झल्ला। संग रह्यो अल्ला ही अल्ला' ॥ ३६ ॥
सुनि गुर कह्यो 'जाहु वे[8] डल्ला। आपहिं भाग्यों उर थरथल्ला।
मांगति रहति सदा थल तीर। कहां परी तेरे पर भीर' ॥ ३७ ॥
इक दिशि देखति प्रभू उचारा। 'इते कौनसे कीयसि त्यारा' ?
सिंह मझैल अफीमी एक। सुनि बोल्यो संग जलधि बिबेक ॥ ३८ ॥
'सभि मलवई भाजि क गए। माझे के माड़े थिर थए'।
कह्यो गुरू 'मझैल नहिं माड़े। देश मालवे के हुइं लाड़े' ॥ ३९ ॥
बहुर चढन त्यारी करिवाई। ज़ीन पाइ हय[9] लीन अनाई।
गए कोस द्वादश किय डेरा। नौहर नगर बसहि बहुतेरा ॥ ४० ॥

---

1. दोनों 2. भाग 3. स्थान 4. से 5. वीरों में से 6. कोई भी साथ नहीं, ईश्वर के बिना 7. देखकर 8. अरे 9. घोड़े

सैना सहित वहीर बिसाला। आनि सिवर सभिहूं तहिं घाला।
सतिगुर बैठे सहिज सुभाइ। एक सिंह पुरि बीच पठाइ ॥ ४१ ॥
'किशन लाल दिज इह थल धामू। ल्याउ बुलाइ बूझिबे कामू।
जोतिश बिद्या बिखै प्रबीन। पूरब दिशि पुरि महिं घर चीन' ॥ ४२ ॥
सुनि गुर ते ततछिन सिख गयो। जाइ जोतशी ल्यावति भयो।
आशिख बाद दीन ढिग बैसा। एव मिल्यो पूरब मिलि जैसा ॥ ४३ ॥
सतिगुर भाख्यो 'प्रशन पछानहुं। किमहुं बुलायो जानि बखानहु'।
सुनि प्रभु ते दिज लगन बिचारा। ग्रिह निबलाबल को निरधारा ॥ ४४ ॥
मूक प्रशन को भले पछाना। पुन सतिगुर के संग बखाना[1]।
'रावर केर मनोरथ जोऊ। मिलिबे हित तुरकेशुर सोऊ' ॥ ४५ ॥
पुन गुर कह्यो 'ताहिं सन मेला। होइ कि नहीं बताउ सुहेला?
सुनि दिज ने करि गगत बिचारा। ग्रैह अरु लगन सकल निरधारा ॥ ४६ ॥
'श्री गुर तुमरो मेल न बनै। ढिग न पहूंचहु तिह म्रितु हनै'।
तिस को पुत्र होइ बहु दीन। मिलै आपको मैं मन चीन' ॥ ४७ ॥
सुनि सतिगुर दिज के बच साचे। भए प्रसंन क्रिपा रस राचे।
कर्यो बिलोकन तिह जिस काला। करि दीन सो बिप्प्र[2] निहाला ॥ ४८ ॥
महिमा जानि परनि पग चाहा। कर्यो हटावनि श्री प्रभु तांहा।
कहति भयो 'द्वै घरी दरस ते। कर्यो क्रितारथ महा हरश ते ॥ ४९ ॥
जहिं तुम मास बरस लगि बासे। तहां हज़ारहुं सुमति प्रकाशे'।
सुनि गुर कह्यो 'न शरधा होई। यांते भयो क्रितारथ कोई ॥ ५० ॥
इसी बात पर सुनहुं कहानी। भरि जहाज ले सौज[3] महानी।
गयो बनक टापू महिं तहां। गऊ महिख[4] प्रापति नहिं जहां ॥ ५१ ॥
इक गो इनै जहाज चढाई। पै[5] पीवन हित निकट रखाई।
पायहु टापू महिं बिवहार। तहिं इक बनक सखा किय प्यार ॥ ५२ ॥
तिन अपने घर कर्यो अहारा। आदर सहित अचाइ उदारा।
तिस ने इसको बोलि पठायो। पाइस भोजन भले खुवायो ॥ ५३ ॥
प्रथम न अची सु अचरज भयो। इह क्या अहै ?—सु बूझनि कयो।
सो मुझ देहु करैं हम नीत। इह अहार हरखावति चीति—॥ ५४ ॥
सुनति बनक धेनू सो दीनि। —दुघध देति इह लेहु सु चीन—।
दे कै गऊ जहाज चलायो। अपने देश बिखै इह आयो ॥ ५५ ॥
सो ले गयो धेनु ग्रिह ओरा। थिर ह्वै करि बछरू तिह छोरा।
सो थन चोसनि लाग्यो जबै। सुरभी मूत करति भी तबै ॥ ५६ ॥

1. कहा 2. ब्राह्मण 3. साज सामान 4. भैंस 5. दूध

बासन विखै[1] बनक ले लीन। रीधन करि पुन खावनि कीन।
कौरा पाइ स्वाद पछुतयो। मो सों दगा[2] बनक करि गयो ।। ५७ ।।

तिम इह लोक रहे हम पास। जानी जुगति न सुमति प्रकाश।
दुगध न लीनि मूत्र को लयो। हम पर दोश बहुर धरि दयो ।। ५८ ।।

मिल्यो बनक[3] सों जबि नर ग्याता। दुगध काढिओ तिन तबि जाता।
यांते किन किन शुभ मति धारी। नतु सभि रहे मूत्र अधिकारी ।। ५९ ।।

सुनि कै दिज अनंद उर धार्यो। 'धंन धंन सतिगुरन' उचार्यो।
ततछिन ग्यात पाइ घर गयो। गुर जसु जहिं कहिं बरनति भयो ।। ६० ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'नौहर नगर प्रसंग'** बरननं नाम तीन त्रिसती अंशु ।। ३३ ।।

---

1. में 2. धोखा 3. बनावट, सजावट

अंशु ३४

श्री गुर पंथ चलन प्रसंग

दोहरा

श्री सतिगुर पूरन पुरख दे दिज को दीनार।
गुरमति दे रुख़सद[1] कर्यो गमन्यों नगर मझार।। १ ।।

चौपई

दिन को त्रिती जाम जबि होयो। मादक समै भयो जबि जोयो।
सुक्खा अरु अफीम छकि लीनि। सोच शनान भले तबि कीन।। २ ।।
केश सुधारि जूड़ को कर्यो। सुंदर शमस सु कंघा फिर्यो।
पेच बंधेज अनूठे पागहिं। ज़ेवर जोति जवाहरि जागहिं।। ३ ।।
पट[2] सूखम बहु जामा पायो। जिस महिं सभि सरीर झलकायो।
खड़ग बिलंद गरे[3] महिं धारा। धारा खर लगि हेम सुधारा[4]।। ४ ।।
भर्यो खतंगनि संग निखंग। कट सों कस्यो सुलायक जंग।
धनुख कठोर हाथ महिं लयो। त्यार तुरंग अनावन कयो।। ५ ।।
नहुर नगर कं हेरनि हेतु। गमने सतिगुर बने सुचेत।
केतिक सिंह पदांती साथ। जाइ प्रवेशे पुरि महिं नाथ।। ६ ।।
पूरब जहिं चबूतरा चौरा। तहिं पहुंचे सोढी सिरमौरा।
कुछ सोपान उचेरे थान। ऊपर दीयो चढाइ क्रिकान।। ७ ।।
थल ऊचे चढि करि थिर थए। दूर दूर लगि देखति भए।
दास सुराही दार तरे ते। चढ्यो धाइ करि बेग धरे ते।। ८ ।।
पहुंच्यो चहै गुरू के पास। पग सों दर्यो कबूतर नाश।
तहिं नर गन बैठे रिस ठानी। 'कहां करम तें कीनि ?' बखानी।। ९ ।।
रहिं चबूतरे तोम कबूतर। हत्यो, पिखे बिन दयो पगूतर।
सतिगुर कह्यो 'कहां हुइ गयो ? बिनसन कौ सगरे तन कयो।। १० ।।

---

1. विदा किया 2. कीमती कपड़े 3. गले 4. मुट्ठी से लेकर सारी तलवार को सोना लगा हुआ था

एक मरे ते अचरज कहां। होनहार पर रिस[1] क्या लहा'।
सुनि सभि बोले 'भल तुम आए। सरब कबूतर देहु मराए'॥ ११ ॥
सुनि गुर कह्यो 'जि अस मन आई। मरहिं कबूतर अबि समुदाई'।
बचन गुरू के कहिने करिके। जिते कबूतर गिरे सु मरिके॥ १२ ॥
हुतो हज़ारहुं कीरन थान। हेरि हेरि नर भए हिरान।
इह अज़मत[2] जुति पुरख बिसाले। करे बाक ते खग हति जाले—॥ १३ ॥
उठि उठि करि पग बंदन करे। 'छिमहु भूल प्रतिकूल जि उचरे।
रावर को प्रताप नहिं जाना। अबि जाना जबि बाक बखाना॥ १४ ॥
मरे कबूतर देहु जिवाइ। करहिं अवग्गया अपर न काइ'।
सुनि बिनती करि क्रिपा उचारें। 'पावहु चोग जीवि हैं सारे'॥ १५ ॥
दाने आनि बिखेरन करे। उठि पारावत जीवन धरे।
बीन बीन चोगा निज खावैं। हेरि हेरि सगरे बिसमावैं॥ १६ ॥
सिख के पैरन ते जो मर्यो। सो नहिं जीयौ रह्यो धर पर्यो।
तिस को देखति बहुर उचारे। 'इस पर क्यों न क्रिपा निज धारे ?'॥ १७ ॥
सिंहन भी कहि 'इसे जिवावो'। प्रभु फुरमाइ 'चोग इस पावो'।
ले करि सिक्खन तिसै अगेर। मोठ बाजरी जबहि बिखेरे॥ १८ ॥
उठि जीव्यो हेरति बिसमाए। ल्याइ उपाइन सीस निवाए।
'श्री गुर सुजसु सुन्यों हम जैसे। दरशन कर्यो आप को तैसे'॥ १९ ॥
दोइ घरी ठहिरे पुन तहां। पुन गमने बज़ार बड जहां।
बडे धनाढ बनक बिवहारू। हाटन महिं दीनार अंबारू॥ २० ॥
गिनती कहां रजतपण केरी। मुकता बहु प्रवाल को हेरी।
मुहरनि देखि अनंद उदारा। सिंहन संग सुनाइ उचारा॥ २१ ॥

बचन

नहुर गुरू की मोहर॥ सिंह आवहिंगे जबि लूटहिंगे॥

चौपई

इम कहि नगर निहार्यो सारा। पुन आए डेरो जहिं डारा।
नाम [illegible] को छीनतलाई। जहिं उतरे निस बसनि गुसाईं॥ २२ ॥
खान पान करि सैना सारी। सुपति जथा सुख राति गुज़ारी।
लूटन बचन गुरू जो भन्यो। हो पूरन भा हम इम सुन्यों॥ २३ ॥
बरख अठारां सै रु इकादश। पंथ खालसा गमन्यो बरबस।
चूरू पुरि की सुनि बड धाया। ब्रिंद खालसे को दल धाया॥ २४ ॥

---

1. क्रोध 2. महत्व

पहुंचे निकट सुनी सभि बात। 'वारी खारा पियो न जाति।
जे पीवैं लागैं अतिसारा। होति जाति मानव बीमारा ॥ २५ ॥
पुरि के वहिर अहै जल ऐसो। पियो न जाइ पियो रुज जैसो'।
सुनिकै हट्यो खालसा बली। 'छूछे चलैं बात नहिं भली'॥ २६ ॥
पुरि नौहर को दल चलि आयो। संग तुफंगै जंग मचायो।
बरे हेल करि लूट बजारा। लीनो दरब ब्रिंद दीनारा ॥ २७ ॥
त्रिपत होइ तहिं ते चलि आए। मुल हय[1] ले असवार बनाए।
केतिक भए तबहि सिरदार। लए ग्राम गन तुरकनि मार ॥ २८ ॥
कह्यो गुरू को तबि सफल्यो। ब्रिध सिंहनि ते हम सुनि लयो।
छीन तलाई डेरा पाइ। श्री प्रभु बसि तहिं राति बिताइ ॥ २९ ॥
प्रात होति करि सौच शनाना। चढि किकान पर कर्यो पयाना[2]।
जाति खालसे को दल साथ। कोस अशट दस पहुंचे नाथ ॥ ३० ॥
नगर भादरा उतरे जाइ। श्रमत बिहीर पहूच्यो आइ।
त्रिण दाना गन दीनि निहारी। श्रम निरबार्यो बाहन भारी ॥ ३१ ॥
लोकन को घ्रित बहु मिशटान। सतिगुर दीन श्रमति गन जानि।
देग त्यार होई बरताए। खान पान करि सभि त्रिपताए ॥ ३२ ॥
सुपति होइ करि श्रम निरवारा। भई प्रात पुन कीनसि त्यारा।
परम सिंह अरु धरम सिंह दुइ। पिखि सेवा को प्रभु प्रसंन हुइ ॥ ३३ ॥
पहुंचहिं पग ते पूरब जाइ। नवों मंच नित लेति बनाइ।
दुइ तुरंग बखशे हत्थ्यार। गुर बखशिश लीनसि कर धारि ॥ ३४ ॥
श्री प्रभु आगे पंथ पयाने। तिस दिन श्रमत साथ को जाने।
अलप मजल करि उतरे जाइ। सपति कोस पर ग्राम जु आइ ॥ ३५ ॥
नाम सुहेवा तिसु को जानि। उतर्यो डेरा सभि हूं आनि।
परम सिंह तबि लै हथियार। बंधि भले सिर लीने धारि ॥ ३६ ॥
घोरन को मग[3] महिं डुरिआए। नहिं चढिबे कहु चित ललचाए।
गुर बखशिश उत्तम बहु जानी। राखि अदाइब को बहु मानी ॥ ३७ ॥
सिक्खन प्रभु सों जाइ बताए। 'हयनि चढे नहिं, पग सों आए।
शसत्र सकल सिर पर धरि आने। उलटो खेद चलन मो जाने'॥ ३८ ॥
सुनि सतिगुर निज निकट हकारे। 'बूझ्यो इह क्या कीनसि कारे?
हय न चढे नहिं शसत्र सजाए? सिर धरि कर महिं गहि करि ल्याए ॥ ३९ ॥
खेद चलन को जानि सु दीने। सो तुम नहीं निवारन कीने।
इह कारन क्या देहु बताई?' हाथ जोरि तिन दुहन सुनाइ ॥ ४० ॥

1. घोड़े 2. चल पड़े 3. मार्ग

'रावर की बखशिश को अदब[1]। जे न करहिं हम को बड गज़ब[2]।
पूजनीय हम तिन को जाने। मसतक टेकहिं तुम सम माने' ॥ ४१ ॥
सुनि प्रसंन ह्वै गुरू उचारा। —'तुमरी जिहवा ही खग धारा[3]।
जिहठां निकसै बाक तुहारा। आयुध ते तूरन करि पारा' ॥ ४२ ॥
इम बर दे करि युति सनमाना। निकट बिठाए क्रिपा निधाना।
तहां जंड इक सनमुख खर्यो। तिस महिं चलदल इक लग पर्यो ॥ ४३ ॥
अविलोकति प्रभु बाक बखाना[4]। इह जबि चलदल वधहि महाना।
तरै जंड को लेइ दबाई। सभि दिशि ते ऊपर ले छाई ॥ ४४ ॥
तबहि खालसा वधहि हमारा। गुडली चलहि तुरक को मारा'।
सुनति खालसे टेक्यो माथा। 'धंन धंन तुम श्री गुर नाथा' ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'श्री गुर पंथ चलन प्रसंग'** बरनन नाम चतर त्रिसंती अंशु ॥ ३४ ।

---

1. शिष्टाचार 2. विचित्र 3. तलवार की धार है 4. कहा

अंशु ३५

पुशकर गमन प्रसंग

दोहरा

खान पान करि जथा सुख प्राति भई हुइ त्यार।
चढि बैठे श्री सतिगुरू गमने पंथ मझार[1] ॥ १ ॥

चौपई

श्री गुर आगे जबि गमनए। संगी सिंह सकल चढि गए।
राम सिंह भगतू का तहां। इत उत टरिकै थिर हुइ रहा ॥ २ ॥
केतिक दूर उलंघे जबै। चढि तुरंग पर हट्यो सु तबै।
एक सिंह वाहन दौराइ। प्रभु सों मिलि कै दीयो बताइ ॥ ३ ॥
'राम सिंह भाई भजि चल्यो[2]। संग आप के नांहिन मिल्यो'।
सुनि प्रभु थिर हुइ सिक्ख पठाइ। 'आन हमारी दिहु, नहिं जाइ' ॥ ४ ॥
गुर को पठ्यो सिंह तहिं गयो। 'राम सिंह ठहिरो' कहि दयो।
'प्रभु मुहि भेजा दे त्वै आन। तीन लकीर न उलंघ पयान ॥ ५ ॥
संग चलहु सगरे सुख चीन। हटन हुतो क्यों खुशी लईन।
उचित न तोहि भाज करि जाना। सुनि कै खरे प्रभू तिस थाना' ॥ ६ ॥
'दक्खिण बनहि जान नहिं मेरो। घर के काज अनिक बिधि झेरो।
नहिं मैं रहौं मिलौं नहिं जाइ। करौं बंदना इस ही थाइं' ॥ ७ ॥
इम कहि लंघि लकीरनि गयो। देखि सिंह उर अचरज भयो।
प्रभु को करी बतावन सारी। 'उलंघ्यो आन लकीर अगारी ॥ ८ ॥
चहै सदन, धीरज उर खोई। हटहि नहीं इत को बिधि कोई'।
पुन सतिगुर निज पठ्यो रुमाल। 'आगे देहु तिसी के डालि ॥ ९ ॥
कहहु कि गुरू पाग इह जान। इस को उलंघ न बनहि, सु मान।
सुनति सिंह घोरा दौराइ। आनि मिल्यो गमनति जिस थाइं ॥ १० ॥

---

1. मैं 2. भाग गया है

मग महिं डार्यो दियो सुनाइ। 'इह गुर पाग न उलंघन पाइ।
हटहु पिछेरे मिलि करि मिलो। इसी बात मैं लखि निज भलो' ॥ ११ ॥
राम सिंह बोल्यो 'मैं जाना। हट्यो न जै है', निशचै माना।
दक्खण दूर देश हम घर ते। हान लाभ सुध कोइ न करते ॥ १२ ॥
हमते त्याग्यो जाइ न सदन[1]। लग्यो न जाइ गुरू के बदन[2]।
इम कहि उलंघि रुमाल सिधायो। डाल. मूल इक बार नसायो ॥ १३ ॥
सिंह गयो हटि सतिगुर पास। 'मुझ ते तज्यो न जाइ अवास'।
सुनि प्रभु को रिस भई[3], बखान[4]। जो घर त्याग न सकै अजान ॥ १४ ॥
एक मास लगि टक्कर मारहि। पुन तिस घर को त्याग सिधारहि।
डल्ले सहित जितिक भज गए[5]। सो जम ने तूरन गहि लए ॥ १५ ॥
जो हम को इत छोरि सिधाए। उत उन को जम गहि सहिसाए'।
इम दे स्राप चले प्रभु आगे। हटे जु सगरे आपद पागे ॥ १६ ॥
राम सिंह जबि हटि करि आयो। भयो बावरा घर प्रविशायो।
फते सिंह ने आनि उतारा। प्रविश्यो अपने सदन[6] मझारा[7] ॥ १७ ॥
कंधन[8] सों सिर दे दे मारहि। घरि के सभि गहि गहि हट कारहिं।
उत डल्ले पर आपदा परी। भयो रोग तन ह्वै जरजरी ॥ १८ ॥
अपर जितिक तजि तजि गुर आए। सभि को संकटि लीनि दवाए।
मास बित्यो दुख पावति जबै। राम सिंह तनु त्याग्यो तबै ॥ १९ ॥
तिम ही केतिक दिन दुख पाइ। डल्ला मर्यो रिदे पछुताइ।
चढी धाड़ पुरि लूटन आई। सुनि डल्ले को मर्यो तिथांई[9] ॥ २० ॥
हुते पौत्र दो खेल सु पागे। इक ले तकवा दौर्यो आगे।
इक पाछे पकरन को धायो। गिर्यो करेजा तकवे घायो ॥ २१ ॥
दुती सीतला ते मरि गयो। इम सभि बंस बिनाशी भयो।
जो जो भाजे बिन बच माने। संकट पाइ सु ततछिन हाने ॥ २२ ॥
इम स्रापति करि प्रभू पयाणे। जाइ पहूंचे मधू सिंहाणे।
कोस अशट दस डेरा कियो। संध्या समैं आंनि तबि भयो ॥ २३ ॥
श्री गुर मन महिं इम ठहिराई। —परम सिंह जे दोनहुं भाई।
नवों मंच किम आज बनावैं। देखि लेहु किम सिदक कमावैं[10] ॥ २४ ॥
दिन नहिं कछू रह्यो इस काल। आज न बनहिं किसू बिधि नाल—।
तबि द्वै भ्राता उद्धम कीनि। दोइ दुछांगे बाढि सु लीनि ॥ २५ ॥

---

1. घर 2. शरीर 3. क्रोध आया 4. कहा 5. भाग गए 6. घर 7. में 8. दीवारों 9. उसी जगह 10. प्रेम निभाते हैं

गाडे जहिं प्रभु सुपतनि थान। पीन बेर बधी तिन तान।
मंचे की बिधि बनि करि तुरत। ऊपर डारि बसत्र गन फुरत ॥ २६ ॥
नीके करि गुदगुदा सुधार्यो। जाइ निकट गुर संग उचार्यो।
'त्यार मंच है लीन बनाइ। आप बिराजहु तिस पर जाइ' ॥ २७ ॥
सुनि बिसमे तबि उठि करि गए। हुइ अरूढ प्रभु बैठति भए।
देखन हेतु तरैं कर पायो। —किम इन बुन करि नयो बनायो?— ॥ २८ ॥
बाही के थल मोटी बेरे। पावैं थान दुछांगे हेरे[1]।
प्रभू प्रसंन होइ बुलिवाए। खुशी अधिक तिन को फुरमाए[2] ॥ २९ ॥
'पूरन सिक्खी तुमहुं निबाही। अबि हटि जाहु बसहु घर मांही।
बिना शसत्र ही शत्रुनि जीतहु। किस ते चिता होइ न भीतहु' ॥ ३० ॥
इम कहि कीनसि खान रु पाना। सुपति जथा सुख क्रिपा निधाना।
बडी प्राति उठ सौच शनाने। शसत्र बसत्र तन धरि सवधाने ॥ ३१ ॥
पाछे परम सिंह को मोरे। हुकम अमोर जानि कर जोरे।
'हलत पलत महिं बनहु सहाई। चरन कमल चित रखहु गुसाईं ॥ ३२ ॥
अपने लखि करि नहिन बिसारहु। दासन दासहि दास बिचारहु'।
इम कर बंदन करति पयाने। रिदे राखि सतिगुर को ध्याने ॥ ३३ ॥
मधू सिंहाणे पुरि ते डेरा। प्रभु जी कूच कर्यो तिस बेरा।
हय अरूढ करि पंथ पयाने। पीछे सिंह बहीर सिधाने ॥ ३४ ॥
कोस अशटदश तिस दिन गए। पुशकर तीरथ आवति भए।
उतरि परे तहिं सिवर लगायो। सकल बहीर श्रमत ह्वै आयो ॥ ३५ ॥
कह्यो प्रभू 'इत करहु मुकामू[3]। श्रम निरवार लेहु बिसरामू'।
बसे निसा महिं खान रु पान। भए प्राति करि सौच शनान ॥ ३६ ॥
चेतन बिप्प्र मिल्यो तबि आई। 'आशिरबाद' कह्यो गुर ताईं।
अधिक दान दीनो तिस पान। पर सूखम, दीनार, किकान ॥ ३७ ॥
श्री बाबा नानक जहिं थिरे। तिसी घाट गुर मज्जन करे[4]।
तहां बैठि करि सिंह साथ। पूरब को प्रसंग कहिं नाथ ॥ ३८ ॥
'गमनति करते सहज सुभाइ। श्री बाबा जी बैठे आइ।
गोरख लीए सिद्ध समुदाई। आनि अदेश अदेश[5] अलाई ॥ ३९ ॥
चरचा कुछक जोग की कीनि। जथा जोग तबि उत्तर दीन।
सुनि सिध सकल निमे कर बंदि। गोरख, भरथरि, गोपी चंद ॥ ४० ॥

---

1. बाँही की जगह मोटे रस्से हैं 2. कहा 3. ठहरे 4. बैठे 5. आदेश दिया

मंगल आदिक सुजसु उचारा। —श्री बाबा तुम धंन उदारा—'।
इम बोलति जिस काल क्रिपाला। तहिं के नर करि मेल बिसाला ॥ ४१ ॥
बिप्प्र बनक ते आदिक जाल। चलि आए चेतन दिज नाल।
करि करि नमो प्रवारति बैसे। 'कौन जात' बूझति भे ऐसे ॥ ४२ ॥
'संग आप के केसन धारी। क्या इन की दिहु जाति उचारी।
बूझति हैं लखि बेस नवीना। हिंदू तुरक इम किनहुं न कीना' ॥ ४३ ॥
सुनि करि गुर फुरमावनि कीआ। 'भयो खालसा जग महिं तीआ[1]।
हिंदू तुरक दहिन ते न्यारो। श्री अकाल के दास बिचारो ॥ ४४ ॥
बीज मात्र अबि रूप दिखावा। हति तुरकन ठानहिं छित दावा।
सभि पर बली बीर बर बंका। आयुध धारी रिपहि अतंका[2]' ॥ ४५ ॥
सुनि करि सरब लोक बिसमाए। गुर समरथ इह नयो उपाए।
उठे प्रभू चेतन ले नाल। देखन लागे ठवर बिसाल ॥ ४६ ॥
तीरथ पार थान दिखलावा। पिखी गुहा जहिं नाग रहावा।
इत्यादिक अविलोकनि[3] करे। चेतन कछू प्रसंग उचरे ॥ ४७ ॥
'कमलासन मख कीनसि इहां। दारुण बेख रुद्ध को महां।
ले कपाल को जाचन आवा। बिन जाने ते झिरकि हटावा ॥ ४८ ॥
पथम अमंगल बेख दिखावै। मख महिं नहिं ऐसे बनि आवै।
तबि शिव ने किय भगन कपाला। ले मख थल महिं जहिं कहिं जाला ॥ ४९ ॥
पिखि प्रताप ब्रह्म ने जाना। करी सतुति आछी बिधि माना'।
इत्यादिक है बडो प्रसंग। ग्रंथ वधन ते उर डर संग ॥ ५० ॥
नहिं बरनौं श्रोता सभि जानहुं। कथा गुरन की सुनहुं सुजानहुं।
रही कितिक सो चित दे बरनौं। बांछति प्रापत पूरन करनौं ॥ ५१ ॥
कवि संतोख सिंह मन प्रीत। गुर की कथा रचौं शुभ रीत।
कर्यो मनोरथ पूरन मोरा। गुरू निहोरं सांझ अरु भोरा ॥ ५२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'पुशकर गमन प्रसंग'** बरननं नाम पंचत्रिसती अंशु ॥ ३५ ॥

---

1. तीसरा 2. भय 3. देखने

अंशु ३६

दादू को प्रसंग

दोहरा

इसी रीति नित प्रति गमन करति गुरू महाराज।
मारवार के देश महिं पहुंचि गरीब निवाज ॥ १ ॥

चौपई

पुरि नराइणा पहुंचे जाइ। जहिं दादू द्वारा कहिलाइ।
अवलोकति डेरा प्रभु घाला। सुंदर जहिं कहिं थान बिसाला ॥ २ ॥
उतरि तुरंग ते थिरे गुसाईं। सिंह आनि बैठे तिस थाईं।
सने सने सभि आइ बहीर। उतरि परे होइ बहु[1] भीर[2] ॥ ३ ॥
हयन हिरेखा होति बिसाला। गाडहिं मेखन शबद उठाला।
कितिक बिलोकति दादू द्वारा। को त्रिण ईंधन लेनि पधारा ॥ ४ ॥
तहां जैत साहिब माहंत। शांति रूप शुभ अज़मत वंत।
साधु सैंकरे दादू मग के। रहैं प्रलोक साधने लगिके ॥ ५ ॥
करनि शनान ब्रिती को रोकन। एक रूप सभि लोक बिलोकन।
दया छिमा धीरज संतोख। निरहंकार अकाम अरोख ॥ ६ ॥
दादू सुंदर गिरा बनाई। बैठे पठति कितिक मन लाई।
गुर दल को नर को चलि गयो। तिसे महंत बूझतो भयो ॥ ७ ॥
'को उतर्यो, कित ते चलि आयो? । किस कारज को अग्र सिधायो ?'
सुनि सगरो सु प्रसंग उचारा। 'सतिगुर गोबिंद सिंह उदारा ॥ ८ ॥
पुरि अनंद जिन की रजधानी। वध्यो तुरक सों बैर महानी।
कई लाख जोधा जिन घायो। बहु बारी संग्राम मचायो ॥ ९ ॥
प्रथम अनंद पुरे रण भए। पुन चमकौर तुरक बहु छए।
बहुरो जंग मुकतसर भयो। सो गुर अबि आवनि इत कयो ॥ १० ॥

---

1. बहुत 2. भीड़

साहिबज़ादे रण महिं दोइ। बालक द्वै तुरकन गहि सोइ।
इम चारों तिन के सिर चरे। राज तेज रिपु को नित हरे' ॥ ११ ॥
सुनि महंत जैत सभि बात। अचरज धरति रिदे अवदात—।
कहां तुरकपति सभि छित मालिक। महां सुभट तिह सों रण घालक ॥ १२ ॥
इकठे करे साध तिस काला। दरशन करन हेतु सो चाला।
जहिं प्रभु थिरे दिवानि लगाइ। चितवत महिमा को तहिं आइ ॥ १३ ॥
निकट होइ करते करि नमो। श्री गुर पिखि महंत तिह समो।
सादर निकट बिठावन कर्यो। बैठि दरस करि आनंद भर्यो ॥ १४ ॥
साहिबज़ादन की करि गाथा[1]। बोलति भयो गुरू के साथा।
'इसी हेतु श्री दादू कह्यो। निरदावे महिं बहु सुख लह्यो ॥ १५ ॥

दोहरा

दादू दावा दूर करि विन दावे दिन कट्ट।
केती सौदा करि गई एत पसारी दे[2] हट्ट[3] ॥ १६ ॥

चौपई

दावा करने महिं दुख घने। उठैं उपाधि न जाहीं गने।
निरदावे महिं सभि सुख अहै। छिमा करनि ते नर सो लहै ॥ १७ ॥
सुनि सतिगुर तवि तिसै सुनायो। 'संतनि के मत इम बनि आयो।
जिनहुं धरम की रच्छा करनी। सुनि की गति जिम है बरनी ॥ १८ ॥

दोहरा

दादू दावा बंधि के सभि को लईए लूट्ट।
इक्को रहिसी[4] खालसा होर सभि मरसी हुट्ट[5] ॥ १९ ॥

चौपई

धरम विदार्यो हिंदू तुरका। निशचा कर्यो दूर सभि उर का।
गहिकै शसत्र दीजी अहि दंड। रहै धरम तबि दुशटनि खंडि' ॥ २० ॥
जैत कहै 'हमरो गुर भाखा। छिमा बिखै सगरो गुन राखा।
जिम करनी सो राहु बतायो'। पुन दोहा करि और सुनायो ॥ २१ ॥

दोहरा

'दादू समा बिचारि कै कलि का लीजै भाइ।
जे को मारै ढीम[6] इट लीजै सीस चढाई' ॥ २२ ॥

---

1. गुरु पुत्रों की कहानी सुनाकर 2. की 3. दुकान 4. रहेगा 5. और सब मर जाएंगे 6. ईंट

चौपई

सुनि गुर कह्यो 'तुमहु इम करनी। पंथ त्रिविरत तिनहु कहु बरनी।
जिनहु कुकरम[1] हटावनि करनो। तिन को अपर बिधि सों बरनो॥ २३॥

दोहरा

दादू ! समां बिचार कै कलिका लीजै भाइ।
जे को मारै ईंट ढीम पाथर हनै रिसाइ'॥ २४॥

चौपई

सुनि करि सिंह सभा गन साधू। --नहिं सह़ीअहि दुशटनि अपराधू।
हसे सकल ही मोद बढाइ। 'वाहु वाहु बच' कहे सुनाइ॥ २५॥
दोनहुं पक्खन की द्वै बात। भई सभा महिं शुभ बक्खयात।
गुरू कह्यो 'आयो कलि काला। दुशटन को भा तेज कराला॥ २६॥
संत गरीब धेनु दिज दोखी। करहिं अवग्या मूरख रोखी।
तिन सों दंड करनि बनि आवै। धरनि छिमा नहीं निबहावै॥ २७॥
तेग़ तुपक तीरन खर धरि करि करहि दिखावन तेज तरातर।
तौ कलि काल बिखै[2] बनि आवै। जीतहिं हति चिंता बिसरावै॥ २८॥
सुध बुधि सहत भले गुन सारे। नर उर ते कलिजुग निरवारे।
धरहिं शसत्र सिमरहिं सतिनामू। धरम धरहिं पहुंचहिं सरधामू[3]॥ २९॥
इस कारन ते पंथ उपायो। दे आयुध[4] रस बीर वधायो'।
बचन बिलास करे इत्त्यादि। हरखे दुहदिशि सुनि संबादि॥ ३०॥
साध जैत कर जोरि उचारा। 'आज देग़ ते लेहु भंडारा।
श्री दादू अस हुकम बखाना[5]। आइ जि इहां सभिनि दे खाना॥ ३१॥
यांते लीजहि भाउ हमारो। दल जुति कीजै अंगी कारो'।
श्री प्रभु जी सुनि कै मुसकाए। पतिआवन हित तांहि अलाए॥ ३२॥
'हमरे संग बाज बहुतेरे। नहिं अहार पायो इस बेरे।
इन को त्रिपति पथम करि लीजै। पाछे हमहुं देग़ कहि दीजै[6]'॥ ३३॥
सुनति साध उपजी दुचिताइ। —इहु अनबन कैसे बनिआइ[7]।
धरम अहिंस सदा हम मांही। बाज मास बिन त्रिपतैं नाहीं॥ ३४॥
सतिगुर भी जानति इम आछे। नऊ हमहुं ते आमिख[8] बांछे—।
हेतु परखिबे लखीअति ऐसे। समझ रिदे बोल्यो तब्रि तैसे॥ ३५॥

---

1. बुरे काम 2. में 3. स्वर्ग 4. हथियार 5. कहा 6. हमें खाना दें
7. अनुचित कैसे उचित बन गई 8. मांस

रावरि[1] बाजन ब्रिंद अगारी। आज करैं हम बिनै उचारी।
साधन की सो मरज़ी मानहिं। करहिं जुवार बाकुरी खानहि ॥ ३६ ॥
अंन संग त्रिपतावौं सारे। बहुर लीजीअहि आप अहारे'।
सुनति साध ते गुरू उचारा। 'हम भी मानहिं करहिं अहारा ॥ ३७ ॥
सुनिकै साध गयो हरखाइ। त्यारी करी सकल बिधि जाइ।
पीछे सिंह परसपर मिलि करि। कर्यो बिबेक बिचार रहति धरि ॥ ३८ ॥
श्री सतिगुर के संग उचारे। जबि आए तुम दादू द्वारे।
नमो कमान साथ तुम कीनी। रहत बिहीन खालसे चीनी ॥ ३९ ॥
भए उचित दैबे तनखाहू। सदा अभूल आप उर माहू।
बखशहु जग औगुन समुदाए। लेहु खालसे ते बखशाए' ॥ ४० ॥
सुनि बिबेक को भए प्रसंन। कह्यो कि 'गुरू खालसा धंन।
करी नमो हम परखन हेतु। भए सिंह कै नींह सुचेत ॥ ४१ ॥
लिहु तनखाह आवाज़ सुनावहु। इस विधि की नित रहत कमावहु'।
सिंह सआयुध[2] इक कहि तबै। 'पंच हज़ार देहु धन अबै' ॥ ४२ ॥
सुनति दूसरे तबहि बखाना[3]। 'तुम इह भाख्यो दरब महाना[4]।
करहु अवाज पंज सै केरी'[5]। सुनि तीसर बोल्यो तिस बेरी[6] ॥ ४३ ॥
'बहुत पंच सै भी इन कह्यो। इस ते अलप कहनि हम लह्यो।
सुनि चौथो बोल्यो सभि मांहू। 'गुर ढिग धन की नहीं प्रवाहू' ॥ ४४ ॥
पंचम कहै 'पंच लख लावहु। अबि ही दरब गुरू ते पावहु।
सुनति खालसे सकल बिचार्यो। करि मसलत को बहुर उचार्यो ॥ ४५ ॥
'कहहु जितिक' गुर दें धन तेतो[7]। पुन सिंहनि को लागहि एतो।
को दे सकहि न करो बिचारन। यां ते कीजहि उचित उचारन' ॥ ४६ ॥
तबि सभि समझे करी अवाज। 'देहिं सवा सै धन महांराज'।
सतिगुर करि मनज़ूर तनखाहू। दोनो सरब खालसे पाहू ॥ ४७ ॥
सिंहन ले करि कार[8] लगायो। लंगर को तंबू बनवायो।
रिदे प्रसंन क्रिपा निधि तबै। —भयो सुचेत खालसा अबै। ४८ ॥

दोहरा

पांच सै[9] की भेट दे प्रभु जी सिख तनखाह।
हम दीनी जो दे न हित तिस कि पूंजी स्वाह[10] ॥ ४९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'दादू को प्रसंग'** बरननं नाम खशट त्रिसंति अंशु ॥ ३६ ॥

---

1. आपके 2. सशस्त्र 3. कहा 4. अधिक धन 5. की 6. समय 7. उतना ही 8. काम 9. सौ 10. नष्ट

अंशु ३७

दया सिंह मिलन प्रसंग

दोहरा

इतने मैं आवन कीयो जैत साध समुदाइ[1]।
रसत उचाए संग सभि चावर चून बधाइ ।। १ ।।

चौपई

घ्रित मिशटान आनि करि खरे। सकल क्रिपा निधि आगे धरे।
ब्रिंद बाज जिस थल बैठारे। भयो जैत थिर तिनहु अगारे ।। २ ।।
हाथ जरि करि बिनै बखाने। 'तुम सतगुर के बाज सुजाने।
प्रथम जनम किय करम भलेरे। जिस ते कर सपरश गुर केरे ।। ३ ।।
इह साधन को लखहु सथाना। जिनहु अहिंस धरम मन ठाना।
कयों चहैं प्रभु की पहुनाई। तुम लौ रही बात अबि आइ ।। ४ ।।
अंन अहार आज तुम करीअहि। नहिं आमिख[2] को रिदै चितरीअहि।
श्री दादू को अहै भंडारा। जिस ते मानव अचहिं हज़ारा' ।। ५ ।।
हुती जुवार बाकुरी जेय। इम कहि अग्र बिखारी सेय।
बाजन बिनै साध की मानी। ततछिन कीनि अंन गन खानी ।। ६ ।।
कितिक सिंह अवलोकति गए। सकल प्रसंग सुनावति भए।
'प्रभु जी बाजन अची जुवारी। जैत साध जबि बिनै उचारी ।। ७ ।।
सुनि मुसकाइ गुरू तबि भाखा[3]। 'रसत देग[4] की लिहु अभिलाखा'।
आनि ज़ैत सगरी तबि दई। जितिक लांगरी गुर के लई ।। ८ ।।
कयों त्यार लंगर ततकाला। प्रथम परोस्यो थाल बिसाला।
सकल अहार पाइ समुदाए। क्रिपा निधान हेतु सो ल्याए ।। ९ ।।

---

1. जैते के साथ उसके बहुत से शिष्य भी आए 2. मांस 3. कहा 4. खाने का सामान

अच्यो जथा रुचि थाल उठायो। पुन सभि सिंहन महिं बरतायो।
मन भावति अचि छुधा[1] मिटाई। सुपति जथा सुख निशा बिताई ॥ १० ॥
श्रमत साथ को जानि क्रिपाला। कर्यो मुकाम हेरि सुर साला[2]।
निकट निकट के नर गन आए। दरशन करि करि सीस निवाए ॥ ११ ॥
साधनि सुध संबाद सुधारा[3]। मुदति होति बहु सुजसु उचारा।
सो दिन जामनि तहां बिताई। भई प्राति त्यारी करवाई ॥ १२ ॥
सतिगुर बसत्र शसत्र को पहिरे। हय अरोह आसन पर ठहिरे[4]।
दल समेत करि कूच सिधारे। पहुंचे कितिक कोस दिन सारे ॥ १३ ॥
लाली नगर पहूचे जाइ। बडी मजल करि गए सु थाइ।
खान पान करि निसा गुजारी। भई प्राति कीयसि असवारी ॥ १४ ॥
पंथ पयानति[5] उलंघे देश। जाति बिलोकति ग्राम विशेश।
श्रमत बिहीर पहूचे तहां। पुरि मघरौदा सुनीअति जहां ॥ १५ ॥
उतर परे प्रभु सिवर लगायो। सने सने सभि साथ सु आयो।
खान पान बिस्रामति होए। करी अरज मिलि कै सभि कोए ॥ १६ ॥
'दीरघ मज़ल[6] भई इह दोऊ। श्रमत बिहीर बिखै सभि कोऊ।
जम निबहै बड छोटे साथ। मारग गमन करहु तिम नाथ' ॥ १७ ॥
सुनि श्री मुख ते सभिनि सुनायो। 'सिवर उचित थल पंथ न पायो।
यांते मज़ला दीरघ दोइ। प्राति समीपी डेरा होइ' ॥ १८ ॥
इत्यादिक कहि राति बिताई। भई भोर त्यारी करवाई।
सनधवध ह्वै हय आरूढे। गमन कीनि गुर जिस गुन गूढे ॥ १९ ॥
द्वादश कोस पहूचे जाइ। नगर कुलायत सुंदर थाइं।
लग्यो सिवर सभि हूं सुख पायो। भए देग भोजन शुभ खायो ॥ २० ॥
श्रम साथ को जानि गुसाई। कर्यो मुकाम[7] देखि शुभ थाई।
द्वादश दिवस बस्यो तहिं डेरा। बिथर्यो सुजसु बिसद बहुतेरा ॥ २१ ॥
आइ अनेक पाइ बर जै हैं। अनिक अकोरनि को अरपै हैं।
अवलोकति[8] बहु सुंदर रूप। बसत्र शस्त्र जुति महिद अनूप ॥ २२ ॥
श्रम बिन भयो असूदे[9] साथ। चह्यो अरूढनि चलिबे नाथ।
कर्यो कूच हय[10] चढि करि चाले। धरे हाथ धनु कठन बिसाले ॥ २३ ॥

---

1. भूख 2. अच्छा स्थान 3. शुद्ध संवाद किया 4. घोड़े पर सवार होकर 5. यात्रा समाप्त करके 6. लम्बी यात्रा 7. ठहरे 8. देख कर 9. विश्राम करके 10. घोड़े

जहिं राजन के देश विशेशा। दल समेत प्रभु भए प्रवेशा।
ग्रामनि के नर देखि प्रतापू। बाजति दुंदभि चमूं[1] कलापू[2] ॥ २४ ॥
ले ले करि अकोर चलि आवैं। मिलहिं जोरि कर अरज़ सुनावैं।
काशट त्रिणन आनि गन देई। सौज उबार सदन की लेई ॥ २५ ॥
जोनहिं मिलहिं गरब उर धारहिं। तहिं मिलि सिंह लूट को डारहिं।
असन बसन आदिक ले छीना। बल दिखाईकै करैं अधीना ॥ २६ ॥
धांक परी सभि देश विशेशा। होति कूच दर कूच हमेशा।
बापी कूप सरोवर नीके। उपवन बहु हुल सावन जीके ॥ २७ ॥
सुंदर धरा अधिक सबज़ाई[3]। डेरा करहिं देखि सुखदाई।
इम गमनति तिस देश मझारा। करति बिलास अनेक प्रकारा ॥ २८ ॥
खेलति है अखेर बन फिरिकें। म्रिग खग पुंज संघारनि करिके।
सने सने सुख सहत चलंते। लूटि कूटि डरि लोक मिलंते ॥ २९ ॥
दया सिंह हज़रत को छोरि। करे बेग आयो इत उर।
सुनि सतिगुर की सुध इत आए। मिल्यो आनि सनमुख सुख पाए ॥ ३० ॥
चरन सरोजन पर सिर धरिकै। सतिगुर प्रेम अधिक उर भरिकै।
तजि नहिं सकहि उठायव आप। कर्यो बिदारनि बिरह संताप ॥ ३१ ॥
द्रिगन बूंद आनंद की गिरी। को कहि सकहि जु सुख तिस घरी।
मग जैबे अैबे की कथा। मुलाकात हज़रति की जथा ॥ ३२ ॥
दया सिंधु सभि बूझन कीना। दया सिंह तबि उत्तर दीना।
'अहिदी के मनिंद बनि गयो। ग्राम ग्राम ते नर निकसयो ॥ ३३ ॥
मग महिं गुर संगति समुदाई। मिलि मिलि पूज्यो तुम समताई[4]।
पहुंच्यो शाहु सिवर के मांही। करे जतन मिलिबो हुइ नांही ॥ ३४ ॥
पठी आप ढिग कासद जोरी। जिम आइसु भेजी दिश मोरी।
भयो मेल तिम अंतर गए। प्रति उत्तर नाना बिधि भए' ॥ ३५ ॥
स्वान आदि को सकल प्रसंग। सने सने बरन्यो गुर संग।
'पुन हम को रुखसद तिन कीनि। गुरज दार[5] द्वै संग सु दीन ॥ ३६ ॥
सुध सुनिकै रावर इत आए। रजपूतन के देश सिधाए।
सो मग तजि मैं इत दिशि आयो। पहुंचि आप को दरशन पायो ॥ ३७ ॥
गुरजदार मेरे संग दोई। गए बिछुर दिल्ली दिशि सोइ।
सूबे गन उमराव[6] महाने। सभि दिशि लिखे शाह परवाने[7] ॥ ३८ ॥

1. सेना 2. सारी 3. हरी भरी 4. दर्शन 5. सिपाही 6. अमीर 7. इस प्रकार लिख कर भेजे

—जिस की दिशि सतिगुर चलि आवैं। दल समेत जहिं सिवर लगावैं।
सो सभि कर जोरहिं ढिग जाइ। अनिक रीति की सेव कमाइं॥ ३९॥
नहिं को सनमुख ह्वै रन करै। कैसिहुं गुर के संग न अरै—।
गुरजगार दिल्ली अबि जै है। देश विदेशन ऐंस पठै है॥ ४०॥
पुन सतिगुर को दयो कपीरा। अहै अमानत पठि तुम तीरा'।
सिक्खनि पिखि कै बूझि प्रसंगा। श्री गुर कह्यो सु सभि के संगा॥ ४१॥
'मक्कै जाइ फजीहत[1] भारी। करी नुरंग को पिखि डर धारी।
तिस ही थल हम दीनो धोहर[2]। दया सिंह पुन कहि कर जोरि॥ ४१॥
'थोरे दिवस बिते हम और। तनक भनक सुनि अस इक ठौर।
हुतो ज़फरनामा तुम कर को। जबि हम दे करि हटे वहिर को॥ ४३॥
ततछिन हज़रत को दूख होवा। पुन को अंतर गयो न जोवा[3]।
खोटी सुधि पसरी चहुं उर। दूर दूर कहैं न माच्यो शोर॥ ४४॥
आगे तुम भावै तिम होइ। जथा ब्रितांत, भन्यो तिम सोइ।
सुनि सतिगुर कहिं 'आछी कीनि। मरहि नुरंगा बिलम बिहीन॥ ४५॥
केतिक दिन महिं सुधि पसरै है। ऊच नीच सगरे लखि लै है'।
इम कहि सुनिकै सतिगुर संग। दया सिंह ढिग रह्यो उमंग॥ ४६॥
दिन प्रति कूच करति गुर पूरे। कहूं अरहिं मग दल के सूरे।
लूट कूट ले होति लराई। केतिक मिलहिं परहिं ग्रभु पाई॥ ४७॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**दया सिंह मिलन**' प्रसंग बरननं नाम सपतात्रिसति अंशु॥ ३७॥

1. अपमान 2. अमानत 3. देखा

अंशु ३८

बघौर नगर प्रसंग

दोहरा

इस प्रकार श्री सतिगुरू मारग आगे जात।
ग्राम चौधरी मिलति जे सो सुख बसि दिन राति ॥ १ ॥

चौपई

जे हंकार धरहिं निज बल को। तां पर हमला होवति दल को।
छुटहिं तुफंग अरहिं लें मार। लूट कूट ले करहिं अहार ॥ २ ॥
दिन प्रति कूच नाथ को होइ। देश नवीन पिखहिं नित सोइ।
जित जित जाति रौर बहु परै। धूम धाक[1] सुनिकै नर डरैं ॥ ३ ॥
केतिक देश उलंघ जबि गए। बिखम पंथ आगे सुनि लए।
'तोप न सकट[2] इतै कौ जै है। गिर लघु पाहन ब्रिंद[3] परे है ॥ ४ ॥
मारग कठन सुन्यो जबि कान। तिस दिशि ते हटि क्रिपा निधान।
पंथ सुखैन[4] अपर जित अहै। भेद देश को बहु जो लहैं ॥ ५ ॥
तिनहुं बतायहु 'परबत घाटी। पहुंच्यो जाइ न, अउखीं[5] बाटी।
दूसर मग है चलनि सुखैन'। सुन तित गमने करुना अैन ॥ ६ ॥
सने सने सुख सिवर करते। तिसी देश को मग उलंघते।
तिस परबत के पहुंचे पार। देख्यो सुंदर देश बहार ॥ ७ ॥
सदल सफल तरुवर बहु खरे। सुखदायक छाया कहु करे।
बाग तड़ाग बिभाग समेत। अवलोके चित आनंद देति ॥ ८ ॥
बापी कूप आप मलहीन। जित कित सबज़ी सुभति नवीन।
गमने तहां हेरि हरिखाए। सुंदर थल पिखि थल उतराए ॥ ९ ॥
रसत, छाग, त्रिण इंधन आने। बिच ग्रामन के तिंह पयाने।
दुगध, दधी, घ्रित अरु मिशटान। देग बिखै[6] डारति गन आनि ॥ १० ॥

---

1. धूम धाम 2. गाड़ी 3. समूह 4. अच्छा 5. कठिन 6. में

इस प्रकार सतिगुर सुख पावति। सने सने सुख सों मग जावति।
इतने में महिं दक्खण ते आयो। मिलि प्रभु संग प्रसंग सुनायो ॥ ११ ॥
'मर्यो नुरंगा बहु दुख पाइ। मचे रौर[1] देशन समुदाइ'।
सुनिकै सिहन बूझन कर्यो[2]। 'किस बीमारी ते किम मर्यो ?' ॥ १२ ॥
कहति भयो तबि सरब ब्रितंत। जिस बिधि भयो दिलीशुर अंत।
'गुरू ज़फरनामा[3] जो पठ्यो। तिस को खोलि शाहु जबि पठ्यो ॥ १३ ॥
तबि ही ते तन भई बिमारी। करे अनिक हिकमत[4] उपचारी'।
अचै अहार पचै सो नांही। नाभी तर ते उतरै नांही ॥ १४ ॥
खाना करै खान जबि कोइ। उदर रहै केतिक चिर सोइ।
पुन मुख की दिशि निकसै सारो। सम बिशटा के हुइ दुख भारो ॥ १५ ॥
इम केतिक दिन संकट पायो। फल पापन को अधिक दिखायो।
बिशटा मुख की दिशा निकारे। भीम रूप जमदूत दिखारे ॥ १६ ॥
कबि अरड़ाइ मूरछा पाए। घूम्यो रहै नैन उंघलाए।
कशट बिसाल पाइ मरि मयो। केतिक दिवस बिदत नहिं भयो ॥ १७ ॥
कुप्पा रिढ़्यो—कहैं पुरि लोक। भयो देश महिं जहिं कहिं शोक'।
सुनि गुर बूझ्यो मालक तखत। 'को अभि भयो शाहु शुभ बखत[5]?'॥ १८ ॥
पुन तिन कह्यो 'महां गन लशकर[6]। तारा आज़म अहै बीच बर।
पूरब वली अहद सो भयो। अबि पतिशाही पर थिर थयो ॥ १९ ॥
गन उमराव वज़ीर जि स्याने। सगरे हाथ जोरि तिह मानें'।
सुनि मुसकाने सतिगुर कहैं। 'नहिं सलतन को सुख इह लहैं ॥ २० ॥
श्री अकाल की जथा रज़ाइ। सो बनि है नहिं आन उपाइ'।
तहिं ते कूच अगारी कर्यो। शहिर बघौर निकट सुनि पर्यो ॥ २१ ॥
जहाँ भीम ने क्रीचक मारे। पिख्यो चहैं प्रभु, तितै सिधारे।
करैं कूच दर कूच पयाने। पुरि बिघौर के गुर नियराने ॥ २२ ॥
थल सुन्दर तरुवर गन हेरे। करे मुकाम[7] प्रभु तहिं डेरे।
सुनी नगर महिं—दल चढि आयो। लूट न लेहिं—महां डर पायो ॥ २३ ॥
गहि गहि शसत्र भए सवधाना। कर्यो लरन को ठाट महाना।
भेत हेतु नर एक पठायो। सने सने चलि दल महिं आयो ॥ २४ ॥

---

1. शोर, रव 2. जान लिया 3. विजय पत्रिका 4. उपचार करने वाले
5. भाग्य 6. सेना 7. स्थान

जहिं दिवान महिं सतिगुर थिरे। शोभति चमर चारु सिर ढरे।
तहां पहुंचि जोरे जुग[1] हाथ। बंदन करी नम्रंता साथ॥ २५॥
पुन पुरि जन की अरज़ गुज़ारी। 'मो को पठ्यो त्रास उर धारी।
दल बिसाल है संग तुमारे। प्रविशहिं लुटहिं जंग करि मारे॥ २६॥
आप कहां ते चलि करि आए? अबि चाहति हो कहां सिधाए?
कौन काज आगवन[2] तुमारा? करहु प्रसंग सुनावन सारा'॥ २७॥
इम त्रासति के बाक सुने जबि। धरम सिंह सों गुरू भन्यों तबि।
'जाहु नगर महिं नर समुझावहु। दे धीरज को त्रास मिटावहु'॥ २८॥
आइसु पाइ गयो ततकाला। पुरि जन सावधान जहिं जाला।
थिर हुइ सगरी कथा सुनाई। 'इह जग गुर तुम को सुखदाई॥ २९॥
सिख हुइ मिलौ दरस को जोवहु। दुइ लोचन के सुख को जोवहु।
भीम सैन जहिं क्रीचक मारे। सो सथान चित चहैं निहारे॥ ३०॥
तुम नाहक क्यों त्रासति भए। पुरि को नहिं बिगार चित ठए'।
धरम सिंह इम दियो दिलासा। तदपि न तिनै भयो भरवासा॥ ३१॥
'अपनो सिवर फरकसों[3] करीए। पुरि जन को डर उर ते हरीए'।
नहिं समुझे बहु करि समुझाए। धरम सिंह तबि हटि करि आए॥ ३२॥
प्रभु आगै अरदास बखानी। 'पुरि जन त्रसति धीर बिसरानी।
सुंदर उपबन तरुवर ठौर। कुछक फरक ते है इक और। ३३॥
फुरमावहु श्री मुख ते डेरा। सभि बिधि ते हुइ अनंद घनेरा'।
सुनिकै नाथ क्रिपा करि रह्यो। 'करहु सिवर जहिं उपबन लह्यो'॥ ३४॥
चढि प्रभु गए पिख्यो शुभ बाग़। तरु छाइआ सुंदर जहिं लाग।
डेरा कर्यो सिंह समुदाए। तबि पुरि जन दरशन को आए॥ ३५॥
मिले सु दै दै गन उपहारू। बंदन करहिं हेरि मुख चारू।
श्री प्रभु करुना करि फुरमायो। 'को खेचल इन करहि न धायो॥ ३६॥
घास रु ईंधन लेहु न कोई। इस ही थल सभि प्रापति होई।
बाग़ भलो थल बहु सुखदाई। इस महिं ते लिहु चलि समुदाई'॥ ३७॥
घने नगर जन जबि ही आए। ले तिन को संग प्रभू सिधाए।
क्रीचक हतनि थान अविलोकन। बूझति चले लिए पुरि लोकनि॥ ३८॥

---

1. युगल 2. आना 3. दूर

सिहन प्रति अस हुकम बखाना। 'चलहिं पयादे[1] तजहिं किकानां'।
इम सुनि करि गन कियसि पयाना। पहुंचे कोस ऊच बहु थाना[2]॥ ३९॥
भले भले थल गुरू निहारे। बूझे नरन बतावति सारे।
तहां अपर ग्रामन के लोक। आए प्रभु को दरस बिलोक॥ ४०॥
डर धरि जिन जिन अरज़ बखानी[3]। सिहन प्रति गुर बोले बानी।
'इक इक ग्राम नगर महिं जावहु। करहि जु खेचल तिसहि हटावहु'॥ ४१॥
नाथ हुकम सुनि सुनि करि गए। दे दे धीर बचावति भए।
करि करि सैल बिकोक थान। उतरे आनि गुरू भगवान।
तहिं डेरे को कीन मुकामू। देख्यो जहिं कहिं थल अभिरामू॥ ४२॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**बघौर नगर प्रसंग**' बरननं नाम अशट त्रिंसती अंशु॥ ३८॥

---

1. पैदल फौज 2. अपना स्थान 3. विनय की

अंशु ३८
बघौर जंग प्रसंग

दोहरा

इक दिन उशटर गुरू के चरन गए पुरि तीर।
बागन विखै प्रवेश भे लता तरुन बड भीर॥ १॥

चौपई

अंतर जाइ तोरि तरु खाए। इतने महिं माली तहिं आए।
उशटनि कौ बहु लशट प्रहारे। दे गारी बहु वहिर निकारे॥ २॥
इत ते उशटवान मिलि गए। दे दे गार लरति सो भए।
लाठी सोटन भई लराई। मारे उपबनवान[1] पलाई॥ ३॥
ले उशटर इह गुर ढिग आए। माली करनि पुकारि सिधाए।
तिन सुनि कै इम ठटी सलाहा। 'सिंह जु आवै को इत राहा॥ ४॥
तिस को हतहि मुशट अरु सोटे। पलटा लेहिं, करी क्रित खोटे'।
रहे तकावति घात बहोरी। गमन्यों सिंह एक तिस ठौरी॥ ५॥
दुशटनि घेर लयो ढिग आए। हित मारन कै हाथ उठाए।
कोप्यो सिंह क्रिपान निकारी। फांदि फांदि इक द्वै के झारी[2]॥ ६॥
पर्यो रौर इत उत महिं भारों। श्रोन खालसे के किन डारो।
ले करि हुकम नाथ को धाए। कसी तुफंगें जंग मचाए॥ ७॥
दुइ दिशि के नरगन[3] भट ह्वै कै। मच्यो लोह चित महिं रिस कै कै[4]।
वहिर नगर ते मची लराई। बिचरे सुभट तुफंग चलाई॥ ८॥
पर्यो नेर ऐंचि तरवारैं। निकट होइ भट कौ कटि डारैं।
हमला कर्यो खालसे जबै। धाइ वरे पुरि भीतर सबै॥ ९॥

---

1. माली 2. चलाई 3. गन गन 4. किस किस के

काइम कर्यो भए सवधाना । ले करि उटनि लरे महाना ।
वहिर सिंह चहुं दिशा रिसाए । लाइ मोरचे तुपक चलाए ।। १० ।।

लोथैं वहिर छोड करि भागे । अंतर बरि करि लरिने लागे ।
कहौं कहां लगि माच्यो जंग । छुटैं दुहूं दिशि पुंज तुफंग[1] ।। ११ ।।

द्वै दिशि जबि घमंड अस होवा । चढि सतिगुर पुरि चहुं दिशि जोवा ।
पौर सथान अगार ठांढे । सिंहन संग कह्यो 'नहिं गाढे ।। १२ ।।

घालहु हेल पौर चलि जय्यै । अरहि सु काटहु तूरन लय्यैं' ।
सुनति खालसे तजी तुफंगैं । मारि मारि करि शोर उतंगैं ।। १३ ।।

खैंचि म्यान ते लई क्रिपानैं । दौरे पौर समुख करि हानैं ।
तजि भागे पुरि कोट अंतके । भए प्रवेश सिंह बर बंके ।। १४ ।।

लूटन लगे नगर को फेर । भाजे पुरि जन डर को हेरि ।
हुते दुरग तहिं भए मवासी । रहे वहिर सो करे बिनाशी ।। १५ ।।

दुरग चुगिरदे घेरा डारा । लूट्यो शहिर जहां कहिं सारा ।
घ्रित मिशटान अंन पट घने । धन ते आदि जितिक जिस बने ।। १६ ।।

लूट कूट करि सिंह अघाए । दुरग चुगिरदे पुन समुदाए ।
निकसन अरु प्रवेश हुइ नांही । छुटहिं तुफंग जंग बड मांही ।। २७ ।।

गरीअनि महिं तिह लोथ परी है । भाजी सकल, न सैन अरी है ।
धरम सिंह को प्रभु बुलवाइ । कह्यो 'हेल घालो समुदाइ ।। १८ ।।

निकट मोरचे देहु ढुकाई । मारहु शत्रुनि को समुदाई' ।
सुनि कै धरम सिंह तबि गयो । दुरग चुगिरदे बिचरति भयो ।। १९ ।।

सगरी घात हेरि करि आछे । हेल करन को चित महिं बाछे ।
रतन सिंह तबि दौरति आयो । श्री प्रभु संग उपाउ बतायो ।। २० ।।

'पंच सिंह हेले महिं मरैं । जतन सुखैन[2] आप अस करैं ।
इह परबत सिर तोप चढावो । तहिं थिर करि गोरा चलवावो ।। २१ ।।
अंतर लगहि जाइ करि जबै । डर धरि निकस जाहि रिपु सबै' ।
सुनि सतिगुर आछी[3] बिधि मानी । 'तोप चढावहु' सभिनि बखानी ।। २२ ।।

तबहिं खालसा मिलि करि चाला । लई तोप चढि गिर ततकाला ।
थैली डारि कस्यो जबि गोरा । बांधी शिसत पौर की ओरा ।। २३ ।।

---

1. तीर 2. आसान 3. उचित

पाइ बरूद अगन तबि लाई। धुख्यो पलीता बड गरजाई।
मनहुं गाज गिरि करी अवाज़। सुनि रिपु को धीरज उर भाजि[1] ॥ २४ ॥

गोरा लग्यो पौर महिं जाई। पुन कस करि ततकाल चलाई।
इसी रीत गोरे द्वै चारे। पौर बिखै के बिच भट मारे ॥ २५ ॥

म्रितक देखि करि उपज्यो त्रासा। लख्यो कि—सभि को होइ बिनासा।
हेला घालनि ते तहि धीर। ऊपर चढे भ्रमायो चीर ॥ २६ ॥

पाधड़ी छंद

'रख लेहु गुरू दिहु जीव दान।
हम निकसि जाइं जे बचहिं प्रान'।
इम सुनी खालसे अरज़[2] दीन।
लीने निकास पुन जानि दीन ॥ २७ ॥

गढ नगर मारि फिर दुरग छीन।
गन सौज अनिक सभि लूट लीन।
इक सिंह गुरू ढिग जाइ धाइ।
सभि कही खबर जिम जीति पाइ ॥ २८ ॥

प्रभु पिखहिं दुरग परखा बिसाल।
बिच कूप लरन की सौज जाल।
बहु अंन घ्रित्त मिशटान चीर।
सभि भए त्याग डर धारि भीरु ॥ २९ ॥

सुनि दया सिंघ सैंधव मंगाइ।
हुइ करि अरोह तित दिशि चलाइ।
इक धरम सिंह बर बीर संग।
तजि सिवर चले जित दुरग भंग ॥ ३० ॥

केतीक दूर जबि किय पयान[3]।
नगरी बघौर भूपति महान।
सो हुतो बहिर सुध सुनति आइ।
डेरा निहार उर मैं रिसाइ ॥ ३१ ॥

---

1. भागना 2. विनय 3. चले

तबि पर्यो धाइ तजि सर तुफंग।
कुछ हुते सिंह तिन कीनि जंग।
दइ दिशिनि बकारा मारि मारि।
मरि गए कितिक गिरि गे सुमारि[1] ॥ ३२ ॥

बड पर्यो रौर गुर सुनति कान।
हटि परे तुरत बनि सावधान।
इक धरम सिंह भट संग जाइ।
देख्यो लरंति बाघौर राइ ॥ ३३ ॥

उत हुते राव असवार दोइ।
इत गुरू धरम सिंह संग जोइ।
पैंदल समूह दोनहुं दिशान।
छूटहिं तुफंग तीखन सू बान ॥ ३४ ॥

सतिगुरू कह्यो 'सुनि धरम सिंह।
रण जाहु अग्ग्र बनि रूप सिंह।
उत दोइ' इतै हम दोइ जानि।
इक संग एक भिरि है महान' ॥ ३५ ॥

सुनि धरम सिंह हय[2] को धवाइ।
रण समुख गयो रिपु हतनि चाइ।
ऊचे पुकार लीनो हकार।
'इत आउ आपनो करहु वार ॥ ३६ ॥

मैं हतौं किधौं अबि लिहु संभार'।
सुनि भयो समुख सर को निकारि।
धरि धनुख बिखै ऐंच्चो सजोर।
खर हुतो घोर दीनो सु छोरि ॥ ३७ ॥

पिखि धरम सिंह हय को चलाइ।
खर तीर समुख ते तन बचाइ।
अपनो खतंग लीनो निकार।
विच[3] पनच फोक धरिकै सुधार ॥ ३८ ॥

ऐंचति[4] शिताब[5] रिपु के प्रहार।
लगि गयो रिदे प्रविश्यो मझार।

1. घायल हो कर 2. घोड़ा 3. में 4. खींचना 5. शीघ्र

हय तरे गिर्यो खपरा लगंति।
छिन बिखै पर्यो छित प्रान हंति ।। ३९ ।।
पिखि भूप[1] कोप[2] कै आइ धाइ।
गुर समुख बान पैनै चलाइ।
घोरा फंधाइ इत उत फिरंति।
निज भटन प्रेर जे को चहंति ।। ४० ।।
सिरमौर भटन के धनु संभार।
ततकाल तीर भाथा निकार।
करि ऐंचि कान लगि छोरि दीनि।
हति भाल बिखै सो मारि लीनि ।। ४१ ।।
जब दुहन प्राण त्यागे निहार।
सभि भजी चमूं नहिं धीर धारि।
भाजे बिलोकि बरजैं[3] क्रिपाल।
'इन हतहु नांहि तजि जंग शाल ।। ४२ ।।
लीने हटाए गुर सिंह जाल।
सभि सिवर बिखै करिकै संभाल।
बाघौर नाथ मग जुध्ध मारि।
पुरि लूट लीनि गढ दुरग दार ।। ४३ ।।
इम बिजै कीनि तिस देश बीच[4]।
जसु करति सकल नर ऊच नीच।
करि दयो कूच डेरा क्रिपाल।
निज सुभट[5] सभिनि की करि संभाल ।। ४४ ।।
गुर कही खालसे सन सुनाइ।
'अबि रण सुलतानी को कराइ।
करि हार जीत सगरो निहार।
मरि रहै तुरक दुइ दिशि जुझार ।। ४५ ।।
करतार देहि सो तखत पाइ।
बादी दिलेश[6] जीवन बिहाइ'।
सुनि भनै सिंह 'बड पुन्न लीनि।
तिस ते साकहि अबि कौन छीन ।। ४६ ।।

---

6. राजा 7. भय 8. रोकना 1. में 2. पंडित, विद्वान् 3. लड़ाई झगड़े का जीवन

समरथ्थ आप हो जगत नाथ।
अनगनत बाहनी जांहि साथ'।
गुर कहैं 'प्रभू के महिद खेल।
पिखि लेति सकल नहिं सकहि पेल'॥ ४७॥
इम करति बात गे कितिक कोस।
किय सिवर बिलोके थल अदोश।
गुर केर बीर रिपु म्रिगनि सिंह।
करि नमो सभिनि संतोख सिंह॥ ४८॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**बघौर जंग प्रसंग**' बरननं नाम उनतालीसमो अंशु॥ ३६॥

अंशु ४०.

बहादर शाहु प्रसंग

दोहरा

बलख बुखारे की दिशा हुतो बहादर शाहु।
पित को सुनि बीमार वहु हट्यो तुरत मग मांहु ॥ १ ॥

चौपई

करति कूच दर कूच पधारा। शीघ्र आनि इस देश मझारा।
—पित हति भ्राता सलतन[1] लीन—। सुनति श्रोन भा मन अति दीन ॥ २ ॥
'अबि मो ते क्या हुइ उपचारा। किस प्रकार हुइ प्रान उबारा।
गहै भ्रात दैहै मरवाइ। को न बली तबि सकै बचाइ ॥ ३ ॥
बाइ सलाख चमूं[2] जिह संग। नहिं बनि आइ समुख तिह जंग'।
अपने हितु बुलाइ बिठाए। सभि को अपनि ब्रितंत सुनाए ॥ ४ ॥
'मो कौ करतब क्या अबि अहै। जिस ते जियत प्रान बच रहैं।
चलैं भाज कै दिढ कित होइ। बली सहायक बनि है कोइ ॥ ५ ॥
पीर फकीर औलीआ महां। खोजहु जो प्रातप हुइ कहां।
जिम मो कहैं करैं सो काजा। जहिं कहिं करहु पठन नर आजा' ॥ ६ ॥
सभि महिं नंदलाल तबि कह्यो। 'एक गुरू साहिब अस लह्यो।
तिन सम प्रापति कहूं न कोइ। सकल जगत फिरि खोजहु जोइ ॥ ७ ॥
तुम भी जानति हो भलि भांती। विदत सभिनि महिं जिन करमाती।
क्रिपा करहिं जे बनहिं सहाइ। तौ जग की सलतन लिहु पाइ' ॥ ८ ॥
सुनति बहादर शाह अनंद। कह्यो 'कि निशचे सो जग बंद।
सुनि मुनशी तुझ बिन को जाइ। जाइ त को नहिं सकहि रिझाइ ॥ ९ ॥
तुझ पर क्रिपा करहिं बहुतेरी। हाकम राइ संग हुइ तेरी।
जहिं सतिगुरू, पहुंचि बिन देर। करि कारज सिध आवहु फेर' ॥ १० ॥

---

1. राज 2. सेना

इत्त्यादिक कहि सुनि करि त्यारी। किस ते सुनी गुरू सुध सारी।
'रजपूतन के देश मझारा[1]। बिचरति उत को गए उदारा'॥ ११॥

हाकम राइ संग निज लीना। नंद लाल गमन्यों जित चीना।
मारि बघौर सिवर किय जहां। पहुंचे तूरन करते तहां॥ १२॥

बैठे श्री प्रभु बीच दिवान। भेट अनेक लए मिलि आनि।
चरन कमल पर सीस टिकाइ। पुन सभि बिनती दीनि सुनाइ॥ १३॥

'शाहु बहादर दास तुमारा। पर्यो शरन कर जोरि उचारा।
क्रिपा करहु अबि बनहुं सहाइ। रिपु भ्राता ते लेहु बचाइ'॥ १४॥

इत्त्यादिक बिनती सुनि करिकै। सहिज सुभाइक बाक उचरिकै।
हम सलतन जग की दें तांहि। एक सुआल[2] मानहि मनमांहि॥ १५॥

निज पित के सम होइ न कूरा। तौ कारज इस को हुइ पूरा'।
सुनिकै नंद लाल हरखायो[3]। 'धन गुरू' कहि सीस निवायो॥ १६॥

'कह्यो आप को मैं सभि कहौं। मानहिं स्वाल, भले मैं लहौं।
अबि तौ जीवन की नहिं आसा[4]। जाउं शीघ्र भाखौं तिस पासा'॥ १७॥

प्रभु ते रुखसद हुइ करि धाइ। मिले आनि करि सकल सुनाइ।
'इस बिधि भयो बाक ले मान। लिखि दीजै अपने अबि पान॥ १८॥

इक सुआल गुर कहैं सु लेहिं। जग की सलतन[5] तुझ को देहिं।
मुरशिद एक बहादर शाहू। सो बुझति भा सभि के मांहू॥ १९॥

'गुर के संग सैन कहु केती? किम ले देहिं २ कहो बिधि तेती'।
नंद लाल ने कहि समुझायो। 'बड दल जानि, जु बाक अलायो॥ २०॥

गुर समरथ्थ चहैं सो करैं। भरे रितावैं रीते भरैं।
नहिं संसै करीअहि चित कोइ। जिम प्रभु कहै काज सो होइ॥ २१॥

जे तिन को कहिबो तुम मानों। सगरे संकट छिन महिं हानों।
दुरी नहीं जग बिदति बडाई। पूजहिं सभि श्री नानक थांई'॥ २२॥

कहै बहादर शाहु 'सुनीजै। अबि के गमनो निरनै कीजै।
इक सुआल मानहिं जिम कहैं। किम सलतन प्रापति हम लहै?॥ २३॥

---

1. में 2. प्रश्न 3. हर्षित हुआ 4. आशा, इच्छा 5. राज

सगरो भेत बूझ करि ल्याउ। कौन काज को करहिं बनाउ'।
इम सुनि नंद लाल भा त्यार। चढि मग चल्यो शीघ्रता धारि॥ २४॥

श्री गुर पास आनि करि मिले। चरन कमल पर सिर धरि भले।
बैठे सनमुख सकल सुनाई। 'क्या करतव्ब शाहु बनि आई॥ २५॥

जिम फूरमावहु[1] मानहि सोइ। लरिबे की जिह शकति न कोइ'।
क्रिपा सिंधु सुनि तबहि बखाना। 'धरि धीरज बनीयहि सवधाना॥ २६॥

बनहिं न देश त्याग करि भाजन। भाजे ते प्रापति हुइ राजन।
जे तिह मिलहि न आछी बात। समुझि लेहु निज पित की भांति॥ २७॥

पिता भ्रात सभि की करि हानि। करि कै जोर भयो सुलताना।
त्रितीआ बात लरन की अहै। यां ते सलतन[2] को इह लहै॥ २८॥

इन घर की पतिशाहति सारी। नाश करी हम लखि दुरचारी।
शरन पर्यो अरु बिनै बखानी[3]। यां ते देनि इसे को मानी॥ २९॥

कारन घने जानि करि दई। आरु इस की बय लघु लखि लई।
पीछे सगरी पाइ बिनाशी। नहिं ठहिरहि किम को करि आसी॥ ३०॥

सनमुख रण करिबौ बहु त्यारी। करिवावहु लिहु सलतन सारी।
तारा आज़म को हम मारहिं। पुन सभि मिलैं तखत बैठारहिं॥ ३१॥

चमूं[4] बटोरहु बहु निज संग। राज न प्रापति हुइ बिन जंग।
निशचा करहु सरब कुछ पावहु। शीघ्र जाइ त्यारी करिवावहु'॥ ३२॥

सुनि करि नंद लाल सभि गाथा। चरन सरोजन[5] पर धरि माथा।
गयो तुरत जहिं हज़रत नंदन। उतरि पहुच्चयो कीनसि बंदन॥ ३३॥

गुर की कहिवत सकल सुनाई। 'निशचै जानहुं सलतन पाइ।
तुव सिर पर धरि श्री गुर हाथा। मानहुं कह्यो भावनी माथा'॥ ३४॥

सुनति बहादर शाहु बखानै। 'लशकर लरन हेतु कित आनैं?।
शीघ्र सकेल्यो जाइ न कोई। बिन सुभटन लरिबो किम होई'॥ ३५॥

बोल्यो नंदलाल 'सुनि लेहो। जिम गुर भाख्यो तथा करेहो।
—तारा आज़म को हति करनो। हम करिहैं-! श्री गुर इम बरनों॥ ३६॥

---

1. कहा 2. राज 3. कहा 4. फौज 5. चरण कमल

तिस पीछे लशकर बहुतेरो। बिना सकेले सभि हुइ तेरो।
बिजै करन को भार बिसाला। सो सभि प्रभु को है सभि काला ॥ ३७ ॥
बीच खरो होनो तुव काज। इम करि निशचै लीजहि राज'।
भाज चलन कै मिलिबे मांही। संकट बनै लखहु सुख नांही ॥ ३८ ॥
तुव जीवन महिं संसा होइ। यां ते त्याग देहु मत दोइ।
लरनो सनमुख ही बनि आवै। जे जूझहि तौ भिसत[1] सिधावैं ॥ ३९ ॥
जीवत रहैं शाहु पद लै हैं। श्री गुर फते तोहि को दै हैं'।
इत्यादिक कहि धीरज दीन। सैन सकेलन[2] जित कित कीनि ॥ ४० ॥
कर्यो कूच सनमुख तिह आवति। गुरू भरोसा धरति सिधावत—।
—कै मरि रहौं कि लै हौं राज। प्रभू निबाहैंगे निज लाज— ॥ ४१ ॥
चंबल सलिता को चलि पर्यो। नंद लाल को बहुर उचर्यो।
'हाकम राइ संग ले जाइ। प्रभु को हित सहाइता ल्याइ ॥ ४२ ॥
एक सुआल[3] जु कहैं सु मानौं। तिनहुं भरोसे मैं रण ठानौं'।
सुनि कै नंद लाल पुन आयो। नमो[4] करी सु प्रसंग सुनायो ॥ ४३ ॥
'चलहु आप दरशन को दैहो। किरतारथ निज दास करै हो।
कह्यो आप को लीनसि मानि। लरन हेतु किय अग्र पयान'[5] ॥ ४४ ॥
तबि प्रभु धरम सिंह को प्रेरे। 'पंच सिंह लिहु संग बडेरे।
जाहु बहादर शाहु बिजै दिहु। अंग संग रच्छक हम तिह कहु ॥ ४५ ॥
भिड़े भेड़ गन करहिं सहाइ। तारा आज़म को हम घाइं।
धीरज सहित शत्रु सन लरिकै। बिजै करहु गुन गुरू सिमरिकै ॥ ४६ ॥
शाह बहादर को समुझावो। —जहिं कहिं हादर गुरू—बुझावो।
सिमरहिं पहुंचहिं करहु न संसा। लिहु सलतन[6] रिपु भ्रात बिधुंसा' ॥ ४७ ॥
सुनि आग्या प्रभु की चलि परे। सनध बध्ध घोरन पर चरे।
नंद लाल को पुन समुझायो। मानि बाक तिन सीस निवायो ॥ ४८ ॥
'हम भी कूच करति ही आए। न्रिभै जाइ इह जंग मचाए'।
सुनि करि गमने बिलम बिहीने। शाहु बहादर जित को चीने ॥ ४९ ॥

---

1. स्वर्ग 2. इकट्ठा किया 3. प्रश्न 4. नमस्कार 5. आगे चले 6. राज

मिले सिंह सभि गाथ सुनाई। प्रभु जी आए करी चढाई।
सिमरन ते हाजर जहिं कहां। जग महिं पूरन जानहुं महां ॥ ५० ॥

शरधा धरहु भरम को त्यागहु। होत भावनी को फल पागहु[1]।
नंद लाल करि कहि समुझायो। नीठ नीठ करि मन ठहिरायो ॥ ५१ ॥

'रण महिं दरशन दे करि तोही। हतहिं[2] शत्रु कारज सभि होही'।
सुनि करि धरि धीरज सुत शाहू। चल्यो लरन के हेत उमाहु[3] ॥ ५२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'बहादर शाहु प्रसंग'** बरननं नाम चत्वारिंसती अंश ॥ ४० ॥

1. जो चाहते हो वही फल प्राप्त करो 2. मारो 3. हुलास

अंशु ४१

बहादर शाह प्रसंग

दोहरा

शाहु बहादर सैन को मुजरा लीनि बनाइ।
बखशी बखशिश दरब बहु अरु आयुध समदाइ ।। १ ।।

चौपई

बसत्र बिभूखन[1] दै अपनाए। 'आगे मनसब[2] करौं सवाए'।
कहि उमरावनि[3] रिदे वधाए। मिसल मिसल गन बीर टिकाए ।। २ ।।
गुलकां बहु बरूद बरताई। गन तोपैं त्यारी करिवाई।
गज बाजी पैदल संभाले। दल आरासत[4] कीन बिसाले ।। ३ ।।
दिल्ली ते बाहर ही रह्यो। —प्रथम करौं संहर— चित चह्यो।
शुतरी, धौंसे, धग्ग[5] बजाई। कर्यो कूच दर कूच अगाई ।। ४ ।।
चंबल सलिता तट को चाहा। —तहिं अटकाइ हतौं रण माहां—।
उत तारा आज़म[6] बनि शाहू। बैठि तखत उमरावन मांहू ।। ५ ।।
बाई लाख सैन संभारी। दस हज़ार तोपैं बड भारी।
ले पंचास हज़ार जंबूरे। बखशशि दई अनिक पिखि सूरे ।। ६ ।।
ढक्खणि देश सगल[7] अपनायो। सभि पर अपनो हुकम टिकायो[8]।
भ्राता की सुनिकै सभि बात। कोप्यो अधिक रिदै गरबाति ।। ७ ।।
सकल चमूं[9] की मिसल निहारी[10]। कहि उमरावन कीयसि त्यारी।
गज बाजन पर पाखर पाई। चढ्यो आप गन बंब बजाई ।। ८ ।।
दखण ते करि कूच हमेशा। आवति चल्यो सुन्यो जिस देशा।
ग्राम नगर बन उलंघति आए। लशकर दीरघ नीर सुकाए ।। ९ ।।

---

1. भूषण 2. मनोकामना 3. अमीर 4. सजाना 5. चोट 6. शान वाला 7. सभी 8. आज्ञा का पालन करवाया 9. सेना 10. तैयारी देखी

शाह बहादर सुनि सुधि सारी। संसै होति सुनति दल भारी।
—मो ते दम गुन ते अधिकाई। तोप जंबूरनि जुति समुदाई ॥ १० ॥
लशकर अलप अहै संग मेरे। गुर बच पर बिस्सवास बडेरे[1]।
अपर उपाइ नहीं अबि कोई। इक अलाह अवलंबहि होई[2] ॥ ११ ॥
है थोरन की मदत ख़ुदाइ। यांते निशचै मुर मन आइ—।
इत श्री गुर करि कूच हमेशा। दिल्ली दिशि को गमन करे सु ॥ १२ ॥
संग खालसा दल समुदाई। महिमां सुनि नर मिलहिं सु आई।
दरशन देते करति निहाल। पुरहिं कामना जननि क्रिपाल ॥ १३ ॥
उत अवरंग के नंदन दोऊ। भयो भेर[3] चंबल तट सोऊ।
दुहूं दिशिनि ते बजे नगारे। रणसिङे बड शबद उठारे ॥ १४ ॥
लशकर[4] परे करे अरु अरे। छुटी तोप गन नभ रव भरे।
धूंमधार पसरी इक बारी। नहिं दीखत द्रिग पान पसारी ॥ १५ ॥
शलख[5] जमूरन[6] की बड होई। बरखन लगे लोह दिशि दोई।
मनहुं अकाश फूटि गिर पर्यो। भीखण शबद भूम नभ भर्यो ॥ १६ ॥
'मार मार' कहि रौर उठायो। इम सगरो दिन जंग मचायो।
केचित बीर तुरंग संहारे। रवि असत्यो तजि भए किनारे ॥ १७ ॥
सिवर कर्यो चहि खान रू पाना। त्रिपत हत्यो श्रम भे सवधाना।
जाग्रति सोवति राति बिताई। शौच शनाने दल समुदाई ॥ १८ ॥
चढे लरन के हेतु बहोरी। छुटहिं शबद बड गोरा गोरी।
हय धवाइ करि तजैं तुफंगैं। तीर प्रहारहिं फोरति अंगैं ॥ १९ ॥
नेजे बंबलियाल भ्रमावैं। मिलहिं परसपर आयुध धावैं[7]।
अंध धुंध परि गयो बिसाला। शुतरनाल घुड़नाल कराला ॥ २० ॥
इम हुइ जंग हटे दल दोऊ। निज बिस्स्राम कीनि सभि कोऊ।
होति प्रात उठि बजे नगारे। जोधा सुनति सनधबद्ध सारे ॥ २१ ॥
दल मुकाबले दोनहु भए। हमले करति शसत्र भट घए।
तारा आज़म को बड लशकर। पर्यो धाइ करि घावन करि करि ॥ २२ ॥
आप बहादर चढ्यो लरन को। उत आज़म पहुंच्यो पिखि रन को।
जुग भ्राता ते जंग पवाइ। छूटहिं तुफंग तोप समुदाइ ॥ २३ ॥

---

1. अधिक विश्वास है 2. एक ईश्वर पर ही भरोसा है 3. युद्ध 4. सेना 5. शोर 6. तोप 7. एक दूसरे पर हथियारों से आक्रमण करते थे

गज पर हुतो बहादर राइ। धरम सिंह को निकट बिठाइ।
गुर गाथा को मुखहुं उचारै। होति दूर लगि जंग निहारै।। २४ ।।

दुइ दिश ते हमले हुइं घने। सुभट परसपर आयुध हने।
तबि चितव्यो चित-बडे लरहिंगे। बिजै भई गुर स्वाल करैंगे।। २५ ।।

महां बिखम तौ दियो न जाई। हुइ सुखेन मैं देउं बनाई।
नांहि त टारहुंगो जबि कहैं—। इस प्रकार मन रन को लहै।। २६ ।।

हमला भयो सैन समुदाया। शाहु बहादर छोरि पलाया।
भाजे सुभट धीर नहिं धरिई। अधिक प्रबल दल क्या रण करिई।। २७ ।।

संध्या कौ उतर्यो बिच डेरे। संकट ते उर चित घनेरे।
नंद लाल को लीनि बुलाइ। कह्यो 'गुरू ढिग तूरन[1] जाइ।। २८ ।।

कदम पदम को नमो करेहु। मेरो सकल प्रसंग सुनेहु।
—आप संग मम पिता बिगारी। सो अपराधी लेहु बिचारी।। २९ ।।

मैं गुलाम[2] सम रावर केरा[3]। तुम बच पर बिशवास बडेरा।
जिसको सुनि रण मंड्यो आइ। नतु मैं कहां, न कुछ बनि आइ।। ३० ।।

कहूं पलाय बलाइत जाति। जीवति सुख सों खाना खाति।
तुमरे कहे आनि करि लर्यो। नाहक[4] पहुंचि इहां मैं मर्यो।। ३१ ।।

तुमरी नहिं सहाइता पाई। हति भ्राता, जे किम कर आई।
दस गुन अधिक, मरहिं किम मारे? बलि निरबलि उर सकल बिचारे।। ३२ ।।

मान्यों केवल बाक तुमारो। बहुर न हिरदै कछू बिचारो।
क्यों न करति हु आनि सहाइ? तुम अलंब, नहिं आन उपाइ।। ३३ ।।

पित को दोश न मा पर धरीअहि। बिरद जानि सुभ रच्छा करीअहि।
सुनिकै नंदलाल चढि गयो। शीघ्र पहुंचि गुर दरशन कयो।। ३४ ।।

नमो कीनि बिरतांत सुनायो। 'शाह बहादर बहु दुख पायो।
चहित आप की अबहि सहाइ। करहु क्रिपा दिहु बिजे उपाइ'।। ३५ ।।
सुनि सतिगुरू उचारन करी। 'चढयो जंग उर तिस के फुरी।
—गुर को खाल बिखम नहि दैहौं। होहि सुगम सो सुनति करे हौं—।। ३६ ।।

यांते होति पराजे तांहि। डोल्यो सिदक[5] न दिढ उर मांहि।
जे साबत[6] अपनो मन करै। तबि सहाइता ले रिपु हरै।। ३७ ।।

1. शीघ्र 2. सेवक 3. आपका 4. निर्दोष 5. विश्वास 6. दृढ़

हम को रह्यो नहीं इतबार। फिरि जै हैं निज काज सुधारि।
यां ते अबि लिखि दे कर संग। —एक स्वाल मैं देहुं अभंग—॥ ३८ ॥

निज मातुल[1] को पठै इथाइं। लिखत आपनी देहि पुचाइ।
गुर की पुन सहाइता पाइ। लिहु सलतन[2] शत्रू गन घाइ॥ ३९ ॥

तारा आज़म को हम मारैं। तखत बहादर शाह बिठारैं।
पीछे ते करि पूरन स्वाल। लगी बिलम यांते नंद लाल!'॥ ४० ॥

सुनि करि हाथ बंदि पद बंदे[3]। 'श्री प्रभु! तुम सभि थानब[4] संदे[5]।
घटि घटि के नित अंतरजामी। क्यों नहिं जानहुं तिस उर खामी॥ ४१ ॥

मैं आछे अबि करि तहिकीक[6]। मेटौं तिस की जो भ्रम लीक'।
इम कहि तूरन चढ्यो सिधाइ। शीघ्र पहुंच्यो उतर्यो जाइ॥ ४२ ॥

मिल्यो बहादर शाहु सुनायो। 'करति जंग संकलप उठायो।
—बिखम स्वाल मैं दैहौं नांही—। सो सभि लखी प्रभू मन मांही॥ ४३ ॥

अबि चाहति गुर लिखत तुमारी। मातुल भेजो संग उचारी।
खातर जमां करहु तिन केरी। बहुर बिजै रिपु ते हुइ तेरी'॥ ४४ ॥

सुनि कै शाहु रिदै बिसमादा। समरथ गुरू को लखि अहिलादा।
—मन की जानि लई सभि बात। अबि सहाइ हुइ है दे दात—॥ ४५ ॥

निज कर की तबि लिखत पठाई। 'एक स्वाल मैं देउं बनाई'।
हाकम राइ पठ्यो अरु मातुल। कहि बिनती 'बखशहु जनता तुल'॥ ४६ ॥

बेगवंत बाहन चढि गए। गुर ढिग आइ शीघ्र दरसए।
बंदन करि पुन सकल सुनाई। 'बखशहु भूल तुमे बनि आई॥ ४७ ॥

मुहर आपनी दई लगाइ। इस महिं संसे कोइ न पाइ।
जानि ग़ुलाम[7] सहाइ करीजै। बिजे क्रिपा धरि सलतन दीजै'॥ ४८ ॥

देखि दीन निज बिरद संभारा। हित धीरज के बाक उचारा।
'अबि तुम जाहु चढावहु शाहू। हम दरशन दै हैं रण मांहू॥ ४९ ॥

तारा आज़म को हम मारैं। कुछ उमराव समेत बिदारैं।
जबि कुछ चिह्न लखहु इस रीति। हटहु लरन ते हुइ निरभीत॥ ५० ॥

जुग भ्राता को अबि के जावहु। रण मुकाबला भले करावहु।
तारा आज़म मर्यो लखीजै। निर्भै, नचिंत जंग को कीजै॥ ५१ ॥

---

1. मामा 2. राज 3. हाथ और पांव बांध कर 4. स्थानों 5. के 6. पड़ताल 7. सेवक

नहिं काइर हुइ सुकचहु तहां। धरि उतसाहु पिखहु[1] रन महाँ।
सुनिकै सतिगुर के बच आछे। करि अभिबंदन चलिबो बाछे॥ ५२ ॥
लिखत प्रभु के आगे धरी। चढि करि चाले तूरन करी।
उलंघि पंथ चंबल तट आए। मिले शाहु संग शकल सुनाए॥ ५३ ॥
'होति प्रात के संसे त्यागहु। करि मुकाबला लरिबे लागहु।
मिथ्थया होहि न गुर को कह्यो। अबि तौ पता भला तुम लह्यो'॥ ५४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'बहादर शाह प्रसंग'** बरननं नाम एक चत्तवारिंसती अंशु ॥ ४१ ॥

1. देखो

अंशु ४२

शाह जंग प्रसंग

दोहरा

करि मसलत निस महिं सकल त्यारी कीनि बनाइ।
होइ प्रात के तुरत ही बादति उठे बजाइ ॥ १ ॥

चौपई

तोपैं शुरू चलावनि करी। चढे दुऊ दल रिस उर धरी।
बाजे शुतरी पटह नगारे। भेरि भूखना भूर भुंकारे ॥ २ ॥
शबद तुफंग तोप को और। भट गन बोल्यो घाल्यो रौर।
अंध धुंध ब्रिंद[1] धूम धार नभ। धूर उडी आछा दति ह्वै सभि ॥ ३ ॥
तोमर[2] तीर तरातर चल्ले। बारि बारि रिपु घालति हल्ले।
उत तारा आज़म रिस धरिकै। प्रेर्यो लशकर ऊच उचरिकै ॥ ४ ॥
'कहां भयो तुम को उमराउ[3]! बैठति सभा बकति गुरबाउ।
बडे बडे मनसब तुम पाए। निमक हराम काम नहिं आए ॥ ५ ॥
कहां अलप रिपु को दल अहै। लरि लरि तुमरी समता लहै।
लशकर कहां आपनो घनो। जिस ते काज न किंचत बनो ॥ ६ ॥
प्यारे प्रान कि तिह सों मिले ? हेरहु अलप सु आवति पिले।
सकल सैनपति डाटन करे। कहि कहि पठ्यो जहां जहिं खरे ॥ ७ ॥
इत्यादिक कहि सुनिबो होवा। लशकर के प्रेरन हित जोवा।
हमला सभि उमरावन चाहा। फिर्यो नकीब[4] भनति[5] रण माहा ॥ ८ ॥
लाखहुं लशकर उमड्यो ऐसे। सागर जुति जलजंतुनि जैसे।
दुरद नक्र हय मकर अकारा। धुखहिं पलीते बडवा झारा ॥ ९ ॥

---

1. समूह 2. बंदूक 3. अमीर 4. चारण, 5. कहा हुआ

सफरी अलप अखिल करवारैं। पैदल गन जल जीव हज़ारे।
तजि बेला मिरयाद बिसाला। फैल्यो महां बेग ते जाला ।। १० ।।
बडो तोपखाना तबि चाला। छुटे जंबूरे शबद कराला।
तड़भड़ तुपकन की बड होई। मारे गोरनि उडिगे कोई ।। ११ ।।
शाहु बहादर को दल हाला। डरप्यो उर अविलोकि[1] बिसाला।
धरम सिंह बैठ्यो पिछवारे। तिह सों गुर की गाथ उचारे ।। १२ ।।
'मैं प्रभु बाकनि करि विशवाशा। लरिबे लग्यो राज धरि आशा।
नतु मैं कहां कहां मम भाई। जिह समीप सगरी प्रभुताई ।। १३ ।।
अर्यो लर्यो अबि लौ अगवाई। सतिगुर भए न आनि सहाई।
अस नहिं होहि दलेरी दैके। मुझ मरिवावैं जंग करैकै ।। १४ ।।
पिता खुटाई मो पर ल्यावैं। रच्छा हेतु न यांते आवैं।
हाथ जोरि अरदास करीजै। —पहुंचहु गुरू! दास लखि लीजै' ।। १५ ।।
धरम सिंह कहि धीरज दीना। 'बनहु सुचेत न करि मन दीना।
पर्यो भेर गाढो जबि आइ। ततछिन ह्वै सतिगुरू सहाइ ।। १६ ।।
कपट न करहिं दास के संग। ज्यों क्यों तोहि जितावैं जंग'[2]।
कह्यो शाहु 'अबि समैं सहाइ। नतु अबि डेरा लुट करि जाइ ।। १७ ।।
देखहु पर्यो जोर अबि रन को। घटा मनिंद्र हेल सुभटन को।
तारा आज़म बीच खरोवा। उमरावन पर क्रुद्धति होवा ।। १८ ।।
किम अटकहि मम चमूं[3] बिचारी। जिम आटे महिं लवण बिचारी।
अबि जे होह पलाइन सैना। बहुर उपाइ बनत किम हेना ।। १९ ।।
करि अरदास जुगम कर जोरि। प्रभु जी पहुंचहिं घालहि ज़ोर।
तारा आज़म को संहारैं। सभि उमराव हेरि करि हारैं' ।। २० ।।
धरम सिंह अरदास बखानी। 'श्री गुर! रच्छा समैं महानी।
सेवक जानहुं बनहु सहाइ। बिरद[4] संभारहु आपन आइ' ।। २१ ।।
इम कहि मसतक दुऊ निवाए। शाहु रिदे बड चिंत उपाए।
इत उत सभि दिशि द्रिशटि चलावै। हमला कर्यो चढ्यो दल आवै ।। २२ ।।
सने सने दल हटति पलावै। त्यों त्यों शंशै बहु उपजावै।
निशचै करति—आज नहिं बचौं। संघर मच्यो बीच ही पचौं ।। २३ ।।
मोहि आस[5] सतिगुर इक केरी[6]। पहुंचहि लाज निबाहैं मेरी—।
बार बार सिमरन उर धरे। बारि बारि बंदन को करे ।। २४ ।।

---

1. देखा 2. युद्ध 3. सेना 4. सेवक 5. आशा 6. की

चली शिकसत[1] खाइ अबि सैना। रिपुन बिलोकि रिदे ध्रित है ना।
इतने मँहि गुर दई दिखाई। संग शहीदन दल समुदाई ॥ २५ ॥
ब्रिद[2] निशानन फररे छूटे। एकै बारि बाज जनु टूटै।
धरम सिंह अविलोकति बोला। 'पिखहु शाहु त्यागहु उर हौला ॥ २६ ॥
दरशन करहु नमो कर जोरि। संग शहीदन को दल जोरि।
धनुख बान कर धारन करे। संहर बिखै प्रबलता[3] भरे' ॥ २७ ॥
मनहु करन मँहि अंम्रित पायो। प्रान हान ते तुरत जिवायो।
श्री गुर गोबिंद सिंह हठीला[4]। दरशन कर्यो बिसाल छबीला ॥ २८ ॥
धनुख पनच धरि संधे तीर। मार्यो चहैं रिपहिं बर बीर।
लगी कान चुटकी इक कर की। दुती मुशट, ताक्यो दिशि अरि की ॥ २९ ॥
छोटी छालन उछलति घोरा। चल्यो जाति आज़म की ओरा—।
एक बारि इम दई दिखाई। जिम तड़िता दमकति दुरि जाई ॥ ३० ॥
भए प्रवेश जंग जँहि भारी। तुपक तोप छूटति बिशमारी।
अंध धुंध बहु धूर उडाई। ढांप्यो रवि कुछ दै न दिखाई ॥ ३१ ॥
दारुण शबद होति दिशि दोइ। सुनीअति नहीं कहै किछ कोइ।
कोसन लगि पसरे दल लरते। जीत परसपर बांछति अरि ते ॥ ३२ ॥
कुंजर पुंज घटा सम ठांढे। चढि उमराव[5] पिखहिं रण गाढे।
हाथन बिखै शसत्र को धारें। करहिं प्रहारनि बीर जुझारे ॥ ३३ ॥
तारा आज़म बीच तिनहुं के। अति प्रिय उर बिशवास जिनहुं के।
सहित शहीदन सतिगुर गए। वार करति इक बारी भए ॥ ३४ ॥
गुर कर के सर द्वै छुटि चाले। भरे बेग के शूंक[6] बिसाले।
भीखन तीखन [illegible]ाग कराला। तारा आज़म के लगि भाला ॥ ३५ ॥
बरमी सम प्रवेश सभि होए। बाहर फोक सु मुख दिखि दोए।
मनहुं अनारकली जुग सोहैं। कै मुख अलप शारका दोहैं ॥ ३६ ॥
गज ते ततछिन ही छित पर्यो। रिपुनि पराजै बांछति मर्यो।
पदवी बीरन की शुभ पाए। गुर कर ते मरि भिसत सिधाए ॥ ३७ ॥
चौदां कुंचर के उमरावं। आज़म साथ गिरे रण थावं।
शसत्र शहीदनि कर के लागे। गए भिसत[7] को प्रानन त्यागे ॥ ३८ ॥
अपर सुभट[8] सैंकर ही घाए। गिरे बारि इक प्रान गवाए।
हाहाकार बीच लशकर के। आज़म गिर्यो मर्यो लखि करिकै ॥ ३९ ॥

---

1. हार 2. समूह 3. शक्ति 4. वीर 5. अमीर 6. भाला 7. स्वर्ग
8. महा योद्धा

जे उमराव बचे तिस काला। लशकर मोर्यो लरति कराला।
सने सने हटि पाछै गए। तूशनि जाइ उतरते भए ॥ ४० ॥
आपहुं अपने दूत पठाए। जाइ बहादर शाहु सुनाए।
'ताराआज़म रण महिं गिर्यो। नहीं संभार शसत्र ते मर्यो' ॥ ४१ ॥
सुनति अनंद्यो सकल बुलाए। मिले आनि करि सीस निवाए।
खोजन गयो बहादर शाहू। जहां पर्यो दीरघ रण मांहू ॥ ४२ ॥
देखति तीर भाल निकसाए। जो कंचन ते लिपत सुहाए।
सो निज निकट संभारन करे। हेतु परखबे—किन परहरे ॥ ४३ ॥
तिह दफनाइ हरख को माना। मनहुं रंक भा इंद्र समाना।
लशकर मिल्यो आनि करि सारो। दे दे धीरच सकल[1] संभारो ॥ ४४ ॥

पूरब सम ही मनसब[2] पाए। दान मान दै सभि अपनाए।
डेरा कर्यो जंग की धरनी। सिफत खुदाइ अलह की बरनी ॥ ४५ ॥
'अहै शुकर तेरी दरगाह। दीन देखि कौनसि पतिशाह'।
धरम सिंह को सादर पास। कर्यो बिठावनि बाक प्रकाश ॥ ४६ ॥
'धंन गुरू मम मदति निबाही[3]। पूरन बाक, दई पतिशाही'।
पुन सगरे उमराव[4] बुलाए। जितिक सभासद से चलि आए ॥ ४७ ॥
दोनहुं तीर दिखावनि करे। 'इह किसके तरकश महिं भरे'।
बोले बहु बफाइ करि तबै। 'इह मेरे कर के लगि जबै' ॥ ४८ ॥
अपर कहे 'मैं ऐंचित मारे'। त्रिती कहे मैं 'समुख प्रहारे'।
सभि ते ले करि तिनहुं मिलाए। किम सो मिलहिं न समता पाए ॥ ४९ ॥
जानै शाह भेव[5] तिन सारा। तुरकन ते भै धरि न उचारा।
'इह तौ' तीर अजाइब अहैं। नहिं किह तरकश के सभि लहैं ॥ ५० ॥
केतिक कहैं 'फरिशते आए। तुम सहाइता हित समुदाए।
अज़गैबी दल मारति हेरा। कर्यो प्रताप ख़ुदाइ बडेरा' ॥ ५१ ॥
सुन पिखि करि सभि ह्वै बिसमादे। सलतन[6] पाइ शाह अहिलादे[7]।
भई शांति सभि मिट्यो बखेरा[8]। इस कारन ते हरख[9] बडेरा[10] ॥ ५२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने 'शाह जंग प्रसंग' बरननं नाम दोइ चत्त्वारिंसती अंशु ॥ ४२ ॥

---

1. सगल 2. पद, स्थान, अधिकार 3. सहायता की 4. अमीर 5. भेद 6. राज 7. प्रसन्न 8. झगडा 9. हर्ष 10. अधिक

अंशु ४३

दिल्ली प्रसंग

दोहरा

केतिक दिवस बिताइकै धरम सिंह बुलवाइ ।
सादर शाहु बहादरा सभि बिधि तिह समुझाइ ॥ १ ॥

चौपई

मैं अबि जाउं आगरे नगरं । करहुं संभारनि लशकर सगरं ।
तहां बैठि करि लैबो दैबो । सभि सूबन सभि थान पठैबो ॥ २ ॥
तुम अबि जाइ क्रिपा निधि पासी । करहु फते की बात प्रकाशी ।
मोहि बंदगी जाइ सुनावहु । करि बिनती पुरि को ले आवहु ॥ ३ ॥
अपना जानहुं दरस दिखावहु । बिना बिलम[1] इत मग पग पावहु' ।
सिरेपाउ पंचन को दीने । चले सिंह जित गुरू प्रवीने ॥ ४ ॥
दिल्ली पुरि कै मग[2] चलि आए । मिल्यो धरम सिंह सीस निवाए ।
सनमुख बैठ्यो जुग[3] कर[4] जोरे । श्री मुख भन्यों हेरि इन ओरे ॥ ५ ॥
'हुइ सु जिम सुलतानी जंग । बिजै पराजै कहहु प्रसंग' ।
धरम सिंह सुनि तबै उचारी । 'जानति आप जगत गति सारी ॥ ६ ॥
बिदत गुपत जेतिक सभि जानों । प्रभु जी ! तुम ते कहुं न छानों ।
सरब चरित के करने हारे । करम करति भी रहहु निआरे[5] ॥ ७ ॥
आइसु ते हम कहैं सुनाए । दुहदिशि तें लशकर उमडाए ।
तोप तुपक ते भा रण गाढो । होति पराजै हेरति ठांढो ॥ ८ ॥
दीन होइ कै बहु घिघआयो । तबि रावर ने दरश दिखायो ।
तारा आज़म तुरत संहारा । बज्यो बिजै को तबै नगारा ॥ ९ ॥
आनि मिले सूबे समुदाए । शाहु बहादर सलतन पाए ।
हम को रूख़सद[6] करे पठाए । तुम को बहुत बंदगी[7] गाए ॥ १० ॥

---

1. देरी 2. मार्ग 3. दोनों 4. हाथ 5. अलग 6. विदा 7. शोभा

—थिरों आगरे नगर मझारा। तिह दरशन करि देहिं उदारा—'।
सुनि कै श्री प्रभु कूच करंते[1]। दिल्ली पुरि दिशि को गमनंते ॥ ११ ॥
नगर ग्राम बन सैल बिसाले। करति जाति श्री प्रभु सुख नाले।
निकट रह्यो पुरि सुनि सुध सारी। आई चलि सतिगुर असवारी ॥ १२ ॥
सुनि सिक्खन मन उपज्यो चाऊ। दरशन हेतु चले अगवाऊ।
केतिक गाडी पर चढि धाए। को स्यंदन पर चढे भजाए ॥ १३ ॥
कितिक तुरंगनि पर चढि चाले। घने पदांती भाउ बिसाले।
अनिक अकोरन को कर धारे। मिले जाइ मारग अगवारे[2] ॥ १४ ॥
दरशन करि करि भाउ धरंते। चरन सरोजन सीस रखंते।
बसत्र बिभूखन दरब उदारा। अरपहिं प्रभु को कई हज़ारा ॥ १५ ॥
सभि की करी भावना पूरी। क्रिपा द्रिशटि अवलोकति रूरी।
जमना पार कर्यो प्रभु डेरा। लग्यो दिवान खालसे केरा ॥ १६ ॥
आवहिं जाहिं नगर नर नारी। गुर मूरति पर ह्वै बलिहारी।
इक दिन डेरा गुरू टिकायो। पुन कर जोरि सिक्ख गन आयो ॥ १७ ॥
बैठे गुर ढिग बंदन कीनि। खुशी करी सभि पर सुख लीन।
श्री मुख ते आइसु फुरमाई। 'हम को दिल्ली देहु दिखाई ॥ १८ ॥
किला बज़ार आदि सभि थान। सुंदरता सुनीअति बहु कान'।
सुनि कै सिक्खन कीनि सलाहू। 'असमंजस हम को इस मांहू ॥ १९ ॥
सय्यद मुग़ल पठान हज़ारे। जंग करति सतिगुर ने मारे।
किस को पुत्र भतीजा भ्राता। पुरि महिं बासै किसहुं जमाता ॥ २० ॥
इत्यादिक सनबंधी घने। जिन के रण महिं सतिगुर हने।
सो उर क्रोधहिं जबहि निहारहिं। ह्वै करि इकठे शसत्र प्रहारहिं ॥ २१ ॥
अवरंग मर्यो, पुत्र तिस केरा। होयहु नहीं प्रताप अछेरा।
नहिं भै धरि हैं मरहिं कि मारहिं। छिड़हि जंग तबि को हट कारहि ॥ २२ ॥
यांते प्रभु को तरी चढावहु। श्री जमना बिच को ले जावहु।
निकटि निकटि[3] के सगल मकाना। तहां बितावहु पिखहु[4] महाना' ॥ २३ ॥
इम मसलत[5] करि दिलवाली। मंगवाई इक नाउ बिसाली।
और संग केतिक मंगवाई। कहि करि सतिगुर लए चढाई ॥ २४ ॥
सने सने सभि तरी चलाई। पुरि के निकट तरति जबि आई।
दूरबीन प्रभु को गहिवाई। लगे बतावनि थल समुदाई ॥ २५ ॥

---

1. कूच किया 2. आगे से 3. सारे 4. देखे 5. सलाह

'श्री सतिगुर ! बज़ार बिसाला । लाल दुरग लगि हाटन माला ।
महिजित[1] जुमा[2] खरी इह दींखी । अति सुंदर सुरपुरी सरीखी ।। २६ ।।
पाहन लाल लग्यो इह सारो । बहु धन दे करि दुरग उसारो ।
बासा करति रहे गन शाहू । चित्र बचित्र बने इस मांहू' ।। २७ ।।
इत्यादिक कहि सकल दिखाई । सने सने तरनी चलिवाई ।
मोती बाग उतारे जाइ । घने लोक आए उमडाइ ।। २८ ।।
दरशन करि करि सकल सिधारे । तहिं सतिगुर तर[4] बाग निहारे ।
पुर तरनी पर लए चढाइ । पहुंचाए जहिं सिवर लगाइ ।। २९ ।।
तबि सतिगुर सिक्खन सन कह्यो । 'करनि फरेब हमहुं संग चह्यो ।
दिल्ली महिं सिक्खी मग हेरा । जथा मुलंमा कंचन केरा' ।। ३० ।।
सो दिन बित्यो प्रात पुन भई । संगत सकल दरस कौ गई ।
करि बंदन बैठे जबि पासी[3] । श्री मुख ते तबि गिरा[4] प्रकाशी ।। ३१ ।।
'नौमे सतिगुर जहिं ससकारे[5] । तिस थल को कीजहि निरधारे ।
आगे अवरंग ते डरपावहु[6] । अबि न रह्यो, मंदर बनवावहु ।। ३२ ।।
सुनिकै सिक्ख गए तबि स्याने । जहिं ससकारे जो तहिं जाने ।
तिरनै कर्यो लियो थल सोऊ । बनवायहु मंदिर सभि कोऊ ।। ३३ ।।
श्री प्रभु दरब[7] दयो बहुतेरा । हुकम मानि करि कीनि बडेरा ।
पूजन लगे सकल नर नारी । करहिं भावना पूरन सारी ।। ३४ ।।
इत्यादिक करि काज अछेरे । चलन चह्यो श्री गुरू अगेरे ।
सिख संगति सगरी चलि आई । बिनती करी प्रभू अगवाई[8] ।। ३५ ।।
'तुम सम जिस को दरशन अहै । दिल्ली बिखै रहै हम चहैं ।
इस पुरि सम दूसर को नांही । सिक्खी बिथरहि[9] थिर[10] इस मांही ।। ३६ ।।
पूजन हेतु टिकावहु कोई' । चितवति भे सुनि करि बिधि सोई ।
दोनहुं महिल[11] संग महिं जोइ । बोले श्री मुख 'तुम सुख होइ ।। ३७ ।।
हम ने दक्खण जानो दूर । तुम नित चलहु कशट हुइ भूर[12] ।
दिल्ली महिं थिरता अबि गहीअहि । संगति महिं सुख पूरब रहीअहि ।। ३८ ।।
दिन प्रति कूच बिखाद[13] करंता । इहां बसे सुख समां बितंता' ।
सुनि सुंद्री द्रिग[14] भरि बहु रोई । सुत को सिमरि सिमरि दुख पोई ।। ३९ ।।

---

1. जामा मसजिद 2. उतर कर 3. पास 4. बात कही 5. अन्तिम संस्कार किया गया था 6. भय था 7. धन 8. आगे 9. फैले 10. जगह 11. पत्नियां 12. अधिक 13. विषाद 14. नैन

केतिक बारि द्रिगन जल डारा। पुन श्री पति के साथ उचारा।
'तुम समरथ सभि बिधि गुन खानी। पुरहु कामना सिक्ख महानी ॥ ४० ॥
मैं अति दुखी निकट तुम रही। इक पुत्रा तिस भी म्रितु लही।
किस अलंब मैं जीयौं गुसाईं! बिछर एकली रहि इस थाईं ॥ ४१ ॥
प्रथम कुटंब आप को भारा। चार पुत्र चारू सु कुमारा।
सासू सहत सु रहित सुख्यारी। संकट हुतो न किसू प्रकारी ॥ ४२ ॥
जित कित अविलोकति[1] द्रिग सीतल। उदत जिनहुं ते आनंद ही तल।
सभिनि बिहीन रही दुरभागन। तुमरे दरशन की अनुरागन ॥ ४३ ॥
निज ढिग ते भी चहहु बिछोरी। कौन दशा हुइ है तबि मोरी।
तुम समरत्थ उचित सभि करिबे। मम हित चहति जि करुना धरिबे ॥ ४४ ॥
तौ मम सुत को दिहु बिदताइ[2]। जिस को पिखहि शांति चित पाइ।
रहौं इहां मैं धीरज धरिकै। रावरि ध्यान रू सिमरन करिकै ॥ ४५ ॥
जवि सुत की सूरत सिमरंती। महां कशट ते मैं न मरंती।
एतिक दुख पूरब भा मोहि। बिरह आप के क्या गति होहि ॥ ४६ ॥
किह अलंब मैं रहौं दुखारी। तुम जग—गुर पति अस गति वारी।
सुत की सूरत मोहि दिखाउ। जिम किम पुरहु इहु मम सुआउ ॥ ४७ ॥
बांछति पुरवहु लाखन जन की। अति अभिलाखा[3] इह मम मन की।
पुन आइसु को मानि सुखारी। रहौं बिछुरि इस पुरी मझारी' ॥ ४८ ॥
इत्यादिक कहि कहि बहु रोई। भई दीन मन शोक परोई।
निस[4] बासुर सुत सूरत चितवति। द्योस मनिंद बरख के बितवति ॥ ४९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**दिल्ली प्रसंग**' बरननं नाम तीन चत्त्वारिसंती अंशु ॥ ४३ ॥

---

1. देखा 2. विदित करना 3. अभिलाषा 4. रात्रि

अंशु ४४

दिल्ली प्रसंग

दोहरा

दीन मना अति सुंदरी पतिबरता ध्रितिवंति ।
बहु समता दीरघ दुसहि जबि इम भन्यों व्रितंत ।। १ ।।

चौपई

श्री सतिगुर सुनि कै सभि बानी । देनि हरख[1] म्रिदु कीनि बखानी[2] ।
'हे शुभमते ! अखिल जे लोक । नाम रूप नाना अविलोक ।। २ ।।
बिनसनि हार सकल ही अहे । भूत जु हुते भविक्ख न रहे ।
अपनि धरम गाढो करि मरे । सो नर धंन सिंधु जग तरे ।। ३ ।।
नर तन प्रापति को इह काजा । तारन तरन समान जहाजा ।
ते सुत धरम छत्त्रीयनि केरा । रण महिं सो निरबाह बडेरा ।। ४ ।।
शत्रु सैंकरे खेत[3] गिराए । आप जूझि सुरलोक सिधाए ।
जहिं सभि रीतनि के सुख अहैं । बेद पुरान साखि सभि कहैं ।। ५ ।।
खोड़स बरख आरबल तन की । सभि प्रापति अभिलाखा मन की ।
चक्र वरति महि मंडल राजू । मिटहि न आइसु कितहु कुकाजू ।। ६ ।।
करनि रमनि रमनीनि नवीन । इत्यादिक आनंद जग पीन ।
जिस आनंद को कनका[4] ऐहू । तिस आनंद सो मिल्यो अछेहू ।। ७ ।।
निज नंदन आनंद बिलंद । निशचै जानि लेहु मतिवंद !
तिस को शोक न सुमते ! करो । पुरि महिं रहन मनोरथ धरो ।। ८ ।।
रिदै ध्यान हम को नित ध्यावहु । निकट दरस को सुख फल पावहु ।
परालबध तन की सभि होगि । पहुंचहु अंत हमारे लोग ।। ९ ।।
अपर त्रियनि सम तुहि नहिं चहीअहि । हमरी संगत को फल लहीयहि ।
सिखन को कीजहि कल्ल्यान । बसीयहि दिल्ली पुरि रूचि ठानि ।। १० ।।
अपर[5] बारता की अभिलाखन । सो पुरवहु हम सों करि भाखनि ।
संगति बिनै मानिबे जोग । सेवा करहिं सरब सिख लोग ।। ११ ।।

---

1. हर्ष 2. कहा 3. युद्ध भूमि 4. भाल की 5. अवर

श्री अंम्रितसर आदि सथान। जहिं कहिं टिके मसंद महान।
सरब दरब इह अरपन करिहीं। निज निज थल महिं थिरता धरिहीं ॥ १२ ॥
तुव थिर होवनि ते इस देश। रीति प्रथम की रहै अशेश।
देनि लेनि जग गुर की कार। रहै तथाही निशचै धारि ॥ १३ ॥
धूअर धौलर जगत तमाशा। इसथिरता कौ क्या भरदासा[1]।
सम दरिआउ चल्यो नित जाति। भर्यो रहे इक सम दिखराति' ॥ १४ ॥
इत्यादिक प्रभु बहु समुझाई। भरे बिलोचन अरशु गिराई।
श्री गुर संग सिक्ख सुनिआरा। रह्यो पुत्त्र जाचति बहु बारा ॥ १५ ॥
केतिक[2] समैं बितावति भयो। इक दिन संग प्रभू के गयो।
त्रिया वहिर[3] इक बारक गेरा। गमनति पंथ गुरू तबि हेरा ॥ १६ ॥
सुनिआरे सिख सन फुरमायो[4]। 'जाचति पुत्र अचानक पायो।
प्रितपारहु करि प्यार दुलारा। तोरि कामना पुरवि उदारा' ॥ १७ ॥
सुनि कै सिख कर जोरति कह्यो। 'पारन[5] कारन मैं नहिं लह्यो।
को त्रिय सथान सु दुगधा देय। तौ इह बचै अंन अचि लेय ॥ १८ ॥
यां को जतन करहु फुरमावन'। सुनि बिनती बोले जसु पावन।
'जल को वाहिगुरू कहि लीजै। निज त्रिय सथन पखारनि कीजै ॥ १९ ॥
बारक जबि उछंग महिं पाइ। दुघध कुचन महिं तबि हुइ जाइ।
तिस ते पारन सिस बय पावैं[6]। बिन संसै इहु बड हुइ जावै' ॥ २० ॥
मानि बाक सतिगुर को तांहि। लियो उठाइ हाथ जुग मांहि।
जल ते भले कराइ शनान। निज दारा को दीनसि आनि ॥ २१ ॥
गुर को वाक सुनावन कीयो। सिखनी हरख धारि उर लीयो।
सो बिधि करे, सथन पय आवा। सहित सनेह सु नंदन प्यावा ॥ २२ ॥
जियत रह्यो बारक प्रितपार्यो। दंपति अपनो पुत्त्र बिचार्यो।
पंच बरस को होयसि जबै। गुर महिला पिखि सुंदरी तबै ॥ २३ ॥
श्री अजीत सिंह सुत अनुहारा। बार बार करि प्रेम निहारा।
'दिल्ली बिखै रहो' जबि कह्यो। रिदै सुंदरी तबि इम चह्यो ॥ २४ ॥
कहति कंत सन जोरति हाथ। 'तज्यो चहति जे इस पुरि नाथ!
मम सुत की इह सिस अनुहारा। देहु अबै करिहौं प्रितपारा ॥ २५ ॥
सुत सम पारक करि मैं राखौं। मन परचावनि हित अभिलाखौं।
दिहु आइसु श्री मुख ते जबै। पिखति रहौं पारक करि तबै' ॥ २६ ॥

1. भरोसा 2. बहुत 3. बाहिर 4. कहा 5. पालन करने के लिए
6. अर्पण करे

श्री गुर सुनिकै बाक[1] बखाना । 'इस पारहिं, जबि होहि महाना ।
बनहि तोहि कउ इह दुखदाई । खोजहिं तबि, ह्वै को न सहाई ।। २७ ।।
यांते इम ही रहु हरखाइ । पठहु ग्रिंथ साहिब सुख पाइ ।
पठन सुनन महिं दिवस ब्रितावहु । सिमरन वाहिगुरू चित लावहु' ।। २८ ।।
सुनि सुंदरी मन अनमन भई । —पति ते इह न कामना लई ।
बडो होइ क्या करहि बखेरा[2] । अबि चित परचा पिखहिं न मेरा ।। २९ ।।
रहौं इकांकी सदा उदास । नहि नंदन नहिं पति ह्वै पास—।
केतिक चिर महिं बहुत बखानी[3] । 'दुख आतुर की बिनै न मानी ।। ३० ।।
रावरि बिनां इकांकी थीवौं । परम कशट महिं किस बिधि जीवौं ।
क्यों न बिचारति हहु मम[4] हाल । बिरद[5] आप को सदा क्रिपालु' ।। ३१ ।।
सुनि करि सतिगुर रिदे बिचारा । —इह दुख आतुर अहै उदारा ।
समुझाई समझै न अजानी । बारक पारक चहिस महानी— ।। ३२ ।।
कह्यो तबै 'ले पारहु आप । लखि हैं बडे देहि संताप' ।
सुत अजीत सिंह की अनुहारी । निकट बिठायहु पिखि सुख भारी ।। ३३ ।।
पति की आइसुल हित पारन । सुत ही को किय नाम उचारन ।
पालक भा अजीत सिंह सइ । सिख ते लयो हरख महिं होइ ।। ३४ ।।
पुन साहिब देवी के साथ । पुरि राखन हित बोले नाथ ।
'निकट सौत के रहु थिर ह्वै कै । क्या लैं हैं दक्खण दिशि जै कै ।। ३५ ।।
सकल बिधिन ते बसैं सुखारी[6] । पूजहिं पहुंचि संगतां सारी ।
दिन प्रति गमन नरक सम कहैं । त्रिया जाति को बहु दुख अहै' ।। ३६ ।।
सुनि साहिब देवी कर[7] जोरे । 'गाढो नेम अहै इह मोरे ।
पूरब दरशन करौं तुहारा । पर बंदन ते अचौं अहारा ।। ३७ ।।
इतने ही माने सुख सारे । परम अनंद महिं संग तुमारे ।
गमन बिखै नहिं संकटि कोई । संग आप के सभि सुख होई ।। ३८ ।।
पुजवावन संगति के पास । ब्रिह तुम ते इह धरौं न आस ।
मन की गति सभि जानन हारे । बनहि न कहिबो निकट तुमारे ।। ३९ ।।
परखि प्रेम को राखहु साथ । इही कामना पुरवहु[8] नाथ' ।
दीन मना अतिशै गुर जानी । चलन संग बिनती इहु मानी ।। ४० ।।
संगत महिं सुंदरी को छोरि । चल्यो चहैं प्रभु दच्छन ओर ।
इतने बिखै बहादर शाहू । निज उमराव[9] पठ्यो गुर पाहू ।। ४१ ।।

---

1. वाक्य 2. झगड़ा 3. कही 4. मेरा 5. कृपा 6. सुखी 7. हाथ 8. पूरी करो 9. अमीर

धरि अकोर कर जोरि नमो किय । सभि बिरतंत प्रभू ढिग कहि दिय ।
'जंग जीत सलतन को पाइ । नगर आगरे थिर्यो सुहाइ ॥ ४२ ॥
रावर को प्रसंग नित कहै । मिलिबे[1] हेतु प्रतीखति[2] रहै ।
क्रिपा करहु निज दरस दिखावहु । म्रिद बाकन को कहि हरखावहु' ॥ ४३ ॥
श्री गुर कह्यो 'बिलम नहिं काई । कूच[3] हनि त्यारी करिवाई ।
केतिक[4] दिन महिं पहुंचहि जाइ । कहहु शाहु प्रति हम चलि आइं' ॥ ४४ ॥
सुनि उमराव कहनि पुन लागा । संग आप के बहु अनुरागा ।
तऊ शरीअनि ते डरपंति । तुम दिशि आइ सकै न कदंत ॥ ४५ ॥
शर्हा पिता की करी सु माने । अहैं सकेल सैंकरे स्याने ।
अवरंग दै दै मान वधाए । नित बैठति ढिग सो समुदाए ॥ ४६ ॥
यांते आइ न, सुकचति रहै । तऊ दरस अविलोकन चहै' ।
इत्यादिक बिनती बहु कीनि । श्री प्रभु सिरेपाउ तिस दीनि ॥ ४७ ॥
रुख़सद[5] हुइ गमन्यों ततकाला । कह्यो शाहु सों हरख बिसाला ।
रह्यो प्रतीखति प्रभु को फेर । –मिलि बोलौं गुर दरशन हरि– ॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**दिल्ली प्रसंग**' बरननं नाम चतुर चत्तवारिंसती अंशु ॥ ४४ ॥

---

1. मिलने के लिए 2. प्रतीक्षा 3. चलना 4. कब तक 5. जाना

अंशु ४५

आगरे आगमन प्रसंग

दोहरा

तेग़ बहादर सतिगुरू जिस थल किय ससकार।
बिदताओ मंदिर बन्यों सुंदर अनिक प्रकार॥ १॥

चौपई

पित सथान बिदताइ सुनायो। सतिसंगति को जोड़ करायो।
सुंदरी करी टिकातन पुरि मैं। आप अरोहनि बांछति उर मैं॥ २॥
सभिहिनि को निज गवन सुनावा। गन सिक्खनि को मेल सुहावा।
अनिक अकोरन धरि कर जोरे। कदम पदम सुख सदम निहोरे॥ ३॥
जथा भावना धरि अविलौके। तथा सभिनि लखि लखि द्रिग रोके।
जनु सूरज दिशि गन अरबिंदू। किधौं चकोरन चितव्यो इंदू॥ ४॥
करुना भरे कटाछ छबीले। सभि पर डारति दिशटि रसीले।
सनधबद्ध हुइ प्रभू बिराजे। बसत्र शसत्र नाना विधि साजे॥ ५॥
खुशी करी सभि को तबि नाथ। कर जोरहिं धारहिं पग माथ।
हिर अरोहिबे[1] हय अनवायो[2]। हेरि[3] सुंदरी सीस निवायो॥ ६॥
विछुरन समैं रूप जस बेसू। रिदै धर्यो तस कंद हमेशू।
दे धीरज सभि ..ो इक बार। पग रकाव धरि भे[4] असवार॥ ७॥
सहित खालसे मारग चले। करि पुरि जन गन को तहिं खले।
साहिब देवी संग सिधाई। रही सुंदरी आइसु पाई॥ ८॥
पंथ उलंघि कितिक प्रभु गए। हेरि सु थल डेरा पुन कए।
तीन दिवस करि मजल[5] सुखारी। जाइ पहुचे तहि अघहारी॥ ९॥
पंच कोस मथरा जबि रही। सिवर कराइ दीनि प्रभु तहीं।
निस बिसरामे खान रु पाना। सुपति जथा सुख क्रिपा निधाना॥ १०॥

---

1. उतार कर 2. काम से लाना 3. देख कर 4. होए 5. यात्रा

भई प्राति करि सौच शनाने। हय[1] अरोह करि[2] प्रभू पयाने।
पहुंचे मथरा पुरी निहारी[3]। जहिं बिलास[4] कीनसि गिरधारी ॥ ११ ॥

सूरज कुंड कीयो सभि डेरा। सुंदर तट जमना जल हेरा।
श्याम सलोने रूप सुधरिकै। बिलसे जहिं कहिं थिरिकै फिरिकै ॥ १२ ॥

सो सभि देखति नाना थल को। करे संहार दुशट दल बल को।
सूरज सुता पार गुर गए। गोकुल लोक बिलोकति भए ॥ १३ ॥

जिस थल हुती[5] पूतना पापन। त्रिणावरत खल कीनसि खापन।
दुशट बकासुर बली बिदार्यो। नाश अघासुर को करि डार्यो ॥ १४ ॥

ब्रिंदावन अविलोक्यो नाथ। जहिं खेले गोपीगन साथ।
केल रास मंडल जहिं करे। कमलासन बछरे गन हरे ॥ १५ ॥

जहां गुवरधन कर पर धार्यो। जहिं सुत पति को मन निवार्यो।
काली ताल बिलोक्यो जाइ। चढि कदंब पर कूदे धाइ ॥ १६ ॥

कुंज गलीन[6] खेल जहिं करे। जहिं गोपी गन के पट हरे।
जहिं धेनक अरु केसी मारे। इत्त्यादिक फिरि थान निहारे ॥ १७ ॥

क्रिशन रूप धरि खिले घनेरे। गुरू रूप धरि सो फिरि हेरे।
जमना को उलंघि पुन आए। जहिं धुबीआ हति सो दरसाए ॥ १८ ॥

मिली कूबरी कूब सुधारा। बहुर धनुख तोर्यो धर डारा।
कुंचर[7] खूनी दंत उखारे। मल्ल चंडूर मुशट जहिं मारे ॥ १९ ॥

कंस दमदमा बहुर निहारा। पकरि केस ते जहां पछारा।
पुन बिसरांत घाट पर आए। दियो दान दिज तहिं स [ुदाए ॥ २० ॥

इत उत बिचरति चपल बिसाला। लांगुल बंक उतंगहि जाला।
एक सिंह की सिपर धरी है। बंदर पहुंचि सु ग्रहिण करी है ॥ २१ ॥

ले करि चढ्यो तरोवर धाइ। तुपक सिंह तबि लई रिसाइ।
लग्यो प्रहारन धरि करि हाथ। बरजन[8] कर्यो तबहि गुर नाथ ॥ २२ ॥

ज्यों ज्यों तरू पर तरू आन। धरे ढाल कूदति बल ठानि।
त्यों त्यों श्री प्रभु बहु किसावैं। पुन तिस पीछे अपर सिधावैं ॥ २३ ॥

तबि सतिगुर पकवान अनायो। मोदिक[9] आदि जितिक मन भायो।
सभि कीसनि के अग्र[10] प्रवायो। मिले सैंकरे ततछिन खायो ॥ २४ ॥

---

1. घोड़ा 2. तैयार करवा कर 3. देखी 4. वचन बिलास 5. रहती थी
6. गलियों में 7. हाथी 8. रोका 9. लड्डू 10. आगे

को चीकति, हैं घुरकति केई। आपस बिखै भिरत कपि तेई।
दंत निकासहिं श्रौन दबावैं। लचन[1] क्रूर करहिं दिखरावैं ॥ २५ ॥
सभि पकवान खाइ ततकाला। भए बटोरन कपि[2] कुल जाला'।
तबहि सिंह ने प्रभु सो कह्यो। 'सिपर न तजी हाथ दिढ गह्यो ॥ २६ ॥
दै हौं त्रास कि तुपक प्रहार। बहुर धाइ करि लै हौं ढार।
नतु गाढी गहि कूद पलावति। इक तरु तजि दूसर पर जावति' ॥ २७ ॥
सुनि प्रभु बरज्यो तुपक प्रहारनि। आप बोल दे कर्यो हकारन।
सुनि पिखि कै पलवंगम आयो। मोदक कर पर ते बिरमायो ॥ २८ ॥
सिपर धरी सतिगुर के आगा। बैठ्यो निकट होहि डर भागा।
साहिब फेर्यो सिर पर हाथ। पुन होइ निकट निवायहु माथ ॥ २९ ॥
पुन मोदक धरि दीनसि आगा। ले करि शीघ्र फांदतो भागा।
सिपर सिंह ने सो गहि लई। सभिनि बिलोकि सुचेती कई ॥ ३० ॥
निज निज वसतु संभारनि कीनि। नहीं समीप आइबे दीन।
खान पान करि निसा[3] मझारा। सौच सनाने पुन भुनसारा[4] ॥ ३१ ॥
कूच कर्यो ह्वै करि सवधाने। निस बिसरामे दिवस पयाने।
गमनहिं मारग प्रभु हमेश। चढे खालसा संग अशेश ॥ ३२ ॥
इक दिन चले जाहिं गुर मारग। लगी प्यास बूझयो तबि बारग।
'ग्राम हिंदूअनि दिज ग्रिह रहै। सुंदर बारि तिनहुं के अहै' ॥ ३३ ॥
तबि इक सिंह तुरंग धवाइ। खोज्यो जल सीतल को ल्याइ।
आनि मिल्यो सतिगुरू अगारी। बूझ्यो 'किस के ग्रिह को बारी ?" ॥ ३४ ॥
हाथ जोरि करि सिंह बतायो। 'इक दिजनी के ग्रिह ते ल्यायो।
तनुजा तनुज[5] न बालक कोई। यां ते सुचि एकल रहि सोई' ॥ ३५ ॥
सुनि करि कर ते भर्यो कटोरा। गेरि दीनि तूरन धरि ओरा।
दया सिंधु बोले जल डारि। 'तिस को ग्रिह को सुद्ध न बारि ॥ ३६ ॥
एकल कहां सौचता धरनी। बहुते बाल तहां सुधि बरनी।
भगति शुद्ध नहि, शुद्ध आचार। बहुते ग्रिहसथी सुद्ध सु बारि ॥ ३७ ॥
सदन शुद्ध ग्रिहसती जहिं बहुते। एकल घर ध्रिग देव न भुगते।
ग्रिहसती सुत बिन स्रापति होइ। आग भाग न दै है कोइ ॥ ३८ ॥

दोहरा

साधू एकाकी भला, सुद्ध देह, मन सुद्ध।
ग्रेही बहुते शुद्ध घर सुचि तन मन औ बुद्धि' ॥ ३९ ॥

---

1. लोचन, नेत्र 2. बन्दर 3. रात्रि 4. प्रातःकाल 5. पुत्र-पुत्री

चौपई

इम कहि अगले ग्राम सिधारे। हेरि कूप[1] ते नीर निकारे।
भर्यो कटोरा पीं त्रिपताए। नगर आगरे समुख सिधाए ॥ ४० ॥
पंथ उलंघि गए बहुतेरा। जोजन चलन रह्यो लखि नेरा।
डेरा कर्यो थान सुठ[2] हेरा। त्रिण दाना अनवाइ घनेरा ॥ ४१ ॥
सुपति जथा सुख राति बिताई। नगर आगरे सुधि चलि आई।
'जगत गुरू भगवान छबीला। दासन को सुखदान हठीला ॥ ४२ ॥
क्रिपा करति सो अबि चलि आए। चतुर कोस पर सिवर लगाए'।
महिमा जानति जौन बिसाला। सुनि अनंद हए ततकाला ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने '**आगरे आगमन प्रसंग**' बरननं नाम पंच चत्तवारिंसती अंशु ॥ ४५ ॥

1. कुआं 2. सुन्दर स्थान

अंशु ४६

बहादर शाह मिलन प्रसंग

दोहरा

बाग अजाइब के बिखै उतरि कीनि बिस्राम।
निस बिताइ करि त्यार भे चलन आगरे धाम ॥ १ ॥

चौपई

हय अरोहि[1] करि सतिगुर चाले। देख्यो पुरि ढिग बाग़ बिसाले।
उतरि तुरंगम दीए लगाइ। थिर भे कुछ आराम को पाइ ॥ २ ॥
हुतो खान खाना इक खान। भ्रात न अकबर को इह आन।
गुर घर की महिमा कुछ जाने। गुरू आगवन सुन्यों तिस काने ॥ ३ ॥
निज समीप ते लोक पठाए। प्रभ ढिग पहुंचे बिनै सुनाए।
'कह्यो खान खाना कर जोरि। —दीजै दरस आइ इत ओर - ॥ ४ ॥
डेरे सहित अवाहन करे। चढीअहि प्रभु ! सुख बहु उत थिरे।
करहु आराम तहां चलि घने—। इत्यादिक तुम सों बच भने' ॥ ५ ॥
श्री गुर सुनि करि भे असवार। सिंह संग सभि शसत्रनि धारि।
लशकर बादशाह बहु तेरा। डहरा बाग अजब इक हेरा ॥ ६ ॥
भए प्रवेश तिसी महिं जाइ। हुतो खान खाना तिस थाइं।
सुन्यो कान तिन गुर आगवनू। चल्यो तुरत आगे तजि भवनू ॥ ७ ॥
पग पंकज[2] परसे तबि जाइ। बिनती बोल्यो सीस टिकाइ।
'जानि आपनो दरशन दीन। क्रिपा धारि सु क्रितारथ कीन' ॥ ८ ॥
निज कर ते गुर थापी[3] दई। खुशी अधिक तिस पर गुर कई।
हाथ जोरि तबि बिनै बखानी। 'मम सरीर महिं ब्रिथा महानी ॥ ९ ॥
रावर की करूना ते जाइ। रहौं प्रतीखत मैं चित लाइ'।
सुनि गुर कह्यो न अबि इह रहै। हम सों मिलनि अंत इह अहै ॥ १० ॥
नित प्रति देहु छुधनि आहार। बिच दुराइ करि इक दीनार।
जांते बिदतहि अधिक जहान। चलहि कहानी एव महान ॥ ११ ॥

---

1. घोड़े पर चढ़कर 2. चरण कमल 3. शाबाश दी

—साधु साधु साधू खन खाना। तेरे खाने बिखै बुताना'—।
इह गुर वाक बिदत है अबि लौ। पुंन्यातम को जसु रहि जबि लौ ॥ १२ ॥
पीर मिटी पिखी निज कल्ल्यान। प्रभु को आदर कीनि महान।
लए उतार कीनि बहु सेवा। जिस ते भए प्रसंन गुर देवा ॥ १३ ॥
तिस ते बिदा होइ थल और। सिवर[1] कर्यो सोढी सिरमौर[2]।
खान पान हित सभि किछ ल्याए। कर्यो अराम सिंह समुदाए ॥ १४ ॥
बरखा सहित घटा बडि आई। परै नीर धर पर अधिकाई।
गुर आगवन जानि करि मानो। इंद्र करै छिरकाव महानो ॥ १५ ॥
इसी प्रकार भई भुनसारा[3]। सुंदर तरूवर बाग निहारा।
सदन सुहावन है जिस मांही। सिवर उचित जानति भे तांही ॥ १६ ॥
तिस महिं ततछिन उतरे जाइ। सिंह संग जेतिक समुदाइ।
दे दे आइसु[4] थान बताइ। जथा जोग कहि कहि उतराइ ॥ १७ ॥
बंटि जथोचित थान महाने। उतरि खालसे सभि सुख ठाने।
इक दुइ दिवस करे बिसरामू। कितिक आनि दरसहि सुख धामू ॥ १८ ॥
सुध तबि सुनी बहादर शाहू। 'गुर आगवन भयौ हम पाहू'।
हरख्यो ततछिन पठि उमराऊ। आइ भेट धरि परसे पाऊ ॥ १९ ॥
'पातिशाहु ने मोहि पठावा। जबि आवन तुमरो सुनि पारा।
दरशन रावर कौ अभिलाखे। करहु मेल बहु बिनती भाखे' ॥ २० ॥
सभि सिंहन प्रति हुकम उचारा। 'ज़ीन पाइ हम कीजहि त्यारा'।
सुनि सतिगुर ते शसत्र सजाए। अस्व अरूढि[5] होइ ढिग आए ॥ २१ ॥
श्री प्रभु बसत्र सजायहु जामा। पहिरि बिभूखन सन अभिरामा।
कलग़ी जिगा झूलती माथै। मुकता[6] हीरे चमकति साथे ॥ २२ ॥
खड़ग गातरे शुभति बिसाला। कट निखंग[7] सर खर भरि जाला।
ऊपर कस्यो दुकूल[8] सुहावै। हाथ सरासन बहु छबि पावै ॥ २३ ॥
चढि तुरंग चाले ततकाला। संग खालसा शोभ बिसाला।
जहां हुते पतिशाही मंदिर। गन सुंदर के बैठ्यो अंदर ॥ २४ ॥
सिंहन प्रति प्रभु हुकम बखाना। 'थिरीयहि चढे हयनि इस थाना'।
साहिब सिंह संग ले साहिब। भए प्रवेश बिलोकि अजाइब ॥ २५ ॥
कुछ थोरे उमरावन मांहू। बैठ्यो हुतो बहादुर शाहू।
सूरज सम सतिगुर को देखा। कमल बिलोचन खिरे विशेखा ॥ २६ ॥

---

1. शिविर, डेरा 2. गुरु जी 3. प्रात:काल 4. आज्ञा 5. घोड़े पर चढ़कर 6. मोती 7. तलवार 8. वस्त्र

उठि करि तुरत समीपी आयो। द्वै हाथन द्वै चरन लगायो।
श्री प्रभु क्रिपा द्रिशटि करि हेरा। थापी दई कंड तिस बेरा॥ २७॥
'सुख सो भुगतहु बडि पतिशाही। बिनसी प्रथम दई तुव पाही।
जबि लौ भोहि आरबल तन की। पुरहु अनंदति वांछा मन की'॥ २८॥
चंदन चौंकी सुजनि डसाई। तिस पर सतिगुर लए बिठाई।
हाथ जोरि बहु बिनै बखानी। 'तुम सहाइता मैं सभि जानी॥ २९॥
रण महिं दरशन दे रिपु[1] मारा। मुझ को सलतन[2] दई उदारा।
पातिशाहु घर के समुदाए। सुनि सुनि तीर मदाज[3] सु-आए॥ ३०॥
जिर्दहिं परसपर करहिं उचारा। —तारा आज़म को मैं मारा—।
मुझ को निशचै भयो न कोई। तिन तरकश के सर पिखि सोई॥ ३१॥
नहिं समता तीरनि की पाई। हुइ हुइ कूर हटे पछुताई।
सो मैं अबिलौ रखे संभाल। अबि मेलौं रावरि सर नाल'[4]॥ ३२॥
इम कहि दोनहुं सर अनवाए। कहि गुर तरकश ते निकसाए।
कंचन लिपत मिले सम जबै। रिदै अनंदति बंदति तबै॥ ३३॥
'सरब कला समरथ गुनखानी। जग महिं कोइ न आप समानी।
इह महिमा जानहि मन मेरा। बखश्यो राज समाज बडेरा'॥ ३४॥
श्री प्रभु कह्यो 'पुरी अबि बाछे। गुर घर सों साबत रहु आछे।
अबचल बय[5] लगि भोगहु राजू। सम नहिं जग महिं तोही समाजू'॥ ३५॥
कलगी श्री गुर के सिर हेरि। बोल्यो शाहुबहादर फेर।
'लाखहुं कीमति जरे जवाहर। जगमग जेब जिसू की ज़ाहर॥ ३६॥
अस कलग़ी लै आव खज़ाने। संग दुशाले बसत्र महाने।
इक धुक धुकी मोल बहु केरी। आनहुं अबहि न कीजहि देरी'॥ ३७॥
सुनि खज़ानची ततछिन आनी। गुर आगे धरि बहुर बखानी।
'अबि आखांड़[6] तपति है भारी। बरखा रूति बहु निकट निहारी॥ ३८॥
पंथ चलन को बरजन होइ। निज निज थान घिरहिं सभि कोइ।
यांते मानि लेहु मम अरज़ी। रावर के दरशन को ग़रज़ी॥ ३९॥
बसहु चुमासा करूना धरीअहि। पुन मिलि गमन अपर थल करीअहि'।
दई उपायन अंगीकारहु[7]। मुझ को अपना जानि संभारहु'॥ ४०॥
निकट पौर साहिब सिंह खर्यो। श्री सतिगुर अवाहनि कर्यो।
चशम इशारत[8] दे समझायो। खिलत शाहू सो दिय उचवायो॥ ४१॥

1. दुश्मन 2. सल्तनत, बादशाहत 3. तीरंदाज़ 4. सहित, साथ 5. उमर
6. आषाढ़ का महीना 7. स्वीकार करना 8. आंखों के इशारे से समझाया

पेटी चिलकत कलग़ी जोइ। लई उठाइ धुक धुकी सोइ।
खुशी करी गुर बाहिर आए। साहिब सिंह चलति पिछवाए ।। ४२ ।।
निज घोरनि पर तबि चढि चाले। मिले सिंह हय चढे संभाले।
सने सने चलिकै प्रभु आए। जहिं उपबन तरूवर समुदाए ।। ४३ ।।
उतरि परे प्रभु बाग निहारसि। जो माली बहु रीति सुधारसि।
आरू, अंब, अनार अजाइब। कदली, कठल, बिलोकति साहिब ।। ४४ ।।
तूत बिदाना, तरू अंजीर। चंपक, नाल केल की भीर।
राइ बेल, चंबेली खिली। गन पंकति नित जल सों मिली ।। ४५ ।।
सूरज सुता[1] तीर पर सोहैं। नाना बिधि फल फूलनि सों है।
सुखद सघन छाइआ रमनीका[2]। करहि भले हुलसावन जी का ।। ४६ ।।
श्री प्रभु मंदिर महिं कै छाया। बैठि बिराजहिं समों बिताया।
नगर आगरे संगति भारी। दरसहि धरहि अकोर[3] अगारी ।। ४७ ।।
एक सिक्ख जडीआ सुनिआरा। चतुर काज महिं धनी उदारा।
जुति परिवार दरस को आयो। चरन कमल पर सीस निवायो ।। ४८ ।।
लगे उपायन के अंबार[4]। अरपति गुर को दरस निहारि।
क्रिपा द्रिशटि ते खुशी करि जबि। संगत गवनी[5] निज निज घर तबि ।। ४९ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'बहादर शाह मिलन प्रसंग'** बरननं नाम खषट चतवारिंसती अंशु ।। ४६ ।।

---

1. सूर्य-पुत्री, यमुना 2. रमणीय, सुन्दर 3. अकोर 4. ढेर 5. चली गई

अंशु ४७

नौनिध प्रसंग

दोहरा

सिख संगत गन संग लै 'नौ निध खत्री' एक ।
भंडारी संज्ञा कहैं केतिक सहत बिबेक ।। १ ।।

चौपई

सतिगुर के दरशन हित आयो । धरि अकोर[1] पग सीस निवायो ।
सनमुख बैठि अनंद बिलंदे । बूझे गुरू बंदि कर बंदे ।। २ ।।
'श्री प्रभु जी ! तुम पंथ चलायो । बाणा रच्यो केश रखवायो ।
गुरू ग़रीब निवाज बतावहु ! किस कारन करि इनहुं रखावहु ?'' ।। ३ ।।
सुनि श्री मुख फुरमावन कर्यो । ''तुम तो सासत्र बहुत बिचर्यो ।
पढ़न श्रवन महिं बैस[2] बिताई । इह गत लखी कि नहिं तुम पाई ।। ४ ।।
धरम रखनि केशादिक भले । सनकादिक ते आवति चले ।
भारथ खंड बिखै शुभ देश । केश राखणो धरम बिशेश' ।। ५ ।।
सुनिकै नउनिध बहुर बखाना । 'आप कहहु सभि साच प्रमाना ।
प्रथम केशधारी सभि कोई । अबि तौ समा रह्यो नहिं सोई' ।। ६ ।।
श्री गुर भन्यों 'समा क्या कहै । सो रवि सो ससि[3], सो जल अहं ।
बायू, बंन्ही बसुधा[4] ओई । दोश समै को क्या कहि कोई ।। ७ ।।
अपन आप को दोष लखीजै । राखे जाइं न, साच कहीजै ।
केश रखनि की समरथ हीने । दोश समें पर कलपन कीने ।। ८ ।।
नौनिध ! सुनहुं अगल[5] परसंग । जबि हम कर्यो मुकतसर जंग ।
पुन चलि गए जहां नैं वही । निकट कसूरपुरी जवि रही ।। ९ ।।
हुतो हुसैन खान तहिं मालक । पहुंचन हमरो सुनि ततकालक ।
यार मुहमंद पठ्यो वकील । निकट हमारे आइ सुशील ।। १० ।।
तिस पठान को खत गुज़ारन्यो । —मेल कपट को चाहति ठान्यों ।
अंतर गती जसूसी और । सुध के हित पहुंच्यो तिस ठौर—।। ११ ।।

---

1. भेंट 2. उमर 3. सूर्य और चन्द्रमा 4. अमृत 5. अगला

इस प्रकार हम जान्यों पाज। कह्यो—वकालत को क्या काज ?
रहन हमारे निकट विअरथ। पुरवहु कहां आपनो अरथ ? ।। १२ ।।
बात जथारथ है इस रीति। रहहु जि रहिनो भावति चीत—।
सुनि करि हम ते सो रहि गयो। इक दिन मजलस[1] महिं थिर भयो ।। १३ ।।
बोल्यो निरनै सुनिबे काजू। —देहु बताइ ग़रीब निवाजू।
हुते अग्र भी सिक्खन केश। कै अबि के ही रखे सु बेस—।। १४ ।।
सुनि करि हम ने सो समुझायो। सभि प्रसंग अबि तोहि सुनायो।
—हिंदू तुरक जि पूरब काला। सभि के सिर पर केश बिसाला ।। १५ ।।
थोरे दिवसन ते अबि हटे। लखीयति धरम सभिनि के लटे—।
यार मुहंमद बहुर उचारै। —सुंनत रखिबे केस हमारे।। १६ ।।
कबि के किस विधि हटे बतावहु ? सरब बारता अबि समुझावहु—'।
तवि श्री बदन सुनाइ उचर करि। "इबराहीम खलील पिकंबर ।। १७ ।।
तिस ने इक औरत अविलोकी। काम बसी मन ब्रिती[2] न रोकी।
कह्यो—मोहि सन करहु निकाहू। सुख सों वसहु आनि घर मांहू—।। १८ ।।
सुनि औरत ने बात न मानी। संग पिकंबर गिरा बखानी।
—तुव घर महिं पूरब इक बीवी। संकट होइ सपतनी थीवी ।। १९ ।।
केतिक दिन गुज़रे इस रीति। बसी पिकंबर के बहु चीत।
फेर कह्यो मन ह्वै करि दीन। —मुझ सों करहु निकाहु प्रबीन ! ।। २० ।।
निस दिन खुटकति है मम चित महिं। अभिलाखति बहु मिलिनो हित महिं।
जैसे तूं आइसु दें प्यारी। तैसे रहौं सदा अनुसारी—।। २१ ।।
लखि अपने पर अधिक लुभायो। तिस औरत ने अहिद सुनायो।
—दिहु तलाक तिस बीवी जबै। करौं निकाह[3] तोहि सों तबै—।। २२ ।।
पुन पैकंबर काम तपायो[4]। कर्यो तथा त्रिय[5] जथा बतायो।
दई तलाक प्रथम की नारी। करि निकाह भोगी उर प्यारी ।। २३ ।।
कितिक बरख लगि रस करि संग। भांति भांति करि मोचि अनंग[6]।
समा पाइ पूरबली त्रीय। भोगन करी लाइ निज हीय ।। २४ ।।
सुधि को पाइ क्रोध करि कह्यो। अहद शिकसत कीनि जबि लह्यो।
—शर्हा अदूल भूल जो धरै। कहो पिकंबर ! सो क्या करै ?—।। २५ ।।

---

1. मज़लिश, सभा 2. काम-भावना 3. विवाह 4. काम के वशीभूत होना
5. त्रिया, पत्नी 6. काम-क्रीड़ाएँ

इबराहीम कह्यो—बिधि जोइ। उचित सज़ाइ देनिको सोइ।
शर्हा अदूल भूल कै जानि। बिना सज़ाइ नपाक पछान—॥ २६ ॥
घात पाइ त्रिय तबै सुनाई। शर्हा अदूली तुमहु कमाई।
दई तलाक रमी सो फेर। उचित सज़ाइ आप को हेरि—॥ २७ ॥
सुन बीवी के बाक अभूल। कह्यो पिकंबर—करी कबूल।
जिम चाहति तिम कीजहि प्यारी ! मैं सदीव तेरे अनुसारी —॥ २८ ॥
सुनि त्रिय कहै— अंग जो लाए। दिहु कटाए इह उचित सज़ाए।
करि तलाक पुन तिस तैं भोगा। यांते कशट देनि के जोगा—॥ २९ ॥
सुनिकै शर्हा बात सच सोइ। दीन होइ बंद करि दोइ।
—प्रिया ! बात तैं साच उवाची[1]। लिहु बचाइ चित जे रुचि राची ॥ ३० ॥
जथा सज़ाइ होइ भी जाइ। जियति रहौं तुझ सो सुख पाइ—।
भयो दीन त्रिप करुना धरी। इम सज़ाइ पति के संग करी ॥ ३१ ॥
हाथ लगे, नहिं काटन कीनि। तिन पलटे काटी असतीनि।
लिंग कटन ते सुंनति करी। अधरन ते द्वै मूछनि हरी ॥ ३२ ॥
छाती पर ते कतरे बारा। सिर ते जूड़ा काटि उतारा।
तिस उम्मत अविलोक्यो ऐसे। सभिहिनि करी बारता तैसे ॥ ३३ ॥
इम तुरकन सभि केस कटाए। पूरवली मिरयाद मिटाए।
पुन हिंदुन की सुनहु कहानी। होयो परसराम बलि खानी ॥ ३४ ॥
करति जुद्ध छत्री सभि हारे। तिन सिर पर ते केश उतारे।
मुनि नंदन[2] जबि मुंडन करे। रहे मुंडावति रीति परे ॥ ३५ ॥
पुन कलजुग महिं राजे भए। संग्या जिनहुं नंद की लए।
—दुरि कै बिप्र न बरनी करैं। हमरो राज नाश हुइ—डरैं ॥ ३६ ॥
तिनहुं बिचार्यो इही उपाइ।—सभि बिप्रनि सिर मुंडवाइ।
सुर प्रसंन बिन केश न होइं। यांते मूंड दए सभि कोइ—॥ ३७ ॥
हिंदू तुरक इसी बिधि सारे। सिर मुंडवाइ धरम को हारे।
नउनिधि ! सुनी यही हेत मुंडन को। केश राखने खा सभिनि को ॥ ३८ ॥
जिन ते बिना प्रसंन न देव। अस शुभ केश मुंडावनि लेव।
बिना बिचारे देखा देखी। धारी रीति भए दुर भेखी ॥ ३९ ॥
रच्यो सु इशुर मानुख देह। कर्यो सुभाइमान छबि ग्रेह।
उत्तमांग[3] पर सुंदर करे। अधिक रूप केशन ते धरे ॥ ४० ॥

1. कही 2. बेटा 3. उत्तम अंग

तिनहि मुंडाइ बिचार बिहीने। धरम चारुता हति हित चीने।
सभि जग महिं फैली दुरमति। को हटि सकहि रीति पिख अती ॥ ४१ ॥
तिस बिधि के शलोक रचि राखे। बीच पुरान दिखावति साखे।
पूरबली नहिं रीति बिचारैं। केस दिजादिज बी सिर धारैं' ॥ ४२ ॥
श्री मुख ते सुनि बाक सुहाए। नौ निध खत्री सच लखि पाए।
'धंन धंन गुर' कहि करि नमो। अपने घर गमन्यों तिह समों ॥ ४३ ॥
प्रभु जी बसहिं आगरे मांही। दरशन हित आवहिं इक जाहीं।
सुंदर मंदिर उपबन बिखै। सघन तरोवर हरीअलि पिखैं ॥ ४४ ॥
कुंजति नाना रंग बिहंग[1]। शुभति बाग़ फल फूलनि संग।
पावस[3] रितु पसरी घनघोर। ठौर ठौर बहु मोरनि शोर ॥ ४५ ॥
छित परपुलत भई जल परिकै। निकस्यो वहिर सरोवर भरिकै।
बेग गामनी सलिता[4] होई। तपत हती सीतल सभि कोई ॥ ४६ ॥
बसहिं बाग महिं गुरू चुमासा[4]। सिख संगत की पुरवति आसा।
कबि कबि मेल शाहु सों बनै। कवि संतोख सिह सो अबि भनै ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'नौनिध प्रसंग'** बरननं नाम सपत चतवारिसती अंशु ॥ ४७ ॥

---

1. पक्षी 2. वर्षा ऋतु 3. नदी 4. चौमासा

अंशु ४८
आगरे प्रसंग

दोहरा

इक दिन मैं धरि भावनी अपनो भलो पछान।
दीन खानखाना भयो गुर पग बंदन ठानि ॥ १ ॥

चौपई

सभा सथान जहां बनिवायो। ले सतिगुर को संग सिधायो।
—गुर पावन पावन को करैं। पावन घर मेरो जबि फिरैं—॥ २ ॥
आसतरन[1] सुंदर बिछवाए। सादर सतिगुर तहां बिठाए।
अनिक अकोर[2] जोरि कर दीनि। बिनती कीनि होइ मन दीन ॥ ३ ॥
श्री प्रभु सु प्रसंन बहु भए। खुशी करी सगरे सुख दए।
'प्रथम खान खाना जो भयो। अकबर के मातुल[3] ते जयो ॥ ४ ॥
बहु नेकी जग बिखै कमाई। तुम भी तिस की समता पाई'।
मुदत[4] भयो सुनिकै गुर बैन। हेरति है सरूप भरि नैन ॥ ५ ॥
सुमति तुरक बैठे समुदाया। काज़ी मुल्लादिक तिस थाया।
गर शमशेर[5] गुरू समशेर[6]। बैठे बिच सभि केर बडेर ॥ ६ ॥
दरसहिं नर निज ग्रीव[7] निवावैं। जो बूझै उत्तर फ़ुरमावैं।
सतिगुर की बिसाल बडिआई। दुशट नरनि ते जरी न जाई ॥ ७ ॥
इक सिर्‌हंद को सय्यद बीच। पिखि प्रभु को खनस्यो मति नीच।
कह्यो तांहि 'तुम हिंदुनि पीर। सभि मानति हैं जानि गहीर[8] ॥ ८ ॥
करामात कुछ राखति अहो। किधौं नहीं बल, सो बिधि कहो ?
चित चाहति हम निरनै कर्यो। जहिं कहिं तुमरो सुजसु बिथर्यो' ॥ ९ ॥
लखी तरक तिह सय्यद केरी। फ़ुरमायो श्री सुख तिस बेरी।
'बदन बहादर शाह मझारी। करामात है बिदत उदारी ॥ १० ॥
करहि रंक ते पंच हज़ारी। नर गन अप बनहिं अनुसारी।
पंच हज़ारी को जे चाहै। कोपै रंक करै छिन माहे ॥ ११ ॥

1. बहुमूल्य गद्दी 2. भेंट 3. मामा 4. मुदित, प्रसन्न 5. तलवार 6. सिंह के समान 7. गर्दन 8. गम्भीर

मारहि बखशहि देर बिहीना। तिस मुख महिं लखि अज़मत पीना'।
पुन सय्यद तरकति सभि मांही। 'तुम ही राखति हहु कै नांही ॥ १२ ॥
सो तो बादशाह बनि रह्यो। बरतहि हुकम तिसी को कह्यो।
हम बूझति हैं रावरि पास। जे राखति कुछ करहु प्रकाश' ॥ १३ ॥
सभि महिं तरक सुनी जबि नाथ। जेब मझार डारि करि हाथ।
मुहर निकासी केतिक तबै। बोले श्री प्रभु सुनत्यों सबै ॥ १४ ॥
'पिखि दीनार जु हाथ हमारे। इह अज़मति लिहु दुती बिचारे।
जिस ढिग हुइं चाहे सो करे। लरति हज़ारहुं जिस हित मरे' ॥ १५ ॥
सुनि सय्यद बोल्यो तजि मौन। 'तुम महिं करामात हे कौन ?
दौलत आदि अनेक प्रकारी। जिस ते मानहिं लोक हज़ारी' ॥ १६ ॥
सुनि सतिगुर शमशेर[1] निकासी। सभि महिं छटा समान प्रकाशी।
ततछिन बदन पीत हुइ गए। लोचन समुख न करते भए ॥ १७ ॥
तेज दिपत श्री मुख ते कहै। 'इह भी करामात इक अहै।
अबि ही सिर उतारि करि तेरा। फल शाखा सम दे धरि गेरा ॥ १८ ॥
नहिं जबाब कुछ स्वाल न होवै। जीवन बाद वाद[2] करि खोवैं'।
पिखि सतिगुर को तेज बिलंदा। होति भयो सय्यद शरमिंदा ॥ १९ ॥
कह्यो गयो पुन बाक न कोई। नीचि ग्रीव[3] अवनी[4] अवलोई।
कितिक समें तक थिर गुर रहे। पुन डेरे कहु आवन चहे ॥ २० ॥
हय अरूढि गति मंदहि मंद। आनि पहुंचे श्री जग बंद।
उतरि तुरंगम[5] ते प्रभु थिरे। रुचिर प्रयंक[6] पौढिवो करे ॥ २१ ॥
इक दिन सतिगुर सहज सुभाइ। बैठें हुते बीच समुदाइ।
प्रथम पठानन को धन केता। देनो हुतो सोढि कुल केता ॥ २२ ॥
काज़ी पहि फिराद हित गए। गुर जबरी को भाखति भए।
'एतिक दरब हमारो अहै। कौन दोश ते सो नहिं लहै' ॥ २३ ॥
तबि काज़ी लिखि दीन इलाम[7]। ले करि आए खान तमाम।
'जबहि बिलोक्यो श्री गुन खानी। बीच सभा के कीनि बखानी ॥ २४ ॥
'सुनहुं पठानहुं अबि तुम जाइ। काज़ी को दीजै समुझाइ।
'लशकर महिं मखीआं बहुतेरी। खाना मकरू करहिं घनेरी ॥ २५ ॥
तिन पर प्रथम इलाम पठावहु। नहिं खाने पर थिरहु—हटावहु'।
इम कहि सो इलाम गुर फारा[8]। निज कर ते अवनी[9] पर डारा ॥ २६ ॥

---

1. तलवार 2. वाद विवाद 3. गर्दन 4. पृथ्वी 5. घोड़ा 6. बिस्तर 7. आदेश-संदेश 8. फाड़ दिया 9. पृथ्वी

पिखि पठाण सगरे बिसमाए। उठि काज़ी ढिग तूरन[1] आए।
'गुरू न मानहिं कागद फारा। —दल मखीआं पर पठहु उचारा' ।। २७ ।।
सुनि काज़ी जरि बरि[2] कै छार। कुप्यो रिदे नहिं लखहिं गवार।
अपर उपाव नहीं कुछ चाला। शहु समीप गयो तिस काला ।। २८ ।।
कह्यो 'इलाम गुरू न फेरा। हानति करै शरहा इस बेरा।
कागद फारि धरा पर डारा। नहिं कैसे उर महिं डर धारा' ।। २९ ।।
सुनिकै पातशाह, रिस साजि। काज़ी पर होयो इतराज़।
'इह तैं कहां कीनि मतिमंदे! जाति इलाही, फकर बिलंदे ।। ३० ।।
तिन पर कैसे पठ्यो इलाम। इह तैं कीनि बुरो बहु काम।
जिन आगै कर जोरनि बनै। तिन पर हुकम आपनो भनै?' ३१ ।।
इम कहि काज़ी कीनि तगीरा। गुर को जान्यों—पीरन पीरा।
सलतन[3] दई मोहि को—जानै। सो कैसे करि इमनहिं मानै—।। ३२ ।।
राजा इक जै सिंह सवाई। दुती अजीत सिंह नर राई।
उतरे हुते सु लशकर मांही। सतिगुर शोभा सुनि करि तांही ।। ३३ ।।
मिलिबे हित सो चलि करि आए। द्वै असु धन अकोर[4] कहु ल्याए।
संग बहुत सुभटनि[5] की भीर। पहुंचे आनि प्रभू के तीर ।। ३४ ।।
करि पग नमो हुकम ले थिरे। मुदत भए[6] गुर दरशन करे।
श्री मुख करि बूझे तिह समै। 'अपनि प्रसंग सुनावहु हमैं ।। ३५ ।।
कितिक बाहनी[7] राखन केरा? राज तुमहु ढिग है जु बडेरा'।
सुनि राजनि कर जोरि उचारे। 'देश बटोरन करहिं जि सारे ।। ३६ ।।
सवा लाख घोरा हुइ जाइ। सभि को खरच चलै समुदाइ।
धनी तेग़ के बड रजपूत। छिन महिं रिपु को करति कसूत[8] ।। ३७ ।।
निकट दौन के लाख अढाई। संग चढहिं घोरा समुदाई'।
श्री मुख ते तिन प्रति फुरमायो। 'लशकर देश अहै अधिकायो ।। ३८ ।।
तेज बिसाल शसत्र बढ धारी। बुरी बारता एक तुमारी।
गऊ कसाई के कर देति। धरम बिनाश अपनि करि लेति' ।। ३९ ।।
नरपति सुनि गुर ते बिसमाए। चित महिं चितवति-लख्यो न जाए-।
'सकल देश के विच किस थांई। बसन न दए कसाब कदाईं ।। ४० ।।
जहिं लगि हमरी पार बसाइ। पिखहिं कसाब तुरत बिनसाइं।
किस ते आप सुनी फुरमावउ। जिस ते दे उपदेश हटावउ' ।। ४१ ।।

---

1. शीघ्र 2. जल भुन गया 3. सल्तनत (बादशाहत) 4. भेंट 5. शूरवीर 6. प्रसन्न 7. सेना 8. ठिकाने लगाना

श्री मुख ते फुरमायो भेत। 'तनुजा[1] तुरकन को तुम देति।
इस ते परे न औगुन और। कछवाह, हांडे, राठौर ।। ४२ ।।
इत्यादिक तुम नाम कहावहु। अपनी ऐंठ सुजसु बिरधावहु।
इह तुम बिखै रीति बहु खोटी। करति रहे, किन प्रथम न होटी ।। ४३ ।।
आगे को चहीअहि तुम ऐसे। तनुजा तुरक न दीजहि कैसे'।
सुनति नरिंदबि[2] रिदे बिचारी। — गुर उपदेश हमहुं जसु कारी ।। ४४ ।।
देश बिदेशन महिं अपकीरति। सभि रजपूतनि की बिसतीरति —।
इत्यादिक बहु दुहन बिचारी। गुर हजूर तबि सपथ उचारी ।। ४५ ।।
'जो रजपूत बीज शुभ होइ। तनुजा तुरक न दै है कोइ।
श्री गुर तुमरो भयो पितामा[3]। सुजसु आज लगि तिन अभिरामा ।। ४६ ।।
राजे बावन को मुचवाइ। वहिर गवालियर ते तबि आइ।
तुम भी अहो तिनहुं के पोते। रण महिं महां बीर रस पोते[4] ।। ४७ ।।
सुने जंग रावर के भारे। कर्यो शोक तुरकाने सारे'।
श्री गुर क्रिपा द्रिशटि तबि कीनि। सिपर खड़ग मंगवावनि कीनि ।। ४८ ।।
बखशी जै सिंह को हरखाइ। ले कर महिं पग सीस निवाइ।
तरकश धनुख देखि करि पीन। न्रिपति अजीत सिंह कहु दीन ।। ४९ ।।
गुर ते ले बखशिश हरखाए। नमो करि हुइ बिदा सिधाए।
गए सराहति अपने डेरे। श्री नानक गादी पर हेरे ।। ५० ।।
इम श्री प्रभु दिन कितिक बिताए। दरसहिं संगति मिलि समुदाए।
दरब आदि बहु अरपि अकोर[5]। पुरहिं कामना को जस लोरि ।। ५१ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'आगरे प्रसंग'** बरननं नाम अशट चत्तवारिंसती अंशु ।। ४८ ।।

---

1. पुत्री 2. राजा 3. पितामह, दादा 4. वीररस से पूर्ण 5. भेंट

अंशु ४६

बहादर शाह प्रसंग

दोहरा

नाम जवाहर सिंह जिस जड़ीआ सिख सुनिआर ।
सुता तरुन[1] तिस की हुती सुंदर बहु सुकुमार ।। १ ।।

चौपई

सो दरशन हित चलि करि आई । सूखम बसत्र उपायन ल्याई ।
चरन सरोजन[2] को करि नमो । बैठी अविलोकहि तिह समो ।। २ ।।
केतिक सिंह समीप थिरे हैं । बाग़ विखे तरू चारू तरे हैं ।
शाह बहादर सहिज सुभाइ । फिरति सैल[3] हित हेरति थांइ ।। ३ ।।
जबि ही बाग़ निकट चलि आयो । —इहां गुरू थिरहैं—सुधि पायो ।
दरशन करन मनोरथ धारा । उतरि प्रवेश्यो बाग़ मझारा ।। ४ ।।
फरश बिसाल गुरू करिवाए । इकठे सिंह भए समुदाए ।
ततछिन आनि बंदना कीनि । प्रभू बिठायो आदर दीन ।। ५ ।।
जथा जोग सभि लोक खरे हैं । गुरू शाहु को पिखनि करे हैं ।
सिख की तनुजा ढिग थिर रही । उठि करि इत उत कित गी नहीं ।। ६ ।।
शाहु बहादर जबहि बिलोकी । सुंदर रूप चाहि बिशियों[4] की ।
भयो लुभाइमान ततकाला । देखि चकोर[5] चंद की ढाला ।। ७ ।।
गुर ते शंक रह्यो बहुतेरा । भयो विबस मन पियों न फेरा ।
लालच लग्यो पिखिन के कारन । करै बात बहु भांति उचारन ।। ८ ।।
बूझनि लग्यो 'हमारे मत मैं । कलमा पढति जु करि हित चित मैं ।
सो दोज़क मैं परत न कोई । जाति भिसत सुख भोगे सोई' ।। ६ ।।
सुनि गुर कह्यो 'न इम बनि आवै । जथा करम करि तथा सु पावै ।
कलमा पढहि कमावै खोट । तिस को संकट नरक न छोट ।। १० ।।
भोगहि कशट अनेक प्रकार । नहिं कलमा तिह लेति उबार' ।
कहे बहादर शाह 'हमारे । कलमा करहि उधार उचारे ।। ११ ।।

---

1. जवान बेटी 2. चरण-कमल 3. सैर के लिए 4. विषय-विकार 5. चकोर पक्षी

झूठ कह्यो कै साच बखाना। किम हम पता लेहिं मन जाना।
जाने बिना प्रतीत न आवै। लिखी साच ही हुइ, मन भावै'॥ १२॥
कोशप[1] श्री गुर तबै हकारा। निकटि निहार्यो तांहि उचारा।
'एक रजतपण[2] कोष धर्यो है। जिस पर कलमां संन पर्यो है॥ १३॥
तिस कौ ले करि हाथ सिधावहु। टके[3] बज़ार लिखै ते ल्यावहु।
बैठ्यो शाहु शीघ्र तूं जाउ। हमरे निकट अबै लै आउ'॥ १४॥
गुर आइस[4] ते कोशप[5] गयो। बीच बज़ार रजतपण दयो।
'इसके टके देहु गिनि मोही। जेतिक भाउ बिकत[6] इत होही'॥ १५॥
पिखि सराफ ने दीयो बगाई। इह खोटो नहिं चलहि इथांईं।
चार पांच हाटन[7] पर फिर्यो। नहिं सराफ किन किन कर महिं धर्यो॥१६॥
हटि करि गुर ढिग आनि सुनाई। 'इसे सराफ न लेति कदाई।
खोटे को बिलोकि ततकाला। रिस को धरति हाथ ते डाला॥ १७॥
टके देन तौ कितहुं रहे। झिरकि हटावति दुरबच कहे'।
सुनि कोशप ते ले करि हाथ। बोले गुर 'सुनि दिल्ली नाथ!॥ १८॥
जिन को मत :—कलमे ते भिसत। तिन को राज न कहूं शिकसत।
पुन निरनै करि लेहु निहार। तोहि निकट है तोहि बज़ार॥ १९॥
ऊपर कलमा कहि न बिचार्यो। अंतर खोट सकल निहार्यो।
किनहुं न कीनसि अंगीकार[8]। खोटा देखति दें कर डारि॥ २०॥
जहिं तुरकनि को राज तपंता। तहां न कलमा रच्छ करंता।
जिह ठां अवर न्यांव[9] के करता। भले बुरे को निरनै धरता॥ २१॥
तहि कलमा किम करै सहाइ। दें खोटे को भिसत पुचाइ?
जहिं परमेशुर की दरगाह। जथा जोग पिखियति हैं तांहि॥ २२॥
नर तन धारि करति हैं जथा। बिदत शुभाशुभ हुइं तहिं तथा।
दुख सुख भोगे क्रित अनुसारी। कूरे बेख ऊपरे धारी॥ २३॥
तिस ते नहिं सहाइता होइ। करहि क्रित नर भुगते सोइ।
पिख्यो प्रतक्ख इहां तुम जथा। प्रभु दरगाह न्यांव है तथा॥ २४॥
अंतर शुद्ध भए छुटि जै है। अंतर खोट महां दुख पै है।
वहिर बेख मानहि को नांही। करम शुभा शुभ मिटहिं न काही'॥ २५॥
सुनिकै शाहु बहादर मौन। द्रिग लगि रहे दिशा त्रिय तौन।
अपर प्रसंग एक दुइ कहे। उत्तर उचित गुरू ते लहे॥ २६॥
ढिग बैठन कारन चिरकाल। करहि बारता किस किस ख्याल।
चित की गति सतिगुर ने जानी। शाह बहादर साथ बखानी॥ २७॥

---

1. खजानची 2. चाँदी का सिक्का 3. पैसा 4. आज्ञा 5. खजानची 6. जिस भाव से बिकता है 7. दुकान 8. स्वीकार 9. न्याय

चित तेरो त्रिय[1] पर बिरमायो। जे चाहित, दिहु साचु बतायो।
कपट न धरहु समीप हमारी। जिम उर महिं तिम देहु उचारी'॥ २८॥
डरति शाहु कर जोरि बखानी। 'श्री गुरू तुम ते कछु न छानी।
सभि घटि घटि की जाणन हारे[2]। करहि दुराउ से मूढ[3] बिचारे॥ २९॥
हेरति ही बिरम्यो मन मोरा। तबि ते लागे द्रिग इस ओरा'।
सुनति साच को गुरू उचारा। 'जे लोभ्यो मन एव तुहारा॥ ३०॥
संझ समैं हम देहिं पुचाई। पुरहु कामना अपनि सथाइं'।
हरखति शाहु उठ्यो करि नमो। पहुंच्यो जाइ प्रतीखति समो[4]॥ ३१॥
सिख की सुता बंदि करि हाथ। 'श्री प्रभु! कहां करी मुझ साथ।
धरम उबारन हित तुम ध्यावैं। अनिक बिघन ते 'जननि बचावैं॥ ३२॥
मेरो धरम आप क्यों नाशा। तुरक संग हुइ मेल, प्रकाशा।
महां चिंत उपजी चित मांही। गुरू के कहे जाउं जे नांही॥ ३३॥
महां दोश मेरे सिर सोइ। जाउं जि, धरम बिनाशी होइ'।
सुनि करि श्री मुख ते बिकसाने। 'साध साध' तिह साथ बखाने॥ ३४॥
'गमनहु तिह ठां कहे हमारे। तोहि धरम के हम रखवारे'।
शाहु एक नर त्याग सु गयो। एक सिक्ख श्री गुर संग दयो॥ ३५॥
दोनहुं के मध ह्वै करि चली। गुरू बाक ते क्योंहुं न टली।
आगै शाहु प्रतीखति बैसा। लगे घाव पीड़ति ह्वै जैसा॥ ३६॥
दिखी दूर ते आवति सोऊ। दोनहुं दिशि महिं केहरि[5] दोऊ।
पकरे कान दुहन के आवति। शाह बहादर दिखि भैं पावति॥ ३७॥
ए बड ज़ालम त्रिया निहारी। पहुंचहि निकट देहि मुझ मारी।
ज्यों ज्यों निकट आइ डर धारति। देति नरन को हाथ इशारत[6]॥ ३८॥
'शीघ्र जाहु इस ले पशचाती। दीरघ क्रूरा मैं इह जाती।
दूत शाहु को अरू सिख दोऊ। शाहु इशारत को लखि सोऊ॥ ३९॥
तत छिन पीछे दई हटाइ। पहुंची शीघ्र गुरू ढिग आइ।
'धंन धंन' कहि पाइंनि परी। 'महां पाप ते रच्छा करी'॥ ४०॥
ले आइसु निज सद्न सिधाई। गुर महिमा को जहिं कहिं गाई।
सुंदर उपबन महिं गुर थिरे। अनिक बिलास अनंद सों करे॥ ४१॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे प्रथम ऐने **'बहादर शाह प्रसंग'** बरननं नाम एक ऊन पंचासती अंशु॥ ४९॥

---

1. त्रिया, स्त्री 2. घट-घट की बात को जानने वाले 3. मूर्ख 4. प्रतीक्षित समय 5. शेर 6. इशारा

अंशु ५०

अखेर खेलन प्रसंग

दोहरा

दिन पुशकर[1] इशनान को गए लोक समुदाइ।
तवै खान खाना गयो शाह बहादर थाइ[2] ॥ १ ॥

चौपई

तसलीमात[3] करि थिर भयो। शाह बहादुर बूझनि कयो।
बहु नर आइस ले करि गए। तीरथ मज्जन चाहित गए ॥ २ ॥
सतिगुर नहि को गये कि नांही। गमनहिं जे चाहत चित मांही।
कहै खान खाना मै हेरे। रहे गुरू जी आपने डेरे ॥ ३ ॥
तुमरी दिशि ते जाइ सुनावौ। जथा मनोरथ आन बतावौ।
तबि चलि के प्रभ के ढिग आयो। कह्यो शाह की शकल सुनायो ॥ ४ ॥
साहिब श्री मुख ते तब कहै। सो तीरथ हिन्दनि के अहैं।
तहां जान क्या काम हमारो। सुन इस हजरत निकट सिधारो ॥ ५ ॥
गुर की कहिबति सकल सुनाई। संसै भयो शाहु के आई।
दिवस अगले प्रभु बुलाए। चंदन चौंकी पर बिठवाए ॥ ६ ॥
बंदन कर प्रसंग चलायो। राद दोइ[4] को[5] तुम को भायो।
किस मग को इतकाद[6] रखंते। हिन्दु कि तुरक यथा बरतन्ते ॥ ७ ॥
सुनि साहिब श्री गुरु फुरमाए। हिंदू तुरक चलत जिस भाए।
खैर[7] खाह हम दो नहुं केर। दे उपदेश जथा हित हेरि ॥ ८ ॥
बहुर बहादुर शाह बखाना। कि खुदाइ एक ईमाना।
किस के दिशि हे रिदा तुमारा। ए समि निरनै करहुं उचारा ॥ ९ ॥
सुनि करि ताहि गुरू मुसकाए। तीन खुदाई अहै फुरमाए।
कहै शाहु इह कहां बखाना। ऐसी बा तबि कहै न दाना ॥ १० ॥

---

1. पुष्कर, तालाब 2. खान खाना बहादर शाह के पास गया 3. आदर सूचक शब्द 4. दो 5. कौन सा 6. विश्वास 7. शुभ चिन्तक

इक खुदाइ सभि ही ते सुनायो। बेद कुशब किता बनि मन्यो।
सुन कै पुन प्रभु ने समझायो। एक खुदाई इमानिक गायो ॥ ११ ॥
होइ तुरक जी तुमुह अगारे[1]। राभ नारायण नाम उचारे।
तिस ते बुरो मानि बरजंते। मडला पाक कहो उचरंते ॥ १२ ॥
अरु तुम मिलि मिलि कहति पुकारे। भयो मिसत सुख हेतु हमारे।
दोजक हिन्दुन हेतु बनायो। तिन को मत का नहिं मायो ॥ १३ ॥
नाम खुदाइ जु मैला आदि। हिंदु महिं सिमरैं करि याद।
बिगर गयो इहा तिसैं बतावै। जाति पाति ते वहिरे करावै ॥ १४ ॥
जिस के दोनो महिं इक मानयो। मुख तरफदारी हित हानयो।
जे भागरति है पख बनारा। तिन सो मेल न करहिं कदारा[2] ॥ १५ ॥
दोनहुं महिं इक बाद न कोई। हमरो पंथ समझीए सोई।
सुनति शाहु ठानी मुख मौन। उत्तर फुर्यो न कहिबे कौन ॥ १६ ॥
केतिक समय बैठि गुनखानी। हुइ रुखसद पहुंचे निज थानी।
दिव प्रति वसतु अजाइम ब्रिंद। भांति भांति के वस्त्र बिनंद ॥ १७ ॥
दूर देश के मेवे घने। भाँति भाँति के स्वादन सबे।
शाह बहादर मले पठावै। भखनि अजब हयनि पहुंचावै ॥ १८ ॥
केती बार आप चलि जाइ। कई बार ले निकट बुलाइ।
इस प्रकार निज प्रीत जनावै। खर्च हेत बहु दुख पठावैं ॥ १९ ॥
इक उमराव[3] प्रभु ढिग आयो। करि बंदन बैठ्यो बच गायो।
सुनी कान मै, बिद्धपावान। तुम ढिख आवति महिद महान ॥ २० ॥
ज तुम संग लरै सर देखे। सो तारीक को करति विशेखे।
नहिं अस समय बिखै अस कोई। तीर प्रहारै गुर सम जोई ॥ १ ॥
लरे अनंदपुर अरु चमकौर। जो बचि करि आए इस ठौर।
करहिं शाहदी[4] बडहुं बडेरी। सो हम चाहत है हम हेरी ॥ ॥
मिहरवानगो कर दिखरावहुं। मम चित की लखि चौप चलावह।
सुनि विनती प्रभु धनुख[5] संभारा। सर को जोरति ऐंचि उचारा ॥ ३ ॥
कहहू[6] निशाना भेदहिं जाहिं। होहि जिपूर बचहि सो नाहीं।
होरि तरोवरू तांहि उचारू। श्री प्रभु कीजै वाहि प्रहारू ॥ २४ ॥
तानि कान लगि तबहिं चलायो। गयो सु बेग शुक तरू धायो।
बहुरो ऐंचिति औरहि मारा। तिसर तिसी स्थान प्रहारा ॥ २५ ॥

---

1. सामने 2. कभी भी 3. अमीर व्यक्ति, भद्र पुरुष 4. साक्षी 5. धनुष 6 बनाओ

पंच बान एकै थल मारे। पिखि उमराव विसमता धारे।
'धनु बिद्‌आ तुमरी धंन धंन है। इन ते कह ! बचै रिपु जन हे।। २६ ।।
सुने जथा अबि तथा निहारे। शत्रु हजारहूं स्तुति उचारे'।
थिर्यो चार घटिका कर नमो। निज स्थान गमनयो तिह समो ।। २७ ।।
सो उमराव सजस बीचारति। आदि सूरत गुन गुर धारिन।
गयो बहादर शाह कै पासी। सरब लोक पे गाथ प्रकाशी ।। २८ ।।
'अबलौ[1] हम ने कहूं न हेरे। नर हय गय नहिं बचहिं अगेरे'।
'मैं भी देखौं' शाह कहँता। किस प्रकार सर प्रभू चलँता ।। २९ ।।
सतिगुर के ढिग हत पठायो। 'प्राति शिकार चढहि मन भयो।
आप क्रिपा खिलहु अखेरा। कह्यो शहु चाहति चित मेरा ।। ३० ।।
सुनि सतिगुर ने मानी बात। सुपति जया सुख बीनी रात।
चढ्यो शाहु ले सौज अखेरे। चीते स्वान रा बाज घनेरे ।। ३१ ।।
लगर[2], झगर[3] धुतीआ[4] जुरशानि। बाहिरी स्थाइ गोश सीचान।
साहिब की दिशि चलि करि आयो। प्रभु तयार ह्वै असु अनवायो ।। ३२ ।।
खड़ग निखंग संग कट शोभा। ज़ेवर हेरि न किह मन लोभा।
ह्‌वै असवार कीन प्रस्थाना। नमो करि पिखि शाहु पयाना ।। ३३ ।।
जहि शिकारगाह पहुंचे जाई। बिचरै म्रिगनि समुदाई।
गुरू के संग बहादुर शाहू। पाटे कोल हने बन माहू ।। ३४ ।।
तीख फुरती बेग निहारे। इत उत तजे न जियति पधारे।
कितिक अखंर खलि करि दोई। पिखहि तमाशा चीतनि सोई ।। ३५ ।।
स्वनान बाज बहिरी धुटवाए। बन के जीव अनिकी ही घाए।
बिपन बिसाल जबहि चल गए। के हरि पिख्यो महाबल भए ।। ३६ ।।
जिनहुं निहार्‍यो अनि सुनायो। ले लशकर तित ही उमडायो।
शाह बहादुर कीनि उचारनि। 'शेर खड्‌ग सो करहुं बिदारनि ।। ३७ ।।
तीर तुपक नहिं धूटन पावै। धावै जो इनाम बड पावैं।
इस कहिते भभकरायो शेर। हुतो बिलंद खान तिन हेरि ।। ३८ ।।
गहि करवाल[5] दाल को गयो। हठ[6] गाढो करि सनमुख भयो।
पहुंच्यो निकट म्रिगेश निहार्‍यो। कांधि झपट कर तुरत प्रहार्‍यो ।। ३९ ।।

---

1. अब तक 2. एक शिकारी पक्षी झगर की 3. एक नर शिकारी पक्षी 4. बाज़
5. तलवार 6. हौसला

हेरि डरे पुन शाहु प्रचारै। 'लेहु इनाम जाइ भट मारै।
सुबति वज़ीद खान रिस धारि। बहुते सूख को सिरदार ॥ ४० ॥
करि प्राकम ललकारयो जबै। शेर झपट दाबयो हति तबै।
पुन को सुभट समुख नसि गयो। देवे उमराव हते उर भयो ॥ ४१ ॥
तब साहिब निज दलहि निहार्यो। रोशन सिंह हनो ललकार्यो।
जमधर खडग ढाउ जिस पास। रुपशो सिंह चहिं सिंह बिनाश ॥ ४२ ॥
लाइ घात करि सिपर[1] अगेरे। नेर भेव घालयो जिस बेरे।
काधि केहरी ऊपर आवा। तरे होइ करि घाव लगावा ॥ ४३ ॥
जमधर उदर सजोर घसाई। ऊपर ते दीनसि उथलाई।
गुर अर शाहु सु चमूँ तमाशा। अवलोकनि सभि शेर विनाशा ॥ ४४ ॥
बखशिश लग्यो शाहू बहु दैबे। कहै सिंह 'हौं' करौं न लैबे।
जिस सुर दे बल शेर हतायो। तिस ते रिद्धि सिद्धि हम सभि पायो ॥ ४५ ॥
लेनि अपर ते रखि न आसा। लोक परलोक तिनहुं मरवासां।
सुनति शाहु उमराव घनेरे। अधिक सराहति हटे पिछेरे ॥ ४६ ॥
निज निज डेरब को चलि आए। रोशन सिंह महा जस पाए।
लशन मे सभि करहिं सराहनि। 'हत्यो शेर जिस के डर नाहिन' ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सरज ग्रंथे प्रथमे ऐने '**अक्खेर खेलण प्रसंग**' बरननं नाम पंचामृति अंशु ॥ ४ ॥

1. ढाल

अंशु ५१

शाहु संग बोलन प्रसंग

दोहरा

श्री सतिगुर उर उर सिमरि करि अपनो एक सवाल ।
नन्द लाल जूति अपर को कह्यो सुनाई हवाल ।। १ ।।

चौपई

*मातुल हुनो शाह को जोई । हाकम राई संगठन दोई ।
कह्यो इनहुं सो दिहु समझाई । जो अपनी कर लिखित पठाई ।। २ ।।
सौ दीजै हमरो एक स्वाल । जिसने सलतन लई विशाल ।
करयो प्रथम को अबहि संभारो । इमहुं कह्यो तुम नहिन चितारौ ।। ३ ।।
श्री मुख ने सुनि तीनहुं साची । 'है सभि निश्चै' तीनहुं उबाधी ।
मिलि करि शाहु निकट चल गए । तसलीमान करी थिर गए ।। ४ ।।
प्रथम प्रसंग संग गुर केरा । कर्यो सुनावन को तिस बेरा ।
पूरब मुख ते ही कहि दीन । पुन प्रभु ने लिखाइ कर लीन ।। ५ ।।
अब लौ ज़िकर नहीं कुछ कर्यो । जबि तुम भी नहीं सिमरन धर्यो ।
तबि गुर हमहि हकार चितार्यो । इक सवाल हिहु पुर उचार्यो ।। ६ ।।
तुम को भी बनि आवै ऐसे । सगिर रहै हरख जुति जैसे ।
अपनो मनयो पुर करि दीजै । लोक प्रलोक अनन्द को लीजै ।। ७ ।।
सुनि के शाहु बहादर भाखा । 'दै हौ स्वाल मोहि अभिलाखा ।
लखौं परन्तु जु होई सुखारो । देनि उचित मिलि सकल विचारो ।। ८ ।।
होइ प्रात गुर करा हकारन । सुनि लीजै तिन केर उचारन ।
पींछै दैबै हेतु उचारै । गुर के डर प्रसंनता धारैं ।। ९ ।।
इस कहि करि से दिवस बितायो । भई प्रभाति दिवान लगायो ।
इक उमराव हकारन आइ । श्री गुर चलीअहि शाह बुलाइ ।। १० ।।
हय अरोह कर गए मुसाई । थिर उमराव पुंज जिस थाई ।
सकल नम्र करि सलामू । जाइ प्रवेशे बीच तमामू ।। ११ ।।

शाह नमो कर निकट बिठाए। चंदन की चौंकी हनियाए।
प्रथम प्रसंग जंग के घने। यदि अनंद पुरि सुने न मने॥ १२॥
सुनि सुनि गुरु वीरता भारी। सरब सराहति सभा मझारी।
बहुर बाहर शाह उचारा। कहीयहि अपनो स्वाल उदारा॥ १३॥
जब उमराव सभासह गए। पूछन ते गुर भाखति भाए।
'हिंदवाने संग दोह करंते। तोहि पिदर[1] को बहु बहकंते॥ १४॥
जुलमी करति रहे बहु भारी। पिता हमरो सो दुरचारी।
दिज आदिक से बुरा करंते। बीच शरहा के कुमति धरंते॥ १५॥
पुन हम सो बहु जंग मचाए। जो सिरहंद को बड उमराए।
बालक साहिबज़ादे गहे। बिना दोश संघारन रहे॥ १६॥
इत आदिक उमराव मुलाने। जिनहुं कुकरम जुलम को ठाने।
पढि पढि नर ओचक गहि लीजैं। बंधि बंधि करि हम को दीजै॥ १७॥
तिन को सूरी देहि कि फांसी। ले पलटा हम करहि बिनाशी।
तिनहुं कुकरम कमायहु जैसा। संकट सहे पाइ फल तैसा॥ १८॥
बहि परलोक न धरम विचार्यो। तुरक हिंदु संतनि गह मार्यो।
सो पलटा हम लेहै पाइ। करो नाश दुशटनि समुदाइ॥ १९॥
सुबति शाह हहिर्यो हिप हौला। चिंता वधी अधिक नहीं बोला।
केतिक चित लौ करि बिचारा। पुन सतिगुर के संग उचारा॥ २०॥
'इस को उत्तर मैं किर देऊ। निज मंत्रीन साथ[2] गिन लेऊं।
इम कहि ढिग ते करे बिसरजन। आनि बिराजे उपबन ततघिन॥ २१॥
पीछे सकल हंकारि सलाही। गुर की कही चिंत जुति आही।
'इह कारज बन आवैं कैसे? अब लौ तेज न भा मम ऐसे॥ २२॥
गहौं इक सूबा[3] जिस काल। परहिं शोर[4] सलतन[5] चलचाल।
बिगर जाहिगे लशकर[6] मारे। बेहतबार बनहिं नर सारे। २३॥
जबि सूबे बिगर लरि परे। सभि देशन रोश बिसतर।
कहहु[7] गुरू संग कही[8] अहि कैसे। जिस से रिसहि म रहि रस ऐसे॥ २४॥
जबि अस चिन्ता सहत बखाना। मिली मंत्रीन मंत्र को ठाना।
शाहु बहादुर को समझायो। 'गुर सो कहन इव बन आयो॥ २५॥

---

1. पिता 2. परामर्श कर लूं 3. राज्य पाल का पुराना पदनाम 4. शोर 5. राज में 6. सेना 7. बताओ 8. क्या कहें

इक संमति लगि कुछ नहि[1] कहीयहि। निशचल हुकम न मेरा लहीयहि।
जबि टिक जाए तेज जग आछे। पुखौ सवाल आपको बांछे ॥ २६ ॥
इत्यादिक समझाइ सिधाइ[2]। गिनति गाथ दिन दोई बिलाइ।
पुन सतिगुर निज निकट बुलाए। हम अरोह ह्वै करि तब आए ॥ २७ ॥
शाह निम्यो सनमान बिठाए। हाथ जोरि करि गाथ सुनाए।
'तुम प्रताप ते सलतन[3] पाई। अस न होइ अबि बिगर सु जाई ॥ २८ ॥
इस डर ते इक बरख बितावउ। काजी मुल्ला नाहि गहिवावउ[4]।
सूबे बिगर परहिगे सारे। बेइतबारी मोहि बिचारे ॥ २९ ॥
संमत बीते रावरि स्वाल। मैं पूरन करि हौ दरहाल।
बनौ न बे सुख संग निहारे। मैं जानौ नीके उपकारे ॥ ३० ॥
सुनि श्री मुख साहिब फरमायो। अबि तुहियाज कहनि मन भायो।
इसी हेतु हमलिखत कराइ। सलतन पाइ सो नट कर जाई ॥ १३ ॥
तऊ फ़रेब लिखे पर कीनि। तै इक स्वाल न हमरो दीनि।
तुरकन ते हम सलतन बाशी। दीनि होइ लीनसि निज पासी ॥ ३२ ॥
तऊ न हम सो उतर्यो पूरा। दियो न दैबे कह्यो जरूरा।
इह तऊ देनि हेतु बडिआई[5]। चिहतकार[6] तुझ सो बनवाई ॥ ३३ ॥
सो तुव भाग बिखैं इह नहीं। समुझि देखि अपने चित सही।
अब इक ऐसे सिख बनावौ। जग मैं दे करि तेज बधावौ ॥ ३४ ॥
जंह जंहि दोखी कूर कुचाले। तहिं तहिं पहुंखै बहु बाल नाले[7]।
जो सूबे मुकलां बहुतेरे। कर्हि संघारन सभि इक बेरे ॥ ३५ ॥
सभि सलतन को गरद मिलावै। नहिं लशकर को ठहिरन को पावे।
जिन जिन हम सो जुलम कमायो। हिंदुनि से बहु बैर बढायो ॥ ३६ ॥
पुरि अर ग्राम देश गन जेते। उठहिं उप्द्रव नाशहि तेते।
आदि सर्हंद बसहि समुदाया। करहि उजार लुटहि न द्वाया ॥ ७३ ॥
लाखहुं ऊपर अपदा परैं। नहिं समरथ जो तिस परहरै।
उजरे देश न राखा कोइ। अबि ऐसी गति निशचै होइ ॥ ३८ ॥
साहिबज़ादे जिन संघारे। तिस को गहि सो करहि प्रहारे।
इत्यादिक पलटा सभ लैहै। निज द्रिग देखहु नहि सफलै है ॥ ३९ ॥

---

1. कुछ न कहे 2. चले गए 3. राज 4. नहीं पकड़ाऊँगा 5. मान, बढ़ाई 6. काम 7. साथ

इस कहि सतिगुर रिस कुछ करे। उठ आइ निज हय पर चरे।
निज डेरे महिं चल कर आए। दिन कोतिक ताहिं और बिनाए॥ ४० ॥

शाह सचित अधिक होइ रह्यो। गुर के संग नहीं कुछ कह्यो।
जानीअस कहां मौन मुखधारी। निज सचिवन के संग उचारी॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरजग्रिंथे प्रथम ऐने **'शाहु संग बोलन प्रसंग'** वरननं गुर परबवान बिरचतयां भाखायां कवि संतोख सिंह भनति नाम एक पंचासमो अंशु ॥ ५ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ।

१ओं श्री वाहिगुर जी की फतह ।

अथ उत्तर ऐन प्रारंभते

अंशु १

उत्तर ऐने मारग प्रसंग

मंगल

दोहरा

जगबानी मानी सुरति सुखदानी निज दास ।
पूरन कीनसि ग्रंथ को कवि रसना पर बास ॥ १ ॥

इष्ट गुरू मंगल

श्री नानक, अंगद गुरू, अमरदास पद बांदि ।
रामदास, अरजन गुरू, वर श्री हरगोबिन्द ॥ २ ॥
हरी राइ, हर क्रिशन गुरू, तेग बहादुरे चँद ।
दसवें गोबिन्द सिंह गुरु नमो चरन अरबिन्द ॥ ३ ॥

इष्ट देव मंगल

जिह सन्ता लखियति जगत सो न पख्यो किसजाइ ।
जिस दृग ते दिखियति सकल, दृग नहिं दिखी कदाइ ॥ ४ ॥
ध्यानानंद जोगीन महिं भोगी बिशियानंद ।
रम्यो एक परमातमा बार बार तिस बंदि ॥ ५ ॥
शेश कथा उचरौ अबै जिस बिकुंठ गुर जाइं ।
पहुंचहि अबचल नगर महिं, सुनि श्रोत चित लाई ॥ ६ ॥

चौपई

बरखा बरखति बित्यो चुमासा । नगर आगरे श्री गुर बासा ।
शाह बहादर भाख पठायो । रजपूतन पर चाहति जायो ॥ ७ ॥

आदि उदेपुरि जो रण गाढे। मिलहिं आनि जिम तिन उर बाढे।
आप कृपा करि संग चलीजै। देश बिदेशन दर्शन कीजै ॥ ८ ॥
सुनि सतिगुर आइस फरमाई। पूज[1] नुशते दुरगा आई।
करहिं दसहिरा रीति भलेरी। पुन हम चढहिं लाखहु नहिं देरी ॥ ९ ॥
इतने ममनहुं आप अगारी[2]। देहु त्रास राजपूतनि भारी।
हमरो मेल होहि अगुवाई। आप चढो ले दल समुदाई ॥ १० ॥
शाह पास तब जाइ बखाना। पाइ हुकम गुर कीनसि ब्याना।
रण सिंह गन पटह नगारे। शतरी आदिक बाहित मारे ॥ ११ ॥
एक बरि बाजे समुदाए। शाहु बहादर चढ्यो रिसाए।
सने सने मंजिल कर नेरे। —सतिगुरू मिलै आन संग मेरे ॥ १२ ॥
रजपूतन को प्रास उपायो। हित मिलबे बहु साज बजायो।
इत सतिगुर पूजति नवराते। चँदन धूप फूल बहुं भांते ॥ १३ ॥
दुरगा पाठ अनेक करंते। सौज अकेली हमन[3] हुवंते।
दीप समूह घ्रित के बारे। शसत्र सकेलि अनेक प्रकारे ॥ १४ ॥
खंडे खडग प्रचंड दुधारे। सैफ, सरोहो, जमधर भारे।
तोमर, भाले, सांग सुढाले। धोए, सीखचे, चक्र कराले ॥ १५ ॥
बिछुए, खजर, खपरे बान। तुपक तमांचे धनुख महान।
महां खिलेखाना[4], सतिगुर को। पूजहिं सकल प्रेम करि उर को ॥ १६ ॥
भोजन अनिक प्रकार कराए। पूरी पंचामृत[5] बरताए।
जै जै शबद उचारन करिते। बंद्र गौरजा को मुद धराते ॥ १७ ॥
पुनहि दसहिरा को दिन होवा। हय शिंगार्यो अग्र खरोवा[6]।
करि बाहन की पूजा भले। वहिर खलिबे हित चढि चले ॥ १८ ॥
विचरति आयुध बिद्या करिते। तुरंग धवाइ तुफंग समंरिते।
छोरति बान निशाना हनते। तोमर दीह भ्रमावें तनिते ॥ १९ ॥
खगपति दरशन करि मुरि आए। जथा जोग उतसाह बनाए।
इस प्रकार के करे बिलासे। बाग अजाइब साहिब बासे ॥ २० ॥
दिवस त्रौदसी को पुन आयो। 'कूच करो' श्री मुख फुरमायो।
बसत्र शसत्र सजि कै बिधि नाना। होइ त्यार प्रभु चहिस पयाना ॥ २१ ॥

---

1. पंथ में प्रचलित विश्वाशों तथा कवि भाई वीर सिंह पर यह प्रभाव सिक्ख दरबारों का है । वास्तव में गुरु जी की शिक्षा नुराते तथा देवी पूजा के विरुद्ध है 2. पहले, आगे आगे 3. हवन 4. शस्त्रागार 5. कड़ाह हलुवा 6. खड़ा किया

सुनि सुधि नगर आगरे संगति। दर्शन हित उमडे करि पंगति।
ले अकोर कर जोरति मिले। खुशी लई सतिगुर की भले ॥ २२ ॥
दर्शन ते निहाल हम भए। जन्म जन्म के पापनि धए।
पूरब भाग बिशेखै देखे। मानुख तन सगरे अवरेखे ॥ २३ ॥
लगे उपाइन के अंबार। दे दर्शन प्रभु भे असवार।
डेरा कर्‍यो ताल पर जाइ। संग खालसा दल समुदाइ ॥ २४ ॥
खान पान करि निसा गुजारी। भई प्राप्ति होई असवारी।
तीन चार मंज़ल करि दीहा। मिले आनि नौरंग सुत जीहा ॥ २५ ॥
घेर अमेर लीन तबि शाहू। आनि मनाइ अपनि तिन पाहू।
गए जोधपुरि की पुन डेरे। मिल्यो अजीत सिंघ बलि हेरे ॥ २६ ॥
हतो संग भी दई अकोरि। ह्वै कर जोरि गरब के छोर।
चल्यो शाह ले लशकर भारी। मेडलश मिलि पर्‍यो अगारी ॥ २७ ॥
बहुड चितौड दिशा चढि चाला। परी धांक तिस देश ब्रिसाला।
राणे अरु राजे रजपूत। मिले सकल ही पढि पढि दूत ॥ २८ ॥
सिंध कितेक देखिबे हेतु। गए चितौड बिखै लखि भेत।
प्रिण शुभ हेरे लए उठाइ। उतकु नर आए समुदाइ ॥ २९ ॥
सो नहिं द्रेति सिंघ त्रिण लेति। बध्यो बाद ह्वैगो रण खेत।
चली तुफंगहि दुहि दिशि केरी। हलाहली माची तिस बेरी ॥ ३० ॥
छुटे तीर[1] गेरी समुदाइ। मच्यो रौर सुनि कै तिस थाइं।
मिलि रजपूत घने हुइ आए। गहि आयुध सिंघनि पर छाए ॥ ३१ ॥
इति सतिगुर सुनि कै बड रौरा। पठ्यो खालसा गन तिस ठौरा।
दुहि दिशि मिले आनि मन जोधा। देखि जुधिध बधि[2] उपज्यो क्रोधा ॥ ३२ ॥
तड़ाभड़ी तुपकन की माची। लगहि अंग ओजति रज राची।
फूटे मूडं रिदे गिर परे। मरि मरि सुरग पयानौ करे ॥ ३३ ॥
सिंघ हेल छालहिं ले घास। से नहिं देति खरे दिढ पास।
जाम एक है लौ जंग मचायो। पुंज तुफंगनि शब्द उठायो ॥ ३४ ॥
तबि सिंघन रोपयो पग आगे। बूंद पलीते इकठे दागे।
लगी कितिक शत्रुनि को गोरी। दड़ दड़ गिरे देहि गन फोरी ॥ ३५ ॥
देखि त्रास करि भाग सिधाए। सिंघ उठाए घास गन ल्याए।
श्री गुर हेरि तिनहुं समझायो। बिना कहे किम जंग मचायो ॥ ३६ ॥

1. गिरा दी 2. अधिक

गए बिलोकन थान चितौर। बिन मरज़ी हमरी किय रौर।
नहिं आगे तुम कीज ऐसे। बिच बिदेश रण ठानति जैसे ॥ ३७ ॥
सुभट हजारहुं होत सकेला। घेरि लेति तुम को कर हेला।
को सहाइ हो तहां बचावति। पहिल ही संघर करि घावति ॥ ३८ ॥
इत्यादिक समुझाइ टिकाए। किस हूं नर ते गुर सुनि पाए।
'आगे बिखम सथान दखाला। मग बिहीन नहिं जाइ न चाला ॥ ३९ ॥
गिर कानन दुखदाइक घने। तहां पपान न बनो कयोहूं।
तबि सतिगुर उत ते हटि परै। जित मग सुन्यो हुतो सुख करे ॥ ४० ॥
तिन ही दिश को कीन पयाना। सने सने पहुंचे तिस थाना।
नदी नरबदा तट बड हेरा। उतर्यो शाहु बहादर हेरा ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे 'उत्तर ऐने मारग' प्रसंग बरननं नाम प्रथमो अंशु ॥१॥

अंशु २

बुरहानपुर प्रसंग

दोहरा

साहिब पहुँचे नदी तट सिवर कर्यो शुभ थान ।
सिंघ रड़े पाछे कितिक धवे तुफंग कमान ॥ १ ॥

चौपई

घास लेनि के हित बिरमाए । रोक्यो जाइ भार बंधवाए ।
उत ते कुछ दल सुभट घनेरे । हुते शाह के पिख्यो बडेरे ॥ २ ॥
कहे सु हम "इम लीने त्रिण घने । तुम कैसे मालक अब बने" ।
कितिक तुरक तिन महिं अस हुते । जिन सनबंधी[1] सिंघती हते ॥ ३ ॥
आनंदपुर बड जंग मझारा । मारे तहाँ शोक सुनि घारा ।
सिमरन कर्यो बेर पशचाती । दोति भए आयुधन के घाती ॥ ४ ॥
इत सिंघन भी तुपक चलाई । नाहक ही बज परी लराई ।
श्री गुर डेरा करि शुभ थाएँ[2] । हेतु[3] सुचेते उत ही आए ॥ ५ ॥
लरहिं सिंघ सुनि कै प्रभु कान । मान सिंह भेज्यो तिस थान ।
दोनहुं दिशि समुझाई हटाव । क्यों नाइक लरि प्रान गुवावो[4] ॥ ६ ॥
अलप बात पर इतिक बखेरा[5] । नहिं कीजै दीरघ भट मेरा[6] ।
मान सिंह हय गयो धवाइ । कहिं दुनहुँ दिशि दए हटाए ॥ ७ ॥
गुरु शाहू को मेल बिसाला । किस अलँब तुम सँघर घाला ।
मरे परे दुहि दिशि के योधा । घास हेतु क्यों कीनसि क्रोधा ॥ ८ ॥
इस समुझाइ शांति वरताई । कर्यो बीच कर बीच तिथाई ।
इक तुरकनि को भट मतिमँद । तिन कर त्यार तुफंग बिलंद ॥ ९ ॥
मान सिंघ को ताकि चलाई । ओचक लगी गिर्यो धित जाई ।
देखति सिंघन क्रोध बधायो । मरी तुफंगन जंग मचायो ॥ १० ॥

---

1. सम्बन्धी, नातेदार 2. स्थान पर 3. भलाई 4. गँवाते हो 5. झगड़ा, लड़ाई 6. लड़ाई

हेला घालि शत्त गन मारे। गिरे हयनि ते मनहुं मुनारे।
ओचक हेति अजरज बड्ड कियो। कहो कहां दीरघ रण भयो।। ११ ।।
केतिक तुर्क मराइ पलाए। सिंघ घास लेकरि सभि आए।
मान सिंघ को मरनो सुनयो। बहु अफसोस गुरु मन गिनयो।। १२ ।।
'कहां करि मति मंदन बात। फिरत हटावति, कीर्नसि घात।
महां सूरमा अरु बुधिवान। कहां होइ सो त्रायति पान।। १३ ।।
कौन कौन गुन सिमरै तांही। सभि कारज महिं शुभ मति जांही।
पुर अनंद चमकौर मझारा। लरि करि निकस्यो संग जुझारा।। १४ ।।
ऐसी वीर कहाँ अब पाऊं। बिरले होत नाही सभि थाऊं।
सरन प्रसंग शाहु जबि सुन्यो। रह्यो बिसूरत माथो धुन्यो।। १५ ।।
हुक्म कर्यो सभि को गहि लीजै। खता[1] बंद गुर को अबि दीजै।
जिम जाहैं तिम पलटा लैहैं। प्रथम बैर मूरख सिमरै हैं।' १६ ।।
चढी सैन सभि को गहि ल्याई। खरे करे हजरत अगुवाई।
तिन सभि हनि को लै के साथ। आयो जहिं बैठे जगनाथ।। १७ ।।
नमो करत थिर होयहु पास। सकल बारता करी प्रकाश।
'गुनहिगार[2] गन इही तुमारे। हुक्म करो जिस तिम दयो मारे।। १८ ।।
कै सलिता महिं संभिनि डुबाइ। कै मुहि तोपन के डिवाइ।
इन मूडनि प्रताप नहिं जाना। दई मोहि तुम सलतन दाना।। १९ ।।
गन गज बाजी आदि समाज। मो को दियो गरीब निवाज।'
सुनि प्रभु कह्यो 'कहिर[3] इन धर्यो। हेतु हटावन पठिबे कर्यो।। २० ।।
दुहि दिशि ते समुझाइ मिटाए। भयो शंक बिन इत उत जाए।
सुधि बिन इक मूरख तकि गोरी। हती नीर हुइ छाती फोरी।। २१ ।।
ऐसो करम कुमति धरि कर्यो। बीर अमोलक प्रानन हरयो।
गन शत्रुनि सन एक लरंता। सुमति वंत बहुधीरजवंता।। २२ ।।
प्रथम बेर सिमर्‍यो मतिमंदे। नहिं जानयों इन अपनि निरुतंदे।
कहि इत्यादि क्रिपा प्रभु कीनी। 'त्याग देहु' इन आश्स दीनी।। २३ ।।
'करहिं संघार हाथ बहिं आवै। अपनो कियो आप ही पावै।
पकरे हुते पाइ बड त्रासा। जानै—निशचै होइ बिनाशा।। २४ ।।
गुरवाणी सुनि सुधा समाना। लखी कि—दीन प्रान को दाना'।
'धंन गुरू तुमरी बडिआई। अस अपराधी दए छडाई'।। २५ ।।

---

1. दोषी 2. पापी 3. जुल्म

शाहु बहादुर बिनति करि करि। अधिक दीनता निज मंहि धरि धरि।
सतिगुर को रिझाइ[1] बहु लीनो। करि बंदन पग उठिबो कीनो ।। २६ ।।
निज डेरे मंहि पहुंच्यो जाई। सुपति जथा सुख निसा बिताई।
भई प्रभात कूच करि डेरे। चल्यो बहादुर शाहु अगेरे[2] ।। २७ ।।
मिले राव राणे समुदाई। अयो तेज दिनवति अधिकाई।
देखति लशकर सिंघ समाना। ह्वै न मवासी त्रास महाना ।। २८ ।।
सलिता तपती तरनि कुमारी। मग उलंघि पहुँच्यो दल भारी।
उतर्यो शाहु तीर तिस केरे। विमल नीर सुन्दर को हेरे ।। २९ ।।
चक्रवाक कारिंडव घने। तट शलदायूमान खग भने।
कूरम, मीन वृंद जल जंता। सुन्दर देश जहां सुखवंता ।। ३० ।।
चलि आए सतिगुर भगवान। हेरति उतरे पुरि बुरहान।
तहिं की सँगति सदन सुधारा। गुर के हेतु मनोरथ धारा ।। ३१ ।।
करहिं बसावन इस के मांहि। सभि संगत पुनि दर्शन जाहिं।
संमत आगे सदन बनाए। धरी कामना 'बसि हैं आए' ।। ३२ ।।
संगति की पूरन अभिलाखा। पहुंचे गुरू संकल मग नाखा।
संगत के मुखि सिख चलि आए। ले गमने ह्वै करि अगवाए ।। ३३ ।।
हाथ जोर उतराइ बडेरा। संगत आन दरस को डेरा।
अनिक अकोरन अरपि अगारी। दरब बिभूखन पट मुल भारी ।। ३४ ।।
बहु पकवान तिह वल आए। करि अरदास अखिल बरताए।
हेत देग के चावर चून। घ्रित मिशटान आनि समिहूंनि ।। ३५ ।।
कीनी बिबिध बिधिनि की सेवा। करे प्रसंन भले गुरदेवा।
खुशी करी समि पर हरखाए। परी कामना सिख समुदाए ।। ३६ ।।
तपती नदी तीर पर डोरा। ऊच दमदमा सुंदर हेरा।
तहां बास प्रभु निसा बिताई। सौच शनान प्राति हुइ आई ।। ३७ ।।
बसत्र शसत्र सजि कै बिधि नाना। जेवर जबर जेल जिन जाना।
सभा खालसे की दिशि चारी। मिले हजारहुं नर अर नारी ।। ३८ ।।
दर्शन करति हेति बलिहारी। सुनहिं बाक गुर को सुखकारी।
इस प्रकार केतिक दिन डेरा। बसे देश बहु सुन्दर हेरा ।। ३९ ।।

1. प्रसन्न 2. आगे

बादी कूप तरोवर भारे। सूरज दुहिता तीर उदारे।
चढि करि बिचरहिं इक सम अवनी। हरित दूरबा ते दुत रवनी ॥ ४० ॥
शाह बहादुर चढि प्रसथाना। देशन सभनि मनावति आना।
केतिक द्योस प्रभू तहिं रहे। कवि सतोख सिंघ जस को कहे ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने **'बुरहानपुर प्रसंग'** बरननं नाम दुतीओ अंशु ॥ २ ॥

अंशु ३

साधु प्रसंग

दोहरा

शाहु बहादुर चढि गयो दछ्न देश मझार ।
जहां जंग नौरंग करि ले धन देश उदार ।। १ ।।

चौपई

दिखि सिखन को भाऊ महाना । हित राखन बहु बारि बखाना ।
तिनि की सुन कै श्री प्रभु बिनती । पुरि बुरहान बसे तजि गिनती ।। २ ।।
दिन प्रति सेवा करैं घनेरी । दर्शन पिखहिं जाहिं जुग बेरी ।
बडी आरबल[1] साधु एक । बसहि नगर महिं सहित बिबेक ।। ३ ।।
गुर आगवन सुनयों तिन कान । अंम्रित दयो मनहुँ किन आनि ।
तुरत उठ्यो दरशन को गयो । नदी तीर गुर थिर जाहिं भयो ।। ४ ।।
सभा मझार सुहावति ऐसे । करि शिंगार धनाधिय[2] जैसे ।
हेरि दूर ते प्रेम प्रफूला । मनहुं अमल ने अमली झूला ।। ५ ।।
रिदै उमंगति जोवा । रोमंचति साध्‌ु तन होवा ।
नीठ नीठ पाइनि कहु डालति । डगमगाति, डोलति, द्रिग चालति ।। ६ ।।
बंदन हेरि दूर ही रह्यो । पर्‌यो त्रिथी पर जनु पग गह्यो ।
प्रेम अधिकता तिस गुर हेरी । तूरन उठति भए तिस बेरी ।। ७ ।।
गहि भुज बल ते तुरत उठायो । अधिक सखा लखि गरे लगायो ।
ल्याइ सभा महिं ठिग बैठारा । करि आदर को म्रिदुल उचारा ।। ८ ।।
कुशल शरीर आपके अहे ? प्रेमा भगति रिहा दिढ लहे ।
काम क्रोध ते आदि बिकारा । बिनस गए कै बहि दुख कारा ? ९ ।।
केतिक चिर महिं धीरज धारी । नीकी श्री मुख प्रभा निहारी ।
हाथ जोर बोल्यो 'सुनि स्वामी । सभि जानति तुम अंतरजामी ।। १० ।।

---

1. आयु 2. कुबेर

क्रिपा आप की जिस पर होवे । जढ बिकार की हउमै खोवे ।
तनहंता गाढ़ी हुइ जावदि[1] । काम क्रोध नहिं बिनसहिं[2] तावदि[3] ।। ११ ।।
इस दुबिदा घर बहुते गाले[4] । भगत आप के रह सुखाले[5] ।
लागहि मिएट ईष को माना । लिव लागे सतिनाम महाना ।। १२ ।।
तनहन्ता को घोरनि करे । बहुर परमेशर करुना धरै ।
उचति श्रय के तबि हुइ जीव । प्रभु को प्रेम सुधा नित पीव ।। १३ ।।
सकल बिकारन को दुइ नाश । सास सास जप प्रभु लखि पास ।
पटना शहिर[6] जन्म जबि भयो । ब्रह्म पुत्तर नदि ढिग सुनि लयो ।। १४ ।।
तबि श्री तेग बहादर पास । दर्शन करते हुते सुख रास ।
लखि भूपति को भाव बिसाला । देने बिजै हुते तिस वाला ।। १५ ।।
जनम आप का सुनि हरखाए । शुतरी दुंदभि बहुत बजवाए ।
तुपक तोप लशकर महिं सारी । भई शलख छूटी एक बारी ।। १६ ।।
तुरही रण सिंघे डक ढोला । बाजे पटह भयो वड रौला ।
श्री गुर तेग बहादर भारी । उतसव कर्यो महां तिस बारी ।। १७ ।।
आए मंगत जन समुदाए । गयो न छूछो सभि घन पाइ ।
न्रिप जुति सभ लशकर उतसाहा । दयो दान जस जस जिस पाहा ।। १८ ।।
तबि मैं बूझे पिता तुहारे । —कस साहिबजादे गुन भारे ?
जिस जनमति बहु मंगल होवा । यांते मै बांधति मुख जोवा—।। १९ ।।
सुनि कै गुरन ब्रितंत उचारा । ईशुर आइस ते अवतारा ।
रोम रोम प्रति बिशनु महेशा । करता पुरख क्रिपाल बिशेशा ।। २० ।।
जोग साधना बहु बिधि साधे । धरि इम ध्यान सु प्रभु अराधे ।
ह्वै प्रसन्न इन पुरुष पठायो । चिरंकाल ते इक सुत पायो ।। २१ ।।
पाछल हमहुं आरबल आइ । संमत चालिस ते अधिकाई ।
बली पुरख लीनसि अवतार । कारज बड़े लेहि इह खार ।। २२ ।।
हिंदयने को राखहि लाज । नाशहि तुरकनि राज समाज ।
पंथ तीसरो करहि उपावनि । संत उबार दुशट गन घावन ।। २३ ।।
मदर देश महिं जंग अखाड़े । लाखहुं मारहि पर्वहिं पवाड़े ।
तुरक पति को करि संघार । दक्खण आइ अंत की बार ।। २४ ।।
सुनहु साध तुहि बैस बडेरी । टिकहु कितहि तबि लीजहि हेरी ।
इह सभ सुनि कै तुम पित पास । इस पुरि बस्यो दरस करि आस ।। २५ ।।

1. जब तक 2. नाश नहीं होते 3. तब तक 4. तबाह किये 5. सुखी
6. बिहार प्रदेश का प्रसिद्ध शहर

सिमरति रह्यो प्रतीखन धारि । अबि तुम आए करुना धारि ।
सभि कारज कर लीन सुखारे । आए इतहुँ अंत की वारे ।। २६ ।।
मम सम की पुखन कर आसा । अनिक भांति दिखि जगत तमाशा ।
दर्शन करि निहाल मैं होयों । तप जप अपनि क्रितारथ जोयो ।। २७ ।।
पुरहु कामना एक हमारी । करौं अहार सु हेतु तुमारी ।
अचीअहि प्रात सिंध ले साथ ।' देखि भावना मन की नाथ ।। २८ ।।
सुनति साध के बच हरखाए । 'तुम साधन परलोक कमाए ।
मानुख जन्म क्रितारथ कीनो । फेर न फेरा हुइ जग चीने ।। २९ ।।
तजि विकार उज्जल मन कियो । पुन सत्तिनाम रंग दिढ दियो ।
उतरहि नहि जु रंग बहु गाढे । ह्वै न पुरातन, दिन दिन बाटे ।। ३० ।।
प्रभु बसि कर्यो प्रेम ते जिन्है । तिन को कह्यो न क्यों हम मनै ।
यांते नित आइसु अनुसारी । क्यों न आइं तुम सदन मझारी'' ।। ३१ ।।
इत्तियादिक बच कहि सुनि करिकै । गयो सँत उर आबँद धरिकै ।
घर महि जाइ त्यार करि तूरन । नाना सौजन भोजन पूरन ।। ३२ ।।
सूप कार बहु चतुर लगाए । खट रस स्वाद अनेक बनाए ।
दधी दुग्ध मिशटान घनेरे । तुरशाई जुति असन बडेरे ।। १३ ।।
डालि मसाले जाल बिसाले । स्वाद सुगंधित बहु रस वाले ।
जाम दिवस जबि सूरज आयो । हेतु हकारति साध सिधायो ।। ३४ ।।
करि बंदन को तुरंग चढाइ । संग खालसा चलि समुदाइ ।
अपर चले सिख संगति सारे । धारि कागना साध हकारे ।। ३५ ।।
अधिक भीर गुर के संग होई । पुरि जन सिंघ चले सभि कोई ।
सति संगत भा मेल बिसाला । पहुंचे जाइ साध की शाला ।। ३६ ।।
अनिक पंकतां करि बैठाई । चौंकी बीच बिसाल उसाई ।
छादी बिसद बसत्र के साथ । सादर तहि बैठारे नाथ ।। ३७ ।।
थाल ब्रिसाल परोसि उताला । आदि तिहावल जिन रस जाला ।
धर्यो प्रभु के आनि अगारी । सीत सुगंधित देकरि बारी ।। ३८ ।।
सभि पंकति को पुरसनिहारे । तूरन दए परोस अहारे ।
अचवनि लगे कौर मुख पाए । श्री गुर स्वादल अबि तृपताए ।। ३९ ।।
कर्यो सराह्न बिबिध अहारा । सभि तृपते ले स्वाद उदारा ।
पुरि जन मनहि 'प्रथम कई बार । भए अहार न स्वाद उदार ।। ४० ।।

धंन साधु जिन किय अस मेल । कर्यो असनि बहु स्वादनि मेलि' ।
चुरा करे प्रभु के ढिग आयो । दीन होइ पाइनि लपटायो ।। ४१ ।।
खुशी करी उपज्यो ब्रह्म गयान । एक आतमा पिखियो जहान ।
उठे प्रभु डेरे महिं आइ । थिर प्रयंक पर हुइ सुख पाइ ।। ४२ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर पाने 'साधु प्रसंग' बरननं नाम तृतीआ अंशु ।। ३ ।।

अंशु ४

चिन्ह दिखावन प्रसंग

दोहरा

बीती रात प्रभाति भी तबि कासद[1] दुइ आइ।
लिखा बहादर शाह ने गुर कै निकट पठाइ ॥ १ ॥

बैंत

लिख्यो शौक-नामा[2] 'दिजै दरस आई।
महांपीर मेरे ! इहो बात भाई।
तुमारी मिहर ते महांतेज होवा।
जहांनै[3] कि मयाने[4] मनिंदे न दोवा ॥ २ ॥

करो रंक रावं न लागै अवारा। इलाही[5] फ़ज़ल[6] सो तुमहिं फ़ज़ल धारा।
बडी बेर बीती पिछारी रहे हो। कहूँ संगती सिख प्रेमं लहे हो ॥ ३॥
कि तालब[7] दिखों मै दिदार तुमारा। नहीं देर कीजै लखो प्रेम प्यारा।
सुना श्री गुरू फेर त्यारी कराई। परे ज़ीन घोशन पै बेगवाई[8] ॥ ४ ॥

चौपई

सिख संगतिने रखसद[9] ह्वै कै। अपने जानि खुशी बहु है कै।
हय अरोह करि मारग पयाने। संग खालसा चले सुजाने ॥ ५ ॥
पंथ उलंघति पहुंचे जाइ। जहां हुते लशकर समुदाइ।
आगे शाहु चढ्यो बड घोरे। जाति कहूं संग मानव थोरे ॥ ६ ॥
ओचक इत सतिगुर असवारी। भई रोबरोकार[10] अगारी।
दर्शन परसे सीस निवायो। बिनै बखानति प्रेम बढायो ॥ ७ ॥
गुर सूरज को दरशन हेरे। बिगसे दृग अरबिंद बडेरे।
भली बात हुई प्रभु आए। लखि मुरीद[11] सम दरस दिखाए—॥ ८ ॥

---

1. बुलाने वाले 2. प्रेम पत्र 3. संसार भर में 4. मानिन्द, आप जैसा 5. परमातमा की 6. कृपा 7. मांगता हूं, चाहवान हूं 8. शीघ्र 9. आज्ञा लेकर जाकर 10. सामने 11. शिष्य

"श्री गुर ! बहुते दिवस बिताए । इत मैं तुमरी दिशि मन लाए ।
भले सथल पिखि कीजै डेरा । कर्यो निहाल आपनो चेरा" ॥ ९ ॥
सुनि सतिगुर सभि बात बखानी । 'पुरि महि संगति हुती महानी ।
करि करि प्रेम दिवस प्रति राखे । हम बहु बारि चलन को भाखे ॥ १० ॥
हुतो साध प्रेमी तन मन ते । कर्यो भाउ तिन रखे चढन ते' ।
इम कहि खुशी शाहु को दीनि । हेरि स्थल शुभ डेरा कीनि ॥ ११ ॥
खान पान करि बिबिध बनाई । सुपति जथा सुखराति बिताई ।
भई प्रभात कूच करि चले । दखण देश बिलोकत भले ॥ १२ ॥
नर नारी गन श्याम वरन के । इक सारी ले उपर तन के ।
बसन बिभूख बोलनि बस । रीति और के दिखति सु देश ॥ १३ ॥
पूना नगर नागपुरि केरे । मिले आनि दे भेट अगेरे ।
इत्यादिक जेते तहिं राजे । लशकर हेरे उर उपराजे ॥ १४ ॥
मिलहिं शाहु अपनयौ आइ[1] । गज बाजी धन बहु अरपाइ ।
गिरवर कानन उलंघति गए । पुरिनि ग्राम अवितोकंति भए ॥ १५ ॥
किस किस की मनना करि कहीए । रचना चारू चित्त जिन लहीए ।
बापी कूप बाग़ फुलवारी । बाल केल केल रू सुपारी ॥ १६ ॥
बिसमति नगर बिलोक बिसाला । तिस के निकट सिवर को घाला ।
आढ दिवस तहिं कीन मुकामु । संगत गुर को पिखहि तमामू ॥ १७ ॥
अनिक अकोरन को अरपंते । चरन कमल पर सीस घरंते ।
दुरि कि नेर सुनहिं गुर आए । सिख जो हते आनि दरसाए ॥ १८ ॥
शाहु बहादुर लै लै दरब । महिपालक बसि करिकै सरब ।
करति कूच पुन गमनहि डेरा । उतरहि निस को, चलहि सुबेरा ॥ १९ ॥
इस प्रकार केतिक दिन चले । नदी गुदावरि के तट भले ।
तहां जाइ पहुंचे दल भारे । करे सिबर सभिहूंनि किनारे ॥ २० ॥
नगर नदेड़ बसंत्ति बिसाला । जिस महिं रहैं धनी नर जाला ।
आदिपुरी सतियुग ते बसी । दरब अधिक ते दीरघ लसी ॥ २१ ॥
ताने शाहु मारि कर जौरा । पीछे तहां जु सुब छोरा ।
सुन्यो शाहु को आवन जबै । मिलिबे हेत त्यार हुइ तबै ॥ २२ ॥
म्रितक तुरंगे की बड माइआ । खो ले कर तूरन ही आइआ ।
देकरि मिल्यो शाहु के साथ । सुनि सुनि अपर आईं पुरिनाथ ॥ २३ ॥

1. जानकारी देकर

बिदत हैदराबाद[1] उदारा । मुंगी पटण आदि धन भारा ।
देकर मिले बहादुर शाहू । उतरि परे लशकर के आंहू ।। २४ ।।
अपर कहां लगि देश रू नगरी । गिन कर कथा सुनायहि सगरी ।
दूर निकट जहिं कहिं ते आए । दे दे दरब मिले समुदाए ।। २५ ।।
गुर प्रताप करि पित ते घनो । शाहु बहादर जग महिं भनो ।
अर्यो न कोई मिले अगारी । देकरि भेट अनेक प्रकारी ।। २६ ।।
नगर नदेड़ बहिर की थाईं । उतरे सतिगुर सो अपनई ।
अहे पुरातनि भूम हमारी । अपर मालकी सकल बिदारी ।। २७ ।।
हुती मुगल पुरि महिं सो बसै । थल पुशतैनी तिस को लसै ।
सुन गुर डेरे को किय झगरा । इस को जानति है पुर सगरा ।। २८ ।।
अबि जो बल करि ले है छीन । सुत पोते अपनी ले चीन' ।
इत्यादिक झगरा बहु कयो । शाहु बहादुर लगि चलि गयो ।। २९ ।।
श्री प्रभु कहिं 'हमरो इसथान । इसका मालक अहै न आनि' ।
मुगल भनै 'पुशतैनी मेरा । नही टुटूयो, पुरि लखहि बडेरा' ।। ३० ।।
संसै भयो शाह को आइ । श्री गुर कूर[2] न कहैं कदाइ ।
चिरंकाल को अहै हमारी । नगर शाहदी मुगल उचारी ।। ३१ ।।
श्री गुर सों कहि बिनै पठाई । सभि रावर की जेतिक थांई ।
जे[3] इस की अभिलाखा धरो । को इक पता दिखावन करो ।। ३२ ।।
होइ आप की तौ थिर साची । पुन को करहि न बाद उवाची ।
जे बल करि छीनहु इस केरी । मै झिरकौं[4] बरजौं[5] इस बेरी ।। ३३ ।।
जीवति रहै अहे थल जावद । को नहिं झगर सकैगो तावद ।
पुन पाछे उठि परि है बाद । यां ते जानहु वे बुनियाद ।। ३४ ।।
जथा नगर को मुगल उगाहि[6] । करहि बतावन—है इस पाहि ।
तैसे तुम किछ पता बतावहु । जुति बुनियाद धरा कहु पावहु ।। ३५ ।।
बहुर न लागू होवन कौन । देखि उगाही धारै मौन ।'
बात यथारथ जबहि सुनाई । मानी सतिगुर तबहि अलाई ।। ३६ ।।
मुगल नगर के मुखि ले आवै । काज़ी मुफती सकल मिलावै ।
तुम अपने उमराव पठावहु । झगरा घर को अखिल मिटावहु ।। ३७ ।।
जथा जोग जिस की हुइ दीजै । कहै जु कूर हटावन कीजै' ।
बाक जथारथ सुन गुर केरे । इकठे कीने मनुज घनेरे ।। ३८ ।।

---

1. दक्षिण का एक प्रसिद्ध शहर 2. झूठ 3. यदि 4. झिड़क दूंगा 5. मना कर दूंगा 6. राज

नर, पुरिके प्रधान पठाए। शाहु निकट वरती समुदाए।
इकठे होइ हज़ारहूं आए। करि करि शाहु तगीद पठाए ।। ३९ ।।
बैठे आइ अखिल गुर पासा। प्रथम मुगल ने बाद प्रकाशा।
'पुशतैनी[1] इह थान हमारा। जानति गिरदनवा[2] इत सारा ।। ४० ।।
बूझि लेहु सभि को इस ठौरी। जो छीनत कर सीने ज़ोरी।
तौ मेरे कुछ बस न बसाइ। मालक शाहु सकल ही थांइ ।। ४१ ।।
सभि महिं तबि श्री गुरु बखाना। लाखहुँ बरखन को इह थाना।
रहे संभालति अहै हमारा। जबि कितहूँ करि गए किनारा ।। ४२ ।।
लेकरि अपर सु मालिक बनयों। आश्रम बडो पुरातन बनयों।
निशचे नहीं कहे पर आवै। तो हम सभ कौ चिन्ह दिखावै ।। ४३ ।।
जहिं डेरा तहि खोदन लाए। केतिक नीचे थल खुनवाए।
निकसयो तहां भसम को टेरा। जहिं आसन यो पर्यो बडेरा ।। ४४ ।।
पुन प्रभु भनयों 'और खनि तीजै। करि मंडल, माला दिखरीजै।
दुशट दमन जिस तन महिं नामू। करे तीव्र तप तबि अभिरामू ।। ४५ ।।
बरख इजारहुं इस थल बसि कै। संकट सहे सकल तन कसि कै।
पुन कुछ खोदी अपर अगारी। माला प्रभु की तबहि निहारी ।। ४६ ।।
तप प्रभाव ते आसन पर्यो। होइ पुरातन नांहिन गर्यो।
कर मण्डल तूंबे को हेरा। तिम ही पर्यो महां तप केरा ।। ४७ ।।
बिसम रहे दिखि कै समुदाई। धंन धंन गुर सभिनि अलाई।
प्रीत प्रतीत भई सभि केरी। नमो करी पद तिस बेरी ।। ४८ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उतर ऐने 'चिन्ह दिखावन प्रसंग' बरननं नाम चतुरथो अंशु ।। ४ ।।

---

1. बपौती 2. आस पास

अंशु ५

बंदे को प्रसंग

दोहरा

श्री गुर पता दिखाइ करि सभि को दयो सुनाइ ।
'इक जोजन लग भूमका तर्पाहि तयी समुदाइ ॥ १ ॥

चौपई

सिख हमरे कीरन इस थान । इस थल आश्रम हुतो महान ।
जहां खन्यो_गन असम निहारी । हम बैठे आसन थिर कारी ॥ २ ॥
सभि को पता दिखावन ठाना । अबि ते हमरो भयो स्थाना ।
तऊ मोल इस देत मुगल को । ले करि दावा[1] हरहि सथल को ॥ ३ ॥
करी विद्यावन गन दीनार । जहि लगि है अबलो दरबार ।
मुगल हरख करि मुहर सु लीनी । बाक न फुर्यो मौन मुख कीनी ॥ ४ ॥
बेखत तिस कर ते लिखवायो । राज़ीनामा सकल सुनायो ।
सभि की ऊपर परि उगाही[2] । 'इस को बंस न बाद उठाही ॥ ५ ॥
जथा जोग करि सभि चल गए । शाहु समीप बखानति भए ।
सुनि प्रसंग आनन्द बिसमायो । अपनो कागद लिखयो पठायो ॥ ६ ॥
इक जोजन लगि गुरू स्थाना । को न करै दावा लिहु जाना ।
सगरे नगर प्रगट भी गाथा । 'भूमि मोल लीनसि गुर नाथा ॥ ७ ॥
डेरा भली प्रकार जमायो । इक दिन प्रभु अखेर मन भायो ।
कितिक दूर चढि गए अखेरा । आश्रम पिख्यो बिरागी केरा ॥ ८ ॥
गयो साध कित अपर सथाना । हेरि छांग तिस पुशट महाना ।
करि झटका रिंधवाइ सु खाया । बैठे रहे सघन तरु छाया ॥ ९ ॥

१० ॥

1. अधिकार 2. साक्षी

तिस पर बैठे जिस गुसाइँ। केतिक समों बितयो तिस थाईं।
इक चेला अवलोकि पलायो। जहां साध तहिं जाइ सुनायो ॥ ११ ॥
'इहां बहिर बैठे किस भांति। डेरे बिखे भयो उत्पात।
को एक पुरख तेज बड धारी। प्रथम छाग हति कीन अहारी ॥ १२ ॥
तिह बिलोक हम तूशन रहे। कीनसि खान त्रास नहिं लहे।
पुन सथान अंतर गमनयो। हम ले करि तुम नाम हटायो ॥ १३ ॥
बरजयो रह्यो न, पहुँच्यो तहां। बिसद सेज रावर की जहां।
मानी शंक न मन महिं कैसे। तिस प्रयंक के उपर बैसे' ॥ १४ ॥
माधो दास सुनति रिस ठानी। को ऐसो जग पुरख गुमानी।
इक तौ नहीं साधु लखि टर्‌यो। दुतीए मैं अजमति[1] करि भर्‌यो ॥ १५ ॥
तृतीए नही साधु अस कोई। ग्रिहसती अहे शसत्र धर सोई।
पठ्यो बीर इस 'देहु सजाइ। सिहजा ते मारो उलटाइ ॥ १६ ॥
जिस ते प्रान सहत नहिं रहैं। आगे पिख सगरे उर बहैं।
साध अवग्गया करै न कोई। जिस कीनी सहि संकट सोई' ॥ १७ ॥
सुनत बीर तूरन ही धायो। जयों धनु ते किन बान चलायो।
आइ उठावन लागसि पावा। कर्यो ओज नहिं तऊ उठावा ॥ १८ ॥
दुतिय बीर तब साध पठायो। चाहति है परयंक उठायो।
दोनहुं पावैं पर द्वै तीर। गुरू खभाइ धरे जुति धीर ॥ १६ ॥
बीख महिं एतिक बल कहां। खाट उठाइ सु पलटहिं तहां।
जानी न साध न जुग ते हाला। द्वै है कोऊ पुरख बिसाला ॥ २० ॥
त्रिती पठ्यो पुन चारहुं आए। लाइ रहे बल नहिं उलटाए।
चारहुं पावें पर सर चार। करे टिकावन भार उदार ॥ २१ ॥
जबि नहिं उलट्यो बीरन जानी। तरे धसावन लगे महानी।
जबि चारहुं रिस ते बलि कीनि। हली खाट चाली तरु चीन ॥ २२ ॥
पावे लगे धसन जवि हेरे। श्री सतिगुर बोले तिस बेरे।
'कशट ! कुछ हम सोनहिं बैरा। धरनी धसति, रहित उचेरा' ॥ २३ ॥
हाथ पाइ करि खाट टिकाई। भई अकार्‌थ अजमति लाई।
अपने ते बहु बडे बिचारा। माधो दास खोइ अहंकारा ॥ २४ ॥
ह्वै करि दीन तबै चलि आयो। श्री गुर बैठे दर्शन पायो।
बंदन करी रह्यो कर जोरि। अविलोकति श्री मुख की ओर ॥ २५ ॥

---

1. बड़ाई

बूझयो प्रभु 'कौन तूँ अहै। इस थल महिं कास करि रहे।'
'इह मम गुर को आश्रम भारी। चिरंकाल तप कीनि अचारी ॥ २६ ॥
तिस पीछै मैं इस थल बासा। रहौं एक भावहि तप रासा।
सुनि गुर भनयों 'तोहि गुर कहां। मरि करि पहुँच्यो जानहिं तहां ॥ २७ ॥
जिस भरवासे[1] आश्रम रहै। तिस को लखहिं कि नहिं कित अहै?
सुनति दीनि हुइ साध बखाना। 'शक्ति न इती मैं नहिं जाना ॥ २८ ॥
जेकरि तुम महिं शक्ति इतीक। लोक प्रलोक लखहु बिधि नीक।
तौ सम गुर कौ देहु दिखाई। पुन निशचा निहचल टिकि जाई' ॥ २६ ॥
तबि गुर भनयों 'तरोवर खर्यो। तिस के फल कीड़ा हुइ पर्यो।
जे करि पता चहति अब ल्यावहु। करि हम ढिग ले नाम बुलावहु ॥ ३० ॥
सुनि साधु ने सो फल देखा। है परपकय लाल अवरेखा।
गुर के कहे तोर करि ल्यावा। निकट ल्याइ कीड़ा द्रिष्यावा ॥ ३१ ॥
धुनि ऊची ले नाम गुहारा। कीरे किरर किरर उचारा।
जानि लीनि निशचे गुर मेरो। कहां भई गति बिसम बडेरो ॥ ३२ ॥
श्री गुर भनयों चित क्या कीजै। शेश करम इस को लखि लीजे।
इह तन तजि अंबि शुभ गति पावै। बहुर नहीं अपराति अस जावै ॥ ३३ ॥
हुतो हाथ महिं फल म्रित भयो। तिस से निकसि धरा गिर गयो।
कह्यो 'प्रभु! तुम करुना करीयहि। मोर करम पर द्रिष्टि न धरीअहि ॥ ३४ ॥
अपनी सेवा मुहि फुरमावहु। पग पंकज पर मोहि लगावहु।
राख लेहु शरनागति पर्यो। दीन देखि प्रभु बिगसि उचर्यो ॥ ३५ ॥
हम को हुकम अहै करतारा। बिदतावहु जंग पंथ करारा।
तुरक तेज को करौ बिनाशा। जो अबि पसरि रह्यो चहुं पासा ॥ ३६ ॥
तूँ बताउ कहु कैसे करना? मिलहु कि नाहीं शत्रु गन हरना।
बोल्यो साध आप हो मालक। तुमरा बंदा करौं न आलक ॥ ३७ ॥
हुइ रावरि आइसु अनुसारी। करौं जंग भंगौ रिपु भारी।
तुम सहाइता ले खर खंडा। करौ घमंड प्रचंड खंड खंडा ॥ ३८ ॥
हसि बोले हम दीना हुकम। बालू मद्ध निकासा रुकम[2]।
देश पंजाब जाहु मम बदला। बिमुख हुए मेरे मन रदला[3] ॥ ३६ ॥

1. बल 2. सोना 3. रद्द करो

पंथ तेज तेरे ही दीना। सभिनि बिखै तो को मुखि कीना।
अयनि आप ते भाख्यो बंदा[1]। इह बिदतै जग नाम बिलंदा ।। ४० ।
नहिं ठहिरहि रिप तोहि अगारी। हुई संघर घमसान उदारी।
लरैं अरैं लाखहुं ही मरैं। बचैं सु जीव भाज जो परैं ।। ४१ ।।
सुनि गुर वाक भयो मन गाढो। हाथ जोरि सनमुख रहि ठाढो।
करन जंग को भा अनुसारी। क्रिपा द्रिशटी सतिगुर निहारी ।। ४२ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने **'बंदे को प्रसंग'** बरननं नाम पंचमो अंशु ।। ५ ।।

---

1. बंदा सिंह बहादुर जिस का पहला नाम लछमन दास था।

अंशु ६

बंदे को प्रसंग

दोहरा

श्री गुर निकटि बिठाइ करि गर ते खड़ग उतारि ।
देन लगे युत तेज के करन हेत सरदार ॥ १ ॥

चौपई

दया सिंघ अर धरम सिंह पुन । इन ते आदि खालसा ढिग गुन ।
देखति हाथ जोर हुइ खरे । 'श्री गुर अधिक क्रिपा करि ढरे ॥ २ ॥
जे करि खड़ग देहु इन धरे । पंथ आपको क्या तबि करे ।
रहे आदि ते संग तुमारे । सहे कसट बहु मरे हजारे ॥ ३ ॥
सरब अकारथ सिंघन केरा । दियो जवाब आप इस बेरा ।
सेवा करनी बिनै उचारैं । इस ते बिना क्या बसी हमारे ॥ ४ ॥
जे करि घाल अकारथ खोवहु । सही आपने सिक्ख कर जोरहु ।
सभि को दिहु जवान इस काला । क्या कर सकै खालसा जाला ॥ ५ ॥
इम कहि सभि के द्रिग भर आए । रुदति अधिक उर चिंत उपाए ।
'दियो चहति, दीजै इस तीर । खड़ग खालसे के रहि नीर' ॥ ६ ॥
सुनि दिखि कै क्रिपा उपाई । क्यों तुम सँसै रिदै उठाई ।
जानहु रिदै कमाइक[1] मेरा । भोगे पुत्तर खालसा मेरा ॥ ७ ॥
रिपु कँटक इह बीन मिटावै । बिचरति सिंध अनिक सुख पावैं ।
राज बेश को अहै तुमारो । सो नहिं टरहि किसू ते नहिं टारो ॥ ८ ॥
इहु चिंता तुम देहु मिटाई । राज तेज तुम ते जाई ।
हरख धरहु चित चाहति जैसे । बँदे को बखशहिं सर तैसे ॥ ९ ।
इम कहि गरे खडग को धारे । सिंघानि को साकार बिठारा ।
बीच निखँग ते पाचहुँ तीर । देति भए बन्दे को तीर ॥ १० ॥

---

1. कमाने वाला

श्री मुख कह्यो जती रहिं जावति। रहे तेज तेरो बधि तावति।
ब्रह्म चरज ते मुख नहिं मुरै। ब्रह्म चरज ते रिपु नहिं अरै ॥ ११ ॥
ब्रह्म चरज ते तेज सवाया। ब्रह्म चरज क्र सभि किछ पाया।
बँदी भयो जि बँदी ब्याहे। तबि इन सरनि तेज धर जाहे ॥ १२ ॥
जमना पार जाँइ सभ ठौरा। हनहुँ दषट घालहु बड रौरा।
[illegible] । थिरहु हेरि को ऊची थाँई ॥ १३ ॥
[illegible] १४ ॥
प्रथम दौरि जिस ठौर सढौरा। करहु कतल घालहु बड रौरा।
पुन तुरकन के पुरि सभ मारो। लूठि कूटि करि दुषट सँघारो ॥ १५ ॥
जबि दल वधहि सिरहन्द सिधारहु। तहाँ बज़ीद खान सिरंदारहु।
साहिबज़ादे जिन मरवाए। लरति आप लिहु तिस को घाए ॥ १६ ॥
निज कर ते सिर छेदनि करो। पुरि सिरहन्द विधूँह प्रहरो।
साधू मूला है जिस नाम। बसै, न लूटहु नगर सुनाम ॥ १७ ॥
अपर देश महिं घालहु रौरा। लूटि कूटि लीजै सभि ठौरा।
पुनहि पहारनि बिखै प्रवेशहु। राजे राणे राव विशेशहु ॥ १८ ॥
गन मीएँ बिध्वंसन करि कै। सभि धारन के बिखै निचरिकै।
खोजि खोजि द्रोहि गुर घर के। अंतक धाम पठावनि करि कै ॥ १९ ॥
लिहु बदला जिम जानहि देश। जहिं जहिं धूंम मचाए विशेश।
बुधू शाह अधिक दरवेश। हम सों मेल कर्यो शुभ वेश ॥ २० ॥
बसित हुतो बीच शहिर सढौरै। मिल्यो पाँपटा महि रण ठौरे।
नर गन लेकरि लर्यो घनेरे। बिजै लई रिपु हते बडेरे ॥ २१ ॥
तिस के साथ बाद करि मारे। तुरकेशुर के निकट उचारे।
सहत मुरीद कतल करिवायो। इक लरका बचि अनत सिधायो ॥ २२ ॥
इस कारन ते बहि सढौरे। नर बहु खोटे दुरमति बौरे।
प्रथम बिनाश करहु तिन केरा। पुन लेकरि दल चलहु अगेरा ॥ २३ ॥
सीख्यो सकल सुनी जबि बंदे। बूझनि लग्यो जुगम कर बंदे।
जाइ तहां एकल क्या करिहूं। लाखहुं संग जंग किय भिरि हूं ? ॥ २४ ॥
जिम पलटा लै हों रिपु घाइ। जथा लाज मम जगु रहि जाइ।
करि उचित प्रभु इस विधि काज। प्रगटै नाम गरीब निवाज ॥ २५ ॥
सतिगुर मन्यो 'सैन भंडारा। होनि अकाली लाख हज़ारां।
सो देकर कीने अनुसारी। होहि संग तुम लशकर मारि ॥ २६ ॥

1. पंजाब का एक प्रसिद्ध नगर

जे प्रतीत नहिं मूंदहु नैनं। लिहु बिलोकि चित महिं धरि चैनं।
सुनति बिलोचन मूंदे जबै। दिखै गगन महिं लाखहुं तबै॥ २७॥
पंथ अनेक आहिं, नहि पारा। मई मरि दल सिंघनि मारा।
तुपक धनुख सर धारन हारे। रिपु हतिबे रण बिखै करारे॥ २८॥
प्रभु की प्रभुता पिखि विशाला। पर्यो चरन पर धरि करि माला।
अपनो मति चलाइहौं जबै। पंथ आयइ को बिगरै तबै॥ २९॥
कौन जुगति महिं रहौं बतावहु। मिलन खालसा जिम फुरमावहु।
श्री गुर उचर्यो 'पंथ हमारा। किस प्रकार नहिं बिगरत हारा॥ ३०॥
जे तुध[1] साथ खालस खालस। बखशी खुशी हमहुं इह लालस।
आया जबहि तोहि नहिं हुवा। जग महिं तोहि समान न हुवा[2]॥ ३१॥
जे लंगोटबंद[3] न रहै। सिंघनि संग दैषता लहैं।
जिस कंचन बहु परै कुठाली। गबहि अगनि ते ताउ उताली॥ ३२॥
तथा दशा तेरी ह्वै जै है। प्रभुत्ता पाइ जबहिं गरबै हैं।
दुइ साहिबज़ादे बलवंते। इक तेहण भल्ला बुधवंते॥ ३३॥
तेशे संग करे रखवारे। जहिं तहिं रच्छया[4] करहिं उदारे।
उपजहिं उर विकार बरजै हैं। रण महिं शत्रुनि ते रख लै है॥ ३४॥
सावधान होवहु धरि धीरा। लिहु पलटा सांभहु[5] पंच तीरा।
बाबा इह बिनोद सिंघ मारी। तिन सुत काहन सिंघ बलि धारी॥ ३५॥
बाज सिंघ तीसर हुइ संग। हम करते अंम्रित ले अंग।
रिदे शुद्धो घालहिं घमसाना। तुम सहायता करहिं महाना॥ ३६॥
सुनि बंदा मन भयो आनंद। बंदहि पग पंकज करि बंदि।
'तुम सहाइ ते करहुं बिनाशा। तुरक तेज हानहुं चहुं पासा॥ ३७॥
करि बखशिश को गुर चढि आए। अविचल नगर सिवर जिस थाएं।
साहिबज़ादे कीनसि त्यार। गमनो रन को जमना पार॥ ३८॥
पंच सिंघ होए तबि त्यार। बसत्र शसत्र सभि करि सभार।
हय अरोह करि पंथ पयाने। बंदि चरन गुर को धरि ध्याने॥ ३९॥
पलटा लेनि तुरक गन मारन। श्री सतिगुर को काज सुधारन।
आदि वज़ीद खान अरि मारे। लूटन पुरि सिरहंद तिस मारे॥ ४०॥
नाना देश नगर अर ग्रामू। उलंघति पहुंचे पंथ तमामू।
थोरे ही दिवसन महिं आए। जमना पार परे हरखाए॥ ४१॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने **'बंदे को प्रसंग'** बरननं नाम खसटमो अंशु॥ ६॥

---

1. तुम्हारे 2. दूसरा 3. यति 4. रक्षा 5. संभालो

अंश ७

बंदे को चलंत प्रसंग

दोहरा

बंदा बखशी खालसा चला तेज दिखराइ।
अजमत बल ते पहुँचिगा सिंघन ते अगवाइ ॥ १ ॥

चौपई

जहिं तीरथ है मुचन कपाल। तहिं ते पंच कोस थल भालि।
टेहा ग्राम थेइ बड ऊचो। बंदा तिस थल जाइ पहूचो ॥ २ ॥
सिंघन हित प्रतीखबै बैसा। पिखहुं हुकम गुर ल्यावहि कैसा।
इत विनोद सिह बाबा आए। पंच सिंघ महिं ल्याए ॥ ३ ॥
जमना निकट ऊच थल हेरे। खोजहिं बंदे का फिरि फेरे।
टेहे ग्राम थेह पर आए। बैठ्यो तहां देखि हरखाए ॥ ४ ॥
फते गुर जी की कहि बैसे। हुकम गुरू को पठि करि तैसे।
कितिक समें लौ जबि थिर रहे। सिंघन तबहि वाक इम कहै ॥ ५ ॥
'हम मारग महिं चलि कर आए। तुम थिर प्रथम रहे इस थाएं।
हम अभिलाखहिं देहु अहारा। जिस छुधा करहिं निखारा' ॥ ६ ॥
सुनि बंदे सभि संग बखानी। 'मैं कुछ जमा न प्रथमैं टानी।
अहौ इकाकी सौज न कोई। बासन बसन असन नहिं जोई ॥ ७ ॥
जिस हित सतिगुर इतै पठाए। सो उद्यम कीजहि लिहु खाए'।
इम आपस महिं करत बखाना। तिस छिन असन इसत्रीअन आना ॥ ८ ॥
राहफ[1] कार करति[2] क्रिखि केरी। तिन हित लीए जात तिस हेरी।
बँदा कहे 'सुनहु सिख भाई। इह गुर पठ्यो छीनि लिहु खाई ॥ ९ ॥
प्रथम शगुन भोजन कहु आछे। अपर वस्तु लुठहिं सभि पाछे'।
सुनि कै छुधति ऊठै ततकाला। सरब रोटिका छीनि उताला ॥ १० ॥

---

1. खेती हरी 2. कृषि

जल पर बैठि अचन सो करी। छुधा अधिक थी सभि परहरी।
इसत्री अधिक पाइ कर रौरा। गई पुकारति पति जिस ठौरा।। ११ ।।
'मार्ग महिं बैठे बरमार। हम ते कीनसि छीन अहार।
ऊचे बहु पुकार करि हारी। नहि मानहिं कुछ निर्भै सु भारी' ।। १२ ।।
राहिक दसक ग्राम महिं सारे। हुते अलप ही वसने हारे।
लिए लशटका रिदै रसाए। मारन कारन तूरन धाए।। १३ ।।
दौरति आवति आवति दूरहिं जोए। सावधान आगे सिख होए।
मिलि करि तिनहुं प्रहार चलाए। मारि मारि करि चहुंदिशि आए।। १४ ।।
लशट प्रहार सहार संभारे। खैंचि खड़ग तत छिन करि डारे।
भाजन दए न किसू सथान। पहुंचि पहुंचि ढिग कीनसि हान।। १५ ।।
बहुर ग्राम के बीच सिधारे। छीनि लीनि सभि बसतु संभारे।
जबहि दौरि करि लूट मचाई। आनि मिले केतिक बर धाई।। १६ ।।
हित लूटिबै मिलि समुदाया। सो दिन तिस ही ग्राम बिताया।
निस महिं मता कीनि मिलि सारे। अबि नहिं बैठन बनहि सुखारे।। १७ ।।
उठहु प्राति को लूट मचावहु। निकटि ग्राम लघु लघु दरसावहु।
जो अर परहि कटा करि दीजै। वसतु दरब आदिक सब लीजै।। १८ ।।
चहै जिलूटन सो वीर जहिं धहिं। मानव जाइ बुलावहिं ताहिं ताहिं।
कितिक सथल वर तवहि पठाए। जामनि बीच हकारि मिलाए।। १९ ।।
सभि को बंदे धीरज दीन। 'हतहु कि लूटहु त्रास बिहीन।
मिलै शत्रु गन मैं रखवारो। खरे इकांकी पुंज संघारो।। २० ।।
मसलति इस लरि रहे सुचेत। जाग्रित भए करनि रन केत।
चार घरी के अंम्रित वेले। सौच शनाने आयुध ले ले।। २१ ।।
अलप ग्राम नर सुपति निशंक। औचक परे जाइ इक अंक।
त्रासति ले निज प्रान पलाए। सो बच रहे, अरे सभि छाए।। २२ ।।
वसतु धनादि लूट करि भले। भए सनंध लरन की खले।
निकट निकट के ग्राम दुतीन। लए लूट धनु वसतू पीन।। २३ ।।
अस रौरे कहु हेरि लुटेरे। सुनि सुनि आनि मिले चहुं फेरे।
संध्या तीक तीन सौ भए। खान पान आछे करि लए।। २४ ।।
करैं हरख धरि मार बकारा। 'छीनहुं देशन तुरक संघारा।
आयुध लूटि लूटि धन मारे। अलप बड़े हय कितिक संभारे।। २५ ।।
तीन दिवस इम धूम उतारी। पर्यो देश महिं रौरा भारी।
पुरि ग्रामनि महिं नर सवधाने। गहि गहि शस्त्र खरे डरमाने।। २६ ।।

मुसताबाद नगर ढिग भारा। तहां सथिर भट दौन हज़ारा।
मरे लुटे जिन के नहिं गए। ऊच प्रकार प्रकारति गए ॥ २७ ॥
तुम मालक बैठे सुख संग। ग्राम लुटे उजरे उर जंग।
सुनि बूझ्या 'अस आपहु कौन। जिन बिन त्रास उजारे भौन' ॥ २८ ॥
कहै सु कुछ नहिं जान्यों जाई। दिन प्रति होत जात समुदाई।
तहां तुरकपति होइसि त्यार। ज़ीन तुरंगनि तूरन डारि ॥ २९ ॥
द्वै हज़ार चढि करि असवार। दोई तीप ले संग जुझार।
लुटि कूट जहिं कीनसि डेरा। सुन तित गमनयों क्रोध बडेरा ॥ ३० ॥
सने सने गमनयो कुछ डरि कै। पहुँच्यो आनि तहां चलि करि कै।
देखि दूर ते तोप चलाई। गन दुंदभि दल बिखे बजाई ॥ ३१ ॥
डरे बिलोकति पुंज लुटेरे। लरहि कौन इन केर अगेरे।
चमूं अधिक जिग आटे लौन[1]। धरि प्राक्रम लरि गनि है कौन ॥ ३२ ॥
हेतु पलावन के हुई प्यारे। पिखि बँदे सभि-सँग उचारे।
'त्रासहू मति हुजहु सवधाना। सभि के मैं बचाई हौ प्राना ॥ ३३ ॥
जबि उचरौं अनि घालहु। लुटि चमूं हय शास्त्र संभालहूं।
सार बंद करिहौं इक बारी। तुम सुखेन रिपु लीजहु मारी ॥ ३४ ॥
देखहू पता जि नही प्रतीत। पुनहि प्रहार करहु लिहु जीत।'
इम कही सभि के अग् सिधारा। कितिक दूर थिर होहि निहारा ॥ ३५ ॥
ले गुर तीत लकीर निकारी। 'गोरी गोर न उलंधि अगारी'।
इम कहि खरौ भयो रिपु सौहे। रिसते करी बक्र जुग भौहे ॥ ३६ ॥
तुपक तोप ले गोदा गौरी। कर्राहं प्रहार ब्रिंद इन ओरी।
लाल बिलोचर ताडे आरी। जिस करि तिन ते कछु न सरी ॥ ३७ ॥
उलंधे नही लकीर अगारी। तिह लौं पहुँचहि नहिं बल भारी।
खरे सुखेन न किस के लागे। सने सने आवति रिपु आगे ॥ ३८ ॥
पिखि बंदे को प्रक्रम ऐसे। हरखे लोग तज्यो डर तैसे।
सावधान दुइ शसत्र सँभाले। तोमर तीर तुफंग बसाले ॥ ३९ ॥
किनहुं खडग सिपर ही धारी। मे सनमुख करि मारो मारी।
सभि के आगे बंदा भयो। अपनि चमूं को उतसब दयो ॥ ४० ॥
इम गमनति जबि होइसि नेर। भए दलेर चहयो भर भेर।
जबि केतिक तुपकें चलवाई। लगी तुरक गिरग रण थाई ॥ ४१ ॥
इह बच रहे, लगहिं नहिं घावा। गिरे ब्रिंद रिपु ह्वै न बचावा।
कितिक तुरंग छुटे गहि लीन। चढि ऊपर बिचरे रण कीन ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उतर ऐने **'बंदे को प्रसंग'** बरननं नाम सपतयो अंशु ॥७॥

---

1. नमक।

अंशु ८

सढौरा मारन प्रसंग

दोहरा

भयो नेर भट भेर को चमूं अनंद।
छीन तुरंगम बहु चढे चौंप बिलंद ॥ १ ॥

चौपई

बहु कोपयो मुख हुकम बखाना। 'हेल करहुं मेलहु घमसाना।
शसत्र तुरंगम तोप समेत। छीन लेहु इन तो रण खेत ॥ २ ॥
इम कहि गुर को बान संभारा। जोरि पनच महिं एंचि उचारा।
हतहु तुरकन गन जानि न दीजै। सरब समाज छीनि करि लीजै ॥ ३ ॥
तबि अकाश को दल चलि आयो। इति अज़गैबहि जंग मचायो।
आगे पीछे अयुद्ध चले। परी मार शत्रु गन हले ॥ ४ ॥
दई, पीठ, तजि तोप पधारे। तबि बंदे निज भट ललकारे।
हय आयुध कयो तोप न लेते। नहिं रिपु ठहिरे भाज चले ते ॥ ५ ॥
नर ग्रमनि के पिखिनि तमाशा। खरे सैंकरे चारहुं पासा।
पिखे पलावति भीरु अधीर। सके चलाइ न तुपक रू तीर ॥ ६ ॥
लूटन लगे तुरंगम लए। बस्त्र शस्त्र धारति नहिं भए।
परी लोथ पर लोथ घनेरी। चलहि तीर तलवार बडेरी ॥ ७ ॥
कटि कटि गिरे न भाजन पाए। चहुं ओर लोकनि मिलि धाए।
पसर्‍यो श्रोणति छित रंगीन। कटे कराहें केतिक हीन ॥ ८ ॥
रही संभाल न लशकर मारा। कहि लग बरनं जंग अखारा।
गए पलाइक भए संघारा। तबहि पनचते तीर निकारा ॥ ९ ॥
थिर्यो सथांन आपने बंदा। लयो लूट दल तुरक बिलंदा।
शसत्र हजारहुं बडे तुरंग। ले कर सगरे हरखति अंग ॥ १० ॥
जित कित ते मिलगे नर आइ। बिना चाकरी लूटन चाइ।
आयुध धरन हार सभि आए। मिलि बंदे ढिग भे समुदाए ॥ ११ ॥

मुसताबाद जाइ पुरि मारा। लूट्यो खोज खोज करि सारा।
अधिक दरब वसतू समुदाया। ले लोकनि चित चाउ[1] वधाया[2] ॥ १२ ॥
केतिक धनी भए नर माहां। लूटहिं ग्राम जाइ जाहि कहां।
सौ दो सौ मिल मिलि चढि जाते। लूट कूट पुन जाइ समाते ॥ १३ ॥
पर्यो रौर भारी बिग वेश। भाग चले नर नारि बिशेश।
बन्दे संग महा दल भयो। लूटन को अलंब इक लयो ॥ १४ ॥
कई हजार चमूं हुइ गई। जिति कित धूम धाम प्रगटई।
गुर को कह्यो सिमरि करि बंदा। निकट सढौरा दुशट बिलंदा ॥ १५ ॥
तिस मारन को चित उमगायो। करया कूज निज हुकम अलायो।
गुर द्रोही इह नगर कुचाला। बुधू शाह जु साधु बिसाला ॥ १६ ॥
गुर पखी लखि कुटंब समेत। कत्ल कर्यो तिह सकल निकेत।
सो पलटा पूरब ही लीजै। हेला घालि कतल करि दीजै ॥ १७ ॥
दल मंहि मे दुंदभि समुदाए। कर्यो हुक्म 'गहि डंक बजाए'।
सावधान सगरे जबि भए। चढे तुरंगन आयुध लए ॥ १८ ॥
बंदा हाइसि हय असवार। बनि जुगम संग मंहि धारि।
जाइ सढोरे कहु तबि घेरा। तुपक तोप चलि तिस बेरा ॥ १९ ॥
पहिले वहिर निकसि करि लरे। सय्यद खान मुगल गने अरे।
कड़ा कड़ी माच्यो घमसाना। गोरी चली धनुख ते बाना ॥ २० ॥
पुन चहूं ओर घालिकर ज़ोर। दए तुरक गन के मुख मोरि।
बाहर ठहिर सके लराई। बरे[3] दुरग महि मंहि ह्वै समुदाई ॥ २१ ॥
पाकी कंध स्थान उतंग। बडो मवासी होहि न मंग।
तिस को लाइ मोरचे थिरे। गोरा चलनि शुरू गन करे ॥ २२ ॥
'शाहि कुमैत' पीर इक तहां। जिस की कबर सकंचन महां।
चामीकर भीतर बहु लागा। बहु ऊचो जग मंहि जिह जागा ॥ २३ ॥
पाहन दुरग बीच ते मारै। दल पर बरखै भटन प्रहारै।
नितप्रति जुद्ध हति बहु तेरा। हेला घालि घालि भट मेरा ॥ २४ ॥
अर्यो दुरग हट्यो जब नाहीं। बंदे जनन बिचार्यो ताहीं।
वहिर बडो दमदमा उसारा। तूरन लागे मनुज हज़ारा ॥ २५ ॥
दिन प्रतिदल ब्रिद्धै बड ऐसे। होइ सवाया ड्योढा जैसे।
दूर दूर लगि लूटनि धावै। गन धन धान पुरिनि ते ल्यावैं ॥ २६ ॥

1. उत्साह 2. बढ़ाया 3. प्रवेश किया

मा उतंग दमदमा उसारा। चढि बंदा ऊपर तिस बेरा।
दृषिटि दुरग के बिखै लगाई। सतिगुर सर ऐंचयो समुदाई ॥ २७ ॥

हुकम दयो दल को 'हुइ हेला'। सुनि चहुं दिशा शोर बड मेला।
धाइ धाइ गढ को लगि गए। ततछिन सुभट अरूढति भए ॥ २८ ॥

उमड पर्यो दल बीच प्रवेशे। बज्यो खड़ग रिपु कदन विशेशे।
तछे मुछछ करि अंग घनेरे। बिचरी लोथ पोथ गन हेरे ॥ २९ ॥

एक बार ही सकल बिनाशे। ठाहि मदान कीनि गहुं पासे।
बहुर नगर महिं दल बरि गयो[1]। जो देख्यो तूरनि कटि दयो ॥ ३० ॥

[illegible] ३१ ॥

[illegible] ॥ ३२ ॥

ऊपर बांछे कस करि नीबी। उछरी फिरत उतहि इत बीबी।
तरे पाऊचे बंधन करे। नहि मूखक निकसे बिच बरे ॥ ३३ ॥

सयदानी, मुगलानि, पठानी। क्या तिनकी गति करहिं बखानी।
जो कबि नर न हेरने पाई। भई दशा अस तहां भ्रमाई ॥ ३४ ॥

घोर पाप को फल बिदत्यो। नाश नगर को होवति भयो।
नर मरि गए लई गहि नारी। होयहु काल भयंकर भारी ॥ ३५ ॥

पुन बंदे चित बीच बिचारी। नहीं पीर की कबर बिदारी।
हिन्दु म्रितक जिस आगे जाइ। नहीं अगन महिं जरहिं कदाइ ॥ ३६ ॥
इस को छोरन बांहिन आछो। रुचिर मसीत[4] बिदारत बांछो।
गयो आप तहिं जिस थल खरी। कंचन लिपत अनिक बिधि करी ॥ ३७ ॥
जानि सु बंदे को आगवनू। डगमग कंपी कबर सु भवनू।
गुर सर की तबि नोक धसाई। रिस करि सभि महिं ऊच अलाई ॥ ३८ ॥
'अबि गीदी कबे[5] क्या होइ। समो हमारो पलटा सोइ।
ठहिर गई कंपन ते केर। हेतु बिदारन लगे घनेर ॥ ३९ ॥
सरब करब जबि तिह खनवाई। हाड़ तरे ते लीए कढाई।
काशट बिखै अगनि ते जोरे। लगे मसीत बिदारति सारे ॥ ४० ॥

---

1. दाखिल हो गया 2. ब्याह ली 3. चूहे 4. मसजिद 5. कांपने से

ढाहि कीनि मैदान स्थान। जुति अज़मति के कीनि विरान।
गुर कह्यो पलटा सो लीनि। सहित पीर पुरि नर ते हीन ॥ ४१ ॥
कई हज़ार जुर्यो दल आइ। शसत्र तुरंग तोप समुदाइ।
परी धांक कंप्यो तुरकाना। सुनि सुनि सभि कै धीरज हाना ॥ ४२ ॥
को इह भयो न जानयों जाई। नहिं किस थल को राजा राई।
औचक प्रगट्यो देश बिनाशा। क्या सुध, आगे करहि बिलासा ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उतर ऐने '**सढौरा मारन प्रसंग**' बरननं नाम अष्टमो अंशु ॥ ८ ॥

अंशु ९
बंदे को प्रसंग

दोहरा

इस विधि कर्‌यो उजार पुरि तुरकाना संवारि ।
भयो महा दल आनि तबि कीनहुं कूत्र बिचारि ।। १ ।।

चौपई

शहिर समाण ब्रिंद पठान । जो सिवका पर करहिं पयान ।
निज निज रखी बाहनी पास । बिबिध बिधनि बहु बिलस बिलास ।। २ ।।
सुनि कै घन गन अरु तुरकाना । निज दल जोरि कीनि प्रसथाना ।
दुंदभि पुंज बजावति चाले । इत उत लूटंति जाति उताले ।। ३ ।।
उड़ी गरद छाद्‌यो असमाना । तोप तुपक गन शब्द महाना ।
रौरा पर्यो देश भय माने । भाज चले जिम पात पुराने ।। ४ ।।
करे कूच हर कूच सिधारे । तुरत पठान आनि ललकारे ।
'ज्यों क्यो करि मैं सरनि संघरिहौं । कहां पलावो धरनि धरि हौं' ।। ५ ।।
सहि न सकै सभि चढे पठान । लशकर अपनो जोरि महान ।
रण मुकाबला सन मुख होवा । दइदिशि जंग छवो हुइ जोवा ।। ६ ।।
तोप तुफंगै छूटनि लागी । कड़की मनहुं कालका जागी ।
बरखहिं गोरा अरु गन गोरी । धूम धाम पसरी चहुं ओरी ।। ७ ।।
धुखहिं पलीते उठहिं अवाजा । भैरव भैरव हुइ करि गाजा ।
भूत प्रेत नाचति अरु गावति । रुधर पियति जोगनि किलकावति ।। ८ ।।
ऐसो पर्‌यो अधिक घमसाना । लोथ पोथ न भई महाना ।
चीकति चुंच चावऊ भरि भरि । बाइस खाइं मास मद भरि करि ।। ९ ।।
कूक कूक कूकर गमाइ । श्रोणत आमिख को बहु खाइं ।
भयो भयंकर भीरन भूर । छोरि छोरि करि सरब गरूर ।। १० ।।
कहिं लग बरनं जंग बिसाला । मारे परे पठान कराला ।
अरहि लराई हेरहि बंदा । गुर सर को संभरि बिलंदा ।। ११ ।।

रिपु लशकर के ऐंचहि सनमुख। बिना प्रहार होति गन बेमुख।
इसी रीति दुरग जु अरि जाइ। तहिं सर ऐंचहिं दृषटि लगाइ ॥ १२ ॥
छूटि जाइ नहिं रहै मवासी। जे इह लशकर अरि होहि बिनाशी।
सर महिं करामात इस भांति। नहिं ठहिरहिं शत्रु हइ घात ॥ १३ ॥
[illegible]
[illegible] १४ ॥
पसर्‌यो दल लूट्यो सभि देश। जगल भर जांगुलक बिशेश।
सभि पुआध को लूटि उजारा। ठौर ठौर रौरा परि भरा ॥ १५ ॥
गुर बरजयो मारी न सुनाम। रहे साध मूला जिस नाम।
देश ब्रिदेश बिखै समुदाए। हुते सिंघ जो सुनि सुनि आए ॥ १६ ॥
भयो हमन को दल बल भारा। मार लूट बिन अवर न कारा।
किटकी पुरी सिरहन्द बिसाली। तिस को मारन चहैं उताली ॥ १७ ॥
बसहि बजीद खान जहिं पापी। साहिबजादन को संतापी।
तिस हतिये निज हाथनि लालस। बंदा भयो सुचेत अनालस ॥ १८ ॥
निस दिन उद्यम करतो रहै। गुर को पलटा लैबो चहै।
त्रास मानि करि पुरिजिन सारे। निज सूबे के निकट सिधारे ॥ १९ ॥
पर्‌यो फतूर देश महिं भारा। गुरसुत हते न तनक बिचारा।
तिस अध को फल अबि प्रगटायो। लाखहुं लोकन बहु दुख पायो ॥ २० ॥
सावधान हुइ रोकि अगारी। लशकर करो बटोरनि भारी।
लरे घने पर अरे न कोई। गुर दल प्रबल भयो अति सोई' ॥ २१ ॥
सुनति वज़ीदखान हंकारी। पुरि जन सन बहु धीर उचारी।
जबि लौ मेरे हाथ न हेरे। तबि लौ सैना मिली बडेरे ॥ २२ ॥
हतौं जाइ जबि एक लराई। मिले जि नर नहिं परहिं दिखाई।
एक एक करि मारि बिदारौं। अरै कौन अस नहीं निहारौं ॥ २३ ॥
इम कहि निज कखिपखि त्यारी। हयनि हजारहुं पाखर डारी।
लवपुरि आदि जे लशकर अहे। सकल बटोरि अनावन चले ॥ २४ ॥
दुंदभि बजति सैंकरे आए। जिम जल निध को जल फैलाए।
पुरि सिर्‌हन्द के चहुंदिशि डेरे। गज बाजी जुति सुभट घनेरे ॥ २५ ॥
बंदे की सुधि लैकरि चढ्यो। चमूं बिलोकि गरब उर बढ्यो।
अलप मज़ल ते चलति अगारी। सुनहि हत सु तुरकाना भारी ॥ २६ ॥
इत इह लूट कूट वहु देश। पुनि ग्रामनि चले नवे हमेश।
कितहु उजारति किंत अपनावै। अंन बसन बासिन धन ल्यावै ॥ २७ ॥

उतरहिं नही कहूं बिन जंग। आयुध धरैं रहै सरबंग।
बंदे सुन्यों सिरहन्द पति आयो। लशकर लै तहिं ते निकसायो॥ २८॥
हित मारन करि चौप बिसाला। चढि इत ते पुरि लुटि अंबाला।
दीरघ अलग्र ग्राम कै नगरी। छीने बसतु उजारहिं सगरी॥ २९॥
समुख तुरक के कूच करंते। चाहति लरिबो शसत्र धरंते।
छत बानूड़ नगर जिस थाना। तहिं मुकाबला दोनहु ठाना॥ ३०॥
इत गुर दल उत लशकर आवा। लाखहुं सुभटन लरिबे चावा।
बंदा अरु वज़ीद खां दोऊ। जै अभिलाखी ह्वै करि सोऊ॥ ३१॥
निस मैं ब्योंत[1] लरन को करिकै। मिसल मिसल महिं उतसव धरिकै।
बहु बरद्ध गोरी बरताई। आपो अपनी करि तकराई[2]॥ ३२॥
प्राति होति रण चन्हति कर्यो। दोऊ दिशनि क्रोध को धर्यो।
हुकम कीनि 'धौंसे धुंकारे। गोमुख पटह ढोल ढमकारे॥ ३३॥
तोप पुज की शलख चलाई। सैन ओरजी छित कंथाई।
परहे[3] दूर लगि बंधन करे। त्याग तुफंग बान धनु धरे॥ ३४॥
पर्यो नेन होइसि भट भोर। छुटे गोरी गोर बडेर।
तउ भउ शलख अवाज़ बिसाले। फूटे बीरनि अंग उताले॥ ३५॥
हयनि धवाइ प्रहारैं सुरे। लाल बदन करि क्रूर गरूरे।
केतिक तीमर मांर परोए। केतिक मरे खेत रण सोए॥ ३६॥
कही बात कुछ सुनिय न काला। दिखीयति नहीं समीप सथाना।
हेल मेलि दुइ दिशि लर परे। काढि खड्ग अरि काटन करे॥ ३७॥
हथावथ ह्वैगी इक बारा। घाव परसपर करहिं प्रहारा।
सिपर संभार न गिनती रही। कराचोल धारा इम बही॥ ३८॥
तोपन ते मर गए हजारों। जंग तुफंगन संग प्रहारो।
नेजे भाले संग परोवन। जम धर खड़ग खाइ करि सोवन॥ ३९॥
छूछे अनिक तुरंगम डोलैं। मारि मारि केतिक भट बोलैं।
लोथ पोथ न रण थल होई। श्रोणित लिपति फिरति नर कोई॥ ४०॥
अरण बरण की धरणि कराला। नाचें, भूत, प्रेत, बैताला।
कहुं रुंड करि[4] मुंड परै है। हाथ पांव करि धरा गिरे है॥ ४१॥
कहीं कहाँ लगि जुद्धो अखारा। बरननं करि हौ जो बिसथारा।
ग्रंथ बिसाल इसी को होइ। लाखहुं मारन मरनो जोइ॥ ४२॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने **'बंदे को प्रसंग'** बरननं नौम नौमो अंशु॥ ९॥

---

1. योजना बना कर 2. हौसला देकर 3. कतारें 4. कमर

अंशु १०

बंद को प्रसंग

दोहरा

बरजै जोधा अपने बंदे प्रथम बखानि।
नहिं को हतैं वज़ीद को मैं मारौं निज पानि ।। १ ।।

चौपई

इम कहि पूरब सकल हटाए। लख्यों मरे सुभट समुदाए।
तबि बंदे निज हय फंधायो। खां बज़ीद को सनमुख आयो ।। २ ।।
सुनि साहिब ज़ादन के द्रोही। सलतन सकल बिनाशी तोही।
महां अधम क्रित पाप बिसाला। तिस को फल प्रपति इस काला ।। ३ ।।
लशकर देश नगर के साथ। होहि बिनाश मान मम हाथ।
गुर को अदब न तैं[1] कुछ राखा'। सुनति वज़ीद खान तबि भाखा ।। ४ ।।
'मेरे सुभटन को क्या होवा। शत्रु समीप खरो इन जोवा।
सभि दल को इह रिपु सरदार। तजो तुफंग क्यो न लिहु मार[2] ।। ५ ।।
बरछी खडग प्रहारन ब्रिंद। करि लीजै इहु तुरत निकंद।
इम सुनि हेल करे गन छाए। गोरी तीर सभिनि बरखाए ।। ६ ।।
इत ते सनमुख बंदा भयो। सरि धरि धनु पर ऐंचन कयो।
हुइ दिशि ते गन छुटी तुफंगै। गिरे हजारहुं तुरक तुरंगे ।। ७ ।।
हेल ददिशिनि छालि घमसाना। श्री गुर सर ऐंच्यो बलवाना।
किस महिं शकति रहै दिढ आगे। बेमुख होइ जंग तजि भागे ।। ८ ।।
पिखि लशकर की दशा पलावन। चहे वज़ीदे प्रान बचावन।
तबि बंदे चित बिखै विचारा। हतौं कुसौत अछी इह भारा ।। ९ ।।
जौ आयुध तैं करौ प्रहारा। शुभगति प्रापत होहि सुखारा।
उचित नरक महिं लहैं सजाइ—। इम चितवति ढिग पहुचयो जाइ ।। १० ।।

---

1. तुमने 2. क्यों न मार लिया

बल ते पकरि टांग रिपु केरी। तरे गेरि[1] लीनसि तिस बेरी।
घोरा बली फेर तिस ऊपरि। प्रान निकासे ततछिन भूपरि॥ ११ ॥
काहर होइ मरयो बड पापी। साहिबज़ादन को संतापी।
जबहि वज़ीदा कितहुं न हेरा। भाजूयो लशकर त्रास बडेरा॥ १२ ॥
बंदे की सेना पशचाती। लूटि कूटि तुरकने घाती।
हयसु हजारहुं दल महिं आए। शस्त्रनि की को गिनती पाए॥ १३ ॥
लूटि बज़ार लीन तिस बरे। तबूं, तोप, दुरद बहुतेरे।
ग्राम नगर के नर भट भारे। जहिं कहिं के नित मिले हज़ारे॥ १४ ॥
क़िटकी पुरी भगैल पलाए। ठहिर नहीं कित पाइ जमाए।
पाछे दल बंदे को भयो। लूटति मारति धावति गयो॥ १५ ॥
लाखहुं सुभट लूटिबे हेतु। चले चौंप करि भए सुचेत।
रात दिवस के दौरन करिकै। पहुंचे निकट शत्रुगन दरि कै॥ १६ ॥
पुरि जन कहां पलाएं बिचारे। दरन करोरहुं वसतु उदारे।
लशकर प्रबल वहिर ही मारयो। बचे अरे तहिं तुरत बिदारयो॥ १७ ॥
बरे नगर महिं लूट मचाई। कंचन रजत लीनि समुदाई।
बडे बजारन को बहु लूटा। अरे अगन सो तनछिन कूटा॥ १८ ॥
बहुर सदन महिं सुभट प्रवेशे। लूटति वसतू दरब विशेषे।
मुगलानी, सचदानि, पठानी। गहि लीनी नीचन रति मानी॥ १९ ॥
इक खतरी जिस करम चंडार। झूठा नंद महां बुरिआर।
साहिबज़ादे जिन मरिवाए। करिबै साक द्वैष उपजाए॥ २० ॥
सिंघन तिस की बात बिचारी। बूझि सवन गहि लीनि कुचारी।
बीध नाक महिं छेद करायो। लहि कड़ा विच तिस के पायो॥ २१ ॥
[illegible]।
[illegible] २२ ॥
त्रिपत लूट अधिक धन पायो। निकसे बाहिर सिवर को छायो।
पर्यो दूर लगि होति पुकारी। संकट अधिक रुदित नर नारी॥ २३ ॥
—तुरक वजीद खान ते आदि—। गारौ देति—गई बनियाद।
श्री गुर के सुत बालक मारे। सो अबि पाय प्रगट दुखभारे—॥ २४ ॥
पुरि जन दीन होहि विघआए। सभि किछ त्यागति तुरत पलाए।
त्रसति कहैं "बच रहैं[2] जि प्रान। कहुं पहुंच करि ले गुजारनि'[3]॥ २५ ॥

---

1. नीचे गिरा लिया 2. यदि 3. निर्वाह

कहौं कहां लगि पुरजन दशा। सभि किछ भगे चहुं दिशा।
दरब करोरहुं दल महिं आयो। वसतुनि को संचे सभि पायो ॥ २६ ॥
बडे बडे उमराव प्रहारे। जे सिवका गज पर प्रसवारे।
खोजे कहूं न पायति सोइ। तिन के सदन बरे सभि कोइ ॥ २७ ॥
सकल पदारथ लूटति ल्याए। तिन की त्रिया गही समुदाए।
रंक लोक मिलि लालच पागे। धनी सदन बरे सभि खोदन लागे ॥ २८ ॥
गाड्यो दरब निकासी बिशेखा। घरन बिदारन लगे अशेखा।
दुरग आदि मैं जेतिक माइआ। खोदत खोजत निकसति आइआ ॥ २९ ॥
दरब करोरहुं बंदे लीन। आदि वजीदे संच जू कीन।
बडे धनादि जहां नर गन है। छीन लीनि तिन जेतिक धन है ॥ ३० ॥
पुनि जन को बड प्रासु उपंने[1]। भरे संदन वसतू तजि भंने[2]।
प्रान बचावनि को इक चाहा। अपर सरब कुछ तहां लुटाहा ॥ ३१ ॥
संकट पर परम सभिनि के भए। जे कुछ अरे मार करि लए।
गुर सत हते पाप फल मारे। परे पुरी पर कौन उबारे ॥ ३२ ॥
केतिक दिन डेरा तहिं राखा। 'घर ढाहहु' इम हुकम सु भाखा।
'जडहा[3] पुरी की सतुद्रव पावहु। गुरू स्राप को अबि सकलावहु ॥ ३३ ॥
जो इस पुरि घर टाहति रहै। सो जबि कबि धन को बहु लहैं'।
दल के लोक अपर नर रंके। लगे बिदारन घर नर बंके ॥ ३४ ॥
बडे पौर चौपटी अटारी। छज्जे छात रांवटी भारी।
रुचिर दरीची चूना खचे। अनिक रीति के दर गन रचे ॥ ३५ ॥
केतिक कंचन लियति सुहाए। चित्तर बचित्तर रचे समुदाए।
सुंदर बैठक तने बिताना। अचरज मौन रचे बिंधि नाना ॥ ३६ ॥
अमरावति के समसर पुरि। ढाहि फोर करि दोनी बुरी।
खोदति विकसति दरब महाना। यांते कीन बिदार मदाना। ३७ ॥
गुर सुत अघ ते अस गत हाई। मनहुं इहा नहिं बाक्यो कोई।
बंदे सो खत्तरी मंगवायो। लोह कडे सों नाक बिछायो ॥ ३८ ॥
बडो जेवड़ो बंधन कीन। ऐंचि चंडाल हवाले दीन।
'दल को जो बजार है सारा। ले इस फेरहु सकल मझारा ॥ ३९ ॥
इक बिराटिका हाट मंगावहु। पनही[1] पंच सीस पर लावहु।
इस बिधि फेरे सदा फिरावहु। मारि मारि करि प्रान गवावहुं ॥ ४० ॥

---

1. पैदा हुए 2. भाग गए 3. जुड़े 4. जूते

सुनि करि हुकम फेर तिस रीति । मार होत जूतन की नीत ।
इम गुर द्रोही मार्‍यो मर्‍यो । संकट भोगि नरक महिं पर्‍यो ।। ४१ ।।
अष्ट बरस की कंनया पां की । दल महिं पकरी सुनि सुध तांकी ।
केतिक दया सहत नर होइ । बन्दे निकट सुनावति सोइ ।। ४२ ।।
'इस को कहां दोश अध मांही । जिसको अबि लगि सुधि किछु नांही ।
तजिबे उचित जानि करि तांहि । देहु छुराइ गहै को बांहि ।। ४३ ।।
सुनि बंदे बड क्रोध उपायो । 'इह तुम ने क़या हमहिं सुनायो ।
शीर[1] खोर जो साहिबज़ादे । जिनको सुधि नहिं मिलन कि बादे ।। ४४ ।।
तिन को दोश कहां इन जाने । सभा हज़ारनि की नर स्याने ।
नहिं मति मंदनि कछु बिचारे । खत्तरी कहे सुनति से मारे ।। ४५ ।।
झूठा नंद नंदनी जोइ । यां ते उचित न त्यागनि सोइ ।
मम हदूर तिस को ले आवहु । चंडालन के हाथ गवावहु ।। ४६ ।।
सो अपने महिं लेहिं मिलाई । पापी के बनि जाहिं जमाई ।'
इम कहि तुरत हकारनि करी । हुक्म चंडालन सों करी धरी ।। ४७ ।।
ले करि अपने धाम सिधारे । इम पापी नर चुनि चुनि मारे ।
जे जे गुर निंदक पुरि मांही । करे सुनावनि बंदे पाही ।। ४८ ।।
खोज खोज करि सो मँगवाए । हाथ पाव कै नाक कटाए ।
केतिक के करि करि मुखि कारे । गधे चढाए बहिर निकारे ।। ४९ ।।
केतिक पकरि कूप महिं डारे । सभि कुम्रित महिं करि करि मारे ।
पाए समै को करि करि याद । चुनि चुनि हनि करि बिन बुनियाद ।। ५० ।।
इम सिर्हन्द को मारि उजारा । दरब करोरहुं खोद निकारा ।
निंदक द्रोही गुर के हते । ले पलटा बोले करि फते ।। ५१ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने बंदे को प्रसंग बरननं नाम दसमो अंशु ।। १० ।।

1. दूध पीने वाले, कम आयु के

अंशु ११
बंदे को प्रसंग

दोहरा

इम उजारि सिर्हन्द को गुर निंदक चुनि मारि।
पुन अरूढ आगे चल्यो चमूं भई बिशुमार ॥ १ ॥

चौपई

जहिं कहिं ते भटगन चल आवहिं। आपो आपने जथे बनावहिं।
हरा हाथी दुंदभि बहु भए। लूटहिं मुलख जिते कित गए ॥ २ ॥
सतुद्रव के पूरब दिशि देश। लूटि उजार्यो चमूं विशेश।
भीमचंद सैंलिद्र बिसाला। गुर को द्रोही लर्यो बिसाला ॥ ३ ॥
प्रथमा अनंदपुर को आवा। सतिगुर थल को सीस निवावा।
दरशन करि करि हरख्यो तहां। करे बिलास परम गुर जहां ॥ ४ ॥
जिस प्रकार भे जुद्ध बिसाला। सो दे कान सुने तिस काला।
खोट गिरेशुनि को बहु जाना। बीच पहारनि कीनि पयाना ॥ ५ ॥
भीम चन्द की बड रजधानी। लूटि मारि करि दीनि विरानी।
मीएँ राजे राव घनेरे। भाजि मिले इक थल तिस बेरे ॥ ६ ॥
तिन की सुधि बंदे सुनि लीनि। जहां गिरिंद्र इकत्तर प्रबीन।
गुर को बैर लेन को काजा। औचक ही चढ़िबो तबि साजा ॥ ७ ॥
सुध बिहीन पहुंच्यो तहिं जाई। घरे लीन तिन को चहुं घाई।
मिलि करि सगरे अचहिं अहारा। गुर द्रोही जिन अघ किय भारा ॥ ८ ॥
जाइ अचानक पकरे सभि ही। मुंडीआ नागे बैठे दबि ही।
गिनती मैं[1] बाई सै गिने। मीएँ राजे राव जि भने ॥ ९ ॥
पकरि नाक सभि के कटिवाए। जीवति कूप बिखै गहि पाए।
मुख लौ भर्यो मरे बिच सोई। गुर द्रोही अघ फल अस होई ॥ १० ॥
परबत अपर सुने जहिं जहां। पहुंचि पहुंचि मारे सम तहां।
बाई धारनि से भट राजे। गहि गहि मारे जहिं जहिं भाजे ॥ ११ ॥

---

1. बाईस सौ

तबि चंबूपाल गिरेशुर त्रासा। देख्यो सभि को करति बिनाशा।
हुती सुन्दरी दुहिता तिस की। चंद मुखी कर छीनी जिस की ।। १२ ।।
कमल पांखरी आंख बिसाली। मनहुं काम ने सूरत ढाली।
उन्नत कुचा पीन म्रिदु बोल। मुकर बदन जुग लसति कपोल ।। १३ ।।
निज पुत्तरी को अधिक शिंगारे। कौन कौन छबि करैं उचारे।
जिस को हेरति बिरामहिं जोगी। गिनती कहां जि लंपट भोगी ।। १४ ।।
कजरारे म्रिग नैन सवारे। हाथ कमल महिंदी अरु नारे।
तिस के डोरे महिं बैढाइ। संग सखी गन बद्य तरुनाई ।। १५ ।।
सो बंदे के निकटि पढाई। निसा[1] परो सम परी सु आई।
जवि सुंदर तिस तन को जोवा। गुर बच बिसरि मदन बसि होवा ।। १६ ।।
भयो बिबस धीरज़ को घोरा। हुतो लंगोट बंद सो तोरा।
मरन अपनो भी तबि भूला। चढि मन मथ हिंडोले झूला ।। १७ ।।
बरी, करी त्रिय रह्यो न गयो। काल नदी महिं बूडति भयो।
सभि बस कीने परबत बासी। लर्यो अर्यो सो भयो बिनाशी ।। १८ ।।
तोरि मवास गिरेशुर सारे। हट्यो बहुर दल लै निज नारे।
सैल समुद्रनि की करि सैल। निकस्यो वहिर धरे बहु ऐल ।। १९ ।।
सतुद्रव सलिता उतरयो पार। प्रविश्यो द्वाबे देश मझार ।
नगर ग्राम लुटति अरु मारति। घालति धूम स जार पछारति ।। २० ।।
पुरी जलंधर जो तुरकाना। लुटि कुटि कीने सभि हाना।
अपर शहिर जेतिक तहिं भारे। सकल चमूं ने घीनि उजारे ।। २१ ।।
जौ सैना तुरकनि की आवे। संघर घालि तुरत बिनसावै।
पुन माझे बड देश पधारा। दौरि दूर ते बड परिमारा ।। २२ ।।
नाम बटाला जिस को कहैं। घीन लीन जेतिक धन अहैं।
लवपुरि आदिक बडे सथाना। जहां बिसाल जोर तुरकाना ।। २३ ।।
इकठे दोइ सुलाखहु लशकरि। लरबि हेतु समुख मे बलि धीर।
चपा चिडी नगर जिह थाना। तहिं मुकाबला भयो महाना ।। २४ ।।
कही कहां लगि वची लराई। तुरकाना मारयो समुदाई।
लरे आनंदपुरे जो जाइ। सो संधर करि लीने घाइ ।। २५ ।।
जबरदसत सूवा बड भारा। लरि बंदे ततछिन संघारा ।
अपट सैन के उो उमराव। घेरि घेरि मारे करि घाव ।। २६ ।।
कहूँ न बिजै[2] पाई तुरकाना। बहुि जहिं लरे तहां तहिं हाना।
गुर तीरन को अधिक प्रताप। लाखहुं दुशटन को संतापू ।। २७ ।।

1. रात 2. विजय।

कहौ कहां लगि रिपु गन मारे। लरि लरि सनमुख मारि निवारे।
देशनि लिखै अमल[1] निज कर्यो। भई प्रजा हाला गन भर्यो[2] ॥ २८ ॥

इतने महिं दिल्ली ते लशकर। आए लाख हूँ शोर धरि।
सुनि बदा सनमुख ही गयो। सतुदेव सलिता ऊलंघति भयो ॥ २९ ॥

लुदवण नगर मरि करि लर्यो[3]। तुस्कनि सँग जँग बड करयो।
तुपक तोप जंजैल चलावै। तोर तबर तोमर सु भ्रमावैं ॥ ३० ॥

भयो[3] भेड ओड़क को भारा। सो लशकर भी लरि करि मारा।
तिसी देश के पुरि गन ग्रामू। लूटे कूटि उजारे धामू ॥ ३१ ॥

पुन द्वावे महिं मय त्रवेश। छीनति धन रिपु हते अशेश।
नगद दखनी को तबि माहयो। फिरे महां दल सकल उजार्यो ॥ ३२ ॥

पुन गुरदास पुरे को लूटा। सनमुख लयो लीन सो कूटा।
इस बिधि सगरो कथा प्रसंग। राम कुइर कहि श्रोतन संग ॥ ३३ ॥

बडे जुद्ध करि दुरजन घाए। हम भी तबि मिलने हित आए।
बहु लोकनि निरतंत हमारा। बंदे को सुनांइ करि सारा ॥ ३४ ॥

सादर मेल भयो हरखाए। राख्यो संग हमैं तिस थांए।
साधे देश मवासी सारे। चहयो सुधासर पुन दीदारे ॥ ३५ ॥

घा मनिंद निलिंद चमूं श्रति। सिंघ हजारहूं मिले हरख चित।
दुंदभि बजे हजारहुं आगे। दूर दूर के नर गन भागे ॥ ३६ ॥

दिल्ली महिं दबका बहु पर्यो। जित कित देश प्रास महिं भर्यो।
छोरि छोरि धामन को भागे। अरैं न लरैं तुरक रण तयागे ॥ ३७ ॥

दिल्ली महिं नित अति तकराई। करि केरि बैठति अरि समूदाई।
परी धाक नड धूम उतारी। सभि तुरकाने मंडि डर भारी ॥ ३८ ॥

कबि कबि सूब ह्वै इक थांई। लशकर मेलि मेलि समुंदाई।
सनमुख करि अरि लरि लरि मारैं। मार खाइ को त्रास पधारैं ॥ ३९ ॥

ल.खहूं लशकर लीने घाइ। लर्यो सा कर्यो हूं द्वैं न बचाइ।
शोर ज़ोर को घालि बिसाला। पुन भाजहिं ह्वै काल दुखाला ॥ ४० ॥

कई बार तुरकाना मिल मिल। मे सनमुख रण के रिस पिलि पिलि।
लरे बीर हिंद ह्वै तिल तिल। बिजै लेनि हित आगे ठिलि ठिलि ॥ ४१ ॥

---

1. कार्य रूप दिया 2. कर, 3. लड़ाई

इम बंदे देशन जे पाई। सभि पर अपनि अमल[1] ठहिराई।
जहिं कहिं पठए ठानेदार। ग्याइ निबेरनि की करि कार ॥ ४२ ॥
करैं हुक्म हाला[2] धनु लेत। बंदे निकट पुचाइ सु देत।
दिल्ली महिं मिलि कदि तुरकाना। भए मवासी डर बहु माना ॥ ४३ ॥
बहु बरूद सों गोरू गोरी। कोट सुधारयो पुरि चहूं ओरी।
तोप सुधारी धरी बहु थाना। हनैं इहां मिलि करैं बखना ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ उत्तर ऐते 'बंदे प्रसंग' बरननं नाम इकाशमो अंशु ॥ ११ ॥

---

1. कार्य 2. भूमिकर

अंशु १२
शाह प्रसंग

दोहरा

साध्यो सगरे देश को जो पंजाब बिसाल ।
पलटा ले गुर सुतनि को द्वेही हने कराल ।। १ ।।

चौंपई

स्री बिनोद सिंघ तेहन बाबा । संगी बंदे को रिपु दाबा ।
हेतु सहायक सतिगुर दयो । जय जोग उपदशनि कयो ।। २ ।।
जहिं कहिं क ी सहाइ बिसाला । मसलत टेति बताइ रसाला ।
जबहिं ब्याह बंदे करवायों । कहि कहि गुर बच बहुत हटायो ।। ३ ।।
बरनयो रहयो न; सुंदरि हेरी । करि मौन तिसु कह्यो न फेरी ।।
तिसी रीति इक डोरा आन । लेकर पहुंच्यो रिपु डर मानि ।। ४ ।।
तिस भो ब्याहि करन ललचारा । श्री बिनांद सिंघ झिड़ कि हटावा ।
भयो गरब सो नाहिन मानै । करो भारजा-लालच ठानै ।। ५ ।।
बेमुख लखि करि बाबे तबै । बैठे हुते बिलोकति सबै ।
हतिबे हेत क्रोध के साथ । धर्यो खड़ग कबज़े पर हाथ ।। ६ ।।
मार्यो चहै जानि हंकारी । क्या मूरख इन मन महिं धारी ।
तबि लो काहन सिंह सुत आयो । हाथ जोरि बच कह्यो हटायो ।। ७ ।।
इसहि न मारहु उचित न हमैं । घटदि तेज पूज्यो[1] समैं ।
सतिगुर हित सहाइ सग कीने । साहिबज़ादनि पलटा लीने ।। ० ।।
अपको हाथ[2] जि छोडहु यां पर । भली न बात बिचार लिहो उर ।
गुर की आज्ञा होवनि भंग । निफलहि बल कीने बिच जंग ।। ।।
कहै बिनोद सिंघ करि रोस । 'देखहु कहां करहि बहु दोष ।
इस को मारन ही बनि आवै । गुर को कहिबो अकल मिटाव ।। १० ।।

---

1. अब समय आ गया है 2. यदि हाथ चलाओगे

ए काफर बेमुख अति भयो। दुती ब्याह करिबे ललचयो।
कहै कुलीन त्रिया को ब्याहौं। और पुत्तर तिस ते उपजाहौं ।। ११ ।।
करति ढीठता मनमुख होयो। बस मन मथ के जत सत खोयो'।
काहन सिंघ करि पित सों बिनती। बरजन करयो तजी रिस गिनती ।। १२ ।।
इस प्रकार ही भयो[1] बखेरा। चले सुधासर को तबि डेरा।
दरशन करन हेतु सभि गए। लाखहुं दल उतरति भट भए ।। १३ ।।
सिंघ हज़ारहुं संगी बीर। धरहिं तुफंगन तोमर तीर।
सभिनि शनान जाइ करि कर्यो। हरि मंदर हरसे मुद भर्यो ।। १४ ।।
सभि के अग्र बैठि तिस थांइ। चहै कि 'मो पर चमर[2] फिराइ।
सभि महिं मुखि सिख हौं गुर को। पूरन कर्यो मनोरथ उर को ।। १५ ।।
सभि के कर्यो मोहि अगुवानी। पेरी घाल गुरू उर भानी[3]।
यांते सभि मन चहौं गुराई। मुखता पंथ भले बनि आई ।। १६ ।।
गुरता को लछछन मुझ देहि। सकल खालसा दर्शन[4] लेहि'।
इह जबि कही लही[5] सभि पंथा। करी तरक, नहिं मानहि संथा ।। १७ ।।
नहीं खालसे सों इस मेल। गुर बिन अपर चलायो मेल।
खंडे का अंम्रित नहिं लीन। रहति नहीं इन धरी प्रबीन ।। १८ ।।
जे हम ते इह चहै बडाई। छरे मास मर अग्र बनाई।
श्याम बसत्र जुति अंगी कारहु। पुन मिलिबे हित बाक उचारहु' ।। १९ ।।
सकल खालसे जबि इम कीना। धरम बैशनी अपनो चीना।
अंगीकार नही किय तीनो[6]। सिंघन संग सपरधा मीनो ।। २० ।।
दैशभाव दोनहुं महिं जागा। डेरा प्रिथक उतरिबै लागा।
ग्राम अनिक महिं सिंघ प्रवेशे। तिस ते संग मिलहिं नहिं कैसे ।। २१ ।।
केतिक सिंघनि मसलत धारी। गमने गुर ढिग करत पुकारी।
'भयो मूढ को गरब महाना। चाहति बैठखि गुर सथाना' ।। २२ ।।
इतने महिं लशकर बहु आए। भयो इकाकी जंग मचाए।
सत्ता तीरन महिं नहिं रही। सिंघ घने दल जानहिं सही ।। २३ ।।
इम बंदे को भयो प्रसंग। नित प्रति होत घनेरे जंग।
अबि गुर कथा सुनहुं जिम भई। अबिचल नगर सथिरता कई ।। २४ ।।
कबहि अरूढि अखेर सिधावैं। बिचरहि बन महिं पुन चल आवै।
धरहिं भाउ को परहिं जु परनी। तिसहि तराइं जथा नद तरनी ।। २५ ।।

---

1. झगड़ा 2. चंवर की जाए 3. प्रशंसा मिली है 4. मेरा मत धारण करें 5. ज्ञात हुई 6. सुरा, मांस तथा काला कपड़ा

शाह बहादर दक्खण देश। फिर करि साध्यो सकल विशेश।
'देश पंजाब गरद करि दीन। सूबे कितिक मार करि लीन ॥ २६ ॥
लाखहुं लशकर लरि लरि हने। जननी मनहुं नही कबि जने।
सतिगुर ऐसो सिखख पठायो। देश उजर्यो धूल मिलायो ॥ २७ ॥
इत्तियादिक सुध[1] शाह समीप। पहुंचहि नित मारहि अवनीप।
सूबा खान वजीद संघारयो। जबरदसत दूजा लरि मारयो ॥ २८ ॥
सय्यद खान मुगल गन भारे। कौन गने संघर महिं मारे।
दिल्ली महिं दबका बहु पर्यो। लूटहिं आनि' सभिनि उर डर्यो ॥ २९ ॥
प्रथम शाहु बहु सुभट पठाए। 'लरि करि मारहु' जतन बताए।
पुन पुर सुध इस बिधि की गई। चमूं घनी तुमरी हति लई ॥ ३० ॥
महां प्रबल इह जाइ न मार्यो। लशकर पतिशाही लरि हारयो।
सुनि सुनि सुध को शाहु हिराना। जानी गुर की बखश[2] महाना ॥ ३१ ॥
अपर जतन तिस का नहिं कोई। गुर ढिग जाउं हटावें सोई।
इम बिचारि करि कूछ बडेरे। पहुंच्या आनि प्रभु के नेरे ॥ ३२ ॥
पठे वकील बिसाल मुसाहिब[3]। आनि कर्यो डेरा जहिं साहिब[4]।
मिलिबै कारन चाहति रहे। श्री सतिगुर ने क्यो हूं कहे ॥ ३३ ॥
'हम सों आहिद करयो[5] फिरि गयो[6]। रक स्वाल को देत न भयो।
तबि हम अपनो सिख्ख पठायो। हति द्रोही निज पलटा पायो ॥ ३४ ॥
कर्यो फ्रेब हम दियो जवाब। बिगरहि सलतन करहि शिताब[7]।
मेरो जोर पेरहि जबि भारा। तबि चाह्यो दे सवाल हमारा ॥ ३५ ॥
समुझि शाहु की टाल बिसाला। निज सेवक उत पठ्यो कराला।
गुर द्रोही तिन ढिग सिंघ पठायो। गुर को कहिबो सकल सुनायो।
सुन्यो वकील मुसाहिब जबै। आशै जान लीनि मन सबै ॥ ३७ ॥
पुन कहि पठ्यो दया सिंघ संग। हर सौं दीजै. कहै प्रसंग।
जिस ते शाह सुनै मन भावै। उचित जानि करि जतन बनावै ॥ ३८ ॥
सुनि करि सतिगुर तिन बच दीन। भेज्यो दया सिंघ संघ कीनि।
चहि करि शाह समीप सिधाए। उतरि जामनी तहां बिताए ॥ ३९ ॥
भई प्रभाति हकारन कीने। सरब ब्रितांत शाहु कहि दीने।
'एक सवाल दैबे की टाल। कीनि तबि फरेब के नाल ॥ ४० ॥

---

1. सूचना 2. कृपा 3. 4. गुरु गोबिन्द सिंह 5. वचन 6. मुकर गया
7. जल्दी

श्री प्रभु पलटा चह्यो ज़रूर। पठि दीनो निज सेवक सूर।
पाइ धूम द्रोहो सभ मारे। किम बच सकहि करे अछ भारे ॥ ४१ ॥
आदि सिरहन्द[1] सु नगर उजारे। देश पंजाब रौर की डारे।
गमनहु तुम सतिगुरू हडूर। करहु अरज जिम बनी ज़रूर ॥ ४२ ॥
छिमा धरहिं तुम ताई। देश उजारति मिटहिं तदाई[2]।
इम कहि दया सिंघ मन भायो। संग आपनै शाहु चढायो ॥ ४३ ॥
अबचल नगर समीपी डेरे। उतरे कहि कहि परे घनेरे।
तंबू शमियाने गन ताने। दृशटी परे दूर लग जाने ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने **'शाह प्रसंग'** बरननं नाम द्वादशमो अंशु ॥ १२ ॥

---

1. पंजाब का एक प्रसिद्ध नगर, बंदा सिंह बहादुर ने इसे 1 ज्येष्ट सं० 1767 को विजय किया, अब यह नगर पटियाला जिला में है 2. तभी

अंशु १३

बहादुर शाह प्रसंग

दोहरा

उतरि बिताई जामनी प्राति भई जब आइ।
गुरजदार पठए तबै दया सिंघ बुलवाए ॥ १ ॥

चौपाई

"गुर दर्शन को भेत बतावहु। कबि पहुंचहिं मन कोय मिटावहु।
नहिं चाहित गुर मेल हमारा। जान्यों पूरब कूर उचारा ॥ २ ॥
अबि करि बिनती मैं बखशावौ। रिस मिटाइ करि रिदै रिझावो।'
सुनि करि दया सिंघ तत्रि कह्यो। आछों एक समो मै लह्यो ॥ ३ ॥
केतिक दिन ते इम क्रित ठानैं। प्राति होति तट नदी पयानैं।
करै शनान खरे हुइ रहैं। तप को तापति वाक न कहैं ॥ ४ ॥
तहां अचानक दर्शन करि कै। प्रभु रिझावै बिनै उचरिकै।
तिस परहरहि करहि रिस बरजन। होहि अराम तमाम सि पुरिजन ॥ ५ ॥
दया सिंघ की मसलत सुनि करि। मानी भले बिलम को परि हरि।
त्यार भयो गोदावरि तीर। दर्शन हेरनि सतिगुर धीर ॥ ६ ॥
ले करि संग भले नर थोरे। जहिं थिर गुर गमनयों तित ओरे।
करि शनान गोदावरि कूल। खरे प्रभु तप के अनुकूल ॥ ७ ॥
तजी दूर ते निज असवारी। चरन नगन गमन्यो असवारी।
दया सिंघ को संग मिलायो। अपर साथ सगरो ठहिरायो ॥ ८ ॥
मंद मंद चल पहुंच्यो जाई। खरो भयो प्रभु के अगुवाई।
हीरा एक अधिक दिपतावै। खरचे कई लाख धन पावै ॥ ९ ॥
ताने शाह धरे सिर जोऊ। मारि नुरंगे लीनहु सोऊ।
जबर जिबाइश[1] जाहर जांहू। सो निज कर पर धरि करि शाहू ॥ १० ॥

---

1. छवि

आगे खरो गुरू के होवा । रुख करि जबहि प्रभु ढिग जोवा ।
तिस कर पर ते गहि करि हाथ । सलिता बिखै बगायो नाथ ।। ११ ।।
हेरि बहादर शाहु हिराना । करि बंदन कर बंदि बखाना ।
'धिरहु प्रभू अबि क्रिपा करीजै । बखशहु जानि आपनो लीजै ।। १२ ।।
लखि काशट अपनो प्रितपार्यो । जल न डबोवहि ऊपर तार्यो ।
है बडिअनि[1] की अस बडिआई । तरो अलंब जिस देह तराई ।। १३ ।।
मैं भूल्यो तुम बखशनहारे । बोल्यो कर त्रास उर धारे ।
बिगरैं सूबे होहिं मवासी । पुन गल परी शर्हा[2] द्रिढ फासी ।। १४ ।।
इत्यादिक जे बिघन बिसाला । इन बचाइ पुरवति तुम सवाला ।
पलटा सभ ते मैं ले देति । मारति गुर द्रोही जग जेत ।। १५ ।।
तुम समरथ सभि बिधि बल धरे । चहहु जथा ततछिन लिहु करे ।
देबे हेतु मोहि बडिआई । जाच्यो एक सवाल गोसाईं ।। १६ ।।
डरत्यों मुझ ते नहिं बन आयो । निज सिख पठि पलटा तुम पायो ।
अबिकरुना करि देहु हटाइ । सभी द्रोही लीने तुम छाइ' ।। १७ ।।
मौन धरे प्रभु सुनत रहे । पुन प्रसंन ह्वै करि बच कहे ।
'तुझ प्रति कहनि हुतो हम जोइ । कहि दीनो अबि आपहु सोइ ।। १८ ।।
अपनो कह्यो कर्यो नहिं साचा । शर्हावान[3] ते चित उर राचा ।
सलतन तुमरी आपति[4] अहै । नही सथिरता आगे रहै ।। १९ ।।
शरन पर्यो तो को हम जाना । जबि लौ जियहि दियो इह दाना ।
तुम पित बड अपराध कमाए । राज तेज तुरकान गवाए ।। २० ।।
नही बडोर सकै अबि कोई । ईशुर की इच्छा अस होई ।
अबि भी उतर सक्यो नहिं पूरा । प्रसति बहुत बिधि होयस कूरा[5] ।। २१ ।।
सुनति बहादर शाह लजायो । 'प्रभु जी दीजै रौर हटायो ।
जबि लौ सलतन मुझ प्रति दीन । करहु क्रिपा होइ संकट हीन ।। २२ ।।
दिन प्रति लिखयो आइ अहिवाल । परी सरब देशन चल चाल[6] ।
नहिं दिल्ली लगि करहिं अरामू । अति चिंता सुपतैं न तमामू ।। २३ ।।
एती बात करति थे खरे । पहुंचे पंच सिंघ रिस भरे ।
चरन सरोजन को लपटाए । गुर बूझे 'कित ते तुम आए' ? ।। २४ ।।
सुनि तिन सरब ब्रितत बखाना । 'गरब्यो बंदा रिहै महाना ।
सिंघन की सहाइता पाइ । देश पंजाब सु जीत्यो जाइ ।। २५ ।।

---

1. बड़ों की 2. इस्लाम धर्म के नियम 3. शरई, शर्हा का धारणी मुसलमान
4. अभिशप्त 5. झूठा 6. हलचल

गुर के कारज सकल सवारे। जो द्रोही सो चुनि चुनि मारे।
मारि वज़ीदा धूल मिलायो। पुरि सिर्हंद लूट्यो मन भायो ।। २६ ।।
आदि सढौरा कतल करे हैं। तुरक सिंघ करि जोर लरे हैं।
भए अनिक ही भंग अखाड़े। हति तुरकाना सतर उघाड़े ।। २७ ।।
महां रौर मच्यो तिस देश। करे मारि कै बिजै अशेश।
भयो प्रताप अमल ठहिरायो। जित कित ते हाला गन आयो ।। २८ ।।
सुधा सरोवर पुन चलि गए। मज्जन करे कलूखति हए।
सुन्दर हरिमंदर के अन्दर। दर्शन कर्यो थिरे सुभ नंदर ।। २९ ।।
तहिं गरबति चाहति बडिआई। पास खालसे ते गुरिआई।
चमूं पदारथ दरब बिसाला। निज ढिग जान्यो चल्यो कुचाला ।। ३० ।।
सिंघ मिले मसलत करि सबै। कर्यो अनादर तिस को तबै।
नहीं मेल तुझ संग हमारो। पंथ गुरू को अपर अचारो ।। ३१ ।।
श्याम बरन मद आमिख ल्याए। नाक दबायो नहिं मन भाए।
एव बोल करि भए निराले। निज निज ग्रामनि बरे सुखाले[1] ।। ३२ ।।
ब्रह्म चरज तिस नांहिन राख्यो। कर्यो ब्याह बिश्यानंद[2] कांख्यो।
श्री बिनोद सिंध भिरकन कर्यो। सुत उपजायो नांहिन ढर्यो ।। ३३ ।।
अबि तिस की चहि गली कुढाली। बचन आप को जाइ न खाली।
प्रिथक भए सुनि क्रोध न धरे। नही खालसे सापित करे ।। ३४ ।।
यां ते सुध हित हमैं पठायो। बिगर गयो जिम सरब सुनायो।
सुनि कै गुरू शाह सो कह्यो। 'सो अबि तेज हीन ही रह्यो ।। ३५ ।।
नहिं चिंता धरि पुज्यो समों तिह। भयो बिकारी गरब वहयो जिह।
हटि जैहे अबि बिना हटाए। हमने पलटा लीनसि पाए ।। ३६ ।।
कारन इतिक हुतो अबि गयो। गलन कुठालि समो अबि भयो'।
पुन सिंघन सा गुरू उचारा। 'मोहि पंथ नहिं काच[3] अचारा ।। ३७ ।।
नहिं बिगरे, को सकै बिगारे। रहहु देश तिस बने जुझारे।
वे मुख को तजि दीजै संग। आप शिरोमणि बनहुं निसंग ।। ३८ ।।
संमत कितिक समा जबि आवै। राज खालसे को हुइ जावै।
अवनी के मालिक बनि जै हैं। मरति मरति तबहि बिदतै हैं ।। ३९ ।।
इम सतिगुर श्री बचन उचारे। सुनि कै भए अनंदति सारे।
शाह बहादर सीस निवाइ। डेरे गमन्यो सहज सुभाइ ।। ४० ।।

---

1. आनन्द से रहते हैं 2. विषय भोग 3. मेरे पंथ का आचरण निम्न कोटि का नहीं हो सकता

जहिं कहिं लिखि भेजे पखाने । 'लशकर चढे महिद महीयाने ।
तेज ही रिप होइसि[1] मारहु । जानि न दीजै बहु परवारहु[2] ॥ ४१ ॥
सरब भेत श्री गुरु सुनायो । गहि लीजै करि बिबिध उपायो ।'
श्री प्रभु पहुंचे अपनि सथाना । अबि लौ हीरा घाट बखाना ॥ ४२ ॥
हीरा गुरु बगावन[3] कर्यो । नाम गुदावरि तट को पर्यो ।
गेरति हेरति बिसमयो शाहू । हते बिकीमत[4] गा जल मांहू ॥ ४३ ॥
केतिक दिन प्रभु पास बिताए । सिंघ पंजाब देश चलि आए ।
गुर की कहिवत सकल सुनाई । शांति खालसे के चित आई ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उतर ऐन 'बहादर शाह प्रसंग' बरननं नाम त्रदसमो अंशु ॥ १३ ॥

1. हो गया है 2. घेर लो 3. फैंका 4. बहुत मूल्यवान

अंशु १४
श्री गुरु देग प्रसंग

दोहरा

इत सैना लाखहुं मिली बंदे के पशचात ।
हटे सिंघ अरु तेज बिन होत भटन को घात ।। १ ।।

चौपई

ठहिर न सकै जंग को ठांनति । लरति सु कबै पलाइ पयानति ।
सने सने हारति चलि गयो । जाइ गिरनि महिं प्रापति भयो ।। २ ।।
दुरग लोहगउ रच्यो बनाइ । लरति रखे लशकर अटकाइ ।
तहिं प्रवेश हुइ जुद्ध मचावै । सुभट हजारहुं संघर घावहि ।। ३ ।।
घेरा पर्यो चहूं दिशि मांही । अैबे जैबे मारग नांही ।
इहै प्रसंग भयो इस रीति । उत गुर कथा सुनहुं धरि प्रीति ।। ४ ।।
पर्यों शाहु को सिवर समीप । संग हजारहुं जिस अवनीप ।
चढहिं अखेर प्रभू बहु बारी । जाहिं गुदावरि सरिता पारी ।। ५ ।।
नाम शिकार घाट तहिं भयो । ऐबे जैबे को मग थयो ।
बिचरहिं बन महिं गन म्रिग धावैं । छत्री धर्म भले निबहावैं ।। ६ ।।
तीरन की तरीफ़ सुनि कान । आवति सय्यद, मुगल पठान ।
पुरि अनंद चमकौर मझारे । बीर हजारहुं जिन ते मारे ।। ७ ।।
इक सर गन नर ते परि पारं । तुरत मरति नहिं जाचति बार ।
लगत हुते तबि चलति निहारे । नही चलावति पिखे उदारे ।। ८ ।।
सो भर आवति बिनैं सुनावैं । 'हमरे हेरति अबहि चलावैं ।
सुनि अरज़ी मरज़ी तिन जानि । ऐंचि सरासन धोरहिं बान ।। ९ ।।
चुटकी चांपनि मुशट ग्रहिन को । नवटंकन धनु तान करन को ।
लाघनता धरि ताकि निशाना । तजनि अचूक प्रहारनि बाना ।। १० ।।
इत्यादक [illegible]ु विद्या भारी । रीझहिं भट जबि करति बिहारी ।
'धंन धंन' [illegible] बंदन ठानति । जाहिं सिवर महिं, अपर बखानति ।। ११ ।।

महिमा इम पसरी सभि बिखै। पिखैं घनो सुनि सुनि कवि लिखै।
इक दिन थिर गोदावरि तीर। बैठे प्रभू नरन की भीर॥ १२॥
एक सिख आयो तिह समों। भेट नगीना धरि किय नमों।
अवलोकयो ले करि निज हाथ। गेरि गुदावरि मैं दिय नाथ॥ १३॥
बिसम्यो सिख मन चितवन ठानी। कीमत नहीं गुरू इस जानी।
हल को जानि गुदावरि गेरा। कहिनो बनै कहां अबि मेरा॥ १४॥
पश्चाताप करति चित लह्यो। क्रिपा निधान तांहि सो कह्यो।
'जे बहु कीमत केर नगीना। निकट निहारि निकार प्रबीना॥ १५॥
उत्तम हुते हमहिं नही जाना। बहुत मोल को तैं न बखाना'।
इम सुनि सिक्ख उताइल कीनि। बर्यो गुदावरि ह्वै पटहीन॥ १६॥
जल अंतर जत्रि द्रिषटि लगाई। पिखे नगीन परे समुदाई।
गन हीरनि के गंज लगाए। लखी प्रभु माइया बिसमाए॥ १७॥
कहां नगीने केर गुमाना। जबर जवाहर जाहर नाना।
सभि तजि शीघ्र निकसि करि आयो। पग पंकज श्री गुर लपटायो॥ १८॥
'मैं अजान महिमा नही जानी। तीन लोक मालिक गुन खानी।
बखशहु भूल बखशन हारे। मुसकावति श्री मुखहुं उचारे॥ १९॥
'हरि हरि सिमरो निश्चा धर्यो'। नाम 'नगीना घाट' सु पर्यो।
इम बिलास प्रभु करति अनेक। पुन दिवान मैं थिरि दिन एक॥ २०॥
धनी पठान आइ तिह समो। बैठ्यो हाथ जोरि कोरि नमो।
दसतावेज[1] खास प्रभु केरी। सो विकासि करि धरी अगेरी॥ २१॥
'लिखत सहंस्र इकादश जानो। मोल तुरंगम को पहचानो।
रावरि संग जंग बहु परे। हम नहिं आए, लेनि न करे॥ २२॥
बीत्यो चिरंकाल इम नाथ। परी निशानी रावरि हाथ।
लए अनंदपुरी महिं वाज। तबि ते मैं दिखराई आज॥ २३॥
लेन उमैदवार धन केरा। पूरब भयो न आवन मेरा।'
सुनि श्री मुख ते तिसे उचारा। 'निशचै लैनो दरब उदारा॥ २४॥
मोल हयनि को है हम पाद। तऊ कीनि तैं ने परमाद।
लैंबे हेतु नहीं कित आयो। अपर अपर कारज बिरमायो॥ २५॥
अब भी जे लिख दे इक थाएं। प्रपति दरब होइ तहि जाए।
जे निशचा धरनों उर भारी। हम ते संमत तीस पिछारी॥ २६॥
विदतहिं तत्रहि निशान नगारे। पंथ खालसे को बल भारे।
अवनी राज लेहिंगे लरि कै। शत्तरू संग संघर महिं दरि कै॥ २७॥

---

1. दस्तावेज़

तबि सिंघन महिं जो सिरदार। देग तेग को धनी उदार।
तिस को लिखति इही दिखरावो। ब्याज समेत दरब को पावो ॥ २८ ॥
सुनि कर जोर पठान बखानै। 'ब्याज लैंनि हम है न इमानै।
रावरि आइसु नही बहोरैं। मोल हयनि को सो हम लोरैं ॥ २९ ॥
भए प्रसन्न सुनी पुन बानी। 'साधू साधू इमान महानी।
इह कागद जो लिख्यो हमारा। मानहिं सभ सिंघनि सरदारा ॥ ३० ॥
दुगन चगूना दस गुन धन को। लैं हैं तबहि रखो थिर मन को।
तुव संतत को महिंद गुज़ारा। हुइ है बिन संसै सुख भारा ॥ ३१ ॥
सुनति खान पग टेक्यो माथा। रुखसद[1] भयो जोर करि हाथा।
जबै खालसा बिदत्यो भारी। भयो राज लीनो रिपु मारी ॥ ३२ ॥
तबि सरदारनि के ढिग गयो। धन गन सुख सो प्रापति भयो।
संतति धनी बिसाल भए है। आदर सिंघन सभिनि दए है ॥ ३३ ॥
इस बिधि सतिगुर दिवस बिताए। चलन बिकुंठ समो रियराए।
आवति साध जमात उदासी। दरशन कर बंदे रहि पासी ॥ ३४ ॥
लेहि तिहावल[2] रसत हमेश। सिमरहिं सतिगुर को उपदेश।
देग होति बरतै जिस बारी। तांहि समैं रौरा परि भारी ॥ ३५ ॥
इक दिन शाहु बहादर सुन्यो। अपन उमरावनि महिं भन्यो।
'यहि सुनियति कैसे बड रौरा[3]। लखीअति गुरू सिवर की ठौरा ॥ ३६ ॥
सुधि हित मानव शीघ्र पठायो। सुनि कारनि को हटि करि आयो।
हाथ जोरि करि अरज़ गुजारी। 'बरतहि देग गुरु की भारी ॥ ३७ ॥
लेति सु देति खालसा बृंद। बोलति आपस बिखै बिलंद।
को जाचति ठहिरावति कोई। को बरजति को रिस महिं होई ॥ ३८ ॥
सुनि ब्रितंत को शाहु बिचारा। धुधा सहित रहि पंथ उदारा।
अलप आमदन है इस देश। अचन हार नर मिले विशेश ॥ ३९ ॥
दरब रोज को कछु कर दीनो। लंगर हेतु सुनावन कीनो।
लैं लै रसद खरीद बिसाला। बनै तिहावल कर्यो क्रिपाला ॥ ४० ॥
बरतनि लागि मच्यो बड रौरा। सुनियति दूर दूर की ठौरा।
आए निता प्रति दरब घनेरा। होत कलाहल तथा बडेरा ॥ ४१ ॥
दिन ठाठक महिं पुन सुनि शाहू। जान्यो खरच बढ्यो गुर पाहू।
दरब प्रथम ते घनो पठायो। 'लंगर करो जितिक मन भायो' ॥ ४२ ॥

---

1. छुट्टी ली 2. कड़ाह प्रसाद—क्योंकि इसमें खांड, आटा अथवा सूजी तथा घी समान अनुपात में डाला जाता है 3. शोर

अधिक दरब को पठवति ज्यों ज्यों। रौरा बधत देग महिं त्यों त्यों।
दया सिंघ पहुंचयो किस कारन। ए प्रसंग सभि कीनि उचारन ।। ४३ ।।
'धुधत रहति लखि दरब पठावो। त्यों त्यों अधिक रौर सुनि पावों।
इह कारन क्या देहु बनाई। दया सिंघ तबि कह्यो सुनाई ।। ४४ ।।
पंथ खालसे महिं बड रौरा। कर्‌यो बचन सोढी सिर मौरा।
कयो हूं मिटति नही अबि सोई। बरतहि बडहुं कछू. शोर बड होई ।। ४५ ।।
बिसम्यो सुनति बहादर शाहू। जान्यो दल दीरघ गुर पाहू।
रह्यो पुचावति दरब घनेरा। लंगर बततहि बडहुं बडेरा ।। ४६ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने **'श्री गुर देगं प्रसंग'** बरननं नाम चौदसमो अंशु ।। १४ ।।

अंशु १५

माता साहिब देंवी सुंदरी प्रसंग

दोहरा

गमन करन वैकुंठ को लख्यो समा निपराइ।
साहिब देवी निकट रहि इह गुर सहि न सकाइ ॥ १ ॥

चौपई

राम कुइर भाइ कहि कथा। सुनि श्रोता बीती शुभ जथा।
अबचल नगर जाति मग मांही। मै भी संग तज्यो तहि नाहीं ॥ २ ॥
मम माता पीछे ते छाई। केतिक दूर मिली तहि आई।
करि बंदन को अरज़ गुज़ारी। 'एक पुत्तर है मोहि अगारी ॥ ३ ॥
दखिण देश दूर है जाना। पिखिन कहां, सुध सुनियन काना।
जानि दीन मुझ को दुख परै। पुत्तर बिरहि ते नहि किम सरै ॥ ४ ॥
क्रिपा सिंधु इह क्रिपा करीजै। मेरो पुत्र संग मुझ दीजै'।
इत्तयादिक माता ते सुने। सुत सनेह ते संकट गने ॥ ५ ॥
मुझ सों कह्यो 'जाह तुम भाई। जननी हेतु लैन के आई।
मारग दूर उलंघति छाई। अबि कैसे एकलि फिरि जाई ॥ ६ ॥
इक[1] पुत्तर बिरहुं[2] नही सहारै। नाहि त हमरे संग सिधारैं।
सुनि मै गुर को खरो अगारी। भयो दीन इम बिनै उचारी ॥ ७ ॥
मेरो नेम दोइ निरबाहू। रहनि हमेश आप के पावू।
दरशन करौं न अचौं अहारा। बिन हेरे रहि हौं निरहारा ॥ ८ ॥
तुम बिधरे जबि अंन न खै[3] हो। किह बिधि इह सरीर निरबै हों।
प्रथम करहु को अस उपचारा। बहुर हटावहु देश मझारा ॥ ९ ॥
सुनि सतिगुर ने रिदे बिचारी। सभिनि सुनावति गिरा उचारी।
'चढहु अखरे हेतु जबि बाहर। हमरो दरशन पिखि तहि जाहर ॥ १० ॥

---

1. जिस का एक ही बेटा 2. विरह् 3. नहीं खाऊंगा

जबि चाहो तबि निकसि पधारहु। कानन महिं हम दरस निहारहु'।
इम मुझ से कहि कीनसि त्यारी। साहिब देवी साथ उचारी ॥ ११ ॥
तुम भी हटि दिल्ली पुरि जाहू। बसहु सुपतनी के नित पाहू।
सभि संगति तुम सेव कमावै। हम सभ दुहअनि[1] दर्शन पावै' ॥ १२ ॥
इत्त्यादिक बहुती समुझाई। तज्यो न संग बिसाल हटाई।
दरशन करि अहार तो खोई। मोहि समान नेम निबहाई ॥ १३ ॥
मान संग मैं हुइ हट पर्यो। आवन मदद देश महिं कर्यो।
नित अखेर दिन गमनौं बाहर। दर्शन गुर दरसहुं तबि ज़ाहर ॥ १४ ॥
अबचल नगर गए गुर रहे। समा अत तन को तबि लहे।
संग सती हुइ साहिबदेवी। चित महिं चितवत भे प्रभु एवी ॥ १५ ॥
अपने ते तबि चहति बिछोरी। पठन हेत दिल्ली पुरी ओरी।
कह्यो 'जाहु अबि देर न लाए। बसहु सुपतनी है जिस थाउ ॥ १६ ॥
सुनि साहिब देवी कर जोरे। दीन मना हुइ चरन निहोरे।
तुम बिन मोर अलंब न कोई। देखि अचौं सल भोजन दोई ॥ १७ ॥
बिछुरे ते दरशन किम होई। सहौ कशट प्रानन को खोई।
कौन गती प्रभु होइ हमारी। बनि लचार मरि रहउं बिचारी' ॥ १८ ॥
खड़ग आदि खट आयुध धरे। खषटम गुरु सजावन करे।
श्री गोबिन्द सिंघ निकट मंगाए। साहिब देवी संडपि अलाए ॥ १९ ॥
'दर्शन करैं हमारो पथा। इन को अवलोकन लखि तथा।
करहु प्राति को जबि इश्नाना। दर्शन करहु ध्यान मम ठाना ॥ २० ॥
इम निबहैग नेम तुहारा। ले करि पहुंचहु पुरी मझारा'।
इत्तयादिक कहि बहु समुझाई। कोने दास संग समुदाई ॥ २१ ॥
भई बिबस बिधुरी पति साथ। पतिबरंता चितवति तनु नाथ।
आग्या मेरी जाइ न कोई। पुनि बिकुंठ को चलिबो होई ॥ २२ ॥
संग सती को हवन मेरो। नहिं चाहित नीको बिधि हेरो।
यांते चित शोक की अगनि। केतिक दिन महिं रहौं निमगन ॥ २३ ॥
तन सुकाइ पिंजर करि देऊं। मरौं अंत को बहु दुख होऊ।
इम बिचार हुइ सकट साथ। त्याग न सकहि परम प्रिय नाथ ॥ २४ ॥
दीन मना बंदे जुग हाथ। अश्रु बिमोचति पग धरि माथ।
कर्यो गमन को बेबस होई। हेरि हेरि पति को बहु रोई ॥ २५ ॥

---

1. दोनों के

दास पास आयुध उठवाइ। निज आगे कहि करि चलिवाए।
चढि डोरे गमनी मग मांहू। मन ते रह्यो नाथ के पाहू ॥ २६ ॥
जियत मेल की आस चुकाई। इन देहिनि की इही बडाई।
जे सम ब्रिति राखैं सो धीर। अतवंत[1] है सकल सरीर ॥ २७ ॥
जियत मेल की आस चुकाई। इन देहिनि की इही बडाई।
जे सम ब्रिति राखैं सो धीर। अतवंत है सकल सरीर ॥ २७ ॥
मिलनि सु ब्रिछुरनि जनम रू मरना। बालक बिरध होइ कै तरूना।
नहीं अवसथा थिरहि कदाई। जल सलिता जिम नित बहि जाई ॥ २८ ॥
बन्यो जगत सभि झूठ पसारा। जो बिदतहि सो नहीं निहारा।
इम चितवति मारग मो आई। सने सने दिल्ली नियराई ॥ २९ ॥
सुधि सुनि कै मातहि आगवानू। संगति गई अग्र तजि भवनू।
नमो करी सभि ने कर जोरि। देकर नाना भांति अकोर ॥ ३० ॥
सनमानति पुरि महिं ले आए। सीस सुंदरी अग्र निवाए।
मिली सयतनी आपस मांही। सिमरति पति सुत रुदन कराही ॥ ३१ ॥
'दैव करी गति कहां हमारी। अंत समै गुर ब्रिहु महिं डारी।
अति कठोर धिक रिदे हमारे। सुति पति बिछुरे, मे तन धारे ॥ ३२ ॥
मिली परस्पर दोनहु रोई। त्रिय सिक्खिन की गति तस होई।
बिनै समेत प्रबोधति घनी। 'गुर पतनी तुम नहिं इम बनी ॥ ३३ ॥
सेवा करहिं सरब हम दासी। निस बासुर परचहिं रहि पासी'।
इत्तयादिक बहु भाखनि कर्यो। मात सुंदरी धीरज धर्यो ॥ ३४ ॥
मंजी पर बिधावनो छाए। सो आयुध कर नमो रिकाए।
दोनो सौत प्रभाति शनानैं। गुर सरूप करि तिन कौं मानैं ॥ ३५ ॥
पुशप धूप चंदन चरचावैं। दरशन करि भोजन को खावैं।
सिख संगति कित ते चलि आवै। गुर समान अवलोकि मनावै ॥ ३६ ॥
अरपति गन उपहार अछेरे। नित प्रति पूजा होति बडेरे।
महिमां शसत्रनि की बहु भई। छरी कामना सो सिख लई ॥ ३७ ॥
साहिब देवी सदा सचिंत। सौत सुंदरी निकट बसंति।
गुर शरीर को चितवन करती। निस दिन ध्यान रिदे पति धरती ॥ ३८ ॥
दुरबल तन जिस को हुइ गयो। शोक पराइन चित नित थयो।
पीत बदन आंसू दृग गेरति। नहीं समीप कंत को हेरति ॥ ३९ ॥

---

1. नश्वर

शस्त्र दरस कै भोजन खावै। अलप अहार कछु नहिं भावै।
इम अपनी बय सकल बिताई। त्रिय पति महिं चित बृत्ति लगाई ।। ४० ।।
मात संदरी सभि बिवहार। लेनि देनि की जेतिक कार।
सुत के सम अजीत सिंघ पारै। बहु सनेह करि भोजन ख्वारै।। ४१ ।।
नाना बिधि के बसत्र बनावै। निकट बिठाइ हेरि पहिरावै।
हेम विभूखन बहु बरखाए। ले मुकता कानन महिं पाए ।। ४२ ।।
परचे तिह सो करति सनेहू। सूरति जन अजीत सिघ एहू।
मोल तुरंगम चचल लीनि। बहु धन दे करवाइस जीन ।। ४३ ।।
हय चढाइ करि पुरि महि फेरहि। गुरू पुत्तर कहि सगरे हेरहिं।
इस प्रकार दिल्ली पुरि कथा। श्रोता सुनहुं प्रीति धरि तथा ।। ४४ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने '**माता साहिबदेवी संदरा प्रसंग**' बरनन नाम पंचदशमो अंशु ।। १५ ।।

अंशु १६

शाहु प्रसंग

दोहरा

गाथा अबचल नगर की सुनहुं सिख मन लाइ।
सिघ निकट प्रभु के रहै इक आवैं इक जाइ ॥ १ ॥

सवैया

शाहि बहादर एक दिना ढिग आइ बिदा हित श्री गुर पासी।
संग समूह लीए उमराव बडे उलमाउ[1] मुलाननि रासी।
जेवर जेब जवाहर ज़ाहर यौ झमकैं, उड़ जैसे अकाशी।
सूखम पोशिश पाइ शरीरहिं बीर सधीरज बुद्धि प्रकाशी ॥ २ ॥
हाथनि बंदि करी अभिवंदन नौरंग नंदन बैठि गयो।
कै सनमान बखानति श्री गुर 'शाहु कहो शुभ राज थयो।
साध[3] मवास लए सभि कै नहिं, दछिण आइसु मान भयो।
कौन मनोरथ और रिदै अबि, तोर पिता सम जेर कयो' ॥ ३ ॥
श्री गुर रावर की करुना मुहि, दाति दई पतिशाहति सारी।
कौन सकै अर[3], मार लीए अरि, सैन फिरै जितहूं कित भारी।
दछिन देश अशेश लियो, बस हौं दिन केतिक और अगारी।
फेर चलौं दिल्ली पुरि को तहिं बैठ सभै सुधि लैहौ संभारी ॥ ४ ॥
हैदराबाद को जाऊ अबै, हित होनि बिदा तुम तीर अयो।
कूच करौं पुन देश पंजाब को कारज सारो सुधार लयो।
श्री प्रभु ! बूझति हौं, मत हिंद को काचौ अहै इह कैसो कियौ।
पाथर को घर[4] मूरति को करि चित्र किधौं लिखि भीत दियौ ॥ ५ ॥
पूजति है तिह सीस निवावति भोजन को धरि देति अगारी।
कारज कौन भयो तिस ते जुऊ आप रचौ बहु भांत सुधारी।
सीचति हाथन ते छिति पै, किम जाइ बडेरन पै चलि बारी।
श्राध करैं पित्रानि के हेतु अचारत है दिज पुंज अहारी ॥ ६ ॥

---

1. इस्लाम के विद्वान् 2. मौलवी 3. मुकाबले में कोन ठहर सकता था 4. बनाकर

तीसरे और सुनो गुर साहिब ! हिंदुनि को मति है तिम काचा ।
मेवा[1] अमेजि क खंड[2] औ घीउ मैं जौं तिल डालति एक ज्योंराचा ।
आग महिं पाइ कै स्वाह[3] करैं तिह ले फल फेर मुनीन उबाचा ।
कौतक होवति है हमरे उर कूर ही को एह मानति साचा ॥ ७ ॥
श्री गुर उत्तर देति भए, मत हिन्दुन के सभि करम कमावैं ।
खेत की सेव कृसान करै वहु अंन पकै सुख सो घर खावैं ।
धेनु की सेव करै हित सों दिन केतिक मैं पै स्वादल पावै ।
भूपति सेवति ले धन को बहु सेवन ते सभि हूं बनि आवै ॥ ८ ॥
इशट अरोपि कै मूरत महिं उर ध्यान धरै मन प्रेम लगावै ।
पावति हैं धरि कमान को, चित को निशचा नहिं क्यों सफलावै ।
आसत वासत दोइ रचे नर श्री परमेशुर को चित भावै ।
आसित ते गन हिन्दू भए तुरकेश भि नासत ते बन आवै ॥ ९ ॥
मूल तरोवर के जल सिंचत ऊपर ते लुनीए फल तासा ।
त्यों चित जानहु भूतल की कृत, लेति सभै फल जाइ प्रकाशा ।
काचो मतो अपनो तुम देखहु, मानति हो कबरै, जिन नाशा ।
क्या तिन ते कहु काज सरै, मृतका मिलिगे तनु कया धरि आसा ? ॥ १० ॥

दोहरा

करहु बंदगी रोज तुम बंदा बन करि आप ।
देख्यो सुन्यो न रन किते, करहु निवाज कलाप ॥ ११ ॥
रूप न रंग न ठौर कित पाक अल्लहि अपाज ।
सिजदा करहु, दशद दिहु, रोजा कूर निवाज ॥ १२ ॥
कहिना क्या अरु हिरस क्या वाद जाति बकबाद ।
नीकी करनी जिन करी कर्यो खुदाइ सु याद ॥ ११ ॥

चौपई

पीर पैकंबर जानि सजूद । देत फाइता[5] बहुत दरूद ।
रोजा[6] बांग[7] निवाज[8] सुजान । मुसल मान इन करहि प्रमान ॥ १४ ॥
त्रै संध्या करनी धरि प्रीत । देवल पाहिन पूजन रीति ।
इत्तयादिक हिन्दुनि परवाना । हम दोनहुं को जानि समाना ॥ १५ ॥

---

1. चीनी मिला कर 2. चीनी 3. भस्म, नष्ट 4. हाथ जोड़ कर प्रार्थना करना 5. मृतकों के नाम रोटी देना 6. मुहर्रम के मास में व्रत रखना 7. प्रातः काल मसजिद में देने वाली आवाज़ 8. नमाज़

त्यागन करे भाउ लखि बीजा। उतपति कर्यो खालसा तीजा।
झूठे लखि दोनहुं हम छोरे। पंथ अकाल पुरख को तलोरे॥ १६॥
बाद पख्ख को सकल बिनाशा। धरी अकाल पुरख की आसा।
जनम्यो अबै खालसा नयो। बालक के मनिंद जग थियो॥ १७॥
जुवा दोइ जबि जोर संभारे। कबर मडी कौ फोडि उखारे।
देवल बुत प्रसती नहिं मानै। एक अकाल अकाल बखानै॥१८॥
बस्यो बिदेश जु बाप तुहारा। परेशान बिन खरच लचारा।
बिन दरगाहि बिखरच खुआरी[1]। हिंदनि के दैं खरच पिछारी[2]॥ १९॥
दीरघ स्वास भरे दुख पावै। पिदर[3] तुहार बहुत बिल लावै।
होइ बिखरच कहाइ गुलाम[4]। करै बिखरच बुरे बहु काम॥ २०॥
बनै चोर बटबारी करै। हाथनि खरच न मांगै परै।
हेरि लेहु जग को बिडहारा। तिम आगे लखि बनज करारा॥ २१॥
सुनि करि शाहु बहादर तबै। बोल्यो गयो न, हेरति सभै।
उत्तर जानि कछुक मुसकान्यो। गुर बोलन महिं समरथ मान्यो॥ २२॥
अपर मुलान अरु उलमाऊ। सूब कितिक थिरे उमराऊ।
सुमति प्रबीन आन मन मौने। गुर सनमुख नहिं बोल्यो कौने॥ २३॥
—सभा बीच जे आइ न बात। होति अनादर म्रितु जिस भांत।
प्रशन करहि उत्तर दे तूरन सरब कला समरथ गुर पूरन॥ २४।
समुझि समुझि इत्यादिक मन मे। को नहिं बोल्यो कुछ तिस छिन मैं।
पुन बंदे की बूझि गाथा। लाखहुं करे जिनहिं बिन माथा[6]॥ २५॥
श्री प्रभु! अबि कीजै उत शांती। द्वैशी भए आइ के घाती।
आदि वज़ीदै खोज न पाए। ज़बरदसत से सकल खपाए॥ २६॥
खत्री झूठा नंद प्रहारा। सैल देश सभि मारि उजारा।
दिन प्रति सुधि पहुंचति मुझ पासी। सभि पंजाब बिसाल बिनाशी॥ २७॥
श्री मुख ते फुरमावन कर्यो। 'ब्याह भऐ ते तेज प्रहर्यो।
बहुर खालसा होइ निआरा। हेतु नाश को भा हंकारा॥ २८॥
प्रपति पलटे सकल हमारे। गिरपति दुशट अनिष्ट प्रहारे।
पुरि सिर्हंद को मारि उजारा। अबि निकसै करि जंग अखारा॥ २९॥
लशकर ते सो गयो पलाई। दुरग बिखै घेरे परि जाई।
तहि बैस लगि सलतन सारी। बनी रहै हम जथा उचारी॥ ३०॥

1. खर्च के बिना मनुष्य तंग होता है 2. मरणोपरान्त 3. पिता 4. दास
6. हमने किये

पाछे घने उठहिं उतपाता। उजरहि देश होहि नर घाता।
जिन को कोइ न सकहि मिटाई। ऐसे परहि रौर समुदाई ॥ ३१ ॥
तोहि बाप किय पाप कलापे। तिस करि कुल ते सलतन खापे।
अवनी पति ह्वै अनिस प्रकारे। अरनि लरनि अरु अरिनि प्रहारे ॥ ३२ ॥
सुनि करि शाहु बहादर हरख्यो। मोहि राज थिर हुइ—उर परख्यो।
'पाधे की पाधे हुइ जैसे। करहि खुदाइ लखहि को कैसे ॥ ३३ ॥
श्री सतिगुर तुम मोहि सहाइक। भूत भविख विघन के घाइक।
शरन परे की पति मम राखी। भई साच जिस रावर भाखी ॥ ३४ ॥
हिंदु आइसु अबि करौं चढ़ाई। 'दर्शन करौ बहुर मै आई'।
श्री मुख ते मुसकति फुरमायो। 'दर्शन होइ रहे जिम भायो ॥ ३५ ॥
गमनहु बिचरहु दखिण देश। करि लीजे अनुसारी अशेश।
पुन दिल्ली के तख्त सुहावहु। आरबला लगि राज कमावहु' ॥ ३६ ॥
उठ्यो बंदना करि तबि शाहू। सिरेपाउ दीना गुर ताहू।
अपर नमो करि संग सिधारे। सिकत उचरिते सिवर पधारे ॥ ३७ ॥
निस बिताइ प्राती चढि गयो। दखिण देश बिचरते भयो।
अबचल नगर गुरू थिर रहे। करनि पयान बैकुंठे चहे ॥ ३८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने 'शाहू प्रसंग' बरननं नाम खोडसमो अंशु ॥ १६ ॥

अंशु १७
पठान प्रसंग

दोहरा

इस प्रकार श्री सतिगुरू केतिक दिवस बिताइ।
दोइ समैं समैं महिं खालसा आवै दरशन पाइ ॥ १ ॥

चौपई

चहुं दिशि लगहिं दिवान बिसाला। गुरबाणी छुनि सुनति रसाला।
बसत्र शसत्र को अंग सजावहिं। श्री गोबिन्द सिंह बीच सुहावहिं ॥ २ ॥
जिम जच्छन महि थिरे कुबेर। देति कामना सभिनि बडेर।
किधौ देवता ब्रिंदनि बिखै। राज सची जुत[1] सुरपति पिखै ॥ ३ ॥
मुनिन सभा सभा महिं कै रघुबीरा। धरि कट खडग हाथ धनु तीरा।
कै जादव पुंजनि के सहत। थिरे श्यामघन सुंदर महत ॥ ४ ॥
क्रिया कटाछनि ते अविलोक। करति धिनक महिं दास अशोक।
शुभ उपदेश देति सभि काहूं। जथा कमलमुनि निज सिख माहूं ॥ ५ ॥
ब्रह्म ग्यान को करति उचारन। त्रिम चतुरानन कै वल कारन।
जहिं कहिं सेवक होत सहाई। जिम पदमापति तूरन धाई ॥ ६ ॥
अन्दातम महिं निशचा निस दिन। जथा अडोल शंभु को दिढ मन।
कविता करनि चहुँ सम ब्यासा। रचे ग्रन्थ बरने इतिहासा ॥ ७ ॥
धनु बिद्धया महिं प्रीति निबाही। जिम अरजन सगरी बय मांही।
दए कविनि को दान घनेरे। मुक्ता हीरे चीर अघेरे ॥ ८ ॥
बावन कवि समीप ही रहैं। पायो दरब जितिक चित चहैं।
भारथ आदिक ग्रिथ बनाए। छंद बंद गुनीअनि मन भाए ॥ ९ ॥
जथा बिक्रमाजीत उदारा। दियो दान तिम जस बिसतारा।
सतिगुर के गुन कविनि बखाने। शेश शारदा लखि सुकचाने ॥ १० ॥

---

1. इन्द्राणी सहित इन्द्र

लीला करी मानवी जैसे । कुछकु करी बरनन मै तैसे ।
मिसरी गिरि पपीलका पावै । जितिक शकति सो बदन उठावै ।। ११ ।।
इक दिन बैठे सहज सुभाइ । चहुं दिशि विखै सिंघ समुदाइ ।
पुत्तर पठान तबै चलि आयो । करि सलाम को सीस निवायो ।। १२ ।।
शमश नहीं जिस मुख पर आई । भरी नहीं बहु तन तरुनाई ।
अदब साथ आगे रहि खर्‌यो । श्री मुख ते कहि बूझनि कर्‌यो ।। १३ ।।
कौन मरद कीनो किम आवनि ? कौन नाम है करहु बतावनि ?
कौन देश किस पुरि घर तोरे ? कौन मनोरथ को डर लोरे ।। १४ ।।
कौन नाम है पिता पितामा ? कहु प्रसंग कैसे तजि धामा' ?
सुनि पठान के पूत उचारा ? हुतौ पेदै खां दाद हमारा ।। १५ ।।
नाम पिदर को सधेखाना । गुल खां मेरो नाम बखाना ।
मरद पठान आप पहिचानो । देश नगर घर दूर महानो ।। १६ ।।
द्वाबे बीच जलंधर जाहिर । छोटा मीर ग्राम तिस ठाहर ।
चिरंकाल चाकर पतिशाही । लेकरि दरब गुजर निरबाही ।। १७ ।।
जननी कहि करि मोहि सिखायो । सभि तावर को भेद बनायो ।
दिल जमाल[1] भा दरशन करिबै । सरब गुनाहि शीघ्र परिहरिबै ।। १८ ।।
भयो पाक मैं लह्यो दिदारा[2] । तुम पीरन के पीर उदारा ।
सुनि सतिगुरू खान सनमाना । कह्यो समीप बिठावति ठाना ।। १९ ।।
आवनि करहु हमेश इथाई[3] । दरशहु परचहु जिम उर भाई ।
बैठ्यो चतुर घटी लगि खान । बहुर उठ्यो धरि मसतक पान ।। २० ।।
झुकि सलाम कीनी हुइ खरे । गुरनि बिलोक्यो करुना धरे ।
पंच अशरफी बखशन कीनि । ले करि गुल खां हरख्यो पीन ।। २१ ।।
पुन चलि गयो आपने थाना । जननी संग प्रसंग बखाना ।
'मिहरबानगी करी क्रिपाला । बखश्यो आवति दरब बिसाला ।। २२ ।।
हुकम कर्‌यो इम आउ हमेशू' । सुनि माता तहि हरख विशेषू ।
दिवस आगले पुन चलि गयो । झुकि सलाम को ठानति भयो ।। २३ ।।
सतिगुर सादर निकटि बिठायो । थिर्‌यो घरी श्री बदन अलायो ।
'चौपर खेल लखहि कै नांहीं' । सुनि कै कह्यो 'आइ मम पाही' ।। २४ ।।
कोश बिखै ते कहि अनवायो । तिस निज महि से खेल बिधायो ।
डल कंचन के चूनी जरे । तिम ही नरद जगमगा करे ।। २५ ।।

1. सौंदर्य 2. दर्शन 3. इस स्थान पर

चले दाव डल को धित मेलि। परचे इक दुइ बाजी खेल।
बहुर बारता गुरू चलाईं। 'कबि ते करी चाकरी पाई ॥ २६ ॥
शाहु निकट कबि के तुम रहे। कितिक दरब को तहिं ते लहे'।
सुनि कर जोरि पठान बखानी। 'चिरंकाल की लगी महानी ॥ २७ ॥
मम जननी सभि भन्यो प्रसंग। सो मैं कहौं आप के संग।
शाहु समीप मिल्यो मम दादा। किस कारन ते गुर संग बादा ॥ २८ ॥
मर्यो जुद्ध महिं सो ततकाला। पिता रह्यो धन लह्यो बिसाला।
करति चाकरी हज़रत केरी। शाहु जहां पुन अविरंगनेरी ॥ २६ ॥
पूरन बय ते पित मरि गयो। मैं चाकर पुन तित ही भयो।
लग्यो प्रथम दरमाहो जेता। लेते रहे सद हम तेता' ॥ ३० ॥
कितिक समैं इम करति बितायो। उठि सलाम दित सीस झुकायो।
पंच रुपये प्रभु दिवाए। ले इनाम गमन्यो हरखाए ॥ ३१ ॥
सिंघनि परख्यो गुर को ख्यालू। बात बिपरजै करति बिसालू।
हाथ जोर तबि अरज गुज़ारी। '—तुरक लखहु रिपु तुमहिं उचारी ॥ ३२ ॥
आइसु अचल आप की अहैं। जथा बायु ते भूधर रहे।
अबि इह खान आप सनमाना। निकट बिठारि स्नेह महाना ॥ ३३ ॥
चौपर खेलति देति इनामू। रुख करि मानहुं तांहिं सलामू।
संसै सभि सिंघन कै होवा। नयो सुभाव आप को जोवा' ॥ ३४ ॥
श्री मुख हसे तबहि गुन खारी। सादर सभि सन कीनि बखानी।
'सुनहु खालसा काम हमारा। पर्यो इसी के हाथ उदारा ॥ ३५ ॥
इस को ददा सूरमा बली। गुर निज ढिग राख्यो बिधि भली।
दई जंग की अधिक बडाई। तिस ही पर शमशेर चलाई ॥ ३६ ॥
यांते उपजी मन हम कराना। लरको भयो सनेहै करना'।
इम कहि सिंघन को संतोशा। दासन के भरोस बिन दोशा ॥ ३७ ॥
लखे न जाहिं चरित जिन रूरे। दुख दारिद हरता गुर पूरे।
निसा परी किय खान रू पाना। सुपति जथा सुख क्रिपान निधाना ॥ ३८ ॥
बडी प्राति ते सोच शनाने। अनंदातम महिं लाइखि ध्याने।
दिनकर उदै भयो नभ जबै। कमल बिलोचन बिकसे तबै ॥ ३९ ॥
शसत्रु बसत्रु को अंग सजाइ। बैठहि बीच खालसे आइ।
सवाजम दिन चढे अहारा। अर्चहि प्रभु गन सिंघ मझारा ॥ ४० ॥

[illegible] ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने **'पठान प्रसग'** बरननं नाम सपत दशमों अंशु ॥ १७ ॥

अंशु १८
घाव प्रसंग

दोहरा

पुरि पाली महिं बसत द्वै गुर के सिक्ख सुजान ।
दर्शन गुर अभिलाखते धारति प्रेम महान ।। १ ।।

चौपई

सो चलि करि श्री प्रभु ढिग आइ । द्वै जमधर अकोर कहु ल्याए ।
कंचन लिपति चारू चमकंती । उत्तम लोह फुलादिनिवंती ।। २ ।।
तीछन मिछन करी निरीछन । भए प्रसंन क्रिपा धरि ईधन ।
पुरी कामना सिक्खनि केरी । तित ऊपर करि खुशी बडेरी ।। ३ ।।
इतने महिं पठान चलि आयो । थिर हुइ सनमुख सीस झुकायो ।
सादर निकट बिठावन कीना । जमधर तिस कर महिं दीना ।। ४ ।।
'गुल खां ! देखि वार[1] कै करै । निज शत्रु के प्रानन करै ।
लगे घाव के सनमुख होइ । वार करहि कैधौ नहिं सोइ ।। ५ ।।
सुनि पठान इम बाक बखाना । अस जमधर जे हुइ मम पाना ।
'बल ते करौ वार इक ऐसे । उकसन देऊ नहीं रिपु कैसे ।। ६ ।।
उत्तम लहा लखिपति खर है । नहीं धार पर ठहिरति कर है ।
इस ते वार बहुत क्या करै । लगै एक ते शत्रु मरै' ।। ७ ।।
जमधर तिम ही निकट रखायो । हित खेलन चोपर अनुपायो[2] ।
लागे डल आपस महिं गेरन । इतै उतै नरदन को फेरनि ।। ८ ।।
परहि दाव को नरद उठावै । मारति मुख ते बाक अलावै ।
'पिता पितामा पलटा लेप न । थूक जन्म तिस के सुत गेय न ।। ९ ।।
हाथ शसत्र शत्रू ढिग होइ । मारहि नहिं कपूत है सोई ।
इम सुन खान बिमन ह्वै रह्यो । मोहि सुनाइ रिसावति रह्यो ।। १० ।।
इनहु पितामे मोर पितामा । रण महिं मारि पठ्यो जम धामा ।
सो सिमरति अरु मोहि सुनावै । क्या कारन कुछ लख्यो न जावै ।। ११ ।।

---

1. कितने 2. मंगवाया

जथा जोग भाखहि बच भला। होइ कपूत जो लए न बदला।
इत्यादिक बिचार बहु रह्यो। नहि मारन को निशचै लह्यो ॥ १२ ॥
इक दुइ बाजी खेल हटाई। पुन चौपर को दीनि उठाई।
हाथ शसत्र शत्रू हुइ पासी। हुइ कपूत करि सकहि न नाशी ॥ १३ ॥
जे कुलीन टारति नहिं काला। मार लेति है करति उताला।
सुनि पठान कै कोप घनेरे। जथा सरप सुपते कहु घेरे ॥ १४ ॥
जिम गज खूती तोमर प्रेरे। कंकर सौं जिम केहरि घेरहि।
तिम पठान ले दीरघ स्वासा। सोचति रह्यो तऊ गुर वासा ॥ १५ ॥
जाना समा जानि को धामू। उठ्यो कोप द्रिग कीनि सलामू।
सनुख न देखि सकै मन फिर्यो। तबै इनाम दिवावनि कर्यो ॥ १६ ॥
पंज रजतराग ले चलि आयो। चित चिंता बड नदी बहायो।
बैठ्यो जननी के ढिग जायो। नहिं बोलति मनु मनहुं हरायो ॥ १७ ॥
बूझति 'हे सुत क्यो अनमनो। कहां बिगार्यो कारज घनो।
नहीं बदन पूरब सम हेरो। चिंता बसी कहां चित तेरो ॥ १८ ॥
सुनि माता ते सरब ब्रितंत। कर्यो सुनावन अपनि मतंत।
'हम पठान के पूत गुसैले। श्री गुर पूरब बात चितैले ॥ १९ ॥
बैन बान ते बीधन कीना। छैक करेजे महिं करि दीना।
घात करति मैं सोचति रह्यो। कई बार मोसो अस कह्यो ॥ २० ॥
सुनति पठानी सुत को बरज्यो। मारन मरने ते चित लरज्यो[1]।
'गुर को कहिन देहु जिम कहे। सदा पालते हम को रहे ॥ २१ ॥
सुनि कै रिसहु न म्रिदु बच कहो। गुर सो सधि सदा सुख लहो।
अलप बैस तूं तरून न भयो। चहु जीवन अपनो हित लयो ॥ २२ ॥
जो श्री गुर के तीर बिगारै। सिंघ अनेक तुरत ही मारैं।
तुझ को देति दरब हित करैं। हसत होइ, कधु कोइ न धरैं ॥ २३ ॥
इत्यादिक बहुतो समझायो। तऊ न तिस ने मन ठहिरायो।
चितवति चित सुपत्यो परि राती। चित महिं रड़कति उठत्यो प्राती ॥ २४ ॥
थूक जनम भाख्यो बहु बारी। हति कपूत सुनाइ उचारी।
खान पान करि दिवस गुजारा। ढर्यो द्रुपहिरो समो निंहारा ॥ २५ ॥
एक जाम दिन ते घलि गयो। करि सलाम को हेरति भयो।
भावी प्रेर्यो दरशन कीन। श्री प्रभु कहि कै आदर दीन ॥ २६ ॥

1. कार्य

निकट बिठाइ सराहनि लागे। खाननि बंसं न तजि रन भागे।
लरते करि है प्रान न प्यारे। कटु बाकन को नहीं सहारे॥ २७॥
कबहुं सभा औचक बनी जावै। शसत्र सभा महिं रिपु को घावैं।
ऐसी बातन ते बिरमाइ। पुन चौपर को दई विछाइ॥ २८॥
खेलति बाजी नरद प्रहारैं। कटु बाकन ते तरक उचारैं।
'पिता पितामे लए न बदला। थूक जनम ते काइर दिल्ला॥ २९॥
डरहिं मरण ते लानति थींदी। क्यों जनमयो जननी ते गीदी।
नहीं सूरमे को सुति सोई। दिल गीदी ते परखनि होई॥ ३०॥
करहि प्रान प्रिय मारन मरै। थूक जनम क्यों आयुध धरैं।
इम घेरति बहु जिम गज खूनी। जागति रिस मन दून चऊनी[1]॥ ३१॥
दो घटिका जबि हूं दिन रह्यो। चौपर तज्यो थिरन को चह्यो।
गुल खां सुनि सुनि धीरज धीरै। तकहि मारिबे गुर की ओरै॥ ३२॥
जक[2] तक करि तिन खड़ग सभार्यो। मारन को मन ब्योंत बिचार्यो।
हेरि सिंघ गन इत उत ताकै। हतौ आज जबि दोइ इकांकै॥ ३३॥
पठि सोदर अरदास उचारी। सभिनि गुरु को बंदन धारी।
रुख लखि कै निजनिज थल गए। उठति पठान बिठावति भए॥ ३४॥
थिरे प्रयंक ऊपरे फेर। इक जमधर लीनी कर हेर।
'गुलखां! निकट हुइ इस देखि। परख्रहु कीमति इसै विशेख॥ ३५॥
करि कै नगन दई तिस हाथ। पुन प्रेरन लागे कहि नाथ।
'पिसर[3] पिदर को बदला लैवे। हक्क उतार अपनो दैवे॥ ३६॥
वैरी मिलहि इकांत सथानी। आई होहि तबि आयुध पानी।
मारहि नही फूक मुख बां के। जीवन पर लानत बहु तां के॥ ३७॥
इम कहि लीने मूंद बिलोचन। अमल अफीम आइ जिम झोकनि।
गुल खां समै बिचार्यो मारन। तुम बिथर्यौं हुई दीपक जारन॥ ३८॥
द्रिग मूंदे अबि देखति नांही। थिरे सिंघ को नाहिन पाही।
जम धर नंगी तोखन हाथ। इत अत अवलोकति डर साथ॥ ३९॥
इतने महिं द्रिग पंकज खोले। समुख पठान निकट करि बोले।
सभा शत्रु हतिबे कहु पावै। चूक जाइ फिर हाथ न आवै॥ ४०॥
रहै बिसूरति गीदी होइ। थूक जन्म लानत ले सोइ'।
बार बार इम कह्यो गुसांई। बारि बारि द्रिग मूंदत जाई॥ ४१॥

---

1. चार गुना, चौगुनी 2. रुक रुक कर 3. बेटा

बार बार गुल खां को प्रेरा। सभि बिधि दाव बन्यो तिस हेरा।
जमधर नगन हाथ महिं धरी। प्रभु को ताकि प्रहारन करी ॥ ४२ ॥
समुख रिदै को जबै चलाई। गई निकल नहिं प्रविशी जाई।
त्रासति हाथ कंप करि गयो। तन को तनक घाव नहिं भयो ॥ ४३ ॥
पुन एकल ही प्रभु को हेरि। जमधर मारि दूसर बेर।
भुज के तरे गयो सो वार। लगी न तन को थिर जुझार ॥ ४४ ॥
पुन धरि धीर तीसरो मारा। लाग उदर महिं केतिक फारा।
लगे घाव ते कोई बिसाले। जमधर दूजी धरि संभाले ॥ ४५ ॥
ततछिन श्री प्रभु वार प्रहार्यो। उदन पठान शत्रु को फार्यो।
ऊची धुनि भाख्यो तिस बेर। 'है को सिंघ हमरो नेर? ॥ ४६ ॥
सुनति शब्द को ततधिन आए। नांगे खड़ग गहे कर छाए।
पिखि लखा सिंघ पर्‍यो पठान। बल ते हनि क्रिपान महान ॥ ४७ ॥
काटि ग्रीव ते सीस उतारा। पर्यो रौर सुनि इत उत भारा।
प्रभु जी कह्यो 'प्रथम ही मर्‍यो। कहि खड़ग प्रहारनि कर्‍यो ॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने 'घाव प्रसंग' बरननं नाम अषट दशमो अंशु ॥ १८ ॥

अंशु १६

पातो अकाल पुरख पठन प्रसंग

दोहरा

प्रथम तुरक की घाव को धुक्न देति नहिं नेर।
कारन करिबे हेतु अस आदर करति बडेर।। १ ।।

चौपई

कौतक रच्यो सकहि को जान। जमधर खाई पान पाठान।
गुल खां पर्यो निहारैं तिसे। प्रभु को घाव लख्यो नहिं किसे ।। २ ।।
जबि संतोख सिंघ ढिग गयो। रुधर प्रवाह बिलोकति भयो।
बागा सगरो लाल सु बरन। हेर्यो आसतरण भी अरुण ।। ३ ।।
महांराज ! निज लखहु सरीर। निकसति रुधर भीजगे चीर।
धीरज धारि रहे बर बीर। लग्यो घाव नहि मानति पीर ।। ४ ।।
सुनि पिख सरब खालसा आयो। घाव बसत्र टारति दरसायो।
'प्रभु जी ! जमधर घाव घनेरा। लग्यो आप के हम अबि हेरा ।। ५ ।।
किस बिधि को बिसतार्यो खेल। रोज तुरक सों राख्यो मेल।
रह्यो हजूर सिंघ नहिं कोई। तऊ तुरक ढिग राखा सोई ।। ६ ।।
आप करहु उपदेश प्रकाशा। कीजहि नहीं तुरक भरवासा।
इह रावर ने क्या करि लयो। कारी घाव खान ते खयो ।। ७ ।।
सिंघ संतोख सिंघ ते आदि। हेरि हेरि सभि लहे बिखाद।
धीर देनि को गुरू उचारी। 'भयो अकाल पुरख रखवारी ।। ८ ।।
करहु न चिंता चित महि कोई। घाव अलप असिकेत सहाई।
खान खोर[1] करि जमधर मारी। बहुत समै को द्वैश चितारी ।। ९ ।।
खषटम गुरू महां॰लि धामा। हत्यो जुद्ध महिं जहिं पितामा।
सुनति रह्यो पूरब की बात। अब लखि घात चह्यो मम घात ।। १० ।।
भयो अकाल पुरख रखवारे। तनक घाव भा जमधर मारे।
दूजी जमधर हमहुं प्रहारी। जानि दीनि लीन अरि मारी ।। ११ ।।

---

1. वैर भावना

सुनि सिंघन ततछिन जल लयाए। कर्यो पखारन श्रोणत जाए।
सूची लई लोहि् बर जोवा। रेशम तागा बंद परोवा ॥ १२ ॥
सने सने सीवन करि सारा। पाटी बंधि कीनि दिट भारा।
आछी रीति पलंघ पर आए। रूबि अनुसार अहारनि् खाए ॥ १३ ॥
सुपति रात बीती हुइ प्राती। लिखी खालसे मिलि करि पाठी।
शाहू बहादर ढिग सुध पाठी। हुतो निकट उत खोलति पाठी ॥ १४ ॥
इह कया भयो रह्यो बिसमाइ। तुरत जराहन को बुलवाइ।
करि तागीद दए हय बली। 'राज़ी करहु ज़खम बिधि भली ॥ १५ ॥
तुरंग धवावति सो चलि आए। दर्शन करि कै सीस निवाए।
खोलि ज़खम को सभि बिधि हेरा। शुभ उपचार करहु तिस बेरा ॥ १६ ॥
पीधे शाहू लिख्यो परवाना[1]। तिन खानन पर कुप्यो महाना।
'जे रावर की आइसु पाऊं। इन सभिहिनि के हाथ कटाऊं ॥ १७ ॥
कै नौका के बीच चढ़ाऊं। जल गंभीर महिं सभिनि डुबाऊँ।
श्री गुर ढिग आयो पठवायो। क्रिपा करति ही हुकम अलायो ॥ १८ ॥
'इह सभि कार हमहुं करवाई। तिल भर दोश न इनहुं कदाई'।
लिखि उत्तर भेज्यो ततकाला। जहिं कहि् पसर्यो सुजसु बिसाला ॥ १९ ॥
सतिगुर खोटन पर उपकारी। महां क्रपाल धीर धरि भारी।
हुते जराहु सुमति पति शाही। करि उपचार थिरे प्रभु पाही ॥ २० ॥
ऐसो मल्लहम कर्यो लगायो। तूरन ज़खम मेल ह्वै आयो।
पंदरहि दिवसन महिं करि नीका। मज्जन करवायो गुर जी का ॥ २१ ॥
पोशिश नई पहिर करि बैसे। दयो दरस बर पूरब जैसे।
अखिल खालसा चरि करि आयो। सीस निवाइ अनंद को पायो ॥ २२ ॥
अखिल लोक सुनि सुनि सुधि नीकै। पहुँचे निकट पुंज प्रभु जी के।
पंचामित्र प्रधिकै करवाया। उतसव दीरघ सभि महिं धायो ॥ २३ ॥
दरब ब्रिंद सिरूपाउ बिसाले। हुकम कर्यो ल्याए ततकाले।
बखशे तबहि् जराहनि ततकाले। ले करि बहुत रहे हरखाई ॥ २४ ॥
सुजस उचारन करति बिसाले। श्रेय कहन हजरत ढिग चाले।
मिले जाइ सुध अखिल सुनाई। 'धन गन दीनसि हम हरखाई ॥ २५ ॥
पुन गमने दिल्ली सु जराहू। कह्यो सुजसु सगरे पुरि माहू।
इम सतिगुर ह्वैगे सवधाना। दिन खोडसमो चढ्यो जहाना ॥ २६ ॥

1. पत्र

हुति प्रभाति सभा महिं बैसे। शोभति हैं कुबेर बर जैसे।
नव टंकन के धनुख बिसाले। आने कारीगर तिस काले ॥ २७ ॥
हेरति गुरू हरख को पायो। दीरघ दरब इनाम दिवायो।
सरब शसत्र नित निकट रखावति। पुषप धूप चंदन चरचावति ॥ २८ ॥
तिन महिं दौन सरासत धरे। दिढ दराज दीखति बर करे।
कातक मास अमावस निस महिं। दीप माल घरि घर जिस किस महिं ॥ २९ ॥
घ्रित सनेह जलाइ बिसाला। बिबिध बिधिन धरि दीपक माला।
गुरू सदन के चहुं दिशि जोति। भा प्रकाश दिन मनहुं उदोति ॥ ३० ॥
पंचाम्रित करिवाइ ब्रताए। उतसव रच्यो अनन्द समुदाए।
बित्यो सु दिन प्रति पदा बिताई। जमदुतीआ उदत्यो गृहराई ॥ ३१ ॥
सुंदर तंबू इक लगवायो। बीच दुचोबे सथित सुहायो।
चहुं दिशि महिं कनात तनवाई। रंगारंग फरश धित छाई ॥ ३२ ॥
बीच प्रवेश भऐ तिस जाइ। रछ्छक दूर दूर बैठाइ।
'जाम एक लगि फिरीयहु खरे। अंतर नहिं प्रवेश को करे ॥ ३३ ॥
इम करि कै चहुं दिशि तकराई। आप सथिर मे बीच गुसाईं।
तिस छिन दमक्यो[1] महिद अकाशा। पिखियति भयो बिसाल प्रकाशा ॥ ३४ ॥
दोइ पुरख उतरे तर आए। गुर दर्शन करि सीस निवाए।
सादर कहि करि निकट बिठारे। कुशल अखिल के बाक उचारे ॥ ३५ ॥
तिनहुं पत्रिका दई निकासि। ग्रहण करी कर मांहि हुलास।
ततछिन खोल भली बिधि हेरे। अमरावती बरण जिस केरे ॥ ३६ ॥
पढि करि समुझे सरब ब्रितंत। तिन सन[2] बात करी भगवंत।
'प्रभु जी ! अब्रि बैंकुंठ सिधारो। कारज इहां लीन करि सारो ॥ ३७ ॥
जे करि रहिबो चहहु क्रिपाला। रहहु धरातल करहु निहाला।
हुकम अकाल पुरख को कह्यो। आगे करहु जथा चित चह्यो ॥ ३८ ॥
करत पुरख अकाल क्रिपाला। तिस पित के हो पुत्तर बिसाला।
दुषट तुरक की जड़ां उखारी। पंथ खालसा उतपति भारी ॥ ३९ ॥
सूधा मारग जग बिसतारा। करता पुरख भजन निसतारा।
करि करि जुद्ध क्रुद्ध मारे। दुष्ट अनिष्टी चुनि चुनि मारे' ॥ ४० ॥

---

1. चमका 2. साथ

सुनि क्रिपाल तिन संग उचारी। 'हम ने करी अग्र ही त्यारी।
हुकम अकाल पुरख को जैसे। सिर पर धरि हम मानहिं तैसे' ॥ ४१ ॥
इत्तयादिक कहि सुनि करि भले। नभ के मग ही तूरन चले।
एक जाम लगि रहे इकंत। निकसे बहिर बहुर भगवंत ॥ ४२ ॥
बदन प्रफुलित कमल समाना। पदम पांखरी आंख महाना।
रिदे अनंदित दुगन चगूने। बैसे सभिनि बिरचै दुति दूने ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उतर ऐने '**पाती अकाल पुरख पठन प्रसंग**' बरननं नाम उनीसमो अंशु ॥ १९ ॥

अंशु २०

जंग करन प्रसंग

दोहरा

शाह बहादर सादरहि द्वै उमराव बुलाइ ।
जखम लगे सुधि लेनि हित श्री गुर तीर पठाइ ।। १ ।।

चौपई

कुंचर पर अरूढि ततकाले । अबचल नगर पंथ महि चाले ।
केतिक चंमू संग महि आई । दरसहिंगे श्री गुर मुद पाई ।। २ ।।
असवारी ते तूरन आए । अबचल नगर पहुंचि समुदाए ।
उचित सथल पिखिकै नट सलिता । उतरि परे देखति जल चलता ।। ३ ।।
सिवर कर्यो सुध तबहि पठाई । श्री सतिगुर ढिग अरज सुनाई ।
'शाहु पठाए जुग उमराव । सुधि लैबे हित दरशन चाव' ।। ४ ।।
सुनि कै त्रिण दाना अरु खाना । करे पठावन बांधति नाना ।
सभि ले करि अचवयो मन भाए । थिर हुइ श्रमहि शरीर बिहाए ।। ५ ।।
ढर्य दुपहिरा मे सावधाना । श्री प्रभु पठ्यो दूत अगवाना ।
जाम दिवस रहि तबि चलिआए । संग भले नर करि समुदाए ।। ६ ।।
आगे प्रभु दिवान लगायो । रगा रंग फरश उसवायो[1] ।
थिर्यो खालसा शसत्र सुहाए । तुपक धनुख अरु सिपर लगाए ।। ७ ।।
देखि दूर ही ते उमराऊ । झुके सलाम कीनि अगवाऊ ।
सनमानति ले नाम बुलाए । क्रिया करी गुर निकट बिठाए ।। ८ ।।
हाथ जोर जुग अरज गुजारी । 'हजरत पठे समीप उचारी ।
लेनि जखम की सुधि हम आए । भई खुशी सुनि आप नहाए ।। ९ ।।
शाहु सचिंत भयो सुध पाई । —इह मूढन क्या की खुटाई[2] ।
सभि पठान संगी बुलवाए । दे सजा को सो बुझवाए ।। १० ।।

---

1. बिछवाया 2. बुरा काम

कसम कुरान महान बखानी । —अपर न किसको सुधि हम जानी ।
लरका महिम ते अनजाना । किय वदकार आप ही प्याना' ।। ११ ।।
सुनि कै श्री मुख ते फुरमायो । 'भयो अकाल पुरख जिम भायो ।
ह्वै न सकहि कुछ हुकम बिहीना । तरन बिखै आपहि क्रित कीना ।। १२ ।।
कहहु शाह सन-हम सुख होवा । घाव मिल्यो संकट नहि जोवा-' ।
करति बारतालाप बिताइ । द्वै घटिका दिन रह्यो सो आइ ।। १३ ।।
शसत्र समीप समूह सुहाए । बीच सरासन दोइ टिकाए ।
तिन पर द्रिशटि गई उमरावन । पिखै दराज़ भए बिसमावन ।। १४ ।।
चौड़ी पाटी बड़े कठोर । इन ऐंचन को किस महिं ज़ोर ।
महां मुशट जुग गोशे कढन । तैसे पनचि सिले सम गठन ।। १५ ।।
इह गुर पीर दाव करि नाना । रखहि दिखावा लोकन नाना ।
समरथ लखहिं, मान हैं आन । अरपि उपाइन अनिक महान ।। १६ ।।
नाहि त इह कुदंड बड भारे । नर ऐंचहि बल कहां बिचारे ।
जो फरेशते[1] बली बिसाला । सो खैंचहिं जिन ओज कराला ।। १७ ।।
मानुख कौन आज जग सारे । धनुख ऐंचि इन ते सर मारे—।
इत्तयादिक चित बिखै बिचारति । हेरि हेरि करि तरक उठारति ।। १८ ।।
श्री सतिगुर सभि अंतरजामी । बरकति उमरावन लखि खामी ।
हम को जानहिं दंभ कमावहिं । हेतु दिखावन धनुख टिकावहिं ।। १९ ।।
इह रण महिं पहुंचे नहि आए । आनंदपुरि चमकौर जु छाए ।
दस दस महिं को तीर निकासा । शत्त बृंत को ततछिन नाशा ।। २० ।।
इन को निज बल चहियो दिखावन । नतु बल अपरन करहिं बतावन ।
इत्तयादिक बिचार गुर उर महिं । दोनहुं धनुख उठाए कर महिं ।। २१ ।।
दोनहुं मुशट हाथ इक धरी । दौन पनच इक चुटकी धरी ।
बल ते ऐंची कौण निवाए । चांप प्रचंड खिचे चिरड़ाए ।। २२ ।।
खैंचि खैंचि इक द्वै दे बाले । सभिनि दिखाए करति उताले ।
लग्यो बडो बल ऐंचत धनु को । नहिं बचाव किय घाव जु तन को ।। २३ ।।
लगे ज़खम तोपे तुटि गए । रुधर निकसि पट भीजत भए ।
पूरब ते भी घाव बडेरा । भयो तुरत ही तन महिं हेरा ।। २४ ।।
बिसमति मन कियो हाहाकारा । 'कहां भयु' कहि सकल निहारा ।
हाथ जोरि उमारावन भाखा । श्री प्रभु कहां कीन इह राखा ।। २५ ।।

---

1. फरिश्ते

दे सिरुपाउ बिदा तबि करे। संध्या भई दीप तबि जरे।
जमदुतीआ सति दिन तबि होते। बड जतन ते बंधन किते ॥ २६ ॥
राति बितीत प्राति हुइ आई। दिवस तीज आइसु फुरमाई।
'लेहु पंच सै कोश रजतपण। करहु तिहावल रसद खरीदन ॥ २७ ॥
इक सौ को चंदन अनवावहु। गमन परलोक सौज सभि ल्यावहु।
मानहुं बचनन करहु नही टारा। रिदे अननंद भज करतारा ॥ २८ ॥
करहु आज ते त्यारा अहारा। प्रात चतुरथी है बुधिवारा।
दिहु सभि को भोजन अन भायो। उद्यम करहु सिंघ समुदायो ॥ २९ ॥
अपर दरब घ्रित हित मिषटाना। मेवा चून सुपैदा आना।
लंगर करन लगे नर घने। बासुर अर सगरी निस बने ॥ ३० ॥
पूप पूरिका चर्दहिं कराहे। करि तिआर धरि कोषठ माहें।
बने कचौरी बरे पकौरे। डारि मसाले दधि महिं बोरे ॥ ३१ ॥
'बिलम न करहु धाइ सभि जावहु। पुरि ते सौज खरदी लिआवहु'।
दया सिंघ अरु धरम सिंघ सुनि। आदि संतोख सिंघ सुभि गुनि गुनि ॥ ३२ ॥
ले गन धन को नगर प्रवेशे। रसद खरीदन कीनि विशेषे।
बंधि पोट पोटोन उठाइ। दीनसि अबचल नगर पुचाइ ॥ ३३ ॥
ब्रिंद कराहे दए चढाई। लगि पकवान होनि समुदाई।
करि शनान सुच ते सभि ल्याइ। कर्राहि त्यार को धर्राहि टिकाइ ॥ ३४ ॥
चित सचिंत सभि के हुइ रहे। गुर बैकुण्ठ गमन को लहे।
को वाली[1] अबि इहां हमारो। किस को दरशन कर्राहि निहारो—॥ ३५ ॥
श्रवत श्रोण घाव जु गुर तन मैं। पिखहिं बिखाद मान हुइ मन मैं।
पाटी बंध कर्राहि उपचार। चहुं दिशि जुगम चवर को धारि ॥ ३६ ॥
दिवस तीज को जबहि बितायो। पुन निस महिं पकवान पकायो।
करति रहे मिलि नर समुदाया। प्राति होत लगि पुंज लगाया ॥ ३७ ॥
सभिदिनि कीनो सौच शनाना। तिस छिन श्री गुर हुक्म बखाना।
'चारो बरण जु आश्रम चार। सभि सों कहि दीजे इकवार ॥ ३८ ॥
करहि हकारनि देहु बिठाइ। देर न कीजै असन अचाइ'।
सतिगुर हुकम पुंज नर धाए। जाइ सभिनि कौ श्रोन सुनाए ॥ ३९ ॥

---

1. मालिक

'अचन अहार जग्ग[1] को आवहु । लखहु त्यार नहिं बिलम लगावहु' ।
सुनि सुनि साध फकीर अतीत । दिज आदिक आए धरि प्रीत ।। ४० ।।
गुरघर को कुनका जो खाइ । पावन नन मन ते हुइ जाइ—।
इम मन जानि बरण जे चार । आश्रम चारों करन अहार ।। ४१ ।।
अपर बेख धारि सभि आए । अबचल नगर भीर समुदाए ।
इक दरसहिं इक आवहिं चले । इक बैठे पंक्ति करि भले ।। ४२ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उतर ऐने **'जंग करन प्रसंग'** बरननं नाम बीसमो अंशु ।। २० ।।

1. यश

अंशु २१

सतिगुर उपदेश प्रसंग

दोहरा

बरणाश्रम की पंकतां पृथक पृथक बैठाइ।
सादर देति अहार को नीर पृथक करि पाइ ॥ १ ॥

चौपई

पूरब पंचाम्रित बरतायो। देति शीघ्रता सभि दिनि पायो।
पूप पूरिका पुंज कचौरी। बरे पकौरे दे सभि ठौरी ॥ २ ॥
अति स्वादल गुर जग्गय अहारा। अचहिं सराहैं बिबिध प्रकारा।
रुचि अनुसार अग्र सभि धरैं। त्रिपत भए भी खैबो करैं ॥ ३ ॥
फिरैं शीघ्र ते प्रोसनहारे। 'लेहु लेहु' सभिहूंनि उचारे।
मन भावति को भोजन दीनि। आछी रीति अचवनो कीनि ॥ ४ ॥
स्वाद पाइ सभिहूंनि सराहैं। पान परवारैं त्रिपती पाहैं।
सुजसु करति गुर को लहि दर्शन। कदम पदम को हाथ सपरशन ॥ ५ ॥
आप अपने थान पधारे। सो दिन बीत्यो देति अहारे।
सभि के संग भनी गुरबानी। 'सिमरहु परमेश्वर गुन खानी ॥ ६ ॥
प्राति पंचमी सुर गुर वार। दिवस भलो उर लीनि बिचार।
हुइ त्यारी हमरी परलोक। घरहु अनंद न कीजहि शोक ॥ ७ ॥
जाग्रण करो जपहु गुरबानी। संच लेहु सभि सौज महानी।
चंदन आदि सकल ही ल्याए। कितहुं नहीं, सुध देहु बताए ॥ ८ ॥
सुनि संतोख सिंघ सुधि लीन। जहिं कहिं फिरि करि हेरन कीन।
जो जो वसतु पहूची आइ। करी निवेदन गुर ढिग जाइ ॥ ९ ॥
'प्रभु जी ! सौ मन चंदन आयो। अतर गुलाब धर्यो समुदायो।
सूखम चीर मोल बहु केरा। सीवनहार सिवत इस बेरा ॥ १० ॥
प्राति होति लगि पोशिश[1] सारी। बनहि नवीन आप की त्यारी।
भार कुशा को आनि धरायो। जंब तिल घ्रित को पुंज बनायो ॥ ११ ॥

---

1. पोशाक

इत्तयादिक सभि वसतु बताई। दीप माल जहिं कहिं करिवाई।
पौर पौर पर घरघर पर धरि। कर्यो प्रकाश तिमर को परिहर ॥ १२ ॥
जहिं कहिं गुरबाणी को जपैं। प्रेम प्रमेशर के मन रपैं।
थिरे इकंत आप भगवंत। मिले पुंज सिख सत महंत ॥ १३ ॥
'दुरलभ दरशन करि लिहु अबै'। कहि आपस महिं पहुंचे सभैं।
राति बिताई जाग्रन करि कै। सतिगुर के गुन सिमरि सिमरि कै ॥ १४ ॥
जाम रही जबि सौत्त शनाने[1]। श्री प्रभु करि कै लायस ध्याने।
सति चेतन आनंद बिसाला। निज सरूप मन थिरे क्रिपाला ॥ १५ ॥
नभ सम ब्यापक जो सभि मांही। अस परमातमा बिन को नाहीं।
भूत भविख न नाश प्रणाम। यांते 'सति' कहति श्रुति नाम ॥ १६ ॥
माइआ जगत अविद्या आदि। जिस बिहीन जड़ सहत बिखाद।
मेल भए ते देह जितेक। क्रियावान ह्वै सहत बिबेक ॥ १७ ॥
यांते चेतन नाम बतावैं। मन आदिक चंचल ह्वै जावैं।
जिस बिहीन दुखि सगरे हेरी। बिशयानंद बूंद जिस केरी ॥ १८ ॥
सो आनंद के उदधि अपारा। तिस महिं ब्रिति टिकी इक सारा।
जो मानव अज्ञान बिनाशे। पाइ क्रिपा समझे गुर आशे ॥ १९ ॥
ब्रिति सथूल ते लीनि हटाइ। सूखम के बिचार मन लाइ।
रज्जू सरूप जगत को जाना। सति सरूप आपनो माना ॥ २० ॥
बालक, तरुन ब्रिद्ध नहिं होवा। जनमहिं नहीं, मरन नहि जोवा।
देहादिक हंता निरवार। सो सरूप जान्यो निरधार ॥ २१ ॥
हरख शोक तिन कहु किम होवैं। रूप अनाशी बिन दुख जोवैं।
अंम्रित वेले नैन उघारे। सिंघन सकल बंदना धारे ॥ २२ ॥
हाथ जोर अरदास बखानी। 'कहहु आप उपदेशनि बानी।
अबि तौ दर्शन ते सुख पावैं। जिह सुनि पीछे मन ठहिरावैं ॥ २३ ॥
श्री गुरू गोबिन्द सिंघ उचारे। 'सुनहु खालसा! तुम मम प्यारे।
नेति रची परमेशुर जैसे। भूत भविख न मिटै सु कैसे ॥ २४ ॥
जो जनमै हुइ है तिन मरना। द्रिशटमान लहि नाश प्रहरना।
निस दिन सूरज चंद उपाए। आरबला इन गिनति बिताए ॥ २५ ॥
सदा अकाल काल भगवाना। पुजै अउध सभि को करि खाना[2]।
चउदह लोक बिखै थिर कोइ न। को असु काल बसी जो दोइ न ॥ २६ ॥

---

1. स्नान किया 2. खा जाता है

पंच तत्त को जग बिसतारा । तिन भी भक्खहि काल करारा ।
जबि कारन ही लह्यो बिनाशा । कारज थिरिबे की कित आसा ॥ २७ ॥
सभि को रचनहार कमलासन । काल पुरख भखि करहिं बिनाशन ।
तिम ही बिशनु शंभु बड दोऊ । पुजे औध थिर रहै न कोऊ ॥ २८ ॥
अपरन की गिनती कहु कौन । जो थिर रहै चौदहुं भौन ।
यांते थूल दृष्टि को नेहु । नहिं आछे दे कषट अछेहु ॥ २९ ॥
सति चेतन अदिक जो कहीयति । सूखम ते अति सूखम लहीयति ।
तिस ढिग काल न पहुंचे खाइ । अबिनाशी जो नीत रहाइ ॥ ३० ॥
सो सरूप अपनो पहिचानो । रहो अनंद शोक नहिं ठानो ।
इस सम सदा, बाल नहिं तरुना । बृद्ध न जनम न हुइ कबि मरना ॥ ३१ ॥
दुख दारिद कहीं जिस मांही । रूप अनंद बिघन को नांही ।
श्री सतिगुर को तहां निवासु । जिह ठां हरख न शोक न नाशा ॥ ३२ ॥
परम दुखी लखि जग के जीव । जिन के मन सुख शांति न छीव ।
देह अहंता धरि धार गाढे । दिन प्रति राग द्वैख बहु बाढे ॥ ३३ ॥
पंच कलेशन बसी हमेश । भरमति माइआ लगे हमेश ।
बाद बिरोधी पचि पचि मरै । संकट सहै नरक महुं परैं ॥ ३४ ॥
तिन जीवन के हित को करिबे । सतिगुर करै देह जग धरिबे ।
अपनी शकति सहित उपदेशैं । डर ते हरहिं बिकार बिशेशे ॥ ३५ ॥
भले पंथ को चलन बतावैं । श्रेय लैंह तिस रीति चलावैं ।
कषट नरक ते लेति बचाइ । जगे भाग नर सो गुर पाइ ॥ ३६ ॥
ले उपदेश तरै जग सागर । अपर तरावहिं होति उजागर ।
शुभ मम को बताइ करि कारज । अपनि थान पहुचैं गुर आरज ॥ ३७ ॥
जिम छिति पर दुरभिच्छ कराला । जहिं कहिं उपजहिं तपत बिसाला ।
जीव दुखी पिखि कै ततकाला । बिदतहिं नभ महिं मेघनि माला ॥ ३८ ॥
बरखा करि कै तपति मिटावैं । जंन उपावन ते त्रिपतावैं ।
पुन सो मेघ लीन हुइ जाइ । जहि ते आवहिं तहां समाइ ॥ ३९ ॥
तिम सतिगुर के लखहु शरीरा । शुभ मग उपदेशति करि धीरा ।
निज स्थान महिं पहुंचहि जाइ । नित सिक्खन के रहै सुहाइ ॥ ४० ॥
उपजहि प्रेम भाउ मन जां के । अंग संग सतिगुर है तां के ।
सत्तिनाम सिमरन कौ दीन । जिस ते बनहु नही कबि दीन ॥ ४१ ॥
धरा राज हित शसत्र गहाए । मरहिं जग महिं सुरग सिधाए ।
देवी मात अंक महि पाए । सकल अकाल पुरख लड लाए ॥ ४२ ॥

बेद शासत्र ते सार निकासा। जिन वाणी महि गुरनि प्रकाशा।
पठहु सुनहु उपदेश कमावहु। गुर के लोक निसमै जावहु ॥ ४३ ॥
तन की गति ऐसे ही होति। बिनस जाति है जितिक उदोत।
जिनहुं नरहु सिमर्यो सत्तिनामू। आतम गयानी थिर निज धामू ॥ ४४ ॥
तिनहुं आपनो जनम सुधारा। परे पार जग पारा वारा।
बहुर न जनम मरन महि आए। सति चेतन आनंद समाए ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने '**सतिगुर उपदेश प्रसंग**' बरननं नाम इक बिसती अंशु ॥ २१ ॥

अं २२

बैकुंठ गमन प्रसंग

दोहरा

वीरवार तिथ पंचमी कातिक शुदी सुजान।
भई प्रभाति अनंद चित श्री मुख कमल समान ॥ १ ॥

चौपई

गिरा सुगंधि लेनि के कारन। मिले चाहिं नर मधुप हज़ारनि।
जग्गय बिखै सुनि सुनि गन गए। अपरनि संग जनावति भए ॥ २ ॥
जहिं जहिं सुधि पहुंची गुर केरी। महिमा भाखति बडहुं बडेरी।
'दसम गुरू सोढी सुलतान। श्री गोबिंद सिंघ बिदत जहान ॥ ३ ॥
बैरी बन को बंह्नि बिसाला। बीरन बीच बडे बलवाला।
लरे असंख संग धन श्यामू। तिम अतिरथी भयो इन नामू ॥ ४ ॥
कितिक दिवस सुधि प्रथम सुनाई। करैं परलोक गमन गति दाई।
औध पंचमी तिथि लो आज। कर्यो सकेलन सकल समाज ॥ ५ ॥
दौरि दौरि पहुंचहु तिन पौर। दरसहु अबि सोढी सिरमौर।
दरलभ है जिन दर्शन पावन। परसे चतुर पदारथ पावन ॥ ६ ॥
छाइ छाइ अस कहि कहि आए। चहुं ओर ते नर समुदाए।
निकट दूर ते उर बिसमाए। मिले आन करि आनद पाए ॥ ७ ॥
जोगी जती पुंज ब्रह्मचारी। बैरागी बहु भेखन धारी।
हिन्दु तुरक सने जबि जिस किस। उतलावति आवति गन सभि दिशि ॥ ८ ॥
पीर फकीर साध सभि आए। दरसहिं चौंप वधावति धाए।
'धंन धंन गुर सतिगुर पूरे'। कहैं सकल इम निकट कि दूरे ॥ ९ ॥
चहूं दिशिनि ते मेला भयो। सतिगुर सभि को दर्शन दयो।
चार धरी लगि थिरे दिवान। पुन इकत भे प्रभू सुजान ॥ १० ॥
देग सभिनि को तहि बरताई। बांछति ले करि अचि समुदाई।
श्री गुर अपनो[1] थार अनायो। अच्यो अहार जथा रुचि भायो ॥ ११ ॥

---

1. मंगवाया

पुनहि पान हित पान कटोरा। पान गह्यो किय आनन ओरा।
[illegible] ॥ १२ ॥
[illegible] ३ ॥
मादिक छके सौच के घरे। पुन शनान आछी बिधि करे।
पोशिश सभि नीर अनवाई[1]। शुशक काछ कटि कसी सुहाई ॥ १४ ॥
केसन ते सभि नीर निचोरा। धूप धुखाई गंध झकझोरा।
जुरा तीकी रीति बनायो। शमश मूछ केशन चिकवायो ॥ १५ ॥
सूखम नीक नई उश्नीक। चिन करि धरि थिर दास नजीक।
जूरे संग छोर अटकायो। पुन चहूं ओर पेच लटकायो ॥ १६ ॥
सने सने सभि पेच प्रवारे। पुन जूरे पर ल्याए सुधारे।
मुकर महान दिखाई अगारी। बहु विधि ते दसतार सवारी ॥ १७ ॥
पुन खज़ानची जिगा दिखाई। बहुत मोल की रुचिर बनाई।
पाग भाल पर बंधि सजाई। पंकति हीरन की दमकाई ॥ १८ ॥
जबर जवाहर जाहर जोति। जगमग जगमग शोभ उदोति।
मुकता गुछ्छन शुभति उजाला। सुंदर कलगी बनी बिसाला ॥ १९ ॥
नाना रंग जवाहर लागे। घड़त अनूठी ज़ेब सु जागे।
ले करि संग उतंग सजाई। डाले सिर झूलति दमकाई ॥ २० ॥
सूखम ते सूखम बर चीर। जामा पहिरयो दिपै सरीर।
बहु पालन को सज्यो बिसाला। बंद बंद लरकाइ सु ढाला ॥ २१ ॥
तीखन धारा खड़ग कराले। कंचन मुशट जड़त नग नाले।
जिस के लगे मुनालि तनाला। कड़ीआं अंर चपड़ासु बिसाला ॥ २२ ॥
चामीकर के चमकति चारु। ज़री गातरा जिह गुलज़ारु।
श्री सतिगुर लें करि तिह समों। पहिरन ते पूरब करि नमों ॥ २३ ॥
भर्यो निखंग खतंगन खरनि। कंचन लगे भए शुभ बरन।
जरे कंक के दीरघ परन। जन सरपन को घर हित थिरन ॥ २४ ॥
लेकरि गरे बिखे तबि पायो। दुइ दिशि तरकश खड़ग सुहायो।
ले दुकूल बहु मोला हाथ। कमर कसी द्रिढ बल के साथ ॥ २५ ॥
बिछुआ, खंजरू, बाक, कटार[1]। पेश कबज़ इह धरे सुधारि।
कमर कसा आछी बिधि कर्यो। जथा जोग आयुध गन धर्यो ॥ २६ ॥

---

1. शस्त्रों के नाम हैं

मनहुं सरद रितु को घन ठटा। कंचन लियत शस्त्र, दुति 'छटा।
उज्जल मुकता हल की माला। मनहु बुलाका शुभति बिसाला ॥ २७ ॥
कर महिं धनुख इंद्रघन शोभा। सिक्खी सिख मन आनन्द गोभा।
बोलन मधुरी धुनि गंभीर। सुनि हरखति जनु चात्रिक तीर ॥ २८ ॥
जाचति बूंद ग्यान उपदेश। हरन त्रिखा बिशयानि कलेश।
चहुं दिशि ते दरशन हित आए। लखहिं महातम को मुद पाए ॥ २९ ॥
वहिर सिंघासन पर प्रभु थिरे। सभिनि कामना पुरवनि करे।
हाथ बंदि करि नाथहि बंदहि। केचित सिर धरि पद अरबिदहिं ॥ ३० ॥
उचरहिं उसतति करहिं सुनावन। 'जगत उधारन हित तुम आवन।
लाखनि को दे करि ब्रहम ग्यान। लाखहुं लागे भगति महान ॥ ३१ ॥
गुर सिखखी जित कित बिसतारी। दे उपदेश बिशय बिख टारी।
पंथ खालसा उतपति कर्यो। तुरक तेज जग ते परिहर्यो' ॥ ३२ ॥
इत्तियादिक जसु करहिं उचारन। दरशन प्रापति नरनि हजारन।
श्री मुख सभिनि सुनाइ वखाना। सुनहुं खालसा बनु सवधाना ॥ ३३ ॥
तनहुं कनात चुगिरदे भले। जिस ते दूर हुइ नर खले।
सभि चंदन ईंधन तिस मांही। पहुंचहु लेहु चिता रचि तांही ॥ ३४ ॥
प्रथम भूम की लेपहु सारे। तिस पर कुशा देहु बिसतारे।
चंदन चिता रचहु तहि फेर। जब तिन घृत आदिक बिच गेर ॥ ३५ ॥
शौरभि धरहु सकल तहिं जाई। कीजहि त्यारी बिलम बिहाई।
शौच शनान सरब हम कीनि। पोशिश[2] नई पहिर तन लीन ॥ ३६ ॥
नहि बांछो तुम अपर करन को। वस्त्र पहिर किय शस्त्र धरन को।
इही रहैंगे संग हमारे। भली भांति सभि अंगीकारे ॥ ३७ ॥
सुनि आइसु को सिंध सिधारे। तनी कनात चुगिरदे सारे।
गाडी करि गाढी गन मेखा। डोरें बधन कीनि अशेख ॥ ३८ ॥
लेपन करि अंतर को थाए। चंदन को उचाइ करि ल्याए।
गन ईंधन ते चिखा महानी। रची भली बिधि दिढ़ बहु ठानी ॥ ३९ ॥
ज्वलित हुतासन परहि न गिरि कै। इस प्रकार रचि काशट धरि कै।
शीशे बहु गुलाब के छिरके। सहत कनात भिगोवन करि के ॥ ४० ॥
अतर फुलेल चिखा महुं डारा। जहिं कहिं उठी अधिक महिकारा।
इत्तियादिक सभि कारज करि कै। सतिगुर को परलोक सिमरि कै ॥ ४१ ॥

---

1. विभिन्न हथियारों के नाम 2. वस्त्र

शोक सहित सोगनि ते सोचति । बूंद बिलोचन ते जल मोचति ।
किस अलंब अबि करि है बासा । कित दर्शन सुख प्रपति सुख रासा ।। ४२ ।।
करहि कौन हम को उपदेश । तज्यो देश निज बीच बिदेश ।
इत्तियादिक उर बिखै बिचारैं । हाथ साथ सभि काज सुधारे ।। ४३ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने **'बैकुंठ गमन त्यारी प्रसंग'** बरननं नाम द्वैबिंसती अंशु ।। २२ ।।

अंशु २३

वैकुंठ गमन प्रसंग

दोहरा

करि त्यारी सभि रीति की सिक्ख सगरे चलि आइ ।
हाथ बंदि बोलति भए गद गद गिरा सुनाइ ॥ १ ॥

चौपई

महाराज की आइसु जैसी । मिले सकल कीनी क्रित तैसी ।
सतिगुर हेरि खालसे ओरी । जिनहुँ द्रिगनि ते आंसू छोरी ॥ २ ॥
मम सरूप के प्रेमी महां । सरबस त्यागे पहुंचे इहां ।
इस बिधि करते संध्या होई । श्री प्रभु दरस कीयो सभि कोई ॥ ३ ॥
तबि सादर निकट बिठारे । कह्यो 'शोक नहिं करीयहि त्यारे ।
थूल[1] शरीर संजोग[2] विजोग । इशुर नेति चौदहूं लोग ॥ ४ ॥
तन सनेहु नहि निभि है कयों हूं । सिकता सदन नदी वट ज्यों हूं ।
निशचै शबद रिदा है मेरो । तिहँ सो मिलीयहि संझ सवेरो ॥ ५ ॥
हरि गुर गुन महिं मनहि परोवहु । तिह सों मिलि न्यारे नहिं होवहु ।
हलत रु पलत सहाइक जोवहु । जम आदिक को डर उर खोवहु' ॥ ६ ॥
सुनति खालसे कीनसि बिनती । श्री प्रभु ! हम सभि के मन गिनती ।
नौ पतिशाहि अंत को सारे । संगति नर पकराई उदारे ॥ ७ ॥
पुन बैकुंठ गमन को करैं । हम किस के पग पर सिर धरैं ?
किह के करि अलंब को चले ? । पंथ खालसा तुमरो भले ? ॥ ८ ॥
श्री मुख ते तबि धीरज दीन । 'हम सभि बात प्रथम करि लीनि ।
गंढ अकाल पुरख सों पायो । सौंपन करि अंचर पकरायो ॥ ९ ॥
सदा रहहु प्रभु चरननि शरनी । अपरन की आसा नहिं करनी ।
लोक सुखी परलोक संतोषा । नित प्रति राखहु गुर भरोसा ॥ १० ॥

---

1. स्थूल 2. संयोग वियोग

पढीयहि सरब गुरनि की बानी। रखीयहि रहत जु हमहुं बखानी।
पायहु मात कालिका गोदि। पंथ खालसा लहै प्रमोद।। ११ ।।
सिंघ सु रहत पंच जहि मिले। मम सरूप सो देखहु भले।
भोजन छादन जो तिन देइ। मोकहु पहुंचावति सिख सोइ।। १२ ।।
मनहुं कामना तिन ते प्रापति। शरधा धरे चित दुख खापति।
सिख पंचन महि मेरो बासा। पूरन करौं धरहिं जे आसा।। १३ ।।
आयुध[1] बिद्या को अभ्यासहु। बनहु बीर अरि समुख बिनाशहु।
जगत पदारथ सगरे पावहु। भोगहु आप भि अवर भुगावहु।। १४ ।।
मरहु जुद्ध महि सुरग सिधारहु। सहिकामी सुख सकल बिहारहु।
निहकामी हुइ मुझ सो मेल। परहि न जनम मरन को गैल।। १५ ।।
करो शनान नाम अरु दान। प्रेम समेत लहहु कल्यान।
बिदत खालसा पंथ भविख्य। अवनी राज करहिं मिलि सिख्य।। १६ ।।
दिन प्रति तुरक नाश को प्रापति। बचहिं जि रंक होहि लहि आपति।
कीने गन अपराध बिसाला। तिन को फल ह्वै है इन काला।। १७ ।।
अंग संग मुझ को नित जानहुं। सदा सहाइक अपनो मानहुं।
नित प्रति गुरवाणी अभ्यासहु। कै शसत्रनि सन शत्रु बिनाशहु।। १८ ।।
दसहुं गुरनि जिम करे बिलासा। सुनहुं प्रेम धरि सभि इतिहासा।
अभिमनि देति संहत कल्यान। सुख प्रापति पाठक श्रोतानि।। १९ ।।
गुरु खालसा खालसा गुरु। अबि ते हुइ ऐंसी विधि शुरु।
अपनी जोति खालसे बिखै। हम ने धरी सकल जग पिखै।। २० ।।
इम कहि श्री प्रभु शोक निवारा। सभि के रिदे हरख को धारा।
दीरघ शमश उदर लगि आई। हाथनि साथ सुधार गुसाई।। २१ ।।
वधि करि भई अगारी होइ। कृछक फरक ते दीखति सोइ।
को को केस सेत हुइ आवा। द्वै मूछनि पर हाथ उठावा।। २२ ।।
इम बैठ् सतिगुरू अवंदति। बारि बारि दरसति सिख बंदति।
कहति सुनति सभि आधी राति। बीत गई बैठे चित शांति।। २३ ।।
लखि बिकुंठ सतिगुर आगवनू। सुरगन आए तजि करि भवनू।
पावक[2], मघवा, बरन, धनेशू। मूरत धरी निशेश, दिनेशू।। २४ ।।
अशटो बसु पहुंचे शिव ग्यारा। आपहु बायु रूप निज धारा।
असनि कुमार सु विसवे देवा। पहुंचे सनमानति गुर देवा।। २५ ।।

---

1. शस्त्र 2. विभिन्न देव देवता

कमलासन नारद ते आदि। गोरखादि पहुंचे अहिलाद।
सभिनि गगन महिं थिरता धारी। आए अपर:जि अजमति भारी ॥ २६ ॥
सिद्ध पीर जे दूब के नेरे। विधा धरि गंधरब घनेरे।
किनर जद्ध अपपसरा आई। थिर सुरगनि महिं करति बधाई ॥ २७ ॥
बहु उतसव को धारति सारे। 'जै जै श्री गुरदेव' उचारे।
चारहुं वेद रूप धरि आए। जथा क्रिपट के पास सिधाए ॥ २८ ॥
सुर गुर शुक्र. गनेश, सपति रिखि। थिरे गगन महिं, हेरन गुर सिख।
कुछक कुलाहल सहित प्रकाश। सुन्यो पिख्यो जो थिर गुर पास ॥ २९ ॥
इतने महिं जपु जी पाठि करिकै। पंच दौहरे बहुर उचरि कै।
'हरि हरि जन दुई एक' उचारा। एसो आशै जिनहुं मझारा ॥ ३० ॥
'प्रथम भगउती सिमरन करीऐ। श्री गुर नानक को ध्याइ संभरीए।
इह पउड़ी पठि करि पुनि सारी। खरे गए अरदास उचारी ॥ ३१ ॥
करद कमान पान महिं धरी। पठि अरदास संपूरन करी।
पुन मखमली कमरकस लीनी। कंधे धनुख टिकावन कीनी ॥ ३२ ॥
करद पाग महि धरी बनाइ। लई हाथ महिं तुपक उठाइ।
कमरकसा सपूरन करि कै। डेढ जाम निस रही बिचरि कै ॥ ३३ ॥

दोहरा

वाहिगुरू जी का खालसा वाहिगुरू जी की फते।
श्री मुख ते उचरन कर्यो जोति जागति अते ॥ ३४ ॥

चौपई

पिखे दिनिंद प्राति अरविंदै। बदन प्रफुलति तिनहु मनिंदै[1]।
जन रंफा शारद को चंद। आपि अनंदति देति अनन्द ॥ ३५ ॥
हयनि दास को निकट निहारा[2]। श्री मुख सों तिह साथ उचारा।
'खास तबेले जिते तुरंग[3]। तूरन संग सुधारहु अंग ॥ ३६ ॥
ज़ीन ज़री के सभि पर डालहु। करि राखहु थिर त्यार उतारहु।
सुनि आइसु को तुरत सिधारे। सरबगन महिं कीनसि तयारे ॥ ३७ ॥
बसन बिभूखन सुंदर पाए। दे कविका तिस थान फिराए।
आप उतायल पहुंचे तहां। प्राप्ति भई भीर बहु जहां ॥ ३८ ॥
कौतक दरसहिं मन बिसमाए। ज्वलत मसाल झार समुदाए।
श्री प्रभु खरे सभिनि महिं शोभैं। किस की सम कहु कौन न लोभै ॥ ३९ ॥

---

1. मार्तिंड, जैसा 2. देखा 3. घोड़ा

मुख पर जोति चगूनी लसे। शसत्रनि सहत खरे कट कसे।
दरशन दीनसि भली प्रकारा। सभि को उपज्यो अनंद उदारा ॥ ४० ॥
बिच कनात के चहित प्रवेशा। दे उपदेश विशेष अशेषा।
धंन धंन सतिगुर सुखदाई'। उचरहिं चहुंदिशि नर समुदाई ॥ ४१ ॥

दोहरा

द्रिशट परति हैं सभिनि के श्री सतिगुर तिस काल।
नही सपरशन होति है इम लखि बिसम बिसाल ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने **'बैकुंठ गमन प्रसंग'** बरननं नाम तीन बिसती अंशु ॥ २३ ॥

अंशु २४

वैकुंठ गमन प्रसंग

दोहरा

दीप मालका जहिं कहां ज्वलत मसाल कि झार ।
पावत धार फुलेल की किधौं घ्रित को जारि ॥ १ ॥

चौपई

दिन सम भयो प्रकाश बिसाला । तिमर सघन चहुहूं दिश चाला ।
चंचल चरन चिखा दिशि चले । बस्त्र शस्त्र सभि शोभति भले ॥ २ ॥
तनी कनात पौर जिस थाना । तहिं थिर ह्वै करि बाक बखाना ।
'जाइ चिखा पर बैठैं जबै । तुरत प्रदिच्छना दै कर सबै ॥ ३ ॥
बहुर हुतासन को ज्वलतावहु । नमो करति ही वहिर सिधावहु ।
इस कारज महिं बिलम न करनी । जपहु प्रमेशर धीरज धरनी ॥ ४ ॥
इम कहि श्री प्रभु क्रिपा निधाना । पहुंचे जाइ चिता जिस थाना ।
धनुख सिकंध तुफंग टिकाई । बरछी दहिने हाथ उठाई ॥ ५ ॥
पेश कबज़ जमदाउ कुढारा । कमर कसे महि धरे सु धारा ।
खंजर तरकश कर शमशेर । रूप बीर रस के सम शेर ॥ ६ ॥
बदन अदीन सु नंयन प्रफूले । जिगा दमकती कलगी झूले ।
तिस छिन बदन चद्रमां ओरे । लोचन सभिनि चकोरनि जोरे ॥ ७ ॥
दिपति तेज को पिख पिखि सारे । सम सूरज के गुरू बिचारे ।
कमल नयन बिकसति बिसमाए । बिनां निमेख तिसी दिशि लाए ॥ ८ ॥
गन चंदन अगरादि घनेरे । चिखा बिसाल रची सभि हेरे ।
भए अरूढनि गुर भगवाना । चहुं दिशि ईधन जहां महान ॥ ९ ॥
सिक्खन को आइसु तबि दीनि । सभि देशन को रुखसद[1] कीनि ।
इक संतोख सिंघ जुति रहित । तिस संग बोले करूना सहित ॥ १० ॥
'इस थल रहहु देग बरतावहु । शरधा जुति सो सिंघ टिकावहु ।
दरब असंख इहां जो आइ । तिस ते नहिं मंदिर चिनवाइ ॥ ११ ॥

---

1. विदा किये

सकल देग पर देहु लगाई। पंचामृत आदिक करवाई।
चिनहि महिल तिस कुल गल जाइ। यांते कही नहीं बिसराइ ॥ १२ ॥
तबि संतोख सिंघ कर जोरे। 'सिख संगत नाहिन इत ओरे।
किस ते ले धन देग चलावै। रहै सिंघ सो किस ते सावै ॥ १३ ॥
श्री मुख ते तबि धीरज दीन। देश न रहै सिंघ ते हीन।
इन दुइ ब्रिदक इहां बने है। जे संपूरन देग चले है। ॥ १४ ॥
करहु पकावन दिहु बरताइ। धन की चिंत न करीयहि काइ।
इम सुनि सभिहीनि सीस निवाइ। दई प्रदछिना थिर चहुं छाए ॥ १५ ॥
ज्वलति हुतासिन कीन बिसाला। निकसे वहिर सकल ततकाला।
जबहि कनात पौर तजि आए। शब्द श्रौन महिं तबि सुन पाए ॥ १६ ॥
वाहिगुरू जी की वड्ड फते। बार बार बोलति सुखि मते।
जबि भी अगनि प्रचंड बडेरे। नहि शरीर के परसी नेरे ॥ १७ ॥
तबि समाधी सतिगुरू लगाई। जोग अगनि तूरन उपजाई।
चढि अकाश के पंथ पधारे। 'हाइ, हाइ' नर खरे पुकारे ॥ १८ ॥
'जै जै' शबद गगन महि होवा। सुन्यो श्रौन कुछ नैन न जोवा।
गन देवन महि नौबत बाजे। सुनति सकल जिम नीरध गरजे ॥ १९ ॥
परी गूंज इक बार बिसाला। जनु गाजति मधुरी घन माला।
भयो प्रकाश प्रकाश महाना। लाल बरण सभि को द्रिशटाना ॥ २० ॥
जन बरखा करि कुछ घन लटे। सावन की संध्या महि फटे।
सूरज किरण सजल ते बरण। तिस बिधि दिखयाति पीत कि अरण ॥ २१ ॥
भीर बिमानन की बहु होई। गुर आगवन जानि सभि कोई।
गीरबाण पहुंचे समुदाए। जै जै धुनि ते रौर उठाए ॥ २२ ॥
वाहिगुरू जी की कहि फते। मिले देवता के गन जिते।
धंन गुरू सभि कारज करे। दुशटत कुल बल ते परिहरे ॥ २३ ॥

स्वैया

पंकज[1] पूत, विभूत मिले पुरहूत[2] समेता।
नारद गावति बेण लए गुर नानक के पद जे सुख हेता।
आदि हुतासन देव सबै नर देव बधू हुइ मोदनिकेता।
कौतक भांति अनेक विहारहि कै दिखराई बिबेक संकेता ॥ २४ ॥

---

1. ब्रह्मा 2. अग्नि 3. इन्द्र

श्री गुर तेग बहादर नंदन बंदन जोग निकंदन हो दुख।
पंथ रच्यो, शुभ ग्रंथ सच्यो अरि पुंज पच्यो अर कैंठ लह्यो सुख।
तेज त्रिसाल क्रृपाल सदा बिकस्यो अरबिंद बिलंद दियै मुख ॥ २५ ॥

होति कुलाहल देवन महि गन देव वधू बहु नाचति हैं।
मंगल को सरबंग धरै जै बाक उतंग उंबाचति हैं।
बाजति ब्रिंद म्रिदंग, उपंग, मचंग, सुरंगनि राचति हैं।
जाचति है दरसन प्रसंनहि 'धंन गुरू' मुद माचति हैं ॥ २६ ॥

श्री गुर तेग बहादर नंद के आदर कारन देव मिले।
धीर बहादर को अविलोक अशोक भए गन संग चले।
श्री प्रभु हेरि समूहन को मिलि रीति जथोचित कीन भले।
कौतुक ह्वै उतसाहन के इम आपस महि हरखाइ चले ॥ २७ ॥

दोहरा

इस प्रकार सुरलोक मंहि देवन उत्सव कीन।
पौर पौर सभि ठौर मंहि मंगल मोद प्रबीन ॥ २८ ॥

स्वैया

छोरिकै पौर की ठौर कनात ते बाहिर आनि थिरे समुदाया।
बैठ गए गन सिंघ चहूं दिशि लोचन ते जल पुंज बहाया।
सूरति श्री गुरू की म्रिदु मूरति ध्यान धरे मन को ठहिराया।
ब्रिंद भले गुन को सिमरैं शुभ शील सराहिति दोर घटाया ॥ २९ ॥

'श्री प्रभु! सिंघ कदंब पंजाब के कौन अलंब हम केरा।
कौन के होइ समीप थिरै नित, काहि पिखै सभि संझ सवेरा।
श्री मुख ते बिन चारू गिरा किस ते उपदेश सुनै करि घेरा।
देखि किसै हम आनन्द पावहिं लोक दुंहू विशवाश बडेरा ॥ ३० ॥

लोचन ते जल मोचति सोचति निम्रि करै मुखि ही दुखिताई।
एक के संग न दूसर बोलति देखन को नहि द्रिशटि चलाई।
ज्यो बहु नागन की मणि एक, भई कित लोप, तही पुन पाई।
'भाग बिहीन बियोग सह्यो, गुर संग गए न सरीर बिहाई ॥ ३१ ॥

पेखहु प्रीति पतंगन की छिन मैं तन देति बिलोक प्रकाशा।
नाद सुने अहिलाद रिदै करि ह्वै विसमाद ते एणु बिनासा।
एक सुगंधि ने अंध मधु ब्रिति छोरति नांहि प्रमोद मंहि फासा।
मीन रहै जल ते सच सो, बिछरे मरि जाति, सुप्रेम उपासा ॥ ३२ ॥

क्या इह जल मलीन महां, करि प्रेम को देति है आपने प्राना ।
है हमरो तन मानुख को सभि जानति है मन लाभ रू हाना ।
श्री गुर प्रीति सदा सुखदा दुहि लोकन मैं करती सु कलयाना ।
सो हम जानि महानम को निरबाहि न कीन भए अनजाना ॥ ३३ ॥

पाहुन ते निढरो हमरो उर प्रीतम केर बियोग सहारा ।
जांहि बिना सुख लेश वाही दुहि लोकन को प्रभु मालिक भारा ।
तां बिन बैठ रहे बनि दीन, गए नहि साथ जु नाथ उदारा ।
भूर बिसूरति है बन मूरति अंग अडोल थिरे इक सारा ॥ ३४ ॥
श्री गुर आइसु के लखि ह्वै करि प्रात लौ चारहूं ओर थिरे ।
दास तुरंगन महिं गमन्यो इक, रंग[1] कुमैत न डीठ परे ।
दाम खले अगवार पिछारि, बिलोकति भा गिस थान परे ।
—कौन से पंथ उलंघ गयो तिस रीति रहे इह द्वार भिरे ॥ ३५ ॥
आनि भन्यो सभि सिंघन बीच 'तुरंग कुमैत नही निज थाने ।
जीन को पाइ कै त्यार करे सभि एक पै आप चेढ प्रसथाने' ।
श्रोन सुने बिसमाइ बिलोकति 'एक नही हित जां पर ठाने ।
और खरे प्रसु मोचति हैं असु, हीय संदेह भए, किम जाने ॥ ३६ ॥
दोइ धरी जबि द्योस चढ्यो वहुरो चित सोचति संकट पाए ।
ईधन ल्यावनि हारि हुतो तिन बहरि श्री प्रभु को दरसाए ।
आइ गयो पुन सिंघन महिं जहिं शोक समेत रिदै समुदाए ।
हेरि खरो हुइ दीन संदेसहि 'मोहि मिले गुर दूर सथाए ॥ ३७ ॥
श्री मुख ते फुरमावन कीनि—कहो सभि सिंघन को समुझाए ।
आइ तुरंगम तीर गयो हम, वाहिन बेग बली चपलाए ।
शोक न चिंत करो चित महिं सतिनाम जपहु हुइ अंत सहाइ—।
यौ कहि श्री प्रभु जाति भए' सुन कै गुर बात सबै बिसमाए ॥ ३८ ॥

दोहरा

संमत सत्तरा सैं बिते पुनि पैंहठ पहिचान ।
कातक की शुदि पंचमी तिस बैकुंठ पयान ॥ ३९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने **'बैकुंठ गमन'** प्रसंग बरननं नाम तर बिसंती अंशु ॥ २४ ॥

---

1. कुमैत रंग का घोडा

अंशु २५

सहाइक होन प्रसंग

दोहरा

शोक करहिं बैठे सकल सुनि तुरंग की बात ।
निज वाहन को ले गए गुरू वीर बख्यात ।। १ ।।

चौपई

जाम दिवस जबि ही चढ़ि आए । चितवहिं गुर चरित्र बिसमाए ।
एक साध पुन चलि करि आयो । सिंघन को अवलोकि अलायो[1] ।। २ ।।
तुम किम बैठे हो मिलि करि कै । शोल सचित मौन मुख धरि कै ।
सुनि करि कह्यो प्रसंग उदारे । 'श्री सतिगुर बैकुंठ सिधारे ।। ३ ।।
सैन वीन जिम महीपति हीना । चंद बिना जिम राति मलीना ।
जिम मथुरा महिं श्याम सिधायो । पीछे गोपी गन बिकलायो ।। ४ ।।
जथा राम बन बिखै सिधारे । औधपुरी के नर दुखियारे ।
तिम सतिगुर बिन सिंघ रहे हैं । रिदे बिखाद बिसाल लहे हैं ।। ५ ।।
बोल्यो साध 'पंथ महि जावति । देखे तहिं गुर अग्र सिधावति ।
मैं करि बंदि कीनि पग नमो । मुसकावत बोले तिह समों ।। ६ ।।
आवहु संत दरस लिहु देहु । हरि जन मिलिनि अनंद अछेहु ।
अंत समै को मेल तुहारो । जहि सजोग, वियोग बिचारो ।। ७ ।।
मै सुनि करि बूझ्यो बहु जोरि । रावर को ध्यान कित ओरि ।
दास नही को साथ तिहारे । नाथ इकांकी कहां पधारे ।। ८ ।।
बोले श्री मुख ते मुसकावति । हम अखेर हित बन को जावति ।
करहिं सैल जेतिक मन भावति । जित कित बिचरति आनन्द पावत ।। ९ ।।
इम कहि सतिगुर अग्र सिधारे । हय कुमैत पर आयुध धारे ।
अबि ही मै बिलोक चलि आयो । तुमहुं अचानक कहां सुनायो ।। १० ।।
जे तिनि होति गमन परलोक । मै किम लेतो दरस बिलोकि ।
पंथ पयानति भलि बिधि हेरे । तौ परलोक किम ? संसै मेरे ।। ११ ।।

---

1. बोला

अदभुत चलित गुरू के ऐसे। कहि सुनि करि बिसमति सभि बैसे।
सभिहिन मिलि निशचै ठहिरायो। गुर इक सम सभि बिखै समायो ॥ १२ ॥
जहिं सिमरैं तहिं हाजर अहैं। सभि सिक्खनि की शरधा लहै।
जनम मरन प्रापति कुछ नांही। सुतहि[1] सिद्ध तन धरहि बाही ॥ १३ ॥
संतन की सहाइता कारन। दुशट नरन की जड़ाँ उखारन।
शुभ मग जगत बिखै बिसतारन। करम कुकरमनि को निखारन ॥ १४ ॥
निज भगतन को जगत उधारन। धरा भार गन ताप बिदारन।
हरि संतन द्रोही बहु मारन। सत्तिनाम सिमरावन कारन ॥ १५ ॥
धन गुरू सभि कारन करन। जिनके सम नहि तारन तरन।
अदभुत चलति लखे नहिं जाहीं। शेश गनेश पार नहिं पाहीं ॥ १६ ॥
जोगीशन के ध्यान बसंते। सुर नर मुनि जन सेव करंते।
केतिक कारन ते तन धारैं। करि सभि को बैकुंठ सिधारैं ॥ १७ ॥
तिन के हित कुछ शोक न बने। वेद पुरान जास जसु भनैं।
सभि के बीच सभिनि ते न्यारे। भोग भोगता लेप न धारे ॥ १८ ॥
यां ते कथा अकथ गुर केरी। हारहिं जे बुधि धरति बडेरी।
इम चरचा करि आपस मांही। गुर हित शोक उपावहु नाही' ॥ १९ ॥
दरे दुपहिरे लगि थिर रहे। सुक्खा धकनि समो तबि लहे।
'करहुं देग उठि पुन सवधानो। करहु सुचेता सिमरन ठानो ॥ २० ॥
इम कहि उठे देग हित सिद्ध। गुर हित सुक्खा कर्यो तिसी बिधि।
भोग लगाइ आप पुन धक्यो। सौच हेतु गमने जल तक्यो ॥ २१ ॥
करि शनान बंधि दसतार। पुन सभि मिले गुरू दरबार।
पूरब प्रभु को भोग लगायो। देग अहार बहुर बरतायो ॥ २२ ॥
अचि अचि असन नमो कर जोरि। बैठ पुन कनात चहुं ओर।
केतिक पढति सिंघ गुरबानी। केतिक सुनति अनंद महिं खानी ॥ २३ ॥
निस महिं अलप कितिक चिर सोए। जाग्रन कीनि तहां सभि कोए।
भई प्राति ते जाइ शनाने। सभि मिलि गए गुरू इसथाने ॥ २४ ॥
प्रथम कनात सु खोलि हटाई। चिता भसम कीनसि इक थांई।
आयुध नही एक नहिं पायो। हेरि सभिनि को मन बिसमायो ॥ २५ ॥
असथी को तहि[1] लेरा न कोई। ईंधन भसम परो बहु जोई।
देहि सहित कीनसि प्रसथाना। मग गमने पिखि निश्चै ठाना ॥ २६ ॥

---

1. स्वयं

धंन गुर तुमरी गति न्यारी। निरनै करि करि सभिनि उचारी।
सकल बिभूति बटोर बनाई। रच्यो सिंघासन पुन तिस थाई ॥ २७ ॥
तिस थल को दरशन जो करै। जनम जनम के पातक टरैं।
अधिक पुंन को प्रापति होइ। धरै कामना पूरन सोइ ॥ २८ ॥

कबित्त

सुंदर गुदापरी, बिहीन मल चलै जल,
सलिल सु तुल गंगा कुल छबि पावई।
खरे खरे तरु खरे, हरे हरे पात जरे,
पांति पांति धाइ संघनी को छावई।
बोलति बिहंग रंग रंग के उतंग धंन,
श्री गुबिंद सिंघ को सिहासन सुहावई।
जाई दरसावई मनोरथ उठावई सु
कामना को पावई, संतोख सिंघ गावई ॥ २९ ॥
अवचल नगर उजाग़र सागर जग,
जाहिर ज़हूर, जहां जोति है जबर जानि।
खंडे है प्रचंड, खर खड़ग, कुंदड़ धरे,
खंजरु तुफंग, पुंज, करद, क्रिपान, बान।
शकति, सरोही, सैफ, सांग, जमदाउ, चक्र,
टाल, गन, भाले, रिपु, छाले छिप्र जंग ठानि।
चमकति चारों ओर घोर रूप कालका को,
बंदना करति कविजोर पान ताहि थान ॥ ३० ॥

चौपई

अबि लगि तिस थल जोत बिराजति। दरशन करे पाप गन भाजति।
कंचन देति कसौटी जैसे। सिख को परखति बखशहि तैसे ॥ ३१ ॥
गुरू बिकुंठ गमन के पाछे। रहे सिंघ केतिक दिन आछे।
पुन पुन जहिं जहिं जिसको आइसु। करि करि बंदन तिते सिधाइसि ॥ ३२ ॥
रह्यो संतोख सिंघ तिस थान। देग चलावति भयो महान।
बहुर सहाइक मे तिस देश। सुनीयहि श्रोता कथा विशेश ॥ ३३ ॥
तहां ग्राम जनवारा नाइ। रुसतम राइ रु वाले राइ।
द्वै भ्राता जोधा बड बली। कुछक राज करते बिधि भली ॥ ३४ ॥

1. नाम निशान न मिला

देश मरहटा को निट लूटैं। जो लर परै तुरत तिस कूटें।
परी धांक उर सगरे मानैं। अरै न कोऊ धन गन आनैं ।। ३५ ।।
तिन पर चढ्यो मरहटा राइ। चमूं लाख इकठी करि ल्याइ।
तिन के संग जंग बहु भए। छेरि भ्रात दोनहु गहि लए ।। ३६ ।।
करे कैद संगल पग डारे। गेरे बिखम सु दरग सतारे।
जहिं पंछी बी जाइ न सकै। मानस बपुरा क्या तिस तक्कै ।। ३७ ।।
देव संत बहु पीर मनाए। कोइ न तिन को सक्यो धुराए।
रच्छक सिंघ दुरग बिच एक। गुर-वाणी नित पढै विवेक ।। ३८ ।।
पहिरा देति गिरा गुर भनै। वाले राइ श्रोन दे सुनै।
हित बूझनि के तबै बखानी। 'पढति रिहति तूं किसकी बानी ? ।। ३९ ।।
सुनति सिंघ गुर महिमा कही। बंद खलासी सम को नहीं।
दुरग ग्वालियर महिं निप कैद। नहि छूटन की जियति उमैद ।। ४० ।।
अस राजे रजपूत छुडाए। सिमरे जहिं कहिं भए सहाए।
श्री गोबिंद सिंघ गुरू बडेरा। अबचल नगर धान जिन केरा ।। ४१ ।।
दसमें पातशाहु सो भए। सिंघ पंथ जग महिं निरमए।
इक पठान तहिं जाइ निहारा। सुनि तिसने गुर सुजसु उचारा ।। ४२ ।।
सो गुर बड बहादर हेरा। रण चमकीर अनन्द पुरि केरा।
तहां तीर करि जोर प्रहारे। इक ते दस हज़ार अरि मारे ।। ४३ ।।
करामात को धनी बिसाला। जो चित चहै सु करने वाला।
द्वै द्वै कोस तीर अरि घाए। दस लाखनि सो जंग मचाए ।। ४४ ।।
कहै सिंघ 'कया नर की बंदा[2]। जम फासी को देति निकंदा।
बाले राइ सुनी चित लाइ। शरधा बंधी[3] कह्यो करि भाइ ।। ४५ ।।
'करो सिंघ जी उठि अरदास। करहि जे हमरी नंद खलास।
गुर के पग पंकज बहु सेवौ। पंचाम्रित उपाइन देवौं ।। ४६ ।।
सुनति सिंघ कीनी अरदास। सिमरन लग्यो नाम सुखरास।
परम प्रेम मन महिं उपजायो। निस दिन गुर महि ध्यान लगायो ।। ४७ ।।
अरध राति सिमरति उर जबै। प्रगटे श्री गोबिंद सिंह तबै।
शबद तुरंगम को सुनि पायो। उठ्यो राइ तिन नैन लगायो ।। ४८ ।।
बिसमति बूझ्यो 'कहु तुम कौन। श्री प्रभु कहिहुं 'अराधहि जौन।
सो पहुंच्यो तुब करनि सहाइ। उठहु अबहि नहिं बिलम लगाइ' ।। ४९ ।।

---

1. पीटे 2. मनुष्य की कैद क्या है 3. बदी

श्री गुरू मोहि पगहु मंहि बेरी। अनुज सुपति तिम ही ढिग मेरी।
भ्रात जगावहु संग न छूटै। वाहिगुरू कहु बेरी टूटै ॥ ५० ॥
सुनि प्रभु ते निज अनुज जगायो। संगल टूटे नाम धिआयो।
उठि दोनहुं गुर चरनी परे। धंन गुरू किरतारथ करे ॥ ५१ ॥
प्रभु बोले 'जो है सिख मेरे। सिमरति सतिगुर संझ सवेरे।
नर ते कहां बचावन गाथा। जम ते राखौं द्वै करि हाथा ॥ ५२ ॥
अबि दोनहुं दिशि ह्वै तुम ठाढे। गहहु रकाब द्वाल द्वै गाढे।
चौकीदारन देहु लगाइ। घेर लेहु अबि हम चलि जाइ' ॥ ५३ ॥
गहि कै द्वाल कह्यो द्वै भाई। 'अबि हमरे गुर भए सहाई।
जे बल है तौ लीजै घेरे। नाहि ते हम पहुंचहि निज डेरे' ॥ ५४ ॥
सुनि ऊची धुनि को तबि जागे। उठ करि घेर पकरने लागे।
तबि सतिगुरू तुरंगम प्रेरा। पंछी जिम गमने तिस बेरा ॥ ५५ ॥
द्वादश[1] कोस बिंधाचल गए। द्वाल धुराई बखानति भए।
इह दरशन को हठ नहिं करीअहि। अवचल नगर सिधारन करीअहि ॥ ५६ ॥
अरपन चहहु सु अरपहु तहां। पंच सिंघ मेरे है जहां।
शरधा धरहु सरूप सु मेरहु। पुरहु कामन पूजहु हरहु ॥ ५७ ॥
इम कहि होए अंतर ध्यान। श्री गुरू गोबिंद सिंघ सुजान।
बने सहाइक बंद खलासी। निज दासन काटत जम फासी ॥ ५८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने **'सहाइक होनी प्रसंग'** बरननं नाम पचीसमो अंशु ॥ २५ ॥

---

1. बारह

अंशु २६

बंदे को प्रसंग

दोहरा

बाले राइ बिचारि कै ले संग रुसतमराइ ।
पहुंचे अपने सदन महिं धन गन संग लवाइ ।। १ ।।

चौपई

अबचल नगर गए हरखाइ । दर्शन कर्‌यो सीम को ल्याइ ।
थाती दरब सरब दे तथा । कही संतोख सिंघ संग कथा ।। २ ।।
उठि अरदास करो गुर आगे । 'धनं प्रभु सगरे थल जागे ।
सिमरे हाजर ह्वै जहिं कहां । अपनी पैज राखते महां' ।। ३ ।।
कितिक तिहावल करि वरतायो । अपर देग को कार चलायो ।
प्रचुर प्रसंग देश महि होवा । गुर दरबार ब्रिंद ही जोवा ।। ४ ।।
जथा शकति सभि भैंट चढ़ावै । करहिं कामना नाना पावै ।
जो पंजाब देश को आए । दिली पुरि महि सो प्रविशाए ।। ५ ।।
मात सुंदरी साहिब देवी । जाइ नमो कीनी जुग सेवी ।
कुछ मिशटान उपाइन राखी । पिखि सिंघन को बूझनि कांखी ।। ६ ।।
'तुम जग गुर के संगी[1] अहो । कबि ते तजि आए सच कहो' ।
सुनति सजल द्रग जोरति हाथा । माथा कही मात के साथा ।। ७ ।।
सतिगुर आपने सदन सिधारे । हम अनाथ हुइ इतहिं पधारे ।
निज पग संग चिखा पर गए । नर गन मिले अचंभे भए ।। ८ ।।
भसम बिखै ते कुछ नहि पायो । नहिं असथी आयुध समुदायो ।
रह्यो तबेले नहिन तुरंग । जान्यो सभिनि, गए ले संग ।। ९ ।।
राम चंद्र स्री क्रिशन उदारा । भए मुक्खय इह दस अवतारा ।
आरबला[2] बीती सभि चले । नहीं सथिर नर तन इस थले ।। १० ।।

---

1. साथी 2. आयु

सभिहिन कौ शुभ दे उपदेश। तिम सतिगुर पहुंचे निज देश'।
जग गुर म्रिहनी दोनहुं मात। सुन्यो चलाणा बहु बिललात ॥ ११ ॥
चली बिलोचन ते जल धारा। धारा शोक रुहति बहु बारा।
बारा खोले करी पुकारा। 'कारा कर्यो हमहुं संग भारा ॥ १२ ॥
अंत समैं नहिं दरस निहारा। हारा मन मानहुं तिस बारा'।
सुनि सुनि सिख आवहिं नर नारी। निकट बैठ छोरैं द्रग बारी ॥ १३ ॥
—कहां गए अचरज करि गुरू। रिदे शोक हमरे करि शुरू—।
सिमरहि प्रभु के गुननि अनेक। —हम को तजि गे जलधि बिबेक ॥ १४ ॥
साहिब देवी सुना सु जबि ते। साधन लगी नेम व्रत तबि ते।
जप तप करते दिवस बितावैं। सुप ते अलप अलप ही खावैं ॥ १५ ॥
पति को ध्यान पराइन पीनी। दुरबल देहि दशा बहु कीनी।
कहै सुंदरी बहु समझाइ। तदपि अलप ही भोजन खाइ ॥ १६ ॥
सिक्ख सिक्खनी सीस निवावहिं। बहु बिधि की शुभ सेव कमावहिं।
श्री गुर की नित कथा बखानहिं। निस बासुर सिमरन दन ठानहिं ॥ १७ ॥
बरनै राम कुइर मन भाईं। मैं नहिं हुतो संग तिस थाईं।
बालू हसने केर उदासी। रही जमात गुरू के पासी ॥ १८ ॥
सभि प्रसंग को तिनहुं निहारा। पंच बार मुझ संग उचारा।
जबि सो मिलति आनि करि पासी। मैं बूझति सो करत प्रकाशी ॥ १९ ॥
अबचल नगर गुरू के पाछे। दिन केतिक रहि चलिबो बाछे।
सो आए इस देश मझारी। मातन की भी बात उचारी ॥ २० ॥
साहिबदेवी हित मन भावन। तन पिंजर सम कीन सुकावन।
पशचाताप करति दुखियारी। —क्यौ न प्रभु के संग सिधारी ॥ २१ ॥
अलप भाग मैं रही अकेली। बिछुरी प्रभु ते सदा दुहेली।
जरन[1] चिखा पति जुति इक बारी। पति बिन निस दिन ह्वै दुखियारी ॥ २२ ॥
इस बिधि केतिक समा बितावा। पुनि दिन अंत आए नियरावा।
तिथि इकादशी महिं तजि आन। पहुंची पति टिग ठानति ध्यान ॥ २३ ॥
श्री हरि क्रिशन देहुरे पास। तहिं ससंवारी हुइ गन दास।
पीछे मात सुंदरी रही। चिरंकाल लगि बद निरबाही ॥ २४ ॥
इस की कथा कहौं पुन केतिक। सुनि श्रोता बंदे की जेतिक।
चहुं दिशि ते लशकर घिरि आए। लरहिं बहुत, नहि पाई जमाए[2] ॥ २५ ॥

---

1. जलन 2. पैर जमा कर

देश नगर गन जे अपनाए। तिन को बंदा राज कमाए।
कितिक पंथ भी अपनि चलायो। उपदेशति भा नर समुदायो ।। २६ ।।
मिलहिं फते दरशन को कहैं। आपस बिखै भाउ निरबहैं।
पुरि ग्रामन के नर चलि आवैं। सिक्ख बंदे के हुइ हरखावैं ।। २७ ।।
अपनी रहति कहति उपदेशहि। पद पाहुल[1] को देत हमेशहि।
बनि के सिख अकोख ल्यावैं। भांति भांति की उसतति गावै ।। २८ ।।
सिंघनि संग सपरधा[2] ठानैं। बंदे के मत को सभि जानैं।
कितिक ग्राम के नर सिख होइ। दर्शन फते बुलावहिं सोइ ।। २९ ।।
पतिशाही लशकर समुदाए। लाखहुं इत उत ते घिरि आए।
ब्रहम चरज जिस भयो बिनाशे। रण महिं रहितहि कित भरवासे ।। ३० ।।
—सोना जलै कुठाली जैसे। खुलहि लंगोट, गले गो तैसे –।
सो गुरबचन हुयो चहि तबै। हरै लशकर उमडे सबै ।। ३१ ।।
ना रण कर्‌यो पलाइन भयो। दुर्ग मझार प्रवेशनि क्यो।
जिस महिं अंन ज़मा कुछ नाहीं। हुते संग ले बर्‌यो सु ताहीं ।। ३२ ।।
गन लशकर पखार्‌यो आइ। संघर मच्‌यो दुरग के थाइं[3]।
थिर अंतर ते तजै तुफंग। होहि निकट फोरहि तिस अंग ।। ३३ ।।
तबहि चमूं ने घेरा पाइ। उतरे दूर दूर की थाई।
निकसे नहिं प्रवेशबो पावै। निकट न पहुंचहिं रण न मघावैं ।। ३४ ।।
केतिक दिन मो अंन बिहीने। अधिक छुधा नर ब्याकुल कीने।
बाबा तबि बिनोद सिंघ संग। जान्यों घेरा पर्‌यो कुढंग ।। ३५ ।।
आन छुधा ते जाइ बिलाइ। बल संभारि तबि कीनि उपाइ।
बेगी बडो तुंरगम तरे। जीन पवाइ शसत्र गहि चरे ।। ३६ ।।
बीसक अपर संग महिं लीन। जाइ बजार बरे हठ कीन।
लूट लीन नहिं बहुत मिठाई। रण महिं दुरग प्रवेश्यो जाई ।। ३७ ।।
लरे तुरक सगरे बिसमाए। पुन दृढता करि थिर समुदाइ।
दिन दोइक महिं फेर सिधारा। लीन मिठाई लूट बजारा ।। ३८ ।।
फेर दुरग महिं जाइ प्रवेशा। अचरज धारे तुरक अशेशा।
बापू बेगी बली तुरंग। कोई न रोकि सकहि करि जंग ।। ३९ ।।
अपर चमूं भी छुधति बिसाला। इह भोजन करि हरख बिसाला।
जे रिपु करैं प्राति तकराई। संध्या धारि छीन ले जाई ।। ४० ।।

1. चरणामृत 2. स्पर्द्धा 3. स्थान

संध्या तकै दुपहिरे परै। थिरै दुपहिरे निस ले बरैं।
अनिक जतन पकरन हित करैं। रुकहि नहीं अचरज सभि धरैं॥ ४१॥
लशकर भयो तमाम हिराना। —मार्यो जाइ न पकर्यो पाना।
महा मरदमी ते सुख पावैं। अपर चमूं छुधि ते बिकुलावैं॥ ४२॥
इक दिन बंदे के ढिग थिरे। झिरक्यौ तरज्यो ते दुख करे।
गुर के बाक बिखै नहिं रह्यो। तौ एतिक संकट को सह्यो॥ ४३॥
बंदे कह्यो 'तुमै क्या पर्यो। बुरा कि भला हमहुं ने कर्यो।
तजि कै जंग चहहु जे जाना। तउ तुम गमनहुं होहु न हाना॥ ४४॥
रिस करि बाबे बहुर उचारी। 'तुव कुकरम ते संकट भारी।
सगरे भोगहिं हम ने जानी। गलहि कुढाली लेहु पछानी॥ ४५॥
हति क्रिपान ते तोहि जु देतो। कयो भोगति सभि ही दुख एतो।
गुर बखशिश ते तोहि न मारा। पाइ बिभूति रिदे हकारा'॥ ४६॥
इत्तियादिक बहु कहु कहाए। भयो बिरोध सु क्रोध वधाए।
काह्न सिंघ ने पिता हटायो। छिमा करावति डेरे ल्यायो॥ ४७॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने **'बंदे को प्रसंग'** बरननं नाम शशट बिसंती अंशु॥ २६॥

अंशु २७

बाज सिंह प्रसंग

दोहरा

कान्ह सिंघ समुझाइकै पित सन कह्यो बनाइ।
'तुम निकसहु तजि संग को जंग न बिच हुइ जाइ ॥ १ ॥

चौपई

गोइंदवाल सदन पहुंचीजै। इस मूरख सों रिस नहिं कीजै।
सतिगुर कह्यो भोजनो हमैं। हित सहाइता के सभि समैं ॥ २ ॥
गुर की आग्या भंग न करों। रहौं संग मैं, तुम चढि परों।
पुज्यो अंत इस के अबि आई। तुम हति करि क्यो लेति बुराई' ॥ ३ ॥
सुनि बिनोद सिंघ भले बिचारा। पाइ ज़ीन होयो असवारा।
दुरग पौर ते निकस्यो बाहिर। संध्या समै जानि तिस ठाहिर ॥ ४ ॥
तेज़ तुरंगम करति पलायो। लशकर बीच बाइ सम धायो।
रहे रोक सभि रुक्यो न कैसे। म्रिगन ब्रिंद ते केहरि जैसे ॥ ५ ॥
गोइंदवाल पहुंचे जाइ। बसे सदन महिं सहिज सुभाइ।
दुरग बिखै घेरे महिं परे। छुधति हलाक होइ नर मरे ॥ ६ ॥
केतिक लरि करि मरे जुझारे। जेतिक मारे गए सु मारे।
पुन ओरड लशकर किय हेला। दुरग पौर के तोउ धकेला ॥ ७ ॥
सामुख भए सु ततछिन मारे। अपर छुधित पकरे भट सारे।
गह्यो बीच ते बंदा जाइ। लोह पिंजरा दृढ़ धरिवाइ ॥ ८ ॥
तिस महि पाइ कैद कर करि लीन। अपर जेल सभि को तहिं कीन।
ले करि पातशाहु के तीर। पहुंचति भए अधिक भट भीर ॥ ९ ॥
केतिक मास कैद महिं राखा। पुन पतिशाहु हुकम अस भाखा।
हेतु बिलोकन निकट हज़ारा। शाहु संग बंदे सु उचारा ॥ १० ॥
'मुझ को गहि कै ल्याइ हदूर। ऐसो हुतो सु किस मकदूर।
कोइ न सकै मार मुझ ताइ। अपनी बात आप बिगराइ ॥ ११ ॥

जिस गुर ने सलतन[1] तुव दीन। तिस प्रभु ने मो कड बड कीन।
तिन के बचन बिखै नहिं रह्यो। तौ एतिक संकट मैं सह्यो ॥ १२ ॥
सपत बरख तेरी बय जान। श्री गुरू कर्‌यो तेहि सुलतान[2]।
मोहि मरन पीछे अठ दिन मैं। तेरी म्रितू होइ लखि मन मैं ॥ १३ ॥
जबि तूं मरहिं जाहिं जम धाम। बिगरहि अवनी राज तमाम।
दिन प्रति नसै तेज तुरकाना'। सुनति बहादर शाहि बखाना ॥ १४ ॥
'इस को मारहु वहिर लिजाइ। अपर जि गहे लोक समुदाइ।
सने सने सभि को मरिवावहु। कोइ न बचि है प्रान गवावहु ॥ १५ ॥
वहिर निकास्यो बंदा मार्‌यो। सिख संगत सुनि कै दुख धार्‌यो।
माता सुंदरी ढिग चलि गए। सभि करि जोरि बखानति भए ॥ १६ ॥
'कान्हु सिंघ बाबा विच कैद। जिन छूटन की नहिं उमैद।
मारन हुकम सभिनि दिय शाहू। मार दयो बंदा पल मांहू ॥ १७ ॥
सुनि कै सभिनि को कह्यो। 'कान्ह सिंघ छुरवायो चह्यो।
जनम्यो गुर के बंस मझारी। पुन शुन गुन जुति भट भुज भारी ॥ १८ ॥
नतु तिस श्रोण परै जिस थाइ। बड अपराध होइ तहिं जाइ।
अरु सिंघन की सिक्खी मांहि। परहि तफाडत मिटि है नांहि ॥ १९ ॥
दसम गुरू के रह्यो हजूर। यांते करहु उपाइ ज़रूर'।
सुनि माता की आइस सारे। सिक्खन जतन अनेक बिचारे ॥ २० ॥
सभि इकठे हुइ तहा सिधारे। गहे हुते जहिं कैदी सारे।
खरे होइ ऊचे तहिं कहे। 'नाम कान्हु सिंघ किस को अहैं ?' ॥ २१ ॥
सुनि करि कान्हु सिंघ तहिं आयो। थिर्‌यो पौर ढिग सभिनि जनायो।
आवति सिंघन पिख्यो मुलाना। मुख दबाइ गहिं गाढ महाना ॥ २२ ॥
कारा ग्रिह महिं दियो धकाई। कान्हु सिंघ लीनसि निकसाई।
रथ चढ़ाइ आछादन कीन। तूरन तोरि अगारी दीन ॥ २३ ॥
दुइ सिख चले संग महिं जाइ। बूझे उत्तर देति बताइ।
'नर बिसाल की ब्रिच है दारा'। इम ले गमने सभिनि मझारा ॥ २४ ॥
गन सिक्खन घरि महिं ले गए। कान्हु सिंघ तबि बूझति भए।
'कौन मेल की संगत इहां ?'। सुनि साथी ने उत्तर कहां ॥ २५ ॥
'राजा राम मेल की संगति। बैठति है करि न्यारी पंगति'।
कान्हु सिंघ कहि 'नाहिन उतारो। अगली संगत बिखै सिधारो ॥ २६ ॥

---

1. राज 2. राजा

छाढ्यो स्पंदन[1] आगे चले। गए हुती जहिं संगति भले।
तिन के घरन उतार्यो जाइ। इम बाबा सो लीनि बचाइ ॥ २७ ॥
दिवस आगल शाहु बुलाए। जेतिक सिंघ कैद महिं आए।
आनि खरे जबि सिंघ अगारी। बूझे सभि 'को तुमहि मझारी ॥ २८ ॥
बाज सिंघ बड जोधा कौने ?। करि कै जुदो दिखावहु तौने'।
भयो प्रिथक सुनि कै ततकाला। बोल्यो धरि कै धीर बिसाला ॥ २९ ॥
'गुर को दास बाज सिंघ मै हों। जो तुम कहौ दिखावन कै हों'।
कहै शाह 'तू बीर बिसाला। करि भी सकहि कि नहिं इस काला ॥ ३० ॥
बाज सिंघ कहि 'अबहि निहारहु। मम पग ते बैरी निखारहु।
बीर पने को पिखहु तमाशा। लरहिं कितिक मै करौ बिनाशा ॥ ३१ ॥
हुकम शाहु दे निगड़ निकारी। फांध्यो बाज सिंघ भुज भारी।
कडे हाथ के सो भुज भारे। तीन सिपाही ततछिन मारे ॥ ३२ ॥
खरो नबाब एक तिह ताड़्यो। हाथ उढाइ नहीं कुछ मार्यो।
पिखी चलाकी शेर मनिंद[2]। गहिवायो करि कै नर ब्रिंद ॥ ३३ ॥
शाहु प्रंसन हुइ छुटवायो। माझे देश छुट्यो चलि आयो।
कान्हु सिंघ जहि सिक्ख घर मांही। नौकर सो पठान के पाही ॥ ३४ ॥
लिख्यो परगना तांहि अजारे। तिस आगे सिक्ख कार सुधारे।
देति चाकरी हाथ उठाई। यांते इक सिक्ख रहित सदा ही ॥ ३५ ॥
सुनति ब्रितंत कान्हु सिंघ कह्यो। 'ले देवो धन जेतो चह्यो'।
सिख नै भन्यो 'कहौ क्या अरज़ी। मै गरज़ी, करीअहि निज मरज़ी' ॥ ३६ ॥
कान्हु सिंघ रुखसद होइ गयो। तिसी परगने प्रापति भयो।
खान पौर ढिग उतरे जाइ। ताकहि अपनी घात लगाइ ॥ ३७ ॥
घर बिच ते निकसी इक दासी। बूझन करी लोक जे पासी।
'खान कौन कारज महिं परे'। दासी भाखति 'दातन करे ॥ ३८ ॥
अपर नीर कीनसि अनवावन। चाहित है पुन तिस ते न्हावन[3]।
कान्हु सिंघ लखि घाती भले। दासी साथ अंतर चले ॥ ३९ ॥
पहुंचे निकट इकाकी हेरा। बल ते पकरि तरे सो गेरा।
तुरत खान की छाती चढे। तीखन करि कटार को कढे ॥ ४० ॥
अनी उदर के साथ लगाई। धाइ लोक आए समुदाई।
नगन क्रिपान—मारनो चहैं। कान्हु सिंघ तबि सभि को कहैं ॥ ४१ ॥

---

1. डोली 2. मानिन्द, तरह 3. स्नान

'मुझ पर वार करहु तुम जबै। खान प्रान हानौं मैं तबै'।
सुनि पठान ने सकल हटाए। बूझे "कौन काज तुम आए ?" ॥ ४२ ॥
बाबे कह्यो 'सिक्ख जो अम को। चाकर काज करै नित तुम को।
दई चाकरी[1] हाथ उठाई। गुज़र तंग[2] तिस की हुइ आई ॥ ४३ ॥
तिस को दरब दीजीए सारा। करि कारज लिहु प्रान उबारा'।
सुनि पठान धन तुरत मंगायो। कान्हु सिंघ पुन बाक अलायो ॥ ४४ ॥
'दगा न करि, दिहु बीच कुरान। इक रथ दीजहि हयन महान।
बित, सुत, मुझ को बीच बिठाइ। अपर राज महिं दिहु पहुंचाइ' ॥ ४५ ॥
सुनति खान उर को बहु माना। कर्यो तथा शुभ जथा बखाना।
पहुंचे जबै राज बेगाने। बित ले, सुत रथ दीपसि जाने ॥ ४६ ॥
सिक्ख को दयो दरब तबि सारा। आप सुधासर ओर पधारा।
इम तीनहुं जीवत ही छुटे। पकरे अपर सभिनि सिर कटे ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उतर ऐने **'बाज सिंघ प्रसंग'** बरननं नाम सपतः बिसंती अंशु ॥ २७ ॥

1. मज़दूरी 2. गुज़ारा मुश्किल हो गया

अंशु २८
अजीत सिंह प्रसंग

दोहरा

अबि अजीत सिंघ की कथा सुनि श्रोता सवधान ।
पालक माता सुंदरी मा बालक ते जवान ।। १ ।।

चौपई

बस्त्र बिभूखन सुंदर नाना । चपल तुरंगम मोल महाना ।
मात दुलारति बिबिध प्रकारा । पहिरावति बहु राख सुखारा ।। २ ।।
श्री अमृतसर आदि सथाना । जहिं जहिं रहैं मसंद महाना ।
सभि संगत ते ले गुर कार[1] । धन आदिक सभि वसतु संभारि ।। ३ ।।
कुछक मात के पास पठावै । इम चहुंदिशि ते धन गन आवै ।
दरब कोश महिं जुरहिं बिसाले । खरच अजीत सिंघ को चाले ।। ४ ।।
साढक राखे ढिग असवारा । लए तुरंगम मोल उदारा ।
शस्त्र बस्त्र दे बरन बरन के । चाकर संगति बैस तरुन के ।। ५ ।।
चढहि तुरंग अखेर सिधारे । तोमर तुपक प्रहारन हारे ।
माता की प्रसंनता संग । बिलसहि अनिक बिलासन रंग ।। ३ ।।
बैठे वहिर दिवान लगावै । दर्शन हेतु कितिक सिक्ख आवैं ।
हुते कलाल सदन पुरि मांही । श्री गुर सिक्ख करे सो नांही ।। ७ ।।
सो अजीत सिंघ के सिक्ख ह्वै कै । देति उपाइन बंदन कै कै ।
भुस को बेचि कमावै कार । जिनके सिदक नहीं इतबार ।। ८ ।।
इन ते आदि अपर भी केते । गुर करि अपनो दरब सु देते ।
चार घरी जबि दिन रहि जाइ । शस्त्र बस्त्र को भले सजाइ ।। ९ ।।
पुरि की सैल हेत बिचरंता । साठ सऊरन संग रखंता ।
अग्र नकीब बोलते ऊचे । जितिक चहै पिखि तितिक पहूंचे ।। १० ।।
देग बैठहि इह भी पुजवावै । कितिक भेट सिक्ख आनि चढावैं ।
सिरोपाउ संगति को देति । रीति गुरनि की करति सुचेत ।। ११ ।।

---

1. गुरू का भाग, आय का दसवां भाग

देग बिसाल होत नित रहै। अपन बिराना अचहि जु चहै।
संगति धनी दरस को आवै। दर्शन मात सुंदरी पावै॥ १२॥
देश विदेशन ब्रिदत्यो घनो। 'गुर को पुत्र गुरू इह बनो'।
को को स्याने[1] सिक्ख न मानै। माता को पालक पहिचानै॥ १३॥
गुरता को पटयति[2] नहि लच्छन। समझति गुर के सिक्ख बिचछन।
कितिक समों इस रीति बितायो। ज्वान सु माननीय गरबायो॥ १४॥
कुछ माता को कह्यो न मानैं। ज्यों मन आइ तथा क्रित ठानै।
बरजहि बार बार क्रित खोटी। चले, कुमग गरबति मति मोटी॥ १५॥
साहिब देवी भेजी जबै। खष्ट शसत्र गुर सौंपे तबै।
तिन की पूजा मात करावै। पति सम जानै सीस निवावै॥ १६॥
जुग तरवार जुगम ही जम धर। पेश कबज़ खष्टम खर खंजर।
अजब मीर[3] माही के दसते। शुभति ग्यान शुभ लोहा लसते॥ १७॥
चंदन धूप पुष्प अरपंते। सादर छादति बसत रखंते।
तिनहु अजीत सिंघ जत्रि हेरे। धरौ अंग महि चहति घनेरे॥ १८॥
शंकति मन माता ते रहै। तऊ लेन हित ही नित चहै।
इक दिन कह्यो 'अंग मै धारौं। पुरि त्रिचरहुं धरि इहां सभारौं[4]॥ १९॥
मनता मेरी होइ सवाई। मानहि सिक्ख संगति समुदाई।
गुर के शस्त्र धरे तन हेरे। जानहिं सकल प्रताप बडेरे॥ २०॥
कुद्धति मात सुंदरी बर्ज्यो। वार बार झिरक्यो अरू तर्ज्यो।
'इहु आयुध सभि पूजन जोग। गुर के सम जानहिं सिक्ख लोग॥ २१॥
मम पति के जौ अहै पितामा। जिन को सुजसु जगत अभिरामा।
तिन के अंक शस्त्र इहु लागे। यां ते पूजनीय अनु रागे॥ २ ॥
जिन को पूजति सतिगुर रहे। किम सो पूजनीय नहिं लहे।
तूँ मति मंद शकति अस कहां। तन सजाइबे गरबति महां॥ २३॥
अबि जो नाम लीनि सो लीनि। कहो न पुन, पैहै दुख पीन।
अपनो आप जानि कर मंदा। कयो न हटसि तै मूड ब्रिलंदा'॥ २४॥
इत्यादिक कहि कै कटु बैन। पति को सिमरति भरे जुग नैन।
सुनि अजीत सिंघ गरब धरंता। कटु बाकनि को नही सहंता॥ २५॥
जमधर हाथ गहे ढिग होइ। माता की छाती को जोइ।
मारन चहति धारि दुरमती। लखै न पूरब कीनि जु गति॥ २६॥

1. निपुण 2. पाने के 3. बड़ी मछली 4. फिर यहां ही रख दूंगा

हुते अलप समीपी लोग । अवलोकति बहु बनति अजोग ।
धाइ अजीत सिंह को गह्यो । 'इह क्रित तुन बनि आइ न' कह्यो ।। २७ ।।
प्रतिपाल्यो जिन कीनि बडेरा । तिह मार्यो चहिं पाप घनेरा ।
पुन सतिगुरू, धरनी ब्रिध माई । वंदनीय जग की सुखदाई ।। २८ ।।
लखहिं कि नही तुरक को राज । करहिं आज ही तोहि कुकाज' ।
कुप्यो अजीत सिंघ तबि कहैं । 'मुझ को बरजति तरजति रहै ।। २९ ।।
मै इक बारि देउ इस मारी । पलटा देउ देति बहु गारी ।
पुरि महिं रहौं कि जाउं पलाइ । कै धर देउ लेउ बखशाइ ।। ३० ।।
शस्त्र धारने तन महिं चाहा । क्यों इन क्रोध कीनि मन माहां ।
मुझ को देखि सकहि नहि कैसे । प्रभुता सहि न सकहि मन तैसे' ।। ३१ ।।
सुनि माता सुंदरी रिस धारी । घोर स्राप जुत गिरा उचारी ।
'नहिं ज्वानी को भोगन करैं । दुख ते धरम हारि करि मरैं ।। ३२ ।।
होहि दुरदशा पुरि महिं तेरी । मरहिं कुमौत[1] वारि नर हेरी' ।
इत्यादिक कहि माता रोई । पति की गिरा सिमरि दुख पोई ।। ३३ ।।
'इसहि न पालहु संकटि दैहै । मैं नहिं मानी चित पछुतैहै' ।
अपने भाग खोट बहु जाने । नीच ग्रीव करि तूपनि ठाने ।। ३४ ।।
शस्त्र उठाइ सु अंतर राखे । नहिं दीए पूजन अभिलाखे ।
नहिं अजीत सिंह बोलन कीनि । बैठ्यो वहिर क्रोध मन लीन ।। ३५ ।।
तिस दिन भात न कियस अहारा । पति बच सिमरि सिमरि दुख भारा ।
सिक्ख संगति महिं सुन्यो ब्रितंत । इक्ठे हुइ आइ बुधिवंत ।। ३६ ।।
बंदन करि करि ढिग हुइ थिरे । बार बार प्रबोधन करे ।
'सुनि माता जी ! लीनो स्राप । लह्यो अजीत सिंघ दुख आप ।। ३७ ।।
तुम ते पाल्यो एतिक होवा । गुर के सुत सम संगति जोवा ।
माननीय सभिहिनि महिं भयो । लख्यो न कछू क्रितघनी थयो ।। ३८ ।।
उर को प्रेम करो अबि थोरा । बिनसहि पर्यो जथा छित ओरा ।
अविलोकहु हम जोरति हाथ । भोजन अचहु शांत चित साथ' ।। ३९ ।।
इत्यादिक कहि बहु सिक्ख सारे । नीठ नीठ करि अच्यो अहारे ।
बहु पछतावति राति बिताई । प्रीति पुत्तर सम करति घटाई ।। ४० ।।
इम ही केतिक दिवस बिताए । तिम ही लेति देति सुख पाए ।
चढहि अजीत सिंघ हित सैल[2] । बिचरति हेरति इत उत गैल ।। ४१ ।।
रिस माता की लखि सभि कहैं । 'बंदन करति रहहु चित चहैं' ।
इम लोकन के कहे कहाए । मस्तक टेकति है ढिग जाए ।। ४२ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने **'अजीत सिंघ प्रसंग'** बरननं नाम अषटबिसती अंशु ।। ८ ।।

---

1. एक हथियार का नाम 2. सैर

अंशु २६
अजीत सिंह प्रसंग

दोहरा

केतिक दिन बीते जबहि भरि ज्वानी गरबाइ ।
चढहि तुरंगम सैल हित शस्त्र सु बस्त्र सजाइ ।। १ ।।

चौपई

चतरघटी दिन रहै सिधावै । वीच बजारन के फिरि आवैं ।
साठ सऊरन संग चढाइ । ऊच नकीब बोलते जाइं ।। २ ।।
मात प्रथम तिह ब्याह करायो । हठी सिंघ तिह सुत उपजायो ।
संगति आवहि जाहि घनेरी । अरपहि भल अकोर बडेरी ।। ३ ।।
मात सुंदरी को सुत जानै । बिदत्यो देश विदेश महानै ।
इक दिन आयुध बसन सजाइ । गमन्यो सैल करन चित चाई ।। ४ ।।
सूरज मुखी सुहाइ बिसाला । अग्र[1] नकीब बोलते चाला ।
साठ सऊरन हय शिंगारे । शस्त्र बस्त्र सजि संग सिधारे ।। ५ ।।
बिचरति मंद मंद हय प्रेरति । पुरि की परिप बजारनि हेरति ।
गरबति अधिक हरख धरि चीत । चलि आयो जहिं जुमा मसीत ।। ६ ।।
इक दिश ते दूसर दिशि आवा । ऊचो बाक नकीब अलावा ।
'श्री गुर महिजित जुमा अगारी । करति बंदना लेहु निहारी ।। ७ ।।
इम बोलति को सुनति मुलाने । महां कोध को मन महिं ठाने ।
मिलि मसलत करि सो चलि गए । दुर्ग मझार प्रवेशति भए ।। ८ ।।
तुर्क सभा महिं शाहु निहारे । तरकति सभि प्रति एव उचारे ।
'अबि लौ सभि बिधि तेज तुहारा । रखना पर्यो शरदा महिं भारा ।। ९ ।।
हिंदुनि को गुर महिजित आवै । इत उत ते बिलोक हरखावै ।
संगी कहैं पुकार पुकारी । 'बंदे महिजित, लेहु निहारी ।। १० ।।
हम ते क्यों हूं सही न जाइ । आज कही सुधि तुम ढिग आइ ।
सभि तुरकाने की घट आन । जे न तिदारक देहु महान' ।। ११ ।।

---

1. आगे

सुनि कै सभिनि शाहु को कह्यो। 'अबि चहियति है तिस को गह्यो।
काराग्रिह महि दीजै गेरि। कोइ न करै अवग्या फेर॥ १२॥
किधौ आपनी आन मनावो। बिरद[1] सीस पर ते उतरावहु।
इन दोइन महिं इक जवि होइ। बहुर अदाब[2] करहि सभि कोइ'॥ १३॥
सुनति शाहु नर तुरत पठायो। 'महिजित विकट कुबाक अलायो।
यांते गरे कुहारी पाइ। हाथ बंदि करि मुझ ढिग आइ॥ १४॥
उचित सजाइ तोहि को दै कै। तजौं मुलाने बूझन कै कै।
नांहि न बिरद उतारि पठावहु। नहि आगे कबि एव अलावहु॥ १५॥
जहां अजीत सिंह थिर थयो। हुकम शाहु को तिस कहि दयो।
'नहि मानहुँ सैनागन आवै। मारि पकरि करि तहिं लै लावै'॥ १६॥
सुनति अजीत सिंघ भै माना। निज संगनि[3] कै संग बखाना।
'क्या करत्तब मोहि बनि आवै। कैसे बचौ, उचाइ न आवै॥ १७॥
'सुनहु गुरू सुत! हम क्या कहै। भाजन को उपाव नहिं लहैं।
थिरे जहां अस ठौर न कोई। लरिबे की समरत्थ न होई॥ १८॥
कै निज बिरद उतारि पठावहु। किधौ शाह के निकट सिधावहु।
प्रान रखहु तउ धर्म न रहै। धर्म रखौ तउ प्रान न लहै'॥ १९॥
सुनि अजीत सिंघ डर करि डोला। धीरज ते विहीन हुइ बोला।
शाहु समीप जाउं नहिं कैसे। देति हुक्म दुख ते म्रितु जैसे॥ २०॥
इम कहि घर के अंतर बर्यो। केस जूड़ कतरावनि[4] कर्यो।
थाल अनाइ[5] तांहि मो धरे। सेत वस्त्र ते छादन करे॥ २१॥
तुर केशुर के मनुज अगारी। बहु बिनती कर जोरि उचारी।
'हुक्म शाहु को मन माना। अपनो कुछ अपराध न जाना॥ २२॥
कह्यो नकीब[6] अचानक मंद। अबि मै रह्यो जोरि कर बंदि।
हुकम अदूल नही मै कीन। हजरति कही सीस धरि लीन'॥ २३॥
इत्तियादिक कहि धन कुछ दयो। शाहु समीप पठावन कयो।
ले करि गयो बखानि सुनायो। हजरत को रिस ते बिसरायो॥ २४॥
मात सुंदरी सुनी करतूत। धर्म बिनास्यो भयो कपूत।
महा क्रोध जाग्यो जिस रिदे। गारी देनि लगी बहु तदे[7]॥ २५॥
कीन कहां तै खोटो करम। दए बिगार दुलोक बिशरम।
महां मूढ तैं कछू न जानी। केसन महिमा महिद महानी॥ २६॥

---

1. केश 2. आदर 3. साथियों के साथ 4. कटवा लिये 5. मंगवा कर 6. यश करने वाला 7. तब ही

सतिगुर मारे ससुर सिर दीन। धर्म नही किम खोवन कीन।
पुन दीरघ संग्राम अखारे। दसम गुरू के बिदत पवारे ॥ २७ ॥
चातहु साहिबजादे मरे। धर्म राखिबो अपनो करे।
संकट अनिक प्रकार सहारे। लाखहुं संग जंग करि मारे ॥ २८ ॥
कहां फते सिंघ साहिबज़ादा। अलप बैस कया लखहि मर्यादा।
दुष्ट सभा महिं द्रिढ़ हुइ बोला। प्रास दिखावन ते नहि डोला ॥ २९ ॥
धर्म न अपनो त्यागन कीनि। त्रिण सम जानि सीस को दीन।
तैं मति मंद कहां इह कर्यो। तुरत धर्म त्रासति परिहर्यो ॥ ३० ॥
क्यो नहिं मर्यो जाइ करि मूढ़े। इह कुकर्म क्या कीनसि कूड़े।
इत्यादिक दुरबाक बिसाले। कहे मात बहु धिक धिक नाले ॥ ३१ ॥
अधिक क्रोध जाग्यो दुखयारी। कुछ न सकै करि भई लचारी।
नहिं कुकर्म को सकहि सहारे। बारि बारि बहु मारी निकारे ॥ ३२ ॥
सुनति सभिनि के पन को ठाना। 'सुनि मूरख तूं मंद अजाना।
बदन आपनो मुहि न दिखावहु। रहहु दूर कबि निकट न आवहु ॥ ३३ ॥
नही आज ते तोहि निहारो। पारन कर्यो न कष्ट सहारो।
बरजि रहे प्रभु. मैं नहिं माना। तुझ पारन ते भै दुख नाना' ॥ ३४ ॥
लजिति होइ नीच करि ग्रीवा। नहिं अजीत सिंघ सनमुख थीवा।
यहां कुकर्म कर्यो पछुतावै। भयो कलेश अधिक अधिकावै ॥ ३५ ॥
लिखत बिदावे की करि दीन। 'पारक हुतो त्याग मैं कीनि।
नही पुत्तर इह, मै नहिं माई'। इम कहि सगरे पुरि बिदताई ॥ ३६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने **'अजीत सिंघ प्रसंग'** बरनन नाम एक उन त्रिसती अंशु ॥ २९ ॥

अंशु ३०

अजीत सिंह प्रसंग

दोहरा

मात सुंदरी बहु दुखी थिरे न सदन मझार।
बसो न दिल्ली पुरि बिखै निशचे कर्यो बिचार ॥ १ ॥

चौपई

लेकरि संग सकल दासीन। केतिक सेवक को संग लीन।
छोरि सदन अपनो चलि आई। जहां बसै संगति समुदाई ॥ २ ॥
बहै बिलोचन ते बहु नीर। पति को सिमरति भई अधीर।
सिक्खन को इकठे कर्वायो। अपन मनोरथ सभिनि बतायो ॥ ३ ॥
'इक स्यंदन करि दिहु मुझ भारे। अबि न बसौं मैं पुरी मझारे।
मरै कुमौत तरु नही मूढ। दीने संकट मोकहु गूढ ॥ ४ ॥
मख अजीत सिंघ को न निहारौ। नहि तिस को निज दरस दिखारौ।
अपर नगर महिं उठि करि जाऊ। शेश आरबल तहां बिताऊं' ॥ ५ ॥
सभि सिक्खन कर जोरि बखाना। किम संगत पर कोप महाना।
भई आग्या देहु बताइ। कर बंदहि हम ले बखशाइ ॥ ६ ॥
क्यों रिस करि दिल्ली को छोरि। चाहति गमन अबै कित ओर।
सतिगुर की आग्या तुम तांई। बसहु सदा पुरि छोर न जाई ॥ ७ ॥
करी आव्वग्या पुत्तर तुमारे। संगति त्यागहु कहां बिचारे।
अटक्यो[1] काज आप को करैं। अपर बिघन हुइ तिस परिहरैं ॥ ८ ॥
हम को त्यागहु दोश बिचारहु। नतु पुरि बसनो अंगीकारहु।
रिस ते मात सुंदरी कहै। 'मुझ अजीत सिंघ को दुख अहै ॥ ९ ॥
नहि बांछति देखन मुख तांही। यांते बसौ नहीं पुरि मांही।
संगति बिखै दोश नहि कोई। प्रभु बच नहि मान्यो दुखि होई ॥ १० ॥
अपर थान बसि बैरन बितावौ। अपने निकट न राखि बसावौ।
सुनि संगति कर बंदि बखाना। 'नहि देखन सुत को प्रण ठाना ॥ ११ ॥

1. रुका हुआ

पुरि महिं बसहु निबाहन करीयहि। गमन मनोरथ रिदे न धरीयहि।
करि संगति ते इकठी कार। अपर सदन को नेहु सुधार।। १२ ।।
तिस महि बसहु सदा सुख पाई। कारज सकल रास हुइ जाई'।
मात सुंदरी इह बिधि मानी। 'करहु सदन मैं रहौं बखानी ।। १३ ।।
इक इक घर प्रति एक रजतपण। संगति मिलि अरदास सभिनि मनि।
सदन सतारा सैं सिक्ख केरे। लियो सकेल दरब तिस बेरे ।। १४ ।।
अपर तीन सै बीच मिलाइ। द्वै हजार कीने इक ठाइ।
प्रथम सदन पुरि ते कुछ बाहिर। इह अंतर कीनो अबि ज़ाहिर ।। १५ ।।
दोइ हजार दरब लगवायो। हित माता के सदन करायो।
तिस महिं थिरी जाइ करि हेरि। वाहिर न गई बहुर इस बेर ।। १६ ।।
घर को सरब समाज करायो। नहि अजीत सिंघ निकट बुलायो।
नहि मुख देखन कबिहू कर्यो। नेम निबाह्यो अपनो धर्यो ।। १७ ।।
सदन समेत समूह समाजा। त्यागयो, आइ तांहि के काजा।
इक आयुध को निकट अनाए। गुर सम संगति ते पुजवाए ।। १८ ।।
सभ महिं भयो[1] तांहि अपमाना। पाछे सिंघनि सो नहि माना।
आदि सुधासर अनिक सथाना। दे धन मात समीप महाना ।। १९ ।।
खरच कहां ते बहुर चलावै। चाकर कहां चाकरी पावै।
धुर्यो दरब ते अलय हंकारा। गई मंनता मोहि बिचारा ।। २० ।।
मानव पठहि मात के पास। अनिक भांति ठानति अरदास।
'गयो भूल अबि बखशहु मोही। नाम तुमारो जहिं कहिं होही ।। २१ ।।
सुत माता को जगत बखानै। तुम ते ही मुझ को मानै'।
कहि कहि इम बहु बार पठायो। जननी पुन सनेहु हुइ आयो ।। २२ ।।
कह्यो क्रिपा करि अस बिवहारे। 'आइ थिरहिं हम वाहिर द्वारे।
जो कुछ जाचहि कहि नहि पावै। अंतर नही मोहि ढिग आवै ।। २३ ।।
इम जबि हुकम मात कहि दयो। तबि अजीत सिंह आवति भयो।
पौर ठौर बंदहि थिहु रहै। बाछति होइ बिनै जुति कहै ।। २४ ।।
सो नर माता निकट सुनावै। आइसु करै सु ततछिन पावै।
इम दिन प्रति कारज निबहंता। नमो करहि निज सदन बसंता ।। २५ ।।
आवन लग्यो नेम ते नीत। बंदिह पौर ठौर करि प्रीति।
साठ सऊर अरूढहि संग। गमनहि फांदति चयल तुरंग ।। २६ ।।

---

1. पालक पुत्र अजीत सिंह का

मग मै हुतो बेनवा डेरा। आवति जबि अजीत सिंघ हेरा।
ऊचो बोलति जाचति भयो। एक रजतपन दैबो कयो ॥ २७ ॥
इस ही रीति कई दिन लीन। जाचे ते अजीत सिंघ दीन।
इम ही केतिक द्योस बितीते। आवति जाति तिसी मग नीते ॥ २८ ॥
इक दिन जाचि बेनवे तैसे। दए अजीत सिंह जुग पैसे।
लए नही तिन दए बगाई[1]। चल्यो संग ह्वै कै पिछवाई ॥ २९ ॥
मात पौर पर बैठे जाइ। तहि भी जाचति रह्यो अलाइ।
कितिक समै थिर ह्वै करि चाले। उठि करि गयो बेनवा नाले ॥ ३० ॥
अपने घर महिं जाइ प्रवेशा। खान पान करि क्रिपा अशेशा।
कर्‌यो अराम दुपहिरा ढर्‌यो। बकहि बेनवा बाहिर खर्‌यो ॥ ३१ ॥
पुन सुक्खा छक बाहर गयो। तहिं भी कहिति संग ही भयो।
ऊच नीच बच बकहि बडेरे। जिनके सुनति दुखति बहुतेरे ॥ ३२ ॥
पुरि ते वहिर को न नर जहां। बोलति खिझत पहुंचे तहां।
बहु ऊचे दुरबाक बखाने। जहि गमने तहिं संग पयाने ॥ ३३ ॥
कुपयो अजीत सिंघ सुनि करि कै। पुरि जन निकट न भले निहरिकै।
निज सिंघन संग हुक्म बखाना। 'पकरि बेनबे हनीयहि प्राना ॥ ३४ ॥
कूप समीप बीच दिहु गेरी। हटति न मूढ संग ते मेरी'।
जहिं दुरवाक बखानति खर्‌यो। जुग सिंघन दिढ पकरन कर्‌यो ॥ ६५ ॥
प्रानि हानि ततछिन करि दीन। पुरि के दूर कूप को चीन।
तिस महिं डारि अगारी गए। करि कै सौच अपर मग अए ॥ ३६ ॥
अपने सदन प्रवेश थिर्‌यो है। खान पान निज कर्म कर्‌यो है।
संध्या भई प्रतीखति डेरे। नही बेनवा निज थल हेरे ॥ ३७ ॥
सोधन लगे चेलका फिरै। इत उत देखति बूझन करैं।
राति अरध लौ खोजन कर्‌यो। नहिं पुरि महिं किस थान निहर्‌यो ॥ ३८ ॥
पुन प्रभाति उठि गरी बज़ार। 'किनहुं बिलोक्यो दिहु सुध सार।
किह कहि दयो सुनाइ प्रसंग। 'फिरति अजीत सिंघ के संग' ॥ ३९ ॥
बूझे सिंघ न कहूं बतायो। करति विरलाप नही जबि पायो।
सगरी पुरी प्रचर्‌यो ब्रितंत। नही बेनवा कहूं लभति ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने '**अजीत सिंघ प्रसंग**' बरननं नाम त्रिसती अंशु ॥ ३० ॥

---

1. फैंक दिये

अंशु ३१
अजीत सिंह प्रसंग

दोहरा

चारति छांग उजार महिं बिचरति हुतो अपालि ।
कूप गिरायो बेनवा तिन देख्यो तिस काल ॥ १ ॥

चौपई

पिख्यो बेनवा खोजन करैं । धरति शोक उर इत उत फिरैं ।
'तोहि बतावौं' कहित श्रदाली । 'प्रान हान करि दीनसि काली ॥ २ ॥
सिंघन ते मैं डरौ बडेरा । नही बचाइ होइगो मेरा ।
यांते मैं नहिं करति बतावन । संध्या प्राति अचानक घावन' ॥ ३ ॥
धीर बेनवे दई घनेरे । 'हम सभि रहै संग ही तेरे ।
मारन देहि नही किस भांति । रक्खया करति रहै दिन राति' ॥ ४ ॥
दियो दिलासा सरब प्रकार । सो ले गमन्यो बीच उजार ।
जिस थल मारि कूप महिं डारा । पर्यो मर्यो तिह सभिनि निहारा ॥ ५ ॥
मिलि करि ब्रिंदन तबहि निकारा । लियो उठाइ रौर बहु डारा ।
पुरि महिं नर मिलिगे समुदाइ । देखति बोलति संग सिधाइ ॥ ६ ॥
पायो जाइ दुर्ग के पौर । मिले हजारहुं माच्यो रौर ।
जितिक बेनवे पुरि महिं तबै । दौरि दौरि मिलि के तहिं सबै ॥ ७ ॥
पातशाह ढिग करी पुकार । दियो बेनवा सिंघन मार ।
न्याउं लहिंगे कै दर मरैं । तबि लौ खान पान नहि करैं ॥ ८ ॥
खरै पौर आगे अररावै । अंतर ऊची धुनी सुनावैं ।
शाहु अजोग बात पहिचानी । —डरे न मुझ ते कीनसि हानी ॥ ९ ॥
इस को हुइ सजाइ अबि भारी । छुट्यो सुखेन जु खता[1] अगारी—।
सुनि उमरावन कीनि उचारन । 'फिरत सैल हित बीच बजारन ॥ १० ॥
संग चढहिं साठक असवार । ऊच अवाज नकीब उचारि ।
पिखहु पुरी बसि त्रास न माना । दूर होहि चहि दुंद उठाना ॥ ११ ॥

---

1. दोष

पकरि सज़ाइ दीजीयहि गाढी। तिस के उर गरूरता[1] बाढी'।
सुनति शाहु तबि हुक्म उचारा। 'तूरन पहुंचहु सदन मझारा ॥ १२ ॥
पट सो हाथ बंदि अगवार। आवहि गरे कुहारी डारि।
उचित सजा होइ है नांही। आवहुं[2] जाइ देर ह्वै नाही' ॥ १३ ॥
सुनि कै नर दौरे तबि दोइ। बैठ्यो जाइ पहुंचे सोइ।
हुक्म शाहु को कह्यो कठोर। निकसहु चलहु दुर्ग की ओर ॥ १४ ॥
हत्यो बेनवा शाहु रिसायो। गुन हिगार तू निकट बुलायो'।
सुनि कै त्रास मानि धर थिर्‌यौ। नहीं निकसि कै जावन कर्‌यो ॥ १५ ॥
मैं नहिं चलौं न बेनवा सारा। तुहमत देति तुफान उठारा'।
जाइ दुर्ग महिं तिनहि बतायो। 'रहे हकार संग नहि आयो' ॥ १६ ॥
बहुर शाहु कहि हुक्म पठाए। 'इहां आउ तुव ल्याउ कराए।
निशचै साथ झूठि सभि होइ। बूझै भले उगाह जि कोइ' ॥ १७ ॥
सुनि कै गए जाइ समझायो। 'हठ न करहु तुझ निकट बुलायो।
शाहु कहै सभि गिरनै करि कै। साचो लेहि बडाई फिरि कै ॥ १८ ॥
घर महिं किम बैठन हुइ तेरो। दुर्ग पौर पर रौर बडेरो।
भलो चहैं जे अपनो कैसे। मानो कह्यो कहति हम जैसे ॥ १९ ॥
नांहित सैन आनि करि गहै। किस की ओट लेइ थिर रहै'।
सुनि अजीत सिंघ नाहिन माना। 'गमनो नहीं' जवाब बखाना ॥ २० ॥
रिसे दूत जे गए हकारन। हटे शाहु ढिग कीन उचारन।
'भयो मंवासी आइ न सोऊ। मिलि सभु झाइ रहे सभि कोऊ ॥ २१ ॥
मात निकट नर भेज्यो भला। श्री गुर तेग बहादर बदला।
खून पुत्तर तुमरे करि दयो। सो बखशहु कहु हम ले लयो ॥ २२ ॥
कह्यो मात ''मै लिख्यो बिदावा। पारक हुतो तज्यो नहिं भावा।
सो बदला लेवैंगे और। जहां होइ लैबे की ठौर ॥ २३ ॥
खता अजीत सिंह ने ठाने। सो तुम जानै कै उह जाने।
हमरे लगि तिस कार न कोई। बांधति करो आप अरू सोई ॥ २४ ॥
सुनि कै शाहु कोप करि भारो। सभि महिं बिदती हुक्म उचारो।
'दो पलटन पहुचहि इस काला। लरहिं लरहु, नहिं कीजै टाला ॥ २५ ॥
'जबि लौ पकर्यो जाइ न, मारो। भिरहि आप, हथ्यार प्रहारो'।
ततछिन सैन चली तहि आई। सुनी अजीत सिंघ थहिराई ॥ २६ ॥

---

1. अभिमान 2. ले आओ

सिंघ सकेले मसलत कीन। अबि तौ जंग करन ही चीन।
लरि करि मरहिं सु धर्म हमारा। गीदर मौत मरन बुरिआरा' ॥ २७ ॥
इत्यादिक कहि ह्वै करि गाढे। लख हेतु लै आयुध ठांढे।
जबहिं फ़ौज जानी नियराई। पंज तुफंगनि समुख चलाई ॥ २८ ॥
बरे निकेत सुचेत बिसाले। पर्यो जंग उठि शब्द कराले।
ऊचे चढि ओटे करि थिरे। ज्वालावमणी छोरति खरे ॥ २९ ॥
उत ते बहिर तुरक समुदाए। रचे मोरचे तुपक चलाए।
मारि मारि करि चहुं दिशि घेरे। अधिक बधहिं फेरे फिर नेरे ॥ ३० ॥
अंतर मारन मरन अरंभा। परे जंग नर करे अचंभा।
गोरी लगि फोरी भट देहि। छोरी तुपक तुरत भरि लेहि ॥ ३१ ॥
ढुकहिं नेर हेला जबि घालहिं। समुख निकसि बाहति करवालहिं[1]।
भुजदंडन अरू ग्रीवा काटहिं। बरजति तरजति नकि तकि डाटहिं ॥ ३२ ॥
प्रथम दिवस लरि संध्या परी। भए तिमर सैना तहिं थिरी।
टिके मोरचन तुपक चलावहिं। अंतर आवन जान न पावहि ॥ ३३ ॥
मात सुंदरी चिंत घनेरी। कर्यो कुकर्म कुपुत्तर कुफेरी।
कुछ बस चलहि न आपनो जाना। दीन मना दुख लहति महाना ॥ ३४ ॥
पछुतावति सभि निसा बिताई। संगति मिली आनि समुदाई।
मस्तक टेकि मात सो कह्यो। 'हमहु शाहु ते उर वहु लह्यो ॥ ३५ ॥
कहां कुकर्म कीनि सुख हाना। तुमरो स्राप साच हुइ जाना।
प्रथम प्रिथक बैठे इस थान। कहां चिंत कयों सोचन ठानि' ॥ ३६ ॥
इत्यादिक दे धीरज गए। तऊ महां दुख चित उपजए।
लरति अजीत सिंह बिचि घर के। वहिर तुरक घेरति फिर फिर के ॥ ३७ ॥
कितिक गए मरि बाहिर लरिते। कितिक सिंघ अंतर लरि मरिते।
बासुर सरब लरे हति गोरी। टुके नेर दे तन को कोरी ॥ ३८ ॥
खोदि मोरचे ओटे करि के। निकट होति घरि के दुर दुर के।
दूसर दिवस बितीत्यो लरते। फिरत घिरत गन मारति मरते ॥ ३९ ॥
संध्या भई तिमर गन छायो। जान्यो सिंघन—मरनो आयो।
लशकर कहां दीह पतिशाही। कहां सिंह हम पुन परि सांही ॥ ४० ॥
जेतिक हम ते जै हहिं मारे। हत्थयारनि ते करहिं प्रहारे।
पुन मरि रहहिं न हुइ कुछ फेर। तुरकनि गन हम लीने घेर ॥ ४१ ॥

---

1. तलवार

असि हठि करि कै भिरे जुझारे। परहिं शेर सम सुख भभकारे।
तुरक तुपक गहि चहुं दिशि ढूके। पावति नेर मार कहिं कूके॥ ४२ ॥
सिंघ निकसिकै खडग प्रहारे। हुते निकट से कटि कटि डारे।
पहिली राति मच्यो घमसाना। लोथ पोथना हति भे प्राना॥ ४३ ॥
निज निज थान थिरे हुए ठांढे। आयुध गहे हतन रिपु गाढे।
तीन पहिर इम राति बिताई। कितिक मरे भट किह दुचिताई॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने **'अजीत सिंघ प्रसंग'** बरनन नाम इक त्रिसंती अंशु॥ ३१ ॥

अंशु ३२
हठो सिंह प्रसंग

दोहरा

चित अजीत सिंह दुख लह्यो लख्यो—मरन बरिआई ।
क्रिम बीच हौ अबि शाहु ते घेरो पर्यो जु आइ— ॥ १ ॥

चौपई

निज इसत्री अरू पुत्तर रिहारा । तिनहुं संग हुइ निकट उचारा ।
'फटे मलीन धारि कै चीर । तिन ते लेहु अछादि सरीर ॥ २ ॥
निकसि जाहु माता के पास । तहिं दुरि रहीयहिं बीच अवास ।
तुमहि बचावन हेतु उपाइ । मात बिना ते होइ न काइ' ॥ ३ ॥
सुनि देनहुं खिथर[1] तन धारे । चोरी निकसे वहिर पधारे ।
जबि तुरकन के बीचे आई । 'को हैं तूं कहु कहां सिधाई ?' ॥ ४ ॥
'हम गरीब जमना के तीर । जाति सपरशन नीर सरीर' ।
इम कहि सदन मात के आई । रुदति ब्रिलापति परी सु पाई ॥ ५ ॥
हठी सिंह को गेरि अगारी । कही 'परी हम शरण तिहारी ।
राखे जाइं अवहि जिस भांति । करहु उपाव राखीए मात' ॥ ६ ॥
घर प्रविशे अविलोक जबै । मन उदबिघन मात भई तबै ।
हौल उठ्यो दिल धीर बिनाशी । —मुहि ब्रिखाद दे लखि करि पासी ॥ ७ ॥
रह्यो न जाइ निकट रख इन को । करौ निकासन है अन बन को—।
इत्यादिक उर बहुत बिचारा । तत छिन मुखीआ[2] सिख हकारा ॥ ८ ॥
कह्यो भेत सभि, स्यंदन चरी । दौन चढाइ संग चलि परी ।
पुरि ते निकसो तुरत सिधाई । द्वै दिन बिते भरत गढ़ आई ॥ ९ ॥
भई प्रभात लरति पुरि मांही । डरति अजीत सिंघ पिखि तांही ।
पर्यो घमंड तुफंगनि केरा । अरधक सिंघ मरे तिस बेरा ॥ १० ॥
प्रसति हिरास्यो, धरि न रही । —छ्यौं जाइ करि भाजौं कही- ।
बहुत बिचारति कातुर होवा । घेरो चहुं दिशि महिं दिढ जोवा ॥ ११ ॥

---

1. फटे पुराने कपड़े 2. नेता

रहे निकट भट रण हित थोरे। टूके तुरक तीर चहूं ओरे।
नीठ नीठ संध्या लगि लरे। दसक सिंह रहिगे, सभि मरे ॥ १२ ॥
करी शीघ्रता चरन अज़ाहर[1]। निकसि अजीत सिंघ गा बाहर।
भुस बेचति जो ब्रिंद कलाल। हुते सिंघ तिस के पुरि जाल ॥ १३ ॥
तिन के सदन जाइ करि वर्‍यो। कोशठ महिं भुस तिस बिच दुर्‍यो।
पीछे सिंघ कत्ल सभि करे। लूट्यो सदन तुरक गन बरे ॥ १४ ॥
प्रात भई कहि शाहु खुजायो। मर्‍यो अजीत सिंघ नहि पायो।
बहु लोगनि मिलि तबहि बिचारा। लरति न इस थल महिं रिपु मारा ॥ १५ ॥
निकसि छप्यो किस के घर जाई। जे कर इहां लोथ नहि पाई।
सरब ब्रितत सुन्यो जबि शाहू। दुर्‍यो निकेत किसी पुरि माहू ॥ १६ ॥
कहि करि तबि डौंडी पिटवाई। सभि पुरि जन के श्रोनन पाई।
'दुरयो सदन जिस, आन बतावै। अबि बच रहै, न संकट पावै ॥ १७ ॥
नाहित जब पीछे हुइ ज़ाहिर। दैही दण्ड निकासौं बाहिर।
फांसी दे दे हतौं कुटंब। बचहि न कैसे लेहि अलंब' ॥ १८ ॥
सुनि कलाल दिल हौल बिसाला। जाइ बताइ दिय तिस काला।
'छर्‍यो आनि करि है घरि मेरे। पठि दीजै मुझ संग घनेरे' ॥ १९ ॥
ले करि गमन्यो सात सिपाही। जाइ दिखायो निज घर मांही।
गहि लीनो तहिं ते ततकाला। पहुंचे शाहु निकट नर जाला ॥ २० ॥
हेरति हुक्म दीन रिस धरि कै। 'गज के पग सो बंधन करि कै।
बारि बारि पुरि गरीअनि फेरो। निकसैं प्रान वहिर तब गेरो' ॥ २१ ॥
पाइ दाम दिढ बंधन कर्‍यो। कुचंग संग बंगे पुरि फिर्‍यो।
ऐंचति चरन घसीटति चल्यो। हेरन हेतु पंज नर मिल्यो ॥ २२ ॥
हाइ हाइ करि बहु बिललायो। माता स्राप दीन चित आयो।
रिदे बिसूरति बहु दुख पावै। उतर्यो मास हाड दृष्टावै ॥ २३ ॥
सगरे दिन महिं फेरनि कर्‍यो। गरी बजारन महि गज फिर्‍यो।
तऊ न निकसे प्रान तिसी के। बहु दुख पावन स्राप जिसी के ॥ २४ ॥
निकस्यो संध्या मैं पुरि बाहिर। गए पहारी लघु जिस ठाहर।
ऊच नीच थल पर जबि फिर्यो। तब सिर पग तरि दबि फुट पर्यो ॥ २५ ॥
इम दिल्ली पुरि महिं सो मारा। सिक्खन महां त्रास को धारा।
उत माता सुंदरी जबि गई। दिन द्वादश तहिं बासति भई ॥ २६ ॥

---

1. गुप्त

भई निरेशुर को सुध तहां। गुर पत्नी पहुंची पुरि इहां।
शाहु संग कुछ बिगरी बात। पालक पशयाती किय घात॥ २७॥
डर्यो मूढ निज मनुज पठायो। मात सुंदरी के ढिग[1] आयो।
हाथ जोरि तबि बात सुनाई। 'करहु न अपनि बास[2] इस थाई॥ २८॥
—शाहु के संग बिगार तुहारा—। सुनि भूपति के त्रास बिचारा।
अपर स्थान बास लो करीयहि। निज वस्तू ले अपर सिधरीयहि'॥ २९॥
सुनि माता मंन चिंत उपाई। चलिबे हित त्यारी करिवाई।
चढि स्पंदन पर तुरत पधारी। पहुंची मथुरा पुरी मझारी॥ ३०॥
जमुना तीर कर्‌यो निज डेरा। तहिं पुरिपालक सुनि तिस बेरा।
लै करि भेट मिलिनि को आवा। हाथ जोरि पग माथ टिकावा॥ ३१॥
'करहु मात जी! पुरि महिं वासा। लै देवहुं मै रुचिर अवासा।
जै पुर के राजे तुम दास। पठवौ खबर छिप्र तिन पास॥ ३२॥
सकल भालि को देहि गुजारा। समा बितावहु बैठ सुखारा'।
इम कहि ले करि अंतर गयो। शुभ अवास महिं बासा दयो॥ ३३॥
बांछति सरब वस्तु पहुंचाई। वहुत भाव ते सेन कमाई।
पुनि जै पुरि को सुधि पहुंचाई। 'मात तुहारे पुरि महिं आई'॥ ३४॥
सुनि करि तिनहुं ग्राम दुइ दीए। लिखि करि पटे पठावन कीए।
अपर तगीद[3] करी बहु भांति। 'सेवा करहु मात दिन राती॥ ३५॥
सुंदर घर दीजै बनवाई। बांछति बस्तू सर्‌ब पुचाई'।
पुरि पालक ढिग पठ्यो सु आयो। सभि माता के पास सुनायो॥ ३६॥
मथरा निकट दए दो ग्रामू। सदन बताइ दीन अभिरामू।
अबि लगि मथरा महिं सु हवेली। दरसहिं तहां खरी सु इकेली॥ ३७॥
मात सुंदरी बासा कर्‌यो। सगरो त्रास निवार बिदर्‌यो।
हठी सिंह को नित प्रितपाले। रुचि ते आछे असन खुआले॥ ३८॥
अपर दरब सिक्ख संगति केरा। पहुंचहि मथुरा महिं तिस बेरा।
प्रथम समा‍ा आमदन आवै। तिम ही खर्‌च होति नित जावै॥ ३९॥
हठी सिंह के हेतु तुरंग[4]। लौंए मोल सुंदर सर्‌बंग।
चाकर सिंघ पास तिम राखे। जथा अजीत सिंघ अभिलाखे॥ ४०॥
वहिर चढे हित सैल अखेरा। खरचन लग्यो दर्‌ब बहुतेरा।
पित के सम सभि कछू बनायो। माता हेरि हेरि सुख पायो॥ ४१॥

1. पास 2. निवास करना 3. ताकीद 4. घोड़ा

कर्यो देहुरा गुरू नवम को। हुकम भयो जबि गुरू दसम को।
सिक्ख संगत बहु दर्ब लगायो। ऊचो मंडप चारू सुहायो॥ ४२॥

तुरकेशुर की आइस पाइ। छौंन बेनवे लीनि सु थाइं।
सो सभि ढाहि मसीत चिनाई। अपनो दर्ब लाइ समुदाई॥ ४३॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने **'हठी सिंह प्रसंग'** बरननं नाम दोइ त्रिसंती अंशु॥ ३२॥

अंशु ३३

हठी सिंह प्रसंग

दोहरा

प्रितपालति है पुत्र सम करहि स्नेह बिसाल ।
कर्यो बास मथुरा बिखै शांति रिदे चिरकाल ।। १ ।।

चौपई

बड़ी अरावल भोगनि करी । ब्रिध देह होइ जर जरी ।
दिल्ली आदि संगतां ब्रिंद । देति उपाइन भाव बिलंद ।। २ ।।
पूजहि मात सुंदरी दरसहिं । गुर गेहण कहि महिमा हरशहिं ।
होति सकेलन धनु समुदाया । दूर दूर ते प्रावति माया ।। ३ ।।
हठी सिंघ खरचहिं अरू खाइ । पहिरे ज़ेवर रतन जराइ ।
पोशिश बहुत मोल की फबै । मानै सिक्ख संगत मिलि सबै ।। ४ ।।
जथा समाज पिता का सुन्यो । तथा सकल रचि कै गुर बन्यों ।
करहि खरीदन मोल तुरंग । सुंदर जीन ज़री बहु संग ।। ५ ।।
हेम रजत शस्त्रनि लगवाए । सिंह चाकरी हित रखवाए ।
संग अरूढहि जित को जात । सभि महिं निज दिखाइ भलि भांति ।। ३ ।।
करहि सैल को चढहि अखेरे । दुंदभि बाजति चलति अगेरे ।
ज्वाला बमनी संग रखावै । कानन के पंछी म्रिग घावै ।। ७ ।।
माता पास आइ जुग समैं । बैठहि निकट बंदि कर नमैं ।
कहि कहि सिख्या देति घनेरी । 'निज पित दशा बिलोचन हेरी ।। ८ ।।
गुरप्रताप ते कमी न काई । आइ पदार्थ नित समुदाई' ।
अधिक पढावहि श्री गुरबाणी । महिमा को जनाई[1] सहीयाणी ।। ९ ।।
आर्बला खोड़स बरखन की । तरुन अवस्था तन की दमकी ।
कवि कबि दिल्ली के सिक्ख जाइ । माता को मानहिं परि जाइ ।। १० ।।

---

1. ज्ञान दे कर

गुरू देहुरे की बहु गाथा। करहिं सुनावनि दुख के साथा।
'बडो कुकाज बेनवे कर्यो। थल ढाहनि लगि मतसर भर्यो ॥ ११ ॥
आप दराज़ मसीत चिनाई। जिसको लग्यो दर्ब समुदाई।
श्री गुरू गोबिंद सिंह बनायो। दे आइसु धन गन लगवायो ॥ १२ ॥
को जानै अबि गुरू स्थान। बनहिं कि नहीं सु प्रथम समान।
महां अचर्ज कर्यो मतिमंदे। सिक्ख बिबस भे बस न चलंदे' ॥ १३ ॥
सुनि कै मात सुंदरी कहे। 'श्री गुर असथि तहां अबि रहे।
गाडनि करे बहुत ही नीवे[2]। तिन ते पुन सतिगुर थल थीवे ॥ १४ ॥
पंथ खालसा बिदतहि जबै। एक सरदार आइ पुन तबै।
सो तुरकेशुर ते कहिवाइ। सभि मसीत को दे ढहिवाइ ॥ १५ ॥
सतिगुर असथिनि काढ दिखावे। बहुर देहुरा महिद बनावै!
पूजहि सिक्ख संगत सभि आइ। प्रभू मनोरथ निफल न जाइ' ॥ १६ ॥
सुनि दिलवाली रिदै अनंदति। बार बार मातहिं पद बंदति।
अबि अजीत सिंह कीनि कुकरम। पाइ स्राप को भयो बिशरम ॥ १७ ॥
हठी सिंघ पढि पढि गुरबानी। मैं भी करौं कामना ठानी।
पचि बहु रहै न पद बनि आवै। लिखत बिचारति समो बितावै ॥ १८ ॥
जबि करि रह्यो शब्द नहि बन्यो। तबि सो लिख्यो गुरू जो भन्यो।
तिस महिं श्री नानक को नाम। सो नहि लिखति भयो तिस ठाम ॥ १९ ॥
अपनो नाम तहां लिख दीन। सिक्खन पास सुनावन कीन।
केतिक दिवस करति इम भयो। इक सिक्ख निकट मात के कह्यो ॥ २० ॥
'श्री नानक को नाम हटाइ। तिस थल अपनो लिखहि बनाइ!
सिक्खन को उपदेशति फेर। इस बिधि पढहु लिखहु बहु बेर' ॥ २१ ॥
सुनति सुंदरी निकट हकारा। तरजहि रिस के बाक उचारा।
'इह क्या कीनि ? कुमति तै धारी। श्री सतिगुर महिमा न बिचारी ॥ २२ ॥
जोति जागती ज़ाहर जिन की। चहुं कुटंब महिं महिमा तिन की।
जिह सिमरै सिक्ख धरि धरि भाइ। पूरवहिं कारज होहिं सहाइ ॥ २३ ॥
तिन को नाम हटावन करैं। तहां मूढ़! लिखि अपनो धरैं।
पढनिहार जे हैं सिक्ख स्याने। सो क्या नहीं करि जानें ॥ २४ ॥
निंदा तेरी करहि कुकर्मी। चाहति चातुर बन्यो बिशरमी।
सुनि पिखि सीस निवावहिं जिनको। सुभ मति लखहिं महातम तिन[2] को ॥ २५ ॥

---

1. नीचे, गहरे 2. गुरबाणी को

पाल्यो नीठ नीठ लखि ईठ। बडे होइ निकस्यो अस ढीठ'।
इत्यादिक दुरबाक घनेरे। कहि करि तरजन कीनि बडेरे॥ २६॥
सुनति हठी सिंघ करति बतावनि। 'मैं तो कीने नए बनावन।
सुनहं मात जी! तुमरे पास। कर्‍यो किसी ने कूर[1] प्रकाश॥ २७॥
इम कहि ढिग ते उठि करि गयो। मात ब्रिधा लखि गरबति भयो।
बरज्यो, कछू न मन महिं आना। तिमही बहुर करन को ठाना॥ २८॥
अपन नाम गुर शब्द मझारा। लिखैं, सुनावैं अधिक प्रकारा।
सुनि सुन माति खिझे बहु बारी। बरजति तरजति दे करि गारी॥ २९॥
'तुव पित करति कुकर्मन जैसे। जान्यो निशचै तूं हुइं तैसे।
कयो न बिचारति क्या गति होई। नित प्रति मोहि दुखावत सोई'॥ ३०॥
हठी सिंघ हठ धरे बडेरा। नही टर्‍यो समुझइ घनेरा।
निकट मात के कबि कबि आवै। मन भावति करतूत कमावैं॥ ३१॥
मात सुंदरी दुखति बिसाली। जानि लीनि मन खोट कुचाली।
सहि न सकहि करतूत कुढाली[2]। रिसहि, चलहि नहिं बस तिस नाली॥ ३२॥
सम अजीत सिंह के तिह माना। कर्‍यो सनेह रिदे ते हाना।
कोप करहि सो मानहि नाही। चह्यो जाऊ दिली पुरि माही॥ ३३॥
केतिक दिवस बिचारन करी। त्यार होइ स्यंदन पर चरी।
हाथ जोरि पुन रह्यो हटाइ। मात न हटी घनी रिस पाइ॥ ३४॥
चलि करि पंथ उलंघति सारे। संगति आई सुनति अगारे।
वहु सनमान सहित ले गए। धरहिं अकोरन बंदन कए॥ ३५॥
अपन घर महिं प्रविशी जाइ। दर्शन करहिं सिख समुदाइ।
आयुध खष्ट गुरू के जाऊ। आने संग पल तिन होऊ॥ ३६॥
राजा राम सु शाहु बज़ीर। सुनि करि आए सुंदरी तीर।
दयो दर्ब बंदन बहु कीनि। मात खुशी करि आशिख[3] दीन॥ ३७॥
पूरव के प्रसंग पुन कहे। 'कहां अजीत सिंह म्रितु लहे?।
होन हार सो मिटति न कबै। बुधि बल ते प्रयास करि सबैं'॥ ३८॥
पुन माता ने भन्यो ब्रितंत। 'मुझ को संकट रहे अनंत।
लरि करि जबि अजीत सिंघ मारा। पीछे लुट्यो मोहि घर सारा॥ ३९॥
वस्तु शाहु के गई खज़ाने। बरज्यो किसू न मम घर जाने'।
राजा राम सुनति कहि धीर। 'मैं अबि कहो शाहु के तीर'॥ ४०॥

---

1. झूठ 2. बुरी 3. आशिष

इम सुनाइ बिच दुर्ग पयाना। शाहु समीप ब्रितंत बखाना।
'प्रथम बहादुर शाहु बडेरे। तिस पर सतिगुर खुशी घनेरे॥ ४१॥
सलतन दीनि फेर तुम घर सो। तारा आज़म हति इक सर सों।
तिस गुर के गेहन बिच पुरी। समा बितावन के हित थिरी॥ ४२॥
तिह घर लूटि खज़ाना डारा। इह तुम को है बहु बुरिआरा।
गुर पीरन को अदब बडेरा। सुख प्राप्त ह्वै लोक घनेरा'॥ ४३॥
सुनति शाहु उर त्रास बिचारा। कह्यो 'समाज फेर दिहु सारा'।
तत छिन राजा राम अनंद। निकसायो जहिं धर्यो बिलंद॥ ४४॥
मात सुंदरी सदन पुचायो। बिनै बखानि हरख उपजायो।
दिल्ली पुरि महिं प्रथम समान। बसनि लगी भी ब्रिधा महान॥ ४५॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने '**हठी सिंह प्रसंग**' बरननं नाम तीन त्रिसती अंशु॥ ३३॥

अंशु ३४
हठी सिंह प्रसंग

दोहरा

इस प्रकार माता रही दिल्ली पुरि महिं फेर।
संगत सेवे भाव धरि मेल सकेल बडेर ॥ १ ॥

चौपई

समा सतारा सया बितायो। चढयो अठारा सया गिनायो।
नादर शाह आइ चलि गइऊ। सलतन सकल बिनासी भइऊ ॥ २ ॥
मात ब्रिधा जरजरी सरीर। सेवति संगति रहि नित तीर।
संमत चार बीतिगे और। अंत सयम पहुच्यो तिस ठौर ॥ ३ ॥
तिथ इकादशी महिं तजि प्रान। पहुंची पति ढिग मुकति स्थान।
श्री हरिक्रृष्ण देहुरा जहां। साहिब देवी दाहभि तहां ॥ ४ ॥
दिल्ली की संगत मिलि सारी। रच्यो बिमान लाइ धन भारी।
कंचन कुसम घरावनि करे। बहुमोले पट ऊपर परे ॥ ५ ॥
ऊरध देहक मातहि केरा। नीक कीन धन लाइ बडेरा।
गरी बजारन महिं बर्खाइ। सिक्ख संगत लैगे तिस थांइ ॥ ६ ॥
चंदन की चिख रची बिसाला। बहु घ्रित ले करि तिस महि डाला।
ऊपर धरि शरीर को तबै। बिधि सों भस्म दियो करि सबै ॥ ७ ॥
क्रिया कर्म सिक्खन करवाए। जग्ग बिसाल कर्यो धन लाए।
बिप्रनि साधन दीनि अहारा। घर को धन दिय दान उदारा ॥ ८ ॥
जो माता के सेवक अहे[1]। सदन पदारथ सभि तिन लहे।
हठी सिंह मथरा महिं रह्यो। ग्राम दुहूनि मामला लह्यो ॥ ९ ॥
केतिक संगति आनि चढावै। केचित सिक्ख बनन को आवै।
तिस की भी संगति कुछ होई। दर्शन करि धन अरपहि सोई ॥ १० ॥

---

1. थे

साठ सऊर[1] जु संग बनाए। ब्याह आपनो लीनि कराए।
तहिं रहि संमत बहुत बिताए। काबल के गिलजे[2] पुन आए॥ ११ ॥
काल जमन जो कृष्ण संघारा। रह्यो संकलप जन्म तिन धारा।
मथरा कत्ल करौं अरू पुरि को। मरत्यो रह्यो मनोरथ उर को॥ १२ ॥
अहिमद शाहु नाम जिस भयो। प्रथम गुरू दसमें कहि दयो।
माझे बिखै प्रथम बल घाला। लूटति कूटति आइ उताला॥ १३ ॥
थोरे सिंघ भए तिस काला। सूर बीरता धरहि बिसाला।
रण घाल्यो सनमुख रिपु होइ। सैना अधिक, करहिं क्या सोइ॥ १४ ॥
तऊ हजारन के हति प्राना। कर्‌यो दुष्ट के कष्ट महाना।
थोरे बहुत मिनहिं नहिं सिंह। निभै लरहिं जिम कानन सिंह॥ १५ ॥
घेर लीन इक थान घनेरे। सिर काटे सभि को तिस बेरे।
बीस हज़ार गिननि महि आए। कित कित रहे न दृष्टी आए॥ १६ ॥
तिस रण को अबि लौ नर लहैं। छल्लछारा नाम सु कहैं।
लवपुरि महिं मलेछ थिर होए। सिंघ होनि नहि पावै कोए॥ १७ ॥
पंज रजतपण सिर के करे। बाढहिं दुष्ट दृष्टि जहिं परे।
लवपुरि के बजार महिं फेर। चिणे सीस लाप बड ढेर॥ १८ ॥
श्री अमृतसर जबहि उसारा। गुरु अर्जुन तबि स्राप उचारा।
उखरहिं जड़ां मसंदन केरी। तीर्‌थ नीव पोलीए हेरी॥ १९ ॥
इह भी बिनस जाइ इक बार। सिख मेरे तब लेइ उसार।
इस हित अहिमद नहिं चलि आयो। हरिमंदिर बारूद उड़ायो॥ २० ॥
सभि सुपान भी दई उखेर। ताल भर्‌यो म्रितका चहुं फेर।
ऊपर लांगुल[3] को फिरवाइ। खेती तिस थल दई बिजाइ॥ २१ ॥
देश उजारति लांघति धायो। डेरा पुरि मथुरा ढिग पायो।
लोक नगर के दिज रिस बेरे। बनीए आदिक आइ घनेरे॥ २२ ॥
कर पर धरे उपाइन ल्याए। उतर्‌यो बहिर तहां निपराए।
ईट अचानक इक चलि गई। अहिमद के मुख लागति भई॥ २३ ॥
रिस करि लोकरि की दिशि हेरा। कर्‌यो हुक्म कटीआ इस बेरा।
धाइ मलेछ परे तबि कैसे। मिरगावलि परके हरि जैसे॥ २४ ॥
पुरिजन कत्ल लुट्‌यो पुरि सारा। गहि आनी दल महिं बहु दारा।
हठी सिंह तबि हुतो तहां ही। गाढो रह्यो अपन पर मांही॥ २५ ॥

---

1. सवार 2. गिलज़ाई पठान 3. हल

निकट अपने दियो न कोई। पुंज तुफंग प्रहारहि सोई।
केतिक पुरि जन बीच बरे है। कितिक वहिर ढिग भीति परे है॥ २६॥
सगन द्‌योस ह्वै करि सिंघ गाढे। गुलकां हती दूर अरि ठांढे।
इस बिधि आधी रात बिताई। हठी सिंह तबि चही चढाई॥ २७॥
ज़ीन तुरंगन पर तबि पाए। घर मंहि चोबे बहुत अलाए।
"जे करि गुरू कहावति आछे। चोरी निकसन को नहिं बांछे॥ २८॥
गमनहु अपनी बजाइ नगारा। दसम गुरू को लेहु निहारा।
अलप बैस कछु नही बिचारा। चढि हय पर तवि हुक्म उचारा॥ २९॥
'दुंदभि धुनि उची बजवायो। देहि तिलावा तिन सुन पायो।
दिन मंहि जो मवास दृढ़ रह्यो। निकस्यो अबहि मलेछन लह्यो॥ ३०॥
दसता एक चमू को भारी। ओरड आनि पर्यो बल धारी।
साठहुं सिंह घिरे तिन मांही। मारग निकसन को कित जांही॥ ३१॥
हठी सिंह को रिस करि कह्यो। 'लाल बैस अनजान न लह्यो।
भाज जाहू जे भज्यो जाइ। हम तौ मरहिं हजारन छाइ'॥ ३२॥
सुनि करि उर धरि तुरत पलायो। बच्यो भरथगड मंहि प्रविशायो।
रूपे सिंह हथ्यार संभारे। साठहुं तुपक तुरत भरि मारे॥ ३३॥
बहुर करी नंगी शमशेर[1]। मारि मलेचछन को सम शेर।
राति अंधेरी सूझ न आई। आपस मंहि तरवार चलवाई॥ ३४॥
हुती चंमू दस देइ हज़ार। आपस मंहि कटिगे तिस बार।
सिंह जंग नंहि सुरग सिधारे। दुष्ट हजारहुं तहां प्रबारे॥ ३५॥
हठी सिंह तहि ते निकसायो। पुन बुरहान पुरे चलि गयो।
बस्यो तहां बड सदन चिनाए। सिक्ख संगति करि कै समुदाए॥ ३६॥
सुत उत्पंन भयो नहि कोई। बैस बिताई तहिं बसि सोई।
एक सुता उपजी तिस केरे। पुन परलोक भा तहां भलेरे॥ ३७॥
अबि लौ चिह्नत पुरि बुरिहाने। हठी सिंह को थल नर जाने।
अहमद शाह मुर्‌यो पुन पाछे। लरहिं सिंह जित कित ने आछे॥ ३८॥
आगा पाछा लूटि पलावैं। रिपु को कष्ट महा दिखरावैं।
इम ही मारति अटक उतारा। श्री अमृतसर बहुर उसारा॥ ३९॥
म्रितका कार दुसालनि डाले। गुरू नीव ते चिन्यो उताले।
महां प्रेम ते नाल बनायो। हरिमंदिर सुंदर उसरायो॥ ४०॥

---

1. तलवार

गुर म्रिजाद ते बाध न घाट। पूरब सम ही कीनसि ढाट।
अबि लौ दरस लगहि बहुतेरा। जिस के सम जग अपर न हेरा ॥ ४१ ॥
एक समय सिंह दिल्ली गए। शाह संग रस राखति भए।
गुरू नवमि थल खोजन कीति। चिनी बेनवे दुष्ट मसीत ॥ ४२ ॥
बडे जोर सो तबि ढहिवाई। अपनो दीनो पता दिखाई।
अस्थी की गागर दुइ भरी। सो निकसाइ दिखावनि करी ॥ ४३ ॥
झूठो भयो बेनवा जबै। सभिनि प्रतीत धरी उर तबै।
गुरू देहुरा बद चिनवायो। अबि लौ ज़ाहर खरो दिखायो ॥ ४४ ॥
बीच बज़ार थान तिह लीन। गुरू बैठि जहिं कारन कीनि।
इन ते आदि अपर थल गुर के। ज़ाहर करे हुते जो धुर के ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने '**हठी सिंह प्रसंग**' वरननं नाम चतुर त्रिसती अंशु ॥ ३४ ॥

अंशु ३५

आनंदपुर गादी प्रसंग

दोहरा

श्री अनंदपुरि जिम बस्यो श्रोता सुनहुं प्रसंग ।
बाल बास दसमें गुरू बाक कह्यो जिस ढंग ।। १ ।।

चौपई

छींटन संग भिरे बहु बालक । भाग गुलाब राइ ततकालक ।
ले पगीया गुर की सिरि धरी । भिरे कछू नहिं जानी परी । २ ।।
अपर नरन सो बरजन कर्यो । सतुद्रव महिं सतिगुर निहर्यो ।
कह्यो-रहिन दिहु हुइ अस समैं । गुरता पाग अरप है तुमैं—।। ३ ।।
इह बच साच हुयो चहि जाने । जबि आनंदपुरि त्यागि पयाने ।
श्याम सिंह अरू राइ गुलाब । हुते संग भा जंग अजाब ।। ४ ।।
इन की दिशि श्री सतिगुर हेरा । लिख्यो हुक्म नावां तिस बेरा ।
नाहणेश राजे के साथ । लिखि द्वै भ्रात पठे तहि नाथ ।। ५ ।।
—तुरकनि संग बिगार हमारे । रखहुं राज निज बिखै सुखारे—।
ले करि दोनहुं भ्रात सिधारे । और सकल अपनो पखारे ।। ६ ।।
नाहणेश के ढिग जबि गए । दयो हुक्म नामा थिर भए ।
देखि भूप पटि करि अभिलाखे । गिरबी ग्राम नाम दे राखे ।। ७ ।।
सहित कुटंब रहे सुख पाए । तिसी ग्राम महि धाम बनाए ।
बंदे आदिक को उत्पात । जब्रि हटि गयो भई सुख शांति ।। ८ ।।
तबहि गुलाब राइ चलि आयो । अनंदपुरि को चहति बसायो ।
तब जो तहिं कहिलूरी नाथ । मिल्यो जाइ करि तिस के साथ ।। ९ ।।
'आनंदपुरि को जेतिक थेह । करि कै मोल मोहि को देह' ।
साठ हज़ार दर्ब निप लीनि । साठ घुमाउ धरा तिह दीन ।। १० ।।
श्याम सिंह अरू सकल कुटंब । आनि बसे ले नर न कदंब ।
कितिक सदन हित अपनि बनाए । केतिक अपर कुटंबी आए ।। ११ ।।

दीप मालका दिवस बिसाखी। होरि बिखै होहि अभिलाखी।
हित पूजा के बनि ठनि बैसे। दसमे गुरू बिराजैं जैसे ॥ १२ ॥
संगति आवन लगी बिलोक। देखा देखी ह्वै गन लोक।
ल्याइ उपाइन पूजहिं पाइ। श्री सतिगुर की रीति मनाइ[1] ॥ १३ ॥
आवन लग्यो दर्ब समुदाइ। मेला होन लग्यो तिस भाइ।
कलगी जिगा बिभूखन सारे। जिम श्री गोबिंद सिंघ तन धारे ॥ १४ ॥
तिम ही कमर[2] कसा शुभ करि कै। सभि महिं बैठति मंजी चरि कै।
श्री गुर शोभति जिस अस्थान। तहिं ही इह बैठे बड मानि ॥ १५ ॥
ऐश्वरज बध्यो भयो हंकार। गुर की समता महिं चित धारि।
हुतो देहुरा नवम गुरू जहिं। सेवा हित गुरबखश साध तहि ॥ १६ ॥
आप गुरू थिर करि तिह गए। धूप दीप आदिक क्रित कए।
तिन इक दिन अविलोक्यो आनि। थिर्‌यो गुलाब राइ गुर थान ॥ १७ ॥
सही न गई अव्वग्या हेरि। हाथ जोर बोलयो तिस बेरि।
पूजा लेनि आदि क्रित सारी। सभि करीयहि नहि को हटकारी ॥ १८ ॥
बैठन उचित न गुर के थान। बंदन जोग सभिनि के जान।
थान बनावहु आपन दूजा। तहां बैठि लीजहि सभि पूजा' ॥ १९ ॥
सुनति गुलाबराइ रिस भर्‌यो। 'क्यों फुकरे[3] मुहि देखति जर्‌यो।
पुरि उजर्‌यो नहि किनहुं बसायो। गुर को अदब न किन रखवायो ॥ २० ॥
मैं उपाइ करि दे करि दर्ब। फिर इत उतहि बसायो सरब।
गुर थल बिदत करे धन लायो। लोकनि ते तहिं माथ टिकायो ॥ १ ॥
तूं सेवक सेवा पर राखा। समता हित कहिबो किम कांखा।
कारज करिवे शक्ति न कोई। अपर जि कर्‌यो ईरखा होई ॥ ॥
तबि न ईरखा किनहुं करी। आमदनी पिखि अबि मति जरी।
मुझ आगे अबि दिहु न दिखाई। दूर करहुं गहि कै बरिआई' ॥ ३ ॥
तीन चार नर उठि तत्काला। पकरि धकेलति वहिर निकाला।
जानि अव्वग्या को अपराधू। दियो स्राप कोप्यो तबि साधू ॥ ४ ॥
'केतिक दिन महिं जड़्ह उखरै है। सुत समेत तरन ही छै ह्वैं'।
इम कहि गयो आपने डेरे। सेव देहुरे करहि धनेरे ॥ ५ ॥
चित मैं तपहि साध बहुतेरा। —बाद अनादर कीनसि मेरा।
गुरू अव्वग्या ते मैं कह्यो। गरबति मनि ते नीक न लह्यो ॥ ६ ॥

---

1. इन की मान्यता गुरुओं जैसी थी 2. कमर के गिर्द कपड़ा बांधना 3. निर्धन को कहा जाता है

केतिक दिन बीते तिस पाछे। जेष्ट पुत्र रिदे प्रिय बाछे।
किस कारन ते सो मरि गयो। दाह कर्यो अतिशै दुख भयो॥ ७॥
शोक बिखै ब्याकुल हुइ रह्यो। खान पान को चित नहि चह्यो।
तिस की मात ब्रिलाप बडेरी। स्रोचति अश्रु पात बहुतेरी॥ ८॥
दिवस तीसरे जो सुत मर्यो। किह नर संग वहिर मिलि पर्यो।
हत्यो ससा इक दीनसि हाथ। कह्यो संदेसा दिल के साथ॥ ९॥
'छुधति होइ किम संकट धारो। मुझ को जीवति ही निरधारो।
बिन आमिख नहिं अचहिं अहारा। यांते पठ्यो तिनहुं हित मारा॥ ३०॥
मोहि मर्यो लखि शोक न कीजै। खान पान करि आनंद बीजै'।
सुनि ले करि सो मानव आयो। सुत को कहिबो सकल सुनायो॥ ३१॥
सुनति गुलाबराए सो हरख्यो। शक्ति सहत निज सुत को परख्यो।
ले करि मास बनाए रिंधायो। निज घर महिं तिम भाखि पठायो॥ ३२॥
सुनि करि सुत की मात रिसानी। भई कोप तिह निठुर बखानी।
'अभिख खान बिना अकुलावै। अनिक फरेबनि बात बनावै॥ ३३॥
पुत्र नही प्यारे जिह रिदै। आभिख अचवन प्रिय जद कदे।
कहां शोक अचरहि बिरलापहि। छुधति कहां जिन सुत विरह तापहि॥ ३४॥
शुभ गुन सहत पुत्र अस मरै। पिता निठुर स्वादति हित धरै।
खाइ अघावहि आसिख सोई। हम को शोक दुखति बहु होई'॥ ३५॥
इत्यादिक बहु कह्यो कठोर। गयो गुलाब राइ की ओर।
घर की कहिवत सकल सुनाई। उर महि खर जिम अनी धसाई॥ ३६॥
बाक बान ते बीधन होवा। बहु ब्याकुलता रिदा परोवा।
खाइ न जाइ हट्यो नहि जाइ। चित चिंता अतिशै अकुलाइ॥ ३७॥
बहु दुख पाइ क्रोध वधि गयो। स्रापत सहत सु दुरबच कह्यो।
'अपर पुत्र अरू मोहि समेत। वहि किसहूं को मिखहिं निकेत॥ ३८॥
करति शोक ही बैठे रहीयहि। खान पान नितु दुख ते लहीयहि'।
इम कहि केतिक दिवस बिताए। अंत सम तबि लौ नियराए॥ ३९॥
सुत के सहत भयो परलोक। पीछे बध्यो अधिक ही शोक।
सभि को अंत भयो इह भांति। तिस को रह्यो न को पशचाती॥ ४०॥
बहुत गुलाबराइ की दारा। बैठन की होइसि[1] अधिकारा।
जो नर पुंज उपाइन ल्यावैं। मस्तक टेकहिं तिह अरपावै॥ ४१॥

1. प्राप्त हो गया

जबहि थिरहि पाछे अबि कोई। चितहि थिरहि पाछे अबि कोई।
श्याम सिंघ कुल[2] ब्रिधक हेरा। सुरजन सिंघ नाम जिस केरा ॥ ४२ ॥
निज उछंग सो पावन कीनि। आप परलोक पयाने कीनि।
सुरजन सिंघ थिर्यो तिस पाछे। सभि सिंहन महिं बिदत्यो आछे ॥ ४३ ॥
तिस के तीन पुत्र जग भए। अंत समा जबिहूं नियरए।
जेष्ट सुत तिलोक सिंघ थिर्यो। केतिक बरखन संगति ने पूजा ॥ ४४ ॥
तिन को भी परलोक जबि भयो। त्रिती दिवान सिंघ पद लयो।
अबि बैठति है गादी ऊपर। बिदत अहै जानहिं बहु भूपर ॥ ४५ ॥
सोढी आनंदपुरि महिं जेई। श्याम सिंघ को कुल सभि तेई।
गादी थिरे भने मै सोई। अपर सिंघ जानै सभि कोई ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने **'आनंदपुर गादी प्रसंग'** बरननं नाम पंच त्रिसंती अंशु ॥ ३५ ॥

---

1. पौत्र

अंशु ३६

मंगल प्रसंग

दोहरा

सारसुती निज दास पर भई सहाइ अपार ।
पारद बरनी पारदा ग्रिंथ सिंधु ते पारि ॥ १ ॥

चौपई

करनी सुख दुख दारिद[1] हरनी । हरनी सुत सम आखनि बरनी ।
बरनी बक्र महां छबि धरनी । धरनी बुधि की बय तरुनी ॥ २ ॥
तरनी बिघन सिंधु जिह शरनी । सर नीरज दुति द्रिग आदरनी ।
दरनी दोखनि दास उधरनी । धरनी करुना गुनीअनि बरनी ॥ ३ ॥
बरनी कुंद इंद्र आभरनी । भरनी नाग बिछन गन अरिनी ।
अरिनी करे अनंद उसरनी । शरनी परे क्लेश निवरिनी ॥ ४ ॥
हरी सिमरि कथ पूरन करी । करी कालुख को बाछनि खरी ।
खरी भई जिम मुकता लरी । लरी कुमति सो तूरन हरी ॥ ५ ॥
पारब्रह्म के गुर अवतार । तारन हित जग भगत उदार ।
दारुन दुख ते कीनि उधार । धारे सिक्खी परे सु पार ॥ ६ ॥

स्वैया

धारि अपूरब पूरब रूप भए गुर नानक जोति उदारहि ।
दार किधौ नर पंथ परे तिन से जग सागर ते परि पारहि ।
पारति है गुन टारति औगुन, ग्यान सिखावति बाक बिचारहि ।
चारहुं बेद उचारहि सारहि, बंदति हौ अबि मोहि उधारहि ॥ ७ ॥

चित्रपदा छंद

जालि जंजाल फसे जु मिले, तिन दासनि ब्रिंद बिकारन जालि ।
जालनि को उपदेश बखानिकै श्री सतिनाम की दे जयमाल ।
मालिक दीन दुनी गुर अंगद बंदन ते करि देति निहाल ।
हाल भलो परलोक तिनै, नहि फेर फसैं कबिहूं जमजाल ॥ ८ ॥

---

1. गरीबी

सवैया

मोहि रिदै बसि कै निस बासुर नाश कलेश करो, हुइ मोहन ।
मोहन[1] के पित श्री गुर पूरन दासन के कर्ता मन मोहन ।
होहि न लोभ को लोभ कबै, नहिं काम को काम हंकार न क्रोह[2] न ।
कोह[3] की ओर सदा निज दासनि दान को दीन करे निरमोहन ।। ९ ।।

हरिदास[4] तनै हरिदास[5] भनै हरि रूप बनै हरि पूजति है जिन ।
हरि दोशन दै सुख दासन को उर मोहि ते आदि बिकार भरे जिन ।
बर देति तिनहि बर मानव से बरबंड भए जम रूप पिखै जिन ।
कर बंद तिनै करि बंदन को, करतार गुनाकर ग्यान अमेजिन ।। १० ।।

कबित्त

अर्जुन[6] सुनि मेरी सतिगुरू अरजन[7], अरिजन हीन अरजन जस दीनिओ ।
कविता प्रपूर में चरित्र भरपूर निज, पूरमे परी है ग्रंथ पूरन जि कीनिओ ।
कथा गुन सुखर को सर खर, गुरू सर और ना, शर्न यां ते लीनिओ ।
नाम लिवतार दे उचार भव पार दे, पतार ते उधारि पद तारिदे प्रबीनिओ ।। ११ ।।

सवैया

सारंग[8] पै कत्रि सारंग[9] पै चढ़ि, सारंग[10] शत्रुनि को बल सारंग[11] ।
सारंग[12] ज्यों जग मै कुल सारंग[13], सारंग[14] ज्ञान प्रकाशनि सारंग[15] ।
सारंग[16] दासनि को प्रिय सारंग[17], सारंग[18] दोशनि को सम सारंग[19] ।
सारंग[20] पानि भयो नर सारंग[21], सारंग[22] श्री हरिगोबिन्द सारंग[23] ।। १२ ।।

भव पालक सिंधु अगाध त्रिन्हो शरना[24] सरना[25] तरना[26] तरना[27] ।
पर ऐश्वरज हेरि रिदे जरना[28] निज ओज महां जरना[29] जरना ।
हरि राइ प्रभू सम के हरि के जन दोश कर हरना हरना ।
कहना कहना फुल ह्वै न सुगंधि, गुरू करुना करना करना ।। १३ ।।

---

1. गुरू अमरदास जी के बड़े सपुत्र का नाम 2. क्रोध 3. पहाड़ 4. गुरू राम दास जी के पिता का नाम 5. अकाल पुर्ख का दास 6. विनय 7. पंचम गुरू का नाम 8. हाथी 9. घोड़ा 10. हिरन 11. शेर 12. कमल 13 सूर्य 14. दीपक 15. अग्नि 16. चातक 17. बादल 18. सायं 19. गरुड़ 20. धनुष 21. ईश्वर 22. वैसा ही रंग 23. प्रकाश 24. शरण 25. विधि नहीं आती 26. पार जाता है 27. तैरना नहीं आता 28. जलना 29. जर सकना

चौपई

क्रिशन[1] वरतमा गुरू हरि[2] क्रिशन। कानन[3] कलि के कल मल क्रिशन।
नाम सरूप विशनु[4] हरि क्रिशन। सिमरहु बंदहु ह्वै कबि क्रिश न[5] ॥ १४ ॥
क्रिशिनि[6] गुनन गन मनहु क्रिसान। बंधन बसनि बिपन क्रिसान[7]।
जिनके पूजक रेत क्रिसान। सो सरूप सतिगुर भगवान ॥ १५ ॥
सिक्ख बिकार परहरन बहादर। जिस करुना सभि थान महादर[8]।
हिय ने सिमरति जत कत हादर[9]। नमो नमो श्री तेग बहादर ॥ १६ ॥

सवैया

बारी[10] रची जस उज्जल की बिकसे जिम फूल सदा सुखबारी[11]।
बारी[12] ए बारी रटे जिस नाम उधारति है जग जे निधि बारी।
बारी[13] गुरू पर, पंथ शुरू किय, पौ शरनी, करीए न अबारी[14]।
बारी बचनं हरै मल पापनि श्रूयत सिक्ख सदा परबारी ॥ १७ ॥
बावन ह्वै बल राइ बंध्यो, बलि बालि बध्यो, पुन भे नर सिंघ।
कच्छप, सच्छ, बराह बने मृग, राखश दैत हते जिम सिंघ।
राम भए, दिज राम भए, घनश्याम भए धर मै नर सिंघ।
सो कल महिं गुर नानक रूप दसो तन भे लग गोबिंद सिंह ॥ १८ ॥

चौपई

दसहुं गुरनि की करना पाई। दसों गुरें की कथा बनाई।
पुन पुन धर परि धरि धरि सिर को। बंदन करौं प्रेम करि उर को ॥ १९ ॥
पुरबारधि उत्तरारधि दोइ। कथा बनी गुरू नानक सोइ।
बदनी द्वादश राशि अगारी। नवम गुरू लग कथा सुधारी॥ २० ॥
खट रितु जुगत बने जुग ऐन। श्री गोबिंद सिंघ गाथा ऐन।
भए प्रकरण सरब के बाई[15]। नौ रस ते पूरन मत थांई ॥ २१ ॥
श्री गुर की गाथा शुभ गंगा। छंद उमंग उतंग तरंगा।
करामात बन्नन जहिं कहां। इदु गंभीरता धारति महां॥ २२ ॥
राम कुइर गिरवर ते निकसी। सिक्खन बिखे जगत महिं बिगसी।
जोग विराग भक्ति अरू ग्यान। बसहिं चार जल जंतु महान॥ २३ ॥

---

1. जलती अग्नि 2. आठवें गुरू जी का नाम 3. कलियुग के पापी का काला बन 4. विष्णु भगवान् 5. निर्विघन होना 6. खेती 7. अग्नि 8. महा आदर 9. हाज़िर 10. बगीचा 11. प्रसन्न 12. बारम्बार 13. कुर्बान 14. देर न करो 15. बाईस

जप तप संजम दान शवान। धीरज दया छिमा निरमान।
सति सतोख आदि गुन जेते। लघु जल जंतु वास करि लेते॥ २४॥
दस गुर दसहुं घाट को पाइ। पावन भए लोक समुदाइ।
जन्म मरन ते आदि कलेशू। इह बड पातक इते अशेशू॥ २५॥
गुर सिक्ख जोगी मुनि रिखि भारी। गुर महिमा गंगा तिन प्यारी।
पठन सुननि शुभ अरथ विचारन। पान शनान हरख करि धारन॥ २६॥
सिक्ख संगत गुर प्रेमी प्यारे। लिखैं सुने जस गावन हारे।
गुर महिमा गंगा कउ पाइ। भए मुक्ति गुर रूप समाइ॥ २७॥
अबि मै सभि आगे करि जोर। बारंबार निहोरि निहोरि।
असि तिक्खी सिक्खी असि जाचि। चित की ब्रिती साच महिं राच॥ २८॥
लहौं दरस गुर दिहु इस बर को। जिस ते ब्रह्म ग्यान हुइ उर को।
जन्म मरन को कष्ट बडैरा। बहुर न जग मैं हुइ कबि फेरा॥ २९॥
जिनहुं गुरनि लाखहुं बिस्तारे। जुग लोकनि सुख दयो उदारे।
महिं महिं महिमा महां महान। छपी नहीं सभि लखहि जहान॥ ३०॥

कबित्त

साच रूप आपनो पछानि उपदेश देति,
कूर ते अहंता तात काल बिनसावई।
चेतन बताइकै अचेतन कौ त्याग,
करि सूखम सुम्मति ते अल्लख को लखावई।
अनंद बिलंद के उदधि मै समाइ करि,
सिक्ख को उधारि बंध गाढे छुटकावई।
एक अस्ति भांति प्रिय सर्वथा संतोख सिंघ
नमो नमो गुर उर ठीक ठहिरावई॥ ३१॥
भेत न सजाती न विजाति न सुगति
जा मै कलपति द्वैत को समूल बिनसावई।
रज्जू मैं सरप को अत्यंता भाव तैसे लखि,
एक परमात्मा अनेकता उठावई।
सत्तिनाम जाप दीनि तीन ताप कीन हीन,
श्रवनि मननि निध्धयासनि लै ध्यावई।
गुरू शरनावई सु कयो न गति पावई,
भगति जो कमावई कलेशनि मिटावई॥ ३२॥

---

1. बड्डा

तो सो नहीं दाता कोऊ, मो सो न भिखारी दीन,
तो सो न दआल, दुखी मो सो न अलाईए ।
मो सो नहीं क्रित घणु तो सो उपकारी नांहि,
मो सो न अनाथ, नाथ तो सो बताईए ।
औगुनी न मो सो कोऊ, गुणवान तो सो नही,
जप तप ब्रत मो मैं एक नही पाईए ।
कबि आइओ है शरन, गहे धाइके चरन,
गुर तारन तरन, निज हाथ दे बचाईए ।। ३३ ।।

दोहरा

सतिगुर मम बेरी कटो निज बेरी पर चारि ।
इह बेरी हुइ भव सफल बिन बेरी करि पारि ।। ३४ ।।

दोहरा

शून शून ग्रह आत्मा संमत आदि पछान ।
मधू मास शत्रुनि करि भा उत्पात महान ।। ३५ ।।
परी लूट कपि थल बिखे । मिले छोर बटपार ।
आप आप को भज चले । तजि पुरि सभि इक बार ।। ३६ ।।
सिंह फिरंगी गहि लए कैद करे वथु छीनि ।
संतनि के अस्थान भी लूटि कूटि भै दीनि ।। ३७ ।।
अस अपदा के दिननि मंहि सतिगुर भए सहाइ ।
भयो न बंको बार की दै दै हाथ बचाइ ।। ३८ ।।
चहुं दिश अपन बिरान नर दुशमन भे तिस काल ।
मम रछ्या सतिगुर करी सभ मंहि बिदत हवाल ।। ३९ ।।
सावन मंहि इस ग्रंथ की भई समाप्ति आइ ।
बिघन ब्रिंद ते बच रहे श्री करतार सहाइ ।। ४० ।।
दास जान करि अपनो जुग लोकनि सुख दैन ।
राखे दे करि हाथ गुर भई कुशल सभि चैन ।। ४१ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे उत्तर ऐने ग्रंथ समापती बरननं कवि संतोख सिंघ ब्रिचताया भाखायां नाम खशट त्रिसती अंशु ।। ३६ ।।

।। इति ।।

संज्ञा कोश

अजीत सिंह :— (साहिबज़ादा) श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का सपुत्र जो चमकौर के युद्ध में वीर गति को प्राप्त हुए।

अजीत सिंह :— माता सुंदरी का पालक पुत्र ; जिसको बाद में माता जी ने त्याग दिया, यह हठी सिंह का पुत्र था।

अनंदपुर :— श्री गुरु तेग बहादुर जी ने सतलुज नदी के किनारे नैना देवी के पर्वत के पास माखोवाल गाँव की धरती खरीद कर सं० 1723 में यह नगर बसाया, यह नगर आजकल ज़िला रोपड़ में है।

अपर सिंह :— आनंदपुर के सरदार श्याम सिंह की कुल में से एक सिक्ख।

अबचल नगर :— अथवा नांदेड़ साहिब दक्षिणी भारत में स्थित है। यहां एक प्रसिद्ध गुरद्वारा है।

अभिमन्यु :— वीर अर्जुन का पुत्र जो महाभारत के युद्ध में बहुत वीरता से लड़ा।

अम्रितसर :— (अमृतसर) पंजाब प्राँत का एक प्रसिद्ध नगर जो श्री गुरु अमरदास जी के समय "चक्क गुरु" के नाम प्रसिद्ध था।

अमोलक सिंह :— चमकौर के युद्ध में काम आने वाला गुरु गोबिन्द सिंह जी का एक सिक्ख।

अहमदा बाद :— गुजरात राज्य का प्रसिद्ध नगर जो प्रांत की राजधानी भी है। गुजरात के राजा अहमदशाह ने सं० 1413 ई० को बसाया था।

आलम सिंह :— चमकौर में गुरु जी के सहयोगी सिक्खों में से एक।

इसमाईलखान :— मुसलमानी सेना का एक अधिकारी।

कंधार :— अफगानिस्तान का एक प्रसिद्ध नगर ।

कपूरा :— गुरु जी से अमृतपान करने के पश्चात् कपूर सिंह हुआ ।

कर्मबेग :— मुसलमानी सेना का एक पदाधिकारी ।

क़ाबल :— अफगानिस्तान की राजधानी, लोगर और काबल नदी के मध्य में पेशावर से 181 मील दूर है ।

कल्ला :— एक सिक्ख जिसको गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अपना पुत्र कह कर सम्मानित किया ।

काला बाग :— ग्वालियर के पास एक नगर ।

कीरत सिंह :— गुरु जी का एक सिक्ख जो चमकौर के युद्ध में वीर गति को प्राप्त हुआ ।

कुंज गलिन :— वह गलियां जहां श्री कृष्ण खेलते रहे हैं ।

कोट कपूरा :— ज़िला फरीदकोट का एक प्रसिद्ध नगर ।

खलील खान :— मुसलमानी सेना का एक सिपाही ।

खान खाना :— एक खान जिसका नाम मुनायम खां था । वह बादशाह बहादुर शाह का मंत्री भी रहा । इसको गुरु जी से भी प्रेम था ।

गज़नी :— अफगानिस्तान का एक शहर जहां सुलतान महमूद गज़नवी पैदा हुए ।

गनी खां :— गनी खां और नबी खां माछीवाड़ा के स्थान पर गुरु जी को मिले । उन्होंने गुरु जी को 'उच्च का पीर' कह कर बहुत दिनों तक अपने पास सुरक्षित रखा ।

गिलजा :— यह सरहिंद के अधिकारी के दरबार में किसी उच्च पद पर था । उसी ने कहा था कि गुरु-पुत्रों को तलवार के घाट उतार दिया जाए ।

गुरबख्श सिंह:— झोरड़ नगर का एक सिक्ख ।

गुल खां :— एक पठान जो पहले गुरु जी की सेवा करता रहा, परन्तु एक दिन गुरु जी पर वार किया । इसके पितामाह पैंदे खां को गुरु गोबिन्द सिंह के पितामाह श्री गुरु हरिगोबिन्द जी ने शहीद किया था ।

चंडूर :— कंस का एक पहलवान जो श्री कृष्ण के हाथों मृत्यु को प्राप्त हुआ ।

चंबल :— मध्य प्रदेश की एक नदी ।

चमकौर :— ज़िला रोपड़, थाना मोरिंडा में एक गांव है यहां गुरु गोबिन्द सिंह जी के सपुत्र साहिबजादा अजीत सिंह और साहिबज़ादा जुझार सिंह 8 पोष सं० 1761 को शहीद किए गए ।

जलन्धर :— भारत का उस समय यह अलग सूबा था । 1628 में वहाँ का सुबेदार अब्दुल खां था ।

जलाल :— प्राचीन नाभा रियासत का एक गांव जो फूल से दस मील और दीना से दो-तीन मील की दूरी पर है ।

जवाहर सिंह :— गुरु-पुत्र अजीत सिंह के संग चमकौर के युद्ध में जाने वाला एक वीर सिक्ख ।

जाफर बेग :— (जेर दस्त) बजीर खां और भीमचन्द का सहयोगी जो गुरु जी को पकड़ने के लिए घर से निकला था ।

जींद :— प्राचीन सिक्ख रियासत और उसका मुख्य नगर । अब हरियाणा प्रांत का एक ज़िला तथा उसका सदर मुकाम ।

जुग सिंह :— चमकौर में गुरु जी का साथी, बहुत वीरता दिखा कर शहीद हुआ ।

जुझार सिंह:— (साहिबजादा) गुरु गोबिन्द सिंह जी के सपुत्र युद्ध भूमि में चमकौर के स्थान पर शहीद हुए ।

जैतो :— ज़िला फरीदकोट का एक प्रसिद्ध नगर ।

जोध सिंह :— एक सुप्रसिद्ध सिक्ख जो श्री गुरु हरगोबिन्द जी को मिलकर पूर्ण सिक्ख हुआ और लल्ला बेग के साथ लड़ा ।

जोरावर सिंह:— (साहिबजादा) श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का सपुत्र नवाब सरहिंद ने इसको इसके भाई के साथ जीवित ही दिवार में चिनवा कर शहीद किया ।

झूठा नन्द :— दीवान सुच्चा नन्द का ही बिगड़ा हुआ नाम है ।

झूलण सिंह :—मालवे का एक बराड़ सिक्ख गुरु जी ने उसकी विनय सुन कर पर्षा करवाई और ग्राम निवासियों को प्रसन्न किया।

डल्ला :— राम सिंह के गृह में भाई के चक्क, गुरु जी के साथ जाने वाला एक सिक्ख।

त्रिलोक सिंह :—आनंदपुर के एक प्रमुख सिक्ख, श्याम सिंह, की कुल में से एक सिक्ख।

तखत सिंह :— 'चब्बे' गाँव का सेवक सिक्ख जो हर समय सेवा के लिए तैयार रहता था।

दमदमा :— जिला भटिण्डा की रामामण्डी के पास एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान इसको 'गुरु जी की काशी' अथवा तलवण्डी साबो भी कहा जाता है।

दया राम :— जाती मलक का पुत्र, गुरु गोबिन्द सिंह जी का एक सेवक, भंगाणी के युद्ध में बहुत वीरता दिखाई।

दया सिंह :— लाहौर वासी दया राम सोफती खत्री जिसने वैसाख 1756 को केशगढ़, आनन्दपुर के समागम में गुरु गोबिन्द सिंह जी से अमृतपान किया। पांच प्यारों का नेता, धर्मसिंह के साथ ज़फरनामा लेकर गया।

दिल्ली :— यमुना नदी के किनारे एक प्राचीन और प्रसिद्ध नगरी। म्यूर वंश के राजा ढिल्लू ने इसे दिल्ली का नाम दिया।

दिदार सिंह :—आनन्दपुर के श्याम सिंह की कुल में से एक सिक्ख, त्रिलोक सिंह का पुत्र।

दीना :— मालवे का एक सुप्रसिद्ध गांव जहाँ गुरु गोबिन्द सिंह जी ने ज़फरनामा लिखा।

देवा सिंह :— मालवे का एक सिक्ख।

दीवान सिंह :—आनन्दपुर के स० श्याम सिंह की कुल में से, दीदार सिंह का पुत्र।

धर्म सिंह :— एक प्रमुख सिक्ख जो दया सिंह के संग ज़फरनामा लेकर औरंगज़ेब बादशाह के पास पहुंचे।

ध्यान सिंह :— श्री अजीत सिंह के साथ चमकौर के युद्ध में जाने वाला जवाहर सिंह का साथी और वीर सिक्ख ।

भाई नंद लाल :— गुरु गोबिन्द सिंह जी के सुप्रसिद्ध सिक्ख, फारसी भाषा के विख्यात कवि और लेखक ।

नरबदा :—एक नदी ।

नरवर :— ग्वालियर के पास एक नगर ।

नानक प्रकाश :— भाई संतोख सिंह जी की एक काव्यकृति ।

नाहर खाँ :— नुसर्तखां और बली मुहम्मद खाँ का भाई, मलेरकोटला का पठान जिसने सरहिंद के सूबेरार वजीर खां की आज्ञा से गुरु गोबिन्द सिंह जी के साथ युद्ध किया ।

नूरे खां :— मुसलमानी सकना का एक अधिकारी ।

नोहर :— दक्षिण का एक नगर ।

पटियाला :— बावा आला का बसाया हुआ पंजाब का एक प्रसिद्ध नगर ।

पर्सराम :— विष्णु का अवतार, क्षत्रियों का विनाश करने वाला, रामायण और महाभारत में इसका विवरण है; एक सिक्ख ।

पैंदे खाँ :— गुलखान पठान का दादा जो गुरु हरिगोबिन्द जी की तलवार से मारा गया ।

फत्ता :— मालवे का एक प्रसिद्ध सिक्ख जिसने गुरु जी को एक सुन्दर घोड़ी भेंट की थी ।

फते सिंह :—
(साहिबजादा) श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का सुपुत्र जिसको 1761 सं० में सरहिंद में शहीद किया गया ।

फुल :— 'फूलकियाँ रियासतों' का बानी, इसका समय 1627 ई० से 1690 ई० तक का है ।

बखतू सिंह :— चब्बे गाँव का एक सेवक सिक्ख ।

वजीदपुर :— पटियाला ज़िला का एक ग्राम

बंदा सिंह बहादुर :— पहला नाम लच्छमन देव, गुरु जी को मिलकर सिंह सज गया,

गुरु पुत्रों की शहीदी का बदला लेने के लिए सरहिंद को उजाड़ दिया, सं० 1773 को दिल्ली के स्थान पर शहीद हुआ।

बघैर :— एक नगर।

बनेच :— पंजाब के लुधियाना ज़िला का एक गाँव।

ब्रह्मपुत्र :— एक नदी है जो दक्षिण भारत में बहती है।

ब्रह्मा :— हिन्दु धर्म के अनुसार सृष्टि की रचना करने वाला देव।

बलख :— अफ़गानिस्तान का एक शहर।

बस्सी पठाना :— ज़िला पटियाला का एक प्राचीन नगर।

बहमी शाह :— एक फकीर, जिसका वास्तविक नाम इब्राहिम शाह था।

बहलोले :— गुरु अरजन का एक सिक्ख।

बहादुर शाह :— अंतिम मुगल बादशाह।

बाईधार :— जालन्धर और होशियारपुर के मध्य बाईस पर्वतीय प्रांत।

बाला राम :— एक सेवक सिक्ख।

बालू हसना :— जन्म से काश्मीरी ब्राह्मण, श्री गुरू हरिगोबिन्द जी के घोड़े का सेवक था; बाबा गुरदित्ता जी के संग रहा, फिर उदासी हो गया।

बिनोद सिंह :— बंदा बहादुर का एक वीर सहयोगी, बंदा सिंह बहादुर के साथ मिलकर इसने बहुत सी विजय प्राप्त कीं।

बिसरांत :— कंस को मार कर जहाँ श्री कृष्ण ने विश्राम किया।

बीर सिंह :— गुरु गोबिन्द सिंह जी के निकटी सिक्खों में से एक सिक्ख।

बुखारा :— ईरान का एक प्राचीन नगर।

बुरहानपुर :— एक नगर का नाम।

बेदावा :— एक पत्र जो माझा (केन्द्रीय पंजाब) के चालीस सिक्खों द्वारा गुरु गोबिन्द सिंह जी को दिया गया। इसके अनुसार उन्होंने गुरु जी से अपने संबंध तोड़ लिए थे बाद में इस पर उन्होंने हार्दिक दुःख प्रकट किया और इस पत्र को उन्होंने वापिस ले लिया था।

भक्खर :— सिंध नदी का एक द्वीप, यह अब जिला सिंध में है, वहाँ एक प्राचीन दुर्ग है।

भगतू :— भाई दयाल जी का दादा, जो कि चब्बे गाँव का रहने वाला था।

भट्ट सेन :— एक राजा जिसने अनाज का अपमान किया।

भीमचन्द :— बजीदखाँ और ज़ेरदस्त का सहयोगी जो गुरु की खोज में घर से निकला था परन्तु अपनी ही मृत्यु मर गया।

भूरे खां :— मुसलमानी सेना का एक अधिकारी।

मदन सिंह :— एक सेवक सिक्ख इसने गुरु जी से अमृतपान किया और परमपद का अधिकारी हुआ।

मथुरा :— हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध तीर्थ।

महां सिंह :— चाली 'मुक्ताओं' का नेता जिसकी भूल को श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने क्षमा कर दिया और अपना विशेष सिक्ख कहा।

माछीवाड़ा :— माछीवाड़ा ज़िला लुधियाना का एक ऐतिहासिक नगर जहाँ श्री गुरु गोबिन्द सिंह ने कई दिन जंगलों में व्यतीत किए।

मान सिंह :— गुलाबे मसंद के बाग में गुरु जी के साथ जो सिंह थे उन में से एक।

मीआं खां :— सूबा सरहिंद का एक सिपाही।

मुसतफाबाद :—ज़िला अम्बाला में स्थित एक नगर।

मुहकम सिंह :—गुरु जी के निकट और प्रिय सिक्खों में से एक।

मौड़ :— ज़िला भटिण्डा की एक प्रसिद्ध मंडी।

मोरिंडा :— सरहिन्द के पास स्थित ज़िला रोपड़ का एक प्राचीन नगर।

मोहर सिंह :— चमकौर के युद्ध में शहीद होने वाले सिक्खों में से एक वीर सिक्ख।

यार मुहम्मद :—एक मुस्लमान जिसने यह बताया है कि मुसलमान धर्म में भी केश रखने की प्राचीन परम्परा है।

रखाला :— दीना के पास एक गाँव।

रामचंद :— सूर्यवंशी राजा दशरथ के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री राम चन्द्र जी, जिन्हें अवतार माना जाता है।

राम सिंह :— भाई के चक्क गाँव का एक सेवक सिक्ख।

रामा :— बाबा फूल का पौत्र।

रामू :— भगता गाँव का एक सिक्ख।

रूपा :— एक नगर का नाम।

रूपाणा :— मुक्तसर के पास एक गाँव।

रोपर :— रोपड़ या रूप नगर। इसे रूपचंद राजपूत ने बसाया, अब पंजाब का एक ज़िला, सतलुज के किनारे स्थित।

रौशन सिंह :—एक सिक्ख जो उस समय गुरु जी के साथ था जब वे बहादुर शाह के साथ शिकार खेलने गए।

लल्ला बेग :— छठे गुरु जी के एक सिक्ख जोध ने इस लल्ला बेग मुगल के साथ युद्ध किया था ।

लवपुरि :— श्री राम चन्द्र जी के छोटे पुत्र लव का बसाया हुआ नगर, लाहौर, आजकल पाकिस्तानी पंजाब की राजधानी है ।

लोहगढ़ :— दीना गाँव का ऐतिहासिक गुरुद्वारा ।

वजीर खां :— दिल्ली दरबार द्वारा नियुक्त किया गया सरहिंद का एक अधिकारी, गुरु-पुत्रों को शहीद करवाने में इसका हाथ था ।

बेदी :— वह लोग जो पहले समय में वेदों का अध्ययन किया करते थे । इन्हीं की कुल में श्री गुरु नानक देव जी का जन्म हुआ था ।

संगत सिंह :— चमकौर के किले में गुरु जी के साथ जो शिष्य थे, उनमें से एक ।

सुच्चा नन्द :— सरहिंद के प्रांत का एक अधिकारी, गुरु-पुत्रों को शहीद करवाने में इस का हाथ था ।

सढौरा :— पीर बुद्धु शाह का नगर, ज़िला अम्बाला में स्थित है ।

संत सिंह :— चमकौर के किले में से गुरु जी की वेष भूषा पहन कर निकलने वाला शिष्य, इसकी मृत्यु पर मुगल यह समझ बैठे कि गुरु गोबिन्द सिंह जी मारे गए हैं ।

सतुद्रव :— पंजाब की प्रसिद्ध नदी, सतलुज का प्राचीन नाम ।

समाना :— ज़िला पटियाला का एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर ।

समीर :— दीना ग्राम का प्रमुख व्यक्ति ।

सरहिन्द :— भारत का प्राचीन नगर, 13 पौष सं० 1761 को गुरु गोबिन्द सिंह जी के छोटे सपुत्र जोरावर सिंह और फतेसिंह को वजीरखां की आज्ञा से यहीं शहीद किया गया था ।

सस्सी :— सस्सी और पुन्नू की प्रेम कथा की नायिका ।

साहिबदेवां :— गुरु गोबिन्द सिंह जी की पत्नी सिक्ख जगत में आपको माता जी कहा जाता है ।

साहिब सिंह :—गुरु गोबिन्द सिंह जी के विशेष पाँच प्यारों में से एक ।

सुंदरी :— गुरु गोबिन्द सिंह जी की पत्नी ।

सुरजन सिंह :—आनंदपुर के सरदार श्याम सिंह का पौत्र ।

सन्तोख सिंह :—एक प्रमुख सिक्ख जो गुरु जी के अंतिम समय में उनके पास उपस्थित था ।

हिम्मत सिंह :—पाँच प्यारों में से एक ।

———